भारतीय व्यापारियों का परिचय

तीसरा भाग

Introduction of

INDIAN MERCHANTS

Vol. III

करांची, देहली, यू० पी०, सी० पी०, बरार
खानदेश और निजाम स्टेट।

मूल्य तीस रुपया
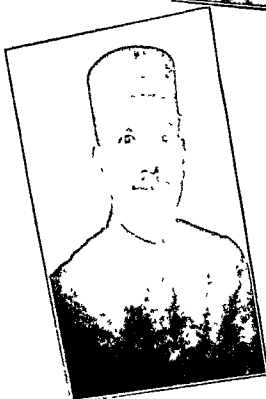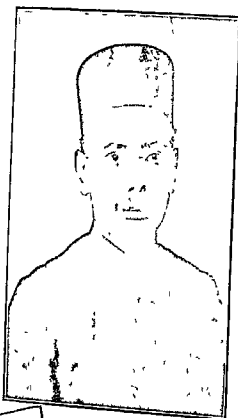
श्री [illegible] सोनी, श्री चन्द्रराज भण्डारी, "विशारद"

श्री कृष्णलाल गुप्त,

संचालक
कॉमर्शियल बुक पब्लिशिंग हाउस, भानपुरा।

भारतीय व्यापारियों का परिचय

तीसरा भाग

सम्पादक—

श्री. चन्द्रराज भण्डारी

श्री. अमरलाल सोनी

श्री. कृष्णलाल गुप्त

श्री. कृष्णकुमार मिश्र

प्रकाशक—

श्री. चन्द्रराज भण्डारी

श्री. अमरलाल सोनी

श्री. कृष्णलाल गुप्त

संचालक—

कॉमर्शियल बुक पब्लिशिंग हाउस

भानपुरा

Printed by G. K. Gurjar,
Shri Lakshminarayan Press, Benares City.

हमारे माननीय सहायक

रा० ब० शिवरतनजी मोहता, करांची

बाबू घनश्यामदासजी बिड़ला, कलकत्ता

रा० ब० जगदीश नारायण सिंह साहब पडरोनाराज

श्रीयुत् बालगोविन्ददासजी लोहीवाल, करांची

राय बहादुर ब्रजलाल जगन्नाथ करांची

लाला जसवन्तरायजी चूड़ामणि, करांची

महाराज पं० सुन्दरलालजी राजवैद्य इच्छापूरन, करांची

मेसर्स बिशनदास फ़तेचन्द एण्ड सन्स; करांची

सेठ रेवाशङ्कर मोतीराम, करांची

सेठ हासोमल चेलाराम, करांची

सेठ राजमलजी ललवानी आमनेर (पूर्व खानदेश)

मेसर्स शुभकरण श्रीराम, बैङ्कर्स सिकंदराबाद (दक्षिण)

मेसर्स रामदयाल घासीराम राय साहब, हैदराबाद (दक्षिण)

मेसर्स हरगोपालदास रामलाल बैङ्कर्स हैदराबाद (दक्षिण)

मेसर्स श्रीराम शालिगराम, धामणगांव

मेसर्स बसन्तलाल मन्नालाल जनरल गंज, कानपूर

बा० रामेश्वरदासजी बागला एम० एल० ए० कानपूर

बा० रामरतनजी गुप्त कानपुर

मेसर्स भीखमचन्द रेखचन्द मोहता, हिंगनघाट

राय साहब नारायणदासजी राठी, अमरावती

मेसर्स मोतीलाल बंसीलाल बैङ्कर्स, अकोला

सेठ सत्यनारायणजी गोएनका (परसराम हरनन्दराय) देहली

मेसर्स एस० एस० भवानीप्रसाद चेतूलाल जबलपुर

मेसर्स गुलाबचंद लखमीचंद दुलीचंद, सागर
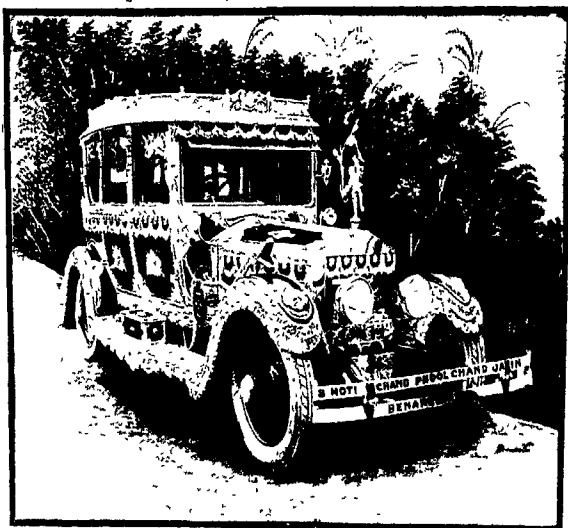
करांची-सिटी

KARACHI-CITY.

करांची

करांची-जिला

प्रांत की सीमा और परिस्थिति—

इस जिले का क्षेत्रफल ११९७० वर्गमील है। इसके उत्तर में लरकाना, पूर्व में सिंधु नदी और हैदराबाद जिला, दक्षिण में समुद्र और कोरो नदी तथा पश्चिम में समुद्र तथा लालबेला रियासत (बिलोचीस्थान) हैं। इस जिले में पहाड़ विशेष हैं। इसकी प्रधान नदी सिंधु और हाब हैं। पानी की यहाँ बड़ी कमी रहती है। खेती प्रायः बरसाती पानी ही से होती है। यहाँ का जंगल बड़ा मनोहर है। इसके कोटरी तालुका के लखी नामक स्थान पर गरम जल के तथा गंधक के झरने निकलते हैं। यहाँ बहुत से यात्री यात्रा के निमित्त आया करते हैं। इसी प्रकार इस जंगल में और भी कई स्थानों पर कई सुन्दर दृश्य देखने को मिलते हैं। इस जंगल में आम, बेर, सेव, अंजीर, आदि भी पैदा होते हैं पर ज्यादा नहीं। ये सब यहीं खप जाते हैं। इसके अतिरिक्त यहाँ लकड़ी भी होती है जिसमें खासकर बबूल विशेष होती है। छवारा और Kandel भी यहाँ साधारण पैदा होवे हैं। पहाड़ी स्थानों में यहाँ के जानवर, तेंदुआ, हिरन, खरगोश, सियार, लोमड़ी, भेड़िया आदि हैं। मगर भी यहाँ के तालाबो एवं सिंधु और हाब नदी तथा बड़ी २ नहरों में पाये जाते हैं। यहाँ की आबहवा समुद्र का खुला हुआ किनारा होने से अच्छी है। यहाँ बरसात की औसत बहुत कम है। मानझंड में वर्षा करीब ५ इंच होती है तथा करांची तालुका में ९ इंच तक हो जाती है। यही यहाँ की वर्षा का एवरेज है।

करांची जिले का इतिहास—

इस प्रांत का इतिहास उस समय सेशुरू होता है जब कि ग्रेट एलेक्झेंडर हिन्दुस्थान को विजय करने के लिये भारतवर्ष में आया था। उसने परसियन गल्फ के रास्ते यहीं से अपना सम्बन्ध स्थापित किया था। सन् १०१९ और १०२६ के बीच महमूद गजनवी यहाँ आया; उस समय इस प्रदेश पर सुमा राजवंश का राज्य था। इस राजवंश का प्रथम

पुरुष घाफनीविडस का टिटुलर वसाल था। इसी ने इस राज्यवंश को जन्म दिया था। सन् १३३३ में यह सुमाराजवंश कच्छ से लरकाना जिले के सेहवान नामक स्थान में आया। पश्चात् ठट्ठा में इसने निवास करना प्रारंभ किया। मकली पहाड़ के पास सामुई नामक स्थान इन लोगों की राजधानी थी। ये लोग वास्तव में हिन्दू या बौद्ध थे, मगर इस्लाम धर्म के सिद्धान्तों पर विश्वास करके चौदहवीं शताब्दी के अंत में मुसलमान हो गये। जब फिरोज तुगलक देहली में शासन करता था उस समय इनका निवासस्थान ठट्ठा सारे सिंध में व्यापार का प्रधान स्थान हो गया था। इसकी मनुष्य संख्या भी बहुत बढ़ गई थी।

सन् १५२१ में अरघुन राज्यवंश के स्थापक शरह बेग ने इस सुमा राजवंश के अंतिम राजा को हरा कर इस प्रदेश पर अपना अधिकार कर लिया। इसका राज्य करीब ३४ साल तक रहा। क्योंकि इसका लड़का शाह हसन बेऔलाद सन् १५५४ में मर गया था।

सन् १५९२ में भारत सम्राट् अकबर ने इस प्रांत पर चढ़ाई कर इसे अपने कब्जे में कर लिया और यह प्रांत मुल्तान सूबा में मिला दिया गया। इसी समय ठट्ठा पर जान बेग का शासन था। यह सम्राट् से पराजित हो चुका था। अतएव इसने प्रार्थना कर अकबर के पास नौकरी कर ली और जागीर के बतौर यह उसका भोग करने लगा। पश्चात् यह यहाँ का पुस्तैनी शासक हो गया।

सन् १७९२ में कलात के खान ने व्यापार के निमित्त बंदर की तलाश की। उसे करांची पसंद आया और उसने इसे व्यापार का प्रधान केन्द्र बनाना चाहा। कुछ ही समय पश्चात् तालपुर के मीर—जिनके यहाँ कलात का खान काम करता था—अलग २ हो गये। सन् १८३८ में अफगान युद्ध के समय इस पोर्ट का विशेष महत्व रहा। इसे ब्रिटिश दूत ने अपना अड्डा बनाया और सन् १८३८ से यह पूर्ण रूप से ब्रिटिश सरकार के हाथ आ गया। जब से यह ब्रिटिश सरकार के हाथ में आया इसकी दिन दूनी और रात चौगुनी उन्नति होने लगी। भिन्न २ समय पर इसमें हैदराबाद एवं लरकाना का पोर्शन मिला लिया गया। यही आजकल करांची जिले के नाम से पुकारा जाता है।

आजकल भी इस जिले में पुरातत्व सम्बंधी कई सामान हैं। जैसे शिलालेख, पुरानी मसजिदें, मकबरें, कबरें आदि। यहाँ की मुल्तानी ढाँचे की जुम्मामसजिद बड़ी अच्छी और प्राचीन कारीगिरी का अच्छा नमूना है। डाबगर मसजिद की बीच महराप बहुत ही अच्छी है। ठट्ठा का पुराना किला भी दर्शनीय है जो सन् १६९९ से बनना शुरू हुआ था पर कभी खतम नहीं हुआ। इसके अतिरिक्त सिंधु के मैदान में लाहोरी, काकर, मुकेरा, समुई, फतेबाग, काट, बाम्भन, जून, थारी, बादिन, तुर, भामभोरे आदि स्थान ऐसे हैं जहाँ पुरातत्व सम्बंधी सामग्री आज भी मिलती है।

तालुके एवं पैदावार—

इस जिले में सब मिलाकर ११ ताल्लुके या महाल हैं। जिनके नाम कोटरी, कोहिस्थान, करांची, ठट्ठा, मीरपुर सकरो, घोड़ाबारी, केटी, मीरपुर बतोरो, सुजावल, जाती और शाह बंदर हैं। इन सब ताल्लुकों में मिलाकर ५ टाउन तथा ६२८ देहाती गाँव हैं। इस प्रांत का एरिया ११९७० वर्गमील है। इस प्रांत में खेती बरसाती पानी, झरने एवं कुओं से होती है। यहाँ की पैदावार जुवार, बाजरी, जौ, गन्ना है जो करांची शहर से करीब १२ मील की दूरी पर मलीर प्लान में होती है। इसके अतिरिक्त शाहबंदर और ठट्ठा के डेल्टे में चांवल होता है। यहाँ गेहूँ, गन्ना, कपास और तमाखू भी होती है। कोहिस्थान के बेरिन हिल्स नामक स्थान पर भी कुछ खेती होती है। मगर कब, जब कि पानी बहुत ज्यादा गिरता है। सोदर्न प्लान में रहनेवाले मनुष्य पशुओं को भी पालते हैं। वहाँ कम पानी पडने ही से बहुत से झरने बहने लग जाते हैं। जो कि काफी तादाद में वहाँ हैं।

यहाँ के पशुओ में भैंस, गाय, ऊँट, गधे वगैरह हैं। गायें करांची सिटी से करीब ४० मील की दूरी पर बहुत होती हैं। ये करांची की गायों के नाम से मशहूर हैं। बम्बई प्रांत में यहाँ से बहुत गायें हरसाल जाया करती हैं। यहाँ की गायें भारतवर्ष में अपना बहुत ऊँचा स्थान रखती हैं। भैंसे भी यहाँ काफी मिकदार मे हैं। इनसे विशेषकर घी तैय्यार होता है। नादर्न इंडिया का घी बहुत अच्छा होता है। वह इन्हीं भैंसों से तैय्यार किया जाता है। यहाँ ऊँट और गधे लादने के काम में आते हैं।

कराची-सिटी का इतिहास—

दुनियाँ परिवर्तनशील है। कौन जानता है कि जहाँ आजकल भव्य और सुन्दर इमारतों को लिये हुए विशाल नगर खड़े हैं, वहाँ समय आने पर कुछ न मिले और जहाँ आज कुछ भी नहीं मिलता,—जहाँ भयंकर जंगल हैं, कल वहीं विशाल नगरों की रचना हो जाय। हमारा कराँची भी इसी प्रकार के उदाहरणों में से एक है। सन् १७२५ की बात है, जहाँ आजकल यह भारत प्रसिद्ध नगर खड़ा है वहाँ कुछ न था। एक खारक नाम का छोटा सा देहात था। इसके पास ही हाब नामक नदी बहती थी। यहाँ साधारण व्यापार होता था। उस समय यह स्थान हैदराबाद के मीर जामदरिया खां जोकिया के अंडर में था। मीर ने अपने व्यापार की तरक्की के लिये एक उपयुक्त पोर्ट की खोज करना चाही। उसी समय खारक के पास कलाची कुन नामक स्थान था। कालांतर से यही नाम आजकल करांची के नाम से प्रख्यात् है। मीर के कहने से उसके अंडर में रहनेवाले कलोहरा के प्रिंस कलात

के खान ने सन् १७९२ में इसकी खोज की और इसे व्यापारिक स्थान समझ कर यहाँ व्यापार करना प्रारंभ किया। यह उस समय कलात के खान की सीमा पर स्थित था।

इसी समय सन् १७९२ से १७९५ तक इसे तीन बलोची शत्रुओं ने हस्तगत करना चाहा, मगर हैदराबाद के तालपुर के चीफ ने अपनी सेना द्वारा पराजित कर तीनों ही बार इन बलोचियों को पराजित किया। इसी समय मनोरा नामक स्थान पर जो आजकल करांची का उपरी भाग है, इसने एक किला भी बनवाया। तालपुर के चीफ ने इस स्थान के व्यापार की ओर बड़ा ध्यान दिया। उसने कई व्यापारिक सुविधाएँ कीं। यही कारण है कि उस समय इसका व्यापार और मनुष्य संख्या जोरों से बढ़ने लगी। उस समय इसकी मनुष्य संख्या १४००० हो गई। इसमें आधे हिन्दू थे। उस समय यहाँ छप्पर के मकान विशेष थे। उनकी दिवालें बालू की बनी हुई होती थीं। दो मंजिला मकान तो बहुत ही कम नजर आता था। इन्हीं लोगों के पास से यह स्थान सन् १८३८ में भारत सरकार के पास आया और तब से इन्हीं के हाथ में है। इनके पास आने से इसकी महत्ता बहुत बढ़ गई और आजकल तो यह बंदर भारत में तीसरे नम्बर का माना जाता है।

सिटी का व्यापार—

यो तो यहाँ का व्यापार तालपुर के मीर के जमाने ही में बढ़ने लगगया था पर ब्रिटिश सरकार के समय मे इस पोर्ट के व्यापार को बहुत उत्तेजन मिला। मीर के समय में यहाँ का रेव्हेन्यू ९९०००) रुपया था। यही सन् १८३७ में बढ़कर १७४०००) हो गया। कुछ समय के पश्चात् बढ़ते २ यहाँ का सारा व्यापार करीब ४० लाख का हो गया। उस समय यहाँ आने वाला माल इंगलिश सिल्क, ब्रोड क्लाथ, बंगाल और चीन का सिल्क, गुलाम, शक्कर, मीनाकारी, ताम्बा और कपास था। तथा जानेवाले माल मे विशेष कर अफीम, घी, अरंडी, गेहूँ, माडर (madder) ऊन, नमकीन मछली आदि थे। गुलाम लोग विशेष कर मस्कत से आते थे। निग्रो और अबासीनियंस भी आते थे, मगर कम। अफीम करीब ५०० ऊँटो पर लद कर मारवाड़ की तरफ से आती थी और यहाँ से पोर्तगीज के दमन नामक स्थान पर भेजी जाती थी।

सन् १८४३, ४४ में करांची, केटी और सिरगंधा नामक पोर्टों का व्यापार सिर्फ १२ लाख रह गया था। इसका कारण अफीम के व्यापार का गिर जाना था। बाद मे इस व्यापार की औसत १६ लाख की थी। दूसरे साल यही व्यापार २३ लाख, तीसरे साल ३५ लाख और पाँचवें साल तो ४४ लाख तक पहुँच गया।

सन् १८५२ में यहाँ का व्यापार बढ़कर ८१ लाख का हो गया। सन् १८५७ में यहाँ का एक्सपोर्ट इम्पोर्ट से भी बढ़ गया। करांँची के व्यापार को विशेष उत्तेजन अमेरिका के सिविल वार से मिला। इस वार के समय यहाँ से बहुत कपास बाहर गया। इस समय यहाँ का व्यापार ६ करोड़ का हो गया। इसमें २ करोड़ का माल इम्पोर्ट होता था तथा ४ करोड़ का एक्सपोर्ट होता था। अमेरिका में जब शांति हो गई तब यहाँ का व्यापार वापस कम हुआ पर शीघ्र ही सन् १८८२,८३ में वापस बढ़कर ७ करोड़ का हो गया। और १८९२-९३ में यही ११ करोड़ का हो गया।

सन् १९०३-४ में गवर्नमेंट स्टोअर को छोड़कर यहाँ का एक्सपोर्ट इम्पोर्ट का व्यापार २४·१ करोड़ का हो गया। इसमें ९·६ करोड़ का इम्पोर्ट और १५·२ करोड़ का एक्सपोर्ट होता था। एक्सपोर्ट होने वाले माल में विशेष कर गल्ला और तिलहन बाना था। यह पंजाब एवम सिंध प्रान्तों द्वारा रेल मार्ग से यहाँ लाया जाता था। बाहर से आने वाले माल में कपड़ा, सूत, ऊनी माल, हार्डवेअर और कटलरी, शराब, स्पिरिट,, धातुएँ (खासकर लोहा, ताम्बा, स्टील) शक्कर, मशीनरी, मिल के उपयोगी सामान, तेल आदि २ थे।

करांँची पोर्ट पर अमेरिका से भी बहुत माल आता था। उसमें विशेष कर कपड़ा, रेल्वे सामग्री, शराब, कोयला, मशीनरी, धातुएँ, दवाइयाँ, प्रोविजन्स आदि थे। इस प्रकार भारत के भी कई स्थानों से माल यहाँ आता था। बम्बई से कपड़ा, सिल्क, धातुएँ, शक्कर, चाय, जूट, रंगाई का सामान, सुपारी, ऊनी माल, सिल्की माल, शराब, फल और सबजी आती थी। इसी प्रकार परसियन गल्फ से सूखा मेवा, ऊन, गल्ला और घोड़े तथा मकरान कोस्ट से ऊन, प्रोविजन्स, गल्ला, दाल, और कलकत्ता से, जूट, गल्ला, दाल तथा रशिया से मिनरल वाटर आता था।

करांँची से भी विदेशों में तथा भारत के भिन्न २ स्थानो में माल का एक्सपोर्ट होता था उनमे अमेरिका को रुई, ऊन, गेहूँ, बीज, चमड़ा और हड्डियें, फ्रांस को गेहूँ, रुई, हड्डी, चमड़ा, चना, आदि, जर्मनी को गेहूँ, रुई, चमड़ा, हड्डिया और शीड्स, जापान को रुई, रूस को अरंडी और रूई जाते थे। तथा बम्बई, कच्छ और गुजरात में यहाँ से रुई, गल्ला, अरंडी, शीड्स, चमड़ा, मछली, मोरेशस द्वीप में गल्ला और दाल, परसिया में चाँवल, मद्रास में चाँवल और चमड़ा तथा चीन में रा काटन यहाँ से जाता था।

यहाँ गेहूँ विशेषकर पंजाब और यू० पी० से, कपास पंजाब से, ऊन, सूखा मेवा और घोड़े कंदहार एवं कलात से, तथा जलाऊ लकड़ी, घास, घी, चमड़ा और पामलियत वगैरह, ऊँटो, बैलों, एवम गधों पर लदकर लास बेला और कोहिस्थान से आते थे।

करॉंची पोर्ट ट्रस्ट—

यह हम पहले ही लिख चुके हैं कि यह बन्दर तालपुर के मीर और ब्रिटिश शासन के शुरू सालों में बहुत छोटा था। उस समय यहाँ साधारण नावें ही रहा करती थीं। बड़े जहाजों एवं स्टीमरों के लिये यहाँ जगह नहीं थी। ये सब मनोरा नामक स्थान पर ही रह जाते थे। वहाँ से छोटी २ नावों में नदी के मार्ग से जब तक आसानी होती आदमी और माल लाया जाता था। पश्चात् वह केनोज बदलकर कस्टम हाऊस पर पहुँचाया जाता था। जो स्थान इतना छोटा था और जिसमें माल वगैरह लाने में इतनी कठिनाई पड़ती थी कौन जान सकता है कि समय आने पर यहाँ बड़े २ स्टीमर और जहाज हमेशा पड़े रहेंगे। सन् १८५४ में सर वार्टले फ्रेअर (Bartle Frere) के कमीश्नरशिप में जहाजों को यहाँ बंदर में पहुँचाने के लिये खियामारी नामक आइस लैंड और करॉंची के बीच नेपियर मोले या कासवे नामक रास्ता बनाया गया। इसके बन जाने से छोटे २ जहाजों को यहाँ तक आने में सुविधा हो गई।

सन् १८५६ में इस बंदर के इन्प्रुव्ह करने के लिये एक स्कीम बनाई गई। तथा इसे लंडन के इंजिनियर मि० जेम्स वाल्कर के पास भेजी। इसने इस स्कीम के खर्च के लिये २९ लाख रुपया खर्च बतलाया। इस स्कीम के पास हो जाने से नीपटिडीज के पास बहुत चौड़ा और २५ फीट गहरा रास्ता हो जाता। मगर इतना खर्च न करते हुए बहुत वाद-विवाद के पश्चात् 'मनोरा ब्रेक वाटर' नामक स्कीम से काम लिया गया जिससे १५०३ फीट चौड़ा रास्ता हो सकता था। यह स्कीम सन् १८६९ से शुरू की गई और १८७३ में करीब ७ लाख की लागत से पूरी हुई। इसके अतिरिक्त कई छोटे २ कार्यों को करते हुए सन् १८८० में जहाजो को सुविधा पूर्ण तरीके से पोर्ट में ले आने के कामों को पूर्ण करने के लिये हारवर बोर्ड की स्थापना हुई। यही बोर्ड एक्ट ६ के अनुसार सन् १८८८ मे पोर्ट ट्रस्ट के रूप में बदल गया। अपने समय में बोर्ड ने कई काम किये। उसने खियामारी और इस्ट केवल को बढ़ाया जिससे टिडल फ्लो नामक केनल से सीधा रास्ता बन गया। सन् १८८२ में मेरी वेदर पियर merewetherpier नामक बंदर खोला गया जहाँ एक जहाज एवं ट्रूप रह सके। इसके पश्चात् २ हजार फिट लम्बा इरस्कीन नामकस्थान और १६०० फीट लम्बा जेम्स वार्फ (gemas wharf) नामक स्थान खोले गये। यहाँ सब मिल कर करीब १० जहाज रह सकते हैं। इसके अतिरिक्त नार्थ वेस्टर्न रेलवे से वार्ड से करो का सम्बन्ध स्थापित किया। आयल स्टीमर के लिये खियामारी में स्पेशल इन्तिजाम किया। जहाँ ४ जहाज रह सकें। वायर हाउस जहाँ सब माल रखा जाता है वहाँ मान्स फिल्ड इम्पोर्ट यार्ड बनवाया।

इस समय जहाजो के आने के रास्ते प्रायः २४½ फीट गहरे हैं जो कि सुन्दर मौसिम

आने पर बनाए गये हैं। इसके अतिरिक्त २ रास्ते और जो कि २८ फीट गहरे हैं, बनाए जा रहे हैं।

करॉंची पोर्ट पर जहाजों की बढ़ती—

सन् १८४७, ४८ में इस बन्दर पर कुल २९१ देशी काफ थे। जिनका कुल वजन ३०५०९ टन था। सन् १९०३,४ में दूसरे विदेशी बंदरों से यहाँ ३८४ काफ जिनमें १७४ तो स्टीम से चलते थे जिनका वजन ३०११०९ टन था। इसी साल ५१५ काफ यहाँ से बाहर के बंदरों पर भेजे गये।

भारत और बर्मा के पोर्टों से यहाँ १३११ आये। जो कि ५६७४३६ टन माल ले जा सके थे। इसी प्रकार भारत तथा बर्मा के पोर्टों पर यहाँ से ११७७ गये जो कि ३९२४९३ टन वजन के थे। इन सबका इन्तिजाम यहाँ के पोर्ट ट्रस्ट के द्वारा होता है। इसकी आय सन् १९०३,४ में करीब १९ लाख तथा खर्च करीब १३ लाख का था। इसके चार पाँच साल बाद तक की औसत आमदनी २१ लाख तथा खर्च १५½ लाख का था। यहाँ की जहाजी कम्पनियों में खास कर एलरमेन, विलसन, स्ट्रिक, हंसा, आस्ट्रियन लॉयड, ब्रिटिश इंडिया, और बाम्बे स्टीम नेवि-गेशन कम्पनियाँ हैं।

म्यूनिसिपैलिटी—

इस शहर में म्युनिसिपेलिटी की स्थापना सन् १८५२ में हुई। इसकी आय बढ़ते २ सन् १९०१ में १२ लाख की हुई। इसके पश्चात् १९०३, ४ में १५ लाख की आमदनी तथा १४ लाख का खर्च हुआ। इसकी आमदनी के खास जरियों में से कस्टम से १० लाख (इसमें ६ लाख की वापस की हुई रकम शामिल नहीं है) घर और जमीन का टेक्स ५३०००) और किराया २७०००) है। इसी प्रकार खर्च की रकमों में खास २ जैसे इन्तिजाम में ७ लाख, पानी सप्लाई करने में ६२०००) कन्सरवेन्सी में १५०००) विद्याखाते में ४९०००), हास्पिटल और दवाखानों में १५०००) पब्लिक वर्क्स में १६३०००) है।

कैण्टूनमेंट का इन्तिजाम भी कमेटी के ही हाथों में है। वहाँ की आमदनी तथा खर्च सन् १९०३, ४ में करीब १८५००) का था।

करॉंची में सबसे त्रुटिपूर्ण बात है पानी की कमी। यहाँ के बहुत से कुएँ तो पानी पीने के काम में ही नहीं आते। हाँ, लियारी में कुछ कुएँ काम देते हैं। बंदर पर रहने वाले और खिया-मारी के लोग गाड़ियों द्वारा पानी प्राप्त करते हैं जो कि छावनी से लाया जाता है। बरफ बनाने के लिये कोटरी नामक स्थान से रेल के द्वारा पानी आता है। इसी प्रकार की कमी को पूर्ण करने के लिये सन् १८८२ में मालियर नामक नदी से एक बड़ी नहर करीब १८ मील लम्बी काट कर यहाँ लाई गई है। इसमें करीब ५ लाख रुपैया खर्च हुआ। इस नहर के आजाने से करॉंची

शहर, छावनी तथा खियामारी में पानी सप्लाय करने एवं नल वगैरह की व्यवस्था करने में कुल खर्च १७ लाख का हुआ। बाहर के नल से करीब ३ लाख रुपैया सालाना की आय होती है। इसमें से ३२६००) मेन्टेन्स चार्ज में चले जाते हैं।

यहाँ के व्यापारियों का परिचय इस प्रकार है:—

बैंकर्स एण्ड लैंड लार्डस

मेसर्स एदलजी दिनशा

लगभग ५० वर्ष हुए एदलजी दिनशा के नाम से यह फर्म स्थापित है। इसके संस्थापक स्वर्गीय मि० एदलजी दिनशा सी० आई० ई० थे। आपके साथ आपके पुत्र स्वर्गीय मि० नादिरशाह भी इस फर्म में शामिल थे। लगभग १५ वर्ष पूर्व याने एदलजी दिनशा की मृत्यु के पश्चात् मि० नादिरशाह के साथ उनके लड़के भी इस काम में शामिल हो गये। सन् १९२२ में मि० नादिरशाह की मृत्यु हुई। इस समय इस फर्म का काम स्वर्गीय मि० नादिरशाह के पुत्र मि० होशंग, मि० मिनोकर (Minocher) तथा मि० दिनशा करते हैं।

इस फर्म की करांँची में बहुत भारी लैण्ड लार्ड प्रापर्टी है। इसके सिवाय यह फर्म जहाजों को कोयला सप्लाय करने का काम करती है। पञ्जाब और सिन्ध में इसकी कॉटन जीनिंग और प्रेसिंग फैक्टरीज हैं। इसका ऑफिस नं० ११ आर० ए० लाइन्स करांँची में है।

मि० होशंग बाम्बे यूनिवर्सिटी के ग्रेज्यूएट हैं। बीस बरस से आप यहाँ पर म्यूनिसिपल कौंसिलर हैं। तथा कैण्टूनमेण्ट बोर्ड करांँची के मेम्बर तथा वाईस प्रेसिडेण्ट हैं। लैण्ड आनर्स डिफ्रेन्स एसोसिएशन करांँची के आप प्रेसिडेण्ट हैं। इसके सिवा कई व्यापारी कम्पनियों के आप डाइरेक्टर हैं।

इस परिवार ने कई लाख रुपये सार्वजनिक कार्य्यों में दान किये हैं। जिनमें से एक लाख रुपये लेडी डफरिन हास्पिटल में, एक लाख पचास हजार रुपया एन० इ० डी० सिन्ध सिविल इञ्जीनियरिङ्ग कालेज की स्थापना में और सात लाख से अधिक रुपया बम्बई यूनिवर्सिटी में स्कॉलर्शिप्स देने के लिये दिया है।

मेसर्स मोतीलाल गोवर्द्धनदास

भारतवर्ष के विभिन्न प्रान्तों में मारवाड़ी समाज के जो थोड़े से-गिने हुए-उज्ज्वल प्रकाश-बिन्दु दृष्टिगोचर होते हैं—जिनके प्रतिभापूर्ण अस्तित्व पर, जिनके आश्चर्यजनक कार्यों पर और जिनकी अप्रतिहत उदारता पर न केवल मारवाड़ी समाज को प्रत्युत सारे भारतीय समाज

को अभिमान हो सकता है, उन भव्य प्रकाश-बिन्दुओं में करांची का सुप्रसिद्ध मोहता परिवार भी एक है। इस परिवार का इतिहास अभूतपूर्व धैर्य्य, उज्वल मनुष्यत्व और आकर्षक उदारता का इतिहास है, जिसकी एक २ घटना गौरवपूर्ण और साहस तथा मनुष्यत्व को उत्तेजना देनेवाली है। इस परिवार का संक्षिप्त परिचय पाठकों के सम्मुख रखते हुए हमें अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है।

प्रारम्भ और उन्नति—

मोहता परिवार की इस सुप्रसिद्ध फर्म के संस्थापक रायबहादुर सेठ गोवर्द्धनदासजी मोहता ओ० बी० ई० हैं। आप बिकानेर निवासी श्रीयुत स्व० मोतीलालजी मोहता के सबसे छोटे पुत्र थे। आपका जन्म संवत् १९१२ में हुआ। आपके पिता श्रीयुत् मोतीलालजी मोहता साधारण स्थिति के पुरुष थे। श्रीयुत् सेठ गोवर्द्धनदासजी प्रारम्भ ही से प्रखर बुद्धि और प्रतिभाशाली थे। आपने केवल १६ वर्ष की अवस्था ही में बिकानेर से कलकत्ते की यात्रा की। उन दिनों बीकानेर से देहली तक रेलवे लाइन नहीं बनी थी। इसलिए इस लम्बे सफर को ऊँटों की कष्टदायक सवारी से तय करना पड़ता था। इस सफर में सर्दी, गर्मी और बरसात के कितने भीषण कष्ट उठाना पड़ते थे उसकी कल्पना भी करना आज कठिन है। मगर सेठ गोवर्द्धनदासजी इन कष्टों की बिलकुल परवाह न कर अत्यन्त धैर्य्य और सहनशीलता के साथ कर्मक्षेत्र में अग्रसर होते गये। प्रारम्भ में आप अपने बड़े भ्राता सेठ जगन्नाथजी के अधीनस्थ कपड़े की दुकानदारी करते रहे। फिर कारतारक कम्पनी की मुत्सद्दीगिरी का काम आपको मिल गया और उसके लिए आपको बम्बई में अपनी दुकान स्थापित करनी पड़ी। इसके पश्चात् संवत् १९४० में आपने उक्त ऑफिस के साथ करांची में भी अपनी दुकान खोल दी।

जिस समय करांची में आपने प्रवेश किया था उस समय करांची एक छोटा सा कस्बा था। यहाँ की बस्ती अधिकतर मुसलमानों की और सिंधी हिन्दुओं की थी। जो हिन्दी भाषा से बिलकुल अपरिचित थे। ऐसे अपरिचित और नवीन प्रदेश में आपने बिना नौकर चाकर के केवल एक माहेश्वरी मित्र के साथ प्रवेश किया। ये दोनों व्यक्ति किसी प्रकार अपनी रोटी वगैरह बनाकर उदर पूर्ति का साधन फिर अपने कर्मक्षेत्र में जुट जाते थे। कष्टसहनशीलता, आत्मसंयम और उत्कट कर्मवीरता का यह कितना ज्वलन्त उदाहरण है इसका अनुमान प्रत्येक पाठक स्वयं कर सकता है।

करॉंची में निवास करते २ आपकी यहाँ के कितने ही अंग्रेज लोगों से मैत्री हो गई। जिनसे आपको पता लगा कि यह कस्बा भविष्य में शीघ्र ही एक शहर का रूप धारण करेगा। तब आपने अपनी दूरदृष्टा बुद्धि से यहाँ पर जमीन खरीदना आरम्भ की। कितने ही लोग

उस समय आपके इस कार्य की मजाक करते थे, मगर आप उनकी कुछ भी परवाह न कर दृढ़ चित्त से अपना काम करते जाते थे। संवत् १९४५ में आपने इस खरीदी हुई जमीन में अपना ऑफिस, दुकान, गोदाम और रहने का मकान बनवाया।

गोवर्द्धनदास मार्केट की स्थापना—

करॉंची में गोवर्द्धनदास मार्केट की स्थापना इस फर्म के इतिहास में एक बड़ी महत्त्वपूर्ण घटना है। इस मार्केट के बनने के पूर्व कपड़े का बाजार अत्यन्त तङ्ग और गन्दी गलियो मे लगा करता था। इन गलियों में हमेशा अत्यन्त दुर्गन्ध आया करती थी, जिससे व्यापारियों को बहुत अधिक कष्ट होता था। सेठ साहब का ध्यान इस कष्ट की ओर आकर्षित हुआ और आपने एक सुव्यवस्थित मार्केट बनाने की कल्पना कपड़े के व्यापारियों के सम्मुख रक्खी। और उसके अनुसार आपने संवत् १९५० में मार्केट की नींव डाल दी।

यहाँ एक बात लिख देना आवश्यक है कि इतना बड़ा मार्केट तयार करने के लिए भी सेठजी ने किसी इंजिनियर से नक्शा नहीं बनवाया प्रत्युत खुद अपने ही बुद्धिबल से आपने एक साधारण मिस्त्री से नक्शा बनवा कर कार्य प्रारम्भ कर दिया। दो वर्ष के पश्चात् जब मार्केट बन कर तयार हुआ तो उसे देख कर अच्छे २ इञ्जीनियरों ने आश्चर्य प्रकट किया। मार्केट जितना मजबूत बना उतना ही सुन्दर और सुविधाजनक भी है। इसी मार्केट की प्रतिद्वन्द्विता में यहाँ पर दो मार्केट और बने, और कुछ समय तक इनकी वजह से सेठ साहब को हानि भी उठाना पड़ी पर आगे जाकर समझौता हो गया और मार्केट का कार्य भली प्रकार चलने लगा।

प्लेग का प्रकोप—

इसी समय करॉंची में एक घटना और हो गई जिसका उल्लेख करना यहाँ पर आवश्यक है और जिससे सेठजी के असीम धैर्य और उत्कट साहस का पता चलता है। संवत् १९५३ मे करॉंची में भीषण प्लेग चल निकला। जिससे लोग करॉंची छोड़ २ कर बेतहाशा भागने लगे। चारों ओर लाशों और बीमारो का भयङ्कर दृश्य नजर आने लगा। ऐसे समय में आपको बुलाने के लिए बीकानेर से तार पर तार आने लगे। मगर इस विकट परिस्थिति मे भी आपका चित्त विचलित न हुआ। इस भीषण समय में आपकी परोपकार-परायणता का पूरा परिचय मिला। आप डाक्टरों के साथ में करॉंची के मुहल्ले २ में जाकर बीमारो को देखते, उनको आश्वासन देते और उनकी उचित सहायता करते थे। मार्केट के सब दुकानदार अपना २ माल असबाब छोड़ कर भाग गये थे, उनके माल असबाब की आपने रक्षा की।

इसी असीम सहिष्णुता, धैर्य्य और व्यापारिक दूरदर्शिता का परिणाम यह हुआ कि आपको अपने उद्योग में असीम सफलता मिली, और आप अत्यन्त साधारण स्थिति से उठकर केवल

स्व० रायबहादुर गोवर्द्धनदासजी मोहता (मोतीलाल गोवर्द्धनदास) कराची

ऋषिवर रामगोपालजी मोहता (मोतीलाल गोवर्द्धनदास) करांची

रायबहादुर शिवरतनजी मोहता (मोतीलाल गोवर्द्धनदास) करांची

स्व० मूलचन्दजी मोहता (मोतीलाल गोवर्द्धनदास) करांची

स्वावलम्ब से भारत के नामी २ व्यापारियों में गिने जाने लगे। आज भी करांची का यह सुप्रसिद्ध मार्केट आपकी कीर्ति और धैर्य्य का दैदीप्यमान स्मारक है।

करांची की दुकान पर आपके साथ आपके बहनोई सेठ गोवर्द्धनदास जी मूंदड़ा काम करते थे। आपकी विद्यमानता में सेठ साहब बड़े निश्चिन्त रहते थे। सम्वत् १९६२ में आपका स्वर्गवास हो गया, जिससे सेठ साहब को अत्यन्त दुःख हुआ। सेठ गोवर्द्धनदासजी मूँदड़ा के दो पुत्र हुए सेठ रामरतनजी और सेठ चांदरतनजी। उनमें से सेठ रामरतनजी मूंदड़ा का स्वर्गवास संवत् १९७५ में हो गया। इस समय सेठ चांदरतनजी इस फर्म में कार्य्य कर रहे हैं आपका परिचय आगे दिया जायगा।

श्रीयुत रामरतनजी मूँदड़ा बड़े ही होनहार और परिश्रमी थे। आपके कार्य्य से सेठ साहब बड़े निश्चिन्त रहते थे। आपकी अकाल मृत्यु से मोहता परिवार को अत्यन्त खेद हुआ। तथा काम अधिक नहीं बढ़ाया गया। आपका भी पब्लिक लाईफ बहुत उत्कृष्ट था। आप भी करांची और बीकानेर में बहुत लोकप्रिय थे। आपके इस समय एक पुत्र है जिनका नाम दुर्गादासजी है।

आपके पश्चात् आपके भाई चांदरतनजी ने कार्य सम्हाला। इस समय आप उपरोक्त फर्म के सब काम भली प्रकार सम्हालते हैं। कपड़े के व्यापारियों में आप बड़ी श्रद्धा की दृष्टि से देखे जाते हैं। गवर्नमेंट ने आपको करांची में आनरेरी मजिस्ट्रेट के पद से सम्मानित कर रक्खा है।

सार्वजनिक कार्य्य—

अर्थ संचय के साथ ही साथ सेठ गोवर्द्धनदासजी ने धार्मिक और सार्वजनिक कार्य्यों में भी खुले हाथों से दान दिया। वैसे तो आपके सार्वजनिक कार्यों की लिस्ट देना एक प्रकार से असम्भव ही है क्यों कि आपके कई दान तो ऐसे होते थे जिनकी कानो कान खबर भी नहीं होती थी फिर भी उनके कुछ प्रसिद्ध कार्य्यों का विवरण इस प्रकार है।

१—सम्वत् १९४८ में जब बीकानेर रेलवे लाइन बनी तब वहाँ के स्टेशन पर एक धर्मशाला की आवश्यकता प्रतीत हुई। अतः आपने तथा सेठ लक्ष्मीचंदजी और सेठ जगन्नाथ जी ने राज्य से जमीन लेकर वर्त्तमान विशाल धर्मशाला बनवाई। यह धर्मशाला आज भी अपनी उसी उन्नत हालत में मोहता परिवार की स्मृतियों को जीवित रख रही है। इस धर्मशाला में एक आयुर्वेदिक औषधालय तथा संस्कृत पाठशाला भी है। इसके बनवाने में करीब १॥ लाख रुपया लगा है। तथा इसके खर्च को चलाने के लिये दो लाख का फण्ड अलग किया हुआ है।

२—संवत् १९६५ मे आपके छोटे पुत्र श्रीयुत मूलचन्द्रजी का केवल १६ वर्ष की आयु मे

देहावसान हो गया। यह एक ऐसी घटना थी जो सेठ साहब के चित्त पर काफी बुरा असर डाल सकती थी मगर इस कठिन समय में भी आपने असीम साहस और धैर्य्य से काम लिया और और सारासार विवेक को न खोकर मूलचन्दजी के स्मारक में एक "मोहता मूलचन्द विद्यालय" खुलवाया। इसके भवन-निर्माण में करीब ५० हजार रुपया लगा और इसके निर्वाह के लिए करॉंची के एक मकान का ट्रस्ट वनवा दिया जिसका मूल्य अभी तीन लाख रुपया अनुमान किया जाता है।

३—सिन्ध में आँखों की बीमारी का प्रकोप अधिक रहता है और इसके निवारण के लिए उस समय कोई विशेष साधन न था। अतएव आपने ७०००० की लागत से करॉंची में मोहता मोतीलाल गोवर्द्धनदास नामक आँख का अस्पताल खुलवाया।

४—बीकानेर शहर के दक्षिणी कोण पर आपने करीब ४०००० की लागत से विस्तृत भूमि पर एक धर्मशाला तथा प्याऊ बनवाई।

इसके अतिरिक्त कई बार अकाल के टाइम पर तथा और २ समयों पर लाखों रुपयों का दान किया। कहने का मतलब यह कि करॉंची मे शायद ही कोई ऐसा पब्लिक कार्य्य या पब्लिक संस्था होगी जिसमे आपने कुछ न कुछ दान न दिया हो। देहावसान के समय में आपने एक लाख बीस हजार रुपया अपनी बाईबेटियों को तथा करीब साठ हजार रुपया भिन्न२ रूपों में दान किया।

आपकी इन सब सेवाओं से प्रसन्न होकर गवर्नमेण्ट ने आपको "राय बहादुर" और ओ० बी० ई० की प्रतिष्ठित पदवियों से सम्मानित किया।

देहावसान—

सम्वत् १९७५ के भाद्रपद मास से आपका स्वास्थ्य कुछ खराब होने लगा जिससे आप करॉंची छोड़ कर बीकानेर आ गये। आपकी इच्छा इलाज करवाने की न थी मगर सब लोगों के आग्रह से आपने इलाज करवाना स्वीकार किया, मगर इस रोग से आपको पूर्ण आरोग्य लाभ न हो सका और संवत् १९७६ की वैशाख सुदी सप्तमी को आपने उठते ही हरिद्वार जाने की आज्ञा दी। तदनुसार सब लोग स्पेशल ट्रेन से हरिद्वार को रवाना हो गये। वहाँ पहुँच कर आपने अपनी इच्छानुसार गंगास्नान किया। जप-जाप करवाये और अपने सब मनोरथ पूर्ण कर वैशाख सुदी ११ को देहत्याग किया।

आपके स्वर्गवास होने के समाचार सुन कर करॉंची और बीकानेर में शोक छा गया। [illegible] में करॉंची का मार्केट बन्द रक्खा गया। कई प्रसिद्ध पत्र पत्रिकाओं ने आपके [illegible] एडिटोरियल नोट लिखे। तथा उनके कुटुम्बियों को देश विदेश से सैकड़ों सहानुभूतिसूचक तार व पत्र आये।

स्व० रामरतन दासजी मूंदड़ा (मोतीलाल गोवर्द्धनदास) करांची
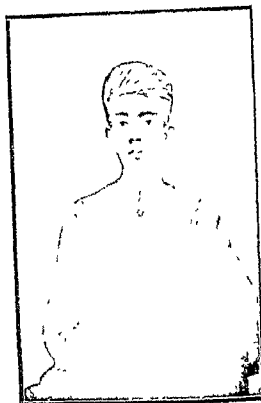
बाबू गिरधरलालजी मोहता (मोतीलाल गोवर्द्धनदास) करांची

बाबू चांदरतनजी मूंदड़ा (मोतीलाल गोवर्द्धनदास) करांची

बाबू दुर्गादासजी मूंदड़ा (मोतीलाल गोवर्द्धनदास) करांची

मतलब यह कि सेठ गोवर्द्धनदासजी का जीवन प्रारम्भ से अन्त तक उत्कृष्ट मानव-जीवन का एक सर्वोत्कृष्ट नमूना है। जिससे प्रत्येक व्यक्ति शिक्षा ग्रहण कर सकता है।

सेठ गोवर्द्धनदासजी के तीन पुत्र हुए। (१) श्रीमान् सेठ रामगोपालजी मोहता (२) रा० ब० शिवरतनजी मोहता (३) श्रीयुत मूलचन्दजी मोहता। इनमें से श्रीयुत मूलचन्दजी मोहता के असामयिक स्वर्गवास का विवेचन पहले किया जा चुका है। शेष दोनों भ्राताओं ने अपने सत्कार्यों से किस प्रकार अपने पूज्य पिताजी की स्मृति को उज्ज्वल किया यह आगे मालूम होगा।

श्रीमान् रामगोपालजी मोहता

आप श्रीमान् सेठ गोवर्द्धनदासजी के ज्येष्ठ पुत्र हैं। आपका जीवन बड़ा ही परोपकारपूर्ण रहा है। इस समय तो आप व्यापारिक कार्यों से रिटायर होकर सात्विक और ऋषितुल्य जीवन व्यतीत कर रहे हैं। मगर इसके पूर्व आपका व्यापारिक जीवन भी अत्यन्त गौरव-पूर्ण रहा है यद्यपि आपके समय में बीकानेर में अंग्रेजी की शिक्षा का प्रचार न था। फिर भी आपका अंग्रेजी ज्ञान बहुत ऊँचे दर्जे का है। आपने अपने पिताजी के स्थापित किये हुए व्यापार को बहुत तरक्की दी। छोटी उम्र से ही आपने व्यापारिक कार्य्य में भाग लेना प्रारम्भ कर दिया था और अपने पिताजी के जीवनकाल ही में आपने व्यापार को बखूबी सम्हाल लिया था व्यापारिक बुद्धि आपकी बड़ी प्रखर थी। करीब २० वर्ष पूर्व आपने व्यापार साहित्य पर एक अच्छी और उपयोगी पुस्तक निकाली थी। आपने करॉंची में मेसर्स हरसन मोहता कम्पनी में अपना साझा डाला और आज तो इस कम्पनी के अधिकांश शेअर आप ही की फर्म के पास है। यह कम्पनी केवल करॉंची ही में नहीं, प्रत्युत सारे उत्तर पश्चिमी भारत में अपने ढङ्ग की सब से बड़ी है। इसका परिचय आगे दिया जायगा।

सेठ रामगोपालजी का जीवन न केवल व्यापारिक ही रहा प्रत्युत सार्वजनिक और समाज सुधार के कार्य्यों में भी आपने भारतवर्ष में एक उदार आदर्श उपस्थित कर दिया है। सामाजिक क्रान्ति के आप एकान्त पक्षपाती और सुधार के उपासक हैं। आध्यात्मिक जीवन भी आपका बड़ा उत्कृष्ट है। आप वेदान्तदर्शन के अच्छे विद्वान् हैं। हाल ही में "सात्विक जीवन" नामक एक उत्कृष्ट पुस्तक प्रकाशित कर आपने मुफ्त में बाँटी है।

रायबहादुर सेठ शिवरतनजी

आप राय बहादुर सेठ गोवर्द्धनदासजी के द्वितीय पुत्र हैं। आपका जन्म संवत् १९४५ की श्रावण शुक्ला ८ में हुआ। आपका भी व्यापारिक और सामाजिक जीवन बड़ा उत्कृष्ट है। करॉंची मे आप जितने लोकप्रिय हैं उतना व्यापारिक समाज में शायद ही कोई दूसरा व्यक्ति

होगा। अमीर और गरीब सब आपको हृदय से चाहते हैं खास कर यहाँ के हिन्दू-हितों के लिए तो आप जीवन-स्वरूप हैं आपने अपने घर में परदा-सिस्टम के समान भयङ्कर कुप्रथा को तोड़ कर मारवाड़ी समाज में एक अच्छा आदर्श उपस्थित किया है। आप कराँची के पीस गुड्स एसोसियेशन के प्रेसिडेण्ट, मारवाड़ी विद्यालय के प्रेसिडेण्ट, हिन्दी साहित्य भवन के प्रेसिडेण्ट तथा हिन्दू जिमखाना के प्रेसिडेण्ट हैं। मतलब यह कि कराँची के प्रत्येक सार्वजनिक कार्य्य मे आपका कुछ न कुछ हाथ अवश्य रहता है। सन् १९२८ में गवर्नमेण्ट ने आपको राय बहादुर की उपाधि से सम्मानित किया। बीकानेर दरबार में भी आपका बहुत अच्छा सम्मान है। वहाँ की लेजिस्लेटिव एसेम्बली के आप नॉमिनेटड मेम्बर हैं। हाल ही मे जोधपुर स्टेट से आपको अस्सी लाख रुपये का बिल्डिंग कण्ट्राक्ट मिला है। अभी तक शायद ही किसी भारतीय को इतना बड़ा कण्ट्राक्ट मिला होगा।

कुँवर गिरधरलालजी

आप राय बहादुर सेठ शिवरतनजी के ज्येष्ठ पुत्र हैं। बड़े उत्साही और होनहार हैं। आप राजस्थान नवयुवक-मण्डल कराँची के प्रेसिडेण्ट हैं। आप भी व्यापार में भाग लेते हैं।

सार्वजनिक कार्य्य

ऊपर जिन सार्वजनिक कार्य्यों का वर्णन किया गया है वे सब रा० ब० गोवर्द्धनदासजी के हाथो से किये हुए हैं। आपके पश्चात् सेठ रामगोपालजी ने तथा सेठ शिवरतनजी ने और भी लाखों रुपयो का दान कर अपनी असीम उदारता और दानवीरता का परिचय दिया है। आपके किये हुए दानों में से कुछ २ मुख्य २ कार्य्यों का परिचय इस प्रकार है।

१—हिन्दू अनाथालय कराँची—यह आश्रम करीब चार वर्ष पूर्व स्थापित किया गया। इसका ट्रस्ट २॥ लाख रुपये का है। इस ट्रस्ट से कराँची हिन्दू अनाथालय, बीकानेर का हिन्दू अनाथालय और वनिताश्रम ये तीन संस्थाएँ चलायी जाती हैं।

२—हिन्दू अनाथाश्रम बीकानेर—यह आश्रम भी अनाथ विद्यार्थियों को आश्रय और शिक्षा देने के लिए बनाया गया है। यह भी उपरोक्त ट्रस्ट फण्ड से चलता है। इसके अतिरिक्त हाल ही में आपने जोधपुर में एक अनाथालय खोलने के लिए एक लाख रुपया और प्रदान किया है।

३—हिन्दू वनिताश्रम बीकानेर—यह आश्रम निराश्रित और समाज-द्वारा प्रताड़ित स्त्रियों को आश्रय देने के लिए स्थापित किया गया है। इसकी एक शाखा कराँची में भी है।

४—हिन्दू जिमखाना—यहाँ की म्यूनिसिपैलिटी ने हिन्दू और मुसलमानों को जिमखाना बनाने के लिए बहुत समय पूर्व जमीन दी थी। बहुत दिनों तक द्रव्य के अभाव से जिमखाना

मोहता पैलेस (हवाबन्दर) करांची

नहीं बन सका तब आपने ३५०००) देकर यह जिमखाना बनवाया। इस जिमखाने में सब प्रकार के स्पोर्ट् की शिक्षा दी जाती है।

५—रामरतन गोवर्द्धनदास मूंदड़ा लायब्रेरी एण्ड हॉल—इस नाम से करीब १५००० की लागत से म्यूनिसिपैलिटि की जमीन पर एक लायब्रेरी और हॉल बनाया गया है।

६—मोहता मूलचन्द बोर्डिंग हाउस—ऊपर जिस मोहता मूलचन्द विद्यालय का विवेचन किया गया है। उसके साथ ही विद्यार्थियों के रहने के लिये यह हाऊस बनाया गया है इसमें अभी करीब ७५ विद्यार्थी रहते हैं। जिनमें कई फीस देकर और कई बिना फीस रहते हैं।

इसके अरिरिक्त बाबू गिरधरलालजी के शुभ विवाह के उपलक्ष में आपकी ओर से १५१०००) का दान किया गया। जिसमें से ५१०००) लण्डन में शिवमन्दिर बनाने के लिए २५०००) हिन्दू विश्वविद्यालय के लिए तथा शेष रकम और २ संस्थाओं को दी गई।

इसके अतिरिक्त और २ कार्यों की लिस्ट देना तो एक प्रकार से असम्भव ही है। मतलब यह कि प्रत्येक शुभ और अच्छे कार्य में आपकी ओर से हमेशा कुछ न कुछ जरूर दिया जाता है।

व्यापारिक परिचय

फर्म	विवरण
१—मेसर्स मोतीलाल गोवर्द्धनदास करांची (T. A. Marketwala)	यह फर्म बैंकर्स और लैण्ड लॉर्डस् है। करांची का सुप्रसिद्ध गोवर्द्धनदास मार्केट तथा मोहता बिल्डिंग तथा और बहुत से बड़े २ मकानात इसके अण्डर में हैं। जिनसे किराये की प्रचुर आमदनी होती है।
२—मेसर्स गोवर्द्धनदास रामगोपाल करांची (T. A. Badaseth)	इस फर्म पर सब प्रकार के कपड़े का थोक व्यापार होता है।
३—मेसर्स रामगोपाल शिवरतन करांची	इस फर्म पर प्रिण्टेड और रंगीन कपड़े का थोक व्यापार होता है।
४—मेसर्स शिवरतन चांदरतन	इस पर छींट और फैन्सी कपड़े का थोक व्यापार रोता है।
५—मेसर्स एलिगर मोहता एण्ड क० लि० (T. A. Mohta)	यह फर्म जॉन ग्लैन एण्ड कम्पनी ग्लासगो की सोल एजण्ट तथा अन्य कई कम्पनियों के कपड़े विभाग की एजण्ट हैं। इस पर इन्श्युरेन्स का काम भी होता है।

६—मेसर्स हरमन मोहता एण्ड कं० लि० (T. A. Expension)	इस फर्म के भी अधिकांश शेअर आप ही के पास हैं। यह फर्म इञ्जीनियर और शिप बिल्डर्स है। यह कई बड़ी २ कम्पनियों की सोल एजण्ट्स तथा एजण्ट है। इसकी ब्रांचेस लाहौर और मेरठ में हैं।
७—दिल्ली—मेसर्स गोवर्द्धनदास रामगोपाल चांदनी चौक T.A.Mohatta	इस फर्म का यहाँ आफिस तथा दुकान दोनों ही हैं। यहाँ पर पीसगुड्स का बहुत बड़ा व्यापार होता है।
कानपुर—मेसर्स गोवर्द्धनदास रामगोपाल (जनरलगंज T. A. Tredgoods)	यहाँ भी पीसगुड्स का व्यापार होता है।
कलकत्ता—मेसर्स मदनगोपाल रामगोपाल २९ स्ट्राण्ड रोड	यह फर्म स्टिनर्स कम्पनी की बेनियन और सोलडिलर्स है। इसके अण्डर में तीन दुकाने हैं। सब पर रंगीन कपड़े का काम होता है। कलकत्ते का सुप्रसिद्ध गणेशभवन भी आपका ही है। झरिया में सीतानाला, कोहिनूर और इष्टनन्दी नामक आपकी तीन कॉलेरिज हैं जिसका कोयला इतना उत्तम है कि जोधपुर और बीकानेर रेलवे इस कोयले के मिलते हुए दूसरा लेना पसन्द नहीं करती।

बीकानेर—मेसर्स सदासुख मोतीलाल—इस फर्म पर बैंकिंग बिजिनेस होता है।

इसके अतिरिक्त करांची मे मेसर्स रामगोपाल शिवरतन के नाम से यह स्टिनर्स कम्पनी की सिन्ध, पंजाब, दिल्ली और यू० पी० के लिए सोलडिलर्स है।

इस फर्म का करांची मे क्लिफ्टन पर एक सुन्दर मोहता पैलेस करीब ५ लाख की लागत का बना हुआ है। करांची के दर्शनीय स्थानों में यह भी एक है। इसका फोटो इस ग्रन्थ में दिया जा रहा है।

मेसर्स विशनदास फतेचन्द एण्ड सन्स

यह फर्म करांची में बहुत पुरानी है। करांची शहर जिस समय एक छोटे से गाँव के रूप में था, तभी से इस फर्म के मालिक यहाँ पर बसे हुए हैं। सबसे पहले सेठ फतेचन्द ने इस फर्म को यहाँ पर स्थापित किया। आपका बिजिनेस डायरेक्ट चीन के साथ था। तथा बम्बई,
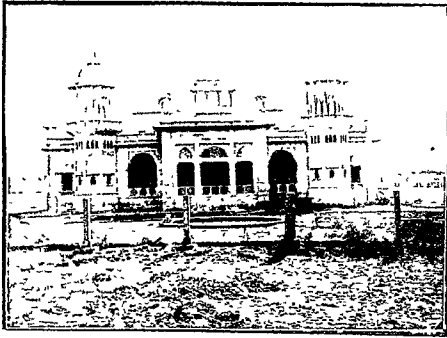
हिन्दू जिमखाना बिल्डिंग (मोतीलाल गोवर्द्धनदास) करांची
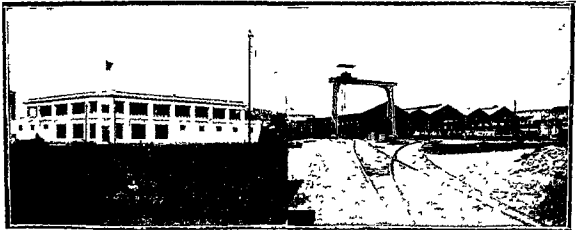
ऑफिस एण्ड वर्क शॉप हरमन एण्ड मोहता लिमिटेड करांची

लाला जसवंतरायजी चूड़ामणि एम ए (जसवंतराय एण्ड सस) कराची

सेठ डूंगरसी श्यामजी जोशी (डूंगरसी एण्ड संस) करांची

लाला रूपलाल ठाकुरदास (धनपतमल

महाराज पंडित सुंदरलालजी इच्छापूरन करांची

पंजाब और सिन्ध में आपकी करीब ४० ब्रॉन्चेस थीं। आपका स्वर्गवास करीब ४३ वर्ष पूर्व होगया। आपके पाँच पुत्र थे। उनके नाम क्रमशः श्रीयुत् होतचन्दजी, श्रीयुत् विशनदासजी, श्रीयुत् ठाकुरदासजी, श्रीयुत् रतनचन्दजी और श्रीयुत् रेवाचन्दजी हैं। इन पाँचों भाइयों के फर्म संवत् १९५५ में अलग २ हो गये। इनमें से यह फर्म सेठ विशनदासजी का है। सेठ विशनदासजी का स्वर्गवास सन् १९२७ ई० में ५७ वर्ष की आयु में हो गया। आपके इस समय एक पुत्र है। जिनका नाम श्रीयुत जमनादासजी है। आप सिन्धी-लुहाना (सराई) जाति के सज्जन हैं।

इस फर्म की ओर से दान और सार्वजनिक कार्य्य भी बहुत हुए हैं। आपकी ओर से करांची में फतेचन्द् देवनदास खिलनानी हॉल बना हुआ है जो ए० ई० डी० नामक इञ्जीनियरिंग कॉलेज को दे दिया गया है। इसके अतिरिक्त दयाराम जेठानन्द खिलनानी हॉल और लायब्रेरी रेवर रोड पर आपकी ओर से बनाई गई है। इसमें फ्री लाइब्रेरी और लेक्चर हॉल है। इसके अतिरिक्त गोकुल में आपकी ओर से एक धर्मशाला तथा पब्लिक पार्क और कुआँ बना हुआ है। इसके सिवा जनाना अस्पताल बनाने के लिए सेठ फतेचन्दजी के नाम से पचपन हजार का एक ट्रस्ट फण्ड भी है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

करॉंची—मेसर्स विशनदास फतेचंद एन्ड सन्स बम्बई बाजार (T. A. Mourdhwaja)	इस पर खासकर कपड़े का बहुत बड़ा इम्पोर्ट होता है। इसके अतिरिक्त बैंकिंग बिजिनेस भी बहुत अधिक होता है। यह फर्म करांची में बहुत बड़ी लैण्ड लॉर्ड्स है। कमीशन एजन्सी का भी यहाँ पर काम होता है।

वैद्यराज महाराज पंडित सुंदरलालजी इच्छापूरन, वैद्यवाचस्पति

प्राचीन समय में नौशेरवाँ बादशाह के समय श्रीमान् महाराज पण्डित गंगारामजी कौल राजवैद्य हुए थे। जिन्होंने महत्वपूर्ण आयुर्वेदीय चिकित्सा का अपूर्व ग्रन्थ वैद्यकसार संग्रह नामक रचा है। इसके पश्चात् जम्मू व काश्मीर नरेश श्रीमान् महाराजा गुलाबसिंहजी के समय में प्रधान राजवैद्य श्रीमान् महाराज पण्डित सीतारामजी कौल हुए थे। तब से लेकर आज तक आपके पूर्वज सभी प्रशंसनीय लब्धप्रतिष्ठ राजवैद्य हुए हैं। इस समय में भी आपके ज्येष्ठ भ्राताजी श्रीमान् महाराज पण्डित मधुसूदनजी नाभा स्टेट के प्रधान राजवैद्य हैं। और श्रीमान् महाराज पण्डित दूनीचंद गाँव प्रागपुर जिला कांगडा में प्रसिद्ध वैद्यराज है।

आपके वृद्ध लोग पूर्वकाल मे तो काश्मीर निवासी थे, परंतु कुछ समय से जिला कांगड़ा में प्रागपुर ग्राम के वासी हुए। आपका जन्म संवत् १९१५ विक्रमी में प्रागपुर ग्राम में हुआ है। आप इस समय करॉंची नगर में सुप्रसिद्ध रईस, लेन्डलोर्ड और प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं। आपने आयुर्वेद का बहुत ही प्रचार किया है। लगभग ५० पचास वर्ष तक चिकित्सा का कार्य बड़े उत्साह के साथ करांची नगर मे किया है जब कि करॉंची की जनता देशी वैद्यक चिकित्सा तथा देशी वैद्य के नाम से घबराती थी और नाम सुनना भी पसंद नही करती थी ऐसे समय में आयुर्वेदीय चिकित्सा का प्रचार करना यह आपका ही पुरुषार्थ है। आपके पुरुषार्थ से आयुर्वेदीय चिकित्सा की महत्ता जनता के हृदय पर अंकित हुई और जनता ने विश्वास किया कि हमारी प्राचीन चिकित्सा-पद्धति आयुर्वेदीय ही है। आपके पास राजा महाराजाओ के दिये हुये बहुत से प्रशंसापत्र हैं और गवर्नमेंट के तरफ से भी उच्चकोटी के ऑफिसरों के दिये हुए बहुत से प्रशंसापत्र हैं।

आपने प्लेग के समय में हैजे की चिकित्सा चेलेन्ज दे दे कर अन्य चिकित्सकों की समानता में आयुर्वेदीय पद्धति के अनुकूल की थी और आयुर्वेदीय चिकित्सा का डंका बजा दिया था। जिससे आयुर्वेदीय चिकित्सा का प्रभाव जनता पर ऐसा पड़ा कि विदेशी चिकित्सा-पद्धतिवालों ने भी मुक्त कंठ से प्रशंसा आयुर्वेदीय चिकित्सा की की। और शनैः शनैः आयुर्वेदीय चिकित्सा की जाग्रति सिंध प्रांत में अच्छी प्रकार से हुई और आज दि ऑल इण्डिया आयुर्वेदिक कान्फ-रस होने का सौभाग्य करॉंची नगर को प्राप्त हुआ है।

जनता के उपकारार्थ तथा आयुर्वेद से अत्यन्त प्रेम होने के कारण धर्मार्थ आयुर्वेदीय औषधालय बृहत् रूप मे खोलने का निश्चय किया है जो कि ईश्वर की असीम कृपा से यावत् जीवनपर्यंत रु० ५०० पॉंच सो महावार के खर्च से चलाया जायगा। इस औषधालय का उद्घाटन ऑल इण्डिया आयुर्वेदिक के कान्फरंस अवसर पर ५-१-३० को बड़े समारोह से सब वैद्यो और शहर के प्रतिष्ठित लोगों को इकट्ठा कर के किया गया। इस औषधालय मे बिना किसी जातीय भेद-भाव के करीब १५० रोगी रोज औषधि पाते हैं। यह संख्या दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। आप दानवीर तथा अत्यन्त उदार पुरुष हैं। आपने अपने जीवन में हजारो रुपये का दान बहुत सी संस्थाओं को सहर्ष दिया है। आपकी प्रशंसा में जितना भी परिचय दिया जाय वह थोड़ा ही है।

आपकी बहुत सी लैण्डलार्ड प्रापर्टी करॉंची मे है। सिनेमा के लिए एक थियेटर हॉल भी आपने बनवाया है जिसके किराये की कॉफी आमदनी होती है

कॉटन एण्ड ग्रेन मरचेंट्स

मेसर्स अर्जुन खीमजी एण्ड को०

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ अर्जुन खीमजी और देवजी खीमजी और उनके दो लड़के सेठ भवानजी अर्जुन और सेठ भाणजी देवजी हैं। आप जैन धर्मावलम्बी दस्सा ओसवाल हैं। आपका रहना तेरा (कच्छ) में है। इस फर्म का हेड् ऑफिस बम्बई में है। बम्बई में यह फर्म करीब ३५ वर्ष से स्थापित है। कराँची में इस फर्म को स्थापित हुए करीब तीन वर्ष हुए। इस दुकान का मैनेजमेएट श्रीयुत शाहमूलजी भाई भोगीलाल करते हैं। आप कराँची फर्म के एक्सपोर्ट डिपार्टमेण्ट के वर्किंग पार्टनर भी हैं।

इस फर्म के मालिक दान, धर्म और सार्वजनिक कामों में हमेशा दान देते रहते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

बम्बई—मेसर्स अर्जुन खीमजी एण्ड को० आउट्रम रोड़फोर्ट (T. A. kabooladhu, chidan and)	इस फर्म पर रूई का जत्था तथा बैंकिंग बिजिनेस होता है। यह फर्म विलायत तथा जापान को रूई का एक्सपोर्ट भी करती है।
कराँची—मेसर्स अर्जुन खीमजी कैम्पबैल स्ट्रीट (T. A. chidanand)	इस फर्म पर रूई का एक्सपोर्ट और वाईंग होता है।

इसके अतिरिक्त कारंजा, धारवा, मोतीबाग, हुबली, अमलनेर, खामगाँव, मलकापुर इत्यादि स्थानो पर भी आपकी ब्रान्चेस हैं। जहाँ पर रूई की खरीदी का काम होता है। सब स्थानों पर आपकी दुकानें बहुत पुरानी हैं। इसके अतिरिक्त काटोल (C. P.) में आपकी जीनिंग फेक्टरी भी है।

मेसर्स अज्जूमल जगतराय

इस फर्म के मालिकों का मूल निवास-स्थान टंडोजाम (हैदराबाद) में है। इसके वर्तमान मालिक श्रीयुत अज्जूमलजी हैं। इस फर्म को कराँची में स्थापित हुए करीब ५० वर्ष हुए। इसकी स्थापना यहाँ पर सेठ जगतरायजी ने की। आपका स्वर्गवास हो चुका है। इस फर्म के मालिक सेठ अज्जूमलजी टंडोजाम में रहते है। कराँची फर्म का मैनेजमेण्ट नहैचलदासजी करते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

हेड ऑफिस-टंडोजाम (हैदराबाद) मेसर्स अब्जूमल जगतराय	यहां पर आपकी कॉटनजीन और प्रेस है। तथा रूई का व्यापार होता है।
करांची-मेसर्स अब्जूमल जगतराय खोरी गार्डन (T. A. Achhera)	यहाँ पर कॉटन विजिनेस और कमीशन एजेन्सी का काम होता है।
हैदराबाद सिन्ध— मेसर्स अब्जूमल जगतराय फुलेली (T. A. Rajawir)	यहाँ पर आपकी जीनिंग फैक्टरी है। तथा रूई का व्यापार होता है।

दी कराँची कॉटन कम्पनी

इस फर्म की स्थापना सन् १९२९ में हुई। इसकी स्थापना श्रीयुत सेठ छोटालाल खेतसी ने की। आपका मूल निवास-स्थान सायत्ता (काठियावाड़) में है। आप जैन धर्मावलम्बी श्रीमाली वैश्यजाति के सज्जन हैं। इसके पहले आप करीब २५ वर्षों से रूई का व्यापार कर रहे हैं। पहले आप मेसर्स किलाचन्द देवचन्द की बम्बई की फर्म में पार्टनर थे। उसके बाद करॉची में मेसर्स लालजी नारायणजी की फर्म में पार्टनर हुए। सन् १९२८ तक आप इस फर्म मे पार्टनर रहे। पश्चात् आपने अपना स्वतन्त्र व्यवसाय प्रारम्भ किया।

श्रीयुत छोटालाल भाई का जीवन सार्वजनिक रूप में भी बहुत अच्छा रहा है। पहले आप कराँची इण्डियन मर्चेण्ट एसोसियेशन के ज्वाइण्ट सेक्रेटरी थे। अभी भी आप इण्डियन मर्चेण्ट्स एसोसिएशन, वायर्स एण्ड शिपर्स एसोसियेशन तथा कराँची पांजरापोल के मेम्बर हैं। धार्मिक और सार्वजनिक कार्य्यों की ओर आपका बहुत लक्ष्य है। हर एक अच्छे कार्य्य में आप उदारता से दान देते रहते हैं।

सन् १९२६ में जो बड़ौदा में भीषण फ्लड हुआ था उसमें आपने कराँची से बड़ा भारी चन्दा करवा कर भिजवाया था।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

दि कराँची कॉटन कम्पनी सराय रोड (T. A. stock)	इस फर्म पर ग्रेन और कॉटन का व्यापार तथा कमीशन एजेन्सी का काम होता है। यह फर्म कॉटन का एक्सपोर्ट भी करती है।

मेसर्स किशनप्रसाद एण्ड कम्पनी

यह फर्म करांची में सन् १९२५ में स्थापित हुई। इस फर्म का हेड ऑफिस अम्बाला में है। यह एक लिमिटेड कम्पनी है। इस फर्म के मैनेजिंग डायरेक्टर लाला किशनप्रसादजी हैं। तथा इसकी करांची फर्म का मैनेजमेण्ट आपके भाई निरंजनप्रसादजी करते हैं। आप लोगों का मूल निवास-स्थान अम्बाला है।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

अम्बाला—मेसर्स किशनप्रसाद एण्ड कम्पनी लि० T. A. Nitanapha	यहाँ पर बैंकिंग और कमीशन एजन्सी का काम होता है।
बम्बई—किशनप्रसाद एण्ड कम्पनी कालबादेवी T. A. Nitanapha	यहाँ के मैनेजिंग डायरेक्टर लाला किशनप्रसादजी हैं। यहाँ पर कॉटन और गेहूँ का व्यापार तथा कमीशन एजन्सी काम होता है।
करांची—मेसर्स किशनप्रसाद कम्पनी खोरी-गार्डन T. A. Nitanapha	यहाँ भी कमीशन एजन्सी का काम होता है।

मेसर्स किशनचन्द बूंटामल

इस फर्म का विस्तृत परिचय इस ग्रन्थ के प्रथम भाग के बम्बई विभाग में पृष्ठ ६९ पर चित्रों सहित दिया गया है। करांची में इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

करांची—मेसर्स किशनचन्द बूंटामल बम्बई बाजार (T. A. Mormukut)—यहाँ पर बैंकिंग और कमीशन एजन्सी का काम होता है।

मेसर्स खीमजी विसराम एण्ड को०

इस कम्पनी का हेड ऑफिस ईस्माइल बिल्डिंग हार्नबी रोड फोर्ट बम्बई में है। वहाँ पर यह सन् १८८५ में स्थापित हुई। इसके पार्टनर भूसूनजी जीवनदास, काकू जीवनदास, जमनादास रामदास, वीरजी नन्दाजी, हरगोविन्ददास रामनभाई, त्रिभुवनदास और हरजीवनदास हैं।

करांची में यह फर्म रूई का व्यापार और एक्सपोर्ट करती है।

मेसर्स खूबचन्द दमोदरदास

इस फर्म का विस्तृत परिचय ग्रन्थ के प्रथम भाग में बम्बई विभाग के पृष्ठ १८८-१८९ पर दिया गया है। इसका करॉंची का परिचय इस प्रकार है—

करॉंची—मेसर्स खूबचन्द दामोदरदास बम्बई बाजार (T. A. Vagh)-यहाँ एक्सपोर्ट, इम्पोर्ट तथा कमीशन का काम होता है।

मेसर्स गिरधारीदास जेठानन्द

इस फर्म का विस्तृत परिचय चित्रो सहित इस ग्रन्थ के प्रथम भाग में बम्बई विभाग के पृष्ठ १८७-१८८ में दिया गया है। करॉंची का परिचय इस प्रकार है—

करॉंची—मेसर्स गिरधारीदासजी जेठानन्द बम्बई बाजार (T. A. Atmarupi)-यहाँ से अनाज, खाण्ड और कॉफी का एक्सपोर्ट होता है।

मेसर्स गोऊमल डोसामल

इस फर्म के मालिक करॉंची निवासी लुहाना रघुवंशी जाति के हैं। इस फर्म को सेठ गोऊमलजी ने स्थापित किया। इसका विशेष परिचय हमारे ग्रन्थ के प्रथम भाग में बम्बई विभाग के पृष्ठ १३६ पर चित्र सहित दिया गया है। इसके वर्तमान मालिक सेठ मूलचन्द दीपचन्द हैं।

करॉंची—मेसर्स गोऊमल डोसामल कम्पनी (T. A. ghee)-यहाँ पर एक्सपोर्ट इम्पोर्ट का व्यवसाय और कमीशन एजन्सी का काम होता है।

मेसर्स चाण्डूमल वलीराम मुखी

इस प्रतिष्ठित फर्म के मालिको का विस्तृत परिचय इस ग्रन्थ के प्रथम भाग के बम्बई विभाग में पृष्ठ १९८ पर दिया गया है। करॉंची का परिचय इस प्रकार है—

करॉंची—मेसर्स चाण्डूमल वलीराम (T. A. Bullion)-यहाँ हाजिर रूई, गल्ला, चाँदी, सोना तथा कमीशन का काम होता है।

मेसर्स चैचेटी एण्ड ठाकरसी लिमिटेड

यह एक प्रायवेट लिमिटेड कम्पनी है। इसके मैनेजिंग डायरेक्टर सेठ ठाकरसी हीरजी और मि० गैवरियल चैचेटी हैं। इस फर्म का इण्डियन हेड ऑफिस बम्बई तथा फारेन हेड

ऑफिस पेरिस में है। यह फर्म बम्बई में करीब ५, ६ साल से स्थापित है। करॉची में इसका ब्राञ्च सन् १९२६ में खुला है। करॉंची में इस फर्म का मैनेजमेण्ट मि० बी० आर० वल्लभ करते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

बम्बई—मेसर्स चैचेटी एण्ड ठाकरसी लिमिटेड पेटिटबिल्डिंग एलफिन्स्टन सर्कल (T. A. Chacaty)	यह फर्म कॉटन का एक्सपोर्ट करती है।
पेरिस—मेसर्स चैचटीफ्रेअर्स	यहॉं पर यह फर्म कॉटन का इण्डिया से इम्पोर्ट करती है।
करॉंची—मेसर्स चैचेटी एण्ड ठाकरसी लि० (T. A Chachaty)	यहॉं पर भी यह फर्म कॉटन का एक्सपोर्ट करती है।
न्यूयार्क—मेसर्स रफ्रीचैचेटी	यहॉं पर भी यह फर्म कॉटन, ऊन और इण्डियन मटेरियल्स का काम करती है।

मेसर्स रायबहादुर चम्पालाल मोतीलाल

इस फर्म के मालिक ब्यावर के मूलनिवासी हैं। आप अग्रवाल जाति के जैन धर्मावलम्बी सज्जन हैं। इस समय इस फर्म के मालिक श्रीमान् रायबहादुर चम्पालालजी तथा उनके पुत्र रायसाहब मोतीलालजी तथा अन्य हैं। आपका विस्तृत परिचय इस ग्रन्थ के प्रथम भाग में राजपूताना विभाग में दिया गया है।

करॉंची फर्म का मैनेजमेण्ट श्रीयुत इन्द्रलालजी काला जयपुर निवासी करते हैं। आप बड़े सज्जन और योग्य व्यक्ति हैं। करॉंची के व्यापारिक समाज में आपका अच्छा प्रभाव है।

करॉंची में इस फर्म पर रूई, गल्ला का व्यापार तथा सब प्रकार की कमीशन एजन्सी का काम होता है। यह फर्म विलायत को रूई का एक्सपोर्ट भी करती है। (T A. Raniwala) इसका हेड ऑफिस ब्यावर में है।

मेसर्स लाला जसवन्तराय एण्ड सन्स

इस फर्म के वर्तमान मालिक लाला जसवन्तरायजी चूड़ामणि एम. ए. हैं। आप अग्रवाल जाति के सज्जन हैं। आपका मूल निवास-स्थान लुधियाना (पंजाब) है। करांची में यह फर्म १९११ से स्थापित है। पहले इस पर मेसर्स जसवन्तराय एण्ड कम्पनी लिमिटेड नाम पड़ता था। १९१८ से यह फर्म मेसर्स जसवन्तराय एण्ड सन्स के नाम से काम कर रही है। पहले १९१२ से १९२८ तक बम्बई में भी इस फर्म का ऑफिस था।

इस फर्म के प्रोप्राइटर लाला जसवन्तरायजी चूड़ामणि एम. ए. करांची इण्डियन मर्चेण्ट्स एसोसिएशन के प्रेसिडेण्ट हैं। करांची के रूई के व्यापारियों में आपका स्थान बहुत ऊँचा है। सार्वजनिक कार्य्यों में आपकी रुचि और दान-वीरता बहुत प्रसिद्ध है। आपकी ओर से करांची में पं० लखपतराय डी० ए० वी० हाईस्कूल नामक एक बहुत अच्छा हाई कूल चल रहा है। इसमें आपने ५००००) नगद और २४०००) की जमीन बिल्डिंग के लिए प्रदान की है इसके चेअरमन भी आप ही हैं। इसके अतिरिक्त आपने अपनी स्वर्गीय धर्म-पत्नी के स्मारक में सुशीलाभवन नामक ४२ हजार की लागत का एक भवन बनाया है। इसमें आर्य समाज मन्दिर और प्रायमरी स्कूल हैं। इसके अतिरिक्त आप करांची म्यूनिसिपल स्कूल बोर्ड के मेम्बर हैं। करांची की रूई की मण्डी में सुधार करने का प्रथम श्रेय आपको ही है। इसके अतिरिक्त स्वामी श्रद्धानन्द ट्रस्ट फण्ड के आप ट्रस्टी भी हैं। आप स्वदेशभक्त लाला लाजपत राय के घनिष्ट प्रेमियो में से एक हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है :—

करांची—मेसर्स जसवन्तराय एण्ड सन्स खोरी-गार्डन (T. A. Famous) Phone 171 — इस फर्म पर रूई का बहुत बड़ा व्यापार तथा कमीशन एजन्सी का काम होता है। करांची के रूई के व्यापारियों में यह फर्म बहुत बड़ी है।

मेसर्स जैरामदास नाऊमल

इस फर्म के मालिक मूल निवासी करांची डिस्ट्रीक्ट ही के हैं। आप सिन्धी-लुहाना (भाईबन्ध) जाति के हैं। इस फर्म को करांची मे स्थापित हुए करीब २० साल हुए। इसके वर्तमान मालिक श्रीयुत् जैरामदासजी हैं। आप श्रीयुत् नाऊमलजी के पुत्र हैं। इस फर्म की स्थापना श्रीयुत जैरामदासजी ने ही की।

इस फर्म के मालिको की सार्वजनिक कार्यों की तरफ भी अच्छा लक्ष्य है। राजनीति तथा सामाजिक सभी कार्य्यों में आपकी ओर से सहायता दी जाती है।

सेठ जयरामदास नाऊमल करांची

सेठ ख्यालदास वरनमल (मैनेजर जयरामदास नाऊमल) करांची

सेठ सांवलदास रीझूमल (मैनेजर जयरामदास नाऊमल) करांची

सेठ ईसरदास वरनमल (मैनेजर जयरामदास नाऊमल) करांची

इसके अतिरिक्त डोकरी (लरिकाना) नामक स्थान में आपका राईस मिल है।

इसका मैनेजमेण्ट सेठ सामलदास रजूमल सेठ खियालदास वरनमल और ईसरदास वरनमल करते हैं। आप तीनों ही सज्जन राजनैतिक और समाज सुधार के कार्यों में बहुत भाग लेते हैं। सेठ ईसरदासजी सामाजिक सुधार के बहुत बड़े कार्य्यकर्ता हैं।

यह फर्म इण्डियन मर्चेण्ट्स एसोसिएशन और करांची ऑइन कॉटन कमेटी के बोर्ड के मेम्बर है।

श्रीयुत ईसरदास भाई करांची म्युनिसीपैलिटी के मेम्बर और सिन्ध प्राविन्शियल कांग्रेस कमेटी के मेम्बर तथा करांची में १९३१ में होनेवाली कांग्रेस के ट्रेझरर हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

हेड ऑफिस करांची—मेसर्स जैराम दास नाऊमल नई चाल (T. A. just)	इस फर्म पर रूई, गल्ला, तिहलन का व्यापार और कमीशन एजन्सी का काम होता है। यह फर्म शिवाजी ग्राम दाल एण्ड फ्लावरमिल की प्रोप्राइटर है।

मेसर्स जेठादेवजी एण्ड कम्पनी

इस फर्म का हेड ऑफिस बम्बई में है। इसके मालिक श्रीयुत जेठाभाई देवजी, गोकलदास देवजी, लखमीदास देवजी, नारायणदास जेठाभाई, भगवानदास जेठाभाई हैं। आपका विस्तृत परिचय इस ग्रन्थ के पहले भाग में बम्बई विभाग में दिया गया है।

करांची में यह फर्म सन् १९१२ से स्थापित है। इसका मॅनेजमेण्ट श्रीयुत लधाभाई उद्धवजी, तथा जीवनदास लधाभाई करते हैं। आप इस फर्म में मॅनेजिंग पार्टनर हैं। आपका मूल निवास-स्थान बेड़ (जामनगर) में है। यह फर्म करांची इन्डियन मर्चेण्ट् एसोसियेशन की मेम्बर है। सेठ लधाभाई पहले इंण्डियन मर्चेण्ट्स एसोसियेशन के वाईस प्रेसिडेण्ड थे।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

हेड ऑफिस बम्बई-मेसर्स जेठादेवजी माण्डवी बम्बई	इस फर्म का परिचय पहले भाग में दिया गया है।
करांची—मेसर्स जेठाभाई देवजी कैम्पवैलस्ट्रीट (T. A. Fortify gedeo)	इस फर्म पर रुई, गल्ला, तिलहन की कमीशन एजन्सी का काम होता है। यह फर्म कॉटन का एक्सपोर्ट भी करती है।

इसके सिवाय मलकवाल (पंजाब) में इस फर्म की जीनिंग फैक्टरी तथा गौण्डल में जीन प्रेस है ।

मेसर्स जैचन्दभाई जीवाभाई

इस फर्म की स्थापना करांची में श्रीयुत सेठ मूलचन्द भाई ऊजमसीने की। आप मूल निवासी विढवाए के हैं। इसके वर्तमान मालिक श्रीयुत सेठ जैचन्दभाई कालिदास, श्रीयुत जीवाभाई मगनलाल हैं। श्रीयुत जैचन्दभाई ध्रांगधरा के और श्रीयुत जीवाभाई पाटण (गुजरात) के रहने वाले हैं। सब से पहले श्रीयुत जीवाभाई ने करीब ५० वर्ष पहिले मेसर्स जीवाभाई मगनलाल के नाम से इस फर्म को स्थापित किया। उसके पश्चात् इस फर्म के पार्टनर श्रीयुत जैचन्दभाई ने पंजाब में जाकर अपना व्यापार शुरू किया। सब से पहले जैतू में आपने अपना फर्म स्थापित किया। उसके बाद धीरे २ बढ़ते २ आपने कई ब्राञ्चेस स्थापित कीं। इसके प्रोप्राइटर श्रीयुत जीवाभाई का स्वर्गवास २ वर्ष पूर्व हो गया। इस समय उनके स्थान पर उनके पुत्र कान्तिलालभाई हैं।

यह फर्म इण्डियन मर्चेण्टस एसोसियेशन और बायर्स और शिपर्स एसोसिएशन की मेम्बर है।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

हेड ऑफिस-बम्बई—मेसर्स जीवाभाई मगनलाल ३४ मुलेश्वर रोड़ (T. A. Kantikar)	यहाँ पर रुई, गल्ला, तिलहन, बैंकिंग का बिजिनेस तथा कमीशन एजन्सी और एक्सपोर्ट इम्पोर्ट का काम होता है।
करांची—जैचन्दभाई जीवाभाई नेपियर रोड़ (T. A. Kantikar)	यहाँ पर भी बम्बई फर्म की ही तरह व्यापार होता है।

इसके अलावा कोटकपुरा, मुक्तसर, कानपूर इन स्थानों पर मेसर्स शाह जीवाभाई मगनलाल के नाम से और भटिण्डा, जैतू, अभोर, बुढलाडा, दबवाली, इन स्थानो पर जैचन्दभाई जीवाभाई के नाम से व्यापार होता है।

मेसर्स ताराचन्द घनश्यामदास

इस फर्म के अन्तर्गत मेसर्स ताराचन्द घनश्यामदास और मेसर्स मामराज रामभगत का साझा है। आपमें से मेसर्स ताराचन्द घनश्यामदास के मालिक मूल निवासी रामगढ़ के और मेसर्स मामराज रामभगत के मालिक चिड़ावा के मूल निवासी हैं। इन दोनों फर्मों का विस्तृत परिचय इस ग्रन्थ के प्रथम भाग मे बम्बई विभाग में चित्रों समेत दिया गया है।

करॉंची में इस फर्म का मॅनेजमेण्ट श्रीयुत भगवानदासजी केड़िया और श्रीयुत कन्हैया-लालजी गुहालेवाला करते हैं। इनमें से श्रीयुत् भगवानदासजी का मूल निवास-स्थान रेवाड़ी और श्रीयुत् कन्हैयालालजी का मूल निवास-स्थान मुकुन्दगढ़ है। आप दोनों बड़े योग्य और सज्जन पुरुष हैं।

इस समय यह फर्म बर्मा ऑइल कम्पनी की वेनियन और शॉवॉलेस् कम्पनी के पीस गुड्स डिपार्टमेण्ट की ग्यारण्टीड वेनियन्स है। इसका एक ऑफिस बर्मा ऑइल कम्पनी के ऑफिस में तथा एक ऑफिस मेसर्स शॉवॉलेस कम्पनी के ऑफिस में है तथा इसकी दुकान वैलेस स्ट्रीट पर अपने निज के मकान में है। इसका तार का पता (seth Poddar) है। इसके अतिरिक्त इस फर्म पर बैंकिंग ग्रेन, शीड्स, कॉटन का व्यापार तथा सब प्रकार की कमीशन एजेन्सी का काम होता है। यह फर्म इंडियन मर्चेण्ट्स एसोशियेशन और बायर्स और शिपर्स एसोसियेशन की मेम्बर है। करांची के अत्यन्त प्रतिष्ठित और नामी व्यापारियों में इस फर्म का बहुत ऊँचा स्थान है।

मेसर्स तुलसीदास मेघराज

इस फर्म का विस्तृत परिचय इस ग्रन्थ के दूसरे भाग में कलकत्ता विभाग के पृष्ठ ३११ पर दिया गया है। करॉंची का परिचय इस प्रकार है।

करॉंची—मेसर्स तुलसीदास मेघराज खोरी गार्डन—T. A. Sabberwal—यहाँ पर शक्कर, गनी, बैङ्किङ्ग और कमीशन एजेन्सी का काम होता है।

मेसर्स तुलस्यान कम्पनी लिमिटेड

इस कम्पनी के मालिक मेसर्स सनेहीराम जुहारमल ही है। करॉंची में यह करीब १॥ वर्ष से स्थापित है। इस फर्म का मॅनेजमेण्ट एच० मगनलाल करते हैं। करॉंची में यह कम्पनी कॉटन का एक्सपोर्ट करती है। इस फर्म का हेड ऑफिस भी मेसर्स तुलस्यान कम्पनी के नाम से है। वहाँ पर यह कम्पनी कॉटन, मार्न और पीस गुड्स का एक्सपोर्ट, इम्पोर्ट और बिजिनेस करती है। करांची में इसका तार का पता धार्मिक है। बम्बई में इसका तार का पता (T. A. cottrad) है। इस कम्पनी की ब्राञ्चेस, उसाका (जापान) तथा कोबी (जापान) में भी हैं।

मेसर्स देऊमल ईसरदास

इस फर्म के मालिको का मूल निवास-स्थान शिकारपुर का है। आप चुगशराफ जाति के सिन्धी सज्जन हैं। इस फर्म को करांची में स्थापित हुए ६ वर्ष हुए। इस फर्म का हेड आफिस शिकारपुर में हैं। यहाँ पर यह फर्म करीब ८० या १०० वर्ष से स्थापित है। इस फर्म की स्थापना ईसरदासजी के पुत्र सेठ गैरीमलजी और देऊमलजी के पुत्र सेठ जेठानन्दजी तथा ईसरदासजी के पौत्र सेठ निहचलदास ने की। इस समय इस फर्म के मैनेजिंग प्रोप्राइटर श्रीयुत सेठ निहचलदास दीपचन्द हैं।

इस फर्म के मालिकों की दान, धर्म और सार्वजनिक कार्य्यों की ओर बहुत रुचि रही है। बहुत से बड़े २ धार्मिक कार्य इस फर्म के मालिकों ने किये हैं। यहाँ तक कि शिकारपुर में श्रीयुत सेठ गौरीमलजी धर्मावतार कहे जाते हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१—शिकारपुर मेसर्स देऊमल ईसरदास T. A. Jerimal	इस फर्म पर खास व्यापार ऊन और सूखे मेवे का है। अफगानिस्तान से यह ऊन और सूखे मेवे का इम्पोर्ट करती है। इसके अतिरिक्त बैङ्किंग और कमीशन एजन्सी का काम होता है।
२—शिकारपुर मेसर्स गौरीमल धर्मदास	यह फर्म गल्ले का बहुत बड़ा व्यापार तथा सब तरह की कमीशन एजन्सी का काम करती है। इसी फर्म के अण्डर में लारकाना (सिंध) में भी एक शाखा है। वहाँ यह फर्म चावल का व्यापार करती है।
३. सक्खर— मेसर्स गैरीमल लक्खूमल (T. A. Tndigo)	यह फर्म मेसर्स फारबस एण्ड को० की ऊल डिपार्टमेण्ट की ग्यारण्टेड ब्रोकर है। तथा सैण्डर्ड आइल कम्पनी की भी सिन्ध के लिए ग्यारण्टेड ब्रोकर है। इसके अतिरिक्त ऊन का व्यापार बहुत बड़े स्केल पर यह फर्म करती है। इस फर्म पर पहले नील का बहुत बड़ा व्यापार होता था।
४. करांची— मेसर्स देऊमल ईसरदास फ्रेअर (T. A. Colgrain)	यहाँ पर यह रुई, गल्ला शीड्स का व्यापार तथा कमीशन एजन्सी काम करती है। इस दुकान की मॅनेजरी भाई टीलूमल पोकरदास और श्रीयुत शिवदयाल खेमचन्द करते हैं। आप बड़े शिक्षित और योग्य सज्जन हैं।

५. मुलतान— मेसर्स गैरीमल जेठानन्द (T. A. Tishunr)	यह फर्म फारवस कैम्बेल कम्पनी के ऊल डिपार्टमेण्ट की मुलतान जिला और फ्राण्टियर के लिए ग्यारण्टेड ब्रोकर है। इसके अतिरिक्त ग्रेन, कॉल, शीड्स का व्यापार और कमीशन एजेन्सी का काम होता है।
६. लायलपुर— मेसर्स गैरीमल जेठामल	यहाँ पर ग्रेन, कॉटन, शीड्स और कमीशन एजन्सी का काम होता है।

मेसर्स धाड़ीराम जिन्दाराम

इस फर्म की स्थापना करांची में सन् १९१८ में हुई। शुरू २ में इस फर्म पर मेसर्स विशनदास धाड़ीराम नाम पड़ता था। सन् १९२२ से इस फर्म का नाम मेसर्स धाड़ीराम जिन्दाराम पड़ने लगा। यहाँ पर यह फर्म श्रीयुत सेठ निहालचंदजी ने स्थापित की। आप श्रीराम सेठ धाड़ीरामजी के पुत्र हैं। आप लोग खत्री समाज के सहगल सज्जन हैं। आप लोगों का मूल निवास-स्थान मग्याना (जङ्ग) में है। श्रीयुत धाड़ीरामजी का स्वर्गवास सन् १९१४ में हो चुका है। श्रीयुत धाड़ीरामजी के चार पुत्र हैं। जिनके नाम श्रीयुत खुशाबीरामजी, श्रीयुत निहालचन्दजी, श्रीयुत चमनलालजी और श्रीयुत काश्मीरीलालजी हैं। इस फर्म में सेठ जिन्दारामजी का साझा है। आप भी मग्याना के रहनेवाले खत्री सज्जन हैं। इनके दो पुत्र रामदियामलजी और श्रीयुत जगतरामजी हैं। श्रीयुत जगतरामजी करांची फर्म पर रहते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

१—हेड ऑफिस—मगाना (पंजाब) मेसर्स धाड़ीराम खुशाबीराम	यहाँ पर बैंकिंग बिजिनेस और जमींदारी का काम होता है।
२—जंगमण्डी—मेसर्स धाड़ीराम रामदियामल	इस फर्म पर सब तरह की कमीसन एजन्सी का होता है।
३—गोजरामण्डी—(लायलपुर)—मेसर्स जिन्दाराम खुशाबीराम	यहाँ पर भी कमीशन एजन्सी का काम होता है।
४—टोबा टेकसिंग—(लायलपुर)—मेसर्स धाड़ीराम जिन्दाराम (T. A. Chaman)	यहाँ पर भी कमीशन एजन्सी का काम होता है।

५—करांची—मेसर्स धाड़ीराम जिन्दाराम बन्दररोड़ (T. A. Deshbandhu	इस फर्म पर रूई, गल्ला, तिहलन, शक्कर का व्यापार और कमीशन एजन्सी का काम होता है। यह फर्म शक्कर का इम्पोर्ट करती है।

मेसर्स धनपतमल दीवानचन्द

इस फर्म के वर्तमान मालिक लाला दीवानचन्दजी है। करांची में इस फर्म की स्थापना लाला दीवानचन्दजी ने की। इस फर्म का विस्तृत परिचय चित्रों सहित इस ग्रन्थ के प्रथम भाग के बम्बई पोर्शन में दिया गया है।

करांची फर्म के मैनेजिंग प्रोप्राइटर श्रीयुत लाला रूपलालजी हैं। आपका मूल निवासस्थान सरगोधा में है। आप इण्डियन मर्चेंट्स एसोसिएशन की तरफ से म्यूनिसिपैलिटी में रिप्रेजेण्टेटिव्ह रह चुके हैं। और इसी संस्था के आप बहुत समय तक ऑनरेरी सेक्रेटरी भी रह चुके हैं। इसके अतिरिक्त आप कितने ही समय तक करांची आर्य्य समाज के प्रेसिडेण्ट रहे। इस फर्म की तरफ से करांची में धनपतमल पुत्री पाठशाला नामक एक कन्या पाठशाला चल रही है। इसके चेअरमेन लाला रूपलालजी हैं।

मेसर्स धनपतमल दीवानचन्द T. A. Dhanpat	करांची में इस फर्म पर रूई, गल्ला, तिलहन, कपड़ा और शक्कर का व्यापार तथा कमीशन एजन्सी का काम होता है।
लायलपुर मेसर्स धनपतमल दीवानचन्द T. A. Dhanpat	इस फर्म का यहाँ पर हेड ऑफिस है तथा बैंकिंग और कमीशन एजन्सी का काम होता है।
लायलपुर—धनपतमल दीवानचन्द	यह फर्म फ्लोअर मिल्स एण्ड आईस फैक्टरी ऑनर्स और आइल एक्स पोर्टर्स है।
मियाचन्नू (मुलतान)—धनपतमल दीवानचन्द	यहाँ इस फर्म की कॉटन जीनिंग फैक्टरी एण्ड प्रेसिंग फैक्टरी चल रही है।
माण्ट गौमरी—मेसर्स धनपतमल दीवानचन्द T. A. Dhanpat	यहाँ पर भी आपकी कॉटन जीनिंग और प्रेसिंग है।

गीदड़बहा (फिरोजपुर) मेसर्स धनपतमल दीवानचन्द	यहाँ पर भी आपकी जीनिंग एण्ड प्रेसिंग फैक्टरी और ऑइल एक्सपेलर्स चल रहे हैं ।

मेसर्स वच्छराम एण्ड कम्पनी लिमिटेड

यह एक लिमिटेड फर्म है। यह फर्म १० लाख की पेडअप केपिटल से स्थापित की गई है। इसके डायरेक्टर्स श्रीयुत सेठ जमनालालजी बजाज, श्रीयुत रामेश्वरदासजी बिड़ला, श्रीयुत पालीरामजी झुंझुनुवाला, श्रीयुत केशवदेवजी नेवटिया, सेठ पुरुषोत्तमदास जीवनदास, श्रीयुत मथुरादास खीमजी, श्रीयुत नारायणलालजी पित्ती तथा श्रीयुत कन्हैयालालजी आकोला वाले हैं। इसके प्रेसिडेण्ड श्रीयुत जमनालालजी बजाज तथा मॅनेजिंग डायरेक्टर श्रीयुत केशवदेवजी नेवटिया हैं।

इस नाम से यह फर्म सन् १९२७ में स्थापित हुई। इसका हेड ऑफिस बम्बई में है। करांँची की ब्रांँच का मनेजमेंण्ट श्रीयुत सेठ लालजी मेहरोत्रा करते हैं। आपका मूल निवास स्थान जौनपुर (यू० पी०) का है। आप बी० ए० एल-एल बी० हैं। पहले आप प्रसिद्ध राष्ट्रीय पत्र "इण्डिपेंडेन्ट" के एडिटोरियल स्टॉफ में रहे थे। आप चार महीने तक हस्त लिखित "इंडिपेण्डेंट" निकालते रहे। पहले आप देश पूज्य पं० मोतीलालजी नेहरू के प्रायवेट सेक्रेटरी रहे हैं। सन् १९२२ में जो सिविल डिस ओबिडियन्स कमेटी बैठी थी उसके आप सेक्रेटरी थे। सन् १९२३ से आपने व्यापारिक लाइन में प्रवेश किया। सन् १९२८ में आप बच्छराज कम्पनी के मनेजर नियुक्त हुए। मतलब यह कि आपका जीवन बड़ा देश भक्ति पूर्ण और उज्वल रहा है। यह फर्म इंडियन मर्चेन्टस् एसोसियेशन तथा बायर्स एण्ड शिपर्स एसोसियेशन की मेम्बर हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

बम्बई—मेसर्स बच्छराज एण्ड कम्पनी ३९५ कालबादेवी रोड़ (T. A. Shree)	यहाँ पर रुई का बड़े स्केलपर व्यापार तथा कमीशन एजन्सी का काम होता है। रुई के केन्द्रों से यह फर्म खरीदी करती है।
करांची—मेसर्स बच्छराज एण्ड० को० सराय रोड (T. A. Bachharaj)	यहाँ पर कॉटन और ग्रेन का व्यापार तथा कमीशन एजन्सी का काम होता है। यह फर्म काटन और ग्रेन का एक्सपोर्ट भी करती है।

वर्धा—मेसर्स बच्छराज कम्पनी } यहाँ पर भी रूई का व्यापार होता है।

मेसर्स बसन्तलाल गोरखराम

इस फर्म का हेड ऑफिस मारवाड़ी बाजार बम्बई में है। जहाँ तार का पता "सेख सरिया" है। इसका विस्तृत परिचय हमारे ग्रन्थ के प्रथम भाग में बम्बई विभाग के पृष्ठ ९८ पर दिया गया है। करांची फर्म का परिचय इस प्रकार है—

करांची—मेसर्स बसन्तलाल गोरखराम सराय रोड-यहाँ पर बैंकिङ्ग तथा कमीशन एजेन्सी का काम होता है।

मेसर्स बसन्तलाल रामकुमार

यह फर्म बम्बई के मेसर्स सनेहीराम जुहारमल और मेसर्स बसन्तलाल गोरखराम के साझे की है। इन दोनों ही के मालिकों का मूल निवास-स्थान चिड़ावा (जयपुर) में है। इन दोनों फर्मों का परिचय इस ग्रन्थ के बम्बई विभाग के रूई के व्यापारियों में दिया गया है।

करांची मे इस फर्म को स्थापित हुए करीब ४ वर्ष हुए। इस फर्म का मॅनेजमेंट श्रीयुत छोटालालजी झुंझुनूवाला करते हैं।

करांची मे यह फर्म रूई, गल्ला, तिलहन का व्यापार और सब तरह की कमीशन एजेन्सी का काम करती है। (T. A. sekhasaria)

मेसर्स रायबहादुर ब्रजलाल जगन्नाथ

इस फर्म के मालिक श्रीयुत रायबहादुर ब्रजलालजी मूल निवासी जुगरांव (लुधियाना के) हैं। तथा श्रीयुत जगन्नाथजी सक्कर (जालन्धर जिले) के रहने वाले हैं आप दोनों सज्जन खत्री जाति के हैं। यह फर्म करांची में सन् १९२३ से स्थापित है। आप लोगों ने सब से पहले सन् १९२० में कानपुर में शक्कर का काम प्रारम्भ किया था। उसके पश्चात् आपने करांची में अपना काम प्रारम्भ किया। आप दोनों ही सज्जन बड़े योग्य और सज्जन हैं। सन् १९२० में श्रीयुत ब्रजलालजी को गवर्नमेण्ट ने रायबहादुर की पदवी से सम्मानित किया।

श्रीयुत रायबहादुर ब्रजलालजी लुधियाना जिले के बड़े प्रतिष्ठित और प्रभावशाली पुरुष

हैं। व्यापारिक प्रभाव के अतिरिक्त गवर्नमेण्ट तथा पब्लिक में भी आपका बहुत प्रभाव है। आपकी उम्र इस समय ४० साल की है।

श्रीयुत जगन्नाथजी श्रीमान् रायबहादुर रलारामजी सी० आई० ई० एस० ओ० के सुपुत्र हैं। श्रीमान् रलारामजी भारतवर्ष में फर्स्ट भारतीय चीफ इंजिनीयर हैं। आप बड़े सुधरे हुए विचारों के सज्जन हैं। सामाजिक क्षेत्र में आपने बहुत अच्छे २ काम किये हैं। कलकत्ते में श्रीयुत छाजूरामजी चौधरी के साथ आपका बहुत पुराना दोस्ताना है। आपके साथ में आपने बहुत से अच्छे २ सार्वजनिक तथा शिक्षा-सम्बन्धी काम किये हैं। आपकी उम्र इस समय ६५ वर्ष की है। तथा श्रीयुत जगन्नाथजी इस समय ३३ साल के हैं।

इस फर्म के मालिको का सुधार और शिक्षा-सम्बन्धी कार्य्यों में बहुत दिलचस्पी है। कानपुर तथा करांची डि० ए० बी० हाईस्कूल, गर्लस्कूल तथा और भी सार्वजनिक कार्य्यों में आप बहुत दान देते रहते हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

हेड ऑफिस-जुगरांव (पंजाब) मेसर्स रायबहादुर ब्रजलाल जगन्नाथ (T. A. Brijajan) — यहाँ पर बैंकिंग और कमिशन एजेन्सी का काम होता है।

लुधियाना—मेसर्स रायबहादुर ब्रजलाल जगन्नाथ (T. A. Brijajan) — यह फर्म इम्पीरियल बैंक की ग्यारण्टेड ब्रोकर है। तथा कमीशन एजन्सी का काम होता है।

करांची—मेसर्स रा० ब० ब्रजलाल जगन्नाथ कैम्पबेलस्ट्रीट (T. A. Brijajan) — यहाँ पर बैंकिंग और कमीशन एजन्सी का काम तथा जावासे शुगर का इम्पोर्ट होता है। यह फर्म जावा की (Kian Gwan) केन ग्वान कम्पनी की ग्यारण्टेड ब्रोकर है।

आपके मूल निवास-स्थान सक्कर में राय बहादुर रलारामजी की ओर से एक अस्पताल चल रहा है। इसके अलावा मोघा के आई हास्पिटल में आपने अच्छी सहायता पहुँचाई है।

बालगोविन्ददास एण्ड कम्पनी

इसकी स्थापना सन् १९२४ में हुई। इसके संचालक बालगोविन्ददासजी लोहीवाल तथा सेठ लीलारामजी, मोहनदासजी और मोतीरामजी हैं। बालगोविन्ददासजी का आदि-निवास-

स्थान इटावा है। अन्य तीनों सज्जन सिन्धी लोहाने भाईवन्द हैं। यह फर्म रूई तथा गल्ले की दलाली करती है। और राली ब्रदर की House Brokers है।

पता—(१) वुडस्ट्रीट राली बिल्डिंग फोन नं० ३४५ (२) खोरी गार्डन।

मेसर्स भागचन्द रिज्जूमल

इस फर्म के वर्तमान मालिक श्रीयुत रिज्जूमलजी और तीरथदासजी हैं। आपका मूल निवास-स्थान दरबेला (सिन्ध) में है। इस फर्म को यहाँ पर स्थापित हुए १८ वर्ष हुए। इसकी स्थापना स्वयं रिज्जूमलजी ने ही की।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

करांची—मेसर्स भागचन्द रिज्जूमल बन्दर रोड (T. A, Bhag)	इस फर्म पर रूई, गल्ला और तिलहन का व्यापार होता है। खास तौर से इस फर्म पर तिलहन वाने का बहुत बड़ा व्यापार होता है।

इसके अतिरिक्त पंजाब और यू० पी० में आढ़तियों के द्वारा आपका बहुतसा काम होता है।

मेसर्स मैहरबक्ष मौलाबक्ष

इस फर्म के मालिक मूल निवासी चिनोर (झंग) के रहनेवाले हैं। करांची में यह फर्म चालीस पचास बरस से स्थापित है। इस फर्म की स्थापना करांची मे सेठ शम्सुद्दीन ने की। सेठ शम्सुद्दीनजी को गुजरे बीस साल हो गये। शम्सुद्दीनजी के तीन बेटे थे, मियाँ अमीरद्दीन, मियाँ मैहरबक्ष और मियाँ खुदाबक्ष हैं। इस समय इस फर्म के मालिक मियाँ मैहरबक्षजी के लड़के मियाँ मौलाबक्ष (स्वर्गीय) मियाँ दोस्तमुहम्मद और मियाँ नजीरहुसैन है, तथा मियाँ खुदाबक्षजी के लड़के मियाँ अलाबक्षजी, मियाँ अमीरउमर, मियाँ मुहम्मद सादिक, इशान-इलाही, बक्षइलाही हैं। मियाँ मौलाबक्षजी के दो लड़के हैं जिनके नाम एहमदयूसूफ और मुहम्मद उसमान हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

करांची— मेसर्स मैहरबक्ष मौलाबक्ष सराय रोड (T. A. Rahman)	यह फर्म शुगर का बहुत बड़ा व्यापार करती है। इसके अलावा बोनट्रेड में भी यह फर्म हिन्द में बहुत बड़ी है। इसके अलावा कॉटन, ग्रेन, शीड्स की कमीशन एजेन्सी का काम भी होता है।

दिल्ली—मेसर्स अल्लाबक्ष मुहम्मद शईद, महम्मद शरीफ कूचा काबिल अत्तार (T. A. Kherkhawa) खेड़खाह—	यहाँ पर यह फर्म बोन का ट्रेड करती है। इसमें महम्मद शईद और महम्मद शरीफ का पार्ट है।

इसके अलावा भटिण्डा, कलकत्ता और कानपुर, जोधपुर, बीकानेर, में भी इस फर्म की ब्रांचेस हैं।

मेसर्स रामप्रताप रामचन्द्र

इस फर्म के मालिको का मूल निवास-स्थान भिवानी में है। आप अग्रवाल जाति के वासल गौत्रीय सज्जन हैं। इस फर्म के वर्तमान मालिक श्रीयुत सेठ रामप्रतापजी हैं। यह फर्म भिवानी में सम्वत् १७७५ से स्थापित है। संवत १८०० से यह फर्म वहाँ कमीशन का काम कर रही है। पहले इस पर भिवानी में घी और लाल मिर्च का बहुत व्यापार होता था। कराँची में यह फर्म करीब १९ वर्षों से स्थापित है। इसे श्रीयुत सेठ नरसिंहदासजी ने स्थापित किया। आपका स्वर्गवास संवत् १९७५ में हुआ। इस समय श्रीयुत नरसिंहदासजी के छोटे भाई पन्नालालजी के पुत्र श्रीयुत बन्सीलालजी, श्रीयुत रामप्रतापजी, श्रीयुत जोधरामजी और श्रीयुत रामचन्द्रजी ही इस फर्म के मालिक हैं। श्रीयुत रामप्रतापजी के इस समय एक पुत्र हैं। आपका नाम नाथूरामजी है। आप श्रीयुत बन्सीलालजी के दत्तक हैं। आप व्यापार में भाग लेते हैं।

इस फर्म के मालिकों का दान धर्म की ओर भी बहुत रुचि रही है। प्रायः सभी अच्छे कामो में आप दान देते रहते हैं। मथुरा में आपकी ओर से एक धर्मशाला (जो भिवानीवालों की धर्मशाला के नाम से प्रसिद्ध है) बनी हुई है। इसमें एक अन्नक्षेत्र भी चलता है। इसके अतिरिक्त भिवानी में भी आपकी ओर से धर्मशाला, मन्दिर, कुआ, व छत्री बनी हुई है।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

१—भिवानी—मेसर्स अमीरचन्द जोधराज मेसर्स अमीचन्द नरसिंहदास मेसर्स अमीचन्द फूलचन्द	यहाँ पर आपका मूल निवास स्थान है तथा सराफी का काम होता है।
२—बम्बई—मेसर्स नरसिंहदास जोधराज कालबादेवीरोड (T. A. Bansal)	इस फर्म पर हुण्डी, चिट्ठी, रुई, अलसी, सोना, चाँदी, तथा सोरा की कमीशन एजन्सी का काम होता है।

३—करॉंची—मेसर्स रामप्रताप रामचंद्र सरायरोड़ (T.A. Bansal)	यहाँ पर गल्ले और रुई का व्यापार तथा कमीशन एजन्सी का काम होता है। यह फर्म करॉंची के गल्ले के बड़े २ व्यापारियों में है। यह फर्म पीस गुड्स का विलायत से इम्पोर्ट करती है तथा बीमे का काम भी होता है।

मेसर्स लालजी लखमीदास

इस फर्म की स्थापना करॉंची में सम्वत् १९४५ में हुई। इसकी स्थापना सेठ लालजी लखमीदासने की। सेठ लालजी भाई का स्वर्गवास हुए करीब ८ वर्ष हो गये। करॉंची में सेठ लालजी भाई बड़े प्रसिद्ध और प्रभावशाली पुरुष थे। आपका बनाया हुआ एक मार्केट करॉंची में है। सेठ लालजी भाई के दो पुत्र हैं जिनके नाम:—श्रीयुत सेठ हरिदास भाई और सेठ रतनसी भाई है। आप भाटिया जाति के सज्जन हैं। यह फर्म दोनों भाइयों की सम्मिलित सम्पत्ति है।

सेठ हरिदास भाई भी करॉंची में बड़े प्रसिद्ध पुरुष हैं। आप वायर्स एण्ड शिपर्स चेम्बर के ऑनरेरी सेक्रेटरी तथा पोर्ट ट्रस्ट के मेम्बर हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

करॉंची— मेसर्स लालजी लखमीदास (T.A "Lotus" लोटस)	यह फर्म सब प्रकार की कमीशन एजन्सी का काम करती है। यह फर्म टिम्बर और खजूर का इम्पोर्ट भी करती है। करॉंची में यह फर्म बहुत बड़ी लैण्ड लॉर्ड्स भी है।

दि सिन्ध सागर कम्पनी लिमिटेड

यह एक लिमिटेड कम्पनी है। इसके चेअरमेन सरदार बहादुर मेहताबसिंह बार० एट० ला० लाहौर हैं। तथा इसके डायरेक्टर्स सरदार साहिब मक्खनसिंह गवर्नमेंट कण्ट्राक्टर लाहौर, सरदार जसकरणसिंह सिंदी रईस लाहौर, सरदार सन्तोकसिंह अमृतसर, सरदार बहादुर हुक्म-सिंह अमृतसर, लाला दीवानचन्द देहली, सरदार बहादुर धर्मसिंह कण्ट्राक्टर देहली, राय बहादुर सरदार विशाखासिंह देहली, राय बहादुर लाला शिवनारायण पब्लिक प्रासिक्यूटर

फिरोजपुर, सरदार साहब उज्जलसिंह एम० ए० एम० एल० सी०, मियाँचन्नू मुलतान, शेख रहमत इलाही रोपड़ा और मि० युधिष्ठिरलाल तनेजा बैरिस्टर फिरोजपुर हैं।

इस फर्म का हेड आफिस लाहौर में है तथा इसके कराँची फर्म के एजेण्ट सरदार परदमनसिंह और सरदार हरबन्ससिंह सिस्तानी हैं। कराँची फर्म का टेलिग्राफिक एड्रेस (Sindhasagar) है। यहाँ रूई, गल्ला, तिलहन की कमीशन एजन्सी का काम होता है।

मेसर्स हीरजी नैनसी एण्ड को०

इस फर्म के वर्तमान प्रोप्राइटर श्रीयुत पदमसी हीरजी और श्रीयुत ठाकरसी हीरजी हैं। यह फर्म बम्बई में करीब ३० साल से स्थापित है। कराँची में यह फर्म सन् १९२६ से स्थापित है।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

बम्बई—मेसर्स हीरजी नैनसी पेटिट बिल्डिंग-एलफिन्स्टन सर्कल (T. A. Hirnensey)	यह फर्म कॉटन का व्यापार करती है।
करांची—मेसर्स हीरजी नैनसी (Hirnensay)	यहाँ पर भी यह फर्म कॉटन का व्यापार करती है।

सैसून इ० डी० एण्ड को०

इस कम्पनी का हेड ऑफिस डेगोल रोड बेलार्ड स्ट्रीट बम्बई में है। इसकी शाखाएं लन्दन, मैञ्चेस्टर, कलकत्ता, हाङ्ग काङ्ग, करांची और बगदाद में हैं। करांची में यह फर्म कॉटन एक्सपोर्टर का काम करती है।

सैसून डेविड एण्ड को०

इस कम्पनी का हेड ऑफिस लन्दन में है। बम्बई में इसका ऑफिस ५९ फार्बस स्ट्रीट में है। इसकी शाखाएँ मैञ्चेस्टर, बम्बई, कलकत्ता, करांची, हाङ्गकाङ्ग, संघाई, बसरा, बगदाद और हैङ्कों में हैं।

करांची में यह फर्म रूई का एक्सपोर्ट करती है।

मेसर्स हीरानन्द ताराचन्द मुखी

इस फर्म के मालिकों का विस्तृत परिचय इस ग्रन्थ के प्रथम भाग में बम्बई विभाग के पृष्ठ १५१ पर दिया गया है। इस फर्म की हैदराबाद, बम्बई, करांची, मुलतान, सरगोधा, पुलरवार, सिलांवाली मराडी, इत्यादि कई स्थानों पर इस देश में तथा इजिप्ट, सीदिया, ग्रीस, जापान इत्यादि विदेशों में भी दुकानें हैं।

करांची—मेसर्स हीरानन्द ताराचन्द, बन्दर रोड़ (T. A. Mukhi) यहाँ बैङ्किंग, सोना, चाँदी और कमीशन का काम होता है।

मेसर्स एलिंगर मोहता एण्ड कम्पनी लि०

इस फर्म का विस्तृत परिचय मेसर्स मोतीलाल गोवर्द्धनदास के नाम से दिया गया है। यह फर्म जॉन ग्लैन एण्ड कम्पनी ग्लासगो की सोल एजेण्ट तथा अन्य कई कम्पनियों के पीस गुड्स डिपार्टमेण्ट की एजण्ट है। इस पर इन्स्यूरेन्स का काम भी होता है। इसका तार का पता (Mohta) है।

कपड़े के व्यापारी

मेसर्स कलाचन्द मोतीराम

इस फर्म के मालिक हैदराबाद (सिन्ध) के निवासी हैं। आप सिन्धी—आमल जाति के सज्जन हैं। इस फर्म की स्थापना सन् १९०४ में हुई। इसके वर्तमान मालिक श्रीयुत मोतीरामजी हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

करॉंची—मेसर्स कलाचन्द मोतीराम गोवर्द्धनदास, मार्केट T. A Diamond	इस फर्म पर पीस गुड्स और कमीशन एजन्सी का काम होता है।
बम्बई—उधाराम बीरूमल कोलीबाड़ा	यहाँ पर कमीशन एजन्सी का काम होता है।

मेसर्स गोवर्द्धनदास रामगोपाल

इस फर्म का विस्तृत परिचय मेसर्स मोतीलाल गोवर्द्धनदास के परिचय में देखिए। इ नाम से इस फर्म पर यहाँ सब प्रकार के कपड़े का थोक व्यापार होता है।

मेसर्स गणपतराय ईसरदास

इस फर्म के मालिकों का मूल निवास-स्थान फतेपुर (सीकर) में है। आप अग्रवाल जाति के गर्ग गौत्रीय सज्जन हैं। इस फर्म की स्थापना संवत् १९४८ में हुई। इस फर्म की विशेष तरक्की श्रीयुत स्व० ब्रजलालजी दारुका के पुत्र श्रीयुत विसेसरलालजी दारुका के हाथों से हुई। इस समय श्रीयुत विसेरलालजी के पुत्र श्रीयुत झावरमलजी दारुका उनके स्थान पर हैं। इस समय इस फर्म के वर्तमान मालिक श्रीयुत उंकारमलजी सरावगी (श्रीयुत ईसरदासजी के पुत्र) हैं तथा श्रीयुत शिवभगवानजी (श्रीयुत गणपतरायजी के पौत्र) हैं। इस फर्म के मॅनेजर तथा मैनेजिंग पार्टनर श्रीयुत झावरमलजी दारुका हैं। आप मारवाड़ी विद्यालय कराँची तथा मारवाड़ी धर्मशाला कराँची के ट्रस्टी हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

हेड ऑफिस—अमृतसर मेसर्स रामलाल गनपतराय आलूवाला कटरा (T. A. Sarawagi)	यहाँ पर विलायती तथा देशी कपड़े का व्यापार और कमीशन एजन्सी का काम होता है। यहाँ पर यह दुकान करीब ८० वर्षों से स्थापित है, यहाँ के आप बहुत पुराने रईस हैं।
कराँची—मेसर्स गनपतराय ईसरदास न्यू क्लॉथ मार्केट T. A. Parasnath	यहाँ पर भी कपड़े का व्यापार तथा कमीशन एजन्सी का काम होता है।
बम्बई—मेसर्स रामलाल गणपतराय कालकादेवी रोड (T. A. Kailaspati)	यहाँ पर कमीशन एजन्सी का काम होता है।

मेसर्स गोभाई करञ्जा लिमिटेड

इस फर्म का परिचय इस ग्रन्थ के प्रथम भाग में बम्बई विभाग के पृष्ठ १४९-५० पर दिया गया है। इसकी करांची ब्रांच पर जापानी और चायनीज सिल्क का व्यापार होता है।

मेसर्स गोवर्द्धनदास सेऊमल

इस फर्म के वर्तमान मालिक श्रीयुत सेऊमलजी हैं। आप श्रीयुत मूलचन्दजी के पुत्र हैं। आपका स्वर्गवास अभी हुआ है। यह फर्म यहाँ पर करीब २२ बरस से स्थापित है।

इसकी स्थापना सेठ सेऊमलजी ने की। आपकी इस समय ४२ वर्ष की उम्र है। आपका मूल निवास-स्थान बेरिया (सायती) का है। आप बड़े धर्मात्मा और परोपकारी हुए। आपको करांची में आए ५०-६० वर्ष हो गये। आपने अपने निवास-स्थान बेरिया में एक कुँआ तथा बगीचा बनाया। यहाँ पर आपने दूसरे लोगों के लिए, शादी वगैरे के लिए करीब ३५०००) की लागत से एक मकान बनाया। इसमें बर्तन, पलंग तथा बिस्तर की भी सुभीता है। आपकी तरफ से विधवाओं और गरीबों को सहायता भी दी जाती है। इसके सिवाय बेरिया के स्टेशन पर आपने एक कुँआ, मुसाफिर खाना और धर्मशाला बनवाई। इस धर्मशाला में एक नौकर आपकी तरफ से रहता है। इसके सिवा जलवाना नामक स्थान पर आपने हिन्दुओं को रहने के लिए बहुत सी जमीन मुफ्त में दी। आपने अपने मृत्यु के वक्त में भी बहुत सा धर्म किया। आपका कुटुम्ब पोतों और पर पोतों से परिपूर्ण है।

सेठ मूलचन्दजी के बेटे सेठ हीरानन्दजी, हासामलजी, सेऊमलजी और सहजरामजी हैं।

श्रीयुत मूलचन्दजी की दान-धर्म की ओर बहुत रुचि रही है। आपने बहुत से अच्छे २ धार्मिक कार्य्य किये हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

१—मेसर्स गोवर्द्धनदास सेऊमल	यह फर्म पीस गुड्स का व्यापार करती है।
२—मेसर्स हासोमल ब्रदर्स	इस फर्म में मूलचन्दजी के पुत्र श्रीयुत भाई हीरानन्दजी, हासोमलजी, श्रीयुत सेऊमलजी और श्रीयुत सेहजरामजी शामिल हैं। यह फर्म बम्बई कम्पनी की ग्यारण्टेड ब्रोकर है।
३—मेसर्स सहजराम मूलचन्द	यह फर्म भी पीस गुड्स का व्यापार करती है।

मेसर्स डूंगरसी एण्ड सन्स

इस फर्म के वर्तमान मालिक श्रीयुत सेठ डूंगरसी शामजी जोशी हैं। आप पुष्करणा ब्राह्मण जाति के सज्जन हैं। श्रीयुत डूंगरसी शामजी जोशी उन कर्मवीरों में से एक हैं जो केवल अपने साहस, धैर्य्य और आत्म-विश्वास के जरिये साधारण स्थिति से उच्च स्थिति को प्राप्त कर लेते हैं। आपके पिता श्रीयुत शामजी जोशी साधारण स्थिति के पुरुष थे। आपका स्वर्गवास श्रीयुत डूंगरसीजी की बाल्यावस्था ही में हो गया था। मगर श्रीयुत डूंगरसीजी बाल्यावस्था ही से बड़े बुद्धिमान और प्रत्युत्पन्न मति थे। आपने अत्यन्त उत्साह के साथ व्यापार मे हाथ डाला। और

मि० कोठारे के साफे में मेसर्स के० पी० कोठारे कम्पनी की स्थापना की जो सन् १९०७ तक चलती रही। सन् १९०४ में आप मेसर्स दाऊशासन कम्पनी के साथ में कराँची आए और कुछ समय तक इसी कम्पनी की दलाली करते रहे। पश्चात् आपने शक्कर, रूई, ऊन, कपड़ा तथा कमीशन एजन्सी का स्वतन्त्र कारबार उपरोक्त नाम से प्रारम्भ कर दिया। इस व्यापार में आपको गहरी सफलता प्राप्त हुई। और आज कराँची की प्रतिष्ठित फर्मों में यह फर्म भी अच्छा स्थान रखती है।

श्रीयुत डूंगरसी शामजी जोशी का धार्मिक और सार्वजनिक कार्य्यों की ओर भी बहुत अधिक लक्ष्य रहा है। आपने चालीस हजार रुपये से डूंगरसी एज्यूकेशन फण्ड नामक एक फण्ड खोला। इस फण्ड के द्वारा पुष्करणा जाति के शिक्षार्थी छात्रों को काफी सहायता मिलती है। सन् १९७६ में आप पुष्करण-ब्राह्मण जातीय महासभा के करांची अधिवेशन के स्वागताध्यक्ष चुने गये इस समय आपने उक्त सभा को ४०००) प्रदान किया। आप बड़े योग्य बुद्धिमान और विचारदर्शी पुरुष हैं। पुष्करणा समाज में चलनेवाली फूट को कई बार आपने अपनी बुद्धिमत्ता से मिटाया है। अब तक आप अपने जीवन में सब मिलाकर करीब तीन लाख रुपयों का दान कर चुके हैं। आपके इस समय दो पुत्र हैं जिनके नाम श्रीयुत मनुभाई डूंगरसी और श्रीयुत जीवनदास डूंगरसी हैं। इनमें श्रीयुत मनुभाई करांची फर्म का और श्रीयुत जीवनदास बम्बई फर्म का संचालन करते है।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

हेड आफिस करांची—मेसर्स डूंगरसी एण्ड सन्स बम्बई बाजार (T. A. Success)	इस फर्म पर बैंकिंग एण्ड मर्चेण्टस का काम होता है। यह फर्म मेसर्स डेविड सासून की हाऊस ब्रोकर है।
बम्बई—मेसर्स डूंगरसी एण्ड सन्स 59 फारबस स्ट्रीट (T. A. Satya)	यह फर्म मेसर्स डेविड सासून की हाऊस ब्रोकर तथा सासून स्पीनिंग एण्ड वीविंग मिल्स और यूनियन मिल्स की मुकादम है।

श्रीयुत डूंगरसी भाई के दो पुत्र हैं जिनके नाम श्रीयुत मनुभाई डूंगरसी और जीवनदास डूंगरसी है। आप दोनों बड़े सज्जन, मिलनसार और योग्य सज्जन हैं।

मेसर्स चेलाराम बूलचन्द

इस फर्म के मालिकों का मूल निवास-स्थान शिकारपुर (सिन्ध) है। आप नागपाल जाति के सज्जन हैं। इस फर्म को करांची में स्थापित हुए ३० वर्ष हुए। इसकी स्थापना श्रीयुत

सेठ चेलारामजी और उनके पुत्र बूलचन्दजी ने की। सेठ चेलारामजी का स्वर्गवास हुए १५ साल हुए। इस समय इसके मालिक श्रीयुत चेला रामजी के पुत्र श्रीयुत बूलचन्दजी, सूरत-रामजी और कन्हैयालालजी हैं। आप सब बड़े सज्जन और योग्य हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है :—

हेड ऑफिस बम्बई—मेसर्स चेलाराम बूलचन्द बारभाई मोहल्ला नं० ३ (T. A. twill) — इस फर्म पर बम्बई की मिलों के रंगीन माल (ड्राइंग क्लाथ) का थोक व्यापार होता है। आपका स्पेशल मार्का नाग शेर छाप, छोकरा बन्दूक छाप और कन्हैयालाल टिकिट, जोगनसतार टिकिट ये पाँचों आपके स्पेशल मार्का हैं। इस फर्म का दूकान मूलजी जेठा मार्केट में है।

शिकारपुर—मेसर्स चेलाराम बूलचन्द—यहाँ पर भी यही व्यापार होता है।

सक्कर—मेसर्स चेलाराम बूलचन्द—यहाँ पर भी यही व्यापार होता है।

मेसर्स ठाकुरदास देऊमल

इस फर्म के मालिक सेठ पेरूमल, देऊमल, रामचन्द्र, ठाकुरदास और अगरिभाई हैं। आप लोग शिकारपुर निवासी रोहेरा जाति के हैं। इस फर्म का हेड आफिस शिकारपुर में है तथा इसकी ब्राञ्चेज बम्बई और करांची में हैं। इसका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

करांची—मेसर्स ठाकुरदास देऊमल बम्बई बाजार—यहाँ पर कपड़े का व्यापार होता है।

मेसर्स तेजभानदास ठारूमल

इस फर्म का विशेष परिचय इस ग्रन्थ के प्रथम भाग में बम्बई विभाग के पृष्ठ १३७ पर दिया गया है। करांची में इसका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

करांची—मेसर्स तेजभानदास ठारूमल बम्बई बाजार (T. A. Honumon) यहाँ पर कपड़े का व्यापार होता है।

मेसर्स दौलतराम मोहनदास

इस फर्म का विस्तृत परिचय इस ग्रन्थ के प्रथम भाग में बम्बई विभाग के पृष्ठ १३७ पर दिया गया है। इसकी करांची फर्म का परिचय इस प्रकार है।

करांची—मेसर्स दौलतराम मोहनदास बम्बई बाजार (T. A. Lalpagri) यहाँ पर कपड़े का व्यापार होता है।

मेसर्स नागरमल पोद्दार

इस फर्म का विस्तृत परिचय कई चित्रों सहित इस ग्रन्थ के दूसरे भाग में कलकत्ता विभाग के पृष्ठ ६८१ पर दिया गया है। इसका हेड ऑफिस नागपूर में है। कराँची में इस फर्म पर टाटा मिल्स तथा दूसरे स्वदेशी कपड़े का व्यापार होता है। इसका पता गोवर्धनदास मार्केट कराँची है।

मेसर्स पोकरदास द्वारकादास

इस फर्म के मालिक शिकारपुर निवासी सेठ द्वारकादासजी के पुत्र सेठ मेघराजजी हैं। आपका विस्तृत परिचय चित्रों सहित इस ग्रन्थ के प्रथम भाग में बम्बई विभाग के पृष्ठ १३८ पर दिया गया है। इसकी कराँची फर्म का परिचय इस प्रकार है।

करांची—पोकरदास द्वारकादास गोवर्द्धनदास मारकीट (T. A. Swadeshi) यहाँ स्वदेशी, विलायती और जापानी कपड़े का व्यापार होता है।

कराँची—द्वारकादास फतेचन्द मूलजी जेठा मारकीट—यहाँ गांवठी कपड़े का व्यापार होता है

कराँची—पी० द्वारकादास मूलजी जेठा मारकीट—इस ऑफिस से विलायत से इम्पोर्ट होता है।

मेसर्स फतेचन्द मदनगोपाल

इस फर्म के मालिकों का मूल निवास-स्थान बिसाऊं (जयपुर) का है। कराँची में इस फर्म की स्थापना सन् १९१४ में हुई। इसके स्थापक श्रीयुत फतेचन्दजी मुरारका हैं। आप अग्रवाल जाति के गर्ग गौत्रीय सज्जन हैं। आप ही के हाथों से इस फर्म की विशेष तरक्की हुई।

इस फर्म में इस समय चार पार्टनर हैं। जिनके नाम श्रीयुत शिवदानमलजी, श्रीयुत मदनगोपालजी, श्रीयुत फतेचन्दजी तथा श्रीयुत रामेश्वरदासजी बी० काम० (बम्बई) हैं। श्रीयुत शिवदानमलजी श्रीयुत नौरंगरायजी के पुत्र हैं। तथा श्रीयुत रामेश्वरदासजी श्रीयुत फतेचन्दजी के पुत्र हैं

श्रीयुत फतेचन्दजी मारवाड़ी विद्यालय के ट्रस्टी तथा सिन्ध प्रान्तीय अग्रवाल सभा के उपसभापति हैं। श्रीयुत मदनगोपालजी अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी युवक सम्मेलन के मन्त्री, सिन्ध प्रान्तीय मारवाड़ी अग्रवाल सभा के उपमन्त्री, मारवाड़ी कन्या विद्यालय के मन्त्री और

नवयुवक सेवक दल के प्रधान मन्त्री हैं। श्रीयुत रामेश्वरदासजी मारवाड़ी विद्यालय के आन-रेरी सुपरवाइजर, नवयुवक सेवक दल के सभापति और हिन्दी साहित्य भवन के आनरेरी पुस्तकाध्यक्ष हैं। तथा यह फर्म मारवाड़ी विद्यालय भी कोषाध्यक्ष है।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

१-करांची मेसर्स फतेचन्द मदनगोपाल गोवर्द्धनदास मार्केट (T. A. murarka)	यहाँ पर विलायती कपड़े का डायरेक्ट इम्पोर्ट होता है तथा थोक और खुदरा बिजीनेस होता है। यहाँ आपका आफिस भी है।
२-अमृतसर-मेसर्स फतेचन्द मदनगोपाल कटरा आलूवाला (T. A. murarka)	यहाँ पर भी विलायती कपड़े का व्यापार होता है। यहाँ के मैनेजर श्रीयुत सूरजमलजी हैं।
३-अमृतसर—देवीदयाल मदनगोपाल	इस फर्म की रंग की एजन्सी है। इसमें आप पार्ट-नर हैं।

मेसर्स वेरामल केवलराम

इस फर्म का परिचय इस ग्रन्थ के प्रथम भाग में मेसर्स वेरामल परशुराम के नाम से बम्बई विभाग के पृष्ठ ११९ पर दिया गया है

करांची—मेसर्स बेरामल केवलराम-यहाँ गावठी कपड़े का व्यापार होता है।

मेसर्स रामगोपाल शिवरतन

इस फर्म का विस्तृत परिचय इसी भाग के प्रारम्भ में मेसर्स मोतीलाल गोवर्द्धनदास के नाम से दिया गया है। इस नाम से इस फर्म पर प्रिण्टेड और रङ्गीन कपड़े का थोक व्यापार होता है।

मेसर्स लखमीचन्द मोहनलाल

इस फर्म के मालिक बीकानेर के मूल निवासी हैं। आप माहेश्वरी जाति के मोहता सज्जन हैं। इस फर्म की स्थापना करांची में इस नाम से हुए करीब १० वर्ष हुए। इसके पहले यह फर्म लखमीचन्द कन्हैयालाल फर्म में सम्मिलित था। इस समय इस फर्म के मालिक श्रीयुत सेठ मोहनलालजी मोहता हैं। आपके इस समय चार पुत्र हैं। जिनके नाम श्रीयुत माणिक-

सेठ हासोमलजी (हासोमल चेलाराम) करांची

सेठ मोहनलालजी मोहता (लक्ष्मीचंद मोहनलाल) करांची

स्व० सेठ मूलचंदजी करनानी करांची

स्व० मियाँ मौलाबख्श साहिब करांची

लालजी, श्रीयुत बद्रीदासजी, श्रीशंकरलालजी तथा श्रीलालजी हैं। श्रीयुत माणिकलालजी तथा बद्रीदासजी व्यापार में भाग लेते हैं, तथा शंकरलालजी और श्रीलालजी पढ़ते हैं।

श्रीयुत मोहनलालजी के पिता श्रीयुत् लक्ष्मीचन्द थे। जिनका नाम बीकानेर में बहुत प्रसिद्ध है। आपकी ओर से बीकानेर में कई सार्वजनिक कार्य्य हुए। जिनमें मोहता मूलचंद बोर्डिंग हाऊस इत्यादि संस्थाएँ प्रसिद्ध हैं। आपके सार्वजनिक कार्यों का वर्णन प्रथम भाग के बीकानेर के पोर्शन में मेसर्स मोतीलाल लखमीचन्द के परिचय में दिया गया है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

करांची—मेसर्स लखमीचन्द मोहनलाल लखमीदास-स्ट्रीट—	यह फर्म राली ब्रदर्स के पीस गुड्स डिपार्टमेण्ट की हेड ब्रोकर है। यहाँ पर इस फर्म के कई मकानात भी हैं।
दिल्ली—मेसर्स लखमीचंद मोहनलाल न्यू क्लॉथ मार्केट	यहाँ पर कपड़े का व्यापार होता है।
अमृतसर—मेसर्स लखमीचंद मोहनलाल आलूवाला कटरा	यहाँ पर कमीशन एजन्सी का काम होता है।
कराँची—मेसर्स लखमीचन्द बद्रीदास गोवर्द्धनदास मार्केट	यहाँ पर कपड़े का व्यापार और कमीशन एजन्सी का काम होता है।

मेसर्स वसियामल आसूमल

इस फर्म का विस्तृत परिचय चित्रों सहित इस ग्रन्थ के प्रथम भाग में बम्बई विभाग के पृष्ठ १४९ पर दिया गया है। कराँची फर्म का परिचय इस प्रकार है—

कराँची—मेसर्स वसियामल आसूमल—यहाँ पर चायनीज और जापानी सिल्क का व्यापार होता है।

मेसर्स शिवरतन चाँदरतन

इस फर्म का विस्तृत परिचय इसी भाग के प्रारम्भ में मेसर्स मोतीलाल गोवर्द्धनदास के नाम से दिया गया है। इस नाम से इस फर्म पर छींट और फैन्सी कपड़े का थोक व्यापार होता है।

मेसर्स सोहनलाल गणेशलाल

इस फर्म के वर्तमान मालिक श्रीयुत् सोहनलालजी मेहता है। आपका मूल निवासस्थान बीकानेर में है। बीकानेर के सुप्रसिद्ध दानवीर सेठ लखमीचन्दजी के आप पुत्र हैं। आपका विस्तृत कौटुम्बिक परिचय प्रथम भाग के बीकानेर पोर्शन में मेसर्स मोतीलाल लखमीचन्द के परिचय मे दिया गया है।

इस फर्म को इस नाम से कराँची में स्थापित हुए २० वर्ष से ऊपर हो गये। पहले यह फर्म मेसर्स मोहनलाल अगरचन्द के नाम से काम करता था। उसके पश्चात् मेसर्स सोहनलाल-अगरचन्द के नाम से व्यापार कर रहा है।

श्रीयुत् सोहनलालजी के इस समय एक पुत्र है। जिनका नाम श्रीयुत् गणेशलालजी है।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

मेसर्स सोहनलाल गणेशलाल गोवर्धनदास मार्केट (T. A. Chameli)	इस फर्म पर विलायती कपड़े का व्यापार तथा कमीशन एजन्सी का काम होता है। यह फर्म फारवेस कैम्बल एण्ड को० की कराँची और अमृतसर दोनों स्थानों की हेड ब्रोकर है।

मेसर्स सागरमल रामप्रकाश

इस फर्म के मालिकों का मूल निवास-स्थान भिवानी हैं। आप अग्रवाल जाति के बिन्दल गौत्रीय सज्जन हैं। इस फर्म को काम करते हुए ४ वर्ष हुए। इसके पहले यह फर्म दूसरे नाम से काम करती थी। इस फर्म के वर्तमान मालिक रामरिचपालजी रतीराम हैं। आप मेसर्स ईसरदास श्रीगोपाल के मैनेजर हैं। आप बड़े सज्जन और योग्य हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

१—मेसर्स सागरमल रामप्रकाश गोवर्द्धनदास मार्केट T.A Sagpur	इस फर्म पर विलायती कपड़े का व्यापार और कमीशन एजन्सी का काम होता है।
२—सागरमल मदर्स नानकवड़ा	इस फर्म पर कटपीस गुड्स का व्यापार होता है।

मेसर्स हासोमल चेलाराम

इस फर्म के मालिकों का मूल निवास-स्थान हैदराबाद (सिन्ध) में है। इस फर्म को कराँची में स्थापित हुए करीब ५० वर्ष हुए। इसकी स्थापना सेठ हासूमलजी ने की। आपका जन्म संवत्

१९२१ में हुआ। आप श्रीयुत् चेलारामजी के पुत्र हैं। श्रीयुत हासोमलजी कराँची में बड़े प्रतिष्ठित व्यापारी हैं। यहाँ के व्यापारिक समाज में तथा गवर्नमेण्ट में आपका अच्छा प्रभाव है। गव्हर्नमेण्ट ने आपको ऑनरेरी मजिस्टेट का सम्मान दे रक्खा है। इसके अतिरिक्त सेठ हासोमलजी की दान, धर्म और सार्वजनिक कार्यों की ओर भी अच्छी प्रवृत्ति है। कराँची के स्मशान को बनाने में आपने बहुत मदद दी। तथा बच्चों को गाड़ने की व्यवस्था के लिए आपने कम्पाउण्ड बना दिया है। और भी आपका ख्याल बहुत अच्छे २ काम करने का है। आपके इस समय एक पुत्र है जिनका नाम हेमनदासजी हैं। तथा आपके दत्तकपुत्र श्रीयुत सेऊमलजी हैं अभी आपको बहुत सा रुपया दे दिया गया है। शुरू से तो श्रीयुत सेऊमलजी इस फर्म में ज्वाइण्ट थे। आपका इन पर बहुत प्रेम है। दुकान में बहुत लाभ हुआ इस लिए श्रीयुत् सेऊमलजी को बहुत धन दिया।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

कराँची—मेसर्स हासोमल चेलाराम कपड़ा मार्केट	यह फर्म सब प्रकार के पीसगुड्स का थोक व्यापार करती है।

मेसर्स हीरालाल शिवलाल एण्ड को०

इस फर्म के मालिक श्रीयुत हीरालालजी शर्मा हैं। आप श्रीयुत शिवलालजी शर्मा के पुत्र हैं। आपका मूल निवास-स्थान पहले राजोर (जयपुर) में और फिर भरतपुर में रहा। श्रीयुत हीरालालजी का जन्म संवत् १९४५ में हुआ। सबसे पहले आप सन् १९०६ में कराँची आए। शुरू २ में आप भिन्न २ यूरोपियन फर्मों में सर्विस करते रहे। इसी बीच सन् १९१३ से आपने कपड़े के व्यापार में हाथ डाला। इस समय आप सर्विस भी करते रहे। और आपका व्यापार भी चलता रहा। सन् १९२६ से आपने सर्विस बिलकुल छोड़ दी और अपनी सारी शक्तियाँ व्यापार की ओर लगा दीं।

ऊपर लिखे विवरण से पता चलेगा कि श्रीयुत हीरालालजी कितने सफल अध्यवसायी और कर्मवीर हैं। आपका परिचय बड़े २ अंग्रेज अफसरों तथा व्यापारियों से रहा है। तथा कराँची के सार्वजनिक क्षेत्र में भी आपका बहुत नाम है।

इस समय आप कपड़े का इम्पोर्ट तथा इन्स्यूरेन्स का काम करते हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

१—मेसर्स हीरालाल शिवलाल एण्ड को० हीरालाल शिवलाल बिल्डिंग पारिया स्ट्रीट
(TA Verdant)

यह फर्म विलायत से कपड़े का इम्पोर्ट तथा ऊन और ड्रायफ्रूट का एक्सपोर्ट करती है तथा वल्कन इन्श्यूरेन्स कम्पनी नामक हिन्दुस्थानी कम्पनी की इण्डेपेण्डेण्ट एजण्ट है। इस फर्म के पास क्लिअरिंग फावर्डिंग और शिपिंग एजन्सी भी है। इस एजन्सी के द्वारा क्लिअरिंग फार्वर्डिंग और शिपिंग एजन्सी का काम जितना सुभीते से हो सकता है उतना दूसरी किसी एजन्सी के द्वारा नहीं हो सकता। कारण श्रीयुत हीरालालजी का इस कार्य्य से सम्बन्ध रखने वाले सभी अफिसरों से अच्छा परिचय है। और अंग्रेजी तरीके के व्यापार के आप अच्छे जानकार हैं।

वल्कन इन्श्यूरेन्स कम्पनी—इस कम्पनी का हेड आफिस बम्बई में है इसके मैनेजिंग एजण्ट्स जे० सी० शीतल वड एण्ड कम्पनी है तथा इसके डायरेक्टर्स सरजमशेदजी जीजी भाई बैरोनेट (चेअरमेन) सर स्वरूपचन्द हुकुमचन्द इन्दौर, सर चिमनलाल एच० सेटलवड के० सी० एस० आई० एडवोकेट बम्बई, सेठ कीकाभाई प्रेमचन्द, मोतीलाल सी० सेटलवड़ बम्बई, वेलजी लखमसी नप्पू, चिन्नूभाई माधौलाल, सर कावसजी जहाँगीर (जूनियर) सेठ वेनीप्रसादजी डालमिया, जे० सी० सेटलवड बम्बई इत्यादि हैं।

लोहे के व्यापारी

मेसर्स तीरथराम मोतीलाल

आप लोगों का आदि निवासस्थान अमृतसर (पंजाब) है। आप लोग अग्रवाल जाति के वैश्य सज्जन हैं। इस फर्म को करीब ३ वर्ष पूर्व सेठ तीरथरामजी ने स्थापित किया। इस समय इस फर्म के मालिक स्वयं सेठ तीरथरामजी ही हैं। आप इसके पूर्व फर्म मेसर्स बिहारी मल जग्गामल के पार्टनर थे। आप लोहे के व्यापार में बहुत ही व्यापार कुशल हैं; आपका फर्म यहाँ के व्यापारियों में प्रतिष्ठित माना जाता है। आप बहुत उदार हैं तथा दान भी किया करते हैं। अभी आपने थोड़े ही दिनों पहले यहाँ के मारवाड़ी विद्यालय को १०००) रुपया दिया है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

हेड ऑफिस करांची—मेसर्स तीरथ-राम मोतीलाल T. A. Nails साले मोहम्मद स्ट्रीट	यह फर्म लोहे का डायरेक्ट इम्पोर्ट करके यहाँ के साधारण व्यापारियों को बेचती हैं। यह फर्म यहाँ तथा देहली में गवर्नमेण्ट को माल सप्लाय करती है।

मेसर्स नन्नेमल बनारसीदास

इस फर्म के मालिकों का मूल निवासस्थान देहली का है। आप खण्डेलवाल वैश्य जाति के सज्जन हैं। यह फर्म यहाँ पर सम्वत् १९३९ से स्थापित है। यहाँ पर इस फर्म की स्थापना श्रीयुत् लाला जानकीदासजी तथा लाला बनारसीदासजी ने की। इनमें से लाला जानकीदासजी का स्वर्गवास संवत् १९४८ में हो गया। अब इस समय इस फर्म के मालिक लाला बनारसी-दासजी हैं। आप अक्सर देहली में ही रहते हैं। करांची फर्म का मेनेजमेण्ट रेवाड़ी निवासी श्रीयुत् पण्डित चन्द्रभानजी तिवारी करते हैं। आप सुशिक्षित और व्यापार कुशल सज्जन हैं।

इस फर्म के मालिकों का दान, धर्म और सार्व-जनिक कार्यों की ओर भी बहुत लक्ष्य है। करांची के स्मशान भमि में आपकी ओर से जङ्गला बनाया गया है। तथा यहाँ के सरकारी बगीचे में आपके नाम से एक जङ्गला बनाया हुआ है। करांची के मारवाड़ी विद्यालय में भी आपकी ओर से एक कमरा बन रहा है। इसके अतिरिक्त गढ़मुक्तेश्वर में भी आपकी ओर से एक धर्मशाला बनी हुई है। करांची की मारवाड़ी धर्मशाला बनाने में भी आपने अच्छी सहा-यता की है। तथा सब अच्छे इन्स्टीट्यूशन्स को सहायता करते रहते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

करांची— मेसर्स नन्नेमल बनारसीदास खारादर (S. T. metals)	यह फर्म आयर्न का डायरेक्ट विलायत से इम्पोर्ट करके सेल करती है। इसके अतिरिक्त इस फर्म पर बैंकिंग बिजिनेस भी बहुत होता है। हाल ही में बैंकिंग कमेटी की बैठक हुई थी उसमें इस फर्म को भी श्रीयुत् चन्द्रभानजी द्वारा राय देने के लिए निमन्त्रित किया था। इसमें बैंकिंग के बारे में बहुत सी बातें आपने सजेस्ट की थी। इसके सिवा हर प्रकार की कमीशन एजन्सी का काम होता है। यह फर्म गव-र्नमेंण्ट को भी माल सप्लाय करती है। करांची में इस फर्म की बहुत जायदाद और मकानात भी हैं। जिनके किराये की माकूल आमदनी होती है।

मेसर्स पोहमल ब्रदर्स

यह फर्म करांची में सन् १९२१ से स्थापित है। इस फर्म का विस्तृत परिचय इस ग्रन्थ के प्रथम भाग में रेशम के व्यापारियों में दिया गया है। इसकी करांची फर्म का मैनेजमेण्ट श्रीयुत् कहानचन्द परमानन्द आड़वाणी करते हैं। आपका मूल निवासस्थान सिंध हैदराबाद में है।

यहाँ पर यह फर्म लोहे का विलायत से इम्पोर्ट करती है, और लोहे का बड़ा स्टॉक भी रखती है। और यहाँ से ग्रेन, शीड्स इत्यादि वस्तुओं का एक्सपोर्ट करती है।

(T. A. Dipmala)

मेसर्स विहारीमल जग्गामल

इस फर्म के मालिको का मूल निवासस्थान अमृतसर (पंजाब) है। इसके वर्तमान मालिक श्रीयुत जमनादासजी हैं। आप अग्रवाल जाति के सज्जन हैं। इस फर्म को करांची में स्थापित हुए करीब ४० वर्ष हुए। इसकी स्थापना श्रीयुत सेठ संतरामजी ने की। आप श्रीयुत सेठ जग्गामलजी के पुत्र थे। आपका स्वर्गवास सन् १९०९ में हो गया। आपके पश्चात् श्रीयुत जमनालालजी के पिता श्रीयुत काशीरामजी ने इस फर्म को सम्हाला। आपका स्वर्गवास सन् १९१७ में हो गया। तब से इस फर्म का संचालन श्रीयुत् जमनालालजी कर रहे हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

हेड ऑफिस—करांची
मेसर्स बिहारीलाल जग्गामल
सले मोहम्मद स्ट्रीट
(T. A. Ciredes)

इस फर्म पर बैङ्किग और लोहे के सब प्रकार के सामानो का बहुत बड़ा व्यापार होता है। यह फर्म विलायत से डायरेक्ट लोहे का इम्पोर्ट करती है। आपकी एक ब्रांच पैरिस में भी खोली गई है।

मेसर्स माधौराम हरदेवदास

इस फर्म के मालिकों का मूल निवास-स्थान देहली का है। आप खण्डेलवाल सज्जन हैं। इस समय इस फर्म के प्रोप्राइटर लाला हंसराजजी, लाला गोविन्ददासजी, लाला दीनानाथजी और श्रीमती भगवतीदेवी (धर्मपत्नी लाला रघुमलजी) हैं, आपके परिवार का विस्तृत परिचय इस ग्रन्थ के दूसरे भाग में कलकत्ता विभाग के पृष्ठ ५०२ पर दिया गया है।

करांची में यह फर्म सम्वत् १९४६ से इस नाम से व्यापार कर रही है। इस फर्म के करांची ब्रांच का मैनेजमेण्ट लाला चुन्नीलालजी करते हैं। आप भी खण्डेलवाल जाति के वैश्य हैं।

लाला हंसराजजी (माधौराम हरदेवदास) करांची

लाला गोवर्द्धनदासजी (माधौराम हरदेवदास) करांची
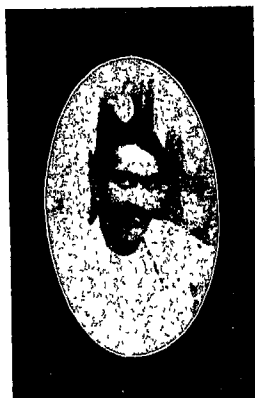
था। लाल मुरलीमलजी का स्वर्गवास
वित थे व्यापार का संचालन अपने पुत्रों
वास होने के बाद आपके पुत्र लाल श्रीकृपा-
दोनों भाई बड़े विचारवान और व्यापार

र आप लोग लोहे का डायरेक्ट इम्पोर्ट करके
व्यापारियों को बेचते हैं। यह फर्म सेण्डटीच
का इम्पोर्ट भी करती है।

र्म की एक ब्रॉंच बेलजियम में भी है।

लाला दीनानाथजी (माधौराम हरदेवदास) करांची

आपका मूल निवास स्थान महिपालपुर (दिल्ली) है। आप चौबीस साल से इस फर्म पर कार्य कर रहे हैं। आप बड़े सज्जन, योग्य, और व्यापार कुशल सज्जन हैं। आप आयर्न मर्चेण्ट एसोसिएशन की मैनेजिंग कमेटी के मेंबर हैं। पहले आप कराँची की पाँजरापोल सोसाइटी की मैनेजिंग कमेटी के मेम्बर रह चुके है।

यह फर्म न केवल कराँची में प्रत्युत सारे भरतवर्ष के लोहे के व्यापारियों में बहुत बड़ी है। इसका हेड ऑफिस दिल्ली में है तथा कलकत्ता, बम्बई और कानपुर में भी शाखाएँ हैं।

इसका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

कराँची—मेसर्स माधौराम हरदेवदास मिकलोड रोड	इस फर्म पर आयर्न एण्ड स्टील का बहुत बड़ा व्यापार होता है। यह फर्म डायरेक्ट विलायत से लोहे का इम्पोर्ट करती है। इसके सिवा इस फर्म पर बैंकिंग बिजिनेस भी होता है। यह फर्म गवर्नमेण्ट कण्ट्राक्टर भी है कमीशन एजन्सी का काम भी यह फर्म करती है।

मेसर्स मुरलीमल सन्तराम एण्ड कम्पनी

इस फर्म के वर्तमान मालिक लाल श्रीकृपादासजी और लाल सन्तरामजी हैं। आप लोग अग्रवाल जाती के वैश्य सज्जन हैं। आप लोग अमृतसर के रहनेवाले हैं। इस फर्म को करीब २५ वर्ष पूर्व स्वर्गीय लाल मुरलीमलजी ने स्थापित किया। लाल मुरलीमलजी का स्वर्गवास हुए करीब ९-१० वर्ष हुए हैं। आप जब तक जीवित थे व्यापार का संचालन अपने पुत्रों के सहयोग से खुद ही किया करते थे। आपके स्वर्गवास होने के बाद आपके पुत्र लाल श्रीकृपादासजी तथा लाल सन्तरामजी करने लगे। आप दोनों भाई बड़े विचारवान और व्यापार कुशल हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

करॉची—मेसर्स मुरलीमल सन्तराम लखीमदास स्ट्रीट Phone No, 664 (T, A. Murli)	यहाँ पर आप लोग लोहे का डायरेक्ट इम्पोर्ट करके व्यापारियो को वेचते हैं। यह फर्म सेएडटीच का इम्पोर्ट भी करती है।
करॉची—मेसर्स मुरलीमल सन्तराम	इस फर्म की एक ब्रॉच वेलजियम मे भी है।

मोटरकार डीलर्स

मेसर्स नारायणदास एण्ड कम्पनी

करांची शहर के अन्तर्गत जब मोटर गाड़ियों के व्यापार का उल्लेख किया जाता है तब सब से पहले मेसर्स नारायणदास एण्ड कम्पनी का उल्लेख करना पड़ता है। यह फर्म केवल करांची ही में नहीं प्रत्युत सिन्ध, पंजाब, बलूचिस्तान और सीमा प्रान्त में इस व्यापार के अन्तर्गत सब से बड़ी गिनी जाती है। इस फर्म का अपना निज का बड़ा भव्य और सुन्दर मकान करांची में बना हुआ है, जो लगभग ५००० वर्गगज भूमि को घेरे हुए है। यह मकान इस फर्म की जरूरतों के अनुसार बड़े उपयोगी ढङ्ग से बनाया गया है। यह फर्म शेवरलेट, न्यूक, मारकेट, हिलमनी, हुपमोबिल, साइटरोन, सिंगट, सिल्ली (इंगलीश) और सनबीम, इत्यादि गाड़ियों की, सिन्ध, पंजाब, बिलूचिस्तान और सीमाप्रान्त के लिए एजण्ट है। इसके सिवा यह फर्म एरोप्लेन डीलर्स भी है। इसी फर्म ने इण्डिया में पहली बार एरोप्लेन मँगा कर बेचा। इसके साथ ही इस फर्म में स्पेअर पार्ट्स तथा मोटर सम्बन्धी आवश्यक वस्तुओं का स्टॉक भी बहुत बड़ी तादाद में रहता है। इतने पर भी विशेषता यह है कि ये सब सामान इतने व्यवस्थित ढङ्ग से सजाये जाते हैं कि कौन वस्तु स्टॉक में है या नहीं यह मालूम करने में समय की बरबादी का बहुत अंश बच जाता है।

इस कार्यालय की दूसरी उल्लेखनीय बात यह है कि इसमें मोटर इञ्जिनियरिंग का काम बहुत ही अच्छे ढंग से किया जाता है। इस फर्म की करांची आफिस में लगभग १०० होशियार कारीगर काम करते हैं जो कि इस कार्य्य के विशेषज्ञ हैं और उनकी योग्यता का ही परिणाम है कि काम इतना बढ़िया होता है। इस फर्म में भिन्न २ वस्तुओं की प्रदर्शनी के लिए अलग २ विभाग हैं और यह दावे के साथ कहा जा सकता है कि मोटर गाड़ी के सम्बन्ध का ऐसा कोई भी कार्य्य नहीं रह जाता जो इस फर्म के द्वारा शीघ्र और बखूबी किया न जा सकता हो। प्रत्येक कार्य्य के लिए इस फर्म में अब तक की प्राप्त हर तरह की मशीनें हैं। डुको प्रणाली से मोटर पर रंग करने की भी इसमें बड़ी सुन्दर व्यवस्था है।

इस फर्म में सब प्रकार की आवश्यकताओं की पूर्ति के योग्य सब प्रकार की गाड़ियाँ रहती हैं। अर्थात् छोटी और हलकी गाड़ियों से लेकर बड़ी २ भार ढोनेवाली, और मुसाफिर गाड़ियाँ मिलती हैं। इसके अतिरिक्त इस फर्म के कार्य्यों में इलेक्ट्रोपलेटिंग, और अपहोलसटरी आदि कार्य्य भी सम्मिलित किये जा सकते हैं। इस फर्म में कठिन से कठिन मोटर रिपेरिंग भी बहुत व्यवस्थापूर्वक की जाती है, जो यहाँ के मोटर चलानेवालों के लिए बड़ी सुविधाजनक है।

श्रीयुत नारायणदासजी मोटर और साइकल के व्यापार की स्थापना करने में इधर सब से पहले गिने जाते हैं। आपने सन् १९०५ में सब से पहले केटा में यह व्यापार प्रारम्भ किया। इसके पहले बिलुचिस्तानवालों ने मोटर का दर्शन भी नहीं किया था। इनकी कुशलता और सज्जनता के परिणाम-स्वरूप यह व्यापार प्रति वर्ष तरक्की करता गया और आज तो सारे भारत के मोटर-व्यापारियों में इनका नाम उल्लेखनीय हो गया है। इनके यहाँ लगभग २३० कारीगर काम करते हैं। जिनमें लगभग १०० इनकी लाहौर की ब्रांच में नियुक्त हैं। जहाँ पर की इनका व्यापार करौंची की अपेक्षा अधिक परिमाण में चलता है। इसके अतिरिक्त इनकी एक शाखा केटा मे भी है। श्रीयुत एम० पी० नारायणदास डब्ल्यू. पी. मेघराज फर्म के मालिक और भागीदार हैं। इनके तार का पता (ओटो मावाइल) है। और इनके यहाँ ए० बी० सी० पाँचवाँ संस्करण, तथा वेनटलीज का प्रायव्हेट कोड इस्तेमाल किये जाते हैं।

सिनेमा ऑनर

दी करांची पिक्चर हाउस

श्रीयुत सेठ रेवाशङ्कर मोतीराम पचौली

श्रीयुत रेवाशङ्करजी का मूल निवासस्थान हलवद (काठियावाड) का है। आप औदीच्य ब्राह्मण हैं। आप उन सज्जनों में से एक हैं जिन्होने केवल अपने पैरों के बल पर बहुत साधारण स्थिति से उन्नति करते २ अच्छी उन्नति कर ली। बहुत समय नहीं हुआ है आप चार्टर्ड बैंक में सर्विस करते थे मगर आपको नौकरी से स्वाभाविक प्रेम न था, और आप स्वतन्त्र व्यवसाय करना चाहते थे। सन् १९१८ में आपका ध्यान सिनेमा बिजिनेस की ओर गया और आपने इम्पीरियल थिएटर में सिनेमा का उद्योग प्रारम्भ किया। इस उद्योग में आपको इतनी सफलता मिली कि धीरे २ आपके ५ सिनेमागृह हो गये। इस समय तो यह हालत है कि, करांची के सिनेमा बिजिनेस पर एक तरह से आपका ही अधिकार है। आपके एक छोटे भाई श्रीयुत दलसुखलालजी हैं। आप सिनेमा फिल्ड के विशेषज्ञ हैं।

आपकी सिनेमा कम्पनियों का परिचय इस प्रकार है:—

१—करांची पिक्चर हाउस	इस सिनेमा कम्पनी की स्थापना सन् १९२७ में इस नाम से हुई। पहले सन् १९१८ से १९२७ तक इसकी जगह आप इम्पीरियल सिनेमा के नाम से काम करते थे। यह सिनेमा ऊंचे दर्जे के हिन्दी फिल्म दिखलाता है।

२—केपिटल सिनेमा	इस सिनेमा को आपने सन् १९२५ में स्थापित किया। इस समय यह सिनेमा करांची में सबसे अधिक चलता है। यह सिनेमा इंग्लिश फिल्म दिखलाता है।
३—एम्पायर थिएटर	इसकी स्थापना सन् १९२७ में हुई।
४—इम्पीरियल सिनेमा	इसकी स्थापना सन् १९२७ में हुई। यह सिनेमा ऊँचे दर्जे के हिन्दी फिल्म दिखलाता है।
५—प्लाका सिनेमा	यह सिनेमा सन् १९३० के मार्च से शुरु हो गया। इसमें विटाफोन मुविटोन पिक्चर्स (बोलती हुई फिल्म) दिखलाया जाता है।

जनरल मर्चेण्ट्स

मेसर्स कतराक एण्ड को०

यह फर्म सन् १८९१ में करांची में स्थापित हुई। इसका स्थापन खान बहादुर के० एच० कतराक महाशय ने किया। कतराक महाशय एक मामूली व्यक्ति थे। आपने अपनी पढ़ाई समाप्त करते ही बांदरा के पारसी बोर्डिंग हाऊस में मास्टरी की नौकरी की। इस बात को बारह माह भी न होने पाये थे कि आपने इसे छोड़ कर बिजिनेस लाईन में प्रवेश किया। आपका मस्तिष्क हमेशा से ही बिजिनेस की ओर झुका रहा है। अतएव आप रावलपिंडी में जमासजी एण्ड को नामक फर्म में असिस्टेण्ट मैनेजर के पद पर नियुक्त हुए। यहाँ आपने करीब १४ साल तक व्यापारिक अनुभव प्राप्त किया। पश्चात् आप अपना स्वतन्त्र व्यापार करने के लिये कलकत्ता गये और वहाँ छोटा सा व्यापार प्रारंभ किया। इसी समय आपने देखा कि करांची पोर्ट अपनी शीघ्रगामी गति से उन्नति कर रहा है। यह स्थान सिंध, बिलोचीस्थान एवं पंजाब का सेंटर है। यही सोचकर आपने यही अपनी फर्म स्थापित करने का निश्चय किया। कहना न होगा कि इसीके परिणामस्वरूप यहाँ इस फर्म की स्थापना हुई। और इसने फार्व-र्डिंग और कमीशन एजेन्सी का काम प्रारंभ किया गया और ज्यों ज्यों इसकी तरक्की होती गई त्यों २ इस फर्म के मालिकों ने अपना व्यापार क्षेत्र भी बढ़ाया। आपने डायरेक्ट विलायत से इम्पोर्ट व्यापार करना भी प्रारंभ किया। इसके अतिरिक्त आपने कई एक कम्पनियों की कई एक वस्तुओं की, पंजाब, सिंध, और बिलोचीस्थान के लिये सोल एजेन्सियाँ ली। इसीमें

इस फर्म की बहुत उन्नति हुई और वर्तमान में भी यह फर्म कई एक वस्तुओं की कई एक कम्पनियों की सोल एजंट है।

इस फर्म के वर्तमान मालिक के० बी० के० एच० कतराक और सोराब के० एच० कतराक हैं। श्री० के० बी० कतराक महाशय फर्स्ट क्लास ऑनरेरी मेजिस्ट्रेट हैं। आप सरकार द्वारा म्युनिसिपेलिटी एवं पोर्ट ट्रस्ट के मेम्बर चुने गये थे। आप यंगमेन्स झोरोएस्ट्रीयन एसोसिएशन के फाउण्डर, पेट्रन और प्रेसिडेण्ट हैं और पारसी पंचायत फंड के आप ट्रस्टी हैं।

इस परिवार की ओर से बहुत से सार्वजनिक कार्यों में सम्पत्ति व्यय की गई है। आपकी ओर से ७५ हजार रुपया यंगमेंस झूरो स्ट्रीयन असोसियन में, ५० हजार बाई वीर बाईजी कतराक मेटरनिटीमिंग में, ६० हजार कतराक धार्मिक फण्ड में ३ हजार कतराक स्वीमिंग बाथ के बनवाने में, और २० हजार गरीब लोगों के लिये "खरशेद बाई कतराक पारसी होम" बनवाने मे दिया। इसी प्रकार कई जगह आपने हजारों रुपया खर्च किया।

वर्तमान में इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

करॉंची—मेसर्स कतराक एण्ड को० कतराक टेरेंस, मचीमियानी—यह फर्म विदेशों से वाइन, स्पिरिट, जनरल मरचेंट्स का सामान वगैरह का बड़े परिमाण में इम्पोर्ट करती है। इसके अलावा इस फर्म पर कई कम्पनियों की एजेन्सी हैं। इसकी एक शाखा कतराक बिल्डिंग, विक्टोरीया रोड में भी है। जहाँ फुटकर सामान बिक्री होता है। यह फर्म यहाँ की बड़ी फर्मों में से है। इसकी स्थायी सम्पत्ति भी यहाँ अच्छी मात्रा में है।

मेसर्स गिरधारीलाल एण्ड सन्स

इस फर्म के वर्तमान मालिक श्रीयुत गिरधारीलालजी हैं। आप खत्री जाति के सज्जन हैं। आपका मूल निवास-स्थान जिला माण्टगोमरी मे है। इस फर्म को स्थापित किये हुए आपको करीब ५ वर्ष हुए।

श्रीयुत गिरधारीलालजी के पिता श्रीयुत गणेशदासजी की दानधर्म और सार्वजनिक कार्यों की ओर भी अच्छी रुचि रही है। आपकी ओर से माण्टगोमरी जिले में एक धर्मशाला बनी हुई है। इसी जिले में आपने हाईस्कूल के लिए भूमि भी दान में दी है। इस जिले में आपकी जमींदारी और प्रापर्टी भी है।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स गिरधारीलाल एन्ड सन्स मेरियट रोड़ (T. A. Raghubansi)	यह फर्म गुजरात मैचमन्यू फैक्चरिंग कम्पनी आमदाबाद, राजरतन मैच कम्पनी कैम्बे, की एजण्ट्स और डीलर्स है। यह कम्पनी सिंधु, पंजाब और राजपूताने को मैचिस सप्लाय करती है।

हैदराबाद (सिंध)-गिरधारीलाल एण्ड सन्स } यहाँ पर आपका स्टोअर है ।

इसके अलावा लाहौर, जालन्धर और ओकारा में भी आपकी ब्रॉन्चेस हैं ।

घी के व्यापारी

मेसर्स जानीमल प्रधानमल

यह फर्म करॉंची में करीब १०० वर्षों से स्थापति है । उस समय करॉंची शहर इस रूप में नहीं था । प्रत्युत बहुत छोटे रूप में था । करॉंची की बहुत पुरानी फर्मों में से यह फर्म भी एक है । इस फर्म की स्थापना सेठ जानीमलजी ने की । आपका स्वर्गवास हुए करीब ३५ वर्ष हुए । सेठ जानीमलजी के दो पुत्र थे, जिनके नाम श्री सेठ अमरनामल और सेठ चाएडूमलजी हैं । इनमें से सेठ अमरनामल का स्वर्गवास हुए करीब ३ वर्ष और सेठ चाएडूमलजी का स्वर्गवास हुए करीब ३२ वर्ष हो गये । इस समय सेठ अमरनामलजी के तीन पुत्र, और सेठ चाएडूमलजी के दो पुत्र ही इस फर्म के मालिक हैं । सेठ अमरनामलजी के तीन पुत्रों में सेठ उक्कामलजी व्यापार करते है तथा शेष दो स्कूल में पढ़ते हैं । सेठ चाएडूमलजी के दोनों पुत्र सेठ हीरामलजी और सेठ सॉंवलदासजी व्यापार में भाग लेते हैं ।

इस फर्म की दान-धर्म और सार्वजनिक कार्यों की ओर भी अच्छी रुचि है । सेठ अमरनामलजी ने अपनी मृत्यु के समय २०००० रुपये पंचायत को और ५००० दूसरे कार्यो में दान किया था । और करीब २०० गज जमीन में स्वामी नारायणकी छत्री बनाई है । सेठ अमरनामलजी करॉंची कलेक्टर दरबार के मेम्बर थे और मलरि लोकल बोर्ड के मेम्बर थे । आप कई संस्थाओं के ट्रस्टी भी थे । आपके स्वर्गवास के समय कई पत्रों ने आर्टिकल भी लिखे थे । अभी भी सेठ उक्कामलजी मलरि लोकल बोर्ड के मेम्बर तथा कई संस्थाओं के ट्रस्टी भी हैं ।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

करॉंची—
मेसर्स जानीमल परधानीमल
जोड़िया बाजार
} इस फर्म पर असली घी का करॉंची भर में सब से बड़ा व्यापार होता है । करॉंची में इसके बराबर घी का व्यापार कोई दूसरी फर्म नहीं करती । इसके अतिरिक्त यह फर्म इम्पीरियल बैंक की सर्राफ भी है; तथा बैंकिंग बिजिनेस भी करती है ।

करॉंची— मेसर्स जानीमल परधानीमल जोड़िया बाजार	यह फर्म तमाखू का व्यापार करती है (Phone 885)
करॉंची— के० एस० परधानी एण्ड कम्पनी	यह फर्म पीस गुड्स, सण्ड्रीज, ग्लासवेअर इलेक्ट्रिक गुड्स और हार्डवेअर गुड्स का विलायत से इम्पोर्ट करती है। इसके टेलिग्राफिक एड्रेस Zamindar, Jagirdar, Pradhan हैं।
करॉंची— मेसर्स सुन्दरदास वासुदेव	इस नाम से यह फर्म गल्ले का व्यापार और कमीशन एजन्सी का काम करती है।
मेसर्स अमरना मल जानीमल	इस नाम से इस फर्म की मलरि और करॉंची में बहुत बड़ी जमीन्दारी है। इतनी जमींदारी मलरि में शायद दूसरी किसी भी हिन्दू फर्म की नहीं है।

विदेशी कम्पनियाँ

एबर्ट लैन्थम एण्ड को०—इस कम्पनी का हेड ऑफिस लन्दन में है। जहाँ का पता एंग्लों श्याम कार्पोरेशन लि० ५ से० हेलेन पैलेस विशोप वोट लन्दन है। इसकी बम्बई, करॉंची, बैङ्काङ्क और सिंगापुर में शाखाएँ हैं। बम्बई में इसका आफिस डेमीरिल्ड लेन (पोस्टबाक्स नं० ७०) में है। करांची में यह फर्म कॉटन एक्स पोर्टर है।

ग्रहम (डब्ल्यू० ए०) एण्ड को०—इसका आफिस कारनाक बन्दर बम्बई में है। इसके एजण्ट ग्लासगो, लीवरपूल, मैन्चेस्टर, लन्दन, ओयार्टों, मास्को, कलकत्ता, रंगून, कराची में हैं। करांची में यह कॉटन एक्सपोर्टर का काम करती है।

वालकट ब्रदर्स—यह स्विस कम्पनी है। भारत वर्ष में व्यापक व्यापार करने वाली बड़ी २ तीन चार फर्मों में यह भी एक है। सन् १८५१ में इसका आफिस बम्बई में स्थापित हुआ था। इसके पश्चात् कोलम्बो, कोचीन, टेलीचरी, तूतीकोरन, मद्रास तथा करांची इत्यादि स्थानों में भी इसके आफिस स्थापित हुए। भारतवर्ष में इसकी लगभग ४० आढ़त की दुकानें हैं। इस फर्म का प्रधान व्यवसाय रूई का है। भारतवर्ष से रूई खरीद कर यह कम्पनी

विलायत भेजती है। इसके अतिरिक्त अनाज, तिलहन, कच्चा चमड़ा इत्यादि वस्तुओं का एक्सपोर्ट करती है और शक्कर, धातु इत्यादि वस्तुओं को बाहर से मंगाकर यहाँ सप्लाय करती है। इस कम्पनी की धूलिया, अमरावती, खामगाँव, नागपूर, मुलतान, रामपूर, गुण्टकल, विरुपट्टी इत्यादि स्थानों मे जीनिंग प्रेसिंग फैक्टरियाँ हैं इसके लन्दन वाले ऑफिस का पता ९६-९८ लीडेनहाल स्ट्रीट में है। करांची में भी यह फर्म इन्हीं चीजों का एक्सपोर्ट इम्पोर्ट करती है।

बाम्बे को० लिमिटेड—इस कम्पनी का आफिस ९ वालेस स्ट्रीट बम्बई में है। तथा इसकी शाखाएँ मद्रास, कलकत्ता और करांची में है। इसके लन्दन वाले एजण्ट का पता वालेस ब्रदर्स एण्ड को० लि० ४ फ्रासबाई स्कायर लन्दन है। करांची में यह फर्म एक्सपोर्ट का काम करती है।

रालिब्रादर्स—यह भारत वर्ष में व्यापार करने वाली सब से बड़ी विदेशी कम्पनी है शायद ही कोई व्यापार भारत मे ऐसा होगा, जिसे यह कम्पनी न करती हो। यदि कलकत्ते में यह कम्पनी जूट की सब से बड़ी व्यापारी है तो बम्बई और करांची में रूई और गल्ले के व्यापार कर यह अपना प्राधान्य रखती है। इसी प्रकार इम्पोर्टिंग बिजीनेस में भी यह पीस-गुड्स का ईम्पोट सबसे अधिक करती है। मतलब यह कि भारतवर्ष का बहुतसा व्यापार इस कम्पनी के द्वारा होता है। इसके लन्दन आफिस का पता २५ फिन्सबरी सर्कस ई० सी० २ है। तथा बम्बई का आफिस २४ रेमलीन स्ट्रीट फोर्ट में है। इसके एजण्ट मद्रास में रहते हैं।

करांची से यह फर्म रूई, गल्ला, तिलहन और हड्डी खरीद कर विलायत को भेजती है। तथा विलायत से कपड़े का इम्पोर्ट कर उसे यहाँ सप्लाय करती है। इसके कॉटन डिपार्टमेण्ट के हाऊस ब्रोकर श्रीयुत बालगोविन्ददासजी लोहीवाल हैं। तथा इसके पीसगुड्स डिपार्टमेण्ट की हेड ब्रोकर मेसर्स लखमीचन्द मोहनलाल फर्म है।

फारबस फारबस केम्बिल एण्ड को०—यह भी भारतवर्ष की प्रसिद्ध २ विदेशी कम्पनियों में से एक है। इसकी भारतवर्ष में कई शाखाएं हैं। करांची में इस फर्म पर एक्सपोर्ट और इम्पोर्ट बिजिनेस होता है।

देहली

DELHI.

देहली

ऐतिहासिक परिचय—

दिल्ली का ऐश्वर्य्य, दिल्ली का इतिहास, दिल्ली का सौन्दर्य्य सभी आकर्षक हैं। भारत-वर्ष के अत्यन्त प्राचीन नगरों में से यह एक सब से प्रधान नगर है। इसके कई बार नाम-परिवर्तन हुए, कई बार स्थान-परिवर्तन हुए, मगर फिर भी इसका महत्व ज्यों का त्यों अक्षुण्ण है।

यह कहा जा सकता है कि दिल्ली एक महान् स्मशान है। जहाँ अनेकानेक राजवंशों की समाधियाँ बनी हुई हैं। जिस स्थान पर इस समय दिल्ली शहर बसा हुआ है उसके आस-पास ४५ वर्ग मील भूमि में नाना राजवंशों के राजमहल दुर्ग, विलासमन्दिर और मसजिदों का ध्वंसावशेष उनकी गत वैभव की स्मृति दिला रहे हैं।

इस अत्यन्त प्रसिद्ध महत्वपूर्ण नगर का प्राचीन नाम इन्द्रप्रस्थ है। यह यमुना तट पर बसा हुआ है। महाभारत से ज्ञात होता है कि पाण्डवों ने हस्तिनापुर से आकर इस नगरी को बसाया था। युधिष्ठिर के बाद ३० पीढ़ियों तक उन्हींके वंशजों की यह राजधानी रही। इसके बाद अन्य कितने ही राजवंशों के आधीन यह प्रदेश रहा और यह नगर उनकी राज-धानी रहा। ४थी शताब्दी के लगभग राजा धव ने इस नगरी में इतिहासप्रसिद्ध लोहे का स्तम्भ जो लोहे की लाट कहाता है स्थापित किया। इसकी ऊँचाई लगभग ५० फुट के है। इसके बाद कुछ काल तक दिल्ली उजड़ी पड़ी रही पर सन् ७३६ ई० में राजा अनंगपाल ने पुनः दिल्ली को बसाया। सन् ११९३ ई० में महम्मद गोरी ने राजा पृथ्वीराज को थानेश्वर के युद्ध में परास्त कर यह प्रदेश अपने हाथ में लिया। पर वह तो स्वदेश लौट गया और अपने सेनापति कुतुबुद्दीन को छोड़ गया जिसने दिल्ली को मुसलमानों की राजधानी बनाया और इस प्रकार यह नगर हिन्दू राज की राजधानी के स्थान पर मुसलमानों की राजधानी बनी।

गोरी घराने के बाद जब इस भू-प्रदेश पर तुगलक बादशाहों का शासन स्थापित हुआ तो गयासुद्दीन तुगलक ने इस दिल्ली से चार मील दूर एक दूसरी दिल्ली बसाई जो तुगलका बाद के नाम से प्रख्यात हुई। आज तुगलका बाद और इन्द्रप्रस्थ के खण्डहर मात्र दिखाई देते हैं। तुगलक वंश का नाश तातारी बादशाह तैमूर लंग ने किया और उसके आक्रमण के

फल-स्वरूप दिल्ली में पाँच दिन तक लूट मार की महा विपद् आयी और नगर पुनः उजड़ गया। तैमूर के बाद यहाँ लोदी वंश का शासन रहा और लोदी राज को हटा कर बाबर ने मुगल शासन की नींव डाली। बाबर के बेटे हुमायूँ ने पुनः दिल्ली को अपनी राजधानी बनाया। पर नगर का जीर्णोद्धार शाहजहाँ ने कराया और नगर का नाम शाहजहाँनाबाद रक्खा यही वर्तमान दिल्ली है।

वर्तमान दिल्ली को २९७ वर्ष पूर्व शाहजहाँ बादशाह ने बसाया था। इस नगर के तीन ओर पत्थर की ऊँची दीवार है जो प्रायः ५॥ मील लम्बी ४ गज चौड़ी ९ गज ऊँची है। इसमें १२ दरवाजे ४ खिड़कियाँ और ६४ बुर्ज हैं। शाहजहाँ के बनवाये शाही महल, किला और जामे मस्जिद आदि देखने लायक हैं। शाहजहाँ के विशाल महल में एक स्थान पर लिखा है।

अगर फिर दौस वर रूये जमीनस्त हमीनस्तो, हमीनस्तो, हमीनस्त	}	अगर कहीं स्वर्ग पृथ्वी पर है तो यही है यही है यही है।

पर स्वर्ग समान साज समाज में लिप्त हो मुगल वंशजों ने अपना विनाश स्वयं किया। फलतः पठानों और अफगानों के आक्रमण हुए। लूटमार नर हत्या का दौड़-दौड़ा रहा और मराठों ने आखिरी मुगल बादशाह को कैद कर लिया और सन् १८०३ ई० तक उसे जेल में डाल रक्खा। सन् १८५७ ई० में सिपाही विप्लव के बाद अंग्रेजों ने अन्तिम मुगल बादशाह को रंगून कैद कर भेज दिया और इस प्रकार दिल्ली अंग्रेजों के हाथ आयी।

सन् १८७७ में लार्ड लिटन ने प्रथम शाही दरबार कर महारानी विक्टोरिया के राज-राजेश्वरी होने की घोषणा की। सन् १९०३ ई० में लार्ड कर्जन ते दूसरा दरबार किया। और महाराज सप्तम एडवर्ड के भारत सम्राट् होने की घोषणा की। तथा सन् १९११ ई० की १२वीं दिसम्बर को तीसरा दिल्ली दरबार हुआ जिसमें स्वयं सम्राट् पंचम जार्ज सपत्नीक पधारे और तब से दिल्ली पुनः भारत की राजधानी घोषित की गयी।

दर्शनीय स्थान

दिल्ली के दर्शनीय स्थान कई भागों में बाँटे जा सकते हैं—

(१) प्रारम्भिक पठान राज्यकाल के (सन् ११९३ से १३२० ई०)

कुतबुद्दीन की मसजिद और कुतबमीनार। अलतमश की समाधि अलाई दरवाजा। जमा-यतखाना मसजिद।

ये सब प्रथम हिन्दू भवनादि के मसालों को लेकर हिन्दू गृहनिर्माण-विद्या की परिपाटी की नकल से बने। क्रमशः उस हिन्दू विद्या के साथ मिलावट के फल से उपजी हुई दूसरी परिपाटी उत्पन्न हुई।

(२) पठान राज्यकाल के मध्य भाग के (सन् १३२० से १४१४ ई०)

तुगलकाबाद और तुगलक शाह की समाधि अट्टालिका, कल्लन मसजिद, फीरोजशाह की कोटलावाली मसजिद, कदमशरीफ, निजामुद्दीन की मसजिद।

(३) पठान राज्यकाल के अन्तिम भाग के (सन् १४१४ से १५५६ ई०)

सैयद और लोदी बादशाहों की समाधि-अट्टालिकाएँ। पुराना किला और मसजिदें आदि।

(४) मुगल राज्यकाल के (सन् १५५६ से १६६० ई०)

हुमायुं की समाधि-अट्टालिका, दिल्ली का दुर्ग और राजप्रासाद, जामा मसजिद, सुनहरी मसजिद, सफ़दरजङ्ग की समाधि अट्टालिका आदि।

दुर्ग और दुर्गान्तर्गत राजप्रासाद ही सब से बढ़कर प्रसिद्ध है। उस समय के ऐतिहासिकों के निर्णयानुसार उन सब भवनादि के निर्माण का व्यय निम्नरूप हुआ था:—

दुर्ग और दुर्गाभ्यन्तर के भावनादि	६०	लाख रुपया।
दुर्गाभ्यन्तर का राजप्रासाद	२८	„ „
दीवाने खास	१४	„ „
दीवाने आम	२	„ „
बेगमों आदि के वास भवन	७	„ „
दुर्ग की दीवानी और गढ़	२१	„ „

यह बताने की आवश्यकता नहीं कि उन दिनों शिल्पियों और श्रमिकों का मिहनताना तथा मसालों का मूल्य इन दिनों की अपेक्षा बहुत ही कम देना होता था।

दिल्ली शहर की मुख्य सड़क पर अवस्थित चाँदनी चौक से होते हुए लाहौर दरवाजे में जाकर दुर्ग में प्रवेश करना होता है। इस तोरणवाले फाटक के ऊपर तिमञ्जिला गृह है। फाटक का पथ ४१ फीट ऊँचाई का और २४ फीट चौड़ाई का है। इस फाटक से नहबतखाने तक का पथ छत से ढका हुआ है।

तदनन्तर दीवानेआम है। इस विशाल कमरे में कतार की कतार खम्भे हैं। इस कमरे के अन्दर ऊँचे चबूतरे के ऊपर संस्थापित सिंहासन से बादशाह प्रजा के आवेदन-पत्रों को लेते थे। वह सिंहासन जहाँ स्थापित था, वहाँ की दीवार के पत्थर पर खुदी हुई चित्रकारी फल, फूल, चिड़ियों आदि की है। कहा जाता है कि ये चित्रकारियाँ किसी फ्रान्सीस शिल्पकुशल की हैं। दरबार के समय उस गृह की जो शोभा खिलती थी, उसकी आज दिन केवल कल्पना ही की जा सकती है। वह कमरा १०० फीट लम्बाई का और ६० फीट चौड़ाई का है। दरबार के समय अमीर-उमराव इस कमरे मे प्रविष्ट होते थे। उस समय कमरे की जैसी सजावट होती थी, वह तात्कालिक पर्य्यटकों की पुस्तकों के वर्णनो से विदित होता है।

दीवाने-खास की बात सर्वत्र प्रसिद्ध है। वह सङ्गमरमर का कमरा है, जिसकी दीवारों के ऊपरी भाग पर सुनहरे काम हैं। यह कमरा ९० फीट लम्बा और ६७ फीट चौड़ा है।

कमरे का चंदवा सुनहरी कामदार चाँदी का था। यह चँदवा ३९ लाख रुपये खर्च से बनाया गया था। सन् १७६० ई० में मराठो ने उसको लूट कर गलाया था, उस समय भी उनको २८ लाख रुपया प्राप्त हुआ था।

दिवाने-खास में ही जगत्प्रसिद्ध तख्त-ताऊस (मोर-सिंहासन) था। वह सिंहासन ७ वर्षों के परिश्रम से शिल्पियों ने प्रस्तुत किया था। यह निर्णय करना कठिन है, कि उसको बनवाने में कितना खर्चा हुआ था। किन्तु टावानियर का कथन है, कि उसके निर्माण का व्यय साढ़े नौ करोड़ रुपया हुआ था।

दीवाने-खास में कितनी लीलाएँ हो गई! शाहजहाँ की बढ़ती के दिनों में यही उनका प्यारा कमरा था। सन् १७१६ ई० मे बादशाह फरुखशायर को नीरोग कर डाक्टर हैमिल्टन ने इसी कमरे से अङ्गरेजों के लिये गङ्गातट पर के ३८ शहरो में कोठियों के खोलने का अधिकार प्राप्त किया था। उसी के फल से इस देश में अङ्गरेजी राज्य की नींव पड़ी। इसी कमरे में सन् १७३९ ई० में अपने से पराजित महम्मद शाह को अपना मणिकाणिक आदि समर्पित कर देने पर लाचार किया था। इसी कमरे में गुलामकादिर ने बूढ़े बादशाह शाहआलम की आँखें निकाल ली थीं। इसी कमरे में बादशाह ने सेन्धिया के उत्पातों से बचाने का धन्यवाद लार्ड लेक को दिया था। सन् १५८७ ई० में बागी सिपाहियों ने इसी कमरे से दूसरे बहादुरशाह को हिन्दुस्थान का बादशाह बनाने की घोषणा की थी और इसके सात मास बाद इसी कमरे में दूसरे बहादुरशाह की बगावत का विचार किया गया था।

दुर्गके अभ्यन्तरस्थित रङ्गमहल, हम्माम आदि विशेष वर्णनयोग्य हैं। एक हम्माम की ही नकाशियो को देखने से अनुमान किया जा सकता है कि समूचे राजप्रासाद के शिल्प-कार्य्य कैसी ऊँची श्रेणी के हैं। दिल्ली के हम्माम को शाहजहाँ और औरङ्गजेब के बाद और कोई बादशाह अपने काम में नहीं लाये थे। उस हम्माम में गर्म जल के लिये नित्य १२५ मन लकड़ी जलायी जाती थी।

राजप्रासाद में जल लाने के लिये ६० मील दूर की नदी से राजप्रासाद तक नहर बनायी गयी थी। नदी से उस नहर की राह जल आकर झरने की तरह हड़हड़ाकर गिरता और समूचे दूर्गभर में परिचालित किया जाता था।

मुगलों के ऐश्वर्य्य की बात क्यों सारी दुनिया में कहावत की तरह फैल गयी थी, यह दुर्गाभ्यन्तरस्थित प्रासाद के अवशेष को देखने से किसी के समझने में बाकी नहीं रह जाता।

प्रासाद के अन्दर ही मसजिद है।

इसी प्रासाद से मुगल बादशाह उसके नीचे एकत्रित प्रजाजन को दर्शन देते थे। सम्राट् पञ्चम जार्ज के राज्याभिषेक दरबार में राजदर्शन की वह प्रथा फिर से चलायी गयी।

मुगल बादशाह राजधानी को चारों ओर ऊँची दीवारों से घेरते थे और दीवारों में अनेकानेक तोरणवाले फाटक बनाते थे। दिल्ली से निकलने के अनेक फाटक हैं, जिनमें कश्मीर दरवाजा, काबुल दरवाजा आदि कई बड़े प्रसिद्ध हैं।

चाँदनी चौक की पुरानी शोभा अब नहीं रही है। पहिले सड़क के मध्य भाग में वृक्षों की कतार थी। जिस समय लार्ड हार्डिञ्ज की ओर तानकर किसी ने बम फेंका था। उस समय यह विचार कर, कि किसी वृक्ष की ओट से उसने वह अनर्थ किया होगा, वे तमाम वृक्ष काट डाले गये। चाँदनी चौक की एक ओर दुर्ग है और दूसरी ओर जुम्मा मसजिद। यह मसजिद भी शाहजहाँ ने बनायी। यह ऊँचे चबूतरे पर बड़े भारी आकार की है। उसके तीन गुम्बद सङ्ग-मरमर के हैं। उन पर बीच बीच में समानन्तर रेखाएँ काले पत्थर की बनाकर विचित्रता का सञ्चार किया गया है। लार्ड कर्जन का कहना है कि सारे पूर्वी देश में इसके जोड़ की बढ़ियाँ मसजिद और कोई नहीं है।

दिल्ली मुसलमानों की राजधानी थी, जिससे वहाँ मसजिदों की अधिकता अवश्य ही होनी चाहिये। दिल्ली दरवाजे के पास की सुनहरी मसजिद, कज्जन मसजिद आदि द्रष्टव्य हैं।

दिल्ली में एक जैन मन्दिर है, जिसके शिल्पकार्य विशेष उल्लेख योग्य हैं।

पुराने बागों में कुदशिया बाग अब तक अनेक दर्शकों को आकर्षित करता है, रोशनआरा बाग भी बढ़िया है।

दिल्ली के किनारे पहाड़ों का सिलसिला है, जिनके एक स्थान में हिन्दूराव का भवन-पुराना प्रासाद है। इस पहाड़ी सिलसिले पर एक ओर सिपाहियों के ग़दर का एक स्मृतिस्तम्भ है तथा एक अशोकस्तम्भ भी है। इसके दूसरी ओर फिरोजशाह के कोटले में और भी एक स्तम्भ अशोक का है। यह दूसरा अशोक स्तम्भ अम्बाला जिले के टपरा नामक स्थान से उठा लाकर स्थापित किया गया है। फीरोजशाह के कोटले में फिरोजाबाद का किला था। दिल्ली की दो समाधियाँ प्रसिद्ध हैं एक हुमायुँ की स्मृति-अट्टालिका और दूसरी सफदरजङ्ग की। हुमायुँ की समाधि बहुत बड़ी अट्टालिका है। सिपाहियों के गदर के बाद अन्तिम बादशाह के शहजादे इसी अट्टालिकामें जा छिपे थे और यहीं मारे गये। सफदरजङ्ग की समाधि इसीकी नकल से बनायी गयी है। किन्तु वह किसी तरह से भी हुमायुँ की समाधि के जोड़ की नहीं कही जा सकती।

दिल्ली के दर्शनीय स्थानों और अट्टालिकाओं की कमी नहीं। उनको थोड़े दिनों में देख लेना असम्भव है। किन्तु कुतबमीनार की तरह इतिहास प्रसिद्ध पदार्थ को न देखने से दिल्ली-दर्शन अपूर्ण रह जाता है। यह मीनार वा स्तम्भ २३८ फीट ऊँचा है। यह कई तहों में ऊपर को उठा

है। प्रथम तह ९५ फीट ऊँची है। स्तम्भ का कलेवर बीच बीच में खाँदलवाला है। विशेष जानकार फर्गुसन साहब कहते हैं—यह कहने से अतिशयोक्ति नहीं होती, कि पृथ्वी में कहीं भी इसके जोड़ का सुन्दर स्तम्भ नहीं। इसको देखने से फॉरेन्स की कैम्पानाइल (Campanile) याद आती हैं। वह स्तम्भ कुतबमीनार से भी १० फीट अधिक ऊँचा है। किन्तु वह कुतबमीनार की तरह सुन्दर नहीं। कोई कोई इसको किसी हिन्दुराजा की कीर्त्ति मानते हैं, पर इस बात का प्रमाण नहीं मिलता। शायद कुतुबुद्दीन ऐबक ने इसकी नींव डाली और इसको मसजिद की मीनार बनानेकी इच्छा की होगी। इसमें सन्देह नहीं, कि इसकी बारबार मरम्मत हुई है। इसकी चोटी के ऊपर जो छत थी, वह नष्ट हो गयी है। ३७९ सीढ़ियों को तय करने से कुतबमीनार की चोटी पर चढ़ा जाता है। कुतुबमीनार की चोटी पर से दिल्ली का दृश्य बड़ा ही मनोहर जान पड़ता है।

कुतबमीनार जहाँ है, उसके चारों ओर प्राचीन काल के नाना चिन्हों में हिन्दू कीर्त्ति के भी चिन्ह दिखलाई देते हैं। उन हिन्दू तथा अहिन्दू चिन्हों में विशेष उल्लेख योग्य अलतमश की समाधि और आलाई दरवाजा है। समाधि के अभ्यन्तर भाग मे सूक्ष्म शिल्पकार्य झकाझक चमक रहे हैं। आलाई दरवाजा कुतबमीनार के पास की सर्वोत्तम रचना है। वहाँ मुसलमान राज्यकाल की कीर्तियों के होने पर भी देखने से यह स्पष्ट प्रतीत होता है, कि किसी हिन्दू नगर के ध्वंसावशेष पर यह मुसलिम कीर्ति रचित हुई। किन्तु कालक्रम से वह मुसलिम नगर भी श्मशान में परिणत हो गया। इन दिनों केवल प्राचीन काल की कीर्ति देखने के इच्छुक ही कुतबमीनार और उसके निकटस्थित कई अट्टालिकाओं को देखने के लिये दिल्ली से वहाँ जाते हैं। नहीं तो यहाँ अब सुनसान का ही सन्नाटा छा गया है। जिस स्थल मे विजयी वीरों ने कालजयी कीर्ति रचने की आशा की थी, वहाँ उस ध्वंसावशेष के बीच बैठ कर काल मानों मनुष्य की शक्ति का उपहास कर रहा है और समझा रहा है, कि मनुष्य की शक्ति की सीमा कहाँ समाप्त होती है।

कुतुबमीनार के समीप दिल्ली का सुप्रसिद्ध लाट है। यह भारत के हिन्दु नरेन्द्ररचित हिन्दु गौरव की स्मृति का चिन्ह है। सन् ईसवी की पाँचवीं अथवा छठी सदी में वह लाट निर्मित हुआ था।* लाट के कलेवर में जो लिपियाँ खुदी हुई हैं, उनके अनुसार ही उसके निर्माण काल का यह निर्णय किया गया है। लिपियाँ केवल कई पंक्तियों की हैं। उनको पढ़ने से यह विदित होता है कि चन्द्रराजा ने विष्णु के नाम से उस लोह-स्तम्भ को संकल्प कर दिया। उसमें यह बात भी है, कि दूसरे अनङ्गपाल ने (सन् १०५२ ई०) दिल्ली को पुनर्वार बसाया। यह अनायास ही अनुमान किया जाता है कि किसी समय लाट की चोटी पर गरुड़ की मूर्ति थी। यह लोह-स्तम्भ जिस समय बनाया गया था, उस

* कई इतिहासज्ञों के मत से इसे चौथी शताब्दी में राजा धव ने बनाया था।

समय युरोप के बड़े से बड़े कारखाने में भी ऐसे स्तम्भ का बनाया जाना सम्भव नहीं था। लौह को विशुद्ध करके उससे ऐसा स्तम्भ बनाना असाधारण निपुणता को सूचित करता है। अतएव स्पष्ट हो जाता है, कि उस समय भारतवासियों ने लोह शिल्प में बड़ी भारी उन्नति की थी। वह शिल्प अब भारत में भुला दिया गया है।

दिल्ली में भी जयसिह ने मानमन्दिर स्थापित किया था। इसके यन्त्र उसमें उन्हीं दिनों के विद्यमान हैं। वे सब के सब स्थिर हैं।

दिल्ली के समीप ही तुगलक़ाबाद है, जो अब परित्यक्त है। यह नगर सन् १३२७ ई० से सन् १३३३ ई० के बीच महम्मद तुगलक से बसाया गया था और महम्मद तुगलक से ही परित्यक्त हुआ था। वहाँ तुगलक शाह की समाधि है, जो अब तक नष्ट नहीं हुई है।

दिल्ली के बाहर निजामुद्दीन औलिया का स्थान और समाधि है। वहाँ उस समाधि के साथ ही और और समाधियाँ भी हैं। उन सबों में शाहजहाँ की पुत्री जहाँनारा की समाधि विशेष प्रसिद्ध है। उसके पास ही कवि अमीर खुसरो की समाधि है। खुसरो की कविता की कीर्त्ति सुप्रख्यात है। थोड़ी ही दूर पर चौसठ खम्भों का कमरा है। यह खाकी मरमर पत्थर का बना हुआ है और आदमखाँ के कुटुम्ब की समाधि है।

दिल्ली का व्यापारिक परिचय—

दिल्ली भारतवर्ष की राजधानी होने के अतिरिक्त, देश का मध्यवर्त्ती केन्द्र होने से तथा भारतवर्ष की अधिकांश प्रधान २ रेलवेज़ का जंक्शन होने से यहाँ की व्यापारिक चहल पहल बहुत अधिक है। यहाँ तक की भारतवर्ष में यह शहर पांचवें या छठे नम्बर का व्यापारिक केन्द्र है। यहाँ पर किस वस्तु का व्यापार प्रधान है यह कहना जितना कठिन है उतना ही यह कहना आसान है कि मानवीय आवश्यकताओं और विलास की सभी सामग्रियों का व्यापार यहाँ बहुत अच्छे परिमाण में होता है। फिर भी कपड़े और लोहे का व्यापार यहाँ बहुत ही बड़े परिमाण में होता है। अकेले हिन्दुस्तानी मार्कण्टाइल एसोसिएशन की करीब ५०० फर्में मेम्बर हैं जो सब बड़े स्केल पर कपड़े का व्यापार करती हैं। करीब दस पन्द्रह बड़े २ कटरे बने हुए हैं जिनमें केवल कपड़े ही का व्यापार होता है। इसी प्रकार लोहे का व्यापार करने वाली करीब पाँच छः ऐसी २ फर्मों के हेड आफिस यहाँ पर हैं जिनकी दुकानें देश के प्रायः सभी व्यापारिक बन्दरो और केन्द्रो मे हैं, और जहाँ सब स्थानों पर इनकी गणना प्रथम श्रेणी में होती है। लोहे की ढलाई करने की भी यहाँ दो तीन बड़ी २ फैक्टरियाँ हैं। जिनमें खास कर गन्ना पेरने की मशीनें ढाली जाती हैं। लोहे के व्यापारियो की दुकानें खास कर चावड़ी बाजार मे हैं।

इसी प्रकार गोटा किनारी, कामदानी और कश्मीरी शाल तथा सिल्क के भी अच्छे २ व्यापारियों की दुकानें यहाँ पर हैं। गोटा किनारी तो यहाँ का बहुत प्रसिद्ध है। जनरल मर्चेण्टाइज, ज्वैलरी, मशीनरी, मोटर्स, साइकिल्स, और केमिकल वस्तुओं के भी यहाँ बहुत बड़ी २ व्यापारी फर्म्स हैं जो लाखो रुपये का व्यापार करती हैं।

यहाँ पर कपड़े की चार मिलें हैं जिनके नाम बिड़ला कॉटन मिल्स (इसके मैनेजिंग एजण्ट बिड़ला ब्रदर्स हैं) जयपुरिया कॉटन मिल (लक्ष्मीचन्द रामकुमार) गोयनका कॉटन मिल (परसराम हरनन्दराय) और दिल्ली जनरल कॉटन वीविंग मिल्स (ला० मदन मोहनलाल) हैं।

व्यापारिक केन्द्र—

चान्दनी चौक—यह दिल्ली की मेन सड़क पर बसा हुआ दिल्ली का सबसे बड़ा व्यापारिक बाजार है। इसकी सुन्दरता, विशालता और इसकी चहल पहल देखने योग्य है। इस बाजार में जनरल मर्चेण्ट्स, ज्वैलर्स, बैङ्कर्स, सिल्क मर्चेण्ट्स, कपड़े के व्यापारी, परफ्यूमर्स आदि सभी प्रकार के व्यापारियों की दुकानें हैं। इसके दोनों किनारों पर कई बड़े २ कटरे बने हुए हैं जो व्यापार के केन्द्र कहे जा सकते हैं। उनके कुछ नाम इस प्रकार हैं—

कटरा शाहन्शाही, कटरा धूलियावाला, कटरा मोती, कटरा मारवाड़ी। } इन सब में कटपीस का व्यापार होता है।

कटरा नवाब साहब, कटरा मुंशी गौरीशङ्कर, कटरा चौबान, कटरा अशर्फी, दिल्ली क्लॉथ मार्केट। } इन सब में देशी विदेशी कपड़ों का थोक व्यापार होता है।

कटरा तमाखू—इस कटरे में किराना और रंग के बड़े २ व्यापारियो की दुकानें हैं।

चावड़ी बाजार—इस बाजार मे नीचे २ लोहे के बड़े २ व्यापारी, कागज के व्यापारी तथा बर्त्तनो के व्यापारी व्यापार करते हैं तथा ऊपर शाम के समय मङ्गल मुखियों के रूप की हाट लगती है।

सदर बाजार—यहाँ मनिहारी सामान का बड़ा व्यापार होता है।

काश्मीरी गेट—मोटरों और साइकलों के व्यापारी, जौहरी और अंग्रेजी ढङ्ग की बड़ी २ दुकानें हैं।

सब्जी मण्डी—इस स्थान पर तीन क्लॉथ मिल्स तथा बरफ का कारखाना है।

किनारी बाजार—इस बाजार में गोटा किनारी का थोक व्यापार होता है।

माली बाड़ा—इसमें पगड़ी के व्यापारी तथा आचार मुरब्बे के व्यापारी रहते हैं।

कुँ० हरिकिशनजी सोमाणी (दौलतराम श्रीराम) देहली

कुँ० रामकृष्णजी सोमाणी (दौलतराम श्रीराम) देहली

करना पड़ा उस समय आपका माल सनदें आदि जो तहखानें में बन्द थी वे लुट गईं और जल कर खाक हो गईं। उस समय इस फर्म पर ईश्वरीदास केशरीदास के नाम से काम होता था।

संवत् १८७९ में सेठ ईश्वरीदासजी और केशरीदासजी अलग २ हो गये। सेठ ईश्वरीदास जी के कोई पुत्र नहीं था अतः आपने अपने दोहित्र सेठ बनारसीदासजी को अपना उत्तराधिकारी बनाया। सेठ ईश्वरीदासजी बड़े प्रतिष्ठाप्राप्त सज्जन हो गये हैं। आपके हाथों से कई लोकोपकारी कार्य्य हुए हैं। आपने माधोदासजी की बगीची में एक श्रीलक्ष्मीनारायणजी का मंदिर तथा कालकाजी पर तालाब और धर्मशाला बनवाई, लालडिग्गी पर एक कुआँ तयार करवाया। इसी प्रकार के लोकोपकारी कार्य्यों में आपने बहुत द्रव्य लगाया। इस प्रकार प्रतिष्ठापूर्वक जीवन बिताते हुए संवत् १९३२ में आपका शरीरान्त हुआ। सेठ बनासीदासजी के चार पुत्र हुए जिनके नाम क्रमशः श्रीरामकृष्णजी, श्री श्रीकृष्णजी, श्रीव्रजकृष्णजी तथा श्रीश्याम कृष्णजी हैं। सेठ बनारसीदासजी ने ऋषिकेश में एक धर्मशाला बनवाई, बद्रिकाश्रम के मार्ग में उत्तर काशी नामक स्थान में भी एक धर्मशाला का निर्माण कराया तथा देहली का ईश्वरभवन नामक कटला जिसमें किराने की मंडी है, निर्माण कराया। आप सन् १९११ में स्वर्गवासी हुए।

यह कुटुम्ब बहुत शिक्षित एवं ऊँचे दर्जे की प्रतिष्ठा पाये हुए हैं। केवल व्यापारिक जगत् में ही नहीं प्रत्युत शिक्षित समाज में भी इस परिवार ने बहुत उन्नति कर दिखाई है। लाला श्रीकृष्णदासजी बी०काम० इन्चार्ज एसोसिएटेड प्रेस हैं। लाला बृजकृष्णजी बी० ए० ऊँचे दर्जे के स्वदेशभक्त सज्जन हैं। आप विशेषतया महात्माजी के साथ रहते हैं। लाला श्यामकृष्णजी एम० ए० पीसगुड्स का इम्पोर्ट बिजनेस करते हैं।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक लाला रामकृष्णदासजी आदि चारों भ्राता हैं। लाला रामकृष्णदासजी मर्केण्टाइल बैंक की देहली ब्राँच के खजांची तथा म्युनिसिपल कमिश्नर हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

देहली—ईश्वरीदास बनारसीदास चाँदनी चौक तारका पता Mohar	यहाँ बैंकिंग व चाँदी सोने का बहुत बड़ा कारबार होता है।
देहली—ईश्वरीदास बनारसीदास कटला खुशालराय कृष्णनिवास	यहाँ जमींदारी तथा स्थाई सम्पत्ति का काम होता है।
देहली—सूर्य्य कृष्ण एण्ड कं० बिलीमारन	यहाँ कपड़े का तथा सूत का इम्पोर्ट तथा देशी कपड़े का थोक व्यापार होता है।

मेसर्स कालूराम मंगतराम

इस फर्म का विस्तृत परिचय ग्रन्थ के प्रथम भाग में बम्बई विभाग के पृष्ठ १३३ पर मेसर्स राजाराम कालूराम के नाम से दिया गया है। देहली फर्म का परिचय इस प्रकार है।

देहली—मेसर्स कालूराम मङ्गतराम अशर्फी कटला—यहाँ पर कपड़े का व्यापार होता है।

मेसर्स केशवराम जीवनराम

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस ग्रन्थ के द्वितीय भाग में कलकत्ता विभाग के पृष्ठ ३६३ पर मेसर्स जीवनराम जानकीदास के नाम से दिया गया है। इसकी देहली दुकान का परिचय इस प्रकार है।

देहली—मेसर्स केशवराम जीवनराम कटरा नवाब साहब चाँदनीचौक (T. A. Virat) यहाँ जर्मनी, जापान तथा इङ्गलैण्ड से कपड़े का इम्पोर्ट होता है तथा उसकी थोक बिक्री होती है।

मेसर्स गोवर्द्धनदास रामगोपाल

यह फर्म बीकानेर निवासी मोहता परिवार के सुप्रसिद्ध रायबहादुर गोवर्द्धनदास ओ० बी० ई० के वंशजों की है। इसके वर्तमान मालिक रा० ब० गोवर्द्धनदासजी के पुत्र श्रीयुत रामगोपालजी मोहता और श्रीयुत रा० ब० शिवरतनदासजी मोहता हैं। इस फर्म का हेड आफिस करांची में है। अतः इसका सुविस्तृत परिचय वहीं के पोर्शन में चित्रों समेत दिया गया है।

इस फर्म को दिल्ली में स्थापित हुए २४ वर्ष हुए। इस फर्म की देहली दुकान के प्रधान मुनीम श्रीयुत शिवदासजी मूंदड़ा हैं। आप माहेश्वरी जाति के सज्जन हैं। आपका मूल निवास-स्थान भिनासर (बिकानेर) में है। आपको इस फर्म पर कार्य करते हुए करीब २० वर्ष हुए।

दिल्ली मे आपकी एक दूकान मेसर्स गिरधरलाल ब्रजरतन के नाम से, मालीवाड़ा में है, इस पर सब प्रकार की कमीशन एजन्सी का काम होता है।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

देहली—मेसर्स गोवर्द्धनदास रामगोपाल चाँदनी चौक (T. A. mohte) P. Box No 28 T. Ph. 5608 — इस फर्म पर सब प्रकार के रँगीन कपड़े का थोक व्यापार होता है। यह फर्म विलायत की सुप्रसिद्ध स्टिनर कम्पनी और जॉनगीलेन की ग्यारण्टेड बेनियन है।

मेसर्स गुरुप्रसाद कपूर एण्ड ब्रदर्स

इस फर्म के वर्त्तमान मालिक लाला रायसाहब गुरुप्रसादजी कपूर हैं। आप ही के द्वारा सन् १९०० में इस फर्म की स्थापना हुई। इस पर शुरू ही से कपड़े का इम्पोर्ट बिजिनेस किया गया। लाला गुरुप्रसादजी के पिता लाला छुटकामलजी का स्वर्गवास सन् १९११ में हुआ। जिस समय आपका स्वर्गवास हुआ उस समय रायसाहब की उमर २८ वर्ष की थी। आपके द्वारा फर्म की अच्छी उन्नति हुई। आप मिलनसार एवं सुधरे हुए विचारों के सज्जन हैं। आप दिल्ली पीसगुड्स एसोसिएशन के उपसभापति, देहली क्लाथ मार्केट के ऑनरेरी मंत्री, खत्री उपकारक सभा के मंत्री, इन्द्र प्रस्थ सेवा मंडल के सभापति, म्युनिसिपल कमिश्नर (१९१८-१९२८ तक) और आनरेरी मैजिस्ट्रेट हैं। सन् १९२४ में आपको भारत गवर्नमेण्ट ने रायसाहब की पदवी से विभूषित किया है। इसी प्रकार आपका और २ संस्थाओं में भी भाग है।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

मेसर्स—गुरुप्रसाद कपूर एण्ड ब्रदर्स कटलानील देहली T. A. "Fovouride"	यहाँ हेड ऑफिस है, तथा कपड़े के इम्पोर्ट का व्यापार होता है।
मेसर्स—गुरुप्रसाद कपूर एण्ड ब्रदर्स मेस्टन रोड कानपूर T. A. "Sincerly"	यहाँ भी कपड़े का इम्पोर्ट व्यापार होता है।

मेसर्स गोपीनाथ छंगामल

इस फर्म का हेड आफिस कानपुर है। अत: इसका विशेष परिचय कानपुर में दिया गया है। यहां यह फर्म विलायती कपड़े का व्यापोर करती है। इसका आफिस क्लाथ मार्केट में है जहां इम्पोर्ट का काम होता है।

मेसर्स छोगमल राठी

इस फर्म के मालिकों का मूल निवास-स्थान देहली में ही है। करीब ११० वर्षों से यह परिवार यहाँ पर बसा हुआ है। सब से पहले सम्वत् १८७३ में सेठ छोगमलजी ने इस फर्म के व्यापार को प्रारम्भ किया और तब से बराबर यह फर्म यहां पर व्यापार कर रही है। सम्वत् १९५२ में सेठ छोगमलजी का स्वर्गवास हुआ। आपके चार पुत्र हुए, जिनके नाम

क्रम से श्रीयुत गोवर्द्धनदासजी, श्रीयुत् शिवलालजी, श्रीयुत कन्हैयालालजी, श्रीयुत छुट्टनलालजी हैं। इस समय आप चारों भाई सम्मिलित रूप में इस फर्म के मालिक हैं।

देहली में आपका एक कटरा बना हुआ है। जिसका नाम राठी कटरा है। इसमें कपड़े के दुकानदार व्यापार करते हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

देहली—सेठ छोगमल राठी राठी कटरा नई सड़क (T. A. Rathi)	इस फर्म पर अहमदाबाद और बम्बई की देशी मिलों के कपड़े का व्यापार होता है।
अहमदाबाद—सेठ छोगमलजी जूना माधुपुरा	यह फर्म दिल्ली की फर्म को अहमदाबाद की मिलों का कपड़ा सप्लाय करती है।
कलकत्ता—सेठ छोगमलजी राठी २०१ हरिसन रोड	इस फर्म पर अहमदाबाद के मिलों की कपड़ों का व्यापार होता है।

मेसर्स ताराचन्द मंगतराय

इस फर्म के मालिकों का मूल निवास-स्थान भिवानी में है। आप अग्रवाल जाति के बांसल गौत्रीय सज्जन हैं। आपकी फर्म को देहली में स्थापित हुए करीब २५ वर्ष हुए। आपका पुराना फर्म सहारनपुर में करीब ५२ वर्षों से स्थापित है। इस फर्म की स्थापना देहली में सेठ बालमुकुन्दजी ने की। इसकी विशेष तरक्की भी आप ही के हाथों से हुई। आप बड़े परिश्रमी और योग्य सज्जन थे। आपका स्वर्गवास सम्वत् १९६५ में हुआ। सेठ बालमुकुन्दजी के तीन भाई और थे जिनके नाम श्रीयुत दुलिचन्दजी, रामचन्द्रजी और उदमीरामजी थे। इनमें से सेठ उदमीरामजी अभी विद्यमान हैं। इस समय यह फर्म इन्हीं चारों भाइयों के वंशजों की है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

सहारनपुर-हेड ऑफिस—मेसर्स शादीराम उदमीराम	इस फर्म पर गल्ला, गुड़, शक्कर इत्यादि की कमीशन एजन्सी का काम होता है।
कलकत्ता—मेसर्स शादीराम उदमीराम ५९ तुलापट्टी (T. A. Harsika)	यहाँ पर भी यह फर्म कमीशन एजन्सी का काम करती है।

३ थाना भवनमण्डी—(मुजफ्फरनगर) मेसर्स शादीराम उदमीराम	यहाँ पर भी सब प्रकार की कमीशन एजन्सी का काम होता है।
४ दिल्ली—मेसर्स शादीराम बाल-मुकुन्द नया बाजार	इस फर्म पर गल्ले की कमीशन एजन्सी का काम होता है।
५ रोहतक—मेसर्स दुलीचन्द उदमी-राम	यह फर्म वर्मा शैल स्टोरिज के रोहतक की सोल एजंट है तथा सब प्रकार की कमीशन एजन्सी का काम होता है।
६ दिल्ली—मेसर्स ताराचन्द मंगतराम क्लॉथ मार्केट	इस फर्म पर सब प्रकार के कपड़े का व्यापार होता है।
७ सफीदम मण्डी (झींद) मेसर्स दुलीचन्द उदमीराम	यहाँ पर भी सब प्रकार की कमीशन एजन्सी का काम होता है।
८ बरनाला मण्डी (पटियाला) मेसर्स-शादीराम बालमुकुन्द	कमीशन एजन्सी का काम होता है।
९ भिवानी—मेसर्स शादीराम बाल मुकुन्द	यहाँ पर भी सब प्रकार की कमीशन एजन्सी का काम होता है।

मेसर्स धीरजलाल रामप्रसाद

इस फर्म का हेड आफिस कानपुर है जहाँ यह फर्म मेसर्स बिहारीलाल रामचरन के नाम से व्यापार करती है। इसका विशेष परिचय वहीं दिया गया है। यहाँ इसका आफिस चाँदनी चौक में है। यह आफिस इम्पोर्ट आफिस की ब्रांच है और विलायती कपड़े के इम्पोर्ट का काम करती है।

मेसर्स निहालचंद बल्देव सहाय

इस फर्म का हेड़ आफिस कानपुर है अतः पूरा परिचय वहीं दिया गया है। यहाँ यह फर्म क्लाथ मार्केट में है जहाँ कानपुर के म्योर मिल के कपड़े की बिक्री का काम होता है। इसी प्रकार यहाँ के न्यू कटरे में मेसर्स रूपनारायण रामचंद्र के नाम से इसकी एक दूसरी फर्म है जहाँ कानपुर इलगिन मिल के कपड़े तथा सूत की बिक्री का काम होता है।

मेसर्स नौरंगराय श्यामसुन्दर

इस फर्म को दिल्ली में स्थापित हुए करीब ६० वर्ष हुए पर बीच २ में इसके नाम बद-लते रहे हैं। इस फर्म की स्थापना यहाँ पर सेठ रामविलासजी ने की। आपके छोटे भाई श्रीयुत राजारामजी हैं। सम्वत् १९६४ तक आप दोनो भाइयों का काम सम्मिलित रूप में चलता रहा। बाद में दोनों फर्मे अलग हो गईं। उपरोक्त फर्म सेठ राजारामजी की है। आपके इस समय तीन पुत्र हैं; जिनके नाम क्रम से श्रीयुत दुलिचन्दजी, माधौप्रसादजी और श्रीयुत नौरंगरायजी हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

मेसर्स—दयाराम दुलिचन्द खारी बावड़ी	इस फर्म पर कपड़ा, किराना अनाज वगैरह सब प्रकार की कमीशन एजन्सी का काम होता है।
२ मेसर्स—नौरंगराय श्यामसुन्दर दिल्ली क्लॉथ मार्केट	यहाँ पर सब प्रकार के देशी कपड़े का व्यापार होता है।
३ थाना भवनमण्डी (मुजफ्फरनगर) मेसर्स दयाराम दुलीचन्द	इस फर्म पर सब प्रकार की कमीशन एजन्सी का काम होता है।

मेसर्स नारायणदास भगवानदास

इस फर्म के मालिकों का आदि निवास-स्थान दिल्ली ही है। आप लोग अग्रवाल वैश्य समाज के सज्जन हैं। लग भग ८० वर्ष पूर्व सेठ भगवानदासजी ने मेसर्स नारायणदास भग-वानदास के नाम से अपनी फर्म स्थापित कर कपड़े का व्यापार आरम्भ किया था। आपको इस व्यापार में अच्छी सफलता मिली। अतः आपने ५० वर्ष पूर्व अपनी दूसरी फर्म की स्थापना की और विलायती कपड़े का व्यापार करने लगे। इस प्रकार इस फर्म की स्थापना हुई, इस फर्म ने कपड़े के व्यापार मे अच्छी उन्नति प्राप्त की जिसके प्रमाण स्वरूप आज फर्म की कितनी ही अन्य शाखायें हैं जो सभी प्रकार का देशी तथा विलायती कपड़े का थोक व्यवसाय करती हैं। इस फर्म की प्रधान उन्नति सेठ परमेश्वरीदासजी के हाथों से हुई। इस फर्म का प्रधान संचालन स्वयं सेठजी करते हैं पर आपके परामर्श और देख-रेख में आपके पुत्र बाबू पदुमचंदजी व्यापार का पूरा काम संचालित करते हैं।

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ परमेश्वरीदासजी तथा आपके पुत्र बाबू पदुमचंदजी हैं। सेठ परमेश्वरीदासजी ने नाथद्वारे में एक विशाल धर्मशाला बनवाई है जिसमें सरलता

से १ हजार आदमी ठहर सकते हैं। इसी प्रकार आपने दिल्ली में १ लाख रुपया खर्च कर दाऊजी का मंदिर बनवाया है। आपके पिताजी ने भी दिल्ली के महल्ले चूड़ीवाला में एक सुन्दर मंदिर बनवाया है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है :—

दिल्ली-मेसर्स नारायणदास भगवानदास माली बाड़ा नयी सड़क	यहाँ फर्म का हेड आफिस है। तथा कपड़ा खरीद कर थोक देसावर को भेजा जाता है। यहाँ मैन्चेस्टर की हर्बर्ट व्हाइटवर्थ की दिल्ली के लिये सोल एजन्सी है।
दिल्ली-मेसर्स भगवानदास परमेश्वरीदास क्लाथ मार्केट T. A. Padum	यहाँ देशी तथा विलायती कपड़े का थोक व्यापार होता है तथा सोलापुरी माल का व्यापार भी है। साथ ही बम्बई की इंडियन मैन्यूफैक्चरिंग कम्पनी, तथा न्यू कैसरे हिंद मिल की भी एजन्सी है।
दिल्ली-मेसर्स पदुमचंद एण्ड कम्पनी क्लाथ मार्केट	यहाँ कपड़े के इम्पोर्ट का काम होता है।
दिल्ली-मेसर्स पदुमचंद राधामोहन फाटक हब्शखां	यहाँ किराने का थोक व्यापार होता है। हलदी का लम्बा व्यापार होता है।
अमृतसर-मेसर्स पदुमचंद राधामोहन पुराना मार्केट,	यहाँ कपड़े के कमीशन का व्यापार होता है।
बम्बई-मेसर्स परमेश्वरीदास किरपाराम धर्मराजलेन मूलजी जेठा मार्केट नंबर २ T. A. Slowsteady.	यहाँ देशी मिलों का माल खरीद कर बेंचा जाता है।

मेसर्स नाथूराम रामनारायण

इस फर्म के मालिकों का विस्तृत परिचय मेसर्स चेनीराम जेसराज के नाम से इस ग्रन्थ के प्रथम भाग के बम्बई विभाग में अनेक चित्रों सहित दिया गया है। देहली में यह फर्म कपड़े का व्यापार करती है।

मेसर्स पोहमल ब्रदर्स

इस फर्म का विस्तृत परिचय इसी ग्रन्थ के प्रथम भाग के बम्बई विभाग में पृष्ठ १४६ पर अनेक चित्रों सहित दिया जा चुका है। इसका हेड ऑफिस सिन्ध हैदराबाद में है। यह फर्म उन फर्मों में से है जिसने अपना व्यापार न केवल इसी देश में, प्रत्युत् विदेशों के भी खास २ स्थानों में चमका रक्खा है। इसकी सात बड़ी २ दुकानें भारतवर्ष में आठ पूर्वीय देशों में तथा तेरह दुकानें पश्चिमीय देशों में हैं। इसकी देहली दुकान का परिचय इस प्रकार है:—

देहली—मेसर्स पोहमल ब्रदर्स चाँदनी चौक (T. A. Pohmal) यहाँ पर जापानी और चायनीज सिल्क का व्यापार होता है।

मेसर्स प्रेमसुखदास नरसिंहदास

इस फर्म के मालिक अग्रवाल वैश्य-समाज के सज्जन हैं। इस फर्म की स्थापना करीब ७० वर्ष पूर्व सेठ प्रेमसुखदासजी ने की। उस समय इस पर आढ़त का व्यापार शुरू किया। आपको आपके पुत्र सेठ नरसिंहदासजी भी व्यापार में योग देते थे। सम्वत् १९५० में एकाएक नरसिंहदासजी की मृत्यु हो गई। आप के ५ वर्ष के पश्चात ही सेठ प्रेमसुखदासजी का भी स्वर्गवास हो गया। सेठ प्रेमसुखदासजी के पश्चात् इस फर्म के कार्य का संचालन आपके भतीजे लाला केदारनाथजी ने सम्हाला। आप व्यापारकुशल और मेधावी सज्जन हैं। आपके द्वारा फर्म की अच्छी उन्नति हुई। आपके दो भाई और हैं। बड़े भाई का नाम सेठ नैनसुखदासजी तथा छोटे भाई का नाम मेलारामजी है। लाला नैनसुखदासजी भिवानी में रहते हैं और लाला मेलारामजी अमृतसर में रहते हैं। आपने अमृतसर दुकान की बहुत उन्नति की है। आप वहाँ के प्रभावशाली व्यक्ति माने जाते हैं। आप अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी अग्रवाल महासभा के झरिया के सभापति चुने गये थे। आप नये विचारों के स्वदेशभक्त सज्जन हैं। आपने राजनैतिक और समाज-सम्बन्धी गद्य पद्य की कई पुस्तकें लिखी हैं। असहयोग के जमाने में देश की पुनीत सेवा करते हुए आपने जेलयात्रा भी की थी। लाला केदारनाथजी के दो पुत्र हैं जिनके नाम क्रम से बा० हनुमान प्रसादजी एवं बाबू घनश्यामदासजी है। इनमें से बाबू हनुमानप्रसादजी राली ब्रदर्स की दिल्ली ब्रेंच के कपड़ा एवं सूत के बेनियन हैं। बा० घनश्यामदासजी इस समय बी. ए. में पढ़ रहे हैं। सेठ केदारनाथजी क्लाथ कमीशन एजण्ट एसोसियशन तथा क्लाथ मार्केट के सभापति हैं। बा० हनुमानप्रसादजी स्थानीय मारवाड़ी युवक मण्डल के सभापति हैं तथा कई स्कूलों के मन्त्री हैं। मतलब कहने का यह कि यह परिवार शिक्षित एवं सार्वजनिक कार्य्यों में बहुत अग्रगण्य है।

सेठ केदारनाथजी सिंहल (प्रेमसुखदास नरसिंहदास) देहली

सेठ लक्ष्मीनारायणजी गाड़ोदिया (एल० एन० गाड़ोदिया) देहली

सेठ मेलारामजी सिंहल (प्रेमसुखदास नरसिंहदास) देहली

बाबू हनुमानप्रसादजी (प्रेमसुखदास नरसिंहदास) देहली

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है :—

भिवानी—मेसर्स प्रेमसुखदास चैतराम हालू बाजार	यहाँ हेड आफिस है तथा कपड़े का काम होता है ।
दिल्ली—मेसर्स प्रेमसुखदास नरसिंहदास नई सड़क T. A. sukh	यहाँ बैंकिंग, कपड़ा, सूत, बारदाना एवं आढ़त का व्यापार होता है। यह फर्म रालिब्रदर्स के कपड़ा एवं सूत विभाग की बेनियन है ।
अमृतसर—मेसर्स नरसिंहदास हनुमानप्रसाद बिकानेरिया बाजार आलू कटला T. A. Narsigh	यहाँ बैंकिंग, कपड़ा, सूत, बारदाना एवं कमीशन एजंट का काम होता है ।
बम्बई—नरसिंहदास मेलाराम कालबादेवी रोड़ नं० २	यहाँ बैंकिंग, किराना सूत तथा कपड़े का व्यापार होता है ।
जालंधर—प्रेमसुखदास कनीराम बाजार नोहरिया	बैंकिंग तथा कपड़े का व्यापार होता है ।

लुधियाना—प्रेमसुखदास रामचन्द—यहाँ कपड़े का काम होता है ।

मेसर्स बद्रीदास बगड़िया

इस फर्म का हेड आफिस कानपुर है अतः इसका विशेष परिचय वहीं दिया गया है। यहाँ यह फर्म न्यू क्लाथ मार्केट में है जहाँ विलायती कपड़े की एजेन्सी का काम होता है।

मेसर्स बिहारीलाल बेनीप्रसाद

इस फर्म के मालिकों का मूल निवास-स्थान नवलगढ़ (जयपुर) का है। आप अग्रवाल समाज के जयपुरिया सज्जन हैं। सेठ बिहारीलालजी संवत १९५२ में देहली आये। यहाँ आपने कटपीस का व्यापार शुरू किया। जिसमें अच्छी तरक्की हुई। इस समय आपके पाँच पुत्र हैं, जिनके नाम बा० बेणीप्रसादजी, मदनलालजी, वासुदेवजी, सागरमलजी तथा परसराम जी हैं। इनमें से प्रथम तीन सेठ बिहारीलालजी से अलग होकर अपना स्वतंत्र व्यापार करते हैं। तथा शेष दो अपने पिता के साथ व्यापार कर रहे हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

मेसर्स बिहारीलाल बेनीप्रसाद कटरा शाहंशाह T. A. Saraf	यहाँ पर कटपीस का इम्पोर्ट तथा व्यापार होता है।

मेसर्स बिहारीलाल पोद्दार

इस फर्म के मालिकों का आदि निवास-स्थान बिसाऊ (जयपुर) है। इस फर्म की स्थापना सेठ बिहारीलालजी तथा जमनादासजी पोद्दार ने लगभग ३१ वर्ष पूर्व दिल्ली में की थी। आरम्भ में इस फर्म पर अमदाबाद के मिलों के कपड़े का व्यापार आरम्भ किया गया। जिसमें फर्म को अच्छी सफलता प्राप्त हुई। इसके बाद अमदाबादी माल के स्थान पर फर्म ने बम्बई के मिलो का माल बेंचना आरम्भ किया और पूर्व के अनुरूप ही इस व्यापार में भी अच्छी सफलता प्राप्त की। जिस समय नागपुर का मॉडल मिल स्थापित हुआ उस समय फर्म ने अपना अन्य सब काम बंद कर मॉडल मिल के कपड़े की सोल एजेन्सी दिल्ली और कानपुर के लिये ली जो वर्तमान समय में भी इसी फर्म के पास है। इसी प्रकार बदनेरा के बिरार मैन्युफेक्चरिंग कम्पनी लि० की भी सोल एजेन्सी इस फर्म ने आरम्भ से ही दिल्ली और कानपुर के लिये ली जो आज भी इस फर्म के पास है।

इस फर्म की प्रधान उन्नति इसके संस्थापक सेठ बिहारीलालजी पोद्दार और छोटे भाई सेठ जमनादासजी पोद्दार के हाथों से हुई है। आप लोगों ने अपने व्यापारकौशल से फर्म को उन्नत अवस्था पर पहुँचाया है।

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ बिहारीलालजी तथा आपके भाई सेठ जमनादासजी और सेठ बिहारीलालजी के पुत्र बाबू रामेश्वरदासजी तथा सेठ जमनादासजी के पुत्र बाबू कपूरचंद जी और बाबू नाथूरामजी हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

मेसर्स बिहारीलाल पोद्दार नया कटला, चांदनी चौक दिल्ली T. A. Poddar	यहाँ माडेल मिल तथा बरार मैन्यू फैक्चरिंग कम्पनी लि० की सोल एजन्सी है और इन्हीं मिलों के माल का व्यापार होता है।
मेसर्स बिहारीलाल पोद्दार जेनरलगंज कानपुर	यहाँ माडेल मिल तथा बरार मैन्यू फैक्चरिंग कम्पनी लि० की सोल एजन्सी है। और इन्हीं मिलों के माल का व्यापार होता है।

सेठ रामलालजी खेमका

इस फर्म के मालिक बिसाऊ (शेखावटी) के रहनेवाले हैं। सर्व प्रथम यहां सेठ जोधरामजी आये और कपड़े का कारबार शुरू किया। आप अग्रवाल वैश्य समाज के सज्जन हैं। आपकी देख-रेख में आपके पुत्र सेठ सनेहीरामजी भी कारबार में योग देने लग गये थे। आप दोनों सज्जनों के हाथो से इस फर्म की बहुत उन्नति हुई। आप व्यापार-कुशल सज्जन थे। आपने बम्बई, कलकत्ता आदि स्थानों पर भी अपनी शाखाएँ स्थापित की। सेठ जोधरामजी का सम्वत् १९५० में और सेठ सनेहीरामजी का सम्वत् १९७४ में देहावसान हो गया। सेठ सनेहीराम-जी ने यहाँ हिन्दुस्थानी मर्कण्टाइल असोसिएशन स्थापित की तथा इसके करीब २० वर्ष तक सभापति रहे।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ सनेहीरामजी के पुत्र बाबू रामलालजी खेमका हैं। आप सज्जन एवं मिलनसार व्यक्ति हैं। आपने दस वर्ष पूर्व बम्बई, कलकत्ता की फर्म को सम्मान के साथ उठा ली है। आजकल आप अपने ही नाम से बैंकिग बिजिनेस करते हैं। आप हिन्दुतानी मर्कण्टाइल एसोसिएशन के सभापति तथा पंजाब नेशनल बैंक के डायरेक्टर हैं। दिल्ली म्युनिसिपेलिटी के आप मेंबर भी रह चुके हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

मेसर्स जोधराम सनेहीराम
कटरा अशर्फी
चाँदनी चौक दिल्ली } यहां बैंकिग और हुंडी चिट्ठी का व्यापार होता है।

मेसर्स रामलाल श्यामलाल

इस फर्म के मालिकों का मूल निवास देहली है। आप अग्रवाल वैश्य जाति के सज्जन हैं। इस फर्म का स्थापन संवत् १९६९ में हुआ। इस फर्म का स्थापन लाला रामप्रसादजी ने किया। आप बड़े सुयोग्य, देशभक्त और सुधरे हुए विचारों के सज्जन हैं। आप मर्कण्टाइल एसोसिएशन के सन् १९२१ से ऑनरेरी सेक्रेटरी, मारवाड़ी लायब्रेरी के सेक्रेटरी तथा म्युनि-सिपिल कमिश्नर भी सन् १९२१ से हैं। देहली के व्यापारिक तथा सार्वजनिक समाज में आपकी अच्छी प्रतिष्ठा है। आपके पार्टनर लाला श्यामलालजी का स्वर्गवास हो चुका है। अब उनका साझा भी नहीं है। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स रामप्रसाद श्यामलाल
चांदनी चौक। } इस फर्म पर कपड़े का थोक व्यापार होता है।

मेसर्स रिझूमल ब्रदर्स

इस फर्म का विस्तृत परिचय इस ग्रन्थ के प्रथम भाग में बम्बई विभाग के पृष्ठ १५१ पर दिया गया है। इसकी देहली दुकान का परिचय इस प्रकार है—

देहली—मेसर्स रिझूमल ब्रदर्स चाँदनी चौक (T. A. whitesilk) यहाँ पर रेशमी पीस गुड्स तथा हैण्डकर चीफ का व्यापार होता है।

मेसर्स रामेश्वरदास मंगलचंद

इस प्रतिष्ठित फर्म के मालिकों का विस्तृत परिचय अनेक चित्रों सहित मेसर्स फूलचन्द केदारमल के नाम से इस ग्रन्थ के प्रथम भाग में बम्बई विभाग के पृष्ठ १२८ पर दिया गया है।

देहली दुकान का परिचय इस प्रकार है।

देहली—मेसर्स रामेश्वरदास मङ्गलचन्द न्यू क्लॉथ मार्केट—यहाँ पर बैंकिंग बिजीनेस और कपड़े का थोक व्यापार होता है।

मेसर्स एल० एन० गाड़ोदिया एण्ड को०

इस फर्म के मालिक नवलगढ़ निवासी हैं। आप अग्रवाल वैश्य समाज के गाड़ोदिया सज्जन हैं। इस फर्म की स्थापना सेठ लक्ष्मीनारायणजी गाड़ोदिया ने सन् १९१७ ई० में दिल्ली में की थी। इस फर्म पर कपड़े का इम्पोर्ट तथा देशी और विलायती कपड़े की बिक्री का थोक व्यापार आरम्भ से ही होता है। इस फर्म के पास कानपुर, अमदाबाद तथा बम्बई की कितनी ही देशी मिलों की एजन्सियाँ भी हैं जिनके माल की बिक्री के लिए इसकी कितनी शाखायें भी दिल्ली और अन्य शहरों में हैं।

सेठ लक्ष्मीनारायणजी गाड़ोदिया स्थानीय म्यूनिसिपैलिटी के म्यूनिसिपल कमिश्नर, हिन्दुस्थान टाइम्स लि० के डायरेक्टर तथा दिल्ली के हिन्दुस्तानी मर्केन्टाइल ऐसोसियेशन की मैनेजिंग कमेटी के सदस्य हैं।

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ लक्ष्मीनारायणजी गाड़ोदिया और लाला बनारसीदासजी हैं।

श्रीयुत सेठ लक्ष्मीनारायणजी ने एक लाख रुपया दान देकर गाड़ोदिया ट्रस्ट बनाया है। इस रकम में से चेरिटेबिल गाड़ोदिया स्टोअर्स कूचानटवां, दिल्ली, तथा गोल्डन टैम्पल रोड अमृतसर में उपरोक्त नाम से जारी हैं। इन दोनों स्टोअर्स की तमाम आय शिक्षा, तथा अन्य धार्मिक कामों में खर्च की जाती है।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

मेसर्स—लक्ष्मीनारायण गाड़ोदिया को० गाड़ोदिया बिल्डिंग नियरक्लाक टावर दिल्ली T. A. Gadodia	यहाँ हेड ऑफिस है यहाँ कपड़े की आढ़त का काम होता है तथा खरीद और फरोख्त का काम होता है।
मेसर्स—लक्ष्मीनारायण बनारसीदास कूचानटवा दिल्ली	यहाँ आढ़त का काम होता है।
मेसर्स—एल० एन० गाड़ोदिया गिरधारी लाल जेनरल गंज कानपुर (T. A. Girdhari)	यहाँ न्यू विक्टोरिया मिल्स की सोल ऐजन्सी है।
मेसर्स—एल० एन० गाड़ोदिया कम्पनी गोल्डन टेम्पल रोड़ अमृतसर	यहाँ कपड़े की आढ़त तथा खरीद फरोख्त का काम होता है।

इसी प्रकार दिल्ली के न्यू क्लाथ मार्केट, कटरा मुंशी गौरीशंकर, कटरा चौबा और कटरा नवाब साहब में मेसर्स एल० एन० गाड़ोदिया एण्ड को० के नाम से अन्य चार दूकानें हैं जहाँ कपड़े की बिक्री का काम होता है। इसी प्रकार अमृतसर में कटला आलूवाला में आपकी तीन दुकानें और हैं। यहाँ पर भी कपड़े का काम होता है।

मेसर्स शादीराम मंगलसेन

इस फर्म के मालिकों का मूल निवासस्थान शमशाबाद है। लगभग ५० वर्ष पूर्व लाला प्रागदासजी ने मेसर्स प्रागदास मंगलसेन के नाम से अपनी फर्म दिल्ली में स्थापित की और कपड़े की आढ़त का व्यापार आरम्भ किया। आपने कपड़े की बिक्री के लिए एक दूसरी फर्म मेसर्स प्रागदास बुद्धसेन के नाम से खोली। आपके स्वर्गवास होने पर आपके भाई लाला बुद्धसेन और लाला मंगलसेनजी ने व्यापार का संचालन किया। आप लोगों ने अपने व्यापार को बहुत अच्छी उन्नत अवस्था पर पहुँचाया। आप लोगो ने दिल्ली और भारत के कितने ही अन्य व्यापारिक स्थानों में फर्में खोलीं जिनमें से उपरोक्त फर्म भी एक है। सम्वत् १९७२ में लाला बुद्धसेनजी का स्वर्गवास हुआ। अतः फर्म के व्यवसाय के संचालन का भार पूर्णरूप से लाला मंगलसेन के हाथ में आया। वास्तव में आरम्भ से ही लाला मंगलसेनजी ही फर्म का संचालन करते थे और आपने ही मेसर्स शादीराम मङ्गलसेन के नाम

से इस फर्म की स्थापना संवत् १९७६ में अलग होकर की थी। आपका स्वर्गवास सम्वत् १९८१ में हुआ और फर्म का संचालन आपके पुत्र लाला जोगध्यानजी के हाथ में आया।

इस फर्म के मालिक लाला जोगध्यानजी हैं। आप ही फर्म का संचालन करते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

मेसर्स शादीराम मंगलसेन ईगर्टन रोड दिल्ली	यहाँ देशी तथा विलायती कपड़े की आढ़त का काम होता है।

जौहरी

मेसर्स कानजीमल एण्ड सन्स

इस फर्म के मालिकों का मूल निवास-स्थान पटियाला-स्टेट है। आप क्षत्री जाति के सज्जन हैं। करीब ७० वर्ष पूर्व यह फर्म लाला कानजीमल के द्वारा बम्बई में मेसर्स हजारीमल कम्पनी के नाम से शुरू हुई। जिस समय कम्पनी खोली गई उस समय के पहले आप चार रुपया मासिक पर सर्विस करते थे। कम्पनी भी सिर्फ ४००) की पूंजी से खोली। धीरे २ उन्नति होती गई। आपने कम्पनी का नाम बदल कर मेसर्स कानजीमल भगवानदास के नाम से काम शुरू किया। इसके पश्चात् आप उपरोक्त नाम से व्यापार करने लगे। आप के द्वारा ही इस फर्म की उन्नति हुई। आप व्यापार-कुशल व्यक्ति थे। आपका स्वर्गवास सम्वत् १९२७ मे हो गया। आप ने किंग जॉर्ज एवम् बादशाह हबीबुल्लाखाँ आदि से भी जवाहरात का व्यापार किया था। तथा कई साहबों से प्रशंसापत्र प्राप्त किये। आप के छ पुत्र हुए जिनमें से बनारसी दासजी तथा छोटे लालजी इस फर्म से अलग हो गये। शेष ४ जिनके नाम क्रमशः रामरतनजी, परसोतमदासजी, लक्ष्मणदासजी और बालकृष्णदासजी हैं जो इस फर्म के मालिक हैं। रामरतनजी सब से बड़े हैं। फर्म का संचालन आप ही करते हैं। शेष तीनों भाई विद्याध्ययन करते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

मेसर्स—कानजीमल एण्ड सन्स—चाँदनी चौक दिल्ली T. A. Royal	यहाँ हेड-ऑफिस है तथा जवाहरात, सोना चाँदी के बने बर्तन तथा जेवर और शाल, पशिमने, गलीचे आदि का व्यापार होता है।

मेसर्स कानजीमल एण्ड सन्स अलीपुर रोड, दिल्ली T. A. Royal	}	यहाँ भी उपरोक्त काम होता है।
मेसर्स कानजीमल एण्ड सन्स इस्ट स्ट्रीट पूना	}	यहाँ भी उपरोक्त काम होता है।

मेसर्स खूबचन्द इन्द्रचन्द

इस फर्म के मालिक ओसवाल वैश्य-समाज के चोरडिया सज्जन हैं। करीब १२ पीढ़ियों से यह परिवार यहीं निवास करता चला आ रहा है। पहले इस परिवार के लोग गोटा किनारी का व्यवसाय करते थे। संवत् १९५५ में लाला खूबचन्दजी तथा आप के पुत्र लाला इन्द्रचन्द्रजी ने जवाहरात के कारबार को तरक्की दी। लाला खूबचन्दजी के पिता सेठ रूपचन्दजी का संवत् १९६३ में देहावसान हो गया। एक साल के बाद ही अर्थात् सम्वत् १९६४ में लाला खूबचन्दजी भी स्वर्गवासी हो गये। तब से इस फर्म के कार्य्यभार का संचालन एक मात्र सेठ इन्द्रचन्द्रजी करते हैं। यों तो फर्म पहले ही उन्नतावस्था में थी मगर आप ने इस फर्म की बहुत उन्नति की। आप व्यापार कुशल, मेधावी एवम् सज्जन व्यक्ति हैं। आप के एक पुत्र हैं जिनका नाम चम्पालालजी हैं। आप अपने पिताजी की देखरेख में फर्म का संचालन करते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

मेसर्स—खूबचन्द इन्द्रचन्द मालीबाड़ा, देहली T. A. Faithful	}	यहाँ सब प्रकार के जवाहरात का होलसेल व्यापार होता है। यह फर्म विलायत में भी अपना माल भेजती है।

मेसर्स रामचन्द्र हजारीमल

यह फर्म संवत् १९०५ से स्थापित है। प्रारंभ में इसे सेठ बालमुकुन्दजी एवम् सेठ केसरीचंदजी ने स्थापित किया। सेठ बालमुकुन्दजी माहेश्वरी जाति के सज्जन और सेठ केसरीचंदजी श्री श्रीमाल जाति के थे। आप दोनों सज्जनों का स्वर्गवास हो गया है। आप लोगों के पश्चात् सेठ बालमुकुन्दजी के पुत्र सेठ रामचन्द्रजी और सेठ केसरीचंदजी के पुत्र सेठ हजारीमलजी ने कारबार को सम्हाला। आप लोगों के समय में फर्म की अच्छी उन्नति हुई। सेठ रामचन्द्रजी का स्वर्गवास संवत् १९५३ में हो गया।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ हजारीमलजी एवम् सेठ रामचन्द्रजी के पुत्र दुर्गामल-जी हैं। आप ही फर्म के काम का संचालन करते हैं।

सेठ रामचन्द्रजी ने करीब एक लाख की लागत से मालीवाड़े में एक राम लक्ष्मण का मन्दिर बनवाया है।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

देहली—मेसर्स रामचन्द्र हजारीमल चाँदनी चौक T. A. Poonam — इस फर्म पर बैंकिंग तथा जवाहरात के जड़ाऊ जेवर और फुटकर नगों का व्यापार होता है।

मेसर्स शादीराम गोकुलचन्द

इस प्रतिष्ठित फर्म के मालिक ओसवाल समाज के जैन धर्मावलम्बीय नाहर सज्जन हैं। इस फर्म के पूर्व पुरुष ला० निधौमलजी के पिता पहले पहल यहाँ आये। तथा महम्मदशाह रंगीले के समय में जवाहरात का काम शुरू किया, आपके पश्चात आपके पुत्र ला० निधौमलजी ने फर्म के कार्य का संचालन किया। आपके समय में फर्म की अच्छी उन्नति हुई। आपका स्वर्गवास हो गया। आपके पश्चात् आपके पुत्र ला० जीतमलजी ने फर्म के काम को सम्हाला। आप व्यापार कुशल और मेधावी व्यक्ति थे। अपने अपनी फर्म की बहुत तरक्की की। साथ ही फर्म के सम्मान को भी बहुत बढ़ाया। उस समय इस फर्म पर मेसर्स निद्धोमल जीतमल के नाम से जवाहरात का व्यापार होता था। आपका भी स्वर्गवास हो गया। दुःख की बात है कि आपके पश्चात् आपके पुत्र ला० बुद्धसिंहजी ने कई कारणों की वजह से फर्म की बरबादी कर दी। आपके पश्चात् आपके पुत्र ला० शादीरामजी होनहार व्यक्ति हुए। आप व्यापार चतुर, बुद्धिमान एवं मेधावी सज्जन थे। आपने फिर गोटे का कारबार प्रारम्भ किया तथा अपने पिताजी के द्वारा खोई हुई इज्जत को फिर प्राप्त किया। आप मारवाड़ में शादीरामजी किनारी वालों के नाम से मशहूर थे। आपका स्वर्गवास १९३८ में हो गया। आपके दो पुत्र हुए। लाला भैरोंदासजी तथा ला० गोकुलचंदजी।

ला० शादीरामजी के पश्चात् फर्म का संचालन ला० भैरोंदासजी करने लगे। आप गोटे ही का व्यापार करते रहे। इसी समय मङ्गलसेनजी की हिस्सेदारी में मेसर्स मङ्गलसेन भैरोंदास के नाम से एक और फर्म स्थापित किया। तथा लाला शादीरामजी की ही मोजूदगी में आप ही ने गोकुलचन्द चुन्नीलाल के नाम से एक और फर्म स्थापित की। इस प्रकार फर्म की क्रमशः उन्नति होती गई। ला० भैरोंदासजी का स्वर्गवास संवत् १९४४ मे हो गया।

लाला इन्द्रचन्दजी चोरड़िया (खूबचन्द इन्द्रचन्द) देहली

लाला हजारीमलजी जौहरी (रामचन्द हजारीमल) देहली
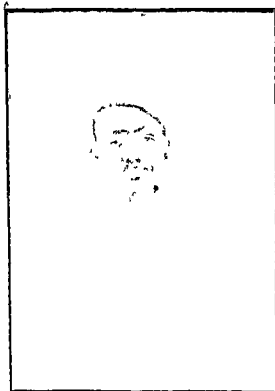
लाला गोकुलचन्दजी जौहरी (शादीराम गोकुलचन्द) देहली

लाला सूरजलालजी घाकलीवाल (सूरजलाल एण्ड सन्स) देहली

वर्तमान में इस फर्म के मालिक ला० गोकुलचन्दजी तथा आपके भतीजे ला० सोहन-लालजी हैं। आपके दूसरे भतीजे ला० मोहन लालजी का स्वर्गवास हो गया है। ला० मोहन लालजी के कपूरचंदजी नामक एक पुत्र हैं। ला० सोहनलालजी के मङ्गलचंदजी, हेमचंदजी तथा मेहताबचंदजी नामक तीन पुत्र हैं।

संवत् १९४५ से ही इस फर्म के प्रधान संचालक ला० गोकुलचंदजी हैं। आपने इसी साल से अपने पुराने जवाहरात के व्यवसाय को फिर स्थापित किया। संवत् १९८० में आपने गोटे के व्यवसाय को बंद कर दिया। वर्तमान में आपकी फर्म सिर्फ जवाहरात ही का व्यवसाय करती है। इस व्यापार में यह फर्म अच्छी समझी जाती है।

ला० सोहनलालजी भी बुद्धिमान और योग्य सज्जन हैं। आप ला० साहब की देख-रेख में व्यापार का संचालन करते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है :—

देहली—मेसर्स शादीराम गोकुलचंद चाँदनी चौक।	यहाँ बैंकिंग तथा जवाहरात का व्यापार होता है। रियासतों को भी यह फर्म माल सप्लाई करती है। इसके अतिरिक्त कमीशन एजन्सी का काम भी होता है।

मेसर्स सूरजलाल एण्ड सन्स

इस फर्म के मालिक ग्वालियर के मूल निवासी हैं। आप खण्डेलवाल जैन जाति के बाकलीवाल सज्जन हैं। इस फर्म को यहाँ पर लाला सूरजलालजी ने सन् १८८० में स्थापित की। आप केवल १६ वर्ष की उम्र में ग्वालियर से देहली आये इतनी थोड़ी उम्र में ही आपने अपनी व्यापारिक प्रतिभा से अच्छी तरक्की कर ली। इस समय आप ही इस फर्म के प्रोप्राइटर हैं। यह फर्म जवाहिरात तथा आर्ट और क्यूरियो सिटी का अच्छा व्यापार करती है।

लाला सूरजलालजी के इस समय पाँच पुत्र हैं। जिनके नाम श्रीयुत माणिकचन्दजी, गुलाबचन्दजी, मिलापचन्दजी, कपूरचन्दजी और जम्बूप्रसादजी है। आप सब व्यापार में भाग लेते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

मेसर्स सूरजलाल एण्ड सन्स वेदवाड़ा दिल्ली (T. A. Backliwal)	इस फर्म पर सब प्रकार की ज्वैलरी और क्यूरियो सिटी का व्यापार होता है।

लोहे के व्यापारी

मेसर्स नन्नेमल जानकीदास तथा रायसाहब लाला नानकचन्दजी

इस फर्म के मालिकों का आदि निवासस्थान दिल्ली है। आप लोग खण्डेलवाल वैश्य समाज के सज्जन हैं। इस फर्म की स्थापना लगभग १०० वर्ष पूर्व सेठ नन्नेमलजी ने कर लोहे का व्यापार जारी किया। सेठ नन्नेमलजी के स्वर्गवास के पश्चात् सेठ जानकीदासजी ने फर्म का संचालन किया। आपने फर्म के लोहे के व्यापार के अतिरिक्त ग्राण्ड आँयर्न वर्क्स के अपने कारखाने को उन्नति की ओर अग्रसर किया। आपके पश्चात् आपके लघुभ्राता सेठ रामचन्द्रजी ने इसको और भी तरक्की पर पहुँचाया। इसकी खास उन्नति लाला रामचन्द्रजी और बनारसीदासजी के हाथों से हुई। लाला रामचन्द्रजी ने अपने जीवन में राजसेवा और जातीय सेवा में बहुत सहयोग दिया था। आपका स्वर्गवास सन् १९१० में हो गया। मरते समय आपने एक लाख रुपये की रकम धर्मार्थ निकाली।

लाला रामचन्द्रजी के दो पुत्र हैं रायसाहब लाला नानकचन्दजी और लाला दीनानाथजी (जो जन्म से गूंगे तथा बहरे हैं)।

रायसाहब लाला नानकचन्दजी सन् १९२४ में ऑनरेरी मजिस्ट्रेट और १९२५ में म्यूनिसिपल कमिश्नर हुए, तथा १९२६ में रायसाहब की सम्मान सूचक उपाधि से विभूषित किये गये। आपने २५००० इन्फण्ट वेलफेअर सेण्टर में दिया। इस संस्था का शिलारोपण आपके पिता जी के नाम से सन् १९२३ में काउण्टेस ऑफ रीडिंग साहब ने किया। इस सेण्टर के कायम हो जाने से लेडी रीडिंगहेल्थ स्कूल पब्लिक फायदे के लिए जारी हो गया। इसके सिवाय आपने और भी बहुत सी रकमें पब्लिक कामों में दान की हैं। जिनकी सूचि बहुत बड़ी है।

लाला बनारसीदासजी बड़े व्यापार कुशल और मेधावी सज्जन हैं। आपके हाथों से फर्म की बहुत तरक्की हुई। आप दिल्ली आयर्नमर्चेण्ट्स एसोसिएशन के प्रेसिडेण्ट हैं।

सन् १९२६ तक लाला रामचन्द्रजी और लाला बनारसीदासजी के वंशजों की फर्म सम्मिलित ही थी। मगर दिसम्बर सन् १९२६ में ये दोनों परिवार अलग हो गये हैं।

इस फर्म का सम्मिलित व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

१—देहली—मेसर्स नन्नेमल जानकीदास चावड़ी बाजार	इस फर्म पर सब प्रकार के लोहे, पीतल, ताम्बे का भारी कारबार होता है। यह फर्म विलायत से लोहे का इम्पोर्ट करती है। इसके अतिरिक्त बैंकिंग और कमीशन एजन्सी का भी यह फर्म काम करती है।
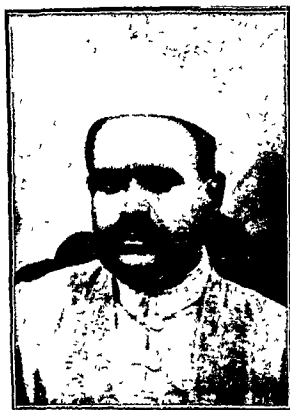
स्वर्गीय लाला रामचन्द्रजी (नत्थेमल जानकीदास) देहली

लाला बनारसीदासजी खण्डेलवाल (नत्थेमल जानकीदास) देहली

रायसाहब लाला नानकचन्दजी (नत्थेमल जानकीदास) देहली

लाला दीनानाथजी (नत्थेमल जानकीदास) देहली
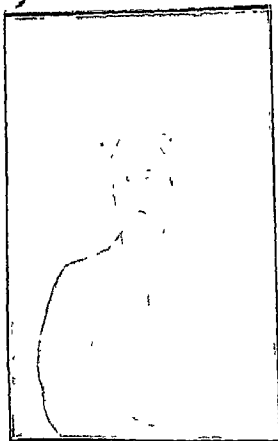
बाबू सूरजभान S/O रायसाहब नानकचन्द देहली
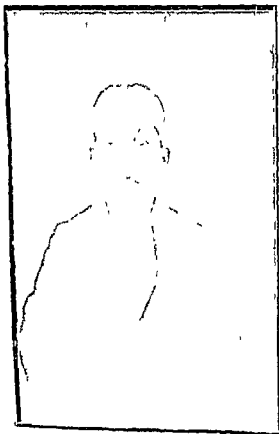
बाबू श्रीनाथ S/O लाला दीनानाथ (नत्थेमलजानकीदास) देहली

बाबू हरिनाथ S/O लाला दीनानाथ (नत्थेमल जानकीदास) देहली

२–ग्रॉण्ड ऑयर्न वर्क्स चावड़ी बाजार	इस कारखाने में शूगर मशीनों की ढलाई का काम होता है।
३–करॉंची–मेसर्स नन्नेमल बनारसीदास खारादर (T. A. Mettles)	इस फर्म पर लोहे का इम्पोर्ट व्यापार, बैंकिंग और कमीशन एजन्सी का काम होता है।

इसके सिवा यू० पी० तथा पंजाब में आपके बहुत से गोडाउन्स हैं। जिनके द्वारा शूगर मशीन सप्लाय की जाती है।

मेसर्स प्यारेलाल माधोराम

इस फर्म के मालिकों का मूल निवास-स्थान देहली है। यह फर्म बहुत पुरानी है। बहुत समय से ही इस पर लोहे का व्यवसाय होता चला आ रहा है। उपरोक्त नाम से करीब ५५ वर्षों से यह फर्म काम कर रही है। इसकी स्थापना ला० प्यारेलालजी के हाथों से हुई। आप व्यापार कुशल और मेधावी सज्जन थे। आपके ही द्वारा इस फर्म की तरक्की भी हुई। आप धार्मिक स्वभाव के सज्जन थे। आपका स्वर्गवास संवत १९७९ में हो गया है।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक ला० प्यारेलालजी के सुपुत्र ला० माधोरामजी हैं। आप वयोवृद्ध सज्जन हैं। आपका ध्यान भी धार्मिक कार्य्यों की ओर विशेष रहा है। आपने अपने पिताजी की आज्ञानुसार उनके स्मारक स्वरूप सीताराम बाजार में एक सुन्दर धर्मशाला बनवाई है। इसमें करीब २०० व्यक्तियों के रहने की सुविधा है।

इस फर्म के व्यापार का परिचय इस प्रकार है:—

देहली—मेसर्स प्यारेलाल माधोराम चावड़ी बाजार T. A. Hardwere	यहाँ बैंकिंग तथा लोहा और हार्डवेअर का व्यापार होता है। इसके साथ ही यह फर्म इम्पोर्ट का व्यापार भी करती है।

मेसर्स भानामल गुलजारीमल

इस फर्म के मालिक खास निवासी दसौत (अलवर) के हैं। करीब १०० वर्ष पूर्व इस फर्म की स्थापना हुई। शुरू २ में इस फर्म पर लोहे की तिजारत ही होती थी। सन् १८७४ में इस फर्म ने एक लोहे की ढलाई का कारखाना देहली में खोला। जिसमें अधिकतर कोल्हू तैयार होते थे। लेकिन अब बढ़ते २ सब प्रकार की ढलाई का काम होने लग गया है। फर्म के वर्तमान

मालिक लाला बनवारीलालजी जब केवल तीन वर्ष के थे तब इनके पिता गुलजारीलालजी स्वर्गवासी हो गये। उस समय इनके दादा भानामलजी विद्यमान थे। मगर वे भी इनको पन्द्रह वर्ष का छोड़ कर स्वर्गवासी हो गये। तब से आप ही इस फर्म का योग्यता पूर्वक सञ्चालन करते रहे हैं।

यह फर्म ताता आयर्न एण्ड स्टील वर्क्स का बहुत अधिक माल खरीदती है। इसकी ब्राञ्चेज पटना, कलकत्ता, फैजाबाद, बम्बई, गोण्डा, मुजफ्फरपुर, गोरखपुर, शाहगंज इत्यादि स्थानों पर है। जहाँ पर सब जगह लोहे का व्यापार होता है। भारतवर्ष में लोहे का व्यापार करने वाली फर्मों में इसका आसन बहुत ऊँचा है।

इसका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

भानामल गुलजारीमल चावड़ी बाजार देहली T. A. Bhanamal Phone 5639	आयर्न मर्चेण्ट्स एण्ड गवर्नमेण्ट कण्ट्राक्टर्स। इस फर्म का यहाँ लोहे की ढलाई का कारखाना भी है।

मेसर्स माधोराम बुधसेन*

इस फर्म का हेड ऑफिस देहली में ही है। इसके मालिक खण्डेलवाल वैश्य समाज के सज्जन हैं। इसका स्थापन लाला माधोरामजी ने करीब १०० वर्ष पूर्व किया था। आपके दो पुत्र लाला बुधसेनजी और लाला हरदेवदासजी हुए। इनमें से लाला बुधसेनजी के तीन पुत्र हुए। जिनके नाम क्रम से लाला जीवनमलजी, लाला रघ्घूमलजी एवं लाला जगरमलजी था। इनमें से लाला जीवनमलजी और लाला रघ्घूमलजी के हाथों से इस फर्म की खूब उन्नति हुई। लाला रघ्घूमलजी के हाथों से फर्म की व्यवसाय वृद्धि के साथ २ मान प्रतिष्ठा में भी खूब वृद्धि हुई।

संवत् १९३० के लगभग इस फर्म की कलकत्ता ब्राञ्च का स्थापन हुआ तथा उसके पश्चात् संवत् १९४० में बम्बई में, १९४६ में करांची में तथा १९७६ में कानपूर में इसकी शाखाएँ स्थापित की गईं।

लाला रघ्घूमलजी के जमाने में इस फर्म पर लोहे के व्यापार के अलावा और भी कई नवीन व्यापार प्रारम्भ किये गये। आपने कपड़े की दो दूकानें कलकत्ते में तथा एक देहली में

---

*यद्यपि इस फर्म का परिचय इस ग्रन्थ के द्वितीय भाग के कलकत्ता विभाग में लाला रघ्घुमल जी के चित्र सहित दे चुके हैं। फिर भी चूंकि देहली में इसका हेड ऑफिस है इसलिए यहाँ दुबारा दिया गया है।

खोलीं। शक्कर के व्यवसाय के लिए आप डेविड सासून कम्पनी के बेनियन नियुक्त हुए। उस समय आपने जापान में भी अपना एक ऑफिस खोला था एवं निज की जहाज सर्विस भी शुरू की थी। फर्म की स्थायी सम्पत्ति को भी आपने खूब बढ़ाया था। आपने करीब ३० लाख की जायदाद कलकत्ते में, ६ लाख की मसूरी में तथा इसी प्रकार देहली और करांची में भी जायदाद बनवाई।

लाला रघूमलजी दानी भी बहुत बड़े थे। सार्वजनिक कार्य्यों की ओर आपका बड़ा लक्ष्य था। आपने करीब १। लाख रुपया प्रदान कर इन्द्रप्रस्थ का गुरुकुल स्थापित किया। देहली के कन्या-गुरुकुल को एक लाख रुपया प्रदान किया। सन् १९१९ के देहली के शहीदों का स्मारक बनाने के लिए करीब एक लाख रुपया दिया। जिससे खरीदी हुई बिल्डिंग में इस समय नेशनल हाई स्कूल और यतीमखाना चल रहा है। इसी प्रकार आपने अपने जीवन भर में करीब ४०–५० लाख रुपयों का दान किया। आपका स्वर्गवास सन् १९२६ में हुआ। मरते समय आपने २० लाख रुपयों की जायदाद दान की। जिसके ट्रस्टी बाबू घनश्यामदास बिड़ला आदि कई बड़े २ महानुभाव हैं। लालाजी के कोई सन्तान न थी। अतएव आपने अपनी सम्पत्ति के बराबर चार विभाग किये (१) धर्मपत्नी लाला रघूमलजी (२) पुत्री लाला रघूमलजी (तथा दामाद लाला हंसराजजी गुप्त) (३) भानजे लाला गोरधनदासजी, और (४) भानजे लाला दीनानाथजी।

वर्तमान में इस फर्म की कलकत्ता, बम्बई, कानपूर एवं करांची ब्रान्च का संचालन लाला हंसराजजी गुप्त एम० ए० करते हैं तथा देहली का कारोबार लाला गोरधनदासजी एवं दीनानाथजी सम्हालते हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

दिल्ली—मेसर्स माधोराम बुद्धसिंह चावड़ी बाजार—यहाँ पर लोहे का व्यापार, बैंकिंग और जायदाद का काम होता है। यहाँ आपकी फर्म शूगरकेन मिल्स मैन्यू, फैक्चरर भी है।

कलकत्ता—मेसर्स माधोराम हरदेवदास, धरमा हट्टा स्ट्रीट—लोहे का व्यापार और जायदाद का काम होता है।

करांची—मेसर्स माधोराम हरदेवदास मेकलोड रोड, लोहे का व्यापार, बैंकिंग और जायदाद का काम होता है।

बम्बई—मेसर्स माधौराम रघूमल बम्बादेवी नं० २—लोहे का व्यापार होता है।

कानपुर—मेसर्स जीवनलाल रणजीतमल—लोहे का व्यापार होता है।

मेसर्स रामरिचपालमल घासीराम

इस फर्म के मालिकों का मूल निवास-स्थान देहली में ही है। आप अग्रवाल वैश्य जाति के सज्जन हैं। इस फर्म को देहली में लोहे का व्यापर करते हुए करीब ८० वर्ष हुए। इसके पहले यह फर्म चाँदी सोने का व्यापार करती थी। इस फर्म की स्थापना लाला गंगासहायजी ने की थी। लाला गंगासहायजी का स्वर्गवास हुए करीब २० वर्ष हुए। आपके पश्चात आपके पुत्र लाला रामरिचपालमलजी ने इस फर्म के काम को सम्हाला। लेकिन आपका स्वर्गवास भी लाला गंगासहायजी के कुछ ही समय पश्चात् हो गया। इस समय इस फर्म के मालिक लाला राम-रिचपालमलजी के पुत्र लाला घासीरामजी हैं। आप बड़े योग्य, सज्जन और सुधरे हुए विचारों के देशभक्त पुरुष हैं।

श्रीयुत लाला घासीरामजी का दिल्ली के इन्द्रप्रस्थ वैदिक पुस्तकालय में बहुत बड़ा हाथ है। आप समाजिस्ट विचारों के सज्जन हैं। इसके अलावा आप इन्द्रप्रस्थ सेवक-मण्डली तथा आर्य्यसमाज के सदस्य हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

मेसर्स रामरिचपाल घासीराम हौज काजी T. A. Garders — इस फर्म पर सब प्रकार के लोहे का व्यापार होता है।

मेसर्स लक्ष्मणदास रामचंद

इस फर्म के मालिक दिल्ली के ही आदि निवासी है। इनके पूर्वज लोहे का व्यापार करते थे। इस फर्म की स्थापना लाला लक्ष्मणदासजी ने सन् १८८७ ई० के लगभग की। आपके पुत्र लाला रामचन्द्रजी तरुण वय के थे, अतः आप भी व्यापार संचालन में भाग देने लगे और दोनों के सम्मिलित उद्योग से फर्म को अच्छी सफलता प्राप्त हुई। लाला लक्ष्मणदासजी के स्वर्गवास के बाद फर्म का सम्पूर्ण संचालन-भार लाला रामचन्द्रजी ने सम्हाला। आपने अपने पुत्र लाला बंगालीमलजी को अपनी देखरेख में व्यापार का काम-काज सिखाया अतः आपके बाद से आपके पुत्र लाला बंगालीमलजी ही व्यापार का संचालन कर रहे हैं।

इस फर्म की स्थापना के साथ ही सन् १९८७ में लाला लक्ष्मणदासजी ने मुरादाबाद में एक लोहे का कारखाना खोला था जो आज भी अच्छी उन्नत अवस्था पर है। इस कारखाने में लोहे की ढलाई के साथ २ सभी प्रकार का लोहे का माल तैयार किया जाता है। इसका माल अच्छा और सुन्दर होता है जिसके लिए इस ओर यह काफी मशहूर हो चुका है।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

मेसर्स लक्ष्मणदास रामचन्द्र चावड़ी बाजार दिल्ली T. A. Loha	यहाँ पर लोहे का व्यापार तथा बकिंग का काम होता है।
मेसर्स—लक्ष्मणदास रामचन्द्र आयर्न फैक्टरी मुरादाबाद	यहाँ पर लोहे का एक कारखाना है और इस कारखाने के माल के अतिरिक्त अन्य प्रकार का माल भी बिक्री होता है।

चांदी सोने के व्यापारी

मेसर्स गोवर्द्धनदास शिवनारायण

इस फर्म के मालिकों का आदि निवासस्थान पंजाब है पर अनुमानतया ३ सौ वर्ष से आप लोगों का परिवार दिल्ली में ही बस गया है। आप लोग खत्री समाज के कपूर सज्जन हैं। लगभग १२५ वर्ष पूर्व इस परिवार के लाला गोवर्द्धनदासजी ने अपना व्यापार दिल्ली में आरम्भ किया था। आपने सबसे प्रथम विभिन्न प्रकार के सिक्कों के विनियम का व्यापार आरम्भ किया पर कुछ समय बाद आपने सोने चांदी का काम भी खोल दिया। आपके बाद आपके पुत्र लाला शिवनारायणजी ने व्यापार भार सम्हाला आपके समय से फर्म के व्यवसाय ने उन्नति करनी आरम्भ की। लाला शिवनारायणजी के पुत्र लाला भोलानाथजी ने अपने समय में फर्म के कार्य्यों को बहुत अधिक बढ़ा दिया। पर व्यापार संचालन कार्य को आप ३।४ वर्ष तक ही चला सके थे कि आपका स्वर्गवास हो गया। आपके बाद आपके पुत्र लाला जयनारायणजी ने फर्म का संचालन भार सम्भाला। आपने फर्म के व्यापार को बहुत उन्नत अवस्था पर पहुँचाया। आप व्यापार सम्बन्धी सचाई के लिए प्रतिष्ठा प्राप्त कर चुके थे। व्यापारी समाज में आपका अच्छा मान था। आपका स्वर्गवास संवत् १९६४ में हुआ। आपके तीन पुत्र थे जिनके नाम क्रमशः लाला अयोध्याप्रसादजी, लाला श्यामसुन्दरजी तथा लाला राधामोहनजी हैं। इनमें लाला श्यामसुन्दरजी ही व्यापार का संचालन करते हैं। आपके दोनों भाई स्वर्गवासी हो चुके हैं।

इस फर्म के वर्तमान मालिक लाला श्यामसुंदरजी तथा आपके पुत्र बाबू पद्मनाथ उर्फ मुन्नीलाल तथा आपके भाई स्व० लाला अयोध्याप्रसादजी के पुत्र बा० विश्वम्भरनाथजी और हरदयालसिंहजी तथा आपके छोटे भाई स्व० लाला राधामोहनजी के पुत्र हरिप्रसादजी, बा०जयभगवानदासजी तथा बा० रामनाथजी हैं।

इस फर्म के व्यापार का संचालन लाला श्यामसुन्दरजी करते हैं और आपके पुत्र बा० पद्मनाथजी तथा आपके भतीजे लाला विश्वम्भरनाथजी और लाला हरदयालसिंहजी व्यापार संचालन में योग देते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

मेसर्स—गोवर्द्धनदास शिवनारायण कटरा नील दिल्ली	यह फर्म चाँदी वालों की कोठी के नाम से प्रख्यात है। यहाँ सोने चाँदी की थोक बिक्री और बैंकिंग का व्यवसाय होता है।
मेसर्स भोलानाथ जयनारायण गणेश बाजार क्लॉथ मार्केट दिल्ली	इस फर्म पर विलायती कपड़े का थोक व्यापार होता है।

मेसर्स रतनचन्द ज्वालानाथ

इस फर्म की स्थापना तथा उन्नति लाला ज्वालानाथजी के हाथों से हुई। आपका स्वर्गवास संवत् १९६८ में हो गया। आपके पुत्र लाला ज्योतिप्रसादजी का स्वर्गवास आपकी मौजूदगी ही में हो गया था। इस समय लाला ज्योतिप्रसादजी के पुत्र लाला रामप्रसादजी हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है :—

रतन चन्द ज्वालानाथ दरीबा T. A. Ratan	यहाँ पर चाँदी, सोना जेवर और कमीशन एजन्सी का काम होता है।

मेसर्स रामसिंह बुलाखीदास

यह फर्म संवत् १९३८ में सेठ रामसिंहजी द्वारा स्थापित हुई। आपका मूल निवास-स्थान रेवाड़ी (गुड़गाँव) का है। आप अग्रवाल वैश्य समाज के जैनी सज्जन हैं। शुरू से ही इस फर्म पर चाँदी सोना, हुँडी, चिट्ठी आदि का काम होता चला आ रहा है।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक लाला रामसिंहजी तथा आपके पुत्र बा० बुलाखीदासजी हैं। लाला रामसिंहजी सज्जन व्यक्ति हैं। बा० बुलाखीदासजी अपने पिताजी के साथ व्यापार में सहयोग देते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है :—

देहली—मेसर्स रामसिंह बुलाखीदास चाँदनी चौक T. N. 5371 Delhi	यहाँ बैंकिंग चाँदी, सोना तथा गिरवी का काम होता है। थोड़ा काम जवाहरात का भी होता है।

मेसर्स हुकुमचन्द जगाधरमल जैन

इस फर्म के मालिक गोहाना (जि० रोहतक) के रहने वाले हैं। आप लोग जैन अग्रवाल जाति के सज्जन हैं। इस फर्म की स्थापना लाला हुकुमचन्दजी जैन ने दिल्ली में सम्वत् १९४९ में की थी। इस फर्म पर आरम्भ से ही सोने चाँदी का व्यवसाय होता चला आ रहा है। इस फर्म की एक दूसरी कोठी और भी है जिसपर कपड़े का व्यापार होता है। कपड़े का व्यापार यह फर्म कमीशन एजण्ट के रूप में ही करती है। इसके मालिकों के आदि निवास स्थान पर अच्छी जमींदारी है जहाँ बैंकिंग का काम भी होता है। लाला हुकुमचन्दजी जैन के ४ पुत्र हैं जिनके नाम क्रमशः लाला महबूब सिंहजी, लाला जगाधरमलजी, लाला अमृतलालजी और लाला उलफतरामजी हैं।

लाला अमृतलालजी अपने आदि निवास-स्थान गोहाना में ही रहते हैं जहाँ आप आनरेरी मजिस्ट्रेट भी हैं साथ ही लैण्ड लार्डस् एण्ड बैंकिंग का काम देखते हैं। शेष तीनों भाई दिल्ली रहते हैं और व्यापार संचालन का कार्य्य करते हैं। लाला हुकुमचन्दजी जैन व्यापार संचालन का कार्य अपने पुत्रों को सौंप शान्ति लाभ करते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स हुकुमचन्द जगाधरमल चाँदनी चौक दिल्ली	यहाँ सोना चाँदी तथा जेवरात और बैंकिंग का व्यवसाय होता है।
मेसर्स महबूबसिंह उलफतराम दरीबा कलां दिल्ली	यहाँ सभी प्रकार के कपड़े की आढ़त का व्यापार होता है।
मेसर्स हुकुमचन्द अमृतलाल गोहाना (रोहतक)	यहाँ बैंकिंग और जमींदारी का काम होता है।

किराने और गल्ले के व्यापारी

मेसर्स अमोलकचंद मेवाराम

इस फर्म के वर्तमान मालिक बा० शांतिलालजी हैं। इस फर्म की और भी स्थानों पर शाखाएँ हैं जिनका विस्तृत परिचय इसी ग्रंथ में खुरजा के पोर्शन में दिया गया है। यहाँ यह फर्म महेश्वरीदास के कटरे मे बैंकिंग और आढ़त का व्यापार करती है। इसका तार का पता "Raniwala" है।

मेसर्स गुलाबसिंह गोपालराय

इस फर्म के मालिक देहली के प्रसिद्ध आरोड़ा खत्री समाज के सज्जन हैं। इसका स्थापन लाला गोपालरायजी के द्वारा हुआ।

आपके पश्चात् इस फर्म के व्यापार का संचालन आपके पुत्र लाला अम्बाप्रसादजी ने सम्हाला। वर्तमान में आप ही इस फर्म के मालिक हैं। आप स्थानीय किराना कमेटी के प्रेसिडेण्ट हैं।

शहर के अन्दर और बाहर शिक्षा-सम्बन्धी और धार्मिक कई संस्थाओं में आपने उदारता-पूर्वक सहायताएँ प्रदान की हैं। आप ने करीब २०) हजार की लागत से एक सुन्दर मन्दिर बनवाया है। इसके प्रबंध के लिए स्थायी इन्तजाम कर दिया है। आपने और भी कई संस्थाओं को रकमें प्रदान की हैं जिनमें से किंग एडवर्ड मेमोरियल फंड और विक्टोरिया जनाना हास्पिटल को रकमें विशेष हैं। आप ने करीब ८००००) की लागत से संस्कृत विक्टोरिया जुबिली हाय स्कूल की इमारत बनवाई है।

वार और दूसरी पब्लिक सर्विस से प्रसन्न होकर भारत-सरकार ने आप को प्रथम राय-साहब की और फिर रायबहादुर की सम्मानसूचक उपाधि से सम्मानित किया है।

आपके इस समय एक पुत्र श्रीयुत शिवशङ्करजी हैं, आप भी व्यापार में भाग लेते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

देहली—गुलाबसिंह गोपालराय
तमाखू कटरा
T. A. Gopal — यहाँ सब प्रकार के किराने का बहुत बड़ा व्यापार होता है। कमीशन का काम भी यह फर्म करती है।

देहली—मेसर्स अम्बाप्रसाद-जाधवजी एण्ड को० तमाखू वाला	यहाँ रंग का बहुत बड़ा व्यापार होता है। इस फर्म में सेठ जाधवजी का साभा है।

मेसर्स गनेशीलाल भगवानदास

इस फर्म का विस्तृत परिचय मेसर्स गिरधारी लाल घासीराम के नाम से हमारे इस ग्रन्थ के दूसरे भाग के कलकत्ता विभाग में दिया गया है। जहाँ कि इस फर्म का हेड-आफिस है।

यहाँ का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

देहली—मेसर्स गनेशीलाल भगवानदास नया बाजार—यहाँ पर गल्ले का व्यापार तथा कमीशन एजन्सी का काम होता है।

मेसर्स जमनादास शिवप्रताप धूत

इस फर्म का विस्तृत परिचय इस ग्रन्थ के प्रथम भाग में राजपूताना विभाग के पृष्ठ ९८ पर दिया गया है। देहली फर्म का परिचय इस प्रकार है—

देहली—मेसर्स जमनादास शिवप्रताप नया बाजार—इस फर्म पर बैंकिंग तथा सब प्रकार की कमीशन एजन्सी का काम होता है।

मेसर्स तुलसीदास मेघराज

इस फर्म का विस्तृत परिचय इस ग्रन्थ के दूसरे भाग में कलकत्ता विभाग के पृष्ठ ३११-१२ पर दिया गया है। देहली दुकान का परिचय इस प्रकार है।

देहली—मेसर्स तुलसीदास मेघराज नया बाजार (T. A. Prkash) यहाँ पर गनी और शक्कर का व्यापार तथा बैंकिंग और जमीदारी का काम होता है।

मेसर्स भोलाराम कुन्दनमल

इस फर्म का विस्तृत परिचय चित्र सहित इस ग्रन्थ के दूसरे भाग में कलकत्ता-विभाग के पृष्ठ ३१६ पर दिया गया है। देहली दुकान का परिचय इस प्रकार है—

दिल्ली—मेसर्स भोलाराम कुन्दनमल नया बाजार—यहाँ पर आढ़त तथा बोरे का व्यापार और गल्ले का काम होता है।

मेसर्स रामगोपाल परसराम

इस फर्म के मालिकों का मूल निवास-स्थान बेरी में है। आप अग्रवाल जाति के गोयल गौत्रीय सज्जन हैं। दिल्ली में यह फर्म बहुत पुराना है। दिल्ली में इस फर्म की स्थापना सेठ रामगोपालजी ने की। सेठ रामगोपालजी के तीन पुत्र थे। उनमें से यह फर्म सेठ परसरामजी के वंशजों का है।

इस समय इस फर्म के मालिक लाला लक्ष्मीनारायणजी, रामस्वरूपदासजी, मनोहरलालजी, रामेश्वरदासजी और ब्रजकिशोरजी हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

बेरी—मेसर्स धनीराम रामगोपाल	यहाँ पर बैंकिंग का काम होता है।
दिल्ली—मेसर्स रामगोपाल परसराम नया बाजार T. A. Biharijee	इस फर्म पर गल्ले का व्यापार और कमीशन एजन्सी का काम होता है।
रोहतक—मेसर्स परसराम लक्ष्मीनारायण	यहाँ पर भी गल्ला और कमीशन एजन्सी का काम होता है।
हापुड़—मेसर्स रामगोपाल रामेश्वरदास	गल्ला और कमीशन एजन्सी का काम होता है।
कलकत्ता—रामगोपाल लक्ष्मीनारायण २३ बड़तल्ला T. A. Padmanabha	यहाँ पर गल्ला और आढ़त काम होता है।

ब्यावर—मेसर्स रामगोपाल रामस्वरूपदास—गल्ला और आढ़त का काम होता है।

मेसर्स हेतराम गुलाबराय

इस फर्म का विस्तृत परिचय मेसर्स शिवदयालमल बख्तावरमल के नाम से ग्रन्थ के प्रथम भाग में बम्बई विभाग के पृष्ठ १३४ पर दिया गया है। देहली दुकान का परिचय इस प्रकार है—

देहली—मेसर्स हेतराम गुलाबराम नया बाजार—बैंकिंग, हुण्डी, चिट्ठी तथा गल्ला और कपड़े की कमीशन एजन्सी का काम होता है। इस फर्म के मालिक सेठ बख्तावरमलजी हैं।

वैद्य और हकीम

दवाखाना हिन्दुस्तानी

भारतवर्ष के सुप्रसिद्ध हकीम और राष्ट्रीय नेता मसीहुलमुल्क हकीम हाफिज महम्मद अजमल खाँ साहब, जिनको भारत का प्रायः सारा शिक्षित समुदाय जानता है, ने सन् १९०३ में यूनानी हिकमत की उन्नति और सर्वसाधारण की उन्नति के लिए इस प्रसिद्ध दवाखाने की नींव डाली।

चूँकि इस दवाखाने की नींव डालने में हकीम साहब का मक़सद बहुत ऊँचा और अनुकरणीय था, इसलिए इसकी तरक्की भी दिन बदिन बढ़ती गई। और आज तो यह हालत है कि हिन्दुस्तान के बड़े २ वैद्य, हकीम और डाक्टर तथा सर्वसाधारण जनता आँखें मूँदकर इस दवाखाने की बनाई हुई दवाइयों को इस्तेमाल करते हैं और फायदा उठाते हैं।

यह दवाखाना देहली में एक बहुत बड़ी इमारत में स्थापित है। इसमें करीब १५० व्यक्ति बकायदा काम करते हैं। जिनकी तनख्वाह साल भर में करीब पचास हजार रुपया बाँटी जाती है। इस समय इस दवाखाने की हैसियत करीब ५० लाख की कूती जाती है। इसके अन्तर्गत होने वाले ट्रान्जेक्शन का अनुमान केवल इसी बात से किया जा सकता है कि बीमारो और खरीददारों के जो खत आते हैं, उनकी औसत तादाद साल भर में करीब एक लाख के होती है। और करीब पचास हजार पार्सल साल भर में रवाना होते हैं। इसके सिवा मुकामी खरीददारो की संख्या करीब डेढ़ लाख से कम नहीं होती।

हम ऊपर कह आये हैं कि यह दवाखाना हकीम अजमल खाँ साहब ने किसी खास स्वार्थ भावना से प्रेरित होकर नहीं खोला था। प्रत्युत उनका उद्देश्य इस दवाखाने के द्वारा मृतप्राय यूनानी-वैद्यक को जीवित करना था। फलस्वरूप जब इस दवाखाने से अच्छी आमदनी होने लगी तब आपने बहुत प्रयत्न करके देहली में यूनानी और तिब्बी कॉलेज की स्थापना की और इस दवाखाने की कुल आमदनी इस कॉलेज के खर्चे के लिए दान दे दी। फलतः इस समय इसकी कुल आमदनी उक्त कॉलेज को दे दी जाती है।

यह कॉलेज सारे भारतवर्ष में अपनी शान का एक ही है। इसमें यूनानी चिकित्सा पद्धति तथा वैद्यक की ऊँची से ऊँची तालीम दी जाती है।

खेद है कि हकीम अजमल खाँ साहब समय से पहले ही जन्नत नशीन होगये। इस समय आपके पुत्र हकीम मौलवी महम्मद जामील खाँ साहब हैं। आप भी बड़े योग्य और दानिशमन्द हैं। आपने बहुत योग्यता के साथ सब कामों को सम्हाल लिया है।

इस दवाखाने में सब प्रकार की उम्दा दवाइयाँ, जैसे अर्क, शरबत, खमीरें, माजून, गोलियाँ, मुरब्बे, भस्में तथा इनके मेल से तैय्यार की हुई औषधियाँ बहुत बढ़िया रूप में मिलती हैं।

हमदर्द दवाखाना

लगभग २५ साल पहले हाफ़िज अब्दुल हमीद साहब ने इस दवाखाने को शुद्ध और उत्तम यूनानी दवा तैयार कर उनका देश में प्रचार करने के उद्देश्य से स्थापित किया। तब से यह दवाखाना बराबर देश की सेवा करते हुए उन्नति कर रहा है और देश तथा विदेश में इसकी प्रसिद्धि हो रही है। इसके स्थापित होने के थोड़े ही दिनों बाद इसकी ईमानदारी तथा सचाई से प्रसन्न होकर दिल्ली के रईस तथा फर्स्ट क्लास मजिस्ट्रेट स्व० हकीम रजीउद्दीन अहमद खाँ साहब बहादुर ने इस दवाखाने को अपने संरक्षण में ले लिया और अच्छे २ नुस्खों द्वारा इसका भंडार भरते रहे। अब उनके बाद उनके सुयोग्य पुत्र हकीम नासिरुद्दीन अहमद खाँ साहब बहादुर रईस तथा फर्स्ट क्लास मजिस्ट्रेट की देख रेख में यह दवाखाना दिन २ उन्नति कर रहा है और उनके अनुभूत नुस्खों द्वारा इसका भंडार भर रहा है।

इस दवाखाने में सब प्रकार की यूनानी दवाएँ बहुत बढ़िया और अच्छी मिलती हैं।

बैंक

अलहाबाद बैङ्क लिमिटेड चान्दनी चौक
इम्पीरियल बैंक ऑफ इण्डिया लि० कोर्टरोड देहली ब्रान्च
कोआपरेटिव्ह बैङ्क लिमिटेड गारस्टन वेस्टन रोड
ग्रिनले एण्ड कम्पनी लिमिटेड चाँदनी चौक
ग्रेण्डली एण्ड कम्पनी चाँदनी चौक
चार्टर्ड बैंक आफ इण्डिया, चायना, आस्ट्रेलिया चाँदनी चौक
थामस कुक एण्ड सन्स काश्मीरी गेट
नेशनल बैंक ऑफ इण्डिया लिमिटेड चाँदनी चौक
पीपल्स बैंक ऑफ नादर्न इण्डिया चाँदनी चौक
पंजाब नेशनल बैंक लि० चाँदनी चौक
मर्केंटाइल बैंक ऑफ इण्डिया लि० चाँदनी चौक
लायड बैंक लिमिटेड कोर्टरोड
वेन्यूस इन्स्यूरेन्स बैंक लि० चाँदनी चौक
सेण्ट्रल बैंक ऑफ इण्डिया लि० चाँदनी चौक

बैंकर्स

मेसर्स ईश्वरीदास बनारसीदास
" कुँवरसिंह ज्ञानचन्द खारी बावड़ी
" कल्लूमल हीराचन्द सीताराम बाजार
" छुन्नामल एण्ड सन्स चाँदनी चौक
" दीवानचन्द एण्ड कम्पनी
" दौलतराम श्रीराम सीताराम बाजार
" नन्नेमल जानकीदास चावड़ी बाजार
" बालाप्रसाद अलोपीप्रसाद धर्मपुरा

मेसर्स ब्रजमोहनदास लक्ष्मीनारायण कादरानील
,, मतवालामल ठाकुरदास
,, लाला मदनमोहनलाल कूचामाईदास
,, लालासुल्तानसिंह रायबहादुर कश्मीरी गेट

इन्स्यूरेन्स कम्पनीज

एगलस इन्स्यूरेन्स कम्पनी लि० चान्दनी चौक
एम्पायर ऑफ इण्डिया लाइफइन्स्यूरंस कम्पनी चाँदनी चौक
ओरियण्टल गवर्नमेण्ट सिक्यूरिटीज लाइफ इन्स्यूरेन्स कम्पनी लि० चाँदनीचौक
गोवर्द्धन ब्रदर्स लि० इन्स्यूरंस डिपार्टमेण्ट अलीपुरारोड
ग्रेट ईस्टर्न लाईफ इन्स्यूरेन्स कम्पनी लिमिटेड चाँदनीचौक
ट्रिपिकल इन्स्यूरेंस कम्पनी चाँदनी चौक
लीवरपूल इन्स्यूरंस कम्पनी चाँदनी चौक
वेनस इन्स्यूरंस कम्पनी चाँदनी चौक
सिविल इन्स्यूरेन्स कम्पनी लि० इम्पीरियल बैंक बिल्डिंग
हिन्दुस्थानी कोआपरेटिव्ह इन्स्यूरेन्ससोसायटी लि० चाँदनी चौक
हिन्दुस्थानी बीमा कम्पनी जुमामस्जिद

ज्वैलर्स

मेसर्स इण्डियन आर्ट पैलेस कश्मीरीगेट
,, कानजीमल एण्ड सन्स चाँदनी चौक
,, कुक एण्ड वेल वेर्ड काश्मीरीगेट
,, खूबचन्द इन्द्रचन्द्र माली वाड़ा
मेसर्स इण्डियन ज्वैलरी ट्रेडिंग कम्पनी चाँदनी चौक
,, नवलकिशोर खैरातीलाल मालीबाड़ा
,, फकीरचन्द रघुनाथदास जुम्मामस्जिद (आइव्हरी मर्चेण्ट)
,, बाबूमल एण्ड कम्पनी कश्मीरीगेट
,, बनारसीदास छोटेमल जुम्मामस्जिद
,, मन्नालाल श्यामसुन्दर दरीबा
,, शादीराम गोकुलचन्द चाँदनी चौक
,, सूरज लाल एण्ड सन्स
,, रामचन्द हजारीमल चाँदनी चौक

आयव्हरी मर्चेण्ट

आर्ट पैलेस कश्मीरीगेट
फकीरचन्द रघुनाथदास जुम्मामस्जिद

सिल्क मर्चेण्ट्स

मेसर्स पोहमल ब्रदर्स चाँदनी चौक
,, रिझूमल ब्रदर्स ,,
,, बद्रीदास भगत ,,
,, लीलाराम एण्ड सन्स कश्मीरीगेट
,, वसियामल आसूमल

पैट्रोल एजण्ट, मोटर एण्ड मोटर गुड्स डीलर्स

अइमिला ओटामवाइल कम्पनी काश्मीरी गेट
अमेरिकन ओटोमवाइल कम्पनी क्वीन्स रोड
एलेनवेरी एण्ड कम्पनी न्यूइफरिन हाउस
एक्सेलसियर मोटर वर्क्स कश्मीरी गेट
ईस्टर्न मोटर कम्पनी कश्मीरी गेट

कॉमर्शियल मोटर वर्क्स लिमिटेड क्वीन्स रोड
ग्वालियर एण्ड नार्दर्न इण्डिया ट्रान्सपोर्ट कम्पनी लि०
गुड इयर टायर्स एण्ड रबर कम्पनी लि०
जैन मोटरकार कम्पनी क्वीन्स रोड
डनलप रबर कम्पनी इण्डिया लिमिटेड मोरी गेट
देहली मोटर एण्ड फरनीचर वर्क मोरी गेट
नासला मोटर वर्क्स क्वीन्स रोड
प्यारेलाल एण्ड सन्स कश्मीरी गेट
पायोनियर मोटर वर्क्स क्वीन्स रोड
फोनसेका एण्ड कम्पनी कश्मीरी गेट
फोर्ड ओटोमवाइल इण्डिया लि०
फ्रेंच मोटरकार कम्पनी लि० लोटहिन रोड
फ्रेण्ड मोटर स्टोअर्स कश्मीरी गेट
ब्रह्मा मोटर कम्पनी फोर्ड एजण्ट क्वीन्स रोड
ब्रिटिश मोटरकार कम्पनी लि० कश्मीरी गेट
वाराकर एण्ड होयट लि० कश्मीरी गेट

ऑयर्न मर्चेण्ट्स

मेसर्स छोटेलाल घासीराम सिरकी वालान
,, जवाहरमल नन्नेमल रायबहादुर हौज काजी
,, जे० एम० चिमनलाल अग्रवाल चावड़ी बाजार
,, देहली आयर्न सिण्डीकेट अजमेर गेट
,, नन्नेमल जानकीदास चावड़ी बाजार
,, पी० मदनलाल एण्ड को० चावड़ी बाजार
,, प्यारेलाल माधोराम चावड़ी बाजार
,, भानामल गुलजारीमल चावड़ी बाजार
,, माधोराम बुधसेन चावड़ी बाजार
मेसर्स रामरिछपालमल घासीराम चावड़ी बाजार
,, लक्ष्मणदास रामचन्द चावड़ी बाजार

फरनीचर मर्चेण्ट्स

ईस्टर्न फर्नीचर कम्पनी अलीपुररोड
ऊमर फर्नीचर हाऊस डफरिन ब्रिज
फरनीचर सर्विस कम्पनी कश्मीरी गेट
बेनीप्रसाद एण्ड कम्पनी कश्मीरी गेट
मोहम्मद ऊमर एण्ड कम्पनी मोरी गेट
एम० हयात ब्रदर्स कनीघर प्लेस
रामकिशन एण्ड कम्पनी मोरी गेट
रिलायन्स ट्रेडिग कम्पनी कश्मीरी गेट
एल० गोपीनाथ न्यूकण्टूनमेण्ट

फैक्टरीज़ एण्डस्ट्रीज़

खालसा स्पिनिंग एण्ड वीविंग मिल्स लि०
गोयनका स्पनिंग मिल्स लि०
दिल्ली क्लॉथ जनरल मिल्स लि०
बिड़ला कॉटन मिल्स लि०
मोहता फैल्ड कैप मैन्यूफैक्चरिंगफैक्टरी
ग्वालियर एण्ड नार्दर्न इण्डिया मोटर वर्क्स
पावर हाऊस किंग्सवे
कैसिना पावर हाउस
ट्रामवे एण्ड इलेक्ट्रिक वर्क्स
दिल्ली बिस्कुट फैक्टरी
रामकृष्ण राम फ्लोअर मिल
विशेषकर्म फ्लोअर मिल्स
माडन फ्लोअर मिल्स
गनेश फ्लोअर मिल्स

अयोध्याप्रसाद आईस फैक्टरी
प्रभा आईस फैक्टरी
इम्पीरियल ऑइल मिल्स

मशीनरी मर्चेण्ट्स

इण्डो यूरोपियन मशीनरी मार्ट चाँदनी चौक
पंजाब ऑइल एण्ड मिशनरी स्टोअर्स वर्न वेस्टन रोड
मिलजिन एण्ड प्रेस स्टोअर सप्लायर चावड़ी बाजार
मिलिंग ट्रेडिंग कम्पनी अजमेरी गेट
रतनजी भगवानजी मिल जिन स्टोअर सप्लायर चावड़ी बाजार

साइकल डीलर्स

इम्पीरियल साइकल एण्ड मोटर कम्पनी काश्मीरी गेट
इ० एस० प्यारेलाल काश्मीरी गेट
एन० एम० किशन एण्ड कम्पनी जुम्मा मस्जिद

कोल मर्चेण्ट्स

अण्डलेई ब्रदर्स लायड बैंक बिल्डिंग
गैलण्डर्स आरबुथनाट एण्ड कं० इम्पीरियल बैंक बिल्डिंग
पी० मुकरजी एण्ड कम्पनी मोरी गेट
ब्रिटानिया कोल कम्पनी पंचकुइया रोड
बर्ड एण्ड कम्पनी इम्पीरियल बैंक बिल्डिंग
रामकिशन प्रेमचन्द जैन अजमेरी गेट

दाँत और चश्मेवाले

ए० पी० माथुर काश्मीरी गेट
कर्ल्टन एण्ड विलियम स्मिथ न्यू देहली
सी० आर० जैन एण्ड कम्पनी चाँदनी चौक
डाक्टर केदारनाथ अमृतनिवास न्यू देहली
जैन एण्ड कम्पनी चाँदनी चौक
एफ० एल० होटनफोक्स न्यू देहली
डाक्टर रघुनाथ राजपुर रोड
लायरेन्स एण्ड मेयो ऑप्टीसियंस काश्मीरी गेट

पत्थर के व्यापारी

देहली स्टोन ड्रेसिंग कम्पनी न्यू देहली
दीवानचन्द एण्ड कम्पनी न्यू देहली
महावीरप्रसाद एण्ड सन्स चावड़ी बाजार
राधाकिशन एण्ड सन्स अजमेरी गेट
एस० एन० सुदर्शन एण्ड कम्पनी अजमेरी गेट

काश्मीरी शाल के व्यापारी

मेसर्स अमीनचन्द जीवनराम जौहरी बाजार
,, काशीराम केशोराम चाँदनी चौक
,, जमनादास खन्ना ,, ,,
,, नगीनचन्द शौरीलाल ,, ,,
,, श्यामदास मनीराम ,, ,,

जरी गोटा किनारी के व्यापारी

मेसर्स कन्हैयालाल किशनचन्द किनारी बाजार
,, काशीनाथ बालाप्रसाद ,,
,, गुलाबसिंह बुलाकीदास ,,
,, निहालचन्द ज्योतिप्रसाद ,,
,, विशम्भरनाथ श्यामलाल ,,
,, शम्भूनाथ नन्दूमल

फोटोग्राफर्स

ए० आर० दत्त न्यू कर्जन हाउस
टी० पी० पाल काश्मीरी गेट
फोटो सर्विस कम्पनी काश्मीरी गेट
रॉयल फोटोग्राफिक कम्पनी कश्मीरी गेट

जनरल मर्चेण्ट्स

मेसर्स अब्दुलगनी एण्ड सन्स कश्मीरी गेट
" अब्दुल वाहद महम्मद सैयद सदर बाजार
" करम इलाही अब्दुल रहमान हाजी सदर
" जीवनलाल एण्ड कम्पनी सिविल लाइन
" फ़जल इलाही एण्ड कम्पनी कुतुब रोड
" वैजनाथ मोहनलाल चांदनी चौक
" भोलाराम एण्ड सन्स मोरीगेट (वाईन)
" महबूब बख्श एण्ड सन्स चांदनी चौक
" महबूब बख्श रफीउद्दीन हाजी सदर
" एस. आर. स्टोअर्स वयर्ड रोड
" एस० आर० रामचन्द्र एण्ड कम्पनी इर्गटन रोड़
" वेस्टर्न स्टोअर्स कश्मीरी गेट,— यूसूफ स्टोअर्स वयर्ड रोड़
" एस० महम्मद इसाव सदर बाजार
" एस० महम्मद सैय्यद एण्ड कम्पनी सदर
" एस० नूर इलाही एण्ड कं० सदर बाजार
" एस० एच० महम्मद अमीन अब्दुल कालीद सदर बाजार
" साहाबुद्दीन महम्मद इब्राहिम फतहपुरी
" सरवदयाल एण्ड कम्पनी केनिंग प्लेस

स्किन मर्चेण्ट्स

मेसर्स अब्दुल रहीम महम्मद सदीक सब्जी मंडी
" बी० एन० वार्फ एण्ड कम्पनी वर्न वेस्टन रोड
" महम्मद रफीद एण्ड ब्रदर्स सदर बाजार
" सामजी मल सईफुद्दीन एण्ड कम्पनी नबीकरीम

कैमिस्ट एण्ड ड्रगिस्ट

मेसर्स एहसान एहसान एण्ड कम्पनी चांदनी चौक
" इ० ए० नैल एण्ड कम्पनी काश्मीरी गेट
" इ० प्लोमेर एण्ड कम्पनी कश्मीरी गेट
" कृपाराम एण्ड सन्स ६ वईदी रोड
" केपिट फार्मेसी फतहपुरी
" छज्जूराम एण्ड सन्स न्यू देहली
" छज्जू राम एण्ड सन्स बईदी रोड
" पायोनिअर केमिकल कम्पनी कश्मीरी गेट
" एच० सी सन एण्ड कम्पनी चादनी चौक
" हेल्थ एण्ड कम्पनी चांदनी चौक

पेपर मर्चेण्ट्स

जे० एम० चिमनलाल एण्ड को० एस्लेनेड रोड
बंगाल पेपर मिल्स कम्पनी चावड़ी बाजार
घूमीमल धर्मदास चावड़ी बाजार

प्रिण्टिंग प्रेस

अर्जुन प्रेस श्रद्धानन्द बाजार
अजब प्रेस दरिया गंज
ऑक्सफोर्ड प्रिण्टिग वर्क्स काश्मीरी गेट
आई० एम० एच० प्रेस चॉदनी चौक
गवर्नमेण्ट आफ इण्डिया प्रेस,
देहली प्रिण्टिंग वर्क्स चावड़ी बाजार
नारायण प्रिण्टिंग वर्क्स सदर बाजार
पी० एण्ड ओ० प्रिण्टिंग प्रेस मोरी गेट
महारथी प्रेस चांदनी चौक
मॉडल प्रेस वर्न वेस्टन रोड
मुजद्दवाई प्रेस चूरीवालान
रतन प्रेस कूचाघासीराम
लाहौरी प्रिण्टिंग प्रेस चांदनी चौक
हिन्दुस्तान टाईम्स प्रेस वर्नवेस्टन रोड

संयुक्त-प्रान्त

UNITED PROVINCES.

आगरा

ऐतिहासिक परिचय—

आगरा प्राचीन शहर है। किन्तु मुसलमानों के आने और आक्रमण करने के पूर्व का आगरा सम्बन्धी इतिहास ऐसा अन्धकाराच्छन्न है कि जानने का कोई उपाय नहीं। मुसलमानों में से लोदी वंशवाले ही प्रथम आगरे में आ बसे थे। सिकन्दर लोदी सन् १५१५ ई० में आगरे में मृत्यु कवलित हुए। सिकन्द्रा के समीप बारादरी प्रासाद उन्होंने बनाया था। बाबर ने यहाँ यमुना के पूर्व तट में बाग और प्रासाद का निर्माण कराया था सही, पर उनका चिन्ह तक अब नहीं रहा है। बाबर सन् १५६८ ई० में फतहपुर सिकरी में जाने के पूर्व तक आगरे में थे। सन् १६०५ ई० मे उनकी आगरे में मृत्यु हुई। शाहजहाँ ने ५ वर्ष आगरे में बसकर अकबर के दुर्ग और राजप्रासाद की मरम्मत, हेरफेर और वृद्धि की तथा भारत की सर्वोत्तम अट्टालिका ताजमहल का निर्माण कराया। उस समय आगरे का प्रताप उन्नति की चरम सीमा पर पहुँच गया था। इसके पश्चात् उन्होने दिल्ली की रचना की। किन्तु राजधानी को पूरी तौर पर दिल्ली में उठा ले जाने के पहिले ही वे अपने पुत्र औरङ्गजेब के द्वारा आगरे में ही कैद कर लिए गये। आगरे में ही उनका देहान्त हो गया। उसी समय से आगरे की अवनति आरम्भ हुई। जाट, मराठे, मुसलमान, जिनसे बना उन्होंने ही आगरे को हस्तगत किया। अन्त में सन् १८०३ ई० में आगरा अङ्गरेजो के अधिकार में आया।

दर्शनीय स्थान—

आगरा सौन्दर्य्यपुरी है। आगरे को उतना सुन्दर शाहजहाँ ने ही बनाया। शाहजहाँ के दिनों की अट्टालिकाओं में निम्नलिखित प्रसिद्ध हैं:—

(१) ताजमहल।

(२) जामा मसजिद।

(३) दुर्गाभ्यन्तर की मोती मसजिद, दीवाने-आम, दीवाने-खास, खासमहल।

अकबर ने सन् १५६६ ई० में सलीम शाह के दुर्ग का पुनर्गठन आरम्भ किया। दुर्ग बड़े भारी आकार का है। दुर्ग के अन्दर ही मसजिद और प्रासाद हैं। दिल्ली दरवाजे से आगे बढ़

खाई को पार करने के अनन्तर हाथीपुल से निकलना पड़ता है। हाथी पुल से मोती मसजिद में जाना होता है। यदि कहा जाय, कि इस मसजिद का सौन्दर्य्य अतुलनीय है, तो अतिशयोक्ति नहीं होती। मसजिद के तीन गुम्बज जिस तरह से स्थापित किये गये हैं उससे उसकी अपार शोभा खिल उठी है। मसजिद के कारनिस पर सङ्गमरमर के साथ संगमूसे का जैसा जोड़ खपाया गया है, उसकी रमणीकता भी उल्लेख योग्य है।

मीना बाजार के बीच से दीवाने-आम में जाना होता है। मीनाबाजार पुराना है। उसमें वणिक मूल्यवान सामग्रियों को सजाकर बैठे रहते और दरबारियों की दृष्टि आकर्षित कर लेते थे। दीवाने आम के विशाल कमरे में खम्भों की तीन कतारों पर छत है। कमरा लाल रङ्ग के बलुए पत्थर का है। पत्थर पर गारे के साथ चूने के मेल का पालिस खूब चमकाया गया है। दिल्ली की तरह आगरे में भी इस कमरे की एक बगल में बादशाह का सिंहासन विराजता था। उसके पीछे से जनाने में जाने का पथ निर्दिष्ट था। सिंहासन के बायी और दायीं ओर के कमरे पत्थर की जालीदार खिड़कियों के हैं। इन्हीं खिड़कियों से बेगमें दरबार देखती थीं। दीवाने आम के सामने एक विशाल हौज एक ही पत्थर को खोदकर बनाया गया है, जिसके भीतर और बाहर सोपानावली है। यह जहाँगीर हौज कहलाता है।

दीवानेआम से जनाने में जाते समय दूसरे मीनाबाजार के बीच से जाना होता था। इस बाजार की चीजो को बेगमे खरीदती थीं। वे प्रासाद की अटारी पर बैठ कर वस्तुओं को देखतीं और पसन्द करती थीं। समय-समय पर इस मीनाबाजार में मेला लगता था। उस समय रूपवतियो की रूप-छटा चारों ओर छलकने लगती थी। बेचने वालियाँ खरीदने वालियो की तरह रूपवती होने के कारण रूप ही रूप का हाट लग जाता था। रूपवती से रूपवती बड़ी धूम से भाव मोलाई करने में डट जाती थी। कभी-कभी बादशाह भी उस धुन मे भिड़ जाते थे। मानो दो पैसे अधिक देने से सम्पत्ति लुट जायेगी। इस तरह की घटनाएं होती रहती थीं।

इसके बाद चित्तौड़ विजय के स्मृतिचिन्ह रूपी चित्तौड़ दरवाजे से मच्छी भवन में जाना होता है। यह पहिले बागीचा था, जिसमें कहीं-कही फव्वारे और नयन मोहने वाली सुन्दर जीवित मछ्लियो के जलभरे काँच-पात्र थे। इन सामग्रियों को लूट कर जाटों ने डीग के राजप्रासाद में रखने के लिये सूरजमल के हवाले किया था और गवर्नर जनरल लार्ड बेंटिंग ने भी इसके तथा अन्य अंशों के जालीदार सङ्गमरमर खण्डो को लेकर नीलाम में बेच दिया था। केवल समुचित मूल्य न मिलने से ही ताजमहल बिक जाने से बच गया।

नाजीना मसजिद औरङ्गजेब ने बनाई। उन्होने बेगमों के लिये इसको बनाने में मोती मसजिद की नकल उतारी।

आगरे का दीवानेखास दिल्ली के दीवानेखास ही की तरह सुन्दर है। इसमें नाना वर्णों के पत्थरों को जड़कर जो फलों की रचना की गयी है, वह असामान्य शिल्पकुशलता की द्योतक है। दीवानेखास के सामने चबूतरे पर दो सिंहासन बिछे हुए हैं। वे दोनों जहांगीर के कहलाते हैं। इनके बाद ही हम्माम है।

दीवानेखास के पिछवाड़े जो फाटक है, उससे नदी की ओर के दोमंखिले गृह में जाना होता है, जिसका नाम मसान बुर्ज है। यह गृह नूरजहाँ बेगम का था। आगे मुमताजमहल इसी गृह में रहती थी और इसी गृह में कैद रह कर ताजमहल को देखते देखते सम्राट शाहजहाँ का देहान्त हो गया था। जो पहिले हिन्दुस्थान मे सम्राट थे, उनके पास उस कैद से मुहामुक्ति के राज्य में जाते समय शाहजादी जहाँनारा को छोड़ कर और कोई नहीं था। उस समय दिवसान्त का सूर्य्य ताजमहल के सफेद कलेवर को किरणावली से मानों नहला रहा था। बादशाह प्रियतमा की उस समाधि को एकटक निरीक्षण करते थे। धीरे धीरे दिन का आलोक अन्धकार के ग्रास में घुस कर अदृश्य हो गया। बादशाह ने अपने अपराधों के लिये विधाता से क्षमा माँग कर तथा कई वाक्यो से पुत्री को ढाड़स देकर अन्तिम सांस को छोड़ा। उनके भी जीवन का आलोक बुझ गया।

खास महल जनाने के एक भाग मे है। उसके सामने अंगूरी बाग पूर्वकाल के मुगलाई नमूने का है।

जहाँगिरी महल की विशेषता उधर आँखों को फेरते ही देखने में आती है।

जुमा मसजिद दिल्ली के नमूने की होने पर भी उसके सौन्दर्य के सामने नहीं ठहर सकती।

ग्रीष्म के दिवसों में ठण्डक का सुख लूटने के लिये प्रासाद में कई तहखाने हैं।

स्निग्धनीली जलधारा की यमुना के तट पर सङ्गमरमर की श्वेत अट्टालिका ताजमहल का जोड़ा इस जगत में नहीं। शाहजहाँ ने नूरजहाँ के भाई आसफ खां की बेटी नूरमहल से विवाह किया था। उस समय नूरमहल १९ वर्ष की थी और शाहजहाँ २१ वर्ष के। स्वामी के साथ युद्ध में जा बुरहानपुर में नूरमहल की मृत्यु हुई। यह नूरमहल ही मुमताज महल नाम से प्रसिद्ध हुई। शोकार्त्त शाहजहाँ की आज्ञा से प्रियतमा की लाश आगरे में लायी गयी। मुमताज महल की स्मृति को स्थिर रखने के लिए शाहजहाँ ने चार करोड़ रुपया खर्च कर ताजमहल बनाया। बीस हजार मनुष्यों ने १७ वर्षों के परिश्रम से इसका निर्माण किया। ताजमहल वास्तव में ही प्रेम की मधुरिमा का सुख स्वप्न है।

शाहजहाँ ने जब इस अट्टालिका के निर्माण की कल्पना की, तो उसका सङ्कल्प इसको सर्वाङ्गसुन्दर बनाने का हुआ। दिल्ली, बगदाद, मुलतान, समरकन्द, सिराज–सभी स्थानों से शिल्प-कुशल मनुष्य बुलाये गये। जयपुर, पञ्जाब, तिब्बत, सिंहल, अरब, चीन, पन्ना, ईरान—

नाना देशों से सामग्रियों का संग्रह किया गया। उन सामग्रियों में सुवर्ण, रजत, मणिमाणिकों की कमी नहीं थी। कबर मूल्यवान मोतियों के ढक्कन से आच्छादित रखी जाती थी। वे सभी मूल्यवान वस्तुएँ लूट ली गयी हैं। केवल बाकी बचा है, ताजमहल—शाहजहाँ के प्रेम का साक्षी—भारत की शिल्पकला का नमूना। ताजमहल की कविता अनुभव का विषय है—वर्णन से वह नहीं समझायी जा सकती। ताजमहल केवल अट्टालिका ही नहीं—वह स्वप्न भी नहीं, वह हृदय की सुन्दर भावनाओं का दिव्य विकास।

ताजमहल को एक ही बार देखने से उसका स्वरूप ध्यान में नहीं आता बार-बार देखने से ही वह इच्छा पूरी हो सकती है। विशेषतः उज्ज्वल चाँदनी में उसको बिना देखे उसके माधुर्य्य की वास्तविक छवि मानों हृदय में नहीं अंकित होती। ताजमहल को देखने के लिये यूरोप और अमेरिका से भी अनेक पर्य्यटक भारत में आते हैं।

ताज के प्रवेशपथ का तोरण भी ताज के ही उपयुक्त है।

यमुना के दूसरे पार इतमाद-उद्दौला की समाधि है। इतमाद-उद्दौला नूरजहाँ बेगम के पिता थे। बेटी ने बाप की समाधि की यह अट्टालिका बनायी। इसको देखने से यह ध्यान में आ जाता है, कि अकबर के दिनों अट्टालिका बनाने के शिल्प की जैसी परिपाटी थी, वह शाहजहाँ के दिनों बदली गयी थी। जहाँगीरी महल और ताज के बनाये जाने के मध्यवर्त्ती काल में इतमाद-उद्दौला की समाधि अट्टालिका बनायी गयी थी।

उस समाधि के समीप चीनी का रौजा और रामबाग है। चीनी का रौजा वा चीनासमाधि शायद अफजल खाँ की समाधि होगी। रामबाग के साथ बाबर की स्मृति-जड़ित है। बाबर की मृत्यु के बाद उनका शव समाधि के लिये काबुल भेजा गया था। काबुल भेजा जाने के पहिले वह रामबाग में रक्खा गया था। उस बाग की रचना नूरजहाँ ने की थी। उस बाग के समीप और एक बाग था, जो बाबर की बेटी शहजादी जोहरा का था।

सिकन्द्रा आगरे से ५ मील दूर है। वहाँ जाने की राह में अनेक पुराने भवन और भवनों के भग्नावशेष हैं। सिकन्द्रा में अकबर की समाधि है। अकबर ने आप ही उस समाधि अट्टालिका की कल्पना कर मृत्यु से पूर्व उसका निर्माण आरम्भ कर दिया था। उस अधूरे निर्माण की पूर्णता उनके बाद जहाँगीर को करनी पड़ी थी। जहाँगीर ने उस अट्टालिका की कल्पना के सम्बन्ध में भी कुछ फेर फार किया था। मुगलों की साधारण समाधि अट्टालिकाओं से इसका बहुत भेद पाया जाता है। इसकी कल्पना का हिन्दू शिल्प से मेल है। बौद्ध-विहार में जैसे बहुतेरे मञ्जिल वाले गृह होते हैं, वैसी ही यह अट्टालिका है। फतहपुर सिकरी में अकबर ने जो पाँच मञ्जिल का गृह निर्माण कराया, वह इसी नमूने का है।

आगरा यू० पी० के अन्तर्गत व्यापार का एक प्रधान केन्द्र है। यहाँ की व्यापारिक गति-विधि और चहल-पहल देखने योग्य है। वैसे तो यहाँ पर मनुष्य की जीवनोपयोगी सभी आवश्यक वस्तुओं का व्यापार होता है। पर प्रधान रूप से रूई, गल्ला, तिलहन, जूते, दरियाँ इत्यादि वस्तुओ के व्यापार का यह केन्द्र है। जूते बनाने की यहाँ पर बहुतसी इण्डस्ट्रीज हैं जिनके बने हुए जूते देश के भिन्न २ भागों में जाते हैं। इसके अतिरिक्त यहाँ की दरियाँ भी सारे भारतवर्ष में प्रसिद्ध हैं। यहाँ पर संगमरमर की पच्चीकारी का भी अच्छा काम होता है। यहाँ से पास ही दयालबाग नामक एक गुरुकुल के ढङ्ग का विद्यालय है। इस विद्यालय की इण्डस्ट्री डिपार्टमेण्ट में ट्रंक, ताले, कैंची, चाकू, जूते इत्यादि बहुत अच्छे बनते हैं।

यहाँ के व्यापापिक बाजारों में बैलनगंज, किनारी बाजार, रावतपाड़ा, जौहरी बाजार इत्यादि उल्लेखनीय हैं। बैलनगञ्ज में गल्ला, रूई और तिलहन तथा कमीशन एजन्सी का व्यापार होता है। प्रायः अधिकांश बड़े २ व्यापारियों की दुकानें इसी बाजार में है। किनारी बाजार में जूते, दरियाँ, सोना, चाँदी तथा जनरल मर्चेण्टाइज्ञ की चीजे बिकती हैं। जौहरी बाजार में कुछ जौहरियों की दुकानें हैं। लोहामण्डी में लोहे का बहुत अच्छा व्यापार होता है।

फैक्टरीज़ और इण्डस्ट्रीज़

कॉटनमिल्स—

आगरा स्पीनिंग एण्ड वीविंग मिल्स कम्पनी लि०—
(इसमें रोजाना ५५० व्यक्ति काम करते हैं।)

आगरा यूनाइटेट मि० लि० नं० २,३,४—
(इसमें १४५२ आदमी रोज काम करते हैं।)

आगरा यूनाइटेड मि० लि० नं० ५
(इसमें ७२ आदमी रोज काम करते हैं।)

ऑयर्न फाउण्डरीज—

रामचन्द्र लछमनदास आयर्न फाउण्डरी

गुलाबचन्द छोटे लाल आयर्न एण्ड ब्रास फाउण्डरी

लीलाधर कल्यानदास आयर्न फाउण्डरी

मल्लुमल रामप्रसाद आयर्न फाउण्डरी

अयोध्याप्रसाद रामप्रसाद ऑयर्न एण्ड जनरल मैटल फाउण्डरी

अग्रवाल ऑयर्न वर्क्स

वैश्य फ्लोअर मिल एण्ड ऑयर्न फाउण्डरी

ऑइल मिल्स

घनश्यामदास बैजनाथ ऑइल मि०

यू० पी० आईल्स को० लि० बैलनगंज

टैनेरी—

आगरा टैनेरी ताजगंज

जीन एण्ड प्रेस

न्यू मुफस्सिल को० लि० जिन एण्ड प्रेस फैक्टरी

कुलाबा प्रेस कम्पनी लि० बैलनगञ्ज

वेस्ट्रस पेटेण्ट प्रेस को० लि० भैरव स्ट्रीट

यहाँ के व्यापारियों का परिचय इस प्रकार है:—

बैंकर्स एण्ड कमीशन एजेण्ट

मेसर्स अमोलकचंद मेवाराम

इस फर्म का हेड आफिस खुरजा यू० पी० है। इसके वर्तमान मालिक ला० शांतिलालजी हैं। इसका विस्तृत परिचय चित्रों सहित हेड आफिस के साथ दिया गया है। यहाँ यह फर्मबेलन-गंज में आढ़त, काटन, ग्रेन और बैंकिंग का व्यापार करती है। इसका तार का पता "Raniwala" है।

मेसर्स घनश्यामदास प्रेमसुखदास

इस फर्म का हेड आफिस कलकत्ता है। इसके वर्तमान मालिक सेठ घनश्यामदासजी, सेठ बैजनाथजी, सेठ दुर्गादत्तजी एवं सेठ प्रेमसुखदासजी चारो भाई हैं। इसका विशेष परिचय चित्रो सहित इसी ग्रन्थ के द्वितीय भाग में पेज नं० ४८९ में दिया गया है। यहाँ यह फर्म गल्ला एवं आढ़त का काम करती है। इस फर्म का यहाँ का पता बेलनगंज आगरा है। माई थान में इस फर्म का घनश्यामदास बैजनाथ आईल मिल के नाम से एक तेल का मिल है।

मेसर्स छीतरमल रामदयाल

इस फर्म के मालिक आगरा ही के निवासी हैं। आप अग्रवाल वैश्य समाज के सज्जन हैं। इस फर्म की स्थापना करीब ७० वर्ष पूर्व लाला छीतरमलजी ने की थी। उस समय से ही इस फर्म पर गुड़ और चावल का व्यापार होता चला आ रहा है। लाला छीतरमलजी का स्वर्गवास संवत् १८५५ में हो गया। आपके पश्चात् इस फर्म का संचालन आपके पुत्र लाला रामदयालजी ने किया। आप के समय में इस फर्म की अच्छी उन्नति हुई। आपका स्वर्गवास संवत् १९८२ में हो गया।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक ला० रामदयालजी के पुत्र ला० श्यामलालजी हैं। आपने करीब १० वर्ष पहले से विलायती चीनी का कारबार तथा गल्ला एवं आढ़त का काम शुरू किया है। ला० श्यामलालजी के ५ पुत्र हैं जिनके नाम क्रमशः विशम्भरनाथजी, टीकम-चन्दजी, पदमचन्दजी, सीतारामजी, एवं हरिवंश हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स—छीतरमल रामदयाल बेलनगंज, आगरा	यहाँ गुड़, चीनी एवं गल्ले का अच्छा व्यापार होता है। साथ ही आढ़त का काम भी यह फर्म करती है।

मेसर्स—छीतरमल रामदयाल मुरेना (गवालियर)	यहाँ कमीशन एजंसी का काम होता है।
मेसर्स—रामदयाल राधेलाल भिण्ड (गवालियर)	यहाँ भी आढ़त का काम होता है।

मेसर्स ठाकुरदास रामसहाय

इस फर्म के मालिकों का मूल निवासस्थान जोनधन (करनाल पञ्जाब) में है। आप अग्रवाल वैश्य समाज के गर्ग गौत्रीय सज्जन हैं। इस फर्म की स्थापना करीब १२४ वर्ष पूर्व लाला जगन्नाथजी के द्वारा हुई। आपने नावों द्वारा रूई, शक्कर, गल्ला एवं साँभर निमक का व्यापार शुरू किया। उस समय में भी आप अपने माल को कलकत्ता तक के नगरों में भेजते थे। आपने अपने व्यवसाय को विशेष तरक्की प्रदान की। आपने गाजीपुर, अलाहाबाद, राजापुर आदि स्थानों में दुकानें खोलीं। आपके समय से ही आपके पुत्र ला० ठाकुरदासजी व्यापार में भाग लेने लग गये थे। आपने भी फर्म की अच्छी उन्नति की। आपके समय में इस फर्म पर मेसर्स ठाकुरदास सदाराम नाम पड़ता था। सदारामजी आपके भाई थे। कुछ समय पश्चात् भाई २ में हिस्सा रसी हो जाने से ला० ठाकुरदासजी के पुत्र रामसहायजी ने उपरोक्त नाम से व्यापार प्रारम्भ किया जो आज तक इसी नाम से हो रहा है। ला० रामसहायजी का स्वर्गवास हो गया।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक स्व० लाला रामसहायजी के पुत्र ला० मुन्नीलाल जी हैं। आप ही दुकान का सञ्चालन करते हैं। आप आगरे सराफे के पञ्च भी हैं। आपके पिताजी ने अपने नाम से जमुनाजी के किनारे एक घाट बनवाया था जो अब भी मौजूद है। साथ ही हरिपर्वत पर एक बगीचा बनवाया था जिसमें अषाढ़ मास मे शीतला का मेला होता है।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

मेसर्स—ठाकुरदास रामसहाय बेलनगंज आगरा T. A Thakurjee	यहाँ बैंकिंग व्यापार तथा आढ़त का काम होता है।

मेसर्स तेजकरण चाँदमल

इस फर्म के मालिक मूल निवासी बीकानेर के हैं। आप ओसवाल समाज के जैन धर्मावलम्बी हैं। इस फर्म को आगरे मे स्थापित हुए करीब ५६ वर्ष हुए। शुरू में यह फर्म मेसर्स

गणेशाचन्द लखमीचन्द के नामसे स्थापित हुई। इसकी स्थापना सेठ तेजकरणजी की माता श्रीमती जवाहर कुँवर (धर्मपत्नी सेठ ताराचन्दजी सेठिया) और चाँदमलजी की माता श्रीमती राजकुँवर (धर्मपत्नी से० हेटसिह जी नाहटा) दोनो से सम्मिलित रूप मे संवत् १९३० में की। इसके पश्चात् इसका नाम बदल कर मेसर्स तेजकरण चाँदमल रक्खा। इस फर्म की विशेष उन्नति सेठ तेजकरणजी और सेठ चान्दमलजी दोनों के हाथों से हुई। आप बड़े उदार, व्यापारचतुर एवं मेधावी सज्जन थे। श्रीयुत तेजकरणजी का स्वर्गवास संवत १९७५ मे एव श्रीयुत चाँदमलकी का स्वर्गवास संवत् १९७० में हो गया।

आप लोगों के पश्चात् श्रीमती मदनकुँवर (धर्मपत्नी से० तेजकरणजी) और श्रीमती बसंत-कुँवर (धर्मपत्नी से० चाँदमलजी) इन दोनों ने अपने २ बच्चों की नाबालगी में फर्म के कार्य को बहुत ही सुचारुरूप से संचालित किया। इस समय मे इस फर्म की बहुत उन्नति हुई।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ तेजकरणजी सेठिया के पुत्र श्रीयुत लुनकरनजी एवं सेठ चाँदमलजी नाहटा के पुत्र श्रीयुत वीरचन्दजी हैं। आप दोनों शिक्षित मिलनसार एवं व्यापार कुशल व्यक्ति हैं।

इस फर्म के संचालको का ध्यान दानधर्म की ओर भी बहुत रहा है। आपकी ओर से बीकानेर में एक धर्मशाला तथा जयपुर और आगरे में एक २ जैन मन्दिर बना हुआ है। साथ ही आगरा और बीकानेर में एक २ धार्मिक पाठशाला चल रही है। रायपुर (सी० पी०) में भी आपकी ओर से एक धर्मशाला बनी हुई है। इसी प्रकार और भी कई सार्वजनिक संस्थाओं में आपके द्वारा उदारतापूर्वक सहायता प्रदान की जाती है।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

बीकानेर—मेसर्स तेजकरण चाँदमल — यहाँ बैंकिंग, हुंडी, चिट्ठी, रूई जीरा, ऊन तथा सब प्रकार की कमीशन एजेंसी का काम होता है।

आगरा—मेसर्स तेजकरण चाँदमल बेलनगञ्ज — यहाँ बैंकिंग, हुंडी चिट्ठी, रूई, जीरा, ऊन तथा सब प्रकार की कमीशन एजेंसी का काम होता है।

साम्भरलेक—मेसर्स तेजकरण चाँदमल — यहाँ बैंकिंग तथा नमक का व्यापार और कमीशन एजंसी का काम होता है।

रायपुर—मेसर्स चाँदमल वीरचन्द (सी० पी०) — यहाँ यह दुकान बड़ी दुकान के नाम से मशहूर है। यहाँ बैंकिंग और कमीशन एजंसी का काम होता है।

स्व० सेठ तेजकरणजी सेठिया (तेजकरण चान्दमल) आगरा

स्व० सेठ चान्दमलजी नाहटा (तेजकरण चान्दमल) आगरा

बाबू लूणकरणजी सेठिया (तेजकरण चान्दमल) आगरा

बाबू वीरचन्दजी नाहटा (तेजकरण चान्दमल) आगरा

मूँगेली (विलासपुर)—मेसर्स चाँदमल वीरचन्द	यहाँ बैंकिग चाँदी सोना एवं आढ़त का काम होता है।

इसके अतिरिक्त तहसील बलौदा बाजार सी० पी० में आपकी जमींदारी में १० गाँव हैं। जिनका ताल्लुक रायपुर फर्म से है। रायपुर और मुँगेली की फर्म केवल वीरचन्दजी नाहटा की है।

मेसर्स तेजपाल जमुनादास

इस फर्म का हेड आफिस मिर्जापुर है। इसकी और भी शाखाएँ हैं जिसका विवरण इसी ग्रंथ के दूसरे भाग में पेज नं० ३६८ में किया गया है। इसके वर्तमान मालिक सेठ रामेश्वर-दासजी हैं। यहाँ यह फर्म गल्ला, जीरा एवं कमीशन का काम करती है। इसका यहाँ का पता बेलनगंज है।

मेसर्स तुलसीराम सीताराम

इस फर्म के संचालक अग्रवाल वैश्य समाज के सज्जन हैं। इस फर्म का स्थापन सन् १८५८ ई० में लाला तुलसीदासजी के हाथो से हुआ। आप अपने पुराने किराने के ही व्यवसाय को बढ़ाने में लगे एवं उसमें अच्छी सफलता प्राप्त की। आपका स्वर्गवास संवत् १९३६ में हो गया। आपके पश्चात् फर्म का संचालन आपके पुत्र लाला सीतारामजी तथा लाला माधोरामजी ने किया। आपके समय में भी इस फर्म की अच्छी उन्नति हुई। आपका स्वर्गवास भी संवत् १९४१ में हो गया। इस समय इस फर्म के एकमात्र उत्तराधिकारी लाला माधोरामजी के पुत्र लाला कोकामलजी केवल १॥ साल के थे। आपकी बाल्यावस्था मे फर्म के कारबार को मुनीम शिवनारायणजी ने अच्छी योग्यता और इमानदारी से संचालित किया। करीब १५ वर्ष की उम्र के बाद लाला कोकामलजी ने फर्म के काम को सम्हाला। संवत १९८१ में आपने कोका-मल गोपालदास के नाम से एक फर्म स्थापित की, जिस पर किराना और रंग का काम होता है।

लाला कोकामलजी ने फर्म के व्यापार को बहुत तरक्की दी। आपने अपने नाम से एक बहुत सुन्दर मार्केट बनाया जो सन् १९१५ से बनना शुरू हुआ था वह सन् १९२७ में खतम हुआ। आपकी ओर से सौरोंजी मे एक धर्मशाला बनी हुई है। इसके साथ ही एक बगीचा भी है। आप स्थानीय सनातनधर्म सभा के प्रेसिडेन्ट, रामलीला के मंत्री और करीब १५ वर्षों से म्युनिसिपल कमीश्नर हैं। रावतपाड़ा कन्या पाठशाला के—जिसमें ३०० बालिकाएँ विद्याध्ययन

करती हैं—आप जब से पाठशाला स्थापित हुई है तभी से सभापति है। इसके खोलने में भी आपका बहुत हाथ था। आपके ५ पुत्र हैं। बड़े गोपालदासजी हैं शेष चार पढ़ते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

मेसर्स तुलसीदास सीताराम कोकामल मार्केट रावतपाड़ा आगरा T. A. mahalaxmi	यहाँ बैंकिंग, हुंडी, चिट्ठी तथा किराने का व्यापार एवं आढ़त का काम होता है।
मेसर्स कोकामल गोपालदास रावतपाड़ा, आगरा T. A. mahalaxmi	यहाँ रंग, पेंट तथा केमिकल गुड्स का व्यापार होता है।
मेसर्स कोकामल गोपालदास तमाखू कटरा देहली T. A. mahalaxmi	यहाँ भी रंग और केमिकल गुड्स का व्यापार होता है।
मेसर्स कोकामल गोपालदास जनरल गञ्ज कानपुर T. A. mahalaxmi	यहाँ रंग पेण्ट और केमिकल गुड्स का व्यापार होता है।

मेसर्स नन्दराम छोटेलाल

इस फर्म के मालिको का आदि निवास-स्थान आगरा है। आप लोग खण्डेलवाल वैश्य समाज के सज्जन हैं। इस फर्म की स्थापना लगभग १०० वर्ष पूर्व नंदरामजी ने व लाला छोटे लालजी ने आगरे में की थी। इस फर्म की विशेष उन्नति लाला हीरालालजी के समय से ही आरम्भ हुई थी पर विशेष उन्नति लाला चुन्नीलालजी के समय में हुई। आपने इस फर्म को यहाँ की सम्मुन्नत फर्मों की श्रेणी पर पहुँचाया। आपके बाद फर्म के वर्तमान मालिक राय बहादुर सेठ सुरजभानजी ने फर्म को सबसे अधिक उन्नत अवस्था पर पहुँचाया।

रायबहादुर सेठ सुरजभानजी यहाँ के प्रतिष्ठित नागरिक हैं। आपका यहाँ के सरकारी वर्ग में अच्छा प्रभाव है। आप ऑनरेरी मैजिस्ट्रेट और गवर्नमेन्ट ट्रेझरर हैं। आप आगरा

एलेक्ट्रिक कम्पनी आदि कितनी ही ज्वाइन्ट स्टाक कम्पनियों के डायरेक्टर हैं। यहाँ के व्यापारी समाज में आपका बहुत बड़ा आदर और मान है। आप सुशिक्षा प्रसार के पक्षपाती हैं। आपने अपने नाम से एक हायस्कूल स्थापित किया है। आपको इमारतों का बड़ा शौक है। आगरे की दो प्रसिद्ध इमारतें भी आपके ही अधिकार में हैं। एक में स्वयं आप सपरिवार निवास करते हैं और दूसरी जो शोरेवाली कोठी के नाम से प्रसिद्ध है एक दर्शनीय इमारत है। इसका दुतल्ले पर का बगीचा तथा इमारत पर आपका कराया सोने का काम प्रेक्षणीय है।

इस फर्म के वर्तमान मालिक रायबहादुर सेठ सुरजभानजी तथा आपके छोटे भ्राता सेठ ताराचंदजी और आपके मंझले भाई स्व० सेठ चंद्रभानजी के पुत्र सेठ मदनगोपालजी और जगन्नाथ प्रसादजी हैं। यह फर्म एक सम्मिलित परिवार की सम्पत्ति है।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

मेसर्स—नंदराम छोटेलाल बेलनगंज आगरा	यहाँ हेड आफिस है। तथा रूई, गल्ला तेलहन, का व्यापार और कमीशन का काम होता है। लैण्डलार्ड्स एण्ड बैंकर्स का काम भी यहाँ होता है। इस नाम से आपकी तीन दुकाने हैं।
सेठ चुन्नीलाल बेलनगंज	यहाँ बैंकिंग तथा आढ़त का व्यापार होता है।
मेसर्स—ताराचंद मदनगोपाल बेलनगंज आगरा	यहाँ आढ़त और हुण्डी, चिट्ठी का काम प्रधान रूप से होता है।

मेसर्स वंशीधर शिवप्रसाद

इस फर्म का हेड आफिस जयपुर है अतः इसका सचित्र परिचय इस ग्रन्थ के प्रथम भाग के राजपूताना विभाग में पृष्ठ ६१ मे दिया गया है। यहाँ यह फर्म बेलनगंज में है जहाँ यह बैंकिंग, हुण्डी, चिट्ठी तथा कमीशन का काम करती है। यहाँ का तार का पता Star है।

मेसर्स माणिकचंद रामलाल

इस फर्म का हे० आ० यहीं है। पर इसका विशेष परिचय झाँसी में दिया गया है। यहाँ यह फर्म कपड़ा, बैंकिंग तथा मकानात के किराये का काम करती है। इसका आफिस कन्टूनमेण्ट में है तथा तार का पता Manik है।

मेसर्स मथुरादास पदमचन्द

इस फर्म के मालिक सेठ पदमचन्दजी हैं। आप खण्डेलवाल जैन जाति के सज्जन हैं। आपने २८ वर्ष पूर्व इस फर्म को स्थापित किया और उन्नति की।

आपका व्यापारिक-परिचय इस प्रकार है।

आगरा—मेसर्स मथुरादास पदमचन्द वैलनगंज—इस फर्म पर बैंकिंग और कमीशन एजन्सी का काम होता है।

रायबहादुर मेसर्स मूलचन्द नेमिचन्द सोनी

यह फर्म अजमेर के सुप्रसिद्ध धनिक मेसर्स जवाहरमल गम्भीरमल सोनी की एक ब्रान्च है। आपका विस्तृत परिचय अनेक चित्रो सहित इस ग्रन्थ के प्रथम भाग में राजपूताना विभाग के अन्तर्गत दिया गया है।

इसकी उपरोक्त आगरा ब्रान्च के अन्तर्गत सेठ मगनलालजी पाटनी वर्किंग पार्टनर हैं। आप ही इसका मैनेजमेण्ट करते हैं। आप बड़े व्यापारकुशल और बुद्धिमान व्यक्ति हैं।

आपके परिवार की ओर से आपके मूल निवास-स्थान मारोठ में पाटनी दि० जैनधर्मशाला, पाटनी बोर्डिङ्ग हाउस, पाटनी जैन-पाठशाला, पाटनी जैन लायब्रेरी तथा पाटनी जैन औषधालय बने हुए हैं। इससे आपके जातीय प्रेम का सहज ही पता लगता है।

आपके इस समय दो पुत्र हैं। जिनके नाम श्रीयुत नेमिचन्दजी तथा श्री सौभागमलजी हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

आगरा—मेसर्स मूलचन्द नेमिचन्द वैलनगंज T. A. Soni } इस फर्म पर बैंकिग, गल्ला, कपास और कमीशन एजन्सी का बहुत बड़ा व्यापार होता है।

मेसर्स रेखचन्द लूंकड़

इस फर्म के संचालकों का मूल निवास-स्थान फलोदी (जोधपुर) का है। आप ओसवाल समाज के सज्जन हैं। संवत् १९०५ मे सेठ रेखचन्दजी के पिता सुल्तानचन्दजी यहाँ आये। तथा मेसर्स लक्ष्मीचन्द गणेशदास के यहाँ मुनीमात का काम किया। संवत् १९२४ के करीब रेखचन्दजी अपने पिता के साथ यहाँ आये। यहाँ आने के कुछ समय बाद आपने अपने ही नाम से इस फर्म की स्थापना की। इसकी विशेष उन्नति आप ही के हाथों से हुई। इस फर्म

पर क्रमशः आढ़त, सूत और बैङ्किंग का काम होने लगा। जो वर्तमान में भी चल रहा है। आपका स्वर्गवास १९८६ में हो गया।

वर्तमान में इस फर्म के संचालक सेठ रेखचंदजी के पुत्र सेठ नेमीचन्दजी तथा सेठ फूलचन्दजी हैं। आप दोनों ही फर्म के कार्य का संचालन करते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

मेसर्स—रेखचन्द लूंकड़ चेलनगंज आगरा — बैंकिंग, काटन तथा सूत का व्यापार होता है। यह फर्म कृष्णा मिल्स लि० ब्यावर, महाराजा कृष्णगढ़ मिल्स कृष्णगढ़, आस्टोडिया मिल्स अहमदाबाद, नजरअली मिल उज्जैन, एवं भगीरथी मिल जलगाँव के सूत की एजंट है। सूत के व्यापारियों में यह फर्म बहुत प्रतिष्ठित मानी जाती है।

मेसर्स वृद्धिचन्द इन्द्रचन्द

इस फर्म के मालिक ओसवाल समाज के चोरड़िया सज्जन हैं। यह परिवार बहुत समय से आगरे में वास कर रहा है। बादशाही जमाने में इस फर्म के पूर्वज शाही ज्वैलर्स थे। उस समय इनको मुकीम की पदवी भी प्राप्त थी।

इस फर्म की उपरोक्त वर्तमान नाम से स्थापना सम्वत् १९७४ में सेठ इन्द्रचन्दजी ने की। आप बड़े व्यापारकुशल और बुद्धिमान सज्जन हैं। और यही कारण है कि इतने थोड़े ही समय में आपने इस फर्म की अत्यधिक उन्नति की, और प्रतिष्ठित फर्मों की नामावली में इसे स्थानापन्न कर दिया।

संवत् १९८० में आपने भिवानी की दी प्रेम स्पिनिंग एण्ड वीविंग कम्पनी लिमिटेड की सोल एजन्सी ली। अतः जो कुछ माल यह तैयार करता है वह सब आप ही की फर्म के द्वारा बिकता है।

इस समय इस फर्म के मालिक स्वयं सेठ इन्द्रचन्दजी तथा आपके पुत्र बाबू सुगनचन्दजी हैं। यह फर्म प्रधान रूप से सूत और रूई का व्यापार करती है। साथ ही बैंकिंग का व्यापार भी होता है—

इसका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

आगरा—मेसर्स वृद्धिचन्द इन्द्रचन्द बैलनगञ्ज T. A. Indra — यहाँ आपका हेड ऑफिस है। तथा बैंकिंग रूई, सूत और कमीशन एजन्सी का काम होता है।

६१ १५

उझियानी—वृद्धिचन्द इन्द्रचन्द Indra	यहाँ दी प्रेम स्पिनिंग एण्ड वीविंग मिल्स की सोल एजन्सी है।

मेसर्स सूरजमल बाबूलाल

यह फर्म इन्दौर की मेसर्स गेंदालाल सूरजमल नामक फर्म की ब्रान्च है। मेसर्स गेन्दालाल सूरजमल का परिचय चित्रों सहित इस ग्रन्थ के प्रथम भाग में मध्य भारत विभाग में दिया गया है।

इस फर्म में सेठ हीरालालजी पाटनी का साझा है। आपका मूल निवास-स्थान मारोठ में है। आप व्यापारकुशल एवं बुद्धिमान व्यक्ति हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

आगरा—मेसर्स सूरजमल बाबू लाल बैलनगंज T. A. Suraj	यह फर्म आगरा यूनाइटेड मिल्स नं० २,३,४ से सूत निकलवा कर उसका व्यापार करती है।
आगरा—मेसर्स गेंदालाल बड़जात्या आगरा यूनाइटेड मिल्स	यह फर्म आगरा यूनाइटेड मिल का फाइनेंस करती है।

मेसर्स सोनपाल मुन्नालाल

इस फर्म का स्थापन करीब ५० वर्ष पूर्व ला० नारायणदासजी के हाथों से हुआ। आप लोगों का निवास-स्थान आगरा ही है। आप अग्रवाल वैश्य समाज के गोयल सज्जन है। इस फर्म की विशेष उन्नति ला० नारायणदासजी के हाथों से हुई। यह फर्म शुरू से ही आढ़त का काम करती आ रही है। हाँ, स्थापित होने के ५ वर्ष के पश्चात् से इस पर बैंकिंग बिजिनेस भी शुरू हो गया जो इस समय तक चला आ रहा है। ला० नारायण दासजी का स्वर्गवास संवत् १९७८ में हो गया। आपके सामने ही आपके भतीजे ला० मुन्नालालजी कार्य में सहयोग देने लग गये थे। आपके हाथों से भी फर्म की अच्छी उन्नति हुई। आपका स्वर्गवास संवत् १९६८ में ही हो गया। ला० नारायणदासजी के पश्चात् ला० मुन्नालालजी के पुत्र ला० बुलाखीदासजी ने इस फर्म का संचालन किया।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक ला० बुलाखीदासजी एवं आपके छोटे भाई रामभरोसे लालजी हैं। आप दोनों ही सज्जन इस समय कार्य करते हैं। आपके पितामह नारायणदासजी

द्वारा स्थापित सदावर्त आज भी चल रहा है। उसमें करीब १०० व्यक्ति रोजाना भोजन पाते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है :—

मेसर्स—सोनपाल मुन्नालाल बेलनगंज आगरा T. A. Sohan	यहाँ बैंकिंग, हुंडी, चिट्ठी, गुड़, चीनी, गल्ला एवं आढ़त का काम होता है।

मेसर्स सुरजमल छोटेलाल

इस फर्म का हेड आफिस कलकत्ता है। इसके वर्तमान मालिक सेठ छोटेलालजी कानोड़िया हैं। इस फर्म का विस्तृत परिचय चित्रों सहित इसी ग्रन्थ के दूसरे भाग में पेज नं० ३२६ में कलकत्ता विभाग में छापा गया है। यहाँ यह फर्म आढ़त और बोरे का व्यापार करती है।

मेसर्स हरबकस सूरजमल

इस फर्म के मालिक सेठ सूरजमलजी हैं। आप सरावगी (पाटनी-जैन) समाज के सज्जन हैं। यहाँ इसको स्थापित हुए लगभग ५२ वर्ष हुए। इस फर्म पर हुंडी, चिट्ठी और आढ़त का काम होता है। यह फर्म बेलनगञ्ज मोहल्ले में है। इसका अधिक परिचय इस ग्रंथ के प्रथम भाग के राजपूताना विभाग में पृष्ठ ७४ में दिया गया है।

मेसर्स हीरालाल चुन्नीलाल

इस फर्म का हेड आफिस सांभर में (राजपूताना) है। इसका विशेष परिचय हमारे ग्रंथ के प्रथम भाग के राजपूताना विभाग में पृष्ठ १०३ में दिया गया है। यहाँ जीन की मण्डी में रामवल्लभ रामविलास के नाम से इसकी एक तेल की मिल है।

कपड़े के व्यापारी

मेसर्स बेनीराम उत्तमचन्द

इस फर्म के मालिक अग्रवाल समाज के जैन धर्मावलम्बी सज्जन हैं। इस फर्म की स्थापना लगभग ७० वर्ष पूर्व सेठ उत्तमचन्दजी ने की। इसके पूर्व इस फर्म पर मेसर्स हरविलास बेनीराम नाम पड़ता था, पर मालिकों के परस्पर अलग हो जाने से सेठ उत्तमचन्दजी ने उपरोक्त नाम से अपनी स्वतंत्र फर्म स्थापित कर कपड़े का व्यापार प्रारम्भ कर दिया। आप

बड़े व्यापारकुशल सज्जन थे। फलतः आपने इस क्षेत्र में अच्छी सफलता प्राप्त की। आपही की वजह से राजामण्डी एक व्यापारिक क्षेत्र के रूप में परिवर्त्तित हो गया। पहले आगरा छावनी में हाथ के बुने देशी कपड़े का बाजार लगता था, उसे आपने कोशिश कर राजामण्डी में लगवाना प्रारम्भ करवा दिया। फल यह हुआ कि तबसे राजामण्डी देशी कपड़े का अच्छा बाजार हो गया।

सेठ उत्तमचन्दजी ने अपने व्यापार का विस्तार करने के लिए मेसर्स रामभरोसे रामनारायण के नाम से दूसरी और मेसर्स उत्तमचन्द भरोसेलाल के नाम से तीसरी दुकान खोली। जिन पर देशी और विदेशी कपड़े का कार्य्य प्रारम्भ किया।

सेठ उत्तमचन्दजी का सार्वजनिक जीवन भी बड़ा उच्च और सम्मानपूर्ण रहा। आप कई वर्षों तक आगरा म्यूनिसिपैलिटी के कमिश्नर रहे। इसके सिवा आपने राजा की मण्डी स्टेशन पर एक बहुत सुन्दर "उत्तमचन्द जैन दिगम्बर फ्री धर्मशाला" बनवाई। इसके सिवा आगरा जैन नसियां के अन्दर उत्तम निवास बनवाया और आगरा जैन होस्टल मे कमरे निर्मित करवाये। आपका स्वर्गवास संवत् १९७४ में हुआ। आपके पश्चात् आपके पुत्र रामभरोसेलाल जी ने इस फर्म को संचालित किया। आपने भी इस फर्म की खूब उन्नति की जिसके परिणामस्वरूप यह फर्म आज यहाँ की अत्यन्त लब्ध-प्रतिष्ठित फरमों में गिनी जाती है। आपने स्वदेशी डिपो के नाम से एक स्टोअर और खोला जिसमे जीवन की दैनिक आवश्यकता पूर्ति के सभी सामान बिक्री होते हैं। सन् १९१२ में आपने कपड़े की रंगाई तथा छपाई का एक कारखाना यू० बी० डायिंग एण्ड प्रिण्टिंग क्लॉथ फैक्टरी के नाम से खोला। इसके पश्चात् आपने जैनेन्द्र इम्ब्रायडरी वर्क्स नामक कारखाना खोला और सन् १९२५ में आर० जी० एलेक्ट्रिक इञ्जीनियरिंग कम्पनी के नाम से एक बिजली की कम्पनी खोली। इस प्रकार आपने औद्योगिक क्षेत्र में भी अच्छी सफलता प्राप्त की।

व्यापारिक और औद्योगिक क्षेत्र ही की तरह सार्वजनिक क्षेत्र में भी आपने बहुत नाम पैदा किया। आप म्यूनिसिपैलिटी के कमिश्नर, जैन बोर्डिंग हाउस के ट्रस्टी 'हिन्दू महासभा' आगरा के उपसभापति तथा और भी कई सार्वजनिक संस्थाओं के पोषक थे। आपकी दानवीरता की लीडर जैसे जिम्मेदार पत्र ने भी तारीफ़ की थी। आपने सरस्वती पुस्तकालय की स्थापना की तथा सिविल लाइन मे एक उत्तम भवन की स्थापना की। आपका स्वर्गवास सन् १९२९ में होगया। आपके पश्चात् आपके पुत्र सेठ जैनेन्द्र किशोरजी इस समय फर्म का संचालन कर रहे हैं। आप भी अपने वंशपरम्परानुगत गुणों से सम्पन्न हैं। आप यहाँ के म्यूनिसिपल कमिश्नर हैं। आपके श्रीयुत सूर्य्य प्रकाशजी नामक एक पुत्र हैं।
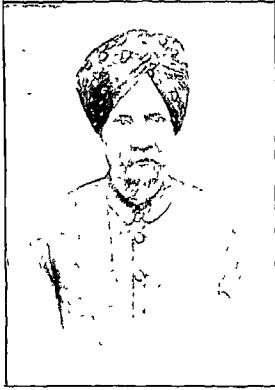
लाला भरोसेलालजी जैन (वेनीराम उत्तमचन्द) आगरा

लाला जैनेन्द्रशरणजी जैन (वेनीराम उत्तमचन्द) आग
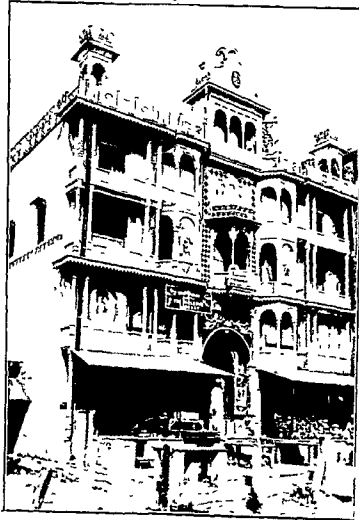
इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

आगरा—मेसर्स बेनीराम उत्तमचंद राजा की मण्डी T. A. Digmaber	यहाँ फर्म का हेड ऑफिस है तथा देशी विदेशी कपड़े का थोक व्यापार और कमीशन एजन्सी का काम होता है।
आगरा—उत्तमचन्द मोतीलाल राजा की मण्डी	बैङ्कर्स, गवर्नमेंएट कण्ट्राक्टर्स एक्सपोर्ट, इम्पोर्ट डीलर्स तथा साड़ी कालीन, दरी, एएड प्रिएटेड क्लॉथ मर्चेण्ट्स
आगरा—मेसर्स रामभरोसे रामनारायण राजामण्डी	इस फर्म पर पगड़ी, दरी आदि का थोक व्यापार तथा गवर्नमेण्ट कन्ट्राक्ट का काम होता है।
आगरा—यू० बी० डाईंग एएड प्रिटिंग क्लॉथ फैक्टरी आगरा	इसमें सभी प्रकार की रँगाई और छपाई का उत्तम काम होता है।
आगरा—आर० जे० इलेक्ट्रिक इञ्जी- नियरिंग कम्पनी T. A. Bijli	यहाँ गवर्नमेण्ट कएट्राक्ट का काम होता है।
आगरा—जैनेन्द्र इम्ब्राइडरी वर्क्स राजामएडी	यहाँ पर सब प्रकार की चिकन और बूँटी काढने और रुमाल आदि तैयार करने का काम होता है।

मेसर्स बंसीधर गंगाप्रसाद

इस फर्म का स्थापन संवत् १९१४ में लाला गङ्गाप्रसादजी के हाथों से हुआ। इसके पहले लाला वंसीधरजी अपने ही नाम से सूत एवं खादी का व्यापार करते थे। संवत् १९१४ से ही ला० गंगाप्रसादजी ने कपड़े का व्यापार शुरू किया। आप ही के हाथों से इस फर्म को विशेष तरक्की मिली। आपने केवल १३ वर्ष की आयु से व्यापार शुरू किया था। आपका स्वर्गवास संवत् १९५८ के करीब हो गया। आपके पश्चात् आपके पुत्र नत्थोमलजी उर्फ नारायणदासजी ने इस फर्म का संचालन किया। आपके सामने ही आपके पुत्र लाला व्रजमोहनलालजी फर्म का संचालन करने लग गये थे। सेठ नारायणदासजी का स्वर्गवास संवत् १९७८ में हुआ। लाला व्रजमोहनजी ने संवत् १९०४ से अपनी फर्म पर विलायती कपड़े का व्यापार बंद कर मिलों की एजेन्सी का काम शुरू किया जो आज तक उन्नतावस्था में संचालित हो रहा है।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक ला० व्रजमोहनलालजी एवं आपके छोटे भाई लाला किशनचन्दजी हैं। आप दोनों सज्जन मिलनसार एवं मेधावी व्यक्ति हैं।

आपकी फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

मेसर्स बंसीधर गङ्गाप्रसाद बेलनगञ्ज, आगरा T. A. Sutia	यहाँ कपड़े एवं सूत का व्यापार होता है। यह फर्म महाराजा मिल बड़ोदा, महारानी मिल बड़ौदा। शिवाजी मिल बड़ोदा, न्यू बड़ोदा मिल बड़ोदा, न्यू टेक्स्टाईल मिल अहमदाबाद, भरतखण्ड टेक्स्टाईल मिल अहमदाबाद, जुबिली मिल अहमदाबाद आदि मिलों के कपड़े की एजंट है।
मेसर्स बंसीधर गङ्गाप्रसाद न्यू क्लाथ मार्केट देहली T. A. Honesty	यह फर्म करीब ४ वर्ष से स्थापित है। यहाँ भी उपरोक्त मिलों के कपड़े का व्यापार होता है।

मेसर्स बद्रीदास बाँकेलाल

इस फर्म के मालिकों का मूल निवासस्थान आगरा ही है। आप अग्रवाल वैश्य जाति के सज्जन हैं। इस फर्म की स्थापना करीब ७५ वर्ष पूर्व लाला बद्रीदासजी के द्वारा हुई। उस समय में इस फर्म पर आपने देशी कपड़ा, पगड़ी, जोड़ा, दरी, गाढ़ा इत्यादि का काम शुरू किया। ला० बद्रीदासजी के हाथों से इस व्यापार में अच्छी उन्नति हुई। आपका स्वर्गवास संवत् १९५० में हुआ। आपके समय से ही आपके पुत्र ला० बाँकेलालजी फर्म का कार्य संचालन करने लग गये थे। आपने इस फर्म की बहुत उन्नति की। आप व्यापार कुशल सज्जन थे। आपका स्वर्गवास १९५५ में हो गया। आपके पश्चात फर्म का संचालन आपके पुत्र लाला खौनीमलजी ने सँभाला। आपने और भी कई प्रकार के कपड़े का व्यापार अपनी फर्म पर करना प्रारम्भ किया। इस व्यापार को आपने अच्छी उन्नति दी। आप व्यापारकुशल एवं मेधावी सज्जन थे। आपका स्वर्गवास संवत् १९८६ में हो गया।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक ला० खौनीमलजी के पुत्र हैं। जिनके नाम क्रमशः लाला भरोसीलालजी, लाला रामकृष्णजी, लाला भगवानदासजी एवं ला० चिमनलालजी हैं। आप चारों सज्जन इस समय फर्म का संचालन करते हैं। इस फर्म की यहाँ अच्छी प्रतिष्ठा है।

इस फर्म के संचालकों का दानधर्म की ओर भी अच्छा लक्ष्य रहा है। आपकी ओर से मथुरा से करीब ६ मील की दूरी पर एक गोविन्दजी का मन्दिर बना हुआ है। उसके साथ ही एक बगीचा लगा हुआ है। वहाँ हर साल श्रावण सुदी ८ को भंडारा होता है जिसमें करीब

८००, १००० साधु-ब्राह्मण भोजन पाते हैं। इसके अतिरिक्त राजामंडी के दरियानाथ में भी आपकी ओर से एक देवी जी का मन्दिर बनाया हुआ है।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

मेसर्स—बद्रीदास बाँकेलाल राजामंडी, आगरा T. A. Peetam	यहाँ सब प्रकार का देशी और विलायती कपड़े का व्यापार एवं आढ़त का काम होता है। यहाँ से चाँदी की पैजब भी बनाकर बाहर भेजी जाती है।
मेसर्स—खौनीमल रामकृष्ण राजामंडी—आगरा	यहाँ देशी पगड़ी, जोड़ा, गाढा दरी, खादी आदि का व्यापार होता है।

मेसर्स मक्खनलाल रामस्वरूप

इस फर्म के संचालक अग्रवाल वैश्य समाज के सज्जन हैं। इस फर्म की स्थापना लाला मक्खनलालजी के द्वारा करीब ५५ वर्ष पूर्व हुई। लाला मक्खनलालजी लाला नाथूरामजी के यहाँ दत्तक आए थे। नाथूरामजी साधारण स्थिति के व्यक्ति थे। लाला मक्खनलालजी ने फर्म स्थापित कर कपड़े का व्यापार प्रारम्भ किया। आप बड़े मिहनती थे। साथ ही व्यापार कुशल भी आप काफी थे। यही कारण है कि आपने अपने हाथों से बहुत सम्पत्ति प्राप्त की। सम्वत् १९७६ में ७८ वर्ष की आयु में आपका स्वर्गवास हो गया।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक आपके पुत्र हैं जिनका नाम क्रमशः नारायणदासजी, रामस्वरूपजी और राधेलालजी हैं। इनमें से प्रथम नारायणदासजी का अल्पायु ही में स्वर्गवास हो चुका है। आपके एक पुत्र हैं जिनका नाम अमरनाथजी है। आप अभी पढ़ते हैं। शेष दोनों भ्राता फर्म का संचालन करते हैं। आप मिलनसार एवं सज्जन व्यक्ति हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

मेसर्स—मक्खनलाल रामस्वरूप रावतपाड़ा आगरा	यहाँ हेड आफिस है। इस फर्म पर बैंकिंग और कपड़े का व्यापार होता है।
मेसर्स—मक्खनलाल नारायणदास जौहरी बाजार आगरा T. A. Narayan	यहाँ सूत तथा कपड़े की आढ़त का काम होता है।
मेसर्स—मक्खनलाल राधेलाल बेलनगञ्ज आगरा T. A. Radhay	यहाँ रूई तथा गल्ले की आढ़त का काम होता है।

सेठ शिवप्रतापजी सादानी

इस फर्म का स्थापन संवत् १९४३ में सेठ विशेश्वरदासजी ने किया। उस समय इस फर्म पर मेसर्स विशेश्वरदास शिवप्रताप सादानी के नाम से कारबार होता था। शुरू से ही इस फर्म पर चाँदी, सोना, बैंकिंग, हुण्डी चिट्ठी एवं देशी चीनी का काम एवं आढ़त का व्यापार होता चला आ रहा है। संवत् १९५१ में उपरोक्त व्यापार के साथ २ सूत एवं कपड़े का व्यापार भी शुरू किया। इसी समय से बा० शिवप्रतापजी १५ वर्ष की वय से ही दुकान का कामकाज देखने लगे। संवत् १९६६ में सेठ विश्वेश्वरदासजी का स्वर्गवास हो गया। आपके पश्चात् संवत् १९८४ में सेठ शिवप्रतापजी ने दुकान का नाम बदल कर अपने ही नाम से व्यापार करने लगे। आपने इस फर्म की अच्छी उन्नति की। आप व्यापारकुशल एवं मेधावी सज्जन हैं। वर्तमान में आप ही इस फर्म के मालिक हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

मेसर्स—शिवप्रताप सादानी बेलनगंज आगरा	यहाँ बैंकिंग, हुण्डी, चिट्ठी, सूत, कपड़ा, गल्ला, चीनी एवं आढ़त का व्यापार होता है। यह फर्म माणिकलाल हीरालाल मिल अहमदाबाद, राजरतन नारायण भाई मिल पेटलाद, (बड़ौदा) नारायण भाई केशवलाल डाइंग फेक्टरी पेटलाद (बड़ौदा) आदि के कपड़े एवं रंग की एजण्ट है।
मेसर्स—विश्वेश्वरदास शिवप्रताप भाँवरों का चौक बीकानेर T. A. Sadani	यहाँ फर्म का हेड आफिस है तथा बैंकिंग, एवं किराना और आढ़त का काम होता है।

चांदी सोने के व्यापारी

मेसर्स कन्हैयालाल बद्रीप्रसाद

इस फर्म के मालिकों का मूल-निवास-स्थान आगरा ही है। आप लोग अग्रवाल वैश्य-समाज के बांसल गौत्रीय सज्जन हैं। यह फर्म करीब १५०-२०० वर्ष से स्थापित है। इसपर पहले से ही चांदी सोने का व्यापार तथा आढ़त का कार बार होता चला आ रहा है। यह फर्म इस व्यापार में प्रतिष्ठित मानी जाती है। इस फर्म पर पहले मेसर्स बंशीधर चुन्नीलाल के नाम से व्यापार होता था। अब मेसर्स कन्हैयालाल गोवर्धनदास के नाम से व्यापार होता है।

करीब ६ वर्ष से इस फर्म ने अपनी ओर एक फर्म खोल कर उसे हेड-आफिस बनाया। यहाँ थोक व्यापार होता है। यहाँ के माल में किसी प्रकार का बट्टा नहीं होता। यह फर्म बुलियन मार्केट में प्रधान मानी जाती है। चाँदी-सोना के व्यापारियों में होने वाले आपसी झगड़े इसी फर्म पर तय किये जाते हैं तथा इसी फर्म पर झगड़े की तोल मानी जाती है। अर्थात् किसी का कोई माल कम तोल दे तो यहाँ के तोल को ही सब व्यापारी मंजूर करते हैं।

इस फर्म के वर्तमान संचालक ला० कन्हैयालालजी हैं। आपके तीन सुपुत्र हैं जिनके नाम क्रमशः रामबाबूजी, गिरधारीलालजी और राधावल्लभजी हैं।

आपकी ओर से रावतपाड़ा में राधिका वंशीवटबिहारी महाराज का मन्दिर बना हुआ है।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है :—

आगरा—मेसर्स कन्हैयालाल बद्रीप्रसाद हे० आ० जौहरी बाजार T. A. Kanhiya	यहाँ फर्म का हेड-ऑफिस है। तथा चांदी-सोने के थोक माल की बिक्री का काम होता है। इसके प्रबंधक बा० कृष्णस्वरूपजी हैं।
आगरा—मेसर्स कन्हैयालाल गोवर्धनदास किनारी बाजार	यहाँ चाँदी-सोने का खेरीज व्यापार व बने हुए जड़ाऊ जेवर तथा डायमंड का व्यापार होता है। मोती वगैरह का व्यापार भी होता है। इसके प्रबंधक ला० दीनानाथजी हैं।
आगरा—जौहरी मार्बल वर्क्स जौहरी बाजार T. A. Kanhiya T. P. H. 166.	यह फर्म करीब ३० वर्ष से मार्बल का काम मेसर्स के० एन० वैश्य के नाम से करता था। सन् १९२५ से इस नाम से व्यापार करता है। इस फर्म पर संगमरमर की चौकी, पटिया, खम्बे, मूर्तियाँ, इमारती सामान तथा फैन्सी सामान, जैसे गिलास, रकाबी, प्याले, फूलदान, घड़ीदान, फोटोफ्रेम, टेबल लेम्प, ताज व इत मादौला मॉडल आदि का व्यापार होता है। यह फर्म डायरेक्ट खानों से माल मँगवाती हैं तथा अपने कारखानों से उसे बनवा कर पालिश करवा कर तैय्यार करवाती है। आपके यहाँ के ताज में इलेक्ट्रिक-लाइट भी लगी हुई है। यह आपका स्पेशल मार्का है तथा यह फर्म बाहर गाँव जाकर मंदिर इमारत वगैरह का काम तथा ठेका भी लेती है। इसके प्रबंधक ला० दामोदरदासजी हैं।

मेसर्स छोटेलाल अबीरचन्द

यह फर्म संवत् १९२६ में ला० अबीरचन्दजी के द्वारा स्थापित हुई। शुरू से ही इस पर बैंकिंग तथा गोटा किनारी का काम आरंभ किया गया। लाला छोटेलालजी के चार पुत्र हुए अबीरचंदजी, कपूरचंदजी, गुलाबचंदजी और मिट्ठनलालजी। इनमें से लाला अबीरचंदजी का स्वर्गवास संवत् १९६६ में तथा कपूरचंदजी का स्वर्गवास संवत १९४९ में हो गया। आप सब लोगों ने फर्म के काम मे बहुत उन्नति की।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक लाला गुलाबचंदजी, लाला मिट्ठनलालजी तथा लाला कपूरचंदजी के पुत्र बाबू किरोड़ीमलजी और लाला अबीरचन्दजी के पौत्र तथा चाँदमलजी के पुत्र चित्तरंजनसिंहजी हैं। चित्तरंजनसिहजी अभी पढ़ते हैं।

लाला गुलाबचंदजी के एक पुत्र हैं जिनका नाम लक्खीमलजी है तथा मिट्ठनमलजी के सूरजमलजी और जीतमलजी नामक २ पुत्र हैं। इस फर्म के संचालक सज्जन एवं मिलनसार व्यक्ति हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

मेसर्स—छोटेलाल अबीरचन्द सेठगली, आगरा	यहाँ बैंकिंग, हुंडी, चिट्ठी तथा गोटे किनारी का काम होता है।
मेसर्स—छोटेलाल अबीरचन्द जौहरी बाजार, आगरा T. A. Khusdil	यहाँ चाँदी सोना तथा बने हुए जेवर का काम होता है।
मेसर्स—चाँदमल रूपचन्द जौहरी बाजार, आगरा T. A. Sikpar T. No. 117	यहाँ चाँदी-सोना का थोक व्यापार होता है।

मेसर्स बैजनाथ सराफ़

इस फर्म के वर्तमान संचालक लाला बैजनाथजी हैं। आप अग्रवाल वैश्य समाज के सज्जन हैं। आप बहुत मामूली परिस्थिति के व्यक्ति थे। आपके पिता लाला भिकामलजी आगरे ही में हलवाई की दुकान करते थे। बैजनाथजी ने संवत् १९४० में पहले पहल सेठ रामचन्द्र शंकरलाल नामक फर्म पर ४) मासिक में नौकरी की। पश्चात् धीरे २ आपकी उन्नति होती गई और ५०) मासिक तक आपकी तनख्वाह हो गई। आपकी होशि-

यारी और कार्य्य-चतुरता से प्रसन्न होकर उपरोक्त फर्म के संचालक ने आपका फर्म में पार्ट कर दिया। संवत् १९७७ तक आप पार्टनर के रूप में काम करते रहे। पश्चात् साझा अलग अलग हो गया। तभी से आप अपने साझे की २ लाख रुपयों की पूँजी से बैजनाथ सराफ के नाम से व्यापार करने लगे। संवत् १९७८ में आपने मेसर्स बैजनाथ बेणीप्रसाद के नाम से कपड़े की फर्म खोली। संवत् १९८३ में आपने Hawro Trading Co. greman नामक कम्पनी की रंग की एजंसी ली। १९८६ में फिर आपने चाँदी सोने के बने हुए माल की बिक्री के लिये मेसर्स रामबाबू प्रभुदयाल के नाम से फर्म स्थापित की। मतलब कहने का यह है कि साधारण स्थिति से निकल कर अपनी व्यापार चतुरता से आपने बहुत सम्पत्ति उपार्जन की। आप सरल एवं मिलनसार स्वभाव के हैं। आपकी आयु ५८ वर्ष की है। आपके ७ पुत्र हैं। जिसमें तीन पढ़ते हैं शेष चार व्यापार में भाग लेते हैं। सातों के नाम क्रमशः बेणी-प्रसादजी, मदनलालजी, पद्मचन्दजी, रमणलालजी, राम बाबू, प्रभुदयाल एवं हीरालाल हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स—बैजनाथ सराफ किनारी बाजार आगरा	फर्म का हेड आफिस है। यहाँ बैंकिंग तथा सोने चाँदी का थोक एवं खुदरा व्यापार होता है।
मेसर्स—बैजनाथ वेणीप्रसाद रावतपाड़ा, आगरा	यहाँ कपड़े का थोक व्यापार एवं रंग की एजंसी का काम होता है।
मेसर्स—रामबाबू प्रभुदयाल किनारी बाजार आगरा	यहाँ चाँदी सोने के बने हुए जेवरों का व्यापार होता है।

लोहे के व्यापारी

मेसर्स वंसीधर सुमेरचन्द एण्ड को०

इस फर्म के मालिक आगरा ही के निवासी हैं। आप लोग लमेचू दिगम्बर जैन समाज के सज्जन हैं। आप लोगों को यहाँ आये करीब १५० वर्ष हुए। इसके पहले आप इटावा मे निवास करते थे। यह फर्म यहाँ सन् १८७० में स्थापित हुई। पहलेइस पर मेसर्स चिरंजीलाल वंसीधर नाम पड़ता था। अब उपरोक्त नाम से कारवार होता है। मेसर्स चिरंजीलाल वंसीधर की फर्म के पहले वेनीराम चुन्नीलाल के नाम से रुई का काम होता था।

इस फर्म की विशेष उन्नति सेठ सुमेरचंदजी तथा सूरजभानजी के हाथों से हुई। आप लोग व्यापारकुशल सज्जन एवं मेधावी व्यक्ति हैं। आप ही इस समय इस फर्म के मालिक एवं संचालक हैं। आप लोगों का सामाजिक एवं धार्मिक कार्यों मे बहुत हाथ रहता है।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

आगरा—मेसर्स बंसीधर सुमेरचंद एण्ड को बेलन गंज T. A. Tubes. T. Ph. 69	यहाँ लोहे के सब प्रकार के सामान मिल, जीन स्टोअर आदि का व्यापार तथा गव्हर्नमेंट कंट्राक्ट का काम होता है। इसके अतिरिक्त वारनिश और पेंट का काम भी होता है।
आगरा—दी वारोलिया इलेक्ट्रिकल कंपनी बेलन गंज T. A. Light.	यहाँ कंट्राक्टर्स और इलेक्ट्रिक इम्पोर्ट्स का काम होता है।

मेसर्स भीकामल छोटेलाल

इस फर्म के मालिक अग्रवाल वैश्य समाज के लोहिया जैन सज्जन हैं। इस फर्म का स्थापन सन् १८७५ में लाला छोटेलालजी ने किया। इसके पहले आप दूसरे के साझे में व्यापार करते थे। आपके समय में फर्म की साधारण उन्नति हुई। आपके समय से ही आपके पुत्र लाला लेखराजजी फर्म के कार्य का संचालन करने लग गये थे। लाला लेखराजजी बड़े चतुर, व्यापारकुशल, सज्जन एवं मिलनसार व्यक्ति थे। आपने केवल १४ वर्ष की आयु से व्यापार प्रारंभ किया और अपनी व्यापार-कुशल नीति से लाखों रुपयों की सम्पत्ति एवं यश उपार्जन किया। आपने रेल्वे से बड़े २ कंट्राक्ट किये। समय २ पर गवर्नमेंट से भी बहुत से कंट्राक्ट लेकर समय पर काम किया। कई भारतीय राज्यों में भी आपने अपने माल को सप्लाय किया। इसी व्यापार मे आपने बहुत रुपया कमाया। आपका ध्यान व्यापार की ही ओर रहा हो सो बात नहीं थी। सामाजिक एवं धार्मिक कार्यों में भी आप बहुत योग देते थे। कई सार्वजनिक संस्थाओं को समय २ पर अच्छी आर्थिक सहायता प्रदान करते थे। आपके द्वारा कई गुप्त दान भी हुए। कहने का मतलब यह कि आप बड़े प्रतिभाशाली एवं धर्मात्मा व्यक्ति हो गये हैं। आपका स्वर्गवास संवत् १९८१ में हुआ। आपकी मृत्यु के समय आपको किसी प्रकार का कष्ट अनुभव नहीं हुआ।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक लाला लेखराजजी के पुत्र लाला रतनलालजी हैं। आपने २१ वर्ष की वय से व्यापार-क्षेत्र में प्रवेश किया। आपने अपने हाथों से अपनी फर्म की और भी ब्रॉंचेज खोलीं। साथ ही लोहे के फेन्सी इमारती सामान बनाने का एक कारखाना भी खोला। आपने वारनिश और पेंट की भी एक दुकान स्थापित की। आपका खयाल हमेशा

व्यापारकुशल सज्जन हैं। सामाजिक

स्व० लाला लेखराजजी जैन (भीखामल छोटेलाल) आगरा

।फिस है। तथा पेंट, टाईल्स, लोहा एवं
का काम होता है। यहाँ कारखाने के
ल का व्यापार भी होता है।

ानी के आयरन वर्क्स की तथा विलायती
लोहे के माल की बिक्री का काम होता है।

' फैंसी इमारती लोहे के सामान का
ा है।

एण्ड को०

सल गोत्रीय सज्जन हैं। इसका स्थापन
। इसके पहले आपके पिताजी सोना
कम्पनी ने मारबल, फोटो, एवं प्रिंटिंग
ुद्धिमानी एवं व्यापारकुशल नीति से
भाई और हैं। जिनके नाम क्रमशः
ी सीतारामजी तथा बालकृष्णजी हैं।
रामगोपालजी तथा शालिगरामजी
णजी प्रिंटिंग का एवं श्यामसुन्दर-

[illegible] जैन (भीखामल छोटेलाल) आगरा

कराना (जोधपुर स्टेट) में है। वहाँ
दि वस्तुओं के सुन्दरतापूर्वक बनाने
भी तीन मशीनें हैं। इस फैक्टरी में
का पत्थर खदान से उठा देती है।
ा फ्री दी है। यह फर्म इस काम में

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है :—

मेसर्स—आर० जी० बांसल एण्ड को०
कसेरा बाजार आगरा
T. A. Tajmodal
— यहाँ फर्म का हेड आफिस है। यहाँ फैक्टरी से बनी हुई संगमरमर की फैन्सी वस्तुओं की बिक्री का काम होता है। साथ ही फोटोग्राफी एवं प्रिंटिंग प्रेस का काम भी होता है।

मेसर्स—आर० जी० बांसल एण्ड को०
मकराना (जोधपुर)
J. B. Ry. T. A. "Bansal"
— यहाँ फेक्टरी है। माल तैयार करवाकर बाहर सप्लाय किया जाता है तथा आर्डर आने पर जैसा चाहे बनवा दिया जाता है।

आपकी ओर से यहाँ श्री राधिका वंशीवटबिहारीजी का रावतपाड़ा में मंदिर बना हुआ है।

गोटा किनारी के व्यापारी

मेसर्स गुलाबचन्द धन्नालाल

इस फर्म के मालिकों का मूल निवासस्थान नागौर है। आप लोग ओसवाल समाज के सुराना सज्जन हैं। इस परिवार को यहाँ आये करीब ३०० वर्ष हुए। पर उपरोक्त फर्म संवत् १९१४ मे सेठ गुलाबचन्दजी ने एक सज्जन के साझे में खोली। उस समय इस फर्म पर मेसर्स गुलाबचन्द मोतीलाल के नाम से कारबार होता था। शुरू से ही इस फर्म पर लेस तथा गोटा किनारी का काम होता चला आ रहा है। संवत् १९४६ में साझा अलग २ हो जाने से सेठ गुलाबचन्दजी ने अपनी फर्म का नाम मेसर्स गुलाबचन्द धन्नालाल रक्खा। जो इस समय वर्तमान है। सेठ गुलाबचन्दजी के २ पुत्र हुए। बाबू धन्नालालजी एवं श्रीयुत बाबूलालजी इनमें से बाबू धन्नालालजी का सं० १९८५ में ही स्वर्गवास हो गया। सेठ गुलाबचंदजी व्यापार का सारा कारबार अपने छोटे पुत्र बाबूलालजी पर छोड़कर शांतिलाभ करते हैं।

वर्तमान में इस फर्म का संचालन श्रीयुत बाबूलालजी करते हैं। आप ऊँचे विचारों के व्यापारकुशल एवं मेधावी सज्जन हैं। आपके २ पुत्र हैं। जिनके नाम क्रमशः निर्मलचन्दजी, और नौरतनमलजी हैं।

इस फर्म के काम को देखकर लार्ड चेम्सफोर्ड, लार्ड रीडिंग, लार्ड इरविन, बंगाल गवर्नर लार्ड लिटन आदि कई हाइ युरोपियन आफिसर्स और कई दूसरे व्यक्तियों ने प्रशंसापत्र दिये हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

मेसर्स—गुलाबचन्द धन्नालाल किनारी बाजार आगरा T. A. Lace	यहाँ गोटा, किनारी, लेस एवं कलाबत्तू का व्यापार होता है। इस फर्म का निज का कारखाना है। इसके द्वारा गवर्नमेंट आफिसों एवं वाइसराय आदि के यहाँ की वर्दियों में लगाने के लिये लेस के सप्लाय का काम होता है।

मेसर्स बुद्धिसिंह मोहनलाल

संवत १९२८ में लाला मोहनलालजी के द्वारा इस फर्म का स्थापन हुआ। आप अग्रवाल वैश्य समाज के सज्जन हैं। शुरू से ही यह फर्म गोटा-किनारी का काम करती आ रही है। इस फर्म की विशेष उन्नति आप ही के हाथों से हुई। आपका स्वर्गवास सम्वत् १९५३ में हुआ। आप बड़े मेधावी एवं व्यापारकुशल व्यक्ति थे। आपने आगरे में कैलाश महादेव पर एक स्नान धर्मार्थ बनवाया। सौंरोजी में पब्लिक उपयोग के लिये एक बगीचे का निर्माण कराया। महादेव मणकामेश्वर में भी आपने संगमरमर की फर्श जड़वाई तथा सीढ़ियाँ बनवाई। तथा वतपाड़ा में आपने एक मन्दिर राधामोहनलालजी का बनवाया। उसके खर्च के लिये आपने एक मकान खरीद कर दे दिया। इसी प्रकार कई सार्वजनिक धार्मिक कार्यों में सहयोग दिया ... आपने दौहित्र को करीब ८० हजार का माल एवं मकान दिया। आपके ... जी ने सम्हाला। आपका भी संवत १९६७

लाला राजनारायणजी (बुद्धिसिंह मोहनलाल) आगरा
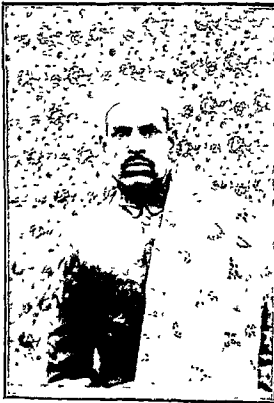
...जनारायणजी हैं। आप सज्जन एवं मिलन-... देखरेख में व्यापार का संचालन करते हैं।

—

...गोटा-किनारी, जरी का बना माल एवंम आढ़त ... काम होता है। बैंकिंग और जमीदारी का ... भी यहीं होता है।

—

...सर्स तेजपाल जमुनादास

„ नन्दराम छोटेलाल

„ पुरुषोत्तमदास मक्खनलाल

मेसर्स मथुरादास पद्मचन्द
,, मूलचन्द नेमीचन्द
,, सीताराम श्रीकृष्णदास
,, सोनपाल मुन्नालाल
,, हजारीलाल गनेशीलाल
,, हरीबक्स सूरजमल

शक्कर के व्यापारी

मेसर्स गंगाप्रसाद रतनलाल
,, गयाप्रसाद बिहारीलाल
,, तुलसीराम शाह
,, मनोरथभगत ध्यानराम
,, स्वार्थराम रामस्वरूप

लोहे के व्यापारी

मेसर्स पूरनचन्द एण्ड को०
,, बंशीधर सुमेरचन्द
,, भीखामल छोटेलाल
,, शीतल प्रसाद एण्ड को०

सूत के व्यापारी

मेसर्स वृद्धिचन्द्र इन्द्रचन्द्र
,, बंशीधर गंगाप्रसाद
,, मक्खनलाल नारायणदास

मेसर्स मक्खन लाल रामस्वरूप
,, शिवप्रसाद सादानी
,, सुरजमल चन्दूलाल

किराने के व्यापारी

मेसर्स गोपीनाथ विश्वम्भरनाथ
,, तुलसीराम सीताराम
,, मुन्नालाल बाबूलाल
,, शीतल प्रसाद खुन्नीमल

जीरा के व्यापारी

मेसर्स डूँगरसीदास केदारनाथ
,, तनसुखराय अनन्दराम

गोटे के व्यापारी

मेसर्स बुद्धसिंह मोहनलाल
,, गुलाबचन्द छोटेलाल

सोने चाँदी के व्यापारी

मेसर्स छोटेलाल अमीरचन्द
,, बाँकेलाल बिहारीलाल
,, बैजनाथ सराफ
,, रामचन्द्र शंकरलाल
,, राधेलाल बालमुकुन्द

मथुरा

मथुरा इतिहासप्रसिद्ध और पुराणों में प्रख्यात प्राचीन नगर है। यह नगर ब्रजमण्डल के अन्तर्गत है। राधाकृष्ण की जिस प्रेमलीला ने भारत भर के साहित्य और काव्य को सम्पन्न और संजीवित कर रक्खा है, जिसकी प्रतिध्वनि भारत के घर घर में गूँज रही है उस प्रेमलीला का स्थान मथुरा ही है। यह स्थान यमुना के तीर पर बसा हुआ है। प्राचीन आर्य्य युग की तरह बौद्ध युग में भी यह स्थान बड़ा महत्व-पूर्ण रहा और उसके पश्चात् मुसलमान आक्रमणकारियों के भी यहाँ पर बहुत से आक्रमण हुए। जिनकी वजह से, आर्य्ययुग की कई स्मृतियाँ नष्ट हो गईं। जिनके ध्वंसावशेष अब खोद कर निकाले जा रहे हैं। इस समय इस तीर्थ स्थान में यमुनाबाग की छतरी, होली दरवाजा तोरण, राधाकृष्ण का मन्दिर, विजयगोविन्द का मन्दिर, मदनमोहन का मन्दिर, दीर्घविष्णु का मन्दिर, बिहारीजी का मन्दिर, मोहनजी का मन्दिर, विश्रामघाट इत्यादि स्थान दर्शनीय हैं।

मथुरा से करीब छः माइल की दूरी पर कृष्ण का प्यारा स्थान वृन्दावन बसा हुआ है। मथुरा यदि ऐश्वर्य की लीलाभूमि है तो वृन्दावन माधुर्य्य का विश्राम-स्थल है। यह वही वृन्दावन है जिसकी भूमि के रजःकण तक विशालनयनी गोपवधूटियों के प्रेमोद्गारों से प्रेम-प्लावित हो चुके हैं। जिस समय गोपबालकों के सिंगे की ध्वनि से वृन्दावन मुखरित होता था, वह समय भारत के लिए कितना सुन्दर और मन मोहक था, वे दिन अब नहीं रहे, पर उनकी स्मृति काल के कुटिल चक्र की अवहेलना करती हुई आज भी भारतवासियों के मस्तिष्क में ज्यों की त्यों अङ्कित है।

व्यापारिक परिचय

मथुरा एक तीर्थ स्थान है। व्यापारिक क्षेत्रों मे इसकी गणना नहीं हो सकती। फिर भी यहाँ सुखसंचारक कम्पनी, सुन्दर श्रृंगार कम्पनी, नागर ब्रदर्स इत्यादि कई कम्पनियाँ ऐसी हैं जिनकी औषधियों का प्रचार सारे भारतवर्ष में है। इनकी वजह से व्यापारिक जगत् में मथुरा का अच्छा नाम है। इसके अतिरिक्त यहाँ निवार व सूत की रस्सियाँ भी अच्छी बनती हैं।

यहाँ के व्यापारियों का परिचय इस प्रकार है:—

मेसर्स काशीराम जौहारमल

वर्तमान में इस फर्म के मालिक ला० प्रभुलालजी एवं प्यारेलालजी हैं। आप खण्डेलवाल वैश्य समाज के सज्जन हैं। यह फर्म करीब ५० वर्ष पूर्व स्थापित हुई थी। इस पर पहले मेसर्स गोपीनाथ काशीराम के नाम से व्यापार होता था। इस फर्म के पूर्व संचालक ला० काशीरामजी और जौहारमलजी के द्वारा इस फर्म की बहुत उन्नति हुई। जौहारमलजी ने अपने व्यवसाय को खूब बढ़ाया। आपने निज की जीनिंग और प्रेसिंग फैक्टरियाँ भी स्थापित कीं। आपका स्वर्गवास हो गया है।

इस समय फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

मथुरा—मेसर्स काशीराम जौहारमल केलनन गंज T. A. Gvind	यहाँ हेड आफिस है। तथा रुई, गल्ला आदि का व्यापार और आढ़त का काम होता है।
मथुरा—मे० जवाहरमल गयाप्रसाद हालनगंज	" " "
मथुरा—मे० लक्ष्मीचंद प्रभुलाल शाहगंज दरवाजा	यहाँ जीन और प्रेस है तथा रुई का काम होता है।
कोसीकलां (मथुरा) मे० प्रभुलाल प्यारेलाल	यहाँ आपकी कॉटन जीनिंग फैक्टरी है तथा रुई का व्यापार होता है।

दी गोपाल क्लॉथ प्रिंटिंग कम्पनी

इस कम्पनी की स्थापना आज से करीब ५ वर्ष पूर्व हुई। इसकी वर्तमान मालिक यहाँ की प्रसिद्ध फर्में हैं जिनका नाम मेसर्स नारायणदास हरदेवदास, मेसर्स गनेशीलाल भीनामल एवं भरतपुर के हरसेवक वासुदेव हैं। ये तीनों फर्में बहुत समय पूर्व से ही कपड़े का व्यापार करती आ रही हैं। इस कम्पनी में छपाई का काम होता है। यहाँ की छपाई भारतप्रसिद्ध है। इस फर्म की आप लोगों के द्वारा अच्छी तरक्की हुई है। साथ ही आप लोगों ने कई नये तर्ज के डिजाइन भी निकाले हैं। अपने माल की विशेष बिक्री के लिये इसकी एक शाखा बम्बई में भी स्थापित की गई है।

वर्तमान में इसका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

मथुरा—दी गोपाल क्लॉथ प्रिंटिंग कम्पनी	यहाँ बढ़िया डिजाइन के छपे हुए सभी प्रकार के देशी, रेशमी कपड़े तैयार होते हैं। रंग की पक्काई के लिये कम्पनी गेरंटी करती है।
बम्बई—दी गोपाल क्लॉथ प्रिंटिंग कम्पनी चिमनलाल की चाल, भोलेश्वर	यहाँ मथुरा का छपा हुआ कपड़ा जैसे साड़ी, धोती वगैरह की बिक्री का काम होता है।

मेसर्स गनेशीलाल मीनामल

इस फर्म के वर्तमान मालिक ला० लल्लोमलजी एवं ला० केशवदेवजी हैं। आप यहाँ के प्रतिष्ठित रईस, जमींदार और बैंकर हैं। ला० लल्लोमलजी स्थानीय म्युनिसिपेलिटी के चेअरमेन हैं। आपका हाथरस के लल्लामल हरदेवदास नामक मील में साझा है। आपने मथुरा में जी० आई० पी० लाईन के पास एक धर्मशाला बनवाई है। वर्तमान में इस फर्म पर बैंकिंग एवं जमींदारी का काम होता है। यहाँ की गोपाल क्लाथ प्रिंटिंग कम्पनी में इस फर्म का साझा है।

मेसर्स नारायणदास हरदेवदास

इस फर्म का स्थापन करीब १०० वर्ष पूर्व खत्री समाज के सेठ नारायणदासजी एवं आपके पुत्र सेठ हरदेवदासजी के द्वारा हुआ। आप लोगो के समय में फर्म की अच्छी उन्नति हुई। शुरू २ में आपने कपड़े का व्यापार प्रारंभ किया था। आप लोगों का स्वर्गवास हो गया है। सेठ हरदेवदासजी के सामने ही उनके पुत्र केदारनाथजी का भी स्वर्गवास हो गया था। अतएव आपके पश्चात् इस फर्म का संचालन सेठ केदारनाथजी के पुत्र कुन्दनदासजी ने संचालित किया। आपके समय में इस फर्म ने बहुत प्रगति की। आप यहाँ के नामांकित व्यक्ति हो गये हैं।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक आपके पुत्र सेठ गोवर्धनदासजी, सेठ जमनादासजी एवं सेठ लक्ष्मणदासजी हैं। आप लोग योग्यता से फर्म का संचालन कर रहे हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है :—

मथुरा—मेसर्स नारायणदास हरदेवदास चौक	यहाँ बैंकिंग, गल्ला, रुई आदि का व्यापार और आढ़त का काम होता है।

मथुरा—मेसर्स नारायणदास हरदेवदास केलननगंज	यह फर्म इम्पिरियल बैंक मथुरा ब्रांच की ट्रेझरर है।

इसके अरिरिक्त दी गोपाल क्लाथ प्रिंटिग कम्पनी में इस फर्म का साझा है।

मेसर्स एल० पी० नागर एण्ड को०

यह कम्पनी सन् १९१० से स्थापित है। इसके स्थापक श्रीलक्ष्मीप्रसादजी नागर हैं। आप उन लोगो में से हैं जो अपने ही पैरों पर खड़े होकर सफलता प्राप्त करते हैं। आपने शुरू २ में १००) से अपना व्यवसाय आरंभ किया था। आपकी व्यापार-चातुरी से ही आपने इतनी उन्नति की है। आपकी विशेष उन्नति "संकट मोचन" नामक दवा से हुई। इस समय आपके तीन पुत्र हैं जिनके नाम कृष्णकांत, शिशिरकांत एवं रविकांत है। आपके बड़े पुत्र पुरुषोत्तमलाल का स्वर्गवास हो गया। आप बड़े होनहार थे। कंपनी की तरक्की का श्रेय आप ही को है। वर्तमान मे कम्पनी का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है :—

मथुरा—एल० पी० नागर एण्ड को० चीया मंडी T. A. Nagar	यहाँ दवाईयों की बिक्री का काम होता है। आपके कई हजार एजंट हैं। इसी नामसे यहाँ आपका प्रिंटिंग प्रेस भी है।

मेसर्स बेंकामल निरंजनदास

इस फर्म के मालिक लाला निरंजनदासजी ए० एम० एस० टी, बी० एस सी० हैं। यह फर्म यहाँ पर काटन का व्यवसाय करती है। यहाँ आपकी जीन प्रेस फैक्टरी भी है। इसका अधिक परिचय हमारे ग्रन्थ के प्रथम भाग के बम्बई विभाग पृष्ठ ७२ पर मेसर्स राय नागरमल गोबीमल के नाम से देखिये। यहाँ तार का पता Pawan है।

मेसर्स रूपचंद गोवर्धनदास

इस फर्म के मालिक माहेश्वरी वैश्य-समाज के जेसलमेर निवासी सज्जन हैं। करीब १२५ वर्ष पूर्व इस फर्म की स्थापना सेठ रूपचंदजी के द्वारा हुई। इसकी उन्नति का साधारण श्रेय आपको तथा आपके पुत्र गोवर्धनदासजी को है। मगर इसका विशेष श्रेय गोवर्धनदासजी के पुत्र और इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ भिखचंदजी को है। आप यहाँ के प्रतिष्ठित नागरिक, रईस एवं जमींदार हैं। आप २४ वर्षों से आनरेरी मेजिस्ट्रेट हैं। आप डिस्ट्रिक्ट-बोर्ड के चेयरमेन भी हैं। आपके २ पुत्र हैं बा० रूपकिशोरजी एवं छगनलालजी। बा० रूपकिशोरजी भी

पं० क्षेत्रपालजी शर्मा (सुख संचारक कम्पनी) मथुरा

सेठ अमृतलालजी रानीवाला (अमृतलाल गुलजारीलाल) फिरोजाबाद।

लाला जगन्नाथदासजी (सुंदर श्रृंगार आफिस) मथुरा

सेठ गुलजारीलालजी रानीवाला (अमृतलाल गुलजारीलाल) फिरोजाबाद

यहाँ के प्रसिद्ध व्यक्तियों में से हैं। आप भी आनरेरी मेजिस्ट्रेट एवं म्युनिसिपेलिटी के तथा कोआपरेटिव्ह बैंक के वाईस चेअरमेन हैं। आप फ्री मेसन के भी मेम्बर हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

मथुरा—मेसर्स रूपचन्द गोवर्धनदास	यहाँ बैंकिंग और जमींदारी का काम होता है।
मथुरा—भीखचन्द रूपकिशोर	यहाँ स्टेंडर्ड आईल कम्पनी एवं बर्माशेल की मथुरा जिले के लिये तेल की एजंसी है।

मेसर्स सुखसंचारक एण्ड को०

इस फर्म की स्थापना लगभग ४० वर्ष पूर्व मथुरा निवासी पं० क्षेत्रपालजी शर्मा ने की। वर्तमान में आप ही इसके प्रधान संचालक एवं मालिक हैं। आपने अपनी औद्योगिक प्रतिभा एवं व्यापार चातुरी से इस फर्म की बहुत उन्नति की। शुरू २ में आपने साबुन बनाने का काम प्रारंभ किया। इसमें आपको साधारण सफलता मिली। इसके पश्चात् आपने औषधि-निर्माण-कार्य शुरु किया। इस व्यवसाय में आपको अच्छी सफलता मिली। अपनी प्रसिद्ध औषधि सुधासिंधु से आपने लाखों रुपये कमाये। इसके पश्चात् आपने विलायत से फेंसी गुड्स एवं घड़ियो का डायरेक्ट इम्पोर्ट प्रारंभ किया। इसीके साथ आपने भारतीयों की अभिरुचि के अनुसार ग्रामोफोन रेकार्ड भी भर कर मँगवाये एवं प्रचार किया। इस व्यवसाय में आपको सब से अधिक सफलता मिली और धीरे २ कम्पनी की स्थिति मजबूत और सुदृढ़ होती चली गयी। आपका काम इस समय इतना बढ़ गया कि छपाई वगैरह के लिये प्रेस की आवश्यकता महसूस हुई और इसके प्रमाण-स्वरूप आपने एक विशाल प्रस की भी स्थापना की। इस प्रकार उन्नति करते हुए आप आजकल यहाँ के प्रतिष्ठित व्यापारियों मे से हैं।

सार्वजनिक कार्यों की ओर भी आपकी बड़ी रुचि रही है। आपने यहाँ गरीबों के लिये बहुत से सुभीते किये हैं। गरीबों के प्रति आपका अच्छा व्यवहार रहता है। इतनी सम्पत्ति प्राप्त करने पर भी आपमें किसी प्रकार का अहंकार नहीं है। आप सादे, सरल एवं मिलनसार स्वभावी हैं। आपके तीन पुत्र हैं जिनके नाम विश्वपालजी, शक्तिपालजी एवं व्रिजेन्द्रपालजी हैं। पं० विश्वपालजी भी फर्म के संचालन में योग देते है।

पं० क्षेत्रपालजी ने यहाँ अपने आफिस आदि के लिये तीन चार भव्य इमारतें बनवाई हैं। एक में आपका आफिस है, दूसरी में सुखसंचारक पोस्ट-आफिस एवं प्रेस डिपार्टमेंट है। तीसरी बिल्डिंग में भी आपका आफिस जा रहा है। वर्तमान आफिस के नीचे आपका शोरूम भी बना हुआ है।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

मथुरा—सुखसंचारक कम्पनी — यहाँ घड़ियाँ, दवाइयाँ, पुस्तकें, स्त्रियों एव बच्चों के तैय्यार कपड़े, म्युजिकल इन्स्ट्रूमेंट्स, इम्ब्राइडरी गुड्स, रबर स्टाम्प, प्रिंटिंग, टाईप फाउंडरी आदि का व्यापार एवं काम होता है। यहाँ इलेक्ट्रिक ट्रीटमेंट भी किया जाता है। आपके भारत के सिवा विदेशों में भी हजारों एजंट हैं।

सुन्दर शृंगार कार्यालय

इस कार्यालय के वर्तमान मालिक ला० जगन्नाथदासजी वैश्य एवं आपके पुत्र बा० सूरजभानजी, बा० चन्द्रभानजी एवं फूलचन्दजी हैं। फर्म संचालन आप स्वयं तथा बा० सूरजभानजी करते हैं। इस कार्यालय की स्थापना सन् १८८२ में ला० जगन्नाथदासजी के द्वारा हुई। शुरु २ में आपने ठाकुरजी के शृंगार का सामान बनाना प्रारंभ किया। इसमें आपको अच्छी सफलता हुई अतएव इसीको आपने और बढ़ाया। इसके पश्चात् रामलीला, रासलीला आदि के उपयोगी सब प्रकार की ड्रेस एवं सामान का काम आपने अपने हाथ में लिया। कहना न होगा कि इसमें भी आपने अच्छी सफलता प्राप्त की और कार्यालय की स्थिति को मजबूत एवं दृढ़ कर आपने अपने व्यवसाय को और फैलाया। आपने अपने यहाँ दवाइयों के बनाने का काम तथा पेटेन्ट दवाइयाँ बाहर से मंगवाने का काम भी जारी किया आपने अपनी प्रसिद्ध औषधि पीयूषसिन्धु से बहुत रुपया कमाया। इस समय आपका काम इतना बढ़ा है कि विज्ञापन वगैरह छापने के लिये एक प्रेस की आवश्यकता हुई और आपने एक स्टीम प्रेस स्थापित भी कर दिया। कुछ समय के पश्चात् इसमें प्रकाशन का भी काम होने लग गया।

इस समय कार्यालय का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

मथुरा—सुन्दर शृंगार कार्यालय
घिया मंडी
T. A. "Sundergar" — यहाँ सभी प्रकार के नाटक, रामलीला, रासलीला, एवं ठाकुरजी के शृंगार के सामान का व्यापार होता है। गोटे एवं सलमे सितारों के हार भी यहाँ बनाए जाते हैं। इसके अलावा प्रिंटिंग का काम तथा प्रकाशित पुस्तकों की बिक्री का व्यापार होता है। दवाइयाँ भी हमेशा मिलती हैं। इसका यहाँ शोरूम भी है।

फिरोजाबाद

फिरोजाबाद पुरानी बस्ती है। यह ई० आई० आर० की मेनलाईन पर अपने ही नाम के स्टेशन से आधा मील की दूरी पर स्थित है। यह यू० पी० प्रांत के आगरा जिले का अच्छा व्यापारिक स्थान माना जाता है। यहाँ प्रधान व्यापार काटन और कांच का है। काटन को जीन करने एवं प्रेस करने के यहाँ कई कारखाने हैं। काँच के भी करीब २५ कारखाने हैं। सन् १९०८ के पहले यहाँ देशी ढंग से चूड़ियाँ बनाई जाती थीं। इसी साल से यहाँ ग्लास वर्क्स खुलना शुरू हुए और आज तो इनकी संख्या २५ तक पहुँच गई। इसके अतिरिक्त यहाँ २०० भट्टियाँ भी चलती हैं। इन कारखानों में विशेष कर रंगीन चूड़ियाँ तैय्यार होती हैं। इसके अलावा कांच के और भी कई प्रकार के फैन्सी सामान भी बनते हैं।

यहाँ के कल-कारखाने इस प्रकार हैं—

१ अमृतलाल गुलझारीलाल जिनिंग फैक्टरी—इसमें १३२ आदमी काम करते हैं तथा ४८ जीन हैं।
२ अमृतलाल गुलजारीलाल प्रेस फैक्टरी—इसमें ४३ आदमी काम करते हैं।
३ चतुरवेदी मिल्स कं० लिमिटेड—इसमें ७० आदमी काम करते हैं तथा २० जीन चलते हैं।
४ वैश्य फ्लोअर एण्ड जिनिंग मिल्स कं०—इसमें २० जीन एवं ३५ आदमी काम करते हैं।
५ रामचन्द्र मटरूमल कॉटन जिनिंग एण्ड प्रेसिंग फैक्टरी—इसमें ४८ जीन चलते हैं। तथा १३२ आदमी काम करते हैं।

काँच के कारखाने

१ इंडियन ग्लास वर्क्स
२ कोरोनेशन ग्लास वर्क्स
३ कादिर बक्ष ग्लास वर्क्स
४ गोपीनाथ जौहरीमल ग्लास वर्क्स
५ फ्रैण्ड ग्लास वर्क्स
६ मनीलाल ग्लास वर्क्स
७ हनुमान ग्लास वर्क्स

तेल के मिल

१ अमृतलाल गुलजारीलाल आईल मिल
२ दयामल दाऊमल आईल मिल

यहाँ के व्यापारियों का परिचय इस प्रकार है:—

मेसर्स अमृतलाल गुलजारीलाल

इस फर्म के वर्तमान संचालक सेठ श्रीधरजी एवं सेठ पूरनचन्दजी हैं। आप लोग अग्रवाल वैश्य समाज के जैनी सज्जन हैं। इस फर्म के पूर्वपुरुष रानी से खुरजा गये और वहाँ से करीब ६० वर्ष पूर्व यहाँ आये। इस फर्म के स्थापक सेठ माणकचन्दजी के पुत्र अमृतलालजी

थे। आपके ६ भाई और थे। सब भाइयों का ज्वाइण्ट रूप में व्यापार होता था। उस समय यह फर्म भारतवर्ष की चुनी हुई फर्मों में से एक थी। कई स्थानों पर इसके जीनिंग प्रेसिंग कारखाने एवं शाखाएँ थीं। ब्यावर का एडवर्ड मील भी इसी फर्म के पास था। सातों भाईयों के अलग २ हो जाने से सेठ अमृतलालजी के हिस्से में यह फर्म आयी। आपके पश्चात् फर्म का संचालन आपके पुत्र सेठ गुलजारीलालजी ने किया। आपने भी इस फर्म की बहुत उन्नति की। आप व्यापारचतुर पुरुष थे। आपका स्वर्गवास संवत् १९७० में होगया। आपने अपने जीवनकाल में यहाँ एक कोरोनेशन ग्लॉस वर्क्स के नाम से एक काँच का कारखाना भी खोला था जो आज भी सुचारु रूप से चल रहा है। आपने सार्वजनिक कार्यों की ओर भी बहुत ध्यान दिया। आपकी ओर से जैनतीर्थ सोनागिरी में २ धर्मशालाएँ बनी हुई हैं। करीब १॥ लाख रुपैया फर्म की ओर से दान किया गया जो धार्मिक कार्यों में खर्च होता है। इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ श्रीधर लालजी ने यहाँ एक तेल का मिल भी स्थापित किया है। आप सज्जन और मिलनसार महानुभाव हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

फिरोजाबाद—मेसर्स अमृतलाल गुलजारीलाल रानीवाले T. A. Raniwala	यहाँ बैंकिंग, गल्ला, रूई, तिलहन, बाना आदि का व्यापार होता है। यहाँ आप की एक जीनिंग और प्रेसिंग फैक्टरी तथा ग्लास वर्क्स और तेल मिल है।

मेसर्स गोपीराम रामचंद्र

इसका हेड् आफिस कलकत्ता है। यहाँ यह फर्म आढ़त का काम करती है। अधिक परिचय के लिये हमारे इसी ग्रन्थ के प्रथम भाग में बम्बई विभाग के पृष्ठ ४४ को देखिये।

मेसर्स मूलचन्द पुरुषोत्तमदास

इस फर्म के स्थापक सेठ मूलचन्दजी हैं। आप अग्रवाल वैश्य समाज के सज्जन हैं। पहले इस फर्म पर सेठ मूलचन्द के नाम से व्यापार होता था। जब से आपने श्री पुरुषोत्तमदासजी को दत्तक लिया है, तबसे उपरोक्त नाम से कारबार होता है। इस फर्म की ओर से यहाँ शहर में एक सुन्दर धर्मशाला बनी हुई है।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

फिरोजाबाद—मेसर्स मूलचंद पुरुषोत्तमदास	यहाँ बैंकिंग और कपड़े का व्यापार होता है।

मेसर्स रामचन्द्र मटरूमल

इस फर्म का हेड आफिस कलकत्ता है। वहाँ यह फर्म प्रतिष्ठित फर्मों में मानी जाती है। इसका वहाँ कॉटन मिल भी है। इसके वर्तमान मालिक सेठ तोलारामजी, गौरीशंकरजी एवं कन्हैयालालजी गोयनका हैं। इसका विस्तृत परिचय इसी ग्रंथ के द्वितीय भाग में कलकत्ता विभाग के पेज नं० २४० में दिया गया है। यहाँ यह फर्म रूई का व्यापार करती है। यहाँ इसकी एक जीनिंग फैक्टरी भी है।

मेसर्स हजारीलाल रोशनलाल

इस फर्म के वर्तमान मालिक पं० हजारीलालजी चतुर्वेदी एवं आपका कुटुम्ब है। इस फर्म की स्थापना आप ही के द्वारा हुई। आप शिक्षित, मिलनसार एवं व्यवसायकुशल सज्जन हैं। आपके यहाँ पहले जमींदारी का काम होता था, आपने ही व्यवसाय में कदम रखा। व्यापारिक सज्जन होने से आपने अपने व्यापार की क्रमशः अच्छी उन्नति की। शुरू में आपने चतुर्वेदी काटन कं० लि० खोली। इसके पश्चात् सन् १९२६ से हनुमान ग्लास वर्क्स के नाम से एक काँच का कारखाना खोला। इसमें करीब ८० मन काँच रोजाना गलता है। पं० हजारीमलजी के परिवार में कई सज्जन हैं। प्रायः सभी ऊँचे शिक्षित और ऊँचे पदों पर काम कर रहे हैं। अप्रासंगिक होने से उनका परिचय यहाँ नहीं दिया गया है। इस फर्म का संचा-लन सुशीलचंदजी एवं सुदर्शनलालजी करते हैं। इस फर्म पर काँच का काम तथा जमीदारी और बैंकिंग व्यापार होता है।

कॉटन मरचेंट्स

मेसर्स अमृतलाल गुलजारीलाल
,, द्वारकादास प्यारेलाल
,, पदुमल प्यारेलाल
,, रामचन्द्र मटरूमल

गल्ले के व्यापारी

मेसर्स अमृतलाल गुलजारीलाल
,, गुलजारीलाल बेनीप्रसाद
,, गोपीराम रामचन्द्र
,, छेदीलाल मुन्नीलाल
,, फन्नूलाल बाबूलाल

कपड़े के व्यापारी

मेसर्स दौलतराम मोतीलाल
,, बोहरे रामलाल
,, मूलचन्द परसोत्तमदास

चाँदी-सोना के व्यापारी

मेसर्स कुंजीलाल रामप्रसाद

,, सेवाराम गौरीशंकर
,, रामसहाय भोलानाथ

घी के व्यापारी

मेसर्स पट्टमल प्यारेलाल
,, बलदेवदास गुलजारीलाल
,, मूलचंद परसोत्तमदास

कैमिकल्स के व्यापारी

मेसर्स अमृतलाल गुलजारीलाल
,, चन्द्रभान प्रकाशनाथ
,, मन्नीलाल रामचरन
,, एच० एस० तैलंग एण्ड को०

चूड़ी के व्यापारी

मेसर्स असफाख अली खाँ
,, कृष्णस्वरूप शिवशंकर
,, गिरवरधारीलाल चूड़ीवाला
,, चिरंजीलाल एण्ड को०
,, मोहनलाल चूड़ीवाला
,, आर० श्रीकृष्णदास
,, राधामोहन साधुराम
,, शिवनारायण वासुदेव

शिकोहाबाद

शिकोहाबाद यू० पी० प्रांत के मैनपुरी जिले की एक तहसील है। यह ई० आई० आर० रेल्वे की दिल्ली-हवड़ा मेन लाइन का जंकशन है। यहाँ से एक लाइन मैनपुरी होती हुई फरुखाबाद तक गई है। यहाँ का प्रधान व्यापार घी का है। साल भर में करीब ३५, ४० हजार मन घी यहाँ से बाहर एक्सपोर्ट होता है। यहाँ का तौल १०० रुपये भर के सेर से है। घी के अलावा रूई का भी यहाँ अच्छा व्यापार होता है। गल्ला भी यहाँ पैदा होता है मगर कम।

यहाँ रूई लोढ़ने एवं प्रेस करने के लिये दो कॉटन जीनिंग एवं एक प्रेसिंग फैक्टरी है। इसके अतिरिक्त एक ग्लास वर्क्स भी है। जहाँ चूड़ियाँ वगैरह बनती हैं। इन कारखानों के नाम निम्नलिखित हैं।

१ गोपीराम रामचन्द्र जीनिंग एण्ड प्रेसिंग फैक्टरी—इसमें १६१ आदमी काम करते हैं एवं ६४ चरखे हैं।

२ रामानंद द्वारकादास कॉटन जीनिंग फैक्टरी—इसमे ६८ आदमी काम करते हैं।

३ पल्लीवाल ग्लास वर्क्स—यह कॉंच का कारखाना है।

यहाँ के व्यापारियों का परिचय इस प्रकार है—

मेसर्स गोपीराम रामचन्द्र

इस फर्म का हेड आफिस कलकत्ता है। यहाँ यह फर्म कॉटन एवं आढ़त का व्यापार

करती है। यहाँ इसकी एक जीनिंग और एक प्रेसिंग फैक्टरी भी है। इसके वर्तमान मालिक सेठ फूलचंदजी टिकमानी हैं। यहाँ का तार का पता Tikamani है। इसका विस्तृत परिचय चित्रों सहित इसी ग्रंथ के प्रथम भाग में पेज नं० ४४ में बम्बई में दिया गया है।

मेसर्स चुन्नीलाल शिवबक्ष

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ द्वारकादासजी एवं सेठ नारायणदासजी हैं। आप लोगों के पूर्वजों ने सम्वत् १९३५ में इस फर्म की स्थापना की। इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

मेसर्स-चुन्नीलाल शिवबक्ष शिकोहाबाद T. A. "Ramanand" } यहाँ फर्म का हेड आफिस है। इस फर्म पर कपड़ा, गल्ला, घी और आढ़त का काम होता है।

शिकोहाबाद-दी रामानंद द्वारकादास कॉटन जीनिंग फैक्टरी एण्ड आईल मिल } यहाँ रूई, तेल आदि का व्यापार होता है तथा इस कारखाने के आप मालिक हैं।

मैनपुरी—शिवशंकर महावीर प्रसाद } यहाँ गल्ला एवं आढ़त का व्यापार होता है।

मेसर्स क्षेत्रपाल बृजलाल

इस फर्म के मालिक पल्लीवाल गौड़ ब्राह्मण समाज के गुड्डा (बीकानेर) निवासी सज्जन हैं। यह फर्म १९५४ में स्थापित हुई। शुरू २ में इस पर घी का व्यापार प्रारम्भ किया गया। घी के व्यापार में इस फर्म को बहुत सफलता हुई। इसके पश्चात् सन् १९१९ में इस फर्म ने एक शीशे का कारखाना खोला जिसमें शुरू २ में रंगीन कॉंच का काम होता था। सन् १९२४ से इसमें कॉंच के बर्तन वगैरह भी बनना शुरू हो गये हैं। आजकल करीब २ लाख रुपया सालाना का माल यह कारखाना तैयार करता है। इसके वर्तमान मालिक पं० बृजलाल जी हैं। आप करीब २५ साल से आर्य-समाज के सभापति हैं तथा घी मरचेन्ट्स एसोसिएशन के भी आप सभापति हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

शिकोहाबाद-मेसर्स क्षेत्रपाल बृजलाल } यहाँ घी और आढ़त का काम होता है।

शिकोहाबाद—दी पल्लीवाल ग्लास वर्क्स	यहाँ सभी प्रकार के काँच के सामान बनाने का कारखाना है।

घी के व्यापारी—

मेसर्स कन्हैयालाल बंशीधर
,, घमंडीलाल पुरुषोतमदास
,, पतीराम घनसुखदास
,, बेणीराम बंशीधर
,, क्षेत्रपाल बृजपाल

कपड़े के व्यापारी—

मेसर्स गोपालदास मनोहरदास
,, चुन्नीलाल शिवबक्ष
,, डालचन्द जौहरीमल
,, रामनारायण रामरिख
,, शंकरलाल दामोदरदास

गल्ले के व्यापारी—

मेसर्स गोपीराम रामचन्द्र
मेसर्स घनसुखदास प्रेमसुखदास
,, मुरलीधर महादेव
,, रामानन्द द्वारकादास
,, सीताराम राधेलाल

रूई के व्यापारी—

मेसर्स गोपीराम रामचन्द्र
,, रामानन्द द्वारकाप्रसाद

चाँदी-सोना के व्यापारी—

मेसर्स बनवारीलाल गिरधारीलाल
,, भवानीप्रसाद दाऊदयाल

चीनी के व्यापारी—

मेसर्स घनसुखदास प्रेमसुखदास
,, रामानन्द द्वारकादास

इटावा

इटावा यू० पी० प्रांत के अपने ही नाम के जिले का हेड क्वार्टर है। यह शहर पुराना बसा हुआ है। इसका इतिहास भी बहुत पुराना है। यहाँ एक जीर्ण-शीर्ण अवस्था में एक पुराना किला जमना किनारे स्थित है। कहा जाता है कि यह तत्कालीन कन्नौज के महाराजा जयचन्द का बनवाया हुआ है। इसके अतिरिक्त एक ऊँचे स्थान पर मुनि वशिष्ठ जी का मन्दिर बना हुआ है। यह भी अपनी प्राचीनता का प्रमाण दे रहा है। यह स्थान देखने योग्य है।

इटावा ई० आई० आर० की मेन लाइन पर अपने ही नाम के स्टेशन से आधा मील पर बसा हुआ है। पहले यहाँ का व्यापार बड़ी उन्नतावस्था में था। यहाँ से करीब ५० हजार रूई की गाँठें बाहर एक्सपोर्ट होती थीं। अब १२,१३ हजार गाँठें बाहर जाती हैं। घी की यह मंडी है। करीब ५० हजार मन घी यहाँ से बाहर जाता है। गल्ला भी यहाँ से अच्छे

परिमाण में बाहर जाता है। तिलहन बाना भी यहाँ पैदा होता है। यहाँ का तौल घी और रूई को छोड़ कर शेष का ८०रुपये भर के सेर से एवं घी और रूई का तौल १०० रुपये भर के सेर से होता है।

यहाँ निम्नलिखित जीनिंग प्रेसिंग फैक्टरियाँ हैं—

नन्दकिशोर जगन्नाथ जीनिंग एण्ड प्रेसिंग फैक्टरी
जुग्गीलाल कमलापत " " "
वेस्टपेटेन्ट कम्पनी लि० " " "
न्यू मुफस्सल एण्ड को० " " "
परसोत्तम जीनिंग कम्पनी
शारदुल जीनिंग फैक्टरी
मन्नूलाल कन्हैयालाल जीनिंग फैक्टरी
होरीलाल जीनिंग एण्ड प्रेसिंग फैक्टरी

मेसर्स जुग्गीलाल कमलापत

इसका हेड-आफिस कानपुर है अतः विशेष परिचय यहाँ दिया गया है। इसके वर्तमान मालिक सेठ कमलापतजी हैं। यहाँ यह फर्म कॉटन का व्यापार करती है। यहाँ इसकी एक जीन प्रेस फैक्टरी है।

मेसर्स जवाहरलाल जगन्नाथ

इस फर्म के मालिक जिला उन्नाव निवासी कुनव क्षत्री समाज के सज्जन हैं। करीब १०० वर्ष पूर्व जवाहरलालजी एवं आपके पिता ला० रिशालसिहजी ने स्थापित कर गल्ला, घी, नमक इत्यादि का काम आरंभ किया था। आपका स्वर्गवास हो गया है। आपके पश्चात् फर्म के काम का संचालन आपके पुत्र ला० जगन्नाथजी ने किया। आप व्यापारकुशल व्यक्ति थे। आपके समय में फर्म की बहुत उन्नति हुई। आपने जमींदारी भी खरीद की। आपने अपने व्यापार को और बढ़ाया। आपने यहाँ एक सोना-चाँदी की फर्म स्थापित की। साथ ही साझे में कॉटन जीनिंग एण्ड प्रेसिंग फैक्टरियाँ भी खोलीं। आपका स्वर्गवास हो गया।

वर्तमान में इस फर्म के संचालक ला० बाबूरामजी तथा आपके पुत्र मदनमोहन लालजी हैं। आप दोनों ही सज्जन मिलनसार एवं व्यापारी महानुभाव हैं।

इस फर्म का परिचय इस प्रकार है—

इटावा—मेसर्स जवाहरलाल जगन्नाथ धूम्स गंज T. A. "Jagadish"	यहाँ बैंकिंग, सोना, चाँदी, रूई, गल्ला, तिलहन-बाना आदि का व्यापार एवं आढ़त का काम होता है।

मेसर्स देवीदास माधोराम

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ माधोरामजी हैं। आप फफूंद निवासी अग्रवाल वैश्य-समाज के सज्जन हैं। आप १९२० से उपरोक्त नाम से व्यापार कर रहे हैं। इसके पहले इस फर्म पर बलदेवदास देवीदास के नाम से कारबार होता था, जब आपके भाई लोग शामिल थे।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

इटावा—मेसर्स देवीदास माधोलाल	यहाँ जमींदारी, बैंकिंग और धोती जोड़े का व्यापार होता है।

मेसर्स दिलसुखराय राधाकृष्ण

करीब १२५ वर्ष पूर्व खत्री समाज के ला० दिलसुखरायजी टंडन ने अपने तथा अपने पौत्र के नाम से फर्म स्थापित की। आपके पुत्र का नाम घासीरामजी था। ला० घासीरामजी के २ पुत्र थे ला० कृष्णबलदेवजी एवं ला० राधाकृष्णजी। आप लोगों के पश्चात् ला० कृष्ण-बलदेवजी के पुत्र ला० शिवनारायणजी ने फर्म का संचालन किया। आपने फर्म के काम को बहुत बढ़ाया। आप यहाँ के आनरेरी मजिस्ट्रेट रहे। आपने संवत् १९४८ में अपने तीनो पुत्रों के नाम से अलग २ फर्में खोलीं। आपके पुत्रों का नाम ला० ब्रजकिशोरजी, ला० रूपकिशोरजी एवं ला० नन्दकिशोरजी है। संवत् १९५८ में ला० ब्रजकिशोरजी के पुत्र ला० नवलकिशोरजी ने नन्दकिशोर जगन्नाथ के नाम से जीनिंग और प्रेसिंग फेक्टरी की स्थापना की। आप यहाँ म्युनिसपेलिटी एवं डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के मेम्बर थे। आपका स्वर्गवास हो गया है। संवत् १९६४ में सेठ शिवनारायणजी का भी स्वर्गवास हो गया। आपके पहले ही आपके दो पुत्रों का स्वर्ग-वास हो चुका था। आप लोगों के पश्चात् फर्म का संचालन ला० ब्रजकिशोरजी ने किया। आपने पचीस हजार रुपये अपने तथा अपने भतीजे रामनाथजी के नाम से एक्स रे हास्पिटल को दान दिये। आपका भी स्वर्गवास सं० १९६८ में हो गया। आपके पश्चात् फर्म का संचा-लन कुंजकिशोरजी ने किया। आपने अपने तथा रामनाथजी के नाम से २५०००) रुपया हिन्दू यूनिवरसिटी काशी को दिये। आपके पश्चात् आपके छोटे भाई बंशीधरजी फर्म का

संचालन करने लगे। आपने अपने लड़के विशंभरनाथ द्वारकादास के नाम से एक फर्म और खोली। ला० बंशीधरजी के छोटे भाई देवकीनन्दनजी का स्वर्गवास हो गया। सं० १९७४ से ही आप सब लोग अलग २ स्वतंत्र व्यापार करने लग गये थे।

इस समय फर्म के मालिक बंशीधरजी, रूपकिशोरजी के पुत्र रामनाथजी एवं नन्दकिशोर-जी के पुत्र जुगलकिशोरजी हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

इटावा—मेसर्स दिलसुखराय राधाकृष्ण	हेड आफिस है। यहाँ बैंकिंग तथा जमींदारी का काम होता है।
इटावा—मेसर्स बृजकिशोर कुंजकिशोर	यहाँ भी बैंकिंग तथा जमींदारी का काम होता है।
इटावा—मेसर्स रूपकिशोर	यहाँ भी बैंकिंग तथा जमींदारी का काम होता है।
इटावा— मेसर्स नन्दकिशोर	यहाँ बैंकिंग, जमींदारी, गल्ला, घी इत्यादि का व्यापार एवं आढ़त का काम होता है।
इटावा—मेसर्स विशम्भरनाथ द्वारकादास	सोना-चाँदी, जवाहरात का व्यापार एवं घी की आढ़त का काम होता है।

मेसर्स बाँकेबिहारीलाल रूपनारायण

इस फर्म के मालिक अग्रवाल वैश्य समाज के सज्जन हैं। आपके पूर्व पुरुष पहले पहल कोड़ा, जहानाबाद आये। वहाँ से वे व्यापार के लिये गवालियर गये और वहीं रहने लगे। वहाँ वे खजांची हो गये। पश्चात् वहाँ से वे लोग भिंड आ गये। भिंड से यह परिवार यहाँ इटावा चला आया। इस खानदान में ला० गोपीनाथजी हुए। उन्होने गोपीनाथ कुंजबिहारी लाल के अलीगढ़ जिले के सिकंदरामऊ नामक स्थान पर शोरे की कोठी खोली। इसी शोरे के व्यापार के कारण आप लोग शोरावाल कहलाये। आपने तथा आपके भाई शीतलप्रसादजी ने नील की कोठियाँ खोलीं इसमें आपने बहुत सम्पत्ति पैदा की। आप लोगों का स्वर्गवास हो गया। शीतलप्रसादजी के स्वर्गवास के समय ४८ हजार रुपया दान किया गया। सन् १९०० में आप दोनों भाई अलग २ हो गये थे। शीतलप्रसादजी के पुत्र ला० बाँकेबिहारीलालजी

हुए। आपने फर्म की अच्छी तरक्की की तथा इसी समय से उपरोक्त नाम से व्यापार होने लगा।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक प्रयागनारायणजी, ब्रह्मनारायणजी और श्यामविहारीलालजी हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

इटावा—मेसर्स बाँकेबिहारीलाल रूपनारायण	यहाँ बैंकिंग, जमींदारी एवं गल्ला, रूई और आढ़त का काम होता है।

मेसर्स मन्नूलाल कन्हैयालाल

इस फर्म के वर्तमान मालिक जबलपुरवाले राजा गोकुलदासजी के पौत्र सेठ जमुनादासजी हैं। आप लोग माहेश्वरी वैश्य समाज के सज्जन हैं। यह फर्म यहाँ पर हुण्डी, चिट्ठी और आढ़त का काम तथा रूई का व्यापार करती है। इसकी एक जीनिंग फैक्टरी भी यहाँ पर है। इसका विशेष विवरण हमारे इसी ग्रन्थ के प्रथम भाग के बम्बई विभाग पृष्ठ ४१ में दिया गया है।

मेसर्स श्यामविहारीलाल रमेशचंद्र

इस फर्म के मालिक कान्यकुब्ज ब्राह्मण समाज के सज्जन हैं। आप लोगों का मूल निवास-स्थान जिला उन्नाव का है। मगर आपके पूर्व पुरुष व्यापार के निमित्त भटनेर (पंजाब) नामक स्थान में चले गये थे। वहाँ से आपका खानदान यहाँ आया। भटनेर से यहाँ आने के कारण आप लोग भटेले कहलाये। इस खानदान में डालचंदजी नामक व्यक्ति हुए। आपने इस खानदान की बहुत उन्नति की तथा बैंकिंग और जमींदारी का भी बहुत बड़ा काम फैलाया। आपके तीन पुत्र हुए, पं० कृष्णबलदेवजी, हरवंशरायजी एवं जानकीप्रसादजी। जानकीप्रसाद-जी का स्वर्गवास अल्पायु ही में हो गया। आप तीनों ही सज्जन संवत् १९३४ में अलग २ हो गये। उपरोक्त फर्म हरवंशरायजी के वंशजों की है। पं० हरवंशरायजी धार्मिक विचारों के पुरुष थे। आप अक्सर काशीवास करते थे। आपका वहीं संवत् १९६८ में स्वर्गवास हो गया। आपके भाईयों का भी स्वर्गवास हो गया है।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक हरवंशरायजी के पुत्र रायबहादुर श्यामविहारीलालजी भटेले हैं। आपके रमेशचन्द्रजी नामक एक पुत्र हैं। पं० श्यामविहारीलालजी ऑनरेरी मजि-स्ट्रेट, रायबहादुर और प्रतिष्ठित रईस एवं जमींदार हैं। आपने सन् १९२२ से उपरोक्त नाम से फर्म स्थापित की। इस पर घी, रूई, गल्ला आदि का व्यापार शुरू किया गया। आपका सार्वजनिक कार्यों की ओर भी अच्छा ध्यान है। आपने २५ हजार रुपया काशी हिन्दू विश्व-

रायबहादुर स्व० श्याम सुन्दरलालजी लोहीवाल
इटावा

बाबू केशरीचन्दजी (जवाहरलाल द्वारकाप्रसाद)
फर्रुखाबाद
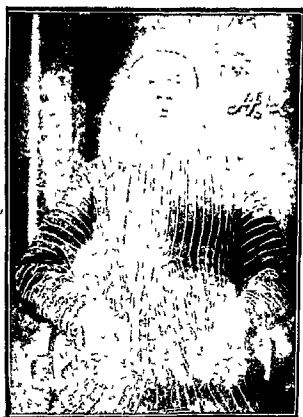
लाला हजारीलालजी चौबे (हनुमान ग्लॉस वर्क्स)
फ़ीरोजाबाद
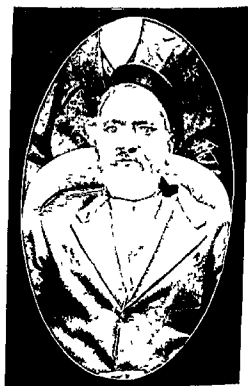
स्व० लक्ष्मीनारायणजी (द्वारकादास लक्ष्मीनारायण)
फ़र्रुखाबाद

विद्यालय को एवं करीब करीब ७५ हजार रुपया स्थानीय सनातन धर्म हाईस्कूल को प्रदान किया है तथा आपकी ओर से कई कुएँ एवं मन्दिर बने हुए हैं।

इस फर्म को व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

इटावा—रायबहादुर श्यामबिहारी लालजी भटेले	यहाँ बैंकिंग और जमींदारी का काम होता है। आप ३२०००) सालाना मालगुजारी गवर्नमेंट को देते हैं।
इटावा—मेसर्स श्यामबिहारीलाल रमेशचन्द्र गंज	यहाँ गल्ला, रूई, घी और आढ़त का व्यापार होता है।

रायबहादुर सेठ श्यामसुन्दरलाल

इस फर्म की स्थापना स्व० रा० ब० श्यामसुन्दरलालजी सी० आई० ई० के० आई० एच० ने ४० वर्ष पूर्व की। उपरोक्त रा० ब० श्यामसुन्दरलालजी का जीवन प्रायः पोलिटिकल कार्य्य में व्यतीत हुआ। आप क्रमशः किशनगढ़, गवालियर, अलवर रियासतों में प्रधान मंत्री के पदों पर रहे और बड़ा सम्मान पाया। अपने काल में इन रियासतों में Industry बढ़ाने की चेष्टा की और अधिकांश Industrial कार्य्य जो इन रियासतों में चल रहे हैं आपके ही स्थापित किये हुए हैं। आप माहेश्वरी समाज में Social & Educational कार्य करनेवाले पहले व्यक्ति थे। आप अखिल भारतवर्षीय वैश्य महासभा के प्रेसीडेण्ट चुने जा चुके थे। आप रॉयल Royal Famine & Royal Ofiscal कमीशन के सदस्य चुने गये थे। आप इलाहाबाद यूनिवरसिटी के १५ साल तक फेलो रहे।

आपके ४ पुत्र हुवे; श्रीबालमुकुन्ददासजी, बालकृष्णदासजी, बालगोविन्ददासजी और बालगोपालदासजी। जिनमें से श्रीबालमुकुन्ददास, बालकृष्णदास का स्वर्गवास हो गया है।

इस फर्म के मालिक इस समय बालगोविन्ददासजी और बालगोपालदासजी हैं।

इस फर्म पर रूई, गल्ला, कमीशन और बैंकिंग का कार्य्य होता है। इनकी सारदूल कॉटन जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी इटावा में है तथा दाल और फ्लोअर मिल है। तथा इसके अतिरिक्त इटावा जिले में आपकी जमींदारी भी है।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

इटावा—रा० ब० श्यामसुन्दरलाल सारदूल फैक्टरी T. A. Sardool.	इसका मॅनेजमेण्ट पंडित श्रीकृष्णदास जैपुरनिवासी बहुत काल से कर रहे हैं।

घी के व्यापारी—
मेसर्स अयोध्याप्रसाद फूलचन्द
,, इस्माइल यूसुफ
,, इस्माइल नूरमहम्मद
,, इब्राहिम अहमद बागी
,, छोटेलाल मुन्नीलाल
,, तोताराम मधुबनदास
,, दाऊजी दादाभाई
,, महेशचन्द वंशीधर
,, रहमतुल्ला गनी
,, शशिभूषण नेवगी एण्ड संस

रूई और गल्ले के व्यापारी—
मेसर्स अयोध्याप्रसाद माहूलाल
,, केदारनाथ ब्रजकिशोर
,, जवाहरलाल जगन्नाथ
,, दलपतसिंह रामस्वरूप
मेसर्स नागरमल श्रीकृष्ण
,, बलदेवसहाय जगन्नाथ
,, मेवालाल सेवालाल
,, मनसुखलाल ठाकुरदास
,, हुलासराय भगवानदास

चाँदी-सोना के व्यापारी—
मेसर्स जवाहरलाल जगन्नाथ
,, बृजमोहनदास राजाबहादुर
,, बाबूराम आसरेसिंह
,, विशम्भरदास द्वारकादास
,, हजारीलाल देवीकुमार

स्टेशनरी मरचेंट्स—
मेसर्स गुप्ता ब्रदर्स
,, एस० डी० ब्रदर्स,
,, वृंदावन स्टेशनर
,, जहुरउद्दीन स्टेशनर

मैनपुरी

यू० पी० प्रांत के अपने ही नाम के जिले का हेड क्वार्टर है। यह ई० आई० आर० की शिकोहाबाद-फरुखाबाद वाली ब्रेंच लाइन का स्टेशन है। मैनपुरी स्टेशन से करीब आधा मील की दूरी पर इशान नदी के किनारे बसी हुई है। इस शहर का इतिहास बहुत पुराना है। पहले यह चौहानों के अधिकार में था और आज भी पृथ्वीराज चौहान के वंशज इस पर राज्य करते हैं। आजकल यहाँ के राजा शिवमगलसिंह हैं। इस राज की आमदनी १ लाख रुपया है।

मैनपुरी की दो बस्तियाँ हैं। एक नवीन एवं एक प्राचीन। प्राचीन बस्ती में पुराने जमाने का एक किला बना हुआ है, जो राजा साहब का किला कहलाता है। कहते हैं सन् ५७ में गदर के समय इस किले पर भी गोलाबारी हुई थी। यहाँ से करीब १॥ माईल की दूरी पर धारऊ नागरिया नामक एक बहुत प्राचीन स्थान है। वहाँ मेन देवता की एक मूर्ति है। कहते हैं इन्हीं मेन देवता के नाम से इस बस्ती का नाम मैनपुरी पड़ा था।

प्राप्त बैंकर हैं। आपका बहुत बड़ा मान है। आप आनरेरी मैजिस्ट्रेट भी हैं। आप सभी अच्छे कामों में अनुराग रखते हैं। आप ही फर्म के प्रधान कर्ता धर्ता हैं। इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स—श्यामलाल सिद्धगोपाल फरुखाबाद } यहाँ बैंकर्स एवं लैण्ड लार्ड्स का काम होता है।

बैंकर्स एण्ड कमीशन एजंट

मेसर्स द्वारकादास लक्ष्मीनारायण

इस फर्म के मालिक बिसाऊ निवासी हैं। आप लोग अग्रवाल वैश्य समाज के सज्जन हैं। इस फर्म की स्थापना इसके आदि संस्थापक लाला विनोदीरामजी के स्वर्गवास के बाद उनके पुत्र लाला नन्दरामजी ने की थी। इस फर्म पर लोहे और किराने का व्यापार आरम्भ किया गया था पर धीरे धीरे फर्म ने कपड़ा, आलू और तम्बाकू का काम भी किया जो आज ऊँचे दर्जे पर कर रही है। इसके वर्तमान मालिक स्व० लाला लक्ष्मीनारायणजी के पुत्र लाला रामनारायणजी हैं। इसका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

फरुखाबाद—मेसर्स नंदराम हुकुमचंद } यहाँ हे० आ० है तथा बैंकिंग और जमीदारी का काम होता है।

फरुखाबाद—मेसर्स द्वारकादास लक्ष्मीनारायण } यहाँ आलू और तम्बाकू की आढ़त का काम होता है।

फरुखाबाद—मेसर्स लक्ष्मीनारायण रामनारायण } यहाँ कपड़े की आढ़त का काम होता है।

मेसर्स पन्नालाल वासुदेव

इस फर्म के मालिक चूरू के आदि निवासी हैं। आप लोग अग्रवाल वैश्य समाज के खेमका सज्जन हैं। सर्व प्रथम सेठ पन्नालालजी लगभग १०० वर्ष पूर्व यहाँ आये और व्यापार आरम्भ किया। तब से यह फर्म बराबर उन्नति करती गयी।

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ शिवदयालमलजी के पुत्र बाबू सूर्यप्रकाशजी तथा सेठ कन्हैयालालजी के पुत्र बाबू गजानन्दजी हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

मेसर्स पन्नालाल वासुदेव लोहाई—फरुखाबाद	यहाँ हेड आफिस है तथा गल्ला और बैंकिंग का काम होता है।
मेसर्स शिवदयालमल कन्हैयालाल लोहाई—फरुखाबाद	यहाँ कपड़े का काम होता है।
मेसर्स वासुदेव शिवकरणदास काहू की कोठी—कानपुर T. A. Khemka	कपड़ा और बैंकिंग का काम होता है। यहाँ अहमदाबाद की मिलों के कपड़े की एजेन्सी है।
मेसर्स पन्नालाल शिवकरणदास १७४ हरीसन रोड कलकत्ता T. A. Woomapati	यहाँ कपड़े की खरीद-फरोख्त का व्यापार, चलानी का काम और बैंकिंग व्यवसाय होता है।

फरुखाबादी क्लाथ मरचेंट्स

मेसर्स कुंजीलाल साध एण्ड सन्स।

इस फर्म के मालिक यहीं के आदि निवासी हैं। आप लोग साध समाज के सज्जन हैं। इस फर्म के संस्थापकों ने आरम्भ में नील का व्यवसाय मेसर्स सुमेरचंद श्यामलाल के नाम से खोला था। कुछ वर्ष बाद सन् १८९५ ई० में फरुखाबाद के मशहूर छपे कपड़ों का काम आरम्भ किया। इसी वर्ष लाला श्यामलालजी ने अपने बड़े पुत्र लाला कुंजीलालजी को साथ ले विलायत की यात्रा की। लाला कुंजीलालजी जर्मनी से रंगाई और छपाई का काम सीख कर लौटे और साथ ही अपनी फर्म पर सुधरे हुए विलायती ढंग और फैशन के अनुसार माल तैयार कराने तथा विदेश भेजने लगे। इस काम में फर्म को अच्छी सफलता मिली। यही कारण है कि फर्म ने अपने अच्छे माल पर पेरिस, लंदन, कलकत्ता तथा इलाहाबाद की प्रदर्शनियों में स्वर्णपदक प्राप्त किये। इस फर्म के उत्तम माल की प्रशंसा लार्ड मिन्टो तथा लार्ड हार्डिंज के समान वायसरायों के सर्टीफिकेट दे की है।

इस फर्म के वर्तमान मालिक लाला कुञ्जीलालजी, लाला छुन्नालालजी और आपका परिवार है।

लाला कुञ्जीलालजी साध फर्रुखाबाद

लाला छुन्नालालजी साध फ़र्रुखाबाद
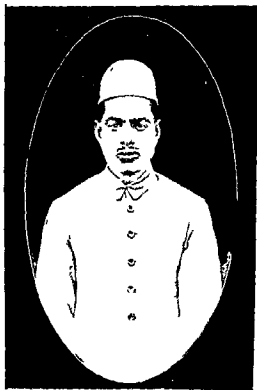
लाला व्रजभानजी साध फ़र्रुखाबाद

लाला समन्दरभानजी साध फ़र्रुखाबाद

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

फरुखाबाद—मेसर्स कुञ्जीलाल साध एण्ड सन्स, सधवाड़ा T. A. Bhan	यहाँ पर्दा, पलंगपोश, टेबिलक्लाथ, लिहाफ आदि सभी प्रकार के छपे हुए मशहूर कपड़ों का व्यापार होता है तथा आर्डर से छपाया जाता है और योरुप तथा अमेरिका को भेजा जाता है।

मेसर्स बाजीलाल जशवन्तराय एण्ड कम्पनी

इस फर्म के मालिक फरुखाबाद के ही आदि निवासी हैं। आप लोग साध समाज के सज्जन हैं। इसके संस्थापक सन् १८७४ ई० से रंगाई और छपाई का काम कर रहे हैं। इन लोगो की इस ओर अच्छी लगन है। फर्म के वर्तमान मालिक लोगों ने कितनी ही नुमाइशों में अपना माल भेजकर पदक प्राप्त किये हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

फरुखाबाद—मेसर्स बाजीलाल जशवन्तराय सधवाड़ा T. A. Curtain	यहाँ फरुखाबाद के छपे हुए कपड़े का व्यापार होता है।

मेसर्स भूपनारायण महेशनारायण

इस फर्म की स्थापना सं० १९७८ में हुई थी। इस फर्म पर कपड़े की छपाई का काम होता है और पश्चिमीय देशों को भेजा जाता है। इस फर्म के वर्तमान मालिक लाला महेश-नारायणजी तथा ला० हरनारायणजी हैं। आप लोग फरुखाबाद के आदिनिवासी साध समाज के सज्जन हैं। इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

फरुखाबाद—मेसर्स भूपनारायण महेशनारायण सधवाड़ा	यहाँ पर कपड़े छापे जाते हैं जो विदेश को भेजे जाते हैं।

मेसर्स शिवनारायण जगतनारायण

इस फर्म की स्थापना सन् १९२३ में हुई; पर इस फर्म ने अल्प काल में ही अच्छी उन्नति की और विदेश की कितनी ही नुमाइशों में ख्याति प्राप्त की। इस फर्म के वर्तमान मालिक शिवनारायणजी, रामेश्वरनारायणजी, प्यारी मोहनजा तथा कैलाशनाथजी हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

फरुखाबाद—मेसर्स शिवनारायण जगतनारायण सधवाड़ा T. A. Chhabhaia } यहाँ छपे कपड़े का व्यापार होता है।

मेसर्स छंगामल बालकृष्ण

इस फर्म का हेड आफिस कानपुर है जहाँ विशेष परिचय दिया गया है। यहाँ यह फर्म कपड़े का काम करती है। इस फर्म के वर्तमान मालिक लाला गोपालदासजी तथा लाला बुद्धलालजी हैं।

क्लाथ मर्चेंट्स

मेसर्स बंसीधर गोपालदास

इस फर्म के मालिकों का यहाँ खास निवासस्थान है। आप लोग रस्तोगी वैश्य समाज के सज्जन हैं। इस फर्म का विस्तृत और सचित्र परिचय हमारे इसी ग्रंथ के प्रथम भाग के बम्बई विभाग में पृष्ठ १२८ में दिया गया है। यहाँ यह फर्म कपड़े का व्यापार करती है।

मेसर्स श्यामसुन्दर रामचरण

इस फर्म की स्थापना लगभग ३० वर्ष पूर्व कन्नौज निवासी लाला मुकुन्दराम ने की थी। उस समय इस फर्म पर मुकुन्दराम श्यामसुन्दर नाम पड़ता था। आपके स्वर्गवासी होने पर आपके ६ पुत्र कुछ दिन तक व्यापार करते रहे पर पीछे अलग २ हो गये। अतः आपके पुत्र लाला श्यामसुन्दरलाल तथा लाला रामचरणलाल ने सम्मिलित हो उपरोक्त नाम से व्यापार आरम्भ किया जो आज भी पूर्ववत् हो रहा है। इस फर्म की विशेष उन्नति इन्हीं दोनों भाइयों के द्वारा हुई। प्रथम कपड़े का काम होता था फिर कलकत्ता और बम्बई से सीधा माल मँगाने लगे और अन्त में कानपुर की मिलों की एजेन्सी ली।

इसके वर्तमान मालिक लाला श्यामसुन्दरलालजी तथा आपके भाई लाला रामचरणजी के पुत्र लाला विश्वम्भरनाथ और विशेश्वरप्रसादजी हैं।

इसका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

फरुखाबाद—मेसर्स श्यामसुन्दर रामचरण, कटरा अहमदगंज } यहाँ कानपुर की स्वदेशी कॉटन मिल, विक्टोरिया मिल तथा इलगिन मिल की एजेन्सी है।

फरुखाबाद—मेसर्स मुकुन्दराम श्याम-सुन्दर, चौक विरपोलिया	यहाँ हेड-आफिस है और बर्तन का काम होता है।

चाँदी सोने के व्यापारी

मेसर्स कृष्णविहारी बाँकेविहारी

इस फर्म की स्थापना लगभग ९ वर्ष पूर्व उन्नाव निवासी रायसाहब लाला अटलविहारी-लालजी मेहरोत्रा ने यहाँ की थी। तब से यह फर्म यहाँ पर सोना-चाँदी तथा तैयार जेवर का व्यापार कर रही हैं।

इस फर्म के वर्तमान मालिक रायसाहब लाला अटलबिहारीलालजी तथा आपके पुत्र बाबू कृष्णविहारी, बाँकेविहारी, श्यामविहारी, छैलविहारी, लालबिहारी तथा रूपविहारीजी हैं। आप लोग खत्री समाज के सज्जन हैं। आप लोगों का आदि निवास-स्थान उन्नाव है जहाँ राय-साहब ला० अटलबिहारीलालजी ने लगभग ३० वर्ष पूर्व अपने नाम से फर्म स्थापित कर व्यापार आरम्भ किया था। रायसाहब लाला अटलबिहारी लालजी उन्नाव म्युनिसिपैलिटी के चेयरमैन रह चुके हैं। आप वर्तमान में वहाँ के डिस्ट्रिक्ट-बोर्ड के सदस्य हैं। आप शिक्षा-सम्बन्धी कामों में अच्छी सहायता प्रदान करते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

फरुखाबाद-मेसर्स कृष्णबिहारी बाँकेबिहारी—यहाँ बैंकिंग तथा सोने चाँदी का व्यापार होता है।
उन्नाव-राय सा० लाला अटलविहारी लाल—यहाँ बैंकिंग तथा जमींदारी का काम होता है।

मेसर्स सालिगराम लालमन

इस फर्म के मालिक खत्री समाज के टंडन सज्जन हैं। इसकी स्थापना लगभग १०० वर्ष पूर्व लाला शालिगराम ने की थी और सोने चाँदी का व्यापार आरम्भ किया था, जो फर्म आज भी कर रही है। इस फर्म के वर्तमान मालिक लाला भोलानाथजी टंडन हैं। इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

फरुखाबाद—मेसर्स शालिगराम लालमन कटरा अहमद गंज	यहाँ हेड आफिस है; सोने, चाँदी तथा बैंकिंग का काम होता है।
फरुखाबाद—मेसर्स रूपनलाल लक्ष्मीनारायण कटरा अहमदगंज	कपड़े का थोक व्यापार होता है।

फरुखाबाद—मेसर्स रामचन्द्र विश्वनाथ कटरा अहमद गंज	कपड़े का थोक व्यापार होता है।
फरुखाबाद—मेसर्स रामस्वरूप शंकरलाल रेलवे रोड	यहाँ पीतल,ताँबे के वर्तन की आढ़त का काम होता है। कारखाना माल तैयार करने का है।

मेसर्स हरीराम मुकुन्दराम

इस फर्म की स्थापना १०० वर्ष पूर्व लाला हरीरामजी खत्री ने की थी और चाँदी सोने का व्यापार आरम्भ किया था जो यह फर्म आज भी कर रही है। इस फर्म के वर्तमान मालिक बा० कृष्णशंकरजी, बा० शिवशंकरजी तथा बा० खुन्नूलालजी हैं। इसका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

फरुखाबाद—मेसर्स हरीराम मुकुन्दराम कटरा अहमद गंज	यहाँ हे० आ० है और चाँदी सोने का व्यवसाय तथा बैंकिंग और जमींदारी का काम होता है।
फरुखाबाद—मेसर्स मुन्नूलाल खुन्नूलाल कटरा अहमद गंज	यहाँ कपड़े का थोक व्यापार होता है।

मेसर्स रतीराम एण्ड सन्स

इस फर्म की स्थापना महेन्द्रगढ़ निवासी लाला रतीरामजी ने सन् १८६५ में की थी। इस फर्म ने आरम्भ में ठेकेदारी का काम किया और क्रमशः उन्नति की। इस फर्म के वर्तमान मालिक लाला रामस्वरूपजी, लाला सूर्यभानजी तथा लाला चन्द्रभानजी हैं। व्यापारिक परिचय यों है।

फतेहगढ़—मेसर्स रतीराम एण्ड सन्स कन्टूमेन्ट T. A. Rateeram	यहाँ हेड आफिस है तथा रेलवे और सरकारी कंट्राक्ट का काम और बैंकिंग व्यापार होता है।
कलकत्ता—मेसर्स रतीराम एण्ड सन्स १०२ क्लाइव स्ट्रीट	यहाँ विदेशी आढ़त का काम होता है।

फर्द् लिहाफ के व्यापारी

मेसर्स कस्तूरीलाल श्रीकृष्णदास
,, खुन्नूलाल भूपनारायण
,, चन्द्रसेन प्रतापसेन
,, निहालचन्द अचम्भेलाल
,, प्रतापसिंह गुलाबसिंह
,, मुन्नीलाल धनपतराय
,, शिवनारायण अनोखेलाल

पर्दे, टेबल क्लाथ आदि के व्यापारी

मेसर्स कुञ्जीलाल साध एण्ड सन्स
,, बाजीलाल जशवन्तराय एण्ड कम्पनी
,, भूपनारायण महेशनारायण
,, शिवनारायण जगतनारायण
,, सुमेरचन्द्र चन्द्रभान

कपड़े के व्यापारी

मेसर्स केवलराम खूबचन्द
,, गोपीनाथ देवीचरण
,, छंगामल बालकृष्ण
,, छोकनाथ दुर्गाप्रसाद
,, तुलसीराम शिवचरण
,, नानकचन्द मानकचन्द
,, पालीराम चुन्नीलाल
,, फूलचन्द मुन्नालाल
,, बंशीधर गोपालदास
,, भगतराम शिवकरणदास
,, भगवानदास नानकचन्द
,, मुन्नूलाल मुन्नूलाल
,, रामप्रसाद हरीचन्द

मेसर्स रामचन्द्र विश्वनाथ
,, लक्ष्मीनारायण रामनारायण
,, शिवदयालमल कन्हैयालाल
,, श्यामसुन्दर रामचरण

आलू और तम्बाकू के अढ़तिये

मेसर्स उदयचन्द मुन्नालाल
,, जैदयालमल श्रीनिवास
,, द्वारकादास लक्ष्मीनारायण
,, दाऊदयाल गंगाप्रसाद
,, मूलचन्द रघुनाथ

गल्ले के अढ़तिये

मेसर्स गलीलाल पुत्तनलाल
,, रामसिंह फकीरचन्द
,, रामदयाल मदनमोहन
,, लालमन पराईलाल

बर्तन के व्यापारी

मेसर्स काशीराम भजनलाल
,, आद्दोराम हजारीलाल
,, नन्दराम हीरालाल
,, भगवानदास मंगलसेन
,, मुकुन्दराम राधाचरण
,, मुकुन्दराम श्यामसुन्दर
,, रामचरण बनवारीलाल
,, रामनारायण [illegible]
,, श्रीलाल कुंजबिहारीलाल

कन्नौज

कन्नौज का इतिहास बहुत पुराना है। यह स्थान ११वीं शताब्दी में तत्कालीन महाराजा जयचंदजी की राजधानी रहा है। जयचंद प्रसिद्ध राठोर वंशीय थे। इनके पूर्वज दक्षिण प्रांत से यहाँ आकर बसे थे। कई इतिहासकारों का मत है कि ये राठोड़ पहले सिथियन्स नाम से पुकारे जाते थे। इस स्थान पर सन् १०७७ में महमूद गजनवी ने चढ़ाई कर इसे लूटा था। इसके पश्चात् भी सन् ११९४ ई० तक इस स्थान पर हिन्दुओं का ही शासन रहा। पर देश के दुर्भाग्य से एवं आपसी फूट के कारण इस पर महमद गोरी ने चढ़ाई कर इसे हस्तगत किया। तब से इस पर मुसलमानों का अधिकार हो गया। यहीं हुमायूं और शेरशाह की लड़ाई हुई थी। इसके पश्चात् यह स्थान महाप्रतापी ब्रिटिश साम्राज्य के अन्दर आया। प्राचीन समय के कई भग्नावशेष आज भी यहाँ विद्यमान हैं।

आजकल यह स्थान गंगा नदी के किनारे बी० बी० एण्ड सी० आई० आर० की कानपुर-अचनेरा ब्रांच पर अपने ही नाम के स्टेशन से ५ मील की दूरी पर बसा हुआ है। यहाँ का व्यापार प्रधानतया इत्र, तेल वगैरह का है। यहाँ कई बड़े २ इत्र के व्यापारी निवास करते हैं। यहाँ का इत्र भारत भर में प्रसिद्ध है। यहाँ इत्र की कई फैक्टरियाँ हैं। इसके अतिरिक्त यहाँ निम्नलिखित कल-कारखाने भी हैं:—

(१) कन्नौज डाईंग एण्ड विविंग मिल्स—इसमें कपड़े की बुनाई एवं रंगाई का काम होता है। इसमें ५० लूम्स हैं और ७२ आदमी काम करते हैं।

(२) मथुराप्रसाद सूरजप्रसाद सैंडल उड आईल डिस्टीलेशन एण्ड यार्न वर्क्स—इसमें चन्दन का तेल खिंचा जाता है एवं सूत की रंगाई का काम होता है। इसमें ५९ आदमी काम करते हैं।

(३) कोकोलस जीनिंग एण्ड प्रेसिंग फैक्टरी—यह सरायमीरा में है। यहाँ काटन जीन और प्रेस किया जाता है। इसमें ५९ चरखे हैं तथा १९४ आदमी काम करते हैं।

लाला शिवगुलामदासजी (बेनीराम मूलचन्द) कन्नौज

शाह सुन्दरलालजी (लालमन सुन्दरलाल) मैनपुरी

बाबू वासुदेवजी (बेनीराम मूलचन्द) मैनपुरी

बाबू चन्द्रदेवजी (बेनीराम मूलचन्द) मैनपुरी

वर्तमान में इस फर्म का संचालन ला० विश्वनाथप्रसादजी करते हैं। आप मिलनसार, और उदार सज्जन हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

कन्नौज—मेसर्स मक्खनलाल चैनसुखदास T. A. Rose.	यहाँ हेड-आफिस है तथा संदली इत्र तैय्यार कर देशावरों को भेजा जाता है।
कानपुर—मेसर्स मक्खनलाल चैनसुखदास, नयागंज	यहाँ इत्र, तेल, वगैरह की बिक्री का काम होता है।
बम्बई-मेसर्स मक्खनलाल चैनसुखदास अब्दुल रहमान स्ट्रीट	यहाँ पर भी इत्र, तेल वगैरह की बिक्री का काम होता है।

कासगंज

कासगंज—यू० पी० प्रांत के एटा जिले की अपने ही नाम की तहसील का हेड कार्टर है। यह बी० बी० एण्ड सी० आई रेल्वे की छोटी लाइन की कानपुर-अछनेरा सेक्शन का जंकशन स्टेशन है। यहाँ से एक गाड़ी आर० के० आर० की बरेली तक गई हैं। इसके पास हिन्दुओ का प्रसिद्ध तीर्थ सौरों हैं जहाँ हजारो यात्री हरसाल आया करते हैं। यहाँ भी रेल्वे लाइन गई है तथा मोटरें हमेशा जाती रहती हैं। यहाँ की एक बात हिन्दुस्थान में प्रसिद्ध है। वह यह है कि यहाँ से करीब २ मील पर नरदई नामक स्थान पर काली नदी का पुल बाँध कर उसपर नहर निकाली गई है। यह पुल भारत भर में पहला ही है।

इस शहर का इतिहास भी पुराना है। कहा जाता है कि यह याकूत खाँ नामक व्यक्ति के द्वारा बसाया गया था। याकूत खाँ फरुखाबाद के तत्कालीन नवाब महम्मदखाँ के यहाँ नौकरी करता था। इसके पश्चात् यह स्थान कर्नल जेम्स गार्डनर के हाथ में आया जो कि उस समय मरहठों के यहाँ नौकर था और इसके पश्चात् यह अँग्रेज सरकार के अधिकार में आया। कर्नल जेम्स गार्डनर के पास बहुत सम्पत्ति थी। इस सम्पत्ति का कुछ हिस्सा दिल-सुखराय नामक एक व्यक्ति के भी हाथ लगा जो उस समय कर्नल की फेमिली का एजंट था। इसके वंशजों ने यहाँ एक मेगनीफिशियंट मकान भी अपने रहने के लिये बनाया था।

कासगंज का प्रधान व्यापार कपास, गेहूँ, सरसों, शक्कर आदि का है यह स्थान आसपास की पैदावर को एकत्रित कर बाहर भेजने एवं बाहर से आये हुए सामान को आस-पास

डिस्ट्रीब्यूट करने वाला जिले का प्रधान सेंटर है। मौसिम में यहाँ पर कपास करीब ५ हजार मन, गेहूँ करीब ४ हजार मन और सरसों करीब २ हजार मन रोजाना आजाती है। घी की भी यह मंडी है। यहाँ तथा आस पास के देहातों में लोग कपड़ा भी बुनते हैं। जो रोजाना यहाँ के बाजार में आकर बिकता है। उसमें कोटिंग, शर्टिंग एवं टाविल ज्यादा होते हैं।

यहाँ निम्नलिखित जीनिंग एण्ड प्रेसिंग फैक्टरियाँ हैं—

१. लोईवाल जीनिंग फैक्टरी
२. नाथूराम बिहारीलाल एण्ड को० जिनिंग एण्ड प्रेसिंग फैक्टरी
३. वेस्ट पेटेन्ट प्रेस कं० लि० जिनिंग प्रेसिंग फैक्टरी

यहाँ के व्यापारियों का परिचय निम्न प्रकार है—

मेसर्स किशोरीलाल बाबूलाल

वर्तमान में इस फर्म के मालिक स्व० सेठ किशनलालजी के पुत्र सेठ किशोरीलालजी एवं बाबूलालजी हैं। आप लोग माहेश्वरी समाज के जेसलमेर के निवासी सज्जन हैं। आपकी फर्म करीब १०० वर्ष पूर्व यहाँ स्थापित हुई थी। इस खानदान में क्रमशः सेठ मेघराजजी और सेठ खेमराजजी हुए। आप लोगों ने फर्म के व्यवसाय एवं स्थायी सम्पत्ति को विशेष उत्तजन दिया। आपके पश्चात् इस फर्म का सञ्चालन आपके पुत्र सेठ मिट्ठूलालजी एवं सेठ किशनलालजी ने सम्हाला। आप दोनों सज्जन अपना २ स्वतन्त्र व्यापार करने लग गये। इस फर्म की आप के हाथों से भी अच्छी उन्नति हुई। सेठ किशनलालजी का स्वर्गवास हो गया है। वर्तमान में आपके पुत्र इसके मालिक हैं।

सेठ किशोरीलालजी का पब्लिक जीवन अच्छा है। आप यहाँ की म्युनिसिपेलिटी एवं लोकल बोर्ड के मेम्बर हैं। आपने यहाँ के स्कूलों एवं बाढ़पीड़ितों की सहायतार्थ भी बहुत पैसा खर्च किया। आप दोनों भाई शिक्षित एवं मिलनसार हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

कासगंज—मेसर्स किशोरीलाल बाबूलाल } यहाँ बैंकिंग एवं जमींदारी का काम होता है।

कासगंज—मेसर्स किशनलाल बाबूलाल T. A. "Seth" } यहाँ बैंकिंग, गल्ला एवं शक्कर और आढ़त का व्यापार होता है।

कपड़े के व्यापारी—
मेसर्स गंगाधर शिवचरनलाल
,, नाथूराम रामप्रताप
,, बाँकेलाल जानकीप्रसाद
,, बृजवासीलाल श्रीराम
,, मक्खनलाल पन्नालाल
,, साधोराम माधोराम
,, शालिगराम बाबूराम

गल्ला और रूई के व्यापारी—
मेसर्स किशनलाल बाबूलाल
,, जानकीप्रसाद बृजलाल
,, मुन्नीलाल जगन्नाथप्रसाद
,, फकीरचन्द शिवनन्दनप्रसाद
,, शिवचरनलाल सूरजप्रसाद

घी के व्यापारी—
मेसर्स जानकीप्रसाद बृजलाल
,, जगजीतप्रसाद दीनदयाल
,, देवकीनन्दन रामप्रसाद

हाथरस

ई० आई० आर० की मेन लाइन के हाथरस जंक्शन से करीब छः सात मील दूरी पर बसी हुई यह बहुत अच्छी व्यापारिक मण्डी है। यहाँ पर खासकर रूई, घी और सरसों का बहुत बड़ा व्यापार होता है। मौसिम के समय यहाँ पर रोजाना हजारों मन सरसों आती है। इसकी आमद मथुरा, कामा और डीग तक से होती है। घी भी सीजन के टाइम में दो ढाई सौ मन रोजाना तक आ जाता है। कपास की आमद सीजन के टाइम में रोजाना दस हजार मन तक हो जाती है। यहाँ का बिनौला पंजाब की ओर जाता है। कपास लोढ़ने और बाँधने के लिए यहाँ कई जीनिंग प्रेसिंग फैक्टरियाँ बनी हुई हैं। यहाँ मेसर्स लल्लामल हरदेवदास की, तथा मेसर्स हरचरनदास पुरुषोत्तमदास की सूत कातने की मिलें भी बनी हुई हैं। इसके सिवा मेसर्स किशनलाल मटरूमल और जगन्नाथ कन्हैयालाल की यहाँ पर तेल की मिलें हैं जिनमें सरसों का तेल निकाला जाता है।

हाथरस की प्रसिद्ध वस्तुओं में यहाँ के चाकू बहुत उल्लेखनीय हैं। ये चाकू यहाँ से सारे भारतवर्ष में जाते हैं और बड़े चाव से खरीदे जाते हैं। ये सस्ते और मजबूत होते हैं।

यहाँ के व्यापारियों का परिचय इस प्रकार है :—

मेसर्स बालमुकुन्द दौलतराम

इस फर्म के वर्तमान मालिक लाला बालमुकुन्दजी हैं। आप ला० रामचन्द्रजी के (आपका परिचय मेसर्स हरचरनदास पुरुषोत्तमदास के साथ दिया गया है) तृतीय पुत्र हैं। सन् १९२० तक आप तीनों भाइयों का व्यापार शामिल चलता था। उसके पश्चात् आप सब लोग

अलग २ हो गये। तब से लाला बालमुकुन्दजी ने उपरोक्त नाम से अपनी फर्म खोली। आप बड़े योग्य व्यक्ति हैं। आपके पुत्र का नाम बाबू दौलतरामजी है।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

हाथरस सिटी—मेसर्स बालमुकुन्द दौलतराम—यहाँ, रूई, गल्ला, सरसों तथा बकिंग व्यापार होता है।

आपकी हाथरस और अलीगढ़ में जीन प्रेस फैक्टरियाँ हैं। गोवर्द्धन के श्री लक्ष्मीनारायण के मन्दिर में आपने भी बहुत सहयोग प्रदान किया है। हाथरस में आपका एक बगीचा है।

मेसर्स मोहनलाल चिरंजीलाल

इस फर्म के मालिकों का मूल निवासस्थान चूरू का है। आप अग्रवाल वैश्य समाज के बागला सज्जन हैं। प्रारम्भ में सेठ हरनन्दरायजी ने हाथरस में फर्म की स्थापना कर नील का व्यापार प्रारम्भ किया। आपके पश्चात् सेठ फूलचन्दजी बागला ने इस फर्म का संचालन कर इसकी उन्नति की। सेठ फूलचन्दजी के चार पुत्र हुए जिनमें उपरोक्त फर्म आपके सब से छोटे पुत्र मोहनलालजी की है। सेठ फूलचन्दजी का स्वर्गवास संवत् १९५६ में हो गया। तथा आपके एक वर्ष पूर्व ही आपके पुत्र मोहनलालजी का भी देहान्त हो गया था। फलतः फर्म का संचालन मोहनलालजी के दत्तक पुत्र सेठ चिरंजीलालजी बागला के हाथ में आया। आपने इस फर्म की अच्छी तरक्की की। आप सन् १९१६ और १९१९ में स्थानीय म्युनिसिपैलिटी के चेअरमैन निर्वाचित किये गये। इसके सिवाय आप सेकण्ड क्लास ऑनरेरी मजिस्ट्रेट भी हैं। सन् १९२० में सरकार ने आपको रायबहादुर का सम्मानसूचक खिताब प्रदान किया।

रा० ब० सेठ चिरंजीलालजी का सार्वजनिक कार्यों के प्रति भी बहुत प्रेम है। आपने करीब ५३ हजार की लागत से हाथरस मे चिरंजीलाल बागला डिस्पेन्सरी खुलवाई। इसी प्रकार आपने फूलचन्द्र बागला ऐंग्लो संस्कृत हाईस्कूल की स्थापना करवाई। इसके अतिरिक्त आपने बद्रीनारायण के मार्ग में रुद्रप्रयाग नामक स्थान पर एक विशाल धर्मशाला भी बनवाई है। और भी कई सार्वजनिक कार्य्यों में आप बड़ी उदारता के साथ दान देते रहते हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

हाथरस—मेसर्स मोहनलाल चिरंजीलाल
T. A. "narayan" — जमींदारी, बैंकिंग, गल्ला, रूई, और कमीशन एजन्सी का काम होता है। यहाँ पर आपकी एक जीन प्रेस फैक्टरी भी है। तथा यू० पी० इंजीनियरिंग वर्क्स के नाम से लोहे पीतल की ढलाई का एक कारखाना भी है।

स्व० सेठ फूलचन्दजी बागला (मोहनलाल चिरंजीलाल) हाथरस

स्व० सेठ मोहनलालजी बागला (मोहनलाल चिरंजीलाल) हाथरस

रा० ब० सेठ चिरंजीलालजी बागला (मोहनलाल चिरंजीलाल) हाथरस

कलकत्ता—मे० हरनन्दराय फूलचन्द
७१ बड़तल्ला स्ट्रीट
of A. Humectum
} बैंकिंग, कमीशन एजन्सी और कॉटन का बिजीनेस होता है। यह फर्म वाम्ने कम्पनी लि० की बेनियन है। इस फर्म में सेठ प्यारेलालजी बागला का साझा है।

बम्बई—मेसर्स फूलचन्द मोहनलाल
कालबादेवी रोड
T. A. Penkin
} बैंकिंग, रूई, गल्ला और कमीशन एजन्सी का काम होता है। इस फर्म में सेठ प्यारेलाल जी बागला का साझा है।

कानपुर—मेसर्स फूलचन्द मोहनलाल
नयागञ्ज
T. A. Piecegoods
} बैंकिंग, रूई, गल्ला और कमीशन एजन्सी का काम होता है। इस फर्म में सेठ प्यारेलालजी बागला का साझा है।

हरदुरगंज (अलीगढ़) मोहनलाल
चिरंजीलाल
} जीनिंग फैक्टरी है तथा रूई और गल्ले का व्यापार होता है।

मेसर्स मटरूमल शिवमुखराम

यह फर्म सेठ फूलचन्दजी बागला के द्वितीय पुत्र सेठ मटरूमलजी की है। सेठ फूलचन्दजी के स्वर्गवास के पश्चात् सेठ मटरूमलजी के पुत्र सेठ शिवमुखरामजी ने पुरानी फर्म से अलग होकर उपरोक्त नाम से नवीन फर्म की स्थापना की। आपने अपने व्यापार कौशल से इस फर्म की खूब उन्नति की। आप यहाँ की म्यूनिसपैलिटी के कमिश्नर और ऑनरेरी मजिस्ट्रेट थे। आपका स्वर्गवास संवत् १९६८ में हुआ। मरते समय आपने ६१००० रुपयों की रकम दान में निकाली। जिससे हरिद्वार में एक मन्दिर तथा हाथरस में एक दुर्गाजी का मन्दिर बनाया गया।

आपके पश्चात् आपके दत्तक पुत्र सेठ प्यारेलालजी बागला ने इस फर्म के काम को सम्हाला। आप भी यहाँ पर बड़े प्रभावशाली व्यक्ति हैं। आप बम्बई के मारवाड़ी चेम्बर ऑफ कॉमर्स के प्रेसिडेण्ट तथा ईस्ट इण्डियन कॉटन एसोसिएशन के डायरेक्टर रह चुके हैं। आपने कर्णवास (जि० बुलन्दशहर) में एक धर्मशाला बनवाई है। तथा फूलचन्द ऐंग्लो संस्कृत हाईस्कूल में भी अच्छी सहायता प्रदान की है। आपके पुत्र का नाम बाबू सुबोधचन्दजी है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

हाथरस—मेसर्स मटरूमल
शिवमुखराम
T. A. Nawin
} बैंकिंग, कॉटन, ग्रेन और कमीशन एजन्सी का काम होता है।

हाथरस—मेसर्स प्यारेलाल सुबोधचन्द्र	गल्ले का व्यापार होता है तथा दाल की फैक्टरी है।
कचरीपुरा, कानपुर—मेसर्स प्यारेलाल सुबोधचन्द्र	कपड़े तथा गल्ले का व्यापार होता है।
कासगंज—मेसर्स प्यारेलाल सुबोधचंद्र	रूई, गल्ला और कमीशन का व्यापार होता है। यहाँ आपकी दाल की फैक्टरी भी है।

इसके अतिरिक्त मेसर्स फूलचन्द मोहनलाल के नाम से कानपूर और बम्बई में तथा हरनन्दराय फूलचन्द के नाम से कलकत्ते में जो फर्में हैं जिनका परिचय मेसर्स मोहनलाल चिरंजीलाल के साथ दिया गया है। उनमें आपका साझा है।

मेसर्स लल्लामल हरदेवदास

इस फर्म की स्थापना संवत् १९२१ में लाला लल्लामलजी ने अलीगढ़ में करके उस पर रूई, गल्ला और कमीशन का व्यापार प्रारम्भ किया। संवत् १९४६ में आपने इसकी ब्रांच हाथरस में भी खोली। संवत् १९५० में आपका स्वर्गवास हो गया। आपके पाँच पुत्र हुए। जिनके नाम लाला मक्खनलालजी, सरोतीलालजी, लक्ष्मीनारायणजी, रामदयालजी और बाँके-लालजी हैं। इनमें से लाला मक्खनलालजी और सरौतीलालजी का स्वर्गवास हो चुका है।

इस फर्म की लाला मक्खनलालजी के हाथों से खूब उन्नति हुई। आपने कई स्थानों पर जीनिंग प्रेसिंग फैक्टरियाँ खोलीं। तथा संवत् १९५९ में हाथरस में मेसर्स रामचन्द्र हरदेवदास के नाम से एक कॉटन स्पिनिंग मिल खोला। सन् १९२० से इसका नाम लल्लामल हरदेवदास कॉटन स्पिनिंग मिल्स बदला गया, जो अब भी इसी नाम से चल रहा है। आपके पश्चात् लाला लक्ष्मीनारायणजी, लाला रामदयालजी तथा लाला बाँकेलालजी ने भी इस फर्म की खूब तरक्की थी। लाला बाँकेलालजी ऑनरेरी मजिस्ट्रेट हैं।

इस फर्म की ओर से कर्णवास में एक धर्मशाला तथा हाथरस और अलीगढ़ में बगीचे बनाए हुए हैं।

इसका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

हाथरस—मेसर्स लल्लामल हरदेवदास—यहाँ पर बैंकिंग, रूई और गल्ले का व्यापार तथा कमीशन एजंसी का काम होता है। इस फर्म की यहाँ, रामदयाल बांकेलाल और बाँकेलाल रामप्रसाद के नाम से दो जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरियाँ और लल्लामल हरदेव-दास कॉटन स्पिनिंग मिल के नाम से एक सूत कातने की मिल है।

लाला हरचरनदासजी (हरचरनदास पुरुषोत्तम-दास) हाथरस

सेठ किशोरीलालजी चाण्डक (किशोरीलाल बाबूलाल) कासगंज

लाला पुरुषोत्तमदास जी (हरचरनदास पुरुषोत्तमदास) हाथरस

सेठ बाबूलालजी चाण्डक (किशोरीलाल बाबूलाल) हाथरस

हाथरस—मेसर्स रामदयाल रूपकिशोर—यहाँ शक्कर, गुड़ और कमीशन का काम होता है।

हाथरस—मेसर्स गुरुदयाल प्रसाद चुन्नीलाल—यहाँ पर घी, जनरल मर्चेण्टाइज्ड और कमीशन का काम होता है।

अलीगढ़—लल्लामल हरदेवदास देहला दरवाजा—यहाँ रूई, गल्ला और कमीशन एजन्सी का काम होता है।

अलीगढ़—मेसर्स गुरुदयालप्रसाद चुन्नीलाल—यहाँ घी का व्यापार और कमीशन एजन्सी का काम होता है।

मेसर्स हरचरनदास पुरुषोत्तमदास

इस फर्म की स्थापना करीब ६५ वर्ष पूर्व लाला रामचन्द्रजी ने की। आप बड़े दूरदर्शी और व्यापारकुशल पुरुष थे। आपने उस काल में बढ़ते हुए मिल व्यवसाय की ओर ध्यान दिया और सन् १८९९ में पश्चिमी संयुक्त प्रांत में पहले पहल मिल की स्थापना की। आपने हाथरस में रामचन्द्र हरदेवदास बड़ा मिल तथा रामचन्द्र हरदेवदास न्यूमिल नामक दो मिलों की स्थापना की। आपका स्वर्गवास संवत् १९६० में हो गया। आपके पश्चात् आपके पुत्र लाला हरचरनदासजी तथा लाला पुरुषोत्तमदासजी ने फार्म का काम सम्हाला। आप दोनों भाइयों ने अपने व्यापार की तथा मिलों की बहुत उन्नति की। तथा आगरा और मथुरा जिलों में कई जीनिंग तथा प्रेसिंग फैक्टरियों की स्थापना की। आप लोग बड़े व्यापारचतुर और अनुभवी हैं। लाला हरचरनदासजी सेकण्ड क्लॉस ऑनरेरी मजिस्ट्रेट तथा म्यूनिसिपैलिटी के चेयरमैन हैं।

लाला हरचरनदासजी के इस समय दो पुत्र हैं जिनके नाम पन्नालालजी तथा हीरालालजी हैं। लाला पुरुषोत्तमलालजी के भी दो पुत्र हैं। जिनके नाम चुन्नीलालजी तथा गुलाबचन्दजी हैं।

आपकी ओर से गोवर्द्धन में लक्ष्मीनारायणजी का एक विशाल मन्दिर बनाया हुआ है, तथा उसकी व्यवस्था के लिए वहाँ की जीनिंग फैक्टरी दे दी है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

हाथरस—मेसर्स हरचरनदास पुरुषोत्तमदास (T. A. Ram) यहाँ पर रूई, सूत, गल्ला और बैंकिंग का काम होता है।

हाथरस-दी न्यू रामचन्द्र कॉटन मिल—इस मिल में सूत की कताई का काम होता है अब इसमें कपड़ा बुनने के लूम्स भी लगाये जा रहे हैं।

अलीगढ़—मेसर्स चुन्नीलाल पन्नालाल—यहाँ कमीशन का काम होता है।

व्यापारियों के पते—

रुई के व्यापारी—

मेसर्स छोटेलाल विश्वेश्वरदास
" नन्दूराम रामदयाल
" बालमुकुन्द दौलतराम
" भोलानाथ गोपीनाथ
" मटरूमल लक्ष्मीनारायण
" मोहनलाल चिरंजीलाल
" रामजीमल बाबूलाल
" ललामल हरदेवदास
" हरचरनदास पुरुषोतमदास
" होतीलाल रामप्रसाद

गल्ले के व्यापारी—

मेसर्स कल्याणदास नेताराम
" गङ्गोलमल गजानन
" घासीराम मनोहरलाल
" चन्दीलाल रामप्रसाद
" ठाकुरदास नन्हूमल
" दयाभाई जौहरभाई
" वनखण्डीमल चतुर्भुज
" बच्चीमल मूलचन्द
" रतनजी जेठाभाई
" शिवदयालमल हुकुमचन्द
" श्यामलाल गङ्गाधर
" सीताराम शालिगराम
" हीरालाल नारायणदास
" होतालाल रामप्रसाद

कपड़े के व्यापारी—

मेसर्स आशाराम रामप्रसाद
" काल्हूराम मोतीलाल
मेसर्स कन्हैयालाल गङ्गाभूषण
" डालचन्द छीतरमल
" नारायणदास गंगाशरण
" रामस्वरूप श्यामसुन्दर
" रामप्रसाद पन्नालाल
" शिवदयाल पन्नालाल
" सदासुख शिवदयाल
" हरसुखराय कन्हैयालाल

घी के व्यापारी—

मेसर्स गुरुदयालप्रसाद चुन्नीलाल
" जीतमल रामगोपाल
" झुन्नीलाल मूलचन्द
" बसन्तलाल कचोरमल
" वनखण्डीमल चतुर्भुज

किराने के व्यापारी—

मेसर्स गिरधारीलाल केशवदेव
" छितरमल बाबूलाल
" झुन्नीलाल मूलचन्द
" नन्दूराम रामदयाल
" मोहनलाल गनेशीलाल
" रणछोड़दास राधेलाल
" रामचन्द्र पन्नालाल

लोहे के व्यापारी—

मेसर्स प्यारेलाल गंगाप्रसाद
" बन्सीधर किशनदास
" मङ्गलसेन चम्पाराम

चाँदी के व्यापारी—

मेसर्स जुगुलकिशोर गिरधारीलाल
" भनूराम बाँकेलाल

अलीगढ़

ऐतिहासिक परिचय

अलीगढ़ ई० आई० आर० की मेन लाईन पर हबड़ा और दिल्ली के बीच बसा हुआ है। प्राचीन काल में गङ्गा और यमुना के दोआब में यह एक खाली किले के रूप में था। यह किला पहले एक हिन्दू राजा के अधिकार में था। औरङ्गजेब की मृत्यु के पश्चात् मराठे, जाट, अफगान, रुहेले इत्यदि कई जातियों ने इस पर आक्रमण किये। सन् १७५९ में अफगानो ने वहाँ से जाटों को खदेड़ दिया। उनके कई वर्ष बाद नाजक्स खाँ ने रामगढ़ दुर्ग को मरम्मत करवा कर उसको अलीगढ़ नाम दिया। सन् १७८४ ई० में महाराजा सेंधिया ने अलीगढ़ को जीतकर उसमें से कई करोड़ रुपये के सोना-चांदी तथा रत्न प्राप्त किये। इसके पश्चात् इस किले के लिए सेन्धिया और मुसलमानों में लड़ाई चलने लगी। और अन्त में लार्ड लेक ने उसे सेन्धिया से जीत लिया। तब से अब तक यह स्थान ब्रिटिश साम्राज्य के अन्तर्गत ही है।

दर्शनीय स्थान

अलीगढ़ के दर्शनीय स्थानों में सर सैय्यद अहमद खाँ का स्थापित किया हुआ ऐंग्लो ओरियिएटल कॉलेज प्रधान चीज है। इसे सन् १८७५ में ऊँचे घराने के मुसलमानों को अंग्रेजी सिखलाने के लिए सैय्यद साहब ने अंग्रेजी ढङ्ग पर स्थापित किया था। आज तो इस कॉलेज ने विश्वविद्यालय का रूप धारण कर लिया है, और सारे भारतवर्ष में केवल मुसलमानों के लिए सबसे बड़ा शिक्षा का केन्द्र है। इसके सिवा यहाँ पर कैल की ऊँची भर एक मस्जिद बनी हुई है, जहाँ पर यह मसजिद है वहाँ हिन्दू और बौद्ध युग के बहुत से ध्वंसावशेष दिखलाई देते हैं। शहर के बीच में स्वच्छ जल वाला एक सुन्दर सरोवर है। सरोवर के ऊपर शाखाएँ फैलाए हुए कई वृक्ष अपने बीच कई मन्दिरों को लिए हुए स्थापित हैं।

औद्योगिक परिचय

इस शहर के औद्योगिक परिचय में यहाँ के बने हुए तालों का परिचय ही सबसे महत्त्व पूर्ण है। यहाँ के ताले बड़े, मजबूत, टिकाऊ, सुन्दर और उपयोगिता के मान से सस्ते भी होते हैं। भारत के प्रत्येक हिस्से में यहाँ के ताले जाते हैं, और अच्छी प्रतिष्ठा प्राप्त करते हैं।

यहाँ के व्यापारियों का परिचय इस प्रकार है—

मेसर्स गोपालराय गोविन्दराय

इस फर्म की स्थापना संवत् १९५१ में लाला गोपालरायजी एवं लाला गोविन्दरायजी के द्वारा हुई। आपने इस पर शुरू २ में रूई और गल्ले का व्यापार आरंभ किया। इसमें आपको अच्छी सफलता मिली। धीरे २ आपने कॉटन जीनिंग और प्रेसिंग फैक्टरी भी खोल दी। आपका स्वर्गवास हो गया है।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक ला० गोपालरायजी के पुत्र ला० जगन्नाथजी हैं। आपके तीन पुत्र हैं बा० चिरञ्जीलालजी, बा० पन्नालालजी एवं बा० दौलतरामजी। बा० चिरंजीलाल जी शिक्षित एवं मिलनसार व्यक्ति हैं। आजकल फर्म का प्रधान संचालन आप ही करते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

अलीगढ़—मेसर्स गोपालराय गोविंदराय देहलीगेट T. A. Gopal	यहाँ हेड आफिस है। तथा इस फर्म पर रूई, गल्ला और आढ़त का काम होता है। यहाँ इसकी जिनिंग प्रेसिंग फैक्टरी भी है।
अलीगढ़—मेसर्स चिरंजीलाल कैलाश-चन्द दिल्ली गेट	यहाँ रूई, गल्ला और आढ़त का काम होता है।
जहाँगिराबाद—मेसर्स पूरनमल निरंजनलाल	यहाँ कॉटन जीन-प्रेस फैक्टरी है। तथा कॉटन का व्यापार होता है। इसमें बा० निरंजनलालजी का साझा है।

इसके अलावा चन्दौसी में भी आपकी एक फर्म है जिसपर दाल और आढ़त का काम होता है।

मेसर्स चुन्नीलाल पन्नालाल

इस फर्म का हेड आफिस मेसर्स हरचरनदास पुरुषोत्तमदास के नाम से हाथरस में है। वहाँ इसका एक कपड़े का मिल भी है। इसका विस्तृत परिचय चित्रों सहित वहीं दिया गया है यहाँ यह फर्म कमीशन का काम करती है। इसका यहाँ का पता इसबगंज है।

मेसर्स पूरनमल निरंजनलाल

यह फर्म ५ वर्ष पूर्व बा० निरञ्जनलालजी अग्रवाला द्वारा स्थापित हुई। वर्तमान में आप ही इस फर्म के मालिक हैं। आप यहाँ के वकील हाईकोर्ट भी हैं। आपके पिताजी भी यहाँ के प्रसिद्ध वकील थे। इस फर्म की आपके द्वारा अच्छी उन्नति हुई। सुशिक्षित होने के कारण आपने शीघ्र ही व्यवसाय को बहुत बढ़ा लिया। आपने यहाँ जीन-प्रेस फैक्टरी भी स्थापित की। सार्वजनिक कार्यों में आपका अच्छा हाथ रहता है। आपके हीराचन्दजी एवं राजेन्द्र कुमारजी नामक पुत्र हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

अलीगढ़—मेसर्स पूरनमल निरंजनलाल देहली गेट } यहाँ बैंकिंग और कॉटन का व्यापार होता है। आपकी यहाँ एक जिनिंग फैक्टरी भी है।

जहाँगिराबाद—मेसर्स पूरनमल निरंजनलाल } यहाँ रूई का व्यापार होता है। यहाँ कॉटन जिनिंग एण्ड प्रेसिंग फैक्टरी है इसमें सेठ जगन्नाथजी का साझा है।

इसके अतिरिक्त चन्दौसी और उझियानी में भी आपकी फर्में हैं। जहाँ दाल का काम होता है। आढ़त का काम भी इन फर्मों पर होता है।

वालमुकुन्द कॉटन-जीन एण्ड प्रेस

इस फैक्टरी के मालिक का हेड आफिस हाथरस में है। यहाँ इस प्रेस में कपास खरीदी का काम भी होता है। इसका पता दिल्ली दरवाजा है। विशेष परिचय हाथरस में दिया गया है।

मेसर्स मानसिंह जवाहरलाल

इस फर्म के वर्तमान मालिक स्व० सेठ फूलचंदजी के पुत्र बा० लायकचंदजी, बाबू गुलाबचन्दजी एवं बा० कृष्णमुरारजी हैं। आप लोग खण्डेलवाल वैश्य समाज के जैनी सज्जन हैं। इस फर्म की स्थापना करीब १०० वर्ष पूर्व सेठ मानसिंहजी द्वारा हुई। आपके पश्चात् फर्म का संचालन आपके पुत्र सेठ जवाहरलालजी तथा इनके पश्चात् चिरञ्जीलालजी ने किया। आपका स्वर्गवास हो गया। आपके पश्चात इस फर्म का संचालन भार सेठ फूलचंदजी पर आया। आप व्यापारचतुर पुरुष थे। आपने फर्म की बहुत तरक्की की। आप मथुरा एवं अलीगढ़ के ट्रेझरर

तथा आनरेरी मजिस्ट्रेट थे। यहाँ के प्रतिष्ठित रईसों में आपका नाम था। आपकी ओर से यहाँ एक जैन मन्दिर बना हुआ है। इसकी लागत २ लाख बतायी जाती है।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

अलीगढ़—मेसर्स मानसिंह जवाहरलाल सराय खिन्नी — यहाँ बैंकिंग और जमींदारी का काम होता है। वर्तमान में यह फर्म इम्पिरियल बैंक की अलीगढ़ ब्राँच की एवं गवर्नमेंट ट्रेझरर अलीगढ़ है।

मेसर्स मूलचन्द जगन्नाथ

इस फर्म के मालिक बीकानेर के निवासी हैं। यह फर्म यहाँ कॉटन और ग्रेन का व्यापार करती है। इसकी यहाँ एक जीनिंग और एक प्रेसिंग फैक्टरी भी है। यहाँ का पता सदारगेट है। इसका विस्तृत परिचय इसी ग्रन्थ के प्रथम भाग में राजपूताना विभाग के बीकानेर में दिया गया है।

मेसर्स लल्लामल हरदेवदास

इस फर्म का हेड आफिस हाथरस है। वहाँ इसका एक कपड़े का मील चलता है। इसका विस्तृत परिचय वहीं दिया गया है। यहाँ यह फर्म देहली दरवाजे पर रूई, गल्ला और आढ़त का व्यापार करती है। एक शाखा इसकी और है उसमें मेसर्स गुरुदयालप्रसाद चुन्नीलाल के नाम से घी और आढ़त का व्यापार होता है। इसका पता छाकगंज है।

मेसर्स लक्ष्मणदास गंगाराम

इस फर्म के वर्तमान मालिक रायबहादुर गंगासागरजी जटिया हैं। इसका हेड आफिस खुरजा है। अतएव इसका विस्तृत परिचय यहीं प्रकाशित किया गया है। यहाँ यह फर्म कॉटन का काम करती है। इसकी यहाँ एक कॉटन जीन प्रेस फैक्टरी है। इसका पता दिल्ली दरवाजा है।

मेसर्स सुखानन्द श्यामलाल

इस फर्म का हेड आफिस खुरजा यू० पी० मे है। इसके वर्तमान प्रधान संचालक लाला श्यामलालजी हैं। इसका विस्तृत परिचय चित्रों सहित वहीं प्रकाशित किया गया है।

यहाँ यह फर्म कॉटन का व्यापार करती है। इसका यहाँ एक कॉटन जीन-प्रेस है। इसका पता देहली गेट है।

बैंकर्स—

दी इम्पिरियल बैंक अलीगढ़ ब्रांच
मेसर्स लायकचंद गुलाबचंद सरायखिन्नी
,, मिश्रीलाल चन्दालाल ,,

सोना-चाँदी के व्यापारी—

सेठ अम्बालाल दूबे बड़ा बाजार
मेसर्स गनेशीलाल छप्पनलाल ,,
सेठ जड़ावलालजी ,,
,, दीपचंदजी ,,
मेसर्स भोपालदास कन्हैयालाल ,,
,, श्रीलाल ज्वालाप्रसाद ,,

कपड़े के व्यापारी

मेसर्स अब्दुलगनी महमद चौक
,, छबीलराम सोनपाल बड़ा बाजार
,, टीकाराम देवकीनन्दन महावीरगंज
,, धरमदास मटरूमल कनवरीगंज
,, नाथूराम ख्यालीराम बड़ाबाजार
,, बालमुकुन्द चुन्नीलाल महावीरगंज
,, बासुदेव बुद्धसेन बड़ाबाजार
,, मोतीलाल गंगाप्रसाद महाबीरगंज
,, मोतीलाल निरंजनलाल महावीरगंज
,, मुकुन्दलाल नारायणदास बड़ाबाजार
,, रामस्वरूप प्यारेलाल महावीरगंज
,, शालिगराम गजाधर चौक
,, होतीलाल बाबूलाल महाबीरगंज

खद्दर के व्यापारी—

मेसर्स चेनपाल बालकृष्ण मदारगेट
,, जमनादास आसानन्द मदारगेट
,, लीलाधर द्वारकाप्रसाद सब्जीमंडी
,, शांतिलाल नागरमल मदारगेट

लोहे के व्यापारी—

मेसर्स जानकीप्रसाद गंगाप्रसाद महाबीरगंज
,, प्यारेलाल हरवल्लभदास ,,
,, मगनीराम बुधसेन ,,
,, रघुनन्दनप्रसाद मूलचंद ,,
,, रामचरनलाल कसेरा ,,

इमारती लकड़ी के व्यापारी—

मेसर्स गोविन्दराम रामप्रसाद पड़ाव दूबे
,, जानकीप्रसाद गंगाप्रसाद ,,

घड़ी के व्यापारी—

मेसर्स रायबहादुर उमराव सिंह एण्ड संस रेल्वेरोड

बुकसेलर्स—

पी० सी० द्वादश श्रेणी एण्ड को०

गल्ले के व्यापारी—

मेसर्स किशनपाल प्रेमनाथ कल्याणगंज
,, खिचूमल अयोध्याप्रसाद युसुफगंज
,, गोपालदास वल्लभदास कल्याणगंज
,, दिलेराम जगन्नाथ ,,
,, बिहारीलाल शंकरलाल ,,

मेसर्स बिहारीलाल सुन्दरलाल पिदरुगंज
,, मक्खनलाल चतराप्रसाद युसुफगंज
,, मोहनलाल बाबूलाल ,,

घी के व्यापारी—

मेसर्स गुरुदयाल प्र० चुन्नीलाल कल्याणगंज
,, देवीदास श्यामलाल महाबीरगंज
,, धनीराम ईश्वरदास ,,
,, बिहारीलाल शंकरलाल कल्याणगंज
,, मोहनलाल बाबूलाल युसुफगंज
,, मुकुन्दलाल नारायणदास महाबीरगंज

ताले की फैक्टरियाँ—

मेसर्स जानसेन एण्ड को० सिविल लाईन
दी स्पार्कलिंक लॉक वर्क्स स्टेशन के सामने
दी डायमंड जुबिलि लॉक वर्क्स रहमान की सराय
,, शांति मेटल वर्क्स खिन्नी की सराय
,, पंजाब लॉक वर्क्स बेरागी की सराय
,, के. बी. लॉक वर्क्स कुतुब की सराय
,, मास्टर मेटल वर्क्स अचलगेट
,, इक्लेट्रीक लॉक वर्क्स मदारगेट
,, जैन लॉक फैक्ट्री कटरा
मेसर्स के. आर. सोनी एण्ड को० मदारगेट
,, सी. एल. वैश्य वाराश्रेणी एण्ड को० कनवरी गंज
,, पाल ब्रदर्स मदारगेट
,, जार्ज एण्ड को० मदारगेट
,, सैंटो ब्रदर्स खिन्नी की सराय

आइल मिल—

प्राग आइल एण्ड आइस मिल

खुरजा

यह यूनाईटेड प्राविंस के बुलंद शहर नामक जिले की अपने ही नाम की तहसील का हेड क्वार्टर है। यह ग्रेंड ट्रंक रोड के समीप खुरजा जंकशन से ४ मील एवं खुरजा सिटी स्टेशन से ½ मील की दूरी पर बसा हुआ है। खुरजा जंकशन ई. आई. आर की मेनलाइन हवड़ा-देहली का स्टेशन है। यहाँ से एक दूसरी लाईन बुलंदशहर आदि होती हुई मेरठ तक गई है।

इस शहर का नाम पहले खारिजा था। यही खारिजा बदल कर खुरजा हो गया है। खारिजा को फिरोज शाह तुगलक ने भाले सुल्तान नामक राजशा को इनाम में दिया था। याने फ्रीरेवेन्यू पर दिया था। फ्रीरेव्हेन्यू का अर्थ खारिजा है। इसी फ्रीरेव्हेन्यू या खारिजा के ही नाम से इसका नाम खारिजा हो गया था।

यहाँ ग्रेंड ट्रंक रोड पर मखदुम साहब की कबर है। यह करीब ४२५ वर्ष पुरानी बतायी जाती है। पब्लिक इमारतों में टाउनहाल, डिस्पेंसरी और तहसील हैं। यहाँ के मुख्य निवासी

खेशगी, पठान और अगरवाल वैश्य हैं। अगरवाल विशेष कर जैन धर्मावलम्बीय हैं। इन्हीं अगरवालों के हाथ में यहाँ का व्यापार है। ये लोग बड़े उन्नतिशील, धनवान और व्यापारी हैं। करीब ५० वर्ष पूर्व इन लोगों ने एक मन्दिर बनवाया है। जिसमें करीब १ लाख से ऊपर रुपया खर्च हुआ है। इस मन्दिर पर पत्थर की कोराई का काम बहुत अच्छा बना है। इसके बीच के गुम्मज में सोने एवं रंग का काम बहुत अच्छा बना है। इसके अतिरिक्त यहाँ की धर्मशाला, मार्कर प्रेस और बाजार में भी पत्थर की कोराई का नमूना देखने को मिलता है।

सन् १८६६ से यहाँ म्युनिसिपेलिटी स्थापित है। मगर यहाँ इसकी व्यवस्था अच्छी नहीं है। यहाँ की सड़कें वगैरह बड़ी खराब हालत में हैं।

यह स्थान घी की बहुत बड़ी मण्डी है। मौसिम के टाइम में (जाड़े में) यहाँ करीब ८०० मन घी की रोजाना की आमद हो जाती है। घी का तौल ४०॥ सेर अंग्रेजी के मन से होता है। यहाँ घी की एक कमेटी भी लगभग ५ वर्ष से स्थापित है। यह कमेटी घी की शुद्धता के नियंत्रण के लिए ही स्थापित हुई है। यह अपने सार्टीफिकेट से देसावरों में शुद्ध घी भेजती है।

घी के सिवाय गल्ले का व्यापार भी यहाँ बहुत होता है। गेहूँ के मौसिम में औसतन आठ हजार मन गेहूँ दैनिक आता है। गेहूँ के पश्चात् दूसरा नम्बर जौ और मटर का तथा तीसरा चना और सरसों का है। रूई की करीब २०००० गांठें प्रति वर्ष यहाँ पर बन्धती हैं। यहाँ की जीनिंग और प्रेसिंग फैक्टरियों की कुल संख्या १५ है।

यहाँ के व्यापारियों का परिचय इस प्रकार है—

मेसर्स रायबहादुर अमोलकचन्द मेवाराम

इस फर्म के मालिक अग्रवाल जैन समाज के सज्जन हैं। आप लोग "रानीवालों" के नाम से प्रसिद्ध हैं। खुर्जे में यह फर्म बहुत पुरानी है। प्रारम्भ में इस परिवार के पूर्वपुरुष सेठ मानकरामजी ने मेसर्स हरसुखराय अमोलकचन्द के नाम से इस फर्म को स्थापित कर रूई, गल्ला और कमीशन का कार्य्य प्रारम्भ किया। आपके सात पुत्र हुए। जिनके नाम सेठ हरसुख रायजी, अमोलकचन्दजी, अनन्तरामजी, फूलचन्दजी, चम्पालालजी, अमृतलालजी और भूरामलजी था।

खुर्जे के इस परिवार ने व्यापारिक जगत् में आश्चर्य्यजनक उन्नति की और भारत के प्रायः सभी व्यापारिक केन्द्रों में, जैसे कलकत्ता, बम्बई, करांची, आगरा, दिल्ली, कानपूर, मेरठ, सहारनपुर, लाहौर, अम्बाला, फिरोजाबाद, हाथरस, चटगाँव इत्यादि स्थानों में इसकी शाखाएँ तथा इनमें से कई स्थानो में जीनिंग प्रेसिंग फैक्टरियाँ स्थापित हुईं। इसी परिवार की ओर से ब्यावर में दी एडवर्ड वीविंग एण्ड स्पीनिंग मिल्स की स्थापना हुई। (ब्यावर में चम्पालाल रामस्वरूप

के नाम से फर्म का तथा मिल का परिचय ग्रन्थ के प्रथम भाग के राजपूताना विभाग में दिया गया है।)

इसी बीच इस परिवार के लोग अलग २ हो गये और सेठ अमोलकचन्दजी ने अपना स्वतंत्र व्यापार प्रारम्भ कर दिया। आपको सरकार ने रायबहादुर का खिताब दिया था। आपके कोई पुत्र न होने से आपने सेठ हरमुखरायजी के पुत्र सेठ मेवारामजी को दत्तक लिया। आपको भी सरकार ने रायबहादुरी का खिताब प्रदान किया। आपके भी कोई पुत्र न होने से आपने रायबहादुर चम्पालालजी के पुत्र लाला शान्तिलालजी को दत्तक लिया।

इस समय इस फर्म के मालिक लाला शान्तिलालजी हैं। सन् १९२३ में आप ऑनरेरी मजिस्ट्रेट और म्यूनिसिपल बोर्ड के चेयरमैन चुने गये। आप सुशिक्षित और उदार सज्जन हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

खुर्जा—मेसर्स अमोलकचन्द मेवाराम T. A. Raniwala	यहाँ हेड ऑफिस है। इस फर्म पर बैंकिंग, रूई, गल्ला और कमीशन का काम होता है। यहाँ आपकी जीन प्रेस फैक्टरी है।
देहली—मेसर्स अमोलकचन्द मेवाराम महेश्वरीदास का कटरा T. A. Raniwala	बैंकिंग और कमीशन एजन्सी का काम होता है।
आगरा—मेसर्स अमोलकचन्द मेवाराम बेलन गंज T. A. "Raniwala"	बैंकिंग, रूई, गल्ला और कमीशन का काम होता है।
अलवर—मेसर्स अमोलकचन्द मेवाराम T. A. Raniwala	बैंकिंग और कमीशन एजन्सी का काम होता है, तथा जीन प्रेस फैक्टरी है।
बम्बई—मेसर्स अमोलकचन्द मेवाराम लक्ष्मीबिल्डिंग कालबादेवी T. A. "Amolak"	यहाँ बैंकिंग, रूई, गल्ला और कमीशन एजन्सी का काम होता है।
सहारनपुर—मेसर्स अमोलकचन्द मेवाराम T. A. Raniwala	रूई, गल्ला और कमीशन का काम होता है तथा जीन प्रेस फैक्टरी है।

सेठ शान्तिलालजी रानीवाले (अमोलकचन्द मेवाराम) खुरजा

स्व० रायबहादुर जानकीप्रसादजी (जोगीराम जानकीप्रसाद) खुरजा

रायबहादुर गंगासागरजी जटिया (रामदयाल-म्हालीराम) खुरजा

रायसाहेब श्यामलालजी (जोगीराम जानकीप्रसाद) खुरजा

चन्दौसी—मेसर्स अमोलकचन्द मेवाराम T. A. Raniwala	यहाँ जीन प्रेस, फैक्टरी है। तथा रूई, गल्ले का व्यापार होता है।

मेसर्स गोरखराम साधूराम

इस फर्म का हेड आफिस कलकत्ता है। वहाँ यह फर्म अच्छा व्यापार करती है और भी कई स्थानों पर इसकी शाखाएँ हैं जिनका विस्तृत परिचय चित्रों सहित इसी ग्रन्थ के दूसरे भाग में कलकत्ता विभाग के पेज नं० २४० में दिया गया है। यहाँ यह फर्म रूई का व्यापार करती है। यहाँ इसकी जिनिंग और प्रेसिंग फैक्टरी भी है। इसके वर्तमान मालिक सेठ तोलारामजी, गौरीशंकरजी तथा कन्हैयालालजी गोयनका हैं।

मेसर्स जोगीराम जानकीप्रसाद

खुर्जा में इस फर्म को स्थापित हुए करीब ७० वर्ष हुए। यहाँ पर इस फर्म की स्थापना सेठ जोगीरामजी ने की। आप अग्रवाल जैन जाति के सज्जन थे। जोगीरामजी का देहान्त हुए करीब ५०-५५ वर्ष हो गये। जिस समय सेठ जोगीरामजी का स्वर्गवास हुआ उस समय आपके पुत्र सेठ जानकीप्रसादजी की अवस्था केवल १४-१५ वर्ष की थी। मगर रा० ब० सेठ जानकीप्रसादजी इतने तीव्र बुद्धि, मेधावी और व्यापारकुशल सज्जन थे कि इस थोड़ीसी अवस्था में आपने व्यापार को सम्हाल लिया। एक समय आपके जीवन में ऐसा भी आया कि आपके पास कुछ भी द्रव्य नहीं रहा। मगर उस कठिन समय में भी आप धैर्य्य से बिलकुल विचलित नहीं हुए। प्रत्युत आपने और भी उत्साह के साथ व्यापार चलाया और पुनः सम्पत्ति उपार्जित कर ली। गवर्नमेण्ट ने आपको यू० पी० कौन्सिल का मेम्बर बनाया। तथा रायबहादुरी का सम्मानित खिताब प्रदान किया। दानवीर भी आप बहुत बड़े थे। आपने अपनी तरफ से जानकीप्रसाद एंगलो संस्कृत स्कूल के नाम से एक हाई स्कूल बनाया। जिसमें करीब दो लाख रुपया व्यय हुआ है और ४५० छात्र उसमें पढ़ते हैं जो अब भी बड़ी शान से चल रहा है। और भी भिन्न २ सार्वजनिक कार्य्यों मे आपने हजारो रुपया दान किया। इस प्रकार अत्यन्त उन्नत जीवन व्यतीत करते हुए आपने देह त्याग किया।

संवत् १९६१ में रा० ब० सेठ जानकीप्रसादजी अपने जीवन काल ही में रायसाहब सेठ श्यामलालजी को ढिग नामक ग्राम से दत्तक लाये थे। इस समय आप ही इसके मालिक हैं। आपका भी यहाँ पब्लिक और गवर्नमेण्ट में बहुत बड़ा सम्मान है। आप यहाँ की म्यूनि-

सिपैलिटी के चेअरमैन, ऑनरेरी मजिस्ट्रेट तथा गवर्नमेंट के डिस्ट्रिक्ट ट्रेझरर हैं। आपको पहली जनवरी सन् १९२७ में रायसाहिब का सम्माननीय खिताब प्राप्त हुआ। यहाँ के सार्वजनिक कामों में भी आप बड़ी उदारता से दान देते रहते हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

हेड ऑफिस खुर्जा—मेसर्स जोगीराम जानकीप्रसाद (T. A. Krishna)—इस फर्म पर गल्ला और रूई का बहुत बड़ा बिजिनेस होता है।

चन्दौसी—मेसर्स जोगीराम जानकीप्रसाद—यहाँ पर भी गल्ला और रूई का व्यापार होता है।

हापुड़—मेसर्स जोगीराम जानकीप्रसाद (T. A. Shiam)—यहाँ पर भी गल्ला और रूई का व्यापार होता है।

बम्बई—मेसर्स जोगीराम जानकीप्रसाद कालबादेवी (T. S. "Carat")—यहाँ पर भी गल्ला और कमीशन एजन्सी का काम होता है

रोहतक—कमीशन एजन्सी का काम होता है।

उपरोक्त स्थानों मे से बम्बई को छोड़कर सब स्थानों पर आपकी जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरियाँ चल रही हैं।

मेसर्स जुगुलकिशोर मुकुटलाल

इस फर्म की स्थापना लाला मुकुटलालजी ने सं० १९६८ में खुर्जा में की। आप अग्रवाल समाज के सज्जन हैं। आपही ने अपने व्यापार कौशल से इस फर्म को क्रमशः बढ़ाया। आपने हापुड़ तथा सिकन्दराबाद में अपनी फर्में स्थापित कीं। इस फर्म के वर्तमान मालिक लाला मुकुटलालजी तथा आपके पुत्र बा० मुरारीलालजी, बा० भगवती प्रसादजी, बा० रघुवरदयालजी तथा बा० विशेश्वरदयालजी हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

खुर्जा—मेसर्स जुगलकिशोर मुकुटलाल
हापुड़—मेसर्स जुगलकिशोर मुकुटलाल
सिकन्दराबाद (बुलन्दशहर)—जुगलकिशोर मुकुटलाल
} इन तीनों फर्मों पर गल्ला, रूई और कमीशन एजेंसी का काम होता है।

मेसर्स म्हालीराम लच्मणदास

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ सूरजमलजी जटिया तथा आपके भाई सेठ बाबूलालजी जटिया हैं। आप लोग अग्रवाल जाति के सज्जन हैं। आप लोग सेठ लक्ष्मणदासजी के पुत्र

हैं। आपकी फर्म खुर्जे में बहुत पुरानी एवं प्रतिष्ठित हैं। आपकी ओर से एक धर्मशाला ऋषीकेश में तथा एक धर्मशाला खुर्जा जंकशन पर बनवाई गई है। अपने पिताजी के नाम से आपने खुर्जा में एक अस्पताल भी चला रक्खा है।

आपकी फर्म पर खुर्जे में, बैंकिंग, गल्ला और कमीशन एजेंसी का काम होता है।

मेसर्स रामदयाल म्हालीराम

इस फर्म के मालिक राय बहादुर गङ्गासागरजी जटिया हैं। आप भी सेठ लक्ष्मणदासजी के ज्येष्ठ पुत्र हैं। मगर १९७० से आप अपना कारबार अलग कर रहे हैं। आप यहाँ के बड़े प्रतिष्ठित रईस और व्यापारी हैं। गवर्नमेंट ने आपको रायबहादुरी के सम्मानसूचक पद से सम्मानित किया है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

खुर्जा—मेसर्स रामदयाल म्हालीराम—यहाँ बैंकिंग तथा जूट मिल्स के शेअरों का काम होता है।

अलीगढ़—मेसर्स लछमनदास गङ्गासागर—यहाँ बैंकिंग और कमीशन एजंसी का काम होता है।

मेसर्स सुखानन्द श्यामलाल

इस फर्म को करीब १०० वर्ष पूर्व सेठ सुखानन्दजी ने स्थापित किया था। मगर इसकी विशेष उन्नति आपके पुत्र सेठ श्यामलालजी के हाथो से हुई। आपने कोसी, मथुरा, डिबाई और खुर्जा में अपनी जीन प्रेस फैक्टरियाँ खोलीं और बम्बई में भी अपनी फर्म की ब्राञ्च स्थापित की।

सेठ श्यामलालजी चार भाई हैं। जिनके नाम क्रमशः रामलालजी, वंशीधरजी और अयोध्याप्रसादजी हैं। इनमें से लाला वंशीधरजी और अयोध्याप्रसादजी का स्वर्गवास हो चुका है। लाला रामलालजी के पुत्र लाला चिमनालालजी झाँसी में असिस्टन्ट कलक्टर हैं, आप रायबहादुर भी हैं। लाला अयोध्याप्रसादजी के पुत्र लाला बाबूलालजी बी० एस० सी० एल० एल० बी० यू० पी० कौंसिल के मेंबर रह चुके हैं। आप इस समय फर्म का संचालन करते हैं। आपके भाई लाला मंगलसेनजी बी० ए० भी फर्म के संचालन में योग देते हैं और लाला वंशीधरजी के पुत्र ला० चुन्नीलालजी वाइस चेयरमैन खुर्जा म्युनिसिपैलिटी बम्बई फर्म का संचालन करते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

खुर्जा—मेसर्स सुखानन्द श्यामलाल T. A. Shyama.	इस फर्म पर कॉटन-ग्रेन और कमीशन एजेंसी का काम होता है यहाँ आपकी जीन-प्रेस फैक्टरी भी है।
अलीगढ़—मेसर्स सुखानन्द श्यामलाल T. A. "Ratan."	यहाँ भी कॉटन और ग्रेन का व्यापार होता है। तथा जीन प्रेस फैक्टरी है।
डिबाई—(जि० बुलन्दशहर) मेसर्स सुखानन्द श्यामलाल	कॉटन, ग्रेन का व्यापार और जीनिंग प्रेसिंग फैक्टरी है।
कोसी—(मथुरा) मेसर्स सुखानन्द श्यामलाल	कॉटन, ग्रेन का व्यापार होता है तथा जीन फैक्टरी है।
बम्बई—मेसर्स सुखानन्द श्यामलाल कालबा देवी रोड T. A. Portable.	यहाँ कमीशन एजन्सी का काम होता है।

कॉटन मर्चेण्ट्स—

मेसर्स अमोलकचन्द मेवाराम
,, गोरखराम साधुराम
,, जुगुलकिशोर मुकुटलाल
,, जोगीराम जानकीप्रसाद
,, म्हालीराम लक्ष्मणदास
,, रामनारायण कुन्दनलाल
,, शादीराम जुगलकिशोर
,, सुखानन्द श्यामलाल

गल्ले के व्यापारी—

मेसर्स अमोलकचन्द मेवाराम
,, गुलजारीलाल बद्रीदास
,, गुरुमुखराय वासुदेव
,, गंगाराम रेवतीराम
,, जुगुलकिशोर मुकुटलाल
,, राधेलाल गोपीलाल
मेसर्स रामदयाल रामजीदास
,, सागरमल विलायतराय
,, सागरमल रामस्वरुप

घी के व्यापारी—

मेसर्स अविनाश चन्द्रदत्त
,, गुरुमुखराय वासुदेव
,, गंगाराम रेवतीप्रसाद
,, गुलजारीमल बद्रीदास
,, महानन्दोदत्त कम्पनी
,, रासबिहारी किरोड़ी
,, विज्ञानशेखर रक्षित
,, सागरमल विलायतराम
,, सुरेन्द्रनाथ श्रीमाली

कपड़े के व्यापारी—

मेसर्स अमरनाथ श्रीनाथ
,, कन्हैयालाल बाबूलाल

हापुड़

यह मण्डी ई० आई० आर० की दिल्ली मुरादाबाद ब्राञ्च लाइन का एक जंक्शन है। यहाँ से एक लाइन मेरठ से आकर खुर्जा को जाती है। यह स्थान गल्ले की एक बहुत बड़ी मण्डी है। खास कर गेहूँ के लिये तो भारतवर्ष की बहुत बड़ी मण्डियों में इसका स्थान है। गल्ले के बहुत बड़े २ व्यापारियों और कमीशन एजेण्टों की यहाँ पर दुकानें अथवा आफिस हैं।

यहाँ के व्यापारियों का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है:—

मेसर्स गनेशीलाल मंगतराय

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ नादिरमलजी, ढेड़राजजी, सम्मनलालजी और धरमदास-जी हैं। आपका मूल निवास स्थान बेरी का है। यह फर्म २८ वर्ष पूर्व सेठ मंगतरायजी के द्वारा स्थापित हुई। इसकी विशेष उन्नति सम्मनलालजी द्वारा हुई। इस फर्म का व्यापारिक परिचय नीचे लिखे मुताबिक है—

हापुड़—मेसर्स गनेशीलाल मंगतराय पक्का बाग T. Ph. No 40 — यहाँ व्यापार और आढ़त का काम होता है।

बेरी (रोहतक)—मेसर्स पूरनमल गनेशीलाल — यहाँ बैंकिंग और आढ़त का काम होता है।

मेसर्स जोगीराम जानकीप्रसाद

इस फर्म का हेड आफिस खुरजा है। इसके वर्तमान मालिक रायसाहब श्यामलालजी हैं। इसका विस्तृत परिचय चित्रों सहित खुरजा में प्रकाशित किया गया है। यह फर्म यहाँ गल्ला एवं रूई का व्यापार और आढ़त का काम करती है। इसकी यहाँ एक जीनिंग और प्रेसिंग फैक्टरी है।

मेसर्स जुगलकिशोर मुकुटलाल

इस फर्म का हेड आफिस खुरजा है। इसके वर्तमान मालिक सेठ मुकुटलालजी हैं। इसका विस्तृत परिचय खुरजा में छापा गया है। यहाँ यह फर्म गल्ला, रूई आदि का व्यापार और आढ़त का काम करती है।

मेसर्स जगन्नाथ रामनाथ

इस फर्म का हेड आफिस कलकत्ता है। यहाँ यह फर्म गल्ले का व्यवसाय करती है। इसका विशेष परिचय चित्रों सहित इसी ग्रन्थ के दूसरे भाग में कलकत्ता विभाग में ग्रेन मर्चेण्ट में दिया गया है।

मेसर्स भवानीसहाय सोहनलाल

इस फर्म के मालिक कानोड़ (नारनोल) के निवासी अग्रवाल वैश्य समाज के हैं। करीब १५ वर्ष पूर्व इस फर्म की स्थापना ला० भवानीसहायजी के द्वारा हुई। आपका स्वर्गवास हो गया है। आपके तीन पुत्र हैं सोहनलालजी, शालिगरामजी और ताराचन्दजी। इस फर्म की विशेष उन्नति आप लोगों के एवं निवाजपुरा निवासी बा० मुत्सद्दीलालजी मंगल के द्वारा हुई। आप व्यापारचतुर पुरुष हैं। मुत्सद्दीलालजी यहाँ के चेम्बर आफ कामर्स के सभापति हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

हापुड़—मेसर्स भवानीसहाय सोहनलाल	यहाँ बैंकिंग, हुंडी, चिट्ठी, गेहूँ, गुड़ आदि का व्यापार और आढ़त का काम होता है।
सुनाम (पटियाला) मेसर्स जवाहरमल भवानीसहाय	यहाँ गल्ले का व्यापार और आढ़त का काम होता है।
गाजियाबाद-मेसर्स मुरलीधर शालिगराम	" " " "
नारनोल—मेसर्स नानकराम हरजसराय	" " " "
कानोड़—भवानीसहाय सोहनलाल	यहाँ बैंकिंग और हुंडी चिट्ठी का काम होता है। यहाँ हेड आफिस है।

मेसर्स मीनामल बालकृष्णदास

इस फर्म के वर्तमान मालिक रायसाहब मीनामलजी सोमानी हैं। आपका हेड आफिस देहली है। अतएव आपका विस्तृत परिचय चित्रों सहित देहली में प्रकाशित किया गया है। यहाँ यह फर्म गल्ला, रूई और आढ़त का व्यापार करती है।

मेसर्स मोतीलाल कन्हैयालाल

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ रतनलालजी के पुत्र मोतीलालजी हैं। यह फर्म करीब १६ वर्ष पूर्व यहाँ स्थापित हुई। इसकी उन्नति मोतीलालजी के द्वारा हुई। इसके पहले यह फर्म संवत् १९२४ से सिकंदराबाद में स्थापित है। इसका स्थापन शुरू में अमरचन्दजी ने किया। आपके पश्चात् आपके पुत्र रतनलालजी ने फर्म का संचालन किया। आपने भी फर्म की अच्छी उन्नति की। आपका स्वर्गवास हो गया है।

इस फर्म का व्यवसायिक परिचय इस प्रकार है—

हापुड़—मेसर्स मोतीलाल कन्हैयालाल } यहाँ बैंकिंग, गल्ला एवं आढ़त का व्यापार होता है।

सिकंदराबाद—मेसर्स मोतीलाल कन्हैयालाल } " " " "

मेसर्स रामगोपाल रामेश्वरदास

इस फर्म के वर्तमान प्रधान मालिक रायसाहब लाला लक्ष्मीनारायणजी हैं। यहाँ यह फर्म संवत १९८२ में स्थापित हुई। इस फर्म का विशेष परिचय देहली में प्रकाशित किया गया है। यहाँ यह फर्म गल्ले का व्यापार और आढ़त का काम करती है। इसका तार का पता—Gopal है।

मेसर्स शोभाराम गोपालराय

इस फर्म का हेड आफिस मेरठ में है। वहाँ यह फर्म का गुड़ का अच्छा व्यापार करती है। इसका विशेष परिचय चन्दौसी में दिया गया है। यहाँ यह फर्म गल्ला और आढ़त का काम करती है।

मेसर्स शंकरदास जमनादास

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ द्वारकादासजी एवं मदनलालजी हैं। आप लोग अग्रवाल वैश्य समाज के सूरजगढ़ निवासी सज्जन हैं। यह फर्म करीब १० वर्ष पूर्व सेठ द्वारकादासजी एवं सेठ मदनलालजी द्वारा हापुड़ में स्थापित हुई। इस फर्म में सेठ जमनादासजी बगड़ निवासी का साझा है।

इसका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

हापुड़—मेसर्स शंकरदास जमनादास	यहाँ गल्ला एवं आढ़त का काम होता है।
कलकत्ता—मेसर्स शंकरदास जमनादास २०।२१ बड़तल्ला स्ट्रीट T. A. "Casterseed"	यहाँ सब प्रकार की चीजों की दलाली का काम होता है।

मेसर्स शंकरदास गंगाराम

इस फर्म की स्थापना सन् १९१६ में हुई। इसमें दो सज्जन पार्टनर हैं। एक अम्बाला के रायबहादुर गंगारामजी और दूसरे श्री० सुरेन्द्रनाथजी अग्रवाल। रायबहादुर गंगारामजी अम्बाला के प्रतिष्ठित रईस, आनरेरी मेजिस्ट्रेट और पंजाब प्रान्तीय कौन्सिल के सदस्य हैं। अम्बाला में आपकी अपनी फाउंडरी है।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

हापुड़—मेसर्स शंकरदास गंगाराम T. A. "Shankar"	यहाँ गल्ले का व्यापार और आढ़त का काम होता है।
अम्बाला—मेसर्स शंकरदास गंगाराम T. A. "Shankar"	यहाँ बैंकिंग तथा कमीशन का काम होता है। यहाँ रायबहादुर साहब की अपनी फाउंडरी भी है।
खन्ना (लुधियाना) प्रताप मिल्स	यहाँ इस नाम से एक काटन जिन-प्रेस फैक्टरी और आइल मिल है। यह सुरेन्द्रनाथजी का है।

गल्ले के व्यापारी एवं अढ़तिया—

मेसर्स उग्रसेन पुरुषोत्तमदास
„ केदारनाथ रघुनाथदास
„ गंगाशरण रेवतीशरन
मेसर्स गणेशीलाल मंगतराय
„ गंगासहाय निहालचंद
„ जोगीराम जानकीप्रसाद
„ जुगुलकिशोर मुकुन्दलाल

रायबहादुर किशनसहायजी पत्थरवाले मेरठ

लाला श्यामलालजी (सुखानन्द श्यामलाल) खुरजा

लाला रामचन्द्र स्वरूपजी पत्थरवाले मेरठ

ोता है।

गल्ले का व्यापार होता है जिसमें गेहूँ, जौ और

ी प्रधान है। साबुन यहाँ कई किस्म का बनता है।
तक जाता है।

र हैः—

न्द्र स्वरूप रईस

है। करीब ३०० वर्ष से तो वह शृंखलाबद्ध
ह औरंगजेब ने इस परिवार के पूर्व पुरुष चौधरी
ठ में भेजा था। इसके पूर्व आपके पूर्वजों को
दवी प्रदान की थी।

ला डूँगरमलजी, किशनसिंहजी, गंगादासजी,

द्वारकादासजी, घासीरामजी, जगजीवनदासजी, साहबरामजी, किशनसिंहजी, चतुरभुजजी, जवाहिरसिंहजी और रायबहादुर किशनसहायजी हुए।

वर्तमान परिवार रायबहादुर लाला किशनसहायजी का है। आप मेरठ में बड़े प्रतापी पुरुष हो गये हैं। आप म्यूनिसिपैलिटी तथा डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के चेयरमैन रहे हैं। सन् १८८४ में गवर्नमेण्ट ने आपको रायबहादुर के सम्मानसूचक पद से सम्मानित किया था। आप यहाँ के मेरठ कालेज, टाऊनहाल लायब्रेरी, तथा संस्कृत कॉलेज मेरठ कैण्ट के जन्मदाता कहे जा सकते हैं। आपका सार्वजनिक जीवन बहुत उन्नत रहा है। आपने किशनकुण्ड नामक एक तालाब, तथा मन्दिर और धर्मशाला भी बनवाई है। इसके अतिरिक्त आपने कम्पनीबाग का मशहूर कुँआ भी बनवाया। मतलब यह कि आपने मुक्तहस्त होकर लाखों रुपयों का दान किया। आपका स्वर्गवास सन् १९०२ में हुआ।

राय बहादुर लाला किशनसहायजी के पाँच पुत्र हुए। जिनके नाम लाला मुन्नालालजी, लाला छुन्नालालजी, लाला जानकीप्रसादजी, लाला लल्लामलजी और लाला रामचन्द्र स्वरूपजी हैं।

लाला रामचन्द्र स्वरूपजी स्पेशल ग्रेड के ऑनरेरी मजिस्ट्रेट हैं। आपने अपने खानदान की प्रतिष्ठा और गौरव को अक्षुण्ण बना रक्खा है। आप यहाँ के सभी सार्वजनिक कार्य्यों में सहयोग देते हैं। आपके यहाँ जमीदारी और बैंकिंग का बहुत बड़ा काम होता है। आपकी जमीदारी अलीगढ़ और बुलन्दशहर जिले में है।

मेरठ—लाला रामचन्द्र स्वरूप शान्तिभवन महल्ला कानूनगोयान	बैंकिंग और जमीदारी का बहुत बड़ा काम होता है।

मेसर्स सेठ अम्बाप्रसाद

इस फर्म की स्थापना करीब एक सौ वर्ष पूर्व लाला दुर्गादासजी ने की। आप ही ने इसको उन्नति की ओर अग्रसर किया। आपका स्वर्गवास संवत् १९४३ में हो गया। आपके दो पुत्र हुए। लाला गंगाप्रसादजी और लाला अम्बाप्रसादजी। इसमें से उपरोक्त फर्म लाला अम्बाप्रसादजी की है। आपने इस फर्म में जमीदारी के व्यवसाय को बढ़ाकर और भी तरक्की दी। आप ही इस फर्म के मालिक हैं।

आपके इस समय दो पुत्र हैं। लाला शिवचरनदासजी और लाला गोपीनाथजी। आप दोनों ही फर्म का कार्य्य संचालित करते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

मेरठ—मेसर्स सेठ अम्बाप्रसाद महल्ला काननूगो	बैंकिंग और जमीदारी का काम होता है।

मेसर्स कन्हैयालाल भगवानदास

सन् १८८० ई० में लाला कन्हैयालालजी और लाला भगवानदासजी ने इस फर्म को स्थापित कर लकड़ी का व्यापार आरम्भ किया। आप लोग जंगलों का कण्ट्राक्ट लेते थे। इसमें आपको अच्छी सफलता मिली। फलतः आपने फर्म पर लोहे का व्यापार भी प्रारम्भ किया जो अब तक फर्म पर होता आ रहा है।

इस फर्म के वर्तमान मालिक लाला शंकरलालजी और अम्बाप्रसादजी हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मेरठ—मेसर्स कन्हैयालाल भगवानदास स्मिथगंज T. A. Kanayalal	यहाँ लकड़ी और लोहे का व्यापार होता है।
मेरठ—मेसर्स कन्हैयालाल भगवानदास अनाजमण्डी	यहाँ कमीशन एजन्सी का काम होता है।

इस फर्म के पास मेरठ जिले के लिए टाटा कम्पनी के लोहे की एजन्सी है तथा इसी कम्पनी के पर्शियन बीम्स की एजन्सी भी मुजफ्फरनगर तथा बुलन्दशहर के लिए इसके पास है। जो खास कन्सेशन पर यहाँ बिकते हैं।

मेसर्स किरोड़ीमल काशीराम

इस फर्म का हेड ऑफिस रोहतक में है। वहाँ पर करीब ५० वर्ष पूर्व मेसर्स मुल्तानीलाल जुगलकिशोर के नाम से यह फर्म खोली गई थी। जिसके व्यापार में अच्छी सफलता मिली। गत चार वर्षों से इसके मालिक अलग २ हो गये। अतः लाला जुगलकिशोरजी ने मेसर्स जुगलकिशोर काशीराम के नाम से रोहतक में फर्म खोली। तथा इसी फर्म की एक ब्राञ्च मेसर्स किरोड़ीमल काशीराम के नाम से यहाँ पर खोलकर गल्ले और कमीशन का काम आरम्भ किया।

इस फर्म के वर्तमान मालिक लाला जुगलकिशोरजी तथा आपके पुत्र लाला काशीरामजी, लाला साधूरामजी, तथा लाला ब्रह्मानन्दजी हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

मेरठ—मेसर्स किरोड़ीमल काशीराम कैसरगञ्ज } यहाँ पर गल्ले और गुड़ की आढ़त का काम होता है। इस फर्म में पं० मंशाराम भमभर वालों का साभा है।

रोहतक मण्डी—मेसर्स जुगलकिशोर काशीराम—यहाँ पर बैंकिंग और आढ़त का काम होता है।

सोनीपत—किरोड़ीमल जुगलकिशोर—गल्ले और गुड़ की आढ़त का काम होता है।

मेसर्स वासूमल बसन्तराम

इस फर्म की स्थापना सन् १८७७ में लाला वासूमलजी तथा आपके भाई लाला बसन्तरामजी ने करके इस पर लकड़ी का व्यापार आरम्भ किया। इस फर्म की विशेष उन्नति वासूमलजी के पुत्र लाला बाबूमलजी के हाथों से हुई। आपने लकड़ी के अतिरिक्त लोहे का व्यापार भी आरम्भ किया।

इस फर्म के वर्तमान मालिक लाला बाबूलालजी तथा लाला भिक्खूलालजी (बसन्तरामजी के पौत्र) हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

मेरठ—मेसर्स वासूमल बसन्तराम स्मिथगंज T. A. "Timber" } यहाँ लकड़ी तथा लोहे का थोक व्यापार होता है। यह फर्म टाटा कम्पनी का तैयार किया हुआ लोहा भी बेचती है।

मेसर्स मामराज फ़तेचन्द

इस फर्म के मालिक आदि निवासी मावण्डा (जयपुर) के हैं। इस फर्म को स्थापित हुए करीब १५० वर्ष हुए। इसकी विशेष उन्नति सेठ हुलासरायजी और कन्हैयालालजी ने की। आपके पश्चात् आपके भाई भीखामलजी ने फर्म का कार्य संचालित किया और आपके अनन्तर सेठ राधेलालजी ने।

वर्तमान में इसके संचालक सेठ राधेलालजी के पुत्र बाबू नत्थूमलजी, रामसरनजी और शिवशङ्करजी हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

ेरठ—मेसर्स मामराज फतेचन्द दालमण्डी	यहाँ रूई की आढ़त का काम होता है।
ेरठ—मेसर्स मामराज फतेचन्द कैसरगंज	यहाँ गुड़ एवं गल्ले की आढ़त का काम होता है।
ेरठ—मेसर्स शिवशङ्कर मदनलाल कैसरगंज	यहाँ चांवल, गल्ला और शक्कर का व्यापार होता है।

मेसर्स शोभाराम गोपालराम

इस फर्म के मालिकों का मूल निवास स्थान भिवानी है। संवत् १९२५ में सेठ शोभा-लालजी पाटनी तथा गोपालरामजी और छोटूलालजी बड़जात्या ने मिल कर इस फर्म की स्थापना की और आढ़त का कारबार शुरू किया। इस फर्म की विशेष तरक्की सेठ छोटूलालजी के पुत्र सेठ छाजूरामजी ने तथा सेठ शोभालालजी के पुत्र सेठ बालूरामजी ने की। सेठ बालूरामजी का संवत् १९८७ में और सेठ छाजूरामजी का संवत् १९८६ में स्वर्गवास हो गया।

वर्तमान में इस दुकान के मालिक सेठ शिवनारायणजी, सेठ सुआलालजी, सेठ लक्ष्मी-नारायणजी और सेठ डूंगरमलजी हैं। आप खण्डेलवाल जैन जाति के हैं।

इसका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

मेरठ—मेसर्स शोभाराम गोपालराम सादर T. A. "Jain"	यहाँ बैंकिंग और गुड़ तथा गल्ले की आढ़त का काम होता है।

इसके सिवाय इस फर्म की मेसर्स शोभाराम गोपालराम के नाम से कैसरगंज, मेरठ हापुड़, और श्यामली में, तथा मेसर्स शोभाराम श्रीराम के नाम से चन्दौसी, और आंवला (बरेली) में और छाजूराम श्रीराम के नाम से भिवानी में दुकानें हैं। इन सब दुकानों पर बैंकिंग और कमीशन एजन्सी का काम होता है।

मेसर्स हरगोपाल गरीबराम

इस फर्म का व्यापार मेसर्स हरगोपाल गरीबराम के नाम से सेठ गरीबरामजी ने प्रारम्भ किया। प्रारम्भ से ही इस फर्म पर गल्ले की आढ़त काम प्रारम्भ किया गया। जो यह फर्म

इस समय भी कर रही है। इसके वर्त्तमान मालिक लाला कृपारामजी तथा आपके पुत्र कन्हैया लालजी और श्रीरामजी हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

मेरठ—मेसर्स हरगोपाल गरीबराम—यहाँ बैंकिंग और कमीशन एजन्सी का काम होता है। कैसरगंज मेरठ में आपका माल गोदाम है।

व्यापारियों के पते

बैंकर्स—
- इम्पीरियल बैंक ऑफ इण्डिया
- पंजाब नेशनल बैंक

गुड़ और गल्ले के व्यापारी—
- मेसर्स आसानन्द जस्सनमल
- „ कश्मीरीदास श्यामलाल कैसरगंज
- „ किरोड़ीमल काशीराम „
- „ ताराचन्द साजनदास „
- „ तुलसीदास नारायणदास „
- „ मामराज फतेचन्द „
- „ मुसद्दीलाल रतनलाल „
- „ लालचन्द गंगासहाय „
- „ शोभाराम गोपालदास „
- „ सनेहीलाल रामस्वरूप „
- „ हरगोपाल गरीबदास „

लकड़ी और लोहे के व्यापारी— „
- मेसर्स कन्हैयालाल भगवानदास सिथगंज
- „ बासूमल बसन्तराम „
- „ रामानन्द बद्रीराम „

कपड़े के व्यापारी—
- मेसर्स कन्हैयालाल रघुबीरशरण कैसरगंज
- मेसर्स श्यामलाल बजाज कैसरगंज

साबुन के व्यापारी—
- किंग सोप फैक्टरी कम्बोगेट
- जनरल सोप „ „
- जे० एन० खन्ना सोप फै० „
- नरसिंह सोप फैक्टरी „
- भार्गव सोप „ „
- श्याम सोप „ „

हायकरी मर्चेण्ट्स
- मेसर्स बह्मोमल बेलीबाजार
- „ मनफूल सिंह „
- „ मुंशीलाल दुर्गसेन „
- „ सुमतप्रसाद जैन „
- „ भरंगराम सौदागर „
- „ श्रीकृष्ण सौदागर „

टोपी के व्यापारी—
- उत्तम फैल्ट कम्पनी कम्बोगेट
- कृष्ण फैल्ट कम्पनी „
- ज्योतिलाल मोतीप्रसाद बजाजा
- बनवारी लाल कैप मर्चेण्ट „
- सुमतप्रकाश प्रकाशचन्द „

मुजफ्फरनगर

यह स्थान एन० डब्ल्यू० आर० की मेन लाइन पर दिल्ली और सहारनपुर के बीच बसा हुआ है। यहाँ पर प्रधान रूप से पिस्सी गेहूँ और गुड़ का व्यापार बहुत बड़े परिमाण में होता है। पहले यहाँ का गेहूँ विलायत को एक्सपोर्ट होता था और X मार्के में माना जाता था। आजकल मिल वाले मैदा को सिजिल बनाने के लिए काम में आता है। यहाँ पर तौल ८८ रुपये भर के सेर से होता है जो सभी बातों में काम में आता है।

यहाँ पर गुड़ कई किस्म का आता है जैसे पंसेरा, चौसेरा, ढाईसेरा, लड्डुवा, बर्फी, (इनरकी) चाकू मीजा (डले) दाना मीजा, खाण्डकी इत्यादि। यह फसल के मौसिम पर बहुत बड़ी तादाद में भारतवर्ष के प्रायः सभी प्रान्तों में जाता है।

यहाँ के व्यापारियों का परिचय इस प्रकार है:—

बैङ्कर्स एण्ड लैण्ड लार्ड्स

स्व० लाला उदयरामजी का परिवार

संयुक्त प्रान्त के प्रतिष्ठित एवं पुराने रईसों के इतिहास को देखने से ज्ञात होता है कि मुजफ्फरपुर के स्व० लाला बहादुर सिंहजी का परिवार बहुत पुराने समय से अपनी पूर्व प्रतिष्ठा और मान मर्यादा को संरक्षित करता हुआ क्रमानुसार अग्रसर हो रहा है। अतः इस परिवार का संक्षिप्त परिचय हम अपने पाठकों के सामने रखते हैं।

लाला बहादुर सिंहजी के दो पुत्र थे। जिनके नाम क्रमशः लाला उदयरामजी और लाला शिवनारायणजी था। इनमें से उदयरामजी के परिवार में राय बहादुर लाला जगदीश प्रसादजी और देवी प्रसादजी हैं। तथा ला० शिवनारायणजी के परिवार में ऑ० राय बहादुर ला० निहालचन्दजी हुए, जिनका परिचय आगे दिया जा रहा है।

लाला उदयरामजी के एक पुत्र लाला केशवदासजी हुए। आप गवर्नमेण्ट ट्रेभरर और सेकण्ड क्लास ऑनरेरी मजिस्ट्रेट थे। लाला केशवदासजी के दो पुत्र हुए। जिनके नाम राय बहादुर ऑ० जगदीश प्रसादजी और रायबहादुर देवी प्रसादजी हैं।

रा. ब. ऑ. जगदीशप्रसादजी

आपका जन्म संवत् १८९२ में हुआ। आपकी जमीदारी लगभग ६० गाँवों में है। आप सरकार को पचीस हजार रुपया सालाना मालगुजारी देते हैं। आप १३ वर्ष तक मुजफ्फर नगर के डि० बो० के सदस्य, ५ वर्ष तक उसके ऑनरेरी सेक्रेटरी और ३ वर्ष तक यहाँ के म्यु० कमिश्नर रहे हैं। गत ७ वर्षों से आप यू० पी० की कौन्सिल के भी मेम्बर रहे हैं। सन् १९२० में आपको रायसाहिब का तथा सन् १९२७ में रायबहादुर का सम्मानपूर्ण खिताब प्राप्त हुआ।

वर्तमान में आप सनातनधर्म सभा मुजफ्फरनगर, सनातनधर्म एडवर्ड हाईस्कूल मुजफ्फर नगर, ऋषिकुल ब्रह्मचर्य्याश्रम हरिद्वार और ऋषिकुल आयुर्वेदिक कालेज हरिद्वार के प्रेसिडेण्ट तथा यू० पी० जमींदार एसोसिएशन मुजफ्फरनगर के वाईस प्रेसिडेण्ट हैं।

रा० ब० जगदीशप्रसादजी तथा आपके भ्राता रा० ब० देवीप्रसाद ने सम्मिलित रूप से कालीनन्दी पर पक्का घाट बनवाया। मुजफ्फर नगर के अस्पताल में तपेदिक के मरीजों के लिए एक मकान बनवाया। हरिद्वार और ऋषीकेश में धर्मशालाएँ बनवाई। आप लोगों की एक कोठी नैनीताल में "चेज" के नाम से बनी हुई है।

रायबहादुर लाला देवीप्रसादजी

आप रा० ब० जगदीशप्रसादजी के लघु भ्राता हैं। आप भी बड़े उदार और सुयोग्य सज्जन हैं। आपकी जमीदारी भी करीब ६० गाँवों में है, जिनकी मालगुजारी स्वरूप २५०००) प्रतिवर्ष आप गवर्नमेंट को देते हैं। आप मुजफ्फरनगर सेवा समिति के प्रेसिडेन्ट हैं। म्युनिसिपैलिटी के आप कमिश्नर और वाइस चेयरमैन रह चुके हैं। आपको सन् १९२७ में राय साहब का और सन् १९३० में राय बहादुर का सम्मानसूचक खिताब प्राप्त हुआ।

आपने मुजफ्फरनगर अस्पताल में एक जनरल वार्ड, पूरे सामान सहित बनवाया है। इसके अतिरिक्त अस्पताल में एक स्टेड लाइजिंग रूम तैयार करवा कर उसे फर्नीचर आदि आवश्यक सामान से सज्जित कर दिया है। देवीप्रसाद रीडिंग रूम के नाम से आपने एक रीडिंग रूम भी बनवाया है। इसके सिवा आपके सम्मिलित सार्वजनिक कार्यों की सूची ऊपर दी जा चुकी है। आपने यहाँ पर "कैसर निकेतन" के नाम से एक मारबल हाउस बनवाया है।

राय बहादुर लाला जगदीशप्रसादजी मुजफ्फर नगर

राय बहादुर लाला देवीप्रसादजी मुजफ्फर नगर

राय साहब लाला आनन्दस्वरूपजी मुजफ्फर नगर

आ० रा० ब० लाला निहालचन्दजी का परिवार

आप अपने समय के बहुत ही प्रतिष्ठित जमीदार एवं रईस माने जाते थे। आपकी गतिविधि राजनैतिक एवं सामाजिक क्षेत्रों मे थे। आपने संयुक्त प्रांत के जमींदारों के हिताहित के लिये जहाँ सराहनीय प्रयत्न किया वहाँ यहाँ के किसानों के स्वार्थ संरक्षण के लिये भी यथेष्ट श्रम किया। आपने इन दोनो ही वर्ग के हित के लिये सरकार से भी अच्छा मार्के का मोर्चा लिया। आप कौंसिल में जोरदार सदस्य माने जाते थे। आपका जीवन एक क्रियात्मक जीवन रहा। आपका स्वर्गवास सन् १९०९ में हो गया। आपके तीन पुत्र थे जिनमें बड़े का नाम आनरेबल लाला सुखबीर सिंहजी, उनसे छोटे लाला लक्ष्मणस्वरूपजी तथा सबसे छोटे राय साहिब लाला आनन्दस्वरूपजी ही इस समय वर्तमान हैं। शेष दोनों बड़े पुत्र स्वर्गवासी हो चुके हैं।

स्व० आनरेबल लाला सुखदेवसिंहजी का परिवार

आपका जन्म सन् १८६८ की ५वी जनवरी को हुआ था। आपने आगरे के सेन्ट स्टेफेन्स स्कूल तथा आगरा कालेज मे अंग्रेजी की शिक्षा प्राप्त की और कलकत्ता विश्वविद्यालय की सन् १८८६ में आपने प्रतिष्ठा के साथ परीक्षा पास की। आपने अपने व्यवहारिक जीवन के आरम्भ में अपने पिता जी से ही राजनैतिक साहित्य की शिक्षा प्राप्त की और अल्पकाल में ही आपने इस क्षेत्र में अच्छा अनुभव प्राप्त कर लिया। अपने पिताजी के स्वर्गवास के बाद ही आप सन् १९०९ में प्रथम वार यू० पी० कौंसिल के सदस्य चुने गये। इसी प्रकार सन् १९१२ और १९१६ मे भी आप उक्त कौंसिल के विना विरोध सदस्य चुने गये। सन् १९२० ई० में शासन-सुधार के अनुसार नवीन कौंसिल के चुनाव में भी आप खड़े हुए और विना विरोध चुने गये पर आपने शीघ्र ही कौन्सिल आफ स्टेट के लिये जाने का निश्चय कर प्रान्तीय नवीन कौंसिल से त्यागपत्र दे दिया। आप सन् १९२० से सन् १९२७ तक कौंसिल आफ स्टेट के सदस्य रहे। इसी प्रकार स्थानीय म्यूनिसिपैलिटी के सन् १९०९ से १९१८ तक चेयरमैन रहे। इतना ही नहीं यहाँ की म्युनिसिपैलिटी के प्रथम नान-अफीशियल चेयरमैन आप ही थे। आप यू० पी० जमीदार एसोसियेशन के आनरेरी सेक्रेटरी सन् १९०९ से १९२७ ई० तक रहे। मेरठ कालेज के भी सेक्रेटरी आप सन् १९१२ से २१ तक रहे। ऋषिकुल आयुर्वेदिक औषधालय के जन्मदाता और ऋषिकुल ब्रह्मचर्याश्रम के प्रेसीडेण्ट भी आप थे। इसी प्रकार आल इण्डिया हिन्दू महासभा के संस्थापक एवं आजीवन जनरल सेक्रेटरी रह कर आपने हिन्दू समाज की सेवा की। आपका जीवन बड़ा ही क्रियाशील रहा। आप आजीवन लोकोपकारी कार्यों में

लगे रहे। आपका स्वर्गवास सन् १९२७ में हुआ। वर्तमान में आपके तीन पुत्र हैं जिनके नाम क्रमानुसार इस प्रकार हैं। श्री हरिराजस्वरूप एम० ए० एल, एल० बी०, श्री गोपाल राजस्वरूप एम० ए० बी० एस० सी० तथा श्री ब्रह्मस्वरूप बी० ए० हैं।

लाला हरिराजस्वरूप M. A L L B

आप स्व० लाला सुखबीर सिंहजी के प्रथम पुत्र हैं। आप उच्च शिक्षाप्राप्त महानुभाव हैं। आप यू० पी० जमींदार एसोसियेशन के वर्तमान आनरेरी सेक्रेटरी हैं। आप यहाँ की कोआपरेटिव सोसायटीज् के डायरेक्टर तथा स्थानीय म्यूनिसिपैलिटी के म्यूनिसिपल कमिश्नर हैं। आप अपने पिता के समान ही सार्वजनिक कार्यों से अनुराग रखते हैं।

लाला गोपालराजस्वरूप M. A. B. sc.

आप स्व० आनरेबल लाला साहिब के द्वितीय पुत्र हैं। आप भी सुशिक्षा प्राप्त नवयुवक हैं। आप आनरेरी मैजिस्ट्रेट भी हैं। आप भी सार्वजनिक कार्यों में अच्छा भाग लेते हैं।

लाला ब्रह्मस्वरूप B. A

आप स्व० आ० लाला सुखबीरसिंहजी के छोटे पुत्र हैं। आप होनहार नवयुवक हैं आप अभी शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।

स्व० लाला लक्ष्मणस्वरूपजी का परिवार

आप स्व० आ० रायबहादुर लाला निहालचंदजी के द्वितीय पुत्र थे। आपका स्वर्गवास हो चुका है। आप आजीवन सरकारी नौकरी करते रहे। आप सुयोग्य शासक एवं मेधावी महानुभाव थे, आप डिपुटी कलेक्टर के पद पर थे और आपने डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट का काम भी अर्से तक किया था। आपका स्वर्गवास सन् १९२५ मे हुआ। आपके दो पुत्र वर्तमान हैं जिनके नाम क्रमानुसार लाला जनार्दनस्वरूप B. A. तथा लाला रघुराजस्वरूप B. A. L. L B. हैं।

लाला जनार्दनस्वरूप B. A.

आप सुशिक्षाप्राप्त सज्जन हैं। आप स्थानीय म्युनिसिपैलिटी के कमिश्नर तथा ऑनरेरी मुनसिफ हैं। आप स्थानीय सनातन-धर्म हाई स्कूल की कमेटी के सदस्य भी हैं आप लगभग २० हजार रुपये के वार्षिक मालगुजारी तथा १५ हजार सालाना के वार्षिक आमदनी पर इन-कम टैक्स देते हैं। आपके परिवार की ओर से हरिद्वार और ऋषीकेश में धर्मशालायें बनी हुई हैं।

स्व० रायबहादुर सुखबीरसिंहजी साहिब मुजफ्फरनगर

श्रीयुत हरिराज स्वरूपजी मुजफ्फरनगर

बा० गोपाल राजस्वरूपजी मुजफ्फरनगर
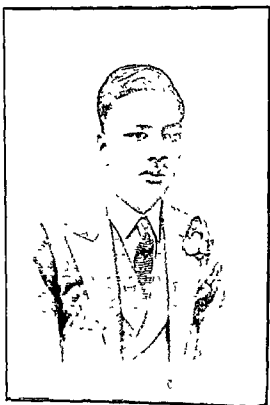
बा० ब्रह्मराज स्वरूपजी मुजफ्फरनगर

लाला रघुराजस्वरूप B. A. L. L. B.

आप लाला जनार्दनस्वरूपजी के छोटे भ्राता हैं। आप सुशिक्षासम्पन्न होनहार नवयुवक हैं। आप वकील हाईकोर्ट के अतिरिक्त ऑनरेरी स्पेशल मैजिस्ट्रेट भी हैं। आप भी २० हजार के लगभग वार्षिक मालगुजारी देते हैं और १५ हजार वार्षिक आय पर आय कर चुकाते हैं।

रायसाहिब लाला आनन्दस्वरूपजी

आप स्व० आनरेबल रायबहादुर लाला निहालचंदजी के सब से छोटे पुत्र हैं। आपके दोनों बड़े भाई स्वर्गवासी हो चुके हैं। जिनका परिचय ऊपर दिया गया है। लाला आनन्द-स्वरूपजी यू० पी० एग्रिकल्चर बोर्ड के मेम्बर, एग्रिकल्चर कॉलेज कानपूर की प्रबन्धकारिणी के मेम्बर, इण्टर मीडियेट और हाइस्कूल एक्झामिनेशन बोर्ड के मेम्बर, यू० पी० जमीदार एसोसिएशन मुजफ्फरनगर के वाईस प्रेसिडेण्ट, सनातन-धर्म हाई स्कूल मुजफ्फरनगर के सेक्रेटरी, मेरठ कॉलेज मैनेजमेण्ट बोर्ड के तथा इन्द्रप्रस्थ गर्ल्स हाईस्कूल बोर्ड के मेम्बर हैं। इसी प्रकार और भी प्रत्येक सार्वजनिक कार्य्य में आप भाग लेते रहते हैं। यहाँ की पब्लिक पर आपका अच्छा प्रभाव है।

लाला इन्द्रराजस्वरूपजी

आप लाला आनन्द स्वरूपजी के ज्येष्ठ पुत्र हैं। आप बड़े उत्साही होनहार नवयुवक हैं। आपका स्वभाव बहुत ही मिलनसार है। आप अपने यहाँ की विस्तृत जमीदारी तथा बैंकिंग आदि का सभी काम बड़ी बुद्धिमानी एवं योग्यता से संचलित करते हैं। आप सुशिक्षा प्राप्त सज्जन हैं।

मेसर्स किशोरीलाल भागीरथमल

इस फर्म के मालिकों का निवासस्थान मुजफ्फरनगर ही का है। आप लोग अग्रवाल वैश्य समाज के सज्जन हैं। यह फर्म यहाँ बहुत समय से व्यवसाय कर रही है। इस फर्म पर बैंकिंग तथा गल्ले का व्यापार और आढ़त का काम होता है। यह फर्म यहाँ की बहुत प्रतिष्ठित फर्म मानी जाती है। इस फर्म की उन्नति का श्रेय ला० किशोरीलालजी को है। आप व्यापार-कुशल और मेधावी सज्जन थे। आपका स्वर्गवास हो गया है।

वर्तमान मे इस फर्म के मालिक स्व० ला० किशोरीलालजी के पुत्र ला० पीरूमलजी रईस हैं। आप स्थानीय म्युनिसिपल बोर्ड के चेअरमेन तथा सनातनधर्म एडवर्ड हाई-

स्कूल के वाइस प्रेसिडेण्ट हैं। इसी प्रकार आप स्थानीय चेम्बर ऑफ कामर्स के प्रेसिडेण्ट तथा मेरठ कालेज के बोर्ड आफ टस्ट्रीज की एक्जिक्यूटिव्ह कमेटी के सदस्य हैं। आप ऑनरेरी मेजिस्ट्रेट भी हैं। और भी कितनी ही सार्वजनिक संस्थाओं में आपका अच्छा हाथ रहता है। आप मुजफ्फरनगर के प्रतिष्ठित नागरिक तथा सम्माननीय जमींदार एवं पुराने रईस हैं। आपके यहाँ जमींदारी तथा बैंकिंग का काम भी होता है। आपका ध्यान व्यापार की ओर विशेष रूप से है। आप बुद्धिमान तथा व्यापारकुशल सज्जन है।

आपके बड़े पुत्र ला० दीपचंदजी एम० ए० उच्च शिक्षाप्राप्त होनहार नवयुवक हैं। आप-का स्वभाव मिलनसार एवं व्यवहार सरल है।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स—किशोरीलाल भागीरथमल मुजफ्फरनगर,	यहाँ गुड़ तथा गल्ले का व्यापार एवं आढ़त का काम होता है।
मेसर्स—पीरूमल दीपचंद मुजफ्फरनगर पुरनियाँ	"
मेसर्स—किशोरीलाल पीरूमल देवबन्द (सहारनपुर)	यहाँ गुड़ तथा गल्ले का व्यापार और आढ़त का काम होता है।

कमीशन एजण्टस्

मेसर्स घासीराम केदारनाथ

इस फर्म की स्थापना मेसर्स घासीराम सोहनलाल के नाम से लगभग ४० वर्ष पूर्व लाला घासीरामजी तथा आपके भाई लाला सोहनलालजी ने की थी। आप दोनों ही महानुभावों के परिश्रम एवं उद्योग से फर्म के व्यवसाय ने अच्छी उन्नति की। इस फर्म पर आरम्भ से ही कमीशन एजेन्सी का काम किया गया जो यह फर्म वर्तमान में अच्छे ढंग से कर रही है। इस फर्म के संस्थापकों का स्वर्गवास हो गया है। इस फर्म के वर्तमान मालिक लाला केदारनाथजी हैं। आप लगभग ३ वर्ष पूर्व अपनी पुरानी फर्म से सम्बन्ध अलग कर उपरोक्त नाम से काम करने लगे हैं। अतः पुराने नाम से काम नहीं होता।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है ।

मुजफ्फरनगर—मेसर्स घासीराम केदारनाथ नई मण्डी	यहाँ प्रधान रूप से कमीशन एजेन्सी का काम होता है ।

मेसर्स चंदूलाल घनश्यामदास

आप लोग भिवानी पंजाब के निवासी अग्रवाल वैश्य समाज के सज्जन हैं। इस फर्म की स्थापना लगभग ५० वर्ष पूर्व यहाँ पर हुई थी और इस पर दूसरे नाम से व्यापार होता था। पर लगभग १० वर्ष से यह फर्म उपरोक्त नाम से व्यापार कर रही है

इस फर्म के वर्तमान मालिक लाला बद्रीदासजी हैं। आप ही फर्म के व्यवसाय का संचालन करते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

मुजफ्फरनगर—मेसर्स चंदूलाल घनश्यामदास नई मण्डी	यहाँ गेहूँ और गुड़, खाँड़, सक्कर, रूई आदि के कमीशन का और घरु काम-काज भी होता है ।
मेसर्स चंदूलाल घनश्यामदास खतौली (मुजफ्फरनगर)	यहाँ कमीशन एजेन्सी का काम होता है ।

मेसर्स माधौलाल चिरंजीलाल

इस फर्म के मालिकों का मूल निवास स्थान भिवानी (पंजाब) का है। आप लोग खण्डेलवाल वैश्य समाज के जैनी सज्जन हैं। यह फर्म यहाँ करीब ४५ वर्ष से स्थापित है। इसकी स्थापना सेठ माधोरामजी ने ही की। आप वयोवृद्ध सज्जन हैं। आप ही के द्वारा इस फर्म की उन्नति हुई। शुरू से ही यह फर्म आढ़त का काम करती आ रही है। इस फर्म पर पहले मेसर्स गोपालराय छाजूराम नाम पड़ता था। सेठ माधोरामजी के तीन पुत्र हैं जिनके नाम क्रमशः चिरंजीलालजी, फूलचंदजी तथा बैजनाथजी हैं। आप तीनों ही सज्जन व्यापार में सहयोग देते हैं। सेठ माधौलालजी श्री जैन सनातन सिख ग्रेन चेम्बर मुजफ्फरनगर के

चेअरमेन हैं। आप व्यापारकुशल और बुद्धिमान सज्जन हैं। ला० चिरंजीलालजी भी व्यापार-कुशल व्यक्ति हैं। आप मिलनसार एवं होनहार नवयुवक हैं।

आप लोगों का सार्वजनिक कार्यों की ओर भी बहुत ध्यान रहता है। आपने यहाँ एक जैन मन्दिर बनवाया है। तथा पूजा वगैरह करवाई है।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मुजफ्फरनगर—मेसर्स माधौलाल चिरंजीलाल T. A. Jain	यहाँ गल्ला तथा गुड़ का व्यापार और आढ़त का काम होता है।
शामली—माधौलाल बैजनाथ T. A. Phool.	यहाँ गल्ला तथा गुड़ का व्यापार और आढ़त का काम होता है।
सहारनपुर—माधौलाल चिरंजीलाल मोरगंज	यहाँ गल्ला तथा गुड़ का व्यापार और आढत का का काम होता है।

कमीशन एजण्ट्स

मेसर्स कालूराम शिवदत्तराय
" घासीराम कैदारनाथ
" चन्दूलाल घनश्यामदास
" जानकीदास मुसद्दीलाल
" तुलसीदास हजूरासिंह
" नरसिंहदास जवाहरलाल
" बिहारीलाल द्वारकाराम
" बलदेवसहाय सूरजमल
" बिहारीलाल रामरिछपाल

मेसर्स मयाराम दुर्गाप्रसाद
" माधौराम चिरंजीलाल
" मुन्नालाल शिवचन्दराय
" मूलचन्द टीकमदास
" मोलचन्द मोतीराम
" राजाराम आत्माराम
" लेखराज राजाराम
" शिवचरणदास माईधनदास
" हरप्रसाद भगवानदास

सहारनपुर

यह नगर ई० आई० आर० की इस ओर की मुगलसराय सहारनपुर लाइन का अन्तिम स्टेशन है। मुगलसराय से जो गाड़ियाँ छूटती हैं वे यहीं आकर रुक जाती हैं। इस स्टेशन से एन० डब्लू० आर० की मेन लाइन भी गयी है जो दिल्ली से चल कर पेशावर में खतम होती है। इसके अतिरिक्त यहाँ दिल्ली-सादरा-सहारनपुर लाइट रेलवे भी आती हैं। इस प्रकार यह एक बड़ा भारी जंकशन स्टेशन है। स्टेशन के पास ही एक उत्तम धर्मशाला भी है।

यह नगर व्यापारिक दृष्टि से गुड़ और गल्ले की बड़ी मण्डी है, शक्कर और रूई का भी यहाँ अच्छा व्यापार होता है। यहाँ कितनी ही प्रकार की उत्तम नकाशी का काम लकड़ी पर किया जाता है, जो तैयार करके योरोप और अमेरिका भेजा जाता है। यहाँ लकड़ी की नकाशी का यह काम बहुत ही अच्छा और ऊँचे दर्जे का होता है। यहाँ से खाद, बीज, कलम और पौदे भी बाहर को भेजे जाते हैं। भारत के विभिन्न स्थानों को यह माल तो जाता ही है पर विदेश को भी बहुत अच्छे परिमाण में भेजा जाता है। यहाँ पौदे ऐसे अच्छे ढंग से पैक किये जाते हैं कि महीनों की यात्रा कर चुकने पर भी उसी प्रकार हरे भरे और सुरक्षित रहते हैं। कलम, पौदे और फलो का उत्तम संग्रह यहाँ के कम्पनीबाग में हैं। यहाँ के गन्ने और लीची प्रसिद्ध हैं।

यहाँ कई एक जीनिंग तथा प्रेसिंग फैक्टरियाँ हैं जिसमें से कुछ में फ्लोर मिल, राइस मिल और आइल मिल भी सम्मिलित हैं। इनमें से कुछ का नाम इस प्रकार है।

१ पटैल मिल्स लि०
२ वेस्ट पेटेन्ट को० लि०
३ लाला राधाकृष्ण राइस काटन जीनिंग एण्ड फ्लोर मिल्स
४ श्रीपार्वती मिल्स जिन एण्ड प्रेस
५ सहारनपुर काटन जीनिंग फैक्टरी
६ सुगनचंद जगन्नाथ राइस एण्ड काटन मिल्स

इसके अतिरिक्त यहाँ पर २ और भी बड़े बड़े कारखाने हैं जिनके नाम इस प्रकार हैं।

१ कनाल फाउण्ड्री एण्ड इंजीनियरिंग वर्कशाप
२ एन० डब्लू० रेलवे वर्कशाप

मेसर्स अमोलकचंद मेवाराम

इस फर्म के वर्तमान मालिक बा० शांतिलालजी हैं। यू० पी० की अत्यन्त प्रधान फर्मों में इस फर्म की गिनती है। कई जगह इसकी शाखाएँ हैं। इसका विस्तृत परिचय हेड आफिस खुरजा में प्रकाशित किया गया है। यहाँ इस फर्म की एक जीनिंग फैक्टरी है तथा काटन का व्यापार होता है। इसका तार का पता "Raniwala" है।

मेसर्स माधोलाल चिरंजीलाल

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ माधोलालजी एवं आपके पुत्र हैं। इसका हेड आफिस मुजफ्फर नगर है। अतएव विस्तृत परिचय वहीं देखना चाहिये। यहाँ यह फर्म मोरगंज में गल्ला, गुड़ एवं आढ़त का व्यापार करती है।

व्यापारियों के पते

बैंक्स

भगवानदास एण्ड को०
इम्पीरियल बैंक ब्रांच
इलाहाबाद बैंक ब्रांच

गल्ले के व्यापारी

मेसर्स मामचन्द राधाकृष्ण
" उदयराम जगन्नाथ
" खेमचन्द नागरमल
" दुनीचन्द सगुनचन्द
" धरमदास कन्हैयालाल
" बाल्हूराम मूलचन्द
" बीजराज जानकीदास
" मामचन्द जगन्नाथ
" माधवलाल चिरंजीलाल
" सादीराम उदमीराम
मेसर्स सुगनचन्द मामराज

फ्लावर मिल

हरकिशनदास फ्लावर मिल

कॉटन मर्चेन्ट

मेसर्स रा० ब० अमोलकचंद मेवाराम
" मामचंद राधाकृष्ण
" पटैल मिल्स

पौदा, कलम व बीज के व्यापारी

१ मेसर्स हेन बेन नर्सरी
२ " एल० आर० ब्रदर्स

लकड़ी की नकाशी का सामान वाले

मेसर्स अब्दुल गफूर एण्ड सन्स
" नजर मुहम्मद फजलहक़
" महम्मद इमाम महम्मद इकराम
" मुख्तार अहमद तुफेर अहमद
" हबीब हुसेन मजीद हुसेन

देहरादून

देहरादून भारतप्रसिद्ध स्थान है। यहाँ से मंसूरी, लन्दौरा और चक्रायता नामक हिल स्टेशनो को मोटरें जाती हैं। यह स्थान ई० आई० आर० की लक्सर-देहरादून ब्रांच का अंतिम स्टेशन है। यह भी हिमालय पहाड़ ही पर स्थित है। यहाँ की आब-हवा सर्द एवं स्वास्थ्यप्रद है। यहाँ की बनावट बहुत सुन्दर है। इस शहर के देहरादून नाम पड़ने का कारण यह बतलाया जाता है कि दो पहाड़ों के बीच की जमीन को दून कहते हैं और देहरा सिक्खों के गुरु रामराय का स्थान इसी दून में था। अतएव इसका नाम देहरादून पड़ा। यहाँ महकमा जंगलात का स्कूल एवं फौजी शिक्षा देने का स्कूल भी है। जङ्गलात के स्कूल के साथ में रिसर्च इन्स्टीट्यूट भी है।

यहाँ का व्यापार विशेष कर बासमती बढ़िया चावल, चाय और चूने का है। यह माल यहाँ से काफी तादाद में बाहर जाता है। इसके अतिरिक्त जङ्गली पैदावार में साखू, देवदार, शीशम और चीड़ के बहुत पेड़ जङ्गलों में पाये जाते हैं। इन्हीं की लकड़ी की यहाँ आमद होती है और इसका भी यहाँ व्यापार होता है। इसके सिवा जङ्गली पैदावार में जो सब से ज्यादा आता है वह "रसौद" नामक पदार्थ है इसके सिवा यहाँ कोई खास व्यापार नहीं है। हाँ हिल स्टेशन को सप्लाय करने वाला सेंटर होने से बाहर से रोजाना व्यवहार का सामान काफी तादाद में आता है।

यहाँ कारखानो में एक सरकारी लकड़ी का मिल है। इसमें लकड़ी का काम बनता है।

मेसर्स भगवानदास एण्ड को० बैंकर्स

यह एक प्राइव्हेट बैंक है। यू० पी० में यह पहला ही बैंक है जो एक फैमिली के द्वारा चलाया जाता है। इसकी स्थापना सन् १८५६ ई० में ला० भगवानदास द्वारा हुई। भगवानदास की मृत्यु के समय उनके लड़के लाला जुगमन्दिरदास की आयु केवल १२, १३ वर्ष की थी। उस समय इस बैंक की बहुत मामूली स्थिति थी। लाला जुगमन्दिरदासजी ने अपनी व्यापारिक प्रतिभा के बलपर इस बैंक की बहुत तरक्की की और आज यू० पी० के प्रसिद्ध बैंकों में इसका नाम है। इसकी शाखाएँ सहारनपुर, मंसूरी और देवबन्द में हैं। जहाँ बैंकिंग व्यापार

होता है। इसके प्रधान मालिक ला० जुगमन्दिरलालजी के पुत्र ला० नेमिचन्दजी एवं लाला रिखबदासजी हैं। आप लोग जैन धर्मावलम्बी सज्जन हैं।

बैंकर्स—

दी अलाहाबाद बैंक ब्रांच
दी इम्पीरियल बैंक ब्रांच
ला० उग्रसेन बार एटला
ला० बलबीरसिंह
मेसर्स भगवानदास एण्ड को०
महंत लछमनदासजी
मेसर्स लक्ष्मीचन्द रामकिशोर

गल्ले के व्यापारी और कमीशन एजंट—

मेसर्स कुन्दनलाल बख्तावरसिंह
,, कन्हैयालाल हरस्वरूप
,, गंगाराम दर्शनलाल
,, जगन्नाथ मित्रसेन
,, जुगलकिशोर हरिश्चन्द्र
मेसर्स बद्रीदास आशाराम
,, सारनमल कल्लूमल

कपड़े के व्यापारी—

मेसर्स इंडियन इंडस्ट्रीयल कम्पनी (फैंसी कपड़े)
,, इम्पिरीयल ट्रेडिंग कंपनी (फैंसी कपड़ा)
,, झंडूमल एण्ड संस (फैंसी कपड़ा)
,, रामानन्द कृपाराम (फैन्सी कपड़ा)
,, विशंभरदास एंड को० (फैंसी कपड़ा)।

चाँदी-सोना के व्यापारी—

सेठ झूमनलाल सराफ
,, फब्बालाल सराफ
मेसर्स मेवाराम गुरुदयाल
,, मुकुन्दलाल हरनारायण
,, सुन्दरलाल जिनेश्वरप्रसाद

हरिद्वार

हरिद्वार हिन्दुओं का तीर्थ स्थान है। यह नगर लक्सर-देहरादून रेल्वे लाइन पर आबाद है। यहाँ का प्राकृतिक सौंदर्य्य देखने की वस्तु है। हर बारहवें साल चैत्र मास में यहाँ कुंभ का भारी मेला लगता है। इसके पास ही कनखल नामक स्थान है जहाँ सती अपने पिता दक्ष के अपमान से भस्म हुई थीं। कनखल के पास गंगा के पास गुरुकुल कांगड़ी है। यह भी भारत प्रसिद्ध स्थान है। यहाँ दूर दूर के विद्यार्थी विद्याध्ययन करने के लिये आते हैं। इसी प्रकार ऋषिकुल भी है।

व्यपारिक दृष्टि से यह स्थान किसी प्रकार का महत्व नहीं रखता। यहाँ तो भोले भाले यात्री ही लाखों की संख्या में प्रति वर्ष आया करते हैं अतः उन्हीं की आवश्कता की पूर्ति के लिये जिन वस्तुओं की खपत होती है, उन्हीं का यहाँ प्रायः व्यापार है। पहाड़ों की जंगली पैदा-

वार में से जड़ी बूटी जो यहाँ बहुत बड़े परिमाण में होती है, आया ही करती है, पर इनका विशेष अच्छा संग्रह यहाँ के काली कमली वाले बाबाजी के यहाँ रहता है। शिलाजीत भी यहाँ काफी परिमाण में आती है जो यहाँ से बाहर एक्सपोर्ट होती है। छपाई का काम भी यहाँ मनोहारी होता है। छापने के लिये खद्दर वगैरह सब बाहर से आता है उसमें विशेषकर मुरादाबाद, काशीपुर आदि स्थानों का होता है। कम्मल भी यहाँ तैयार होते हैं। यहाँ के कम्मल मजबूत और टिकाऊ होते हैं। वे भी बाहर भेजे जाते हैं।

शिलाजीतवाले—

दी गंगाडीपो
,, शिलाजीत डिपो
,, शीलाजीत कम्पनी

ऊनी कम्मलवाले—

मेसर्स अर्जुनदास दुर्गादास
,, भगवानदास चौपड़ा
,, सीताराम सुखदेवप्रसाद

बर्तनवाले—

मेसर्स छंगामल भगवानदास
मेसर्स नन्हूमल विट्ठलदास
,, फीनामल बुद्धूमल

कपड़े के व्यापारी—

मेसर्स अर्जुनदास दुर्गादास
,, गणेशदास गुल्लामल
,, गौरीशंकर दमोदरदास
,, छंगामल पन्नालाल
,, भगवानदास चौपड़ा
,, मूलचन्द नत्थूलाल
,, श्यामलाल बूचीमल
,, सीताराम सुखदेवप्रसाद

मुरादाबाद

यह नगर ई. आई. आर. की मुगलसराय सहारनपुर लाइन पर एक बड़ा जंकशन हैं। यहाँ से एक ब्रांच हापुड़ होती हुई दिल्ली गयी है और दूसरी ब्रांच चंदौसी होती हुई अलीगढ़ आयी है। यहाँ से छोटी लाइन की एक शाखा उत्तर की ओर रामनगर को गयी है। इस नगर के समीप से ही रामगंगा बहती है। यहाँ के कलई के बर्तन और छपे हुए कपड़े मशहूर हैं। यहाँ का प्रधान व्यवसाय इन्हीं बर्तनों का है। इसके अतिरिक्त गेहूँ, जौ, उड़द, मूंग और चना की यह मण्डी है। इस मण्डी में गुड़ भी बहुत आता है। यहाँ गल्ले का सेर १०० रु० भर का है।

यहाँ के कलई के बर्तन भारतप्रसिद्ध हैं। यों तो यहाँ पर सभी प्रकार के बर्तनों पर सिलवर प्लेटिंग तथा निकल प्लेटिंग की पालिश की जाती है जो देखने में मनमोहक पर व्यवहार में ओछी होती है पर हाँ, यहाँ के पुराने ढंगकी मुरादाबादी कलई बहुत बढ़िया होती है। यह कलई जितनी देखने में सुन्दर होती है उतनी ही व्यवहार में भी टिकाऊ होती है यही कारण है कि इस क़लई के बर्तनों को यदि उपले या लकड़ी की राख से रोज मला जाय तो कलई सात आठ वर्ष तक बराबर चलती है। यह कलई राँगे की कलई कहाती है। राँगा प्रायः सिंगापुर से आता है जो यहाँ व्यवहार किया जाता है। बर्तन पर प्रथम राँगे की कलई की जाती है और फिर उसे पक्का करने के लिये आग में तपाया जाता है जिसके बाद बर्तन मसाले देकर मला जाता है और फिर पालिश देकर उसका जौहर उठाया जाता है जो चमक को पैदा करता है तब माल बाजार में बिक्री के योग्य होता है।

माल की कालिटी चद्दर के भारीपन पर निर्भर करती है। इसके अतिरिक्त सिंगल और डबल पालिश पर भी कलई के सुन्दर और टिकाऊ होने का दारमदार रहता है। अतः मोटी चद्दर के माल पर ही उम्दा खराद की जा सकती है और साफ खराद पर ही कलई भी पोख्ता होती है और उसी पर चमक का जौहर खिलता है। इस प्रकार यही माल ऊँचे दर्जे का माना जाता है। यों तो मुरादाबादी कलई सब प्रकार की धातु के बर्तनो पर होती है पर जर्मन सिलवर पर नहीं। हाँ जर्मन सिलवर पर इलेक्ट्रो प्लेटिंग का या सिलवर प्लेटिंग का काम होता है जो वैसा टिकाऊ नहीं होता।

यहाँ जर्मन सिलवर और पीतल के पुराने बर्तन भी गलाये जाते हैं और फूल नामक मिश्रित धातु भी गलाई जाती है। ये धातुयें गला कर नये बर्तन ढाले जाते हैं। यहाँ राँगा और ताँबा मिला कर फूल तैयार किया जाता है। यहाँ प्रायः पुराने पीतल के बर्तन गला कर लोटे और ग्लास ढाले जाते और थाली तथा कटोरियाँ प्रायः चद्दर से तैयार की जाती हैं। चद्दर और पुराना माल गला कर सभी प्रकार का माल भी बनाया जाता है। यहाँ की मिट्टी इतनी उत्तम है कि जिससे ढालने के साँचे बहुत अच्छे बनते हैं।

कलई के समान ही बर्तनों पर बेल बूटे और रंगसाजी का काम भी यहाँ उत्तम बनता है। जो विदेशों में चाव से बिकता है। बारीक कलम का एकरंगा काम उत्तमश्रेणी का होता है।

इस शहर के समीप सम्भल में सींग का काम तथा आबनूस की लकड़ी पर नक्काशी का काम बहुत ही सुन्दर और अच्छा होता है जो यहाँ के कारीगर तयार करते हैं और बादरवाले मोल ले विदेश भेजते हैं।

यहाँ के व्यापारियों का परिचय इस प्रकार है:—

दी मुरादाबाद स्पीनिंग एण्ड वीविंग मिल्स लिमिटेड

इस मिल की स्थापना ६० साल पहिले कोठीवाला तथा ठाकुर द्वारा फेमिली ने की। आरम्भ में इस मिल ने तरक्की की और सन् १९१४ के बाद इस मिल ने हिस्से का मुनाफा शेअर की कीमत से कई गुना अपने शेअर होल्डरों को बाँटा। यहाँ तक कि भारत की तथा विलायत की कई मिलें फेल हो चुकी और सन् १९३० में जब कि मिलों का बायकाट हो रहा था यह मिल अपने शेअर होल्डरों को बराबर मुनाफा दे रही है तथा कभी आज तक कोई गड़-बड़ नहीं होने पाई।

मेसर्स अयोध्या प्रसाद एण्ड सन्स

इस फर्म की स्थापना सन् १८७८ ई० में बा० अयोध्याप्रसाद खत्री ने की थी। आरम्भ से ही यह फर्म इनैमल्ड वर्क अर्थात कलम के काम के बर्तनों का व्यापार कर रही है। इस व्यापार में इस फर्म ने अच्छी सफलता प्राप्त की। इसका माल विदेशों के बाजार में जोरो से बिकता है। इसके वर्तमान मालिक बा० हीरालालजी तथा आपके भाई जवाहरलालजी हैं। आपलोग मुरादाबाद के ही रहनेवाले हैं। फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

मुरादाबाद—मेसर्स अयोध्या प्रसाद ऐन्ड सन्स T. A. Brass	यहाँ कलम के काम के बर्तनों का बहुत बड़ा काम है। यहाँ से विदेशों को भी यह माल जाता है।

मेसर्स साह किशनस्वरूप रघुवीरशरण

इस फर्म की स्थापना १७ वर्ष पूर्व साहु किशनस्वरूपजी खत्री ने की थी। इसके पूर्व आप के आदि निवास अमरोहे में मेसर्स रामस्वरूप आनन्दस्वरूप के नाम से व्यापार होता था पर वर्तमान मे वहाँ की फर्म पर मेसर्स आनन्दस्वरूप ज्योतिस्वरूप नाम पड़ता है। आपके स्वर्ग-वास के बाद फर्म का संचालन आपके पुत्र करने लगे जो वर्तमान में मालिक हैं। इस फर्म के प्रधान संचालक लाला रघुबीरशरणजी तथा लाला राधेश्यामजी हैं। इसका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

मेसर्स किशनस्वरूप रघुवीरशरण गंजबाजार मुरादाबाद	यहाँ गला, बैंकिंग तथा जमींदारी का काम होता है और फ्लोर मिल है।

मेसर्स—आनन्दस्वरूप ज्योतिस्वरूप अमरोहा (मुरादाबाद)	यहाँ गल्ला, बैंकिंग तथा जमींदारी का काम होता है।
मेसर्स—आनन्दस्वरूप ज्योतिस्वरूप धनौरा (मुरादाबाद)	गल्ला, बैंकिंग तथा जमींदारी का काम होता है।

मेसर्स लाला जगन्नाथ प्यारेलाल

यह फर्म सन् १९१६ ई० से उपरोक्त नाम से व्यापार कर रही है। इसके पूर्व इस फर्म पर मेसर्स लालताप्रसाद प्यारेलाल के नाम से व्यापार होता था। इसके मालिक अग्रवाल वैश्य समाज के सज्जन हैं। आप लोग मुरादाबाद के आदि निवासी हैं और आरम्भ से ही आप लोग मुरादाबादी वर्तनों का व्यापार करते आ रहे हैं जो यह फर्म वर्तमान में भी जोरों से कर रही है। इसके वर्तमान मालिक लाला प्यारेलाल जी हैं। आप व्यापारकुशल और मिलनसार सज्जन हैं। आप सार्वजनिक कामों में भी सहायता करते रहते हैं। इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मुरादाबाद—मेसर्स जगन्नाथ प्यारेलाल	यहाँ वर्तनों का बहुत बड़ा व्यापार होता है तथा बैंकर और जमींदारी का काम है।

मेसर्स बनारसीदास पुरुषोत्तमदास

इस फर्म की स्थापना लाला बनारसीदास ने की और इनैमल्ड ग्लास वेयर का व्यवसाय आपने आरम्भ किया जो यह फर्म आज भी कर रही है। आपके स्वर्गवास के समय आपके पुत्र बाबू पुरुषोत्तमदासजी की आयु बहुत कम थी अतः फर्म का व्यवसाय आपके [illegible] करते रहे पर वयस्क होने पर बाबू पुरुषोत्तमदासजी ने फर्म का संचालन करना आरम्भ किया। आपने फर्म का पुराना नाम बदल कर उपरोक्त नाम रक्खा। आपने व्यापार में [illegible] १२ वर्ष तक स्टेशन मास्टरी की पर उसे भी आपने छोड़ दिया और आज आप पुनः अपनी फर्म का संचालन कर रहे हैं। आप शिक्षित और मिलनसार हैं। आपने व्यापार में [illegible] प्राप्त की है। आपके दत्तक पुत्र बाबू हरिशंकरजी भी फर्म का काम देखते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय यों है—।

मेसर्स बनारसीदास पुरुषोत्तमदास शाही मस्जिद मुरादाबाद T. A. Curio.	यहाँ मुरादावादी क़लई, प्लेन तथा इनैमल्ड ब्रासवेयर का व्यापार होता है ।

मेसर्स बुलाकीदास सक्खनलाल

इस फर्म की स्थापना लगभग ५० वर्ष पूर्व लाला बुलाकीदासजी ने की थी। वर्तमान में इस फर्म के मालिक लाला गंगारामजी तथा आपके भाई लाल लालमनदासजी हैं। आपलोग मुरादाबाद के निवासी अग्रवाल वैश्य समाज के सज्जन है। आपके पूर्वज पीतल की ढलाई का काम करते थे। इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स बुलाकीदास सक्खनलाल मुरादाबाद	यहाँ सभी प्रकार के बर्तनों का व्यापार होता है।

मेसर्स मिश्रीलाल गिरधारीलाल

इस फर्म के आदि संस्थापक लाला मिश्रीलालजी ने लगभग ६० वर्ष पूर्व मेसर्स मिश्री-लाल हजारीलाल के नाम से व्यापार आरम्भ किया। आपने बर्तन का व्यापार शुरू किया और फर्म ने इस काम में अच्छी सफलता प्राप्त की। आपके स्वर्गवास के बाद आपके दोनों पुत्रों ने व्यापार चलाया पर गत वर्ष वे लोग अलग २ हो गये, अतः आपके छोटे पुत्र लाला गिरधारीलालजी ने जो ३२ वर्ष तक फर्म का काम चलाते रहे थे अपनी स्वतंत्र फर्म उपरोक्त नाम से खोल ली। आप ही इस फर्म के मालिक हैं, आपके दो पुत्र हैं। बाबू ललिताप्रसादजी तथा बाबू देवीप्रसादजी। आप लोग अग्रवाल वैश्य समाज के सज्जन हैं। इस फर्म का व्यापा-रिक परिचय यों है।

मेसर्स मिश्रीलाल गिरधारीलाल मण्डी चौक मुरादाबाद	यहाँ बर्तनों की आढ़त का काम होता है।
मेसर्स गिरधारीलाल ललिता प्रसाद मण्डी चौक मुरादाबाद	यहाँ बर्तनों का व्यापार और आढ़त का काम होता है।

मेसर्स मुकुटविहारीलाल मदनस्वरूप

इस फर्म की स्थापना लगभग २३ वर्ष पूर्व लाला मुकुटविहारीलालजी ने उपरोक्त नाम से कर कपड़े का काम आरम्भ किया था, जो यह फर्म आज भी कर रही है। इसके पूर्व भी आपके परिवार में व्यापार होता था जो लगभग १०० वर्ष का पुराना है पर आपके पिता लाला केशरीमलजी ने कपड़े का काम खोला था। आपलोग अग्रवाल वैश्य समाज के सज्जन हैं। इस फर्म के वर्तमान मालिक लाला मुकुटविहारीलालजी हैं। इसका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स मुकुटविहारीलाल मदनस्वरूप गंजबाजार, मुरादाबाद	यहाँ सभी प्रकार के कपड़े का व्यापार होता है।

इसके अतिरिक्त मुरादाबाद जिले में कांठ, सरकड़ा तथा बिलारी में मेसर्स मदनस्वरूप त्रिलोकीनाथ के नाम से आपकी कपड़े की दुकानें हैं।

मेसर्स ललताप्रसाद शान्तिप्रसाद

इस फर्म की स्थापना ला० ललताप्रसादजी ने सन् १९०८ ई० में की थी। इसके पूर्व आप अपने पिता ला० केशरीमलजी द्वारा संस्थापित मेसर्स केशरीमल ललताप्रसाद नामक फर्म का काम संचालित करते थे। आप बड़े ही व्यापार कुशल महानुभाव थे अतः आपने इस कार्य में अच्छी सफलता प्राप्त कर ली। आपके बाद आपके पुत्र बा० शान्तिप्रसादजी जो वर्तमान में फर्म के मालिक हैं फर्म का संचालन करते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

मेसर्स ललता प्रसाद शान्तिप्रसाद गंजबाजार मुरादाबाद	यहाँ सभी प्रकार के कपड़े का व्यवसाय होता है।

मेसर्स लक्ष्मणदास मथुरादास

इस फर्म के मालिक कांठ (मुरादाबाद) के निवासी हैं। आप लोग अग्रवाल वैश्य समाज के सज्जन हैं। इसकी स्थापना लाला लक्ष्मणदासजी ने प्रथम कांठ में की थी। इसके बाद करीब १५ वर्ष पूर्व आपके पुत्र ला० मथुरादासजी ने यहाँ उपरोक्त नामसे अपनी फर्म खोली जो आज अच्छी उन्नत अवस्था पर है। वर्तमान में इस फर्म के मालिक लाला मथुरादासजी हैं। आपके तीन पुत्र हैं जो अलग हैं और अपना स्वतन्त्र व्यापार करते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

मेसर्स—लक्ष्मणदास मथुरादास गंजबाजार मुरादाबाद	यहाँ गल्ला, आढ़त, बैंकिंग तथा जमीदारी का काम होता है। मुरादाबाद स्पिनिंग एण्ड वीविंग मिल लि० के सूत की बिक्री इसीके मारफत होती है।
मेसर्स—लक्ष्मणदास मथुरादास कांठ (मुरादाबाद)	बैंकिंग, जमीदारी, गल्ला तथा आढ़त का काम होता है।

मेसर्स श्यामलाल रघुबीरशरण

इस फर्म की स्थापना सन् १९१६ ई० में लाला श्यामलालजी ने की थी। इसके पूर्व आप मेसर्स श्यामलाल बनारसीदास के नाम से व्यापार करते थे। आपका स्वर्गवास लगभग ७ वर्ष पूर्व हो गया, तब से आपके पुत्र लाला रघुबीरशरणजी, लाला राजारामजी और लाला लक्ष्मी-नारायण जी करते हैं। आप लोग अग्रवाल वैश्य समाज के सज्जन हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स-श्यामलाल रघुबीरशरण मुरादाबाद	यहाँ सभी प्रकार के बर्तनों का व्यापार होता है।

मुरादाबादी बर्तन के व्यापारी

मेसर्स इण्डियन आर्ट इम्पोरियम
" गणेशीलाल ज्वालाप्रसाद
" जगन्नाथ प्यारेलाल
" बद्रीदास बांकेलाल
" बांकेलाल राधेलाल
" बुलाकीदास शान्तिप्रसाद
" महबूब एण्ड को०
" मिश्रीलाल गिरधारीलाल
" मोहनलाल छोटेलाल
" मोहम्मद जाहिद
" रामानंद शान्तिप्रसाद

मेसर्स श्यामलाल रघुबीरशरण
" सक्खनलाल बासीराम
" सूरजमल बृजलाल

इनैमल्ड ब्रासवेयर के व्यापारी

मेसर्स अयोध्याप्रसाद एण्ड सन्स
" बनारसीदास पुरुषोत्तमदास
" आर. एन. के. शैनन एण्ड को०
" महम्मदयार खाँ
" श्यामलाल रघुबीरशरण
" हाजी कल्लन

गल्ले के व्यापारी

मेसर्स आत्माराम छाजूराम

मेसर्स किशनस्वरूप रघुवीरशरण
,, गोपालसाहु नत्थूसाहु
,, नक्कीमल मुकुटबिहारीलाल
,, वंशीधर केदारनाथ
,, परसादीलाल जगदीशप्रसाद
,, रामगोपल बनवारीलाल
,, लछमनदास मथुरादास

चद्दर के व्यापारी

मेसर्स जगन्नाथ रामशरण
,, जगन्नाथ रघुवीर शरण
,, परमेश्वरीदास बाबूराम
,, मोहनलाल गोपालदास
,, सूरजसहाय रामरतन

कपड़े के व्यापारी

मेसर्स अटल बिहारी बजाज
,, वृजलाल बजाज

मेसर्स मुकट बिहारीलाल मदनस्वरूप
,, मदनलाल बजाज
,, लछामल बजाज
,, ललिताप्रसाद शान्तिप्रसाद

रंग के व्यापारी

मेसर्स अम्बाप्रसाद जादवजी एण्ड को०
,, रामस्वरूप रामेश्वरप्रसाद
,, हाजी लतीफ बक्स अब्दुलकरीम

खादी के व्यापारी

मेसर्स सूरजमल ठाकुरदास
,, सौदागरमल गनेशीमल
,, हरकरणदास रामरतन

बैंक

इम्पीरियल बैंक ब्रांच
अलाहाबाद बैंक ब्रांच
नेशनल बैंक लि०

रामपुर

रामपुर-यह अवध एण्ड रुहेल खण्ड की बड़ी रियासत है। यहाँ के शासक नवाब कहलाते हैं। यह एक मुसलमानी स्टेट है। नव्वाब साहब रामपुर के नाम से यह मशहूर है। रामपुर स्टेट की यह राजधानी है। यहाँ के नव्वाब साहब यहीं रहते हैं। राजधानी होने से बड़ी कोर्टें, महल आदि यहाँ बने हुए हैं। इसकी बनावट बड़ी सुन्दर और तरतीब वार है। प्रायः पक्के मकान हैं। मकानों का नकशा स्टेट से पास होने पर ही मकान बनाने के काम में आता है।

यहाँ की पैदावार में मकई प्रधान हैं। इसके पश्चात् गेहूँ, घुड़जई (Oat—घोड़े के खाने के जव) और अरहर का नम्बर आता है। अलसी, सरसों, लाही, कपास, चना और जौ भी यहाँ अच्छे परिमाण में पैदा होते हैं। इसके अतिरिक्त गुड़, खांड और दाल भी यहाँ से तैय्यार हो कर बाहर जाती है।

यहाँ का तौल खांड को छोड़ कर शेष सब वस्तुओं का ९६ भर के सेर से है। खाँड का तौल १०० भर का माना जाता है। व्यापारियों के ठहरने की यहाँ कोई सुविधा नहीं हैं।

यहाँ की इंडस्ट्री में खास तौर से चाकू, सरोते एवं तलवारें हैं। सूती हाथका बुना हुआ माल भी यहाँ अच्छे परिमाण में तैय्यार होता है। इनमे जैसे, दो सूती, खेस, चादर, दुतही, जोड़े आदि २ है। ये बहुत कम बाहर जाते हैं। मौसिम मे यहाँ से आम और अमरूद भी बाहर जाते हैं जो यहाँ बहुत बड़ी मात्रा में पैदा होते हैं।

व्यापारियों के पते

गल्ले के व्यापारी एवं आढ़तिया—

मेसर्स—नारायणदास मुन्नीलाल
,, मूलचंद प्यारेलाल
,, रामकुमार रघुवीरदास
,, रामप्रसाद मक्खनलाल
,, रामगोपाल बनवारीलाल
,, सोहनलाल मोहनलाल

दाल के व्यापारी—

मेसर्स बुद्धुसेन छदम्मीलाल
,, साहु राधेरमण

कपड़े के व्यापारी—

मेसर्स चन्द्रसेन मदनलाल
मेसर्स जुगलकिशोर बनारसीदास
,, मुन्नीलाल शिवचरनदास
,, मोतीराम लक्ष्मणदास
,, रतनलाल मुन्नीलाल
,, श्यामसुन्दरलाल सीताराम

चाँदी-सोने के व्यापारी—

मेसर्स तुलसीराम रामचन्द्र
,, बनवारीलाल गिरधारीलाल
,, भिखारीलाल रामशरणदास
,, श्यामलाल गोविन्दनारायण
,, हरद्वारीलाल राजाराम

चंदौसी

यह स्थान इ० आई० आर० लाइन का जंकशन स्टेशन है। यहाँ से अलीगढ़, बरेली और मुरादाबाद तीनों ओर रेल्वे गई है। यहाँ और मुरादबाद के बीच मोटरें भी दौड़ाकरती हैं। यह एक छोटी और अच्छी मंडी है। यह मंडी गेहूँ के लिये खास तौर पर मशहूर है। यहाँ का गेहूँ चन्दौसी गेहूँ के नाम से पुकारा जाता है। जिसकी कालिटी बहुत ऊँचे दर्जे की मानी जाती है। कलकत्ते के बाजार में यहाँ के गेहूँ पर दूसरे गेहूँ से ।।) ।।=) प्रति मन तक का भाव ज्यादा चढ़ जाया करता है। यहाँ स्टाक में करीब २।।, ३ लाख मन गेहूँ रहता है। यह सब माल खत्ती, कोठे एवं थैलों में भरा रहता है। इसके अतिरिक्त यहाँ जौ, चना, घी, कपास और

तिल भी काफी तादाद मे पैदा होते हैं। कपास का यहाँ अच्छा व्यापार होता है। यहाँ का कपास बंगाल कालिटी का होता है। तौल यहाँ सब ही माल का १०० भर के सेर से होता है।

व्यापारियों की सुविधा एवं आपस में होने वाले झगड़ों को निपटाने के लिये यहाँ के व्यापारियों ने अभी २ तीन साल से "चेम्बर ऑफ कामर्स चन्दौसी" नामक एक व्यापारिक संस्था खोल रखी है। इसके प्रेसिडेण्ट यहाँ की प्रसिद्ध फर्म मेसर्स शोभाराम श्रीराम के मालिक सेठ शिवनारायणजी बड़जातिया हैं।

यहाँ निम्नलिखित कल कारखाने हैं:—

(१) वेस्ट पेटेण्ट प्रेस कम्पनी लिमिटेड
(२) हीरालाल रामगोपाल जीन एण्ड प्रेस
(३) रामगोपाल फतेचन्द चन्दौसी कॉटन जीनिंग फैक्टरी
(४) जोगीराम जानकीप्रसाद जीनिंग फैक्टरी
(५) केशवदेव बद्रीप्रसाद कॉटन जीनिंग फैक्टरी

यहाँ के व्यापारियों का परिचय इस प्रकार है:—

मेसर्स अमोलकचन्द मेवाराम

इस फर्म का हेड आफिस खुरजा यू० पी० है। अतएव इसका विस्तृत परिचय वहीं दिया गया है। यहाँ इस फर्म की एक जीनिंग फैक्टरी है। तथा काटन का व्यापार होता है। इसका तारका पता "Raniwala" है।

मेसर्स जोगीराम जानकीप्रसाद

इस फर्म के वर्तमान मालिक रायसाहब श्यामलालजी हैं। आपका हेड आफिस खुरजा है। अतएव इस फर्म का विशेष परिचय चित्रों सहित वहीं प्रकाशित किया गया है। यहाँ यह फर्म कॉटन और गल्ले का व्यपार करती है। इसकी यहाँ पर काटन जीनिंग एण्ड प्रेसिंग फैक्टरी भी है।

मेसर्स निरंजनलाल चिरंजीलाल

इस फर्म में दो पार्टनर हैं, मेसर्स चिरंजीलाल कैलासचन्द और गोविन्दराम गोपालराम। दोनो फर्मों के हेड आफिस अलीगढ़ में हैं। अतएव विस्तृत परिचय वहीं दिया गया है। यहाँ यह फर्म गल्ला एवं दाल का काम करती है।

मेसर्स नारायणदास डोरीलाल

इस फर्म के वर्तमान मालिक स्व० ला० नारायणदासजी के पुत्र ला० विहारीलालजी, बालमुकुन्दजी और स्वर्गीय लाला डोरीलालजी के पुत्र भोलानाथजी हैं। आप लोग बाराश्रेणी वैश्य समाज के सज्जन हैं। यह फर्म करीब ४५ वर्ष पूर्व ला० नारायणदासजी द्वारा स्थापित हुई और आपही के द्वारा इसकी उन्नति भी हुई।

इस फर्म का वर्तमान व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

चन्दौसी—मेसर्स नारायणदास डोरीलाल T. A. "Marani" } यहाँ बैंकिंग, जमींदारी एवं गल्ले का व्यापार और आढ़त का काम होता है।

मेसर्स बंशीधर नंदकिशोर

आप लोग चंदौसी निवासी अग्रवाल वैश्य समाज के सज्जन हैं। इसकी स्थापना लगभग २० वर्ष पूर्व लाला बंशीधरजी ने की थी। इस फर्म की प्रधान उन्नति लाला बंशीधरजी के हाथों से हुई। इस फर्म के वर्तमान मालिक लाला बंशीधरजी के पुत्र लाला सोहनलालजी हैं। लाला बंशीधरजी स्वर्गवासी हो चुके हैं। अतः फर्म का वर्तमान में प्रधान संचालन आप के पुत्र लाला सोहनलालजी ही कर रहे हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स बंशीधर नंदकिशोर चंदौसी } यहाँ गल्ला, घी, तथा सभी प्रकार की कमीशन एजन्सी का काम और बैंकिंग व्यवसाय होता है।

मेसर्स भोलाराम मुसद्दीलाल

इस फर्मका हेड आफिस कलकत्ता है। इसके वर्तमान मालिक सेठ कुन्दनमलजी एवं मुत्सद्दीलालजी हैं। इस फर्म की और भी स्थानों पर शाखाएं हैं। जिनका विस्तृत विवरण इसी ग्रन्थ के दूसरे भागके कलकत्ता विभाग के पेज नं० ३१६ में दिया गया है।।यहाँ यह फर्म गल्ले का व्यापार एवं आढ़त का काम करती है।

मेसर्स रामगोपाल हीरालाल

इस फर्म का हेड आफिस बम्बई है अतः इस का सचित्र और विस्तृत परिचय हमारे इसी ग्रंथ के प्रथम भाग के बम्बई विभाग के पृष्ठ १०३ में दिया गया है। यहाँ इसकी दो फर्मे हैं जो मेसर्स रामगोपाल हीरालाल तथा रामगोपाल केशवदेव के नाम से रूई का व्यापार

तथा गल्लेकी आढ़त का काम करती है। यहाँ इसकी २ जीनिंग और २ प्रेसिंग फैक्ट्रियाँ हैं तथा ट्रस्ट की जागीरी के २ गाँव भी हैं।

मेसर्स शोभाराम श्रीराम

इस फर्म के मालिक भिवानी निवासी खण्डेलवाल वैश्य समाज के सज्जन हैं। इस फर्म का हेड आफिस मेरठ में है। वहाँ करीब ४३ वर्ष पूर्व सेठ दिलसुखरायजी के द्वारा इस फर्म का स्थापन हुआ। इसके पश्चात इस फर्म का संचालन से० छाजूरामजी, सेठ बालूरामजी और सेठ श्रीरामजी ने किया। आप लोगों के समय में फर्म की बहुत उन्नति हुई। आप लोगों के ही समय में फर्म ने समय २ पर हापुड़, श्यामली, भिवानी, चंदौसी आदि स्थानों पर अपनी शाखाएँ स्थापित कीं।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ शिवनारायणजी, सेठ मुआलालजी, सेठ लक्ष्मीनारायणजी, सेठ डूंगरमलजी, सेठ वासुदेवजी, सेठ रामस्वरूपजी एवं सेठ गुलाबचन्दजी बड़जातिया हैं। आप सबलोग अपनी ब्रेंचोंपर व्यापार संचालन करते हैं। सेठ शिवनारायणजी यहाँ की चेम्बर आफ् कामर्स के सभापति हैं। तथा आदिक्षेत्र नामक जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी के आप मंत्री है। आप मिलनसार व्यक्ति हैं। आपके गुलाबचन्द नामक एक पुत्र हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

चन्दौसी—मेसर्स शोभाराम श्रीराम T. A. Jain	यहाँ बैंकिंग, कमीशन एजंसी एवं गल्ले का व्यापार होता है।
मेरठ—मेसर्स शोभाराम गोपालराय T. A. Jain	यहाँ हेड आफिस है तथा गल्ला, गुड़, आदि का व्यापार और आढ़त का काम होता है।
श्यामली—मेसर्स शोभाराम गोपालराय T. A. Digambar	यहाँ गल्ला, गुड़ और कमीशन का काम होता है।
आंवला—(बरेली) मेसर्स शोभाराम श्रीराम	यहाँ गल्ला एवं दाल का काम होता है।
हापुड़—मेसर्स शोभाराम गोपालराय	यहाँ गल्ला बैंकिंग एवं कमीशन का काम होता है।
भिवानी (हिसार)—मेसर्स छाजूराम श्रीराम	यहाँ गल्ला और बैंकिंग का व्यापार होता है। यहाँ मालिकों का मूल निवास स्थान है।

लाला रामनारायणजी (रामनारायण भरोसेराम) बरेली पे० नं० ११९

सेठ शिवनारायणजी बड़जात्या (शोभाराम श्रीराम)
चन्दौसी पेज नं० ११५

राय साहब श्रीनारायणजी (गोविन्दराम तनसुखराय)
उझियानी पेज नं० १२२

गल्ले के व्यापारी—

मेसर्स खड्गसेन ज्वालाप्रसाद
,, गोविन्दराम सेवाराम
,, छीतरमल भौंरीप्रसाद
,, नारायणदास डोरीलाल
,, नारायणदास श्यामलाल
,, शाहू बद्दूलाल
,, बंशीधर नन्दकिशोर
,, बिहारीलाल गिरधारीमल
,, भोलानाथ बनारसीदास
,, शोभाराम श्रीराम
,, हीरालाल रामगोपाल

रूई के व्यापारी—

मेसर्स जोगीराम जानकीप्रसाद
,, बसंतलाल खुन्नीमल
,, मालीराम लक्ष्मणदास
,, वेस्ट पेटेण्ट प्रेस
,, साधुराम श्यामलाल
,, हीरालाल रामगोपाल

चाँदी सोने के व्यापारी—

मेसर्स बलदेवदास गोपीराम
,, बैजनाथ मोहनलाल
,, सनेहीलाल सैरमल

बरेली

बरेली यू० पी० प्रांत की रुहेलखंड कमिश्नरी के अपने ही नाम के जिले का हेड कार्टर है। यह इ० आई० आर० की सहारनपुर मुगलसराय वाली मेन लाईन का जंकशन स्टेशन है। यहाँ से आर० के० आर० की छोटी लाईन एक ओर कासगंज एवम दूसरी ओर काठगोदाम, पिलीभीत आदि स्थानों पर गई है। यह शहर बरेली जंकशन स्टेशन से १॥ मील की दूरी पर बसा हुआ है। इसका दूसरा नाम बाँसबरेली है। वास्तव में यह बाँस जैसा लम्बा भी बसा हुआ है। यहाँ बाँस एवम लकड़ी का बहुत बड़ा स्टाक रहता है जो प्रायः उत्तर हिन्दुस्थान के सभी शहरों को सप्लाय होता है। इसके अतिरिक्त लकड़ी के काम में यहाँ मेजें, कुर्सियाँ, पलंग के पाये, ताँगे, संदूक आदि बहुत अच्छे बनते है और बाहर जाते हैं। तांगे तो बरेली फेशन तांगे के नाम से प्रसिद्ध हो गये हैं। माचीस के भी यहाँ कारखाने हैं।

यहाँ की पैदावार में गुड़ और खाँड़ प्रधान हैं जो बाहर जाते हैं। इसके सिवाय गेहूँ, धान, लाही, वगैरह भी बाहर जाती है। चाँवल यहाँ का अच्छा होता है। यह चाँवल तीन प्रकार का है—चुईल, झिलिया एवम् वासमती। यहाँ के कालीन, दरियाँ और सुरमा भी मशहूर हैं। यहाँ का तोल सब चीजों का १०१ भर के सेर से होता है।

यहाँ के कल-कारखाने इस प्रकार हैं:—

(१) क्लाटरबक गंज टरपेंटाईल फैक्टरी
(२) अलाइड इण्डियन उड क्रेफ्ट लि०
(३) गवर्नमेंट सेंट्रल उड वर्किंग इन्स्टिट्यूट
(४) इण्डियन उड प्रोडेक्ट्स कम्पनी लि०
(५) इण्डियन बाविन कम्पनी लि०
(६) शारदा केनाल वर्क्स शाप
(७) आर० एण्ड के० रेल्वे लोको केरेज एण्ड वेगिन वर्क शाप
(८) रामेश्वर फ्लोअर मिल
(९) शंकर फ्लोअर मिल
(१०) सदरना मेच फैक्टरी
(११) वेस्टर्न इण्डिया मेच कम्पनी
(१२) क्लटर बक गंज मेच फैक्टरी

यहाँ के व्यापारियों का परिचय इस प्रकार है:—

मेसर्स गोविन्दराम तनसुखराम

इस फर्म के वर्तमान मालिक रा० सा० श्रीनारायणजी हैं। इस फर्म का हेड आफिस उझियानी (बदायूँ) में है। अतएव विशेष परिचय वहीं देखिये। यहाँ यह फर्म बैंकिंग, गुड़, शक्कर, गल्ला आदि का व्यापार और आढ़त का काम करती हैं। इसका यहाँ का पता शहादत गंज, बरेली है।

मेसर्स मगनीराम चिमनराम

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ तनसुखरामजी तथा सेठ मथुरादासजी हैं। इसका हेड आफिस कलकत्ता है। यहाँ यह फर्म गल्ले का व्यापार और कमीशन का काम करती है। इस फर्म का विशेष परिचय सीतापुर में देखिये।

मेसर्स माणिकचंद रामलाल

इस फर्म का हेड आफिस आगरा है और इसका विशेष परिचय झांसी में दिया गया है। यहाँ इस फर्म का राधाकृष्ण फ्लोर मिल नामक आटे का एक मिल है और कपड़े का व्यापार भी यह फर्म करती है।

मेसर्स रामेश्वरदास राधाकृष्ण

इस फर्म का हेड आफिस कलकत्ता है। अतएव इसका विस्तृत परिचय इसी ग्रन्थ के द्वितीय भाग में कलकत्ता विभाग के पेज नं० ४२३ में दिया गया है। यहाँ यह फर्म कत्थे का व्यापार करती है। एव जंगलो से कत्था तैय्यार करवा कर हेड आफिस को भेजती है। इसके वर्तमान मालिक सेठ मदनलालजी हैं।

मेसर्स रामनारायण रामभरोसेलाल

इस फर्म के वर्तमान मालिक ला० रामनारायणजी, रामभरोसेलालजी एवं ला० रामस्वरूपजी तीनों ही भाई हैं। यह फर्म करीब ५ वर्षों से उपरोक्त नामसे व्यापार कर रही है। इसके पहले यह फर्म दूसरे नामसे व्यापार करती थी। इसकी स्थापना ला० रामनारायणजी के द्वारा हुई। आप अग्रवाल वैश्य समाज के सज्जन हैं। आपही के द्वारा इस फर्म की तरक्की भी हुई। आप १० वर्ष पूर्व गवर्नमेंट से ठीका लेकर लकड़ी का कारबार करते थे। पर अब केवल नेपाल सरकार के जंगलों का ठीका लेकर उसमें से लकड़ी निकालते हैं। अपना माल जंगल से निकालने के लिये करीब ३० मील तक आपकी अपनी निज की रेलवे लाइन खोल रक्खी है। वे आपके पास रेलवे को स्लीपर सप्लाय करने का ठीका है। अतएव इन जंगलों की सब लकड़ी रेलको दे दी जाती है।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

बरेली—मेसर्स रामनारायण रामभरोसे लाल, बांसमण्डी	यहाँ बैंकिंग, जमीदारी, ठीकेदारी एवं लकड़ी की तिजारत होती है।
बरेली—मेसर्स रामनारायण रामभरोसेलाल शाहदतगंज	यहाँ गल्ले की आढ़त का व्यापार होता है।

गल्ले के व्यापारी—

मेसर्स गोविन्दराम तनसुखराय
" गजानन्द बियाणी
" गंगाबक्ष बिरदीचंद
" महादेव लादूराम
" मोतीलाल छाजूराम
" रामनारायण रामभरोसेलाल
मेसर्स रामसिवदास नोवतराय
" रामचन्द्र नान्हूराम
" रामरतनदास सदाराम
" वृन्दावन लक्ष्मीनारायण
" शिवनारायण बियाणी

लकड़ी, बाँस और पटिये के व्यापारी—

मेसर्स खैरातीलाल रामगोपाल

मेसर्स जगन्नाथ भगवानदास
,, ज्वालाप्रसाद रामदास
,, रामनारायण रामभरोसेलाल
,, हुलासराय रामरतन
,, हाफिसहाजी महम्मदखाँ

फर्निचर के व्यापारी—
दी अलबर्ट उड वर्क्स सिविल लाइंस
मेसर्स इद्रीसखाँ एण्डसंस ,,
,, जमीर एण्ड सन्स ,,
दी टिंबर सप्लाय उड वर्क्स ,,
मेसर्स दुलिचंद एण्ड सन्स जं० स्टे० रोड
,, महम्मद याकुबखाँ एंड संस सि०ला०
मेसर्स एस० आर० मेघवा जं० स्टे० रोड
दी सिविल फर्निचर हाउस ,,

कपड़े के व्यापारी—
मेसर्स छोटेलाल महादेवप्रसाद
,, टव्वालाल शालिग्राम
,, टव्वालाल मन्नीलाल
,, घूमामल बजाज
,, प्रभुदयाल जगतनारायण
,, प्यारेलाल मदनलाल
,, भूरीमल बजाज
,, मुरलीधर बजाज
,, मोहनलाल बजाज

उझियानी

उझियानी आर. के. आर. की कासगंज-बरेली वाली लाइन का स्टेशन है। यह एक छोटी-सी पर आबाद मंडी है। यह मंडी विशेष बान (मूंज) अमचूर और पोस्ता बाहर भेजने में मशहूर है। यहाँ से करीब ५०० मन बान रोजाना बाहर जाता है। यहाँ पैदा होने वाली वस्तुओं में इनके अतिरिक्त गेहूँ, सरसो, बाजरी, चना, जौ, कपास आदि भी होते हैं और बाहर जाते हैं। यहाँ माल प्रायः अच्छा होता है। कपास बढ़िया कालिटी का यहाँ पैदा होता है।

यहाँ पर आल-इंडिया कांग्रेस कमेटी की ओर से यू० पी० कांग्रेस कमेटी ने खद्दर-भंडार खोल रक्खा है। यह भंडार आस पास के देहातों में रहने वाले देहातियों द्वारा काता हुआ सूत एकत्रित कर कपड़े बनाता है और उन पर रंग एवं पालिस कर कांग्रेस खद्दर भंडारों को सप्लाय करता है। यहाँ प्युअर हाथ का बना माल तैय्यार होता है। यू. पी. प्रांत में यह सब से बड़ा खद्दर एकत्रित कर भेजने वाला भंडार है।

यहाँ प्रेम स्पिनिंग एण्ड विविंग मिल्स के नाम से एक कपड़ा बुनने एवं सूत कातने का मिल है। इसके साथ ही इसी नाम से एक जीनिंग प्रेसिंग फैक्टरी भी है। इस मिल का कपड़ा अच्छा होता है।

मेसर्स गोविन्द्राम तनसुखराय

इस फर्म का हेड-आफिस सांभर है। इसके वर्तमान मालिक रायसाहब श्रीनारायणजी हैं। आप अग्रवाल वैश्य समाज के सज्जन हैं। आप यहाँ आनरेरी मजिस्ट्रेट हैं। आपकी बरेली, बदायू, साँभर आदि स्थानों पर और भी दूकानें हैं। साँभर में भिन्न २ नामों से कई दूकानें हैं। आपका विस्तृत परिचय इसी ग्रन्थ के प्रथम भाग में राजपूताना विभाग के साँभर में दिया गया है। यहाँ यह फर्म गल्ले का व्यापार एवं आढ़त का काम करती है।

मेसर्स वसंतलाल द्वारकादास

इस फर्म का हेड-आफिस बम्बई है। अतः इसका विस्तृत परिचय इसी ग्रन्थ के प्रथम भाग में बम्बई विभाग के पेज नं० ९८ में दिया गया है। यहाँ यह फर्म गल्ला एवं आढ़त का व्यापार करती है। इसकी और भी कई शाखाएँ हैं।

गल्ले के व्यापारी और आढ़तिया

मेसर्स गोविन्द्राम तनसुखराय

" घासीराम मेघराज

" गया भाई जवर भाई

" नत्थूमल बनारसीदास

मेसर्स बैजनाथ रामलाल

" वसंतलाल द्वारकादास

" मोतीलाल रामजीदास

" हिम्मतलाल उदयचंद

" हरिराम अमृतलाल

पीलीभीत

यह नगर आर० के० आर० की मेन लाइन का बड़ा जंकशन है। यहाँ से एक लाइन बरेली होती हुई कासगंज को गयी है और दूसरी लाइन मालानी, लखीमपुर होती हुई सीतापुर लखनऊ को आती है तथा तीसरी लाइन शाहजहाँपुर को गयी है और चौथी उत्तर की ओर टनकपुर को जाती है।

यह नगर देशी शक्कर अर्थात् खाँड की प्रधान मण्डी है। यों तो इसके समीपवर्ती गाँवों मे प्रायः सभी स्थानों पर घर २ गुड़ और राब से खाँड़ तैयार करने के लिये मशीनें लगी हुई हैं पर नगर में दो बड़ी २ शुगर फैक्ट्रियाँ हैं जिनमें देशी शक्कर बहुत बड़े परिमाण में तैयार की जाती है। यहाँ के समीपीय भूभाग की उपज में प्रधान सन, चावल और गुड़ है जो

फसल पर बहुत बड़े परिमाण में आता है। साथ ही जंगल की पैदावार जैसे लकड़ी, कत्था, मोम, शहद आदि भी अच्छी तादाद में बाजार में आते हैं। यहाँ से बाहर जाने वाले माल में जैसे चावल, खाँड तथा गुड़ प्रधान हैं उसी प्रकार यहाँ से पलंग के पाये भी बहुत बड़े मिकदार में एक्सपोर्ट किये जाते हैं। इसके आस पास बीसलपुर में भी शक्कर बनती है।

यहाँ का सेर १०५) रु० भर का है। यहाँ से ।) बोरा चावल पर और ॥) बोरा शक्कर पर खर्च लगता है। यहाँ से दो प्रकार की शक्कर बाहर जाती है एक तो देशी रंग की राब से बनायी गयी और दूसरी शुगर फैक्टी की। शुगर फैक्टूरी की साफ और जावा के मुकाबले की होती है। यहाँ का चावल भी मशहूर होता है और कई प्रकार का होता है जो ५) रु० मन से ३०) रु० मन तक बाजार में बिकता है।

रायबहादुर साहु हरिप्रसाद राजा राधारमण

इस परिवार के पूर्व पुरुष रोहतक जिले के साकला नामक स्थान में रहते थे वहाँ से सेठ मथुराप्रदासजी वर्तमान से ९ पीढ़ी पूर्व पीलीभीत आये और यहाँ बस गये। तब से यह परिवार यहीं निवास करता है। इसने इस प्रांत में अच्छी प्रतिष्ठा एवं ख्याति प्राप्त की है। इस की गणना अग्रवाल वैश्य समाज के गर्ग गोत्रीय परिवार में हैं। सेठ मथुरादासजी से ६ पीढ़ी में लाला मुकुन्दरामजी ख्याति नाम महानुभाव हुए। आपके ५ पुत्र थे जिनमें से द्वितीय पुत्र लाला मँगनीरामजी के दो पुत्र हुए। इनके नाम राजा ललताप्रसादजी और रायबहादुर साहु हरिप्रसादजी हैं। इन्हीं दोनों भाइयों ने अपने यहाँ के वंशानुगत बैंकिंग तथा जमींदारी काम के अतिरिक्त व्यवसायिक क्षेत्र में भी गति विधि उत्पन्न की और अच्छी सफलता प्राप्त की। पर्याप्त सम्पत्ति उपार्जित करने के साथ ही मान-मर्यादा और प्रतिष्ठा भी आप लोगों ने अच्छी प्राप्त की। राजा ललताप्रसादजी के बड़े पुत्र राजा राधारमणजी हैं जो राजासाहिब के स्वर्गवास के बाद खानदानी राजा की पदवी से सम्मानित हुए हैं। राजा राधारमणजी से छोटे ३ और भाई हैं। रायबहादुर साहु हरिप्रसादजी के एक पुत्र साहु जगदीशप्रसादजी हैं।

इस परिवार का सार्वजनिक कामों की ओर अच्छा ध्यान रहता है। इसकी ओर से कितनी ही धर्मशाला और अन्य पब्लिक काम हुए हैं ये लोग १। लाख रुपये के करीब सरकारी मालगुजारी देते हैं। इनकी जमीदारी पीलीभीत, बरेली, बदायूँ, शाहजहाँपुर और बिजनौर जिलों में है। इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स एल. एच. ब्रदर्स पीलीभीत	इस नाम की दो शुगर फैक्ट्रियाँ हैं। और इसके अन्तर्गत एक आइल मिल है। यहाँ का माल राजपूताना, यू. पी. और मालवा जाता है।
राय ब. हरप्रसाद राजा राधारमण पीलीभीत	यहाँ बैंकिंग तथा जमीदारी का काम होता है। इनकी देहरादून, मंसूरी, हरिद्वार, नैनीताल आदि में कोठी हैं।

रायबहादुर साहू रामस्वरूपजी ओ. बी. ई.

आप पीलीभीत के प्रसिद्ध साहु परिवार के महानुभाव हैं। आपके पूर्वज रोहतक से पीलीभीत आये थे जिसका पूर्ण विवरण अन्यत्र रा. ब. हरप्रसाद राजा राधारमण के परिचय में दिया गया है। सेठ मथुरादासजी की ६ पीढ़ी में सेठ मुकुन्दरामजी प्रतापी महानुभाव हुए और इन्हीं के प्रथम पुत्र राय बहादुर साहु जगन्नाथजी के द्वितीय पुत्र राय बहादुर साहु रामस्वरूपजी ओ० बी० ई० स्पेशल मैजिस्ट्रेट दर्जा अव्वल हैं।

आप पीलीभीत के प्रतिष्ठित रईस और प्रतिभा संपन्न लैण्ड लार्ड हैं। आपने योरोपीय समर के समय सरकार को अच्छी सहायता दी अतः ओ० बी० ई० के सम्मान से सरकार ने आपको सम्मानित किया। इसी प्रकार आप सभी अच्छे कामों में भाग लेते रहते हैं। आप बहुत समय तक यहाँ के डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के चेयरमैन रहे हैं और वर्तमान में यहाँ की म्यूनिसिपैलिटी के चेयरमैन हैं। आप स्पेशल आनरेरी मजिस्ट्रेट दर्जा अव्वल हैं। आपने स्टेशन के पास मेस्टन लाइब्रेरी बनवाई है। आपके बड़े भ्राता स्व० साहु रामप्रसादजी के पुत्र साहु रामकृष्णजी सुशिक्षित नवयुवक हैं। आपकी जमीदारी बरेली और पीलीभीत जिले में है। आप ४० हजार के लगभग मालगुजारी देते हैं।

मेसर्स रामवल्लभ रामविलास

इस फर्म का हेड आफिस सांभर (राजपूताना) है अतः इसका विशेष परिचय इस ग्रन्थ के प्रथम भाग के राजपूताना विभाग में पृष्ठ १०४ में दिया गया है। यहाँ यह फर्म चावल, चीनी, गुड़ और नमक का, घरू व्यापार तथा कमीशन का काम करती है।

सोने चाँदी के व्यापारी

मेसर्स किशनलाल प्यारेलाल
,, बाबूराम राधेलाल
,, मंगलसेन सराफ़
,, ललताप्रसाद सीताराम
,, लक्ष्मीनारायण जगदीशप्रसाद

कपड़े के व्यापारी—

मसर्स अयोध्याप्रयाद सीताराम
,, चुन्नीलाल वंशीधर
,, बाबूराम राधेलाल
,, बृजलाल रामगुलाम

मेसर्स भगवानदास संगनीराम
,, राधाकृष्ण श्रीराम
,, लक्ष्मणदास सीताराम

गल्ले के व्यापारी और कमीशन एजण्ट
(शक्कर चावल आदि)

मेसर्स अयोध्याप्रसाद गोपीनाथ
,, गणेशदास ईसरदास
,, चिम्मनराम घनश्यामदास
,, जोतीप्रसाद इन्दरसेन
,, देवीप्रसाद रामकिशोर
,, रामचरन रामप्रसाद

गोला गोकरननाथ

यह मंडी आर० के० आर० की लाइन पर लखीमपुर और मालानी जंकशन के बीच बसी हुई है। यहाँ बाबा गोकरननाथ की प्राचीन शिवमूर्ति है। अतएव यह स्थान तीर्थ माना जाता है। इस हेतु इसके दर्शन के निमित्त हजारों यात्री प्रति वर्ष यहाँ आया करते हैं।

यह मंडी गुड़ के लिये प्रधान रूप से मशहूर है। अत: गुड़ की फसल में यहाँ अच्छी गति विधि एवं चहल पहल रहती है। यहाँ की कई फर्में सिर्फ मौसिम में खुलती हैं। मौसिम निकल जाने पर वे बन्द हो जाती हैं। गुड़ के अतिरिक्त इस मंडी में कोई व्यापार विशेष महत्व नहीं रखता। गल्ले मे गहूँ, चना और जौ प्रधान है। यहाँ का तौल गुड़ के लिये ४२ सेर एवं गल्ले के लिये ४०॥ सेर के मन से माना जाता है।

यहाँ के व्यापारियों का परिचय इस प्रकार है—

मेसर्स मुन्नालाल फतेहचंद

इस फर्म का हेड आफिस लखीमपुर में है। इसकी और भी कई स्थानों पर शाखाएँ हैं। इसके वर्तमान मालिक ला० कन्हैयालालजी, मुन्नालालजी एवं फतेचंदजी हैं। इसका विशेष परिचय लखीमपुर में दिया गया है। यहाँ यह फर्म गल्ला एवं गुड़ का व्यापार और आढ़त का काम करती है।

मेसर्स महासुखलाल केशवलाल

इस फर्म के वर्तमान संचालक सेठ केशवलाल भाई हैं। इस फर्म का हेड आफिस बम्बई है। इसका विस्तृत परिचय सीतापुर में दिया गया है। यहाँ यह फर्म गुड़ एवं कमीशन का काम करती है। यह फर्म यहाँ सीजन में खुलती है।

मेसर्स लहरचन्द जुईदादास

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ लहरचंद हैं। इस फर्म का हेड आफिस अहमदाबाद है। वहीं मालिक लोग रहते हैं। इसका विस्तृत परिचय सीतापुर में दिया गया है। यहाँ यह फर्म गुड़ का व्यापार करती है। इसका आफिस मौसिम में ही यहाँ खुलता है।

कमीशन एजंट और व्यापारी—

मेसर्स जगन्नाथ गनेशीलाल
,, बिहारीलाल द्वारकाप्रसाद
,, महासुखलाल केशवलाल
,, मन्नीलाल फतेचंद

मेसर्स मंगलचंद कुंजबिहारी
,, लालचंद भूरामल
,, लहरचंद जुईदादास
,, साकरचंद भग्गूभाई
,, हजारीलाल जगतनारायण

लखीमपुर-खीरी

यह शहर आर. के. आर. की मेन लाइन पीलीभीत और सीतापुर के बीच में पड़ता है। यह स्थान जूट, गल्ला, घी और गुड़ की मंडी है। फसल पर अरंडी (रेंड़ी) भी यहाँ बहुत आती है जिसकी तादाद १ लाख से १॥ लाख मन तक पहुँच जाती है।

गल्ले में यहाँ मक्का और जुवार बहुत आती है। जो कि यहाँ से एक्सपोर्ट होती है। इसके अतिरिक्त अरहर, गेहूँ, जौ, चना और बाजरा भी यहाँ पैदा होता है। गुड़ भी यहाँ अच्छी मात्रा में पैदा होता है। गुड़ की क्वालिटी गोला के गुड़ से कुछ नरम मानी जाती है। पहले तो यह गुड़ की ही प्रधान मंडी थी मगर म्युनिसिपेलिटी के टेक्स लगा देने से गुड़ की आमद पहले से यहाँ कम हो गई।

जूट का व्यापार कुछ ही समय से, यहाँ आरंभ हुआ है और अपनी अच्छी उन्नति कर रहा है। यहाँ फसल में १ लाख मन से अधिक जूट पैदा हो जाता है। घी की रोजाना

आमदनी की औसत १००,१२५ टीन होती है। इस प्रकार गुड़, घी, रेंड़ी, मक्का, ज्वार, जूट आदि की यह खास मंडी मानी जाती है।

यहाँ का तौल गल्ले के लिये ४१ सेर और गुड़ के लिये ४२ सेर के मन से होता है।

कलकत्ता, बम्बई, करांची आदि स्थानों के लिए एवं बी. बी. एण्ड सी. आई. के कुछ स्थानों के लिये यहाँ से रेलवे के स्पेशल रेट्स हैं। यहाँ का गुड़ गुजरात और मालवे की तरफ विशेष जाता है। बाहर से कपड़ा किराना वगैरह आता है। यहाँ तेल निकालने का एक छोटा सा तेल मिल भी है।

मेसर्स ज्वालाप्रसाद शिवप्रसाद

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ ज्वालाप्रसादजी एवं आपके दो पुत्र सेठ शिवप्रसादजी एवं केदारनाथजी हैं। आप लोग खेतड़ी (सीकर) निवासी अग्रवाल समाज के सज्जन हैं। यह फर्म उपरोक्त नाम से करीब १५ वर्षों से व्यापार कर रही है। इसके पहले करीब ३० वर्ष तक दूसरे नाम से आप लोगों का व्यवसाय होता था।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

लखीमपुर—मेसर्स ज्वालाप्रसाद शिवप्रसाद } यहाँ कपड़ा गल्ला, एवं आढ़त का व्यापार होता है। आपका यहाँ एक आइल मिल भी है।

मेसर्स मटरूमल देवीचरन

इस फर्म के वर्तमान मालिक ला० कन्हैयालालजी, ला० मुन्नालालजी एवं लाला फतेचंदजी हैं। आप खत्री समाज के सज्जन हैं। करीब ५० वर्ष पूर्व यह फर्म लाला मटरूमलजी के द्वारा स्थापित हुई। आपके पश्चात् इस फर्म की बहुत तरक्की हुई।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

लखीमपुर—मेसर्स मटरूमल देवीचरन } यहाँ बैंकिंग, जमीदारी एवं गल्ले का व्यापार और आढ़त का काम होता है। यहाँ फर्म का हेड आफिस है।

लखीमपुर—मेसर्स मुन्नालाल फतेहचंद } यहाँ सब प्रकार का आढ़त का काम होता है।

लखीमपुर—मेसर्स भोलानाथ शिवनारायण	यहाँ गल्ला, नमक, रूई आदि का व्यापार होता है। तथा एशियाटिक पेट्रोलियम कं० की तेल की एजन्सी है।
लखीमपुर—मेसर्स बचूलाल शिवनारायण	यहाँ चाँदी सोना एवं जेवर का काम होता है।
फरदान रे. स्टे, (लखीमपुर) मेसर्स मटरूमल देवीचरन	यहाँ गुड़ और गल्ला का व्यापार एवं कमीशन का काम होता है।
कुकरा—(लखीमपुर) मेसर्स मटरूमल देवीचरन	यहाँ भी गल्ला एवं गुड का व्यापार और कमीशन का काम होता है।
गोला गोकरननाथ—मुन्नालाल फतेचंद	यहाँ गल्ला और गुड का व्यापार होता है।

गल्ले के व्यापारी और आढ़तिया—

मेसर्स छेदीलाल नन्दकिशोर
" ज्वालाप्रसाद शिवप्रसाद
" नाथूराम बसंतीलाल
" मटरू मल देवीचरन
" मुन्नालाल फतेचन्द
" हजारीलाल मथुराप्रसाद

घी के व्यापारी—

मेसर्स नाथूराम बसन्तीलाल
" मङ्गलसेन बिसेसरलाल
" हजारीलाल मथुराप्रसाद

जूट के व्यापारी—

मेसर्स अमरनाथ बटुकनाथ

कपड़े के व्यापारी—

मेसर्स छोटेलाल रामचरण
" जोगीदत्त देवीदत्त
" पन्नालाल जगन्नाथ
" मातादीन नानकचन्द
" रामचरनलाल भगवानदास

चाँदी सोने के व्यापारी

मेसर्स कल्लूमल श्यामनारायण
" बांकेलाल मुन्नीलाल
" रामचरन भगवानदास
" ललिताप्रसाद मन्नूलाल
" सधारीलाल बद्रीप्रसाद

सीतापुर

यह नगर आर० के० आर० की लाइन पर बरेली और लखनऊ के बीच बसा हुआ है। तथा अपने ही नाम के जिले का सदर मुकाम है। यह नगर गल्ले की अच्छी बड़ी मण्डी है। यहाँ गेहूँ, गुड़ और अरहर फसल में बहुत आती है। यह माल यहाँ से बाहर को बहुत जाता है। यहाँ का गुड़ बीनीगंज गुड़ से नाम से प्रसिद्ध है तथा क्वालिटी में भी ऊँचे दर्जे का माना जाता है। यहाँ अरहर की दाल बहुत बनती है जो बहुत बड़ी तादाद में बाहर भेजी जाती है। यहाँ से गुड़ तथा अरहर की दाल गुजरात की ओर अधिक जाती है। यहाँ गल्ले की तौल ४१ सेर और गुड़ की ४२ सेर के मन से होती है।

यहाँ से थोड़ी दूर पर बिस्वा नामक कस्बा है जहाँ गल्ले की मण्डी के अतिरिक्त तम्बाकू की बहुत बड़ी मण्डी है। बिस्वां की तम्बाकू मशहूर है और बहुत बड़ी तादाद मे बाहर जाती है।

यहाँ से कुछ ही दूर नैमिशारण्य का और मिसिरिस तथा हत्याहरण नामक तीर्थ हैं जो हिन्दू मात्र के आदरणीय स्थान माने जाते हैं।

मेसर्स पारिख चुन्नीलाल हीरालाल

इस फर्म के मालिक नड़ियाद (गुजरात) के निवासी हैं। यह फर्म यहाँ ३० वर्ष से व्यापार कर रही है। इस के वर्तमान मालिक सेठ छोटालालजी हैं। इसका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स चुन्नीलाल हीरालाल सीतापुर T. A. Parikha	यहाँ गुड़ गल्ला तथा अरहर की दाल का व्यापार और कमीशन का काम होता है।
मेसर्स चुन्नीलाल हीरालाल नया गंज कानपुर T.A. Parikh	यहाँ गल्ला, शक्कर, तथा कत्था का व्यापार और आढ़त का काम होता है।
मेसर्स चुन्नीलाल हीरालाल छींपीचाल बम्बई नं० २ Danawant	यहाँ बैंकिंग सोने चाँदी का काम होता है।

मेसर्स बिहारीलाल लक्ष्मणदास

इस फर्म की स्थापना ७० वर्ष पूर्व लाला दिलेरामजी खत्री ने की थी। तब से यह फर्म बैंकिंग और सोने चांदी का व्यवसाय कर रही है। लाला दिलेराम के बाद आप के पुत्र लाला लक्ष्मणदासजी ने फर्म के काम को चलाया और आपके स्वर्गवास के बाद से आपके पुत्र फर्म को चला रहे हैं। इसके वर्तमान मालिक लाला गोविंदप्रसादजी तथा आपके ३ भ्राता हैं। इसका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स बिहारीलाल लक्ष्मणदास सीतापुर	यहाँ सोना, चाँदी, बैंकिंग तथा जमींदारी का काम होता है। यह फर्म इम्पीरियल बैंक ब्रांच की खजाँची है।

मेसर्स मगनीराम रामकिशन

इस फर्म का हेड-आफिस कुचामन रोड (राजपूताना) में है। अतः इसका विस्तृत परिचय इस ग्रन्थ के प्रथम भाग के राजपूताना विभाग में पृष्ठ १०१ में दिया गया है। यहाँ यह फर्म सीतापुर सिटी में है। जहाँ गुड़ और गल्ले का व्यापार होता है। यहाँ का तार का पता Brajmohan है।

मेसर्स मगनीराम चिमनराम

इस फर्म की स्थापना २० वर्ष पूर्व सेठ तनसुखरायजी सूरजगढ़ (सेखावाटी) निवासी ने की थी। वर्तमान में इसके मालिक सेठ तनसुखरायजी और आपके भाई सेठ मथुरादासजी हैं।

इसका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

मेसर्स मँगनीराम चिमनराम नं० ३ वैरापट्टी कलकत्ता T. H. Uradh.	यहाँ हेड-आफिस है। यहाँ कपड़ा, गल्ला आदि की आढ़त का काम होता है यह फर्म शावालेस की ब्रोकर हैं।
मेसर्स मँगनीराम चिमनराम सीतापुर	यहाँ गल्ला, गुड़ किराने की आढ़त का काम है।
मेसर्स मँगनीराम चिमनराम विस्वां (सीतापुर)	गल्ला तथा गुड़ की आढ़त का काम होता है।

मेसर्स मँगनीराम चिमनराम बरेली	यहाँ बिडला ब्रदर्स की तेल की एजन्सी और गल्ले का काम होता है।
मेसर्स मँगनीराम चिमनराम शाहजहाँपुर	यहाँ गल्ले का काम और बिडला ब्रदर्स के तेल की एजन्सी हैं।

मेसर्स महासुखलाल केशवलाल

यह फर्म यहाँ २५ वर्ष से काम कर रही है। इसके वर्तमान मालिक पाटन (गुजरात) निवासी सेठ केशवलाल भाई हैं।

इसका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

बम्बई—पोपटलाल जुइटादास पारसीगली, यहाँ बैंकिंग और आढ़त का काम होता है।
सीतापुर—महासुखलाल केशवलाल—यहाँ गुड़ और गल्ले की आढ़त होती है।
गोला गोकरणनाथ " " —यहाँ गुड़ व गल्ला की आढ़त होती है।
नौगढ़ (बस्ती) " " —चावल और आढ़त का काम होता है।
पाटन " " " —घरू और आढ़त का काम होता है।
अहमदाबाद—पन्नालाल केशवलाल कालूपुर साकर बाजार—यहाँ गल्ला तथा शक्कर की बिक्री और आढ़त का काम होता है।

इसके अतिरिक्त मेसर्स केशवलाल लालचंद के नाम से अकोला, खामगाँव तथा मलकापुर में काटन और आढ़त का काम होता है इनमें सेठ लालचंद का साझा है।

मेसर्स रामवल्लभ रामविलास

इस फर्म का हेड-आफिस साँभर (राजपूताना) है। अतः इसका अधिक परिचय इस ग्रन्थ के प्रथम भाग के राजपूताना विभाग में पृष्ठ १०४ में दिया गया है। यहाँ यह फर्म चावल, नमक, गुड़, शक्कर तथा गल्ले का व्यापार करती है।

मेसर्स सूरजमल घनश्यामदास

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ घनश्यामदासजी हैं। इसका हेड-आफिस कलकत्ता है। अतएव इसका विशेष परिचय इसी ग्रन्थ के दूसरे भाग में पेज नं० ४९१ में दिया गया है। यहाँ यह फर्म गल्ला एवं कमीशन का काम करती है।

मेसर्स लहरचन्द जुइटादास

यह फर्म यहाँ ११ वर्ष से व्यापार कर रही है इसके मालिक पाटन (गुजरात) निवासी सेठ लहरचन्दजी हैं।

इसका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

सीतापुर—लहरचंद जुइटादास T. A. Patni	गुड़ गल्ला और दाल का काम तथा आढ़त का व्यापार होता है।
गोला गोकरणनाथ ,, ,,	फसल पर गुड़ का काम होता है।
नौगढ़ (बस्ती) ,, ,,	चावल का काम होता है।
अहमदाबाद—मेसर्स लहरचंद जुइटादास माधवपुरा	यहाँ गुड़, गल्ला, और आढ़त का काम होता है।
बम्बई—मेसर्स लहरचंद जुइटादास तांबाकाटा	यहाँ बीज और कमीशन का काम होता है।

गल्ले के व्यापारी और कमीशन एजेन्ट—

मेसर्स किशनलाल रामचन्द्र
,, गौरीलाल माताप्रसाद
,, चुन्नीलाल हीरालाल
,, जयाभाई चुन्नीलाल
,, बनेचन्द जुहारमल
,, बुलाकीराम कन्हैयालाल
,, बिहारीलाल लक्ष्मणदास
,, मगनीराम चिमनराम
,, मगनलाल लवजी भाई
,, महासुखलाल केशवलाल
,, लहरचन्द जुइटादास
,, साकरचन्द भागूभाई
मेसर्स सूरजमल घनश्यामदास
,, हरनन्दराय भगवानदास

कपड़े के व्यापारी—

मेसर्स गंगादीन गुरुप्रसाद
,, भोलानाथ सूरजमल
,, महताबराय बुद्धनलाल
,, शिवसहाय हजारीलाल

चांदी सोने के व्यापारी—

मेसर्स मुरलीधर प्रतापनारायण
,, बनवारीलाल तुलसीराम
,, बिहारीलाल लक्ष्मणदास
,, रामदयाल रामलाल
,, सरजूप्रसाद देवकीनन्दन

शाहजहाँपुर

यू० पी० प्रांत की रुहेलखण्ड कमिश्नरी के अपने ही नाम के जिले का हेड कार्टर है। यह स्थान इ. आइ. आर. की सहारनपुर-मुगलसरायवाली मेन लाइन के अपने ही नाम के स्टेशन से २ मील की दूरी पर बसा हुआ है। इसकी बसावट पुराने ढंग की एवं लम्बी है। यहाँ से एक ब्रांच लाइन सीतापुर को गई है। यह शहर गुर्रा नदी के किनारे शाहंशाह शाहजहाँ के समय में बसाया गया था।

यहाँ का प्रधान व्यापार शक्कर का है। तथा देशी गुड़ की भी यह भारी मंडी है। यहाँ नकली गुड़ भी बनाया जाता है। गल्ला सभी प्रकार का होता है और बाहर एक्सपोर्ट होता है। यहाँ का तोल खांड के लिये ४०॥ सेर का मन तथा शेष वस्तुओं के लिये ४० सेर के मन से काम होता है। खांड बनाने की देहातों में छोटी २ मशीनें हैं तथा देशी ढंग से भी शक्कर तैयार की जाती है। इसके पास ही रोजा नामक स्थान में शक्कर और शराब का कारखाना है। रोजा की शराब भारत प्रसिद्ध है। शाहजहांपुर में भी शराब बनती है। यहाँ के चाकू एवं सरोते प्रसिद्ध हैं। यहाँ खांड, गुड़ वगैरह का सौदा इस प्रकार होता है। जैसे नकली गुड़ का भाव ४ मन पर, खांड का सौदा ३-२५ सेर पर, शीरे का १ मन १३ सेर पर, आलू का भाव १ मन १३ सेर ५ छटाँक पर, और राब का भाव १ मन १९ से होता है।

इसके अतिरिक्त यहाँ सिल्क के कपड़े बुनने का भी काम होता है। यहाँ इसकी कई फैक्टरियाँ हैं। सरकारी दरजीखाना भी यहाँ है। इसमें सरकारी यूनीफार्म की ड्रेसे तैयार होती हैं। इसमें बहुत से आदमी काम करते हैं। शाहजहाँपुर में कालीन भी अच्छे बनते हैं। यहाँ की सिल्क फैक्टरियों के नाम इस प्रकार हैं।

(१) टंडन सिल्क फैक्टरी
(२) महाराज सिंह मुख्तार सिल्क फैक्टरी
(३) इम्पिरियल डाइंग एण्ड सिल्क फैक्टरी
(४) विश्वनाथ कपूर सिल्क फैक्टरी

कपड़े के व्यापारी—

मेसर्स बाबूराम राजाराम चौक
" मुरलीधर जानकीप्रसाद बहादुरगंज
" लादूराम रामभरोसे चौक
" लालमन महीसीलाल "
" लक्ष्मीनारायण मदनमोहन "
" हजारीलाल मदनलाल "
" हरप्रसाद कन्हैयालाल "
" श्रीकृष्ण बालगोविंद "

गल्ले के व्यापारी—

मेसर्स कन्हैयालाल दुलिचन्द बहादुरगंज
" ख्यालीराम बनारसीदास "
" गंगाराम जवाहरलाल बिरियागंज
" गंगाराम हरनाथदास भोलागंज
" ठाकुरदास श्यामसुन्दर केसगंज
" तुलसीराम रामकरन "
" तुलसीराम मुकुटलाल "
" नौबतराम भीमराज भीतागंज
" मन्नीलाल राजाराम केसगंज
" मंगलसेन श्यामलाल बिरियागंज
" मथुराप्रसाद सुखवासीलाल बहादुर गंज
" रामभजनलाल प्यारेलाल केसगंज
" लक्ष्मीनारायण जगन्नाथ बहादुरगंज
" सीताराम बाबूराम केसगंज
" हरदयाल बिहारीलाल "

किराने के व्यापारी—

मेसर्स अभिलाल जगन्नाथ बहादुरगंज
" नन्हेमल रामनाथ "
" नागरमल परसराम "
" लालमन मैकूलाल सब्जीमण्डी
" श्रीराम बंसीधर केसगंज
" श्रीकृष्ण बनवारीलाल बहादुरगंज

चाँदी सोने के व्यापारी—

मेसर्स बाँकेमल राजनारायण चौक
" काशीनाथ सेठ "
" मुन्नालाल सराफ "
" तुलसीराम शालिगराम "
" शालिगराम बनवारीलाल "
" हरद्वारीलाल कुन्जीलाल "

हरदोई

यू. पी. प्रांत के अपने ही नाम के जिले का हेड कार्टर है। यह ई. आय. आर. की सहारनपुर मुगलसराय वाली मेन लाइन पर लखनऊ के पास बसी हुई है। इस मंडी में प्रधान व्यापार शक्कर और गल्ले का है। यहाँ पैदा होने वाला माल गेहूँ, जौ, चना, सरसों, उड़द, मूँग, बाजरी, अरहर वगैरह हैं। गुड़ भी यहाँ बनता है। यही वस्तुएँ यहाँ से बाहर जाती हैं। यहाँ का तौल अंग्रेजी है। गेहूँ विशेष कर कलकत्ता जाता है। चावल बंगाल और नौगढ़ से ही प्रायः आता है। इसके अतिरिक्त जिले का प्रधान स्थान होने से यहाँ की जन संख्या में खपत होनेवाला रोजाना का सामान बाहर से ही यहाँ आता है।

शक्कर की यहाँ २ फैक्टरियाँ हैं । एक मेसर्स पूरनलाल गोविन्दप्रसाद की और दूसरी मेसर्स हेतराम बलदेवसिंह की । इसके सिवा यहाँ और कोई विशेष बात नहीं है ।

यहाँ के व्यापारियों का परिचय इस प्रकार है—

मेसर्स चन्द्रसेन दुलिचन्द

यह फर्म करीब ६० वर्ष पूर्व ला० चन्द्रसेनजी द्वारा स्थापित हुई । आप अग्रवाल वैश्य समाज के सज्जन हैं । आपके समय में इसकी तरक्की भी हुई । आपका स्वर्गवास हो गया है । आपके पश्चात् वर्तमान में इस फर्म का संचालन आपके पुत्र सेठ दुलिचंदजी करते हैं ।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

हरदोई—मेसर्स चन्द्रसेन दुलिचंद T. A. Patriotic — यहाँ गल्ले का व्यापार एवं आढ़त का काम तथा तेल की एजंसी का काम होता है ।

नारनोल-मेसर्स सीताराम नारायणप्रसाद T. A. "Sitaram" — यहाँ लेन-देन तथा आढ़त का काम होता है ।

मेसर्स पूरनलाल गोविन्दप्रसाद

इस फर्म के वर्तमान मालिक शाहजहाँपुर निवासी ला० गोविन्द प्रसादजी हैं । इस फर्म की स्थापना आपके पिता ला० पूरनलालजी के द्वारा हुई । इसकी विशेष तरक्की वर्तमान मालिक के जमाने में हुई । आप मिलनसार एवं सज्जन व्यक्ति हैं । आपके रामनारायणजी नामक एक पुत्र हैं ।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

हरदोई—मेसर्स पूरनलाल गोविन्द प्रसाद—यहाँ बैंकिंग और आढ़त का व्यापार होता है । तथा इसी नाम से दूसरी दुकान पर मोटर एसेसरीज़ का काम होता है ।

हरदोई—श्री महालक्ष्मी शुगर एण्ड फ्लोअर मिल—इस नाम से इस फर्म का एक शक्कर एवं आटे का मिल है ।

गल्ले के व्यापारी—

मेसर्स कल्लूमल रामप्रताप
" चेतराम सोहनलाल
" चन्द्रसेन दुलिचन्द
मेसर्स झगड़ूमल लक्ष्मीनारायण
" निरंजनलाल रामेश्वरप्रसाद
" पूरनमल गोविन्दप्रसाद
" हजारीलाल करोड़ीमल

लखनऊ

लखनऊ गोमती के किनारे अवस्थित है। किम्बदन्ती यह है कि जहाँ इन दिनों को लखनऊ नगर है, वहाँ रामचन्द्र के परम भक्त अनुज लक्ष्मण ने अपनी पुरी का निर्माण किया था। किन्तु वर्तमान लखनऊ नगर अधिक दिनों का नहीं है। उसको अवध के नव्वाबों ने बसाया था। उन नव्वाबों में से ३ की राजधानी फैजाबाद में थी। नव्वाब आसिफ-उद्दौला अपनी राजधानी वहाँ से लखनऊ उठा लाये थे। आसिफ-उद्दौला ने ही दौलतखाना महल, इमामबाड़ा और मसजिद, रूमी दरवाजा, खुरशेद मञ्जिल आदि बनवाये थे। मच्छी भवन का निर्माण उनके पहिले कराया गया था। नव्वाब सादत अली ने मोती महल और दिलकुशा तथा लाल बारादरी और रेसीडन्सी भवन बनवाये थे।

उस घराने के अन्तिम नव्वाब वाजिदअलीशाह ने कैसर बाग की अट्टालिकाओं का निर्माण कराया था। विलासपुरी बनाने में वाजिदअलीशाह ने ८० लाख रुपये खर्च किये थे। उसमें वे ३०० रूपवतीयुवतियों को लेकर विलास में डूब रहे थे। राज्य का शासन अच्छी तरह न करने की बदनामी से अङ्गरेजों ने वाजिदअलिशाह को राज्यच्युत कर कलकत्ते के उपनगर मटियाबुर्ज में नजरबन्द रखा था।

सन् १७८४ ई० में अकाल से घबराई हुई प्रजा की आजीविका का उपाय करने के लिये नव्वाब आसिफ-उद्दौला ने इमाम बाड़े का निर्माण कराया।

नव्वाब नसर-उद्दीन ने अपनी बेगमों के लिये छत्र मञ्जिल नामक राजभवन बनाया। उसके ऊपर एक छत्र है, जिससे उसका वह नाम पड़ा।

विलास परायण नव्वाबों की राजधानी होने से लखनऊ अपने थोडे दिनों में ही सौसे अधिक सुन्दर २ राज-अट्टालिकाओं से सज गया। उन सब अट्टालिकाओं का वर्णन करना सम्भव नहीं। विलास प्रवाह से अवध का नवाबी घराना बहकर लापता हो गया केवल उस तट पर बनी हुई रम्य अट्टारियाँ मनुष्य के वैसे कर्म के निश्चित परिणाम की खेदजनक गवाही दे रही हैं। उन अट्टालिकाओं के सौन्दर्य्य की नामवरी से खिंचकर अब तक इनको देखने के लिये अनेकानेक मनुष्य लखनऊ जाते हैं। नव्वाबों की राजधानी होने से लखनऊ एक

समय नाना प्रकार की शिल्प-कुशलता का केन्द्र हो गया था। अब उन शिल्पों की अवनति हो गई है। तिस पर भी अभी तक लखनऊ शहर की मिट्टी की पुतलियाँ छींटे आदि भारत में बेजोड़ हैं।

सिपाहियों के गदर के दिनों लखनऊ बड़ा ही चमक दमक कर नामवर हो उठा था। स्थान स्थान के विद्रोही सिपाहियों ने वहाँ इकट्ठे होकर अङ्गरेजों पर आक्रमण किया था। उन दिनों सर हेनरी लारेंस लखनऊ के रेसीडेण्ट थे। यहीं पर उनकी मृत्यु हो गई।

युक्त प्रान्त की दूसरी राजधानी के रूप मे लखनऊ अब इलाहाबाद की टक्कर का हो गया है।

लखनऊ अब तक व्यापार का एक प्रसिद्ध केन्द्र है।

कल-कारखाने

ऐशबाग लाईम एण्ड ऑयर्न वर्क्स—ऐशबाग।

रामचन्द्र गुरसहायमल कॉटन मि० कंपनी लि०—तालकटोरा।

लखनऊ शुगर वर्क्स—ऐशबाग।

मूलचंद सोमानी आईल मिल्स एण्ड ऑयर्न वर्क्स—डालीगंज।

पंजाब ऑयर्न वर्क्स—ऐशबाग।

अपर इंडिया कुपर पेपर मिल्स।

वैंकटेश्वर फ्लावर मिल्स—ऐशबाग।

रामचन्द्र लक्ष्मणदास—आईस फैक्टरी।

यहाँ के व्यापारियों का परिचय इस प्रकार है:—

चांदी-सोने के व्यापारी

मेसर्स कुंदनलाल कुंजबिहारीलाल

इस फर्म के मालिकों का मूल निवासस्थान झिंद (पञ्जाब) का है। करीब १०० वर्ष पूर्व इस फर्म के मुल पुरुष लाला जगन्नाथजी यहाँ आये। आपके साथ आपके पुत्र ला० गोपीनाथजी भी थे। आपने यहाँ आकर व्यापार में प्रवेश किया। ला० गोपीनाथजी के पुत्र ला० कुन्दन-लालजी ने सन् १९७८ से ठीकेदारी का काम प्रारम्भ किया। इस काम को आपने बहुत बढ़ाया इस कार्य में फर्म ने अच्छी उन्नति की। आप व्यवसायकुशल व्यक्ति हैं। आपने ठीकेदारी के अलावा चाँदी-सोना, गल्ला और हायजरी का काम भी शुरू किया जो वर्तमान में सुचारुरूप से हो रहा है। आपने इसके अतिरिक्त बैंकिंग और जमींदारी का भी काम शुरू किया वह भी वर्तमान में चल रहा है। यह फर्म यहाँ चौक की फर्मों में अच्छी मानी जाती है।

इस फर्म के वर्तमान संचालक ला० कुन्दनलालजी तथा आपके पुत्र कुंजबिहारीलालजी

के नाम क्रमशः महावीर प्रसादजी, प्रताप-
पढ़ते हैं शेष व्यापार संचालन करते हैं।

—

ली, चौपटिया—T. A. Kundan यहाँ
, जमींदारी और गांजे भांग की ठीकेदारी

क—यहां सोना-चांदी का और जेवर का

लीगंज—यहाँ गल्ले का व्यापार और आढ़त

मीनुद्दौला पार्क—यहाँ चाँदी-सोना तथा जेवर

—यहाँ मोजा, बनियाइन का कारखाना है,
फर्म का सञ्चालन महावीरप्रसादजी करते हैं।
वप्रसादजी के शरागत में मेसर्स कुन्दनलाल
केश-कंट्राक्टर के काम का ठीका लिया है।

लाला कुंदनलालजी ठेकेदार (कुंदनलाल कुंजबिहारीलाल) लखनऊ

लाला कुंजबिहारीलालजी (कुंदनलाल कुंजबिहारीलाल) लखनऊ

लाला महाबीरप्रसादजी (कुंदनलाल कुंजबिहारीलाल) लखनऊ

समय नाना प्रकार की शिल्प-कुशलता का
हो गई है। तिस पर भी अभी तक लखनऊ
बेजोड़ हैं।

सिपाहियों के गदर के दिनों लखनऊ बड़ा
स्थान के विद्रोही सिपाहियों ने वहाँ इकट्ठे होकर
हेनरी लारेंस लखनऊ के रेसीडेण्ट थे। यहीं प

युक्त प्रान्त की दूसरी राजधानी के रू
गया है।

लखनऊ अब तक व्यापार का एक प्रसिद्ध

कल-कारखाने

ऐशबाग लाईम एण्ड ऑयर्न वर्क्स—ऐशबाग।

रामचन्द्र गुरसहायमल कॉटन मि० कंपनी लि०—तालकटोरा।

लखनऊ शुगर वर्क्स—ऐशबाग।

यहाँ के व्यापारियों का परिचय

हैं। ला० कुंजबिहारीलालजी के तीन पुत्र हैं जिनके नाम क्रमशः महावीर प्रसादजी, प्रतापचन्दजी, सितावचन्दजी हैं। इनमें से सितावचन्दजी पढ़ते हैं शेष व्यापार संचालन करते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

लखनऊ—मेसर्स कुन्दनलाल कुञ्जविहारीलाल खेतगली, चौपटिया—T. A. Kundan यहाँ फर्म का हेड आफिस है। तथा बैंकिंग, जमींदारी और गांजे भांग की ठीकेदारी का काम होता है।

लखनऊ—मेसर्स कुंदनलाल कुञ्जबिहारीलाल चौक—यहां सोना-चांदी का और जेवर का व्यापार होता है।

लखनऊ—मेसर्स कुन्दनलाल कुञ्जबिहारीलाल डालीगंज—यहाँ गल्ले का व्यापार और आढ़त का काम होता है।

लखनऊ—मेसर्स कुन्दनलाल कुंजबिहारीलाल अमीनुद्दौला पार्क—यहाँ चाँदी-सोना तथा जेवर और गोटे का व्यापार होता है।

लखनऊ—मेसर्स अग्रवाल ब्रदर्स अमीनुद्दौला पार्क—यहाँ मोजा, बनियाइन का कारखाना है, तथा इनकी बिक्री का काम होता है। इस फर्म का सञ्चालन महावीरप्रसादजी करते हैं।

इसके अतिरिक्त हाल ही में आपने ला० माधवप्रसादजी के शरागत में मेसर्स कुन्दनलाल माधवप्रसाद के नाम से ई० आई० आर० रेलवे के केश-कंट्राक्टर के काम का ठीका लिया है। आपही सारी रेलवे लाइन के खजांची हैं।

मेसर्स गयाप्रसाद शम्भूनाथ

इस फर्म के मालिक यहीं के निवासी खत्री समाज के कपूर सज्जन हैं। पहले पहल ला० गयाप्रसादजी नेदलाली एवं चाँदी सोने का थोड़ा घरू व्यापार शुरू किया। संवत् १९५४ में आपने फर्म की स्थापना की जिस पर सोना-चाँदी और पुराने सिक्के का काम शुरू किया गया। इस व्यवसाय में इस फर्म ने अच्छी तरक्की की। वर्तमान में यह फर्म यहाँ की प्रतिष्ठित फर्मों में मानी जाती है। ला० गयाप्रसादजी इस वक्त ७० वर्ष के होते हुए भी फर्म का काम सुचारु रूप से संचालित करते हैं। आपके तीन पुत्र हैं जिनके नाम क्रमशः शम्भूनाथजी, गौरीशंकरजी और बालकृष्णजी हैं। तीनों ही फर्म के व्यवसाय का संचालन करते हैं और अनुभवी हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

लखनऊ—मेसर्स गयाप्रसाद शम्भूनाथ, चौक—यहाँ बैंकिग, जमींदारी और चाँदी-सोने का थोक और फुटकर तथा जेवर का काम होता है।

जौहरी

मेसर्स जवाहिरलाल मोतीलाल

आप लोग लखनऊ के आदि निवासी हैं। आप लोग श्रीमाल समाज के जैन सज्जन हैं। इस फर्म पर जवाहिरात और नौरतन का व्यवसाय यों तो बहुत अर्से से हो रहा है पर शाही जमाने से इस व्यवसाय को इस फर्म के संस्थापको के पूर्वजों ने अच्छी तरक्की दी और इसी क्रमानुसार समय समय पर इस खानदान ने इस व्यवसाय में अच्छी प्रतिष्ठा प्राप्त की।

इस फर्म के वर्तमान मालिक लाला मोतीलालजी हैं। आप नौरतन के अच्छे जानकार और कुशल व्यवसायी हैं। आपके पुत्र बाबू कुंदनलालजी, बाबू जीवनलालजी तथा बाबू मोहनलाल-जी व्यापार में भाग लेते हैं इसके अतिरिक्त बाबू सुंदरलालजी तथा बाबू रतनलालजी अभी छोटे हैं और शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

लखनऊ—मेसर्स जवाहिरलाल मोतीलाल बहोरनटोला, चौक T. A. Mal—यहाँ बैंकिंग, जमींदारी एवं सभी प्रकार के जवाहिरात एवं जेवरात का काम होता है।

मेसर्स पन्नालाल अखैचन्द

इस फर्म के मालिकों का मूल निवासस्थान जयपुर का है। आप लोग श्रीमाल वैश्य जाति के श्वेताम्बर जैन धर्मावलम्बीय सज्जन हैं। करीब ७५ वर्ष पूर्व सेठ पन्नालालजी व्यापार के निमित्त यहाँ आये। तथा मेसर्स बुधसिंह पन्नालाल के नाम से फर्म स्थापित की। पन्नालालजी जवाहिरात के व्यापार में अच्छे जानकार थे। आप यहाँ जयपुरवालों के नाम से मशहूर थे। आपका स्वर्गवास हो गया है। आपके अखैचन्दजी नामक एक पुत्र हुए। लालासाहब के पश्चात् आपही फर्म का संचालन करने लगे। आपके समय में भी फर्म की अच्छी उन्नति हुई।

वर्त्तमान मे इस फर्म के मालिक ला० अखैचन्दजी के पुत्र लाला कुशलचन्दजी ज्ञान-चन्दजी, गुलाबचन्दजी और सितावचन्दजी हैं। इनमें से ज्ञानचन्दजी का स्वर्गवास हो गया है। आपके चार पुत्र हैं। जिनके नाम पद्मचन्दजी बी० एस० सी० नगीनचन्दजी, फूलचन्द-जी और पूरनचन्दजी हैं। लाला गुलाबचन्दजी लखनऊ में मुन्सिफ हैं। फर्म का प्रधान संचालन लाला कुशलचन्दजी ही करते हैं। आप सरल एवं मिलनसार व्यक्ति हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

लखनऊ—मेसर्स पन्नालाल अखैचन्द बोहरनटोला—यहाँ सब प्रकार के जवाहिरात, बैंकिंग और जमीदारी का काम होता है।

मेसर्स फूलचंद चंदेमल

इस फर्म की स्थापना करीब ७० वर्ष पूर्व लाला फूलचन्दजी और ला० चन्देमलजी के द्वारा हुई थी। आप दोनों सज्जनों का इसमें साझा है। ला० फूलचन्दजी ओसवाल श्वेताम्बर-जैन धर्मावलम्बी और ला० चन्देमलजी खत्री समाज के सज्जन थे। आप दोनों ही का स्वर्गवास हो चुका है।

वर्तमान में इस फर्म के संचालक लाला फूलचन्दजी के पुत्र ला० गुलाबचन्दजी और स्व० ला० चन्देमलजी के पुत्र मुन्नालालजी हैं। आप दोनों ही फर्म का संचालन करते हैं। यह फर्म यहाँ जवाहरात के व्यवसायियों में अच्छी मानी जाती है।

लाला गुलाबचन्दजी के ४ पुत्र हैं जिनके नाम क्रमशः सिताबचन्दजी, अमृतलालजी, जीवनलालजी और श्री अभयचन्दजी हैं। इनमे से बड़े सिताबचन्दजी फर्म का संचालन करते हैं। मुन्नालालजी के राधेश्यामजी नामक एक पुत्र हैं जो इस समय बी० ए० में विद्याध्ययन करते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

लखनऊ—मेसर्स फूलचन्द चन्देमल, फूलवाली गली, चौक—यहाँ सब प्रकार के जवाहरात बैंकिंग और जीनिंग फैक्टरियों का काम होता है।

मेसर्स हीरालाल चुन्नीलाल

इस फर्म की स्थापना स्वर्गीय सेठ चुन्नीलालजी नाहर ने की। आपने केवल पन्द्रह वर्ष की आयु से जवाहरात का काम प्रारम्भ किया और थोड़े ही समय में नौरतन की बहुत अच्छी जानकारी हासिल कर ली। आप अपने समय में इस विषय के बहुत अच्छे जानकार माने जाते थे। आपने महारानी विक्टोरिया के द्वितीय पुत्र प्रिन्स विक्टर के आगमन के समय मे कमिश्नर की आज्ञा से लखनऊ के बनारस बाग में जवाहिरात और पुरानी कारीगरी की एक अच्छी नुमाइश बतलाई थी। जिसकी बहुत प्रशंसा हुई थी। इसी प्रकार आपने जवाहिरात की शिक्षा सुलभ करने के लिए लखनऊ में जुबिली जवाहर स्कूल स्थापित किया था जो २५ वर्ष काम करके बन्द हो गया। आप चौरासी संग और नौरतन के अच्छे पारखी थे। आप के पास इसका उत्तम संग्रह था। जो आज भी इस परिवार के पास अक्षुण्ण रूप में रक्खा हुआ है।

इस फर्म के वर्त्तमान मालिक लाला चुन्नीलालजी के लघु भ्राता लाला फूलचंदजी के पुत्र लाला फतेचंदजी तथा लाला अमीचंदजी हैं। आप फर्म का पूर्ववत् संचालन कर रहे हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

लखनऊ—मेसर्स हीरालाल चुन्नीलाल जौहरी, नाहर-निवास, चौक—यहाँ सभी प्रकार के नौरतन तथा नौरतन जटित जेवरों का व्यापार होता है।

गोटा-किनारी के व्यापारी

मेसर्स देवीदास मदनलाल

इस फर्म के मालिकों का मूल निवास स्थान सहादरा है। आप लोग अग्रवाल वैश्य समाज के जैन धर्मावलम्बीय सज्जन हैं। इस फर्म की स्थापना बा० बद्रीदासजी द्वारा हुई। शुरू में आपने चांदी सोने का काम आरंभ किया। आप के दो पुत्र हुए—लाड़िली प्रसादजी तथा देवीदासजी। आप दोनों ही भाई आज से करीब ५५ वर्ष पूर्व अलग २ हो गये। तभी से लाला देवीदासजी ने उपरोक्त नाम से अपनी फर्म स्थापित कर इस पर गोटे-किनारी का व्यवसाय आरंभ किया। इसमें आपको अच्छा लाभ हुआ। आजकल यह फर्म इस व्यवसाय में पहली मानी जाती है। इसके अतिरिक्त संवत् १९७२ में आपने एक चीकन की भी दुकान खोली। जो वर्तमान में भी सुचारु रूप से व्यवसाय कर रही है। आप के पाँच पुत्र हुए। जिनके नाम क्रमशः मदनलालजी, शम्भूनाथजी, शीतलप्रसादजी, रामचन्द्रजी तथा जुगमन्दिरदासजी हैं। इनमें से बड़े लाला मदनलालजी तथा शीतलप्रसादजी का स्वर्गवास हो गया है। संवत् १९६१ में लाला देवीदासजी का भी स्वर्गवास हो गया।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक ला० शम्भूनाथजी तथा आपके भाई रामचन्द्रजी, जुगमन्दिर दासजी तथा स्व० लाला मदनलालजी के पुत्र शिखरचन्दजी तथा ज्ञानचन्दजी हैं। आप सब लोग फर्म का संचालन करते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

लखनऊ—मेसर्स देवीदास मदनलाल, चौक T. A. Gota—यहाँ फर्म का हेड आफिस है। यहाँ कंदला, गोटा किनारी, सलमा, सितारा, कामदानी और जरदोजी का काम तथा सलमे के बने हुए हारो का व्यापार होता है।

लखनऊ—देवीदास मदनलाल, चौक—यहाँ चीकन के बने माल का व्यापार होता है।

लखनऊ—मेसर्स देवीदास मदनलाल ३८९ अमीनाबाद—यहाँ चाँदी, स्वदेशी कपड़ा तथा उपरोक्त फर्म के माल का व्यापार होता है।

मेसर्स बद्रीदास छेदीलाल जैन

इस फर्म के मालिकों का निवासस्थान लखनऊ का है। आप लोग अग्रवाल जैन समाज के दिगम्बर सम्प्रदाय के महानुभाव हैं। इस फर्म के आदि संस्थापक ला० बद्रीदासजी ने लगभग ५० वर्ष पूर्व मेसर्स बद्रीदास केदारनाथ के नाम से गोटे किनारी का व्यवसाय आरम्भ किया। आपने व्यापार में अच्छी सफलता प्राप्त की और फर्म को काफी तरक्की दी। लगभग ३० वर्ष पूर्व आपके छोटे भाई ला० केदारनाथजी फर्म से अलग हो गये, तब ला० बद्रीदासजी ने अपना स्वतन्त्र व्यापार उपरोक्त नाम से खोला और फर्म को अच्छी तरक्की की अवस्था पर पहुँचाया। लाला बद्रीदासजी के स्वर्गवास के बाद आपके दत्तक पुत्र लाला छेदीलालजी ने फर्म के व्यापार को सँभाला। आपने भी फर्म के काम को अच्छी योग्यता से सञ्चालित किया। आपका स्वर्गवास लगभग ७ वर्ष पूर्व हो गया। तब से आपकी फर्म का सञ्चालन आपके पुत्र लाला बनवारीलालजी करने लगे।

इस फर्म के वर्तमान मालिक लाला बनवारीलालजी तथा आपके भाई लाला मंगलसेनजी हैं। इस फर्म का प्रधान संचालन लाला बनवारीलालजी करते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

मेसर्स—बद्रीदास छेदीलाल गोटेवाले, चौक, लखनऊ—यहाँ गोटा, पट्ठा, बाकड़ी किरन, झालर आदि का काम होता है तथा जरदोजी, सलमा सितारा, तार कटाव और गोटे का व्यापार होता है।

...बिहारी केदारनाथ

...देगम्बर जैन धर्मावलम्बी सज्जन हैं। इस फर्म के
...० वर्ष पूर्व गोटा किनारी के व्यवसाय को उपरोक्त
...फर्म के आदि संस्थापक लाला केदारनाथजी ने अपने
...दास केदारनाथ के नाम से गोटा किनारी का व्यव-
...। तब से आप की फर्म पर यही काम हो रहा है।
...की है और यहाँ की गोटा किनारी का व्यवसाय
...ती है। लाला केदारनाथजी ने अपनी स्वतन्त्र फर्म
...र्म की उन्नति का प्रधान श्रेय लाला केदारनाथजी
...हुआ। आपके दो पुत्र थे बड़े का नाम लाला
...जी था। जिसमें लाला छेदीलालजी स्व० लाला

बद्रीदासजी के यहाँ दत्तक गये। इस प्रकार लाला केदारनाथ के छोटे पुत्र लाला गिरधारीलाल जी आपके साथ रहे पर आपका भी लगभग ७ वर्ष पूर्व स्वर्गवास हो गया है।

वर्तमान में इस फर्म के सञ्चालक ला० रिषभदासजी हैं। आप स्व० लाला गिरधारीदास-जी के यहाँ दत्तक लिये गये हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

मेसर्स—लालबिहारी केदारनाथ चौक लखनऊ—यहाँ गोटा, लचका, लैस, बाँकड़ी, सलमा, सितारा, किरन झालर आदि का व्यापार होता है। इसके अतिरिक्त कामदानी, जर-दोजी वगैरह का काम भी होता है।

गल्ले के व्यापारी

मेसर्स प्रभूदयाल गनेशप्रसाद

आप लोग लखनऊ के आदि निवासी खत्री समाज के बीघे सज्जन हैं। इस फर्म की स्थापना सम्वत् १९८५ में लाला गणेशप्रसादजी ने की थी। इस फर्म के मालिक इसके पूर्व मेसर्स प्रभूदयाल मन्नालाल के नाम से व्यापार करते थे जिसमें सेठ मन्नालालजी सोमानी का साझा था। इस फर्म के मालिकों के यहाँ गल्ला और कमीशन एजेण्ट के काम के अतिरिक्त और भी दूसरे व्यवसाय थे। जो यह लोग करते थे।

इस फर्म के मालिको ने आपने व्यापार को अच्छी तरक्की दी और फल यह हुआ कि फर्म यहाँ की पहिले दर्जे की फर्म मानी जाने लगी। इस फर्म को सब से ज्यादा तरक्की लाला गनेश-प्रसादजी ने दी। सम्वत् १९८५ से आप अपना स्वतंत्र व्यवसाय उपरोक्त नाम से कर रहे हैं।

इस फर्म के वर्तमान मालिक लाला गनेशप्रसादजी तथा आपके भाई लाला सुन्दरलालजी हैं। लाला गणेशप्रसादजी के बाबू शंकरलालजी नामक एक पुत्र हैं तथा लाला सुन्दरलालजी के पुत्र बाबू राधेश्यामजी हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

मेसर्स—प्रभूदयाल गनेशप्रसाद शहादतगंज लखनऊ—यहाँ गल्ला तथा कमीशन एजेण्ट और बैंकिंग का काम होता है।

मेसर्स—प्रभूदयाल गणेशप्रसाद नयागंज कानपुर—यहाँ गल्ला, आढ़त और महाजनी लेन-देन होता है।

मेसर्स—प्रभूदयाल गणेशप्रसाद नवाबगंज, बाराबंकी—यहाँ गल्ला, आढ़त तथा महाजनी लेन-देन का काम होता है।
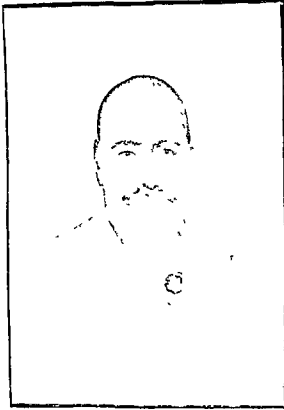
स्व० सेठ गयाप्रसादजी (मन्नालाल मूलचंद) लखनऊ

लाला गणेशप्रसादजी खत्री (प्रभूदयाल गणेशप्रसाद) लखनऊ

लाला मूलचंदजी (मन्नालाल मूलचंद) लखनऊ

लाला फूलचंदजी (मन्नालाल फूलचंद) लखनऊ

मेसर्स मन्नालाल मूलचंद

आप लोग माधवगढ़ (ग्वालिनी) जैपुर स्टेट के आदि निवासी हैं। पर लगभग ५ पुश्त से लखनऊ रहते हैं। आप लोग माहेश्वरी वैश्य समाज के सोमानी सज्जन हैं।

सेठ मन्नालालजी ने स्वदेश से यहाँ आकर अपना व्यवसाय स्थापित किया और मेसर्स प्रभूदयाल मन्नालाल के नाम से कमीशन एजेण्ट तथा नमक का काम आरम्भ किया। इस व्यवसाय में लखनऊ निवासी लाला प्रभूदयालजी खत्री की हिस्सेदारी थी जो बहुत अर्से तक रही। सेठ मन्नालालजी का स्वर्गवास हो गया। आपके बाद फर्म का प्रधान संचालन आपके पौत्र सेठ गयाप्रसादजी करने लगे। आपने फर्म के व्यवसाय को अच्छी तरक्की दी और काम को अधिक विस्तृत रूप दिया। आप बड़े व्यवसायकुशल महानुभाव थे। आपने शहादतगञ्ज वाली अपनी कोठी के पास ही राधावल्लभ का एक विशाल मन्दिर बनवाया है। आपका स्वर्गवास सम्वत् १९७५ में हुआ। आपके बाद आपके पुत्र सेठ मूलचन्दजी तथा सेठ फूलचन्द-जी ने फर्म का काम अपने हाथ में लिया। इस प्रकार इस पुराने फर्म ने बहुत प्रतिष्ठा और उन्नति की पर सम्वत् १९८५ में इसके मालिकालोग अलग २ हो गये और सेठ गयाप्रसादजी के बड़े पुत्र सेठ मूलचंदजी ने अपना स्वतन्त्र व्यवसाय उपरोक्त नाम से स्थापित किया। और वर्तमान मे आप ही व्यवसाय का संचालन कर रहे हैं। आप स्वभाव के सरल एवं मिलन-सार सज्जन हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

मेसर्स—मन्नालाल मूलचंद, कोठी शहादतगंज, लखनऊ—यहाँ मालिकों का निवास-स्थान है और बैंकिंग का काम होता है।

मेसर्स—मन्नालाल मूलचन्द आयलमिल डालीगंज लखनऊ—यहाँ तेल का मिल है जहाँ सब प्रकार का तेल तैयार होता है। इसके साथ आर्यन फाउण्ड्री और आटे की चक्की भी है।

मेसर्स मन्नालाल फूलचंद

इस फर्म के संस्थापक स्व० सेठ गयाप्रसादजी के छोटे पुत्र सेठ फूलचंदजी हैं। सम्वत् १९८५ में जब पुरानी फर्म मेसर्स प्रभूदयाल मन्नालाल के सब मालिक अलग २ हो गये और अपना अपना व्यवसाय स्वतंत्र हो करने लगे तब सेठ फूलचंदजी ने भी अपना स्वतंत्र व्यवसाय उपरोक्त नाम से खोला। आपके फर्म में महाजनी लेन देन तथा कमीशन एजेन्ट का काम होता है।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

मेसर्स—मन्नालाल फूलचन्द शहादतगंज लखनऊ—T. A. somam यहाँ कमीशन एजेन्ट और बैंकिंग का बहुत बड़ा काम होता है।

मेसर्स—मन्नालाल फूलचंद डालीगंज लखनऊ—यहाँ गल्ला तथा आढ़त का काम होता है।

मेसर्स—मन्नालाल फूलचंद नयागंज, कानपुर—आढ़त का और बैंकिंग का काम होता है।

कागज के व्यापारी

मेसर्स बंसीधर कुन्दनलाल

इस फर्म के मालिक बहुत अर्से से यहीं निवास करते हैं। आप अग्रवाल वैश्य समाज के जैन सज्जन हैं। इस फर्म को यहाँ स्थापित हुए बहुत वर्ष हो गये। शुरू से ही यह फर्म कागज का व्यापार करती आ रही है। इस व्यवसाय में यहाँ यह पहली ही फर्म मानी जाती है। इस फर्म की विशेष तरक्की स्व० सेठ बंसीधरजी के द्वितीय पुत्र लाला मुन्नालालजी के द्वारा हुई। वर्तमान में आपही इस फर्म के मालिक हैं। आप मिलनसार, व्यापार कुशल और सज्जन व्यक्ति हैं। आपने यहाँ लखनऊ जंकशन पर एक बहुत बड़ी और विशाल धर्मशाला बनवाई है। इसके साथ जैन मन्दिर भी है।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

लखनऊ—मेसर्स बंसीधर कुन्दनलाल, अहैयागंज, नादान महल रोड T. A -Munnay—यहाँ कागज का बड़ा व्यापार होता है।

गोटे किनारी के व्यापारी—

मेसर्स कुन्दनलाल कुंजबिहारीलाल चौक
„ जवाहरलाल गोविन्दप्रसाद „
„ जानकीप्रसाद अग्रवाल „
„ देवीदास मदनलाल „
„ परसादीलाल कुन्दनलाल „
„ बद्रीदास छेदालाल „
„ रामचरन लक्ष्मीनारायण „

मेसर्स रामेश्वरदास गोटेवाले „
„ लालबिहारी केदारनाथ „

जौहरी—

मेसर्स इन्द्रचन्द खेमचंद चौक
„ जवाहरलाल मानकचंद „
„ जवाहरलाल मोतीलाल „
„ दीपचन्द सुन्दरलाल „
„ फूलचंद चन्देमल „

मेसर्स सौभागचंद रिखबदास चौक
„ हीरालाल चुन्नीलाल „

कपड़े के व्यापारी—

मेसर्स कालीचरन जगन्नाथ अमीनाबाद
„ जमनादास मोहनलाल „
„ देवीदास मदनलाल „
„ नारायणदास जगन्नाथ „
„ मोहनलाल कन्हैयालाल राजा का बाजार
„ मदनलाल वल्लभदास विक्टोरिया स्ट्रीट
„ रामप्रसाद दामोदरदास अमीनाबाद
„ रामचन्द्र किशनचन्द „
„ रामजीमल कुंजविहारी „
„ शिवनारायण शिवप्रसाद „
„ स्वदेशी भंडार „
„ शंकरदास पुरुषोत्तमदास „
„ हरिसिंह बालसिंह „

चिकन और फर्द वाले—

मेसर्स अब्दुल रहीम अब्दुल अजीज चौक
„ गोकुलचंद जयनारायण „
„ छंगामल रामशरण „
„ बद्रीदास जगन्नाथ „
„ भैरवनाथ विश्वनाथ „
„ विसेसरनाथ बाबूराम „
„ लालबिहारी टंडन „

गल्ले के व्यापारी—

मेसर्स अयोध्याप्रसाद बंसीधर शहादतगंज
„ कन्हैयालाल दाताराम डालीगंज
„ कन्हैयालाल जगन्नाथ „
„ कुन्दनलाल कुंजबिहारीलाल शहादतगंज

मेसर्स नन्हेमल नरोत्तमदास शहादतगंज
„ पोकरमल विशंभरदयाल फतेगंज
„ प्रभुदयाल गणेशप्रसाद शहादतगंज
„ बद्रीदास बरातीलाल „
„ बंसीधर जानकीप्रसाद फतेगंज
„ मन्नालाल फूलचंद शहादतगंज
„ मातादीन रामनारायण „
„ मांगीलाल प्रेमसुख „
„ रामदुलारे हरनामप्रसाद फतेगंज
„ राजामल हजारीलाल डालीगंज
„ लक्ष्मीनारायण लादूराम शहादतगंज
„ सीताराम रामानन्द डालीगंज
„ हरदयालमल बलदेवप्रसाद फतेगंज

घी और चीनी के व्यापारी—

मेसर्स अब्दुल सिकंदर राजा बाजार
„ जयजयराम तुलसीराम आगामीर ड्योढी
„ भीखामल मुत्सद्दीलाल राजाबाजार
„ रघुवरदयाल गोवर्धनदास „
„ साहबदीन रघुवरदयाल आगामीर ड्योढ़ी
„ हीरालाल चुन्नीलाल शहादतगंज

चाँदी-सोने के व्यापारी—

मेसर्स ईश्वरीप्रसाद महादेवप्रसाद चौक
„ कुन्दनलाल कुंजबिहारीलाल „
„ किशोरीलाल त्रिभुवनदास „
„ गुलाबराय गोविन्दप्रसाद „
„ गयाप्रसाद शंभुनाथ „
„ तातीमल भोलानाथ „
„ मन्नीलाल गिरधारीलाल „
„ मुरलीधर मक्खनलाल „

मेसर्स राधाकृष्ण श्रीकृष्ण चौक
" रामकृष्ण मन्नूलाल "
" विशेश्वरनाथ महादेवप्रसाद "
" श्रीकृष्ण गोपालदास "

परफ्यूमर्स—

मेसर्स असगर अली महम्मद अली चौक
" हाजी अब्दुल अजीज "
" महम्मद इलियास अब्बुलअजीज

तमाखू वाले—

मेसर्स अब्दुलहुसेन दिलदारहुसेन चौक
" खुदाबक्स फकीरबक्ष फतेगंज
" नसीर खाँ नसीम खाँ कटरा आबू तुराबखाँ
" मुकतिदा खाँ इकतिदा खाँ कटरा आबतुराम खाँ

केमिस्ट एण्ड ड्रगिस्ट—

मेसर्स इन्द्रचन्द्र एण्ड को० चौक
दी गुप्ता स्टोअर्स अमीनाबाद
मेसर्स जेम्स एण्ड को० हजरतगंज
" पी० केलेन एण्ड को० हजरतगंज
दी ब्रटिश फार्मसी हजरतगंज
" न्यू किंग मेडिकलहाल अमीनाबाद
मेसर्स सांवलजी एण्ड कम्पनी "
" सालम एण्ड को० "
" सरकार एण्ड को० केसरबाग

जनरल मरचेंट्स—

मेसर्स प्रभुदयाल छन्नूमल अमीनाबादपार्क
" बालाप्रसाद एण्ड ब्रदर्स "
" मल्लिक एण्ड संस "
" मल्लिक एण्ड ब्रदर्स "

मेसर्स मथुरादास रामनाथ अमीनाबाद
" एम० नजीर एण्ड को० "
" एम० एस० आबित "
" यू० पी० परफ्यूमरीहाउस "
दी शीशमहल स्टोअर्स "
मेसर्स सरयूप्रसाद एण्ड को० "
दी हिमालियन स्टोअर्स "
मेसर्स हसन एण्ड संस "

ग्लास वेअर मरचेंट्स—

मेसर्स अब्दुल हुसेन खाँ अमीनाबाद पार्क
" महम्मद इसू "
" एम० महम्मद उमर "
" वाजिद हुसेन "

वाच मरचेंट्स—

मेसर्स काजिम एण्ड को० अमीनाबाद
" एम० नसिर एण्ड को० "

बुकसेलर्स—

गंगा पुस्तकमाला कार्यालय अमीनाबाद
भार्गव बुक डिपो "

पेपर मरचेंट्स—

मेसर्स भोलानाथ सीताराम अमीनाबाद
" भोलानाथ एण्ड को० "
" मुन्नेलाल कागजी अहियागंज

मोटरकार डिलर्स एण्ड रिपेअर्स—

ओरियंटल मोटरकार कम्पनी हजरतगंज
अपर इंडिया मोटर इंजिनियरिंग वर्क्स "
अवध मोटर वर्क्स "
इम्पिरियल मोटर वर्क्स "
पायोनियर मोटर इंजिनियरिंग वर्क्स "
फ्रेंच मोटरकार कम्पनी "
फितसिका एण्ड को० मोटर वाले "

कानपुर

यह नगर ई० आई० आर० की मेन लाइन पर बसा हुआ है। यहाँ से जी० आई० पी० रेलवे की एक शाखा झांसी को और दूसरी बाँदा को जाती है। इसके अतिरिक्त बी० एन० डब्लू० आर० की कानपुर कटिहार वाली मेन लाइन का जहाँ यह नगर पश्चिमीय टरमिनस है वहाँ बी० बी० एण्ड० सी० आई० रेलवे की छोटी लाइन अछनेरा होती हुई यहाँ से आगरा तक गयी है इस नगर के बायी ओर से भागीरथी नदी बहती है।

यह नगर ऐतिहासिक दृष्टि से बहुत पुराना नहीं है। कहा जाता है कि इसे अन्तिम हिन्दू सम्राट् पृथ्वीराज चौहान के भाई कान्ह कुँवर ने बसाया था जिसकी पुरानी बस्ती वर्तमान नगर से कुछ ही दूर पुराने कानपुर के नाम से आज भी प्रसिद्ध है। जिस समय अंग्रेजों ने मुगल सम्राट् से दीवानी ली उसी समय यह भूप्रदेश भी उनके प्रबन्ध में आया और राजनैतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण समझ कर ही अवध के नवावों की राजधानी लखनऊ के समीप गंगा के इस पार अंग्रेजों ने अपनी छावनी स्थापित की। परिणामतया इसके समीप छोटे से नगर की वृद्धि हो चली और समय पाकर इतना बड़ा नगर बस गया। यहाँ एक समय बहुत बड़ी छावनी थी जिसका प्रमाण वर्तमान नगर के महल्ले दे रहे हैं। नगर के कितने ही मुहल्ले जैसे फीलखाना, तोपखाना, रोटी गुदाम, फर्रासखाना, शुतरखाना आदि आज भी बताते हैं कि किसी समय छावनी के विभिन्न विभाग यहाँ पर वर्तमान थे। कानपुर से कुछ ही मील की दूरी पर ब्रह्मावर्त नामक पुराना स्थान है। जिस समय दक्षिण में पेशवा लोगों के शासन का अन्त हुआ था। उस समय अन्तिम बाजीराव को ब्रह्मावर्त में जागीर दे कर रक्खा गया था। सन् १८५७ ई० के सिपाही विप्लव के समय इसी ब्रह्मावर्त के पेशवाई परिवार के नाना साहिब ने इस नगर पर अधिकार कर लिया था पर जब शान्ति स्थापित हुई तो पुनः यह नगर अंग्रेजों के शासन में उन्नति करने लगा और १९ वी शताब्दी के अन्तिम काल और २० वीं के प्रारम्भ काल में यह नगर कला कौशल एवं व्यापार वाणिज्य परिपूर्ण एक विस्तृत एवं जनाकीर्ण नगर हो गया। इसकी इन्हीं विशेषताओं से इसे लोग उत्तर भारत का 'मैनचेष्टर' कहते हैं।

यह नगर उत्तर भारत के उपजाऊ भूभाग में है अतः यहाँ गल्ला बहुतायत से आता है और तेलहन माल का बहुत बड़ा स्टाक रहता है। इसी प्रकार यहाँ रुई की प्रचुरता और

मिलों की अधिकता के कारण यह नगर देशी मिलों के बने कपड़े का जहाँ केन्द्र है वहाँ रेलवे की सुविधा के कारण विलायती कपड़े का भी बहुत बड़ा केन्द्र माना जाता है। उत्तर भारत में दिल्ली के बाद किराने की यह बहुत बड़ी मण्डी मानी जाती है। यहाँ दाल के कितने ही कारखाने हैं जहाँ उत्तम दाल तैयार होती है और भारत के सभी प्रान्तों को बहुत बड़े परिणाम में भेजी जाती है। यहाँ का चमड़ा भी बहुत मशहूर है। खाल का बहुत बड़ा व्यापार होता है और साथ ही यहाँ खाल से चमड़ा पकाने और तैयार करने के भी कितने ही आधुनिक यांत्रिक सुविधाओं से संयुक्त बड़े बड़े कारखाने हैं। इतना ही नहीं, चमड़े से जूते, जीन, काठी, बैग, बक्स आदि भिन्न प्रकार के चमड़े के सामान बनाने के भी इसी प्रकार के बड़े बड़े कारखाने हैं। यहाँ कितनी ही शुगर फैक्ट्रियाँ हैं जो शक्कर तैयार करती हैं। यहाँ जहाँ तेजाब आदि रासायनिक पदार्थ तैयार करने का एक बड़ा कारखाना है वहाँ शराब तैयार करने और ब्रुश बनाने के भी एक एक कारखाने हैं।

यहाँ भिन्न २ माल का व्यापार भी प्रायः भिन्न नाम से पुकारे जानेवाले मोहल्लों में ही प्रधान रूप से होता है। इनमें से कुछ के नाम इस प्रकार हैं।

गल्ले	का व्यापार	कलेक्टरगंज में
तेलहन	"	कोपड़गंज में
कपास	"	"
रूई	"	"
किराना	"	नयागंज में
तम्बाकू और शीरा	"	रामगंज में
गुड़	"	हूलागंज में
कपड़ा	"	जेनरलगंज में
चाँदी सोना	"	चौक तथा नयागंज में
दाल	"	(तुअर की) नहर किनारे दालमण्डी में
		(उड़द आदि की) पुरानी दालमण्डी में
चमड़ा	"	बेगमगंज

यहाँ की तोल प्रायः सभी काने की ४० सेर के मन से है पर यदि अढ़तियों की मारफत शक्कर ली जाय तो ४८॥ सेर तथा गल्ला ४१॥ सेर के मन से मिलेगा।

यह नगर अपने व्यापार-वाणिज्य और कल-कारखानों के लिये विशेष महत्व का स्थान रखता है अतः यहाँ के कतिपय प्रधान कारखानों की नाम सूची हम नीचे दे रहे हैं जो इस प्रकार है।

काटन मिल्स—

इलगिन मिल्स कम्पनी लि०
ऐथर्टन मिल्स लि०
कानपुर काटन मिल्स को० काकोमी फैक्ट्री
कानपुर टेक्सटाइल लि०
कानपुर काटन मिल्स को०
जुग्गीलाल कमलापत स्पिनिंग वीविंग मिल्स
न्यू विक्टोरिया मिल्स को० लि०
मेवर मिल्स को० लि०
स्वदेशी काटन मिल्स को० लि०

काटन जीनिंग एन्ड प्रेसिंग फैक्टरी—

श्रीकृष्ण जीनिंग एण्ड प्रेसिंग मिल्स
श्रीराम महादेवप्रसाद् काटन प्रेसिंग फैक्टरी
ओ३म काटन जीनिंग मिल्स
गंगा काटन हाइड्रोलिक प्रेस
जान्सन जीनिंग मिल्स
जी. एन. कोकलस जीनिंग एण्ड प्रेसिंग फैक्टरी
फार्बेस जीनिंग फैक्टरी

ऊलन मील्स—

कानपुर ऊलन मिल्स कम्पनी
वैजनाथ बालकुमुन्द ऊलन मिल्स कम्पनी

वेस्ट काटन मिल—

आर. अग्रवाल एण्ड को० काटन वेस्ट फैक्टरी

जूट मिल—

जुग्गीलाल कमलापत जूट मिल
सिंहानियाँ हलवासिया जूट मिल

आइल मिल्स—

कानपुर आइल मिल्स कम्पनी
कुद्दला आइल मिल्स
गंगा आइल मिल्स एण्ड जीनिंग फैक्ट्री
दीनानाथ हेमराज आइल मिल्स
नारायणदास लक्ष्मणदास आइल मिल्स ब्रास एण्ड आइर्न फाउण्ड्री
प्रीमियर आइल मिल्स लि०
मातादीन भगवानदास आइल मिल्स एण्ड ब्रास फाउण्ड्री
यू० पी० सेन्ट्रल मिल्स
श्रीगोपाल काटन जीनिंग सोप एण्ड आ० मिल्स

शक्कर के कारखाने—

कानपुर शुगर वर्क्स लि०
वैजनाथ बालमुकुन्द शुगर फैक्ट्री
यूनियन इण्डियन शुगर मिल्स को० लि०

फ्लोअर मिल्स—

कानपुर फ्लोर मिल्स को० लि०
गंगा फ्लोर मिल्स
श्रीराम महादेवप्रसाद् जीनिंग रोलर एण्ड फ्लोर मिल्स

लोहे के कारखाने—

श्याम आयर्न एण्ड स्टील को० लि०
यू० कोठारी एण्ड को०

सोडा का कारखाना—

कानपुर एरेटिंग गैस को० लि०

बर्फ का कारखाना—

भार्गव आइस फैक्ट्री

शराब का कारखाना—

इण्डियन डिस्टिलरी कम्पनी,

तेजाब का कारखाना—

डी० वाल्डी एण्ड को० लि०

हरी-खाद के कारखाने—

कानपुर बोन फेर्टलाइजर वर्क्स मगरवारा (उन्नाव)

ब्रश के कारखाने—
इण्डियन ब्रश फैक्ट्री
चमड़े के कारखाने—
अपर इण्डिया देहली टैनरी
कर्जन लेदर वर्क्स
कानपुर टैनरी
इण्डियन नेशनल टैनरी
डब्लू. बी. शेवान एण्ड को०
जूते के कारखाने—
आर्मी बूट एण्ड इकुपमेन्ट फैक्ट्री
बेस्ट एयण्ड लेदर को०
हलीम बूट फैक्ट्री

मिल ओनर्स

मेसर्स जुग्गीलाल कमलापत

इस फर्म के मालिकों का मूल निवास-स्थान बिसाऊ (जयपुर-स्टेट) है। आप लोग अग्रवाल वैश्य समाज के सज्जन हैं। करीब १२५ वर्ष पूर्व आपके पूर्वज सेठ बिनोदीरामजी फरुखाबाद आये। करीब ७५ वर्षों से यह फर्म बैजनाथ रामनाथ और पश्चात् मेसर्स बैजनाथ जुग्गीलाल के नाम से कानपुर में व्यापार करती रही। उस समय इस फर्म पर बैंकिंग और हुंडी चिट्ठी का कारबार होता था। सेठ जुग्गीलालजी ने फर्म की अच्छी उन्नति की। आप व्यापार-कुशल, मेधावी एवम् चतुर सज्जन थे। आपका स्वर्गवास हो गया है। आपके तीन पुत्र हुए। जिनके नाम क्रमशः सेठ कमलापतजी, सेठ बांकेबिहारीजी एवम् सेठ राधाकृष्णजी हैं। आप तीनों सज्जन संवत् १९७५ में अलग २ हो गये हैं।

उपरोक्त फर्म सेठ कमलापतजी की है। आप बड़े सरल, मिलनसार, व्यापार-चतुर और मेधावी महानुभाव हैं। आप ही की बुद्धिमानी एवम् व्यापार-चतुरता के कारण यह फर्म आज इतनी प्रतिष्ठा प्राप्त कर सकी है। आपने सन् १९२२ में दी जुग्गीलाल कमलापति काटन मिल्स की स्थापना की। इसके पश्चात् आपने Atheron wess cotton mills आईल मिल्स, शुगर मिल आदि कई प्रकार के मिलों की स्थापना की। जो इस समय सुचारुरूप से चल रही हैं। इसके अतिरिक्त कई जीनिंग और प्रेसिंग फैक्टरियाँ भी आपकी ओर से चल रही हैं।

सेठ कमलापतजी सिर्फ व्यापार में ही ध्यान देकर लाखों रुपया पैदाकर ही नहीं रह गये। आपने सामाजिक एवम् धार्मिक क्षेत्र में भी अच्छा अनुराग रखा। आपने गंगा के तट पर एक विशाल घाट तथा एक शिवालय बनवाया। कानपुर स्टेशन पर एक धर्मशाला भी आपकी ओर से बनी हुई है। एक द्वारकाधीश का मन्दिर भी आपने बनवाया। कहने का मतलब यह है कि आपने धार्मिक कार्यों में काफी रकम खर्च की। सामाजिक क्षेत्र में भी आप

कम न थे। आप कानपुर में होनेवाली अग्रवाल महासभा के स्वागताध्यक्ष रहे थे। इसी प्रकार और भी कई कार्य आपके द्वारा हुए।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ कमलापतजी हैं। आपके तीन पुत्र हैं। जिनके नाम क्रमशः पद्मपतिजी, कैलाशपतिजी एवम् लक्ष्मीपतिजी हैं। आप लोग सब शिक्षित एवम् मिलनसार हैं। आप कई संस्थाओं के सभापति आदि हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स—जुग्गीलाल कमलापत चटाई मोहाल, कानपुर T. A. Laljuggi—यहाँ फर्म का हेड आफिस है। तथा बैंकिंग, मीलों के बने माल एवम् मिलों के लिये सामान की खरीद का काम होता है। यह फर्म यहाँ बहुत प्रतिष्ठित समझी जाती है।

मेसर्स—जुग्गीलाल कमलापत ९४ लोअर चितपुर रोड रोड कलकत्ता T. A. Kamlapat—यहाँ बैंकिंग, जूट, कपड़ा एवम् घर के मिलों के बने माल का व्यापार होता है।

मेसर्स—जुग्गीलाल कमलापत इटावा—यहाँ जीनिंग और प्रेसिंग फैक्टरी है तथा कॉटन का व्यापार होता है।

दी जुग्गीलाल कमलापत काटन स्पि० एण्ड लि० मिल कानपुर—यहाँ आपका कपड़े का मिल है। इस मिल में मजबूत एवम् सुन्दर कपड़े तैय्यार होते हैं। यहीं आपका निवासस्थान है।

मेसर्स—जुग्गीलाल कमलापत कटनी (चित्रकूट)—यहाँ भी आपकी जीनिंग और प्रेसिंग फैक्टरी है, तथा कॉटन का व्यापार होता है। यहाँ आपका एक तेल का मिल भी है।

जे० के० जूट मिल्स कानपुर—हैसियन और बारदाना।

कमला आइस फैक्टरी।

जे० के० आईल मिल्स—तेल का मिल।

जे० के० हाजियारी फैक्टरी—यहाँ सब प्रकार की होजियरी बनती है।

मेसर्स बैजनाथ बालमुकुंद

इस फर्म के वर्तमान मालिकों के पूर्व पुरुष लगभग ५५ वर्ष पूर्व अपने आदि निवासस्थान बिसाऊ (राजपूताना) से कानपुर आये थे और सम्वत् १९३१ के लगभग कानपुर में अपना व्यवसाय मेसर्स रामनाथ बैजनाथ के नाम से स्थापित कर प्राइवेट बैंकिंग तथा मिलों की एजेन्सियों का काम खोला था। इस फर्म को व्यवसाय में अच्छी सफलता मिली अतः क्रमानुसार कपड़े की मिल, जीनिंग फैक्टरी, आइल मिल और शुगर फैक्टरी फर्म ने खोली। लगभग १० वर्ष हुए सम्वत् १९७५ में इस फर्म के मालिक लोग अलग २ हो गये और परिणामतया बा०

बाँकेबिहारीलालजी ने अपना स्वतन्त्र व्यवसाय मेसर्स बैजनाथ बालमुकुंद के उपरोक्त नाम से खोला। आप की फर्म यों तो आरम्भ से ही कितने ही कल-कारखानों जैसे बैजनाथ बालमुकुन्द शुगर फैक्टरी कानपुर, बैजनाथ बालमुकुन्द जीनिंग फैक्टरी माधोगञ्ज तथा इण्डियन डिस्टूलरी आदि की मालिक थी पर आपने बैजनाथ बालमुकुन्द ऊलन मिल्स नामक एक ऊनी माल तैयार करने का मिल भी खोल दिया जो आज पर्य्यन्त सफलता से काम रहा है।

बाबू बाँकेबिहारीलालजी का ही यह साहस था कि जिसके प्रतिफलस्वरूप आपने व्यापारिक क्षेत्र में एक नवीन लहर दौड़ा दी और भारतीय पूँजी द्वारा और भारतीय परिश्रम के बल भारतीयो के सञ्चालन में एक ऊलन मिल स्थापित कर दी। इस विशेष दृष्टि से आपका साहस अवश्य ही सराहनीय है। इसी प्रकार आपके शक्कर मिल की तैयार शक्कर भी अपनी पवित्रता एवं सरसता में अच्छी ख्याति प्राप्त कर चुकी है जिसके कारण कितने ही राजा महाराजाओं की ओर से फर्म को सनदें मिली हुई हैं। फलतः राजपूताना और मध्य भारत में इस फर्म के कारखाने की शक्कर की पर्याप्त माँग रहती है। इस फर्म के वर्तमान मालिक बाबू बाँकेबिहारीलालजी तथा आपके पुत्र बाबू मदनबिहारीलालजी हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मेंसर्स—बैजनाथ बालमकुन्द चटाई मोहाल कानपुर T. A. Lalbanky (लाल बाँके)—यहाँ फर्म का हेड आफिस है। तथा सभी प्रकार के कारखानों के संचालन का काम होता है।

मेसर्स—बालमकुन्द बाँकेबिहारीलाल जेनरलगंज कानपुर—यहाँ ऊनी तथा सूती कपड़े का काम तथा अपने ऊलन मिल के माल की बिक्री का काम होता है।

दि बैजनाथ बालमकुन्द ऊलन मिल्स अनवरगंज कानपुर—यहाँ फर्म का एक ऊलन मिल है जिसमें अनुमानतया २५० मजदूर काम करते हैं। यहाँ तिब्बती, काश्मीरी, शिमला, अबोहर, फ़ाजलका, टनकापुर, हलद्वानी, कालिंगपुंग, आगरा, तथा नारनोल आदि से ऊन आती है और उससे बढ़िया शाल, लोई, रग, कम्मल, सर्ज, फलालैन, क्रीट तथा पट्टी आदि तैयार की जाती हैं। इसीके साथ २ एक होजियरी विभाग भी खोला जाने वाला है।

दि बैजनाथ बालमुकन्द शुगर मिल्स अनवरगञ्ज कानपुर—यहाँ शक्कर का कारखाना है। जिसमें २१२ के लगभग मजदूर रोज काम करते हैं और उत्तम शक्कर तैयार की जाती है।

बैजनाथ बालमुकन्द जीनिंग फैक्टरी माधोगञ्ज (हरदोई)—यहाँ फर्म की जीनिंग फैक्टरी है जिसमें ४० जीनिंग मशीन है और लगभग ११२ मजदूर रोज काम करते हैं।
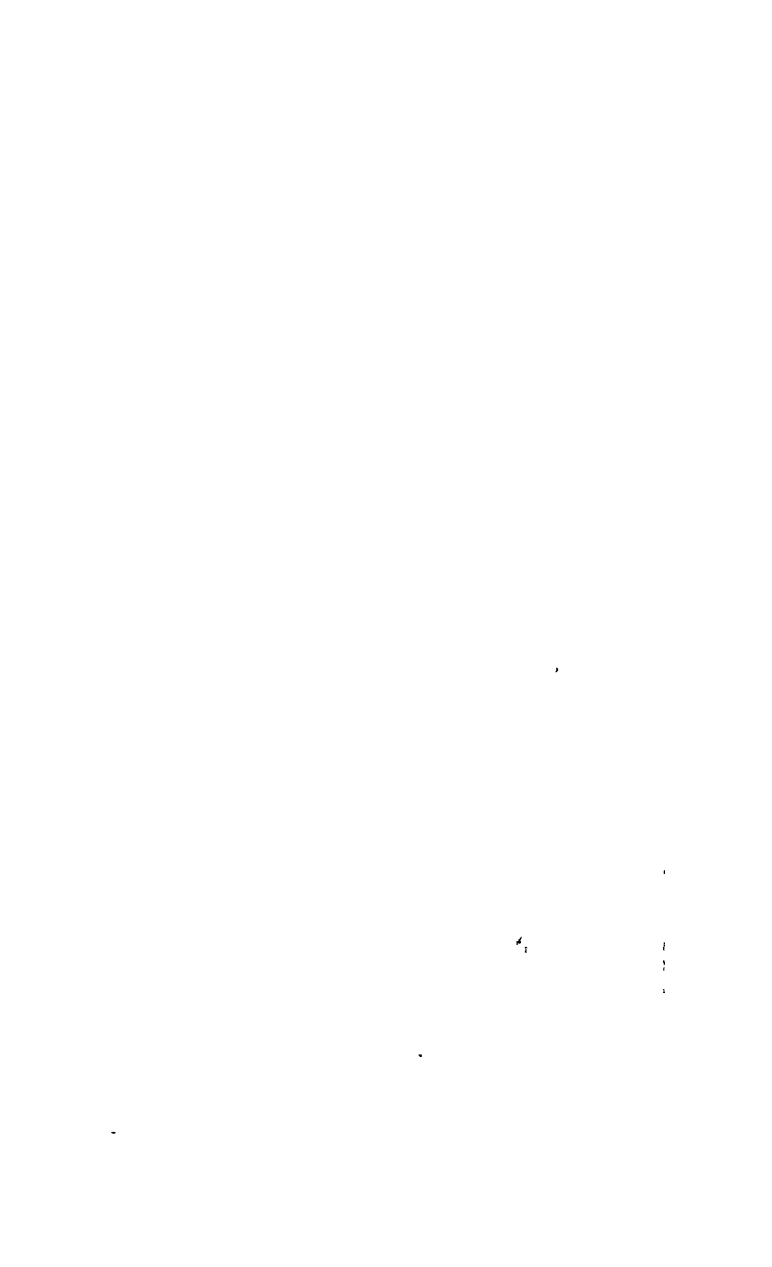
लाला मदनगोपालजी (नारायणदास लछमनदास)
कानपूर

लाला कुंजीलालजी (नारायणदास लछमनदास)
कानपूर

बाबू राधेलालजी (नारायणदास लछमनदास)
कानपूर

बाबू गोपालदासजी (नारायणदास लछमनदास)
कानपूर

इसके अतिरिक्त भागलपुर, मुजफ्फरपुर गोरखपुर, दिल्ली, आगरा, जबलपुर तथा कलकत्ता आदि भारत के सभी प्रधान २ नगरों में फर्म के ऊलन मिल की एजन्सियाँ है जहाँ ऊलन मिल का तैयार ऊनी माल अच्छे परिमाण में बिकता है और इसी प्रकार शक्कर मिल की शक्कर की माँग भी राजपूताना और मध्यभारत एवं मालवे मे खूब रहती है।

मेसर्स जगन्नाथ बीजंराज

इस फर्म का हेड ऑफिस कलकत्ता में है। इसके वर्तमान मालिक सेठ नारायणदासजी बी० ए० हैं। इसका विस्तृत परिचय चित्रों सहित इसी ग्रन्थ के द्वितीय भाग में पेज नं० ४९० में दिया गया है। यहाँ यह फर्म गल्ला, रूई, तेल की बिक्री एवं आढ़त का काम करती है। इस फर्म की यहाँ एक आइल मील तथा काटन जीनिंग फैक्टरी है। इसका यहाँ का पता कोपरगंज है। इसमें साहबगंज निवासी सेठ पन्नालाल बीजंराज का साझा है। आपका विस्तृत परिचय दूसरे भाग में बंगाल विभाग में पेज १०४ में दिया गया है। इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ जमनाधरजी चौधरी हैं।

मेसर्स नारायणदास लछमनदास

इस फर्म के आदि संस्थापक लाला रामप्रसादजी ने सम्वत् १९०९ के लगभग इस फर्म की स्थापना कानपुर में की थी। इस फर्म ने आरम्भ से ही उन्नति की ओर पैर बढ़ाया और फलत: कुछ ही वर्षों से बाद अर्थात् आज से लगभग ४० वर्ष के पूर्व फर्म ने नारायणदास आइल मिल्स नामक तेल का एक बहुत बड़ा कारखाना खोला जो आज भी अच्छी उन्नत अवस्था में काम कर रहा है। फर्म के मालिकों की व्यापार चातुरी के कारण तेल मील की अच्छी उन्नति हुई। आज इस मील में ७०० मन तेल और १५ सौ मन खली प्रति दिन तैयार होती है। तथा आधुनिक युग की यांत्रिक समग्री से सुसज्जित होने के कारण सभी प्रकार का तेल तैयार करने के अतिरिक्त यह मील 'टर्की रेड आइल' डबल वाइल्ड लिण्डसीड आइल तथा साबुन आदि सभी प्रकार के बाई प्राडक्ट्स भी स्वयं घर में ही तैयार करता है। इस प्रकार कच्चे तेलहन माल को खरीद कर अपने यहाँ तेल, तथा खली तो यह मील तैयार करता है तथा रँगाई और पेन्ट एवं वार्निश के काम के लिये बचे हुए 'निकम्मे' कहाने वाले पदार्थ का भी सदुपयोग कर बाई प्राडक्स भी तैयार करता है। फलत: यह फर्म गवर्नमेण्ट के इण्डियन स्टोर्स डिपार्टमेण्ट, डायरेक्टर आफ कण्ट्रैक्ट शिमला आदि को सभी प्रकार का तेल और खली सप्लाई करती है और इसी प्रकार भारत की प्रधान रेलवेज को भी तेल सप्लाई करती है। फर्म

के इस माल को निकालने के लिये भारत के प्रधान २ केन्द्रों में इसकी एजन्सियाँ भी हैं जिनमें तेल और खली की अच्छी माँग रहती है। इतना ही नहीं यह फर्म बहुत बड़े परिमाण में खली और तेल योरोप को एक्सपोर्ट करती है। फर्म की शाखायें कलकत्ता और खुलना में हैं।

इस फर्म के वर्तमान मालिक लाला बनारसीदासजी, लाला मदनगोपालजी, लाला कन्हैयालालजी तथा लाला कुंजीलालजी हैं। आप लोग नारनौल (राजपुताने) के आदि निवासी हैं पर बहुत अर्से से कानपुर में ही रहते हैं। आप लोग अग्रवाल वैश्य समाज के सज्जन हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

कानपुर मेसर्स—नारायणदास लछमनदास नयागंज T. A. Lakhmijee—यहाँ फर्म का हेड आफिस है। यहाँ प्रधानतया तेल का काम होता है और साथ ही खली का व्यापार भी है इसके अतिरिक्त यह फर्म बैंकिंग बिजिनेस भी करती है।

मेसर्स नारायणदास लछमनदास १६१/१ बाँगड़ बिल्डिंग हरीसनरोड T. A. कलकत्ता—Thakurjee यहाँ तेल तथा खली की बिक्री का काम होता है।

खुलना मेसर्स—नारायणदास लछमनदास T. A. Thakurjee—यहाँ तेल की बिक्री का काम होता है।

मेसर्स मातादीन भगवानदास

इस फर्म के संचालक अग्रवाल वैश्य समाज के सिरोही वाले सज्जन हैं। आप लोगों का आदि निवासस्थान कानोड़ (महेन्द्रगढ़-पटियाला स्टेट) का है। संवत् १९२५ में मौजीरामजी यहाँ आये तथा मेसर्स राधाकृष्ण मङ्गलराम की फर्म पर कार्य करने लगे। आपके पश्चात् आपके बड़े पुत्र लाला मातादीनजी भी आये और इसी फर्म पर कार्य्य करना प्रारम्भ किया। पश्चात् संवत् १८६१ में मौजीरामजी ने अपने पुत्रों के नाम से फर्म खोला। आपके दूसरे पुत्र का स्वर्गवास संवत् १९६२ में तथा आपका संवत् १९६८ में हो गया। आपके पश्चात् इस फर्म की देख रेख आपके बड़े पुत्र करने लगे। आप व्यापारिक सज्जन हैं। आपने अपनी बुद्धिमानी एवं मिलनसारी से फर्म के व्यापार में अच्छी उन्नति की है। इस फर्म पर क्रमशः माचीस, बारदाना, गल्ला, चीनी, एवम् चावल का व्यापार शुरु हुआ जो वर्तमान में भी सुचारु रूप से चल रहा है। आपने एक तेल का मिल भी खोला।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक लाला मातादीनजी हैं। आपके ओंकारमलजी तथा दयारामजी नामक दो पुत्र हैं। बड़े आपकी देख रेख में फर्म का संचालन करते हैं। छोटे भी संचालन में योग देते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

मेसर्स—मातादीन भगवानदास कलक्टरगंज कानपुर T. A. onkardaya—यहाँ बैंकिंग, चांवल, गुड़, चीनी का व्यापार तथा आढ़त का काम होता है।

मेसर्स—मातादीन भगवानदास आईल मिल बांस मण्डी, कानपुर T. A. Pureoil—यहाँ इस नाम से एक तेलका मिल है तथा तेल की बिक्री का काम होता है।

मेसर्स—ओंकारमलदयाराम कलक्टरगञ्ज, कानपुर T. A. onkardaya—यहाँ गल्ले की आढ़त का व्यापार होता है।

मेसर्स—मातादीन भगवानदास ७० बड़तल्ला स्ट्रीट कलकत्ता T. A. onkardayal—यहाँ चावल, बारदान तथा किराने की आढ़त का काम होता है।

मेसर्स रामजसमल श्रीराम

इस फर्म में मालिकों का मूल निवासस्थान नारनोल का है। आप अग्रवाल वैश्य समाज के सज्जन हैं। पहले इस फर्म के पूर्व मालिक जानकीदास बलदेवसहाय के नाम से कार्य करते थे। इस फर्म की स्थापना सम्वत् १९१३ में हुई थी। इसमें शिवबक्षजी तथा श्री नारायणजी हिस्सेदार थे। उस समय इस फर्म पर नमक का व्यापार होता था। सम्वत् १९४३ तक यह फर्म अपनी कई शाखाएँ लखनऊ, फैजाबाद आदि स्थानों में खोलकर काम करती रही। पश्चात् तीनों हिस्सेदार अलग २ हो गए जिनमें सेठ बलदेवसहायजी बलदेवसहाय रामजस के नाम से कारबार करने लगे। पश्चात् सम्वत् १९४७ में इस फर्म के भी दो भाग हो गये। जिसके नाम मेसर्स निहालचन्द बलदेवसहाय और रामजसमल श्रीराम हैं। तबसे यह फर्म स्वतंत्र रूप से व्यवसाय कर रही है। इसकी स्थापना सेठ श्रीरामजी ने की है।

ला० श्रीरामजी व्यापारकुशल और सज्जन व्यक्ति हैं। आपने अपनी फर्म के व्यवसाय को बहुत उन्नति पर पहुँचाया है। सम्वत् १९५९ में इस फर्म ने मेसर्स श्रीराम महादेव के नाम से कॉटन जीनिंग, प्रेसिंग और रोलर फ्लावर मिल्स के नाम से एक कारखाना खोला। इसी समय से गव्हर्नमेंट सप्लाय का कंट्राक्ट भी यह फर्म लेने लगी। सम्वत् १९८३ में इस फर्म के द्वारा एक तेल का कारखाना भी खोला गया। इसी प्रकार समय समय पर इसकी और भी उन्नति होती गई।

वर्तमान मे इस फर्म के मालिक लाला श्रीरामजी तथा आपके बड़े भाई के पुत्र लाला चुन्नीलालजी, सोहनलालजी और आपके छोटे भाई के पुत्र हरप्रसादजी हैं। फर्म के संचालन का कार्य्य ला० श्रीरामजी तथा ला० चुन्नीलालजी करते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

मेसर्स—रामजसमल श्रीराम नयागंज कानपुर—यहाँ बैंकिंग, रुई, गल्ला तथा आढ़त का काम होता है। यहाँ फर्म का हेड आफिस है।

मेसर्स—श्रीराम महादेवप्रसाद हरीशगंज कानपुर T. A. Ram.—यहाँ इसी नाम से काटन जिनिंग, प्रेसिंग एण्ड रोलर फ्लावर मिल है। यहाँ आटा, मैदा, सूजी, चोकड़ आदि उमदा तैयार होती हैं। यहाँ रेल्वे तथा गवर्नमेंट के कंट्राक्ट का भी काम होता है।

मेसर्स—श्रीराम हेमराज कोपरगंज, कानपुर T. A. Premier—दी न्यू प्रीमीयर आईल मिल के नाम से यहाँ तेल का मिल है। इसमें हेमराजजी मेहरा का साझा है।

मेसर्स—रामजसमल श्रीराम बस्ती— यहाँ घरु तथा आढ़त का काम होता है।

मेसर्स—रामजसमल श्रीराम नोगढ़ बाजार (बस्ती)- " "

मेसर्स—रामजसमल श्रीराम चौराचौरी (गोरखपुर)- " "

मेसर्स—रामजसमल श्रीराम शोहरतगंज (बस्ती)- " "

इस फर्म की ओर से नारनोल में एक संस्कृत पाठशाला तथा चित्रकोट में एक पाठशाला चल रही है। इसमें कुछ विद्यार्थी तो भोजन वस्त्र भी पाते हैं। शेष सिर्फ विद्याध्ययन करते हैं।

मेसर्स सादीराम गंगाप्रसाद

इस फर्म के मालिक कानोड़ (पटियाला) के निवासी हैं। आप अग्रवाल समाज के कानोड़िया सज्जन हैं। इस फर्म के पहले इसके पूर्व मालिक सेठ राधाकृष्णजी ने यहाँ आकर संवत् १९१२ मे मेसर्स राधाकृष्ण मंगतराय के नाम से फर्म की स्थापना की। उस समय इस पर नमक का व्यापार होता था। आप व्यापारकुशल और धार्मिक स्वभाव के सज्जन थे। आपने अपने हाथों से हजारों लाखों रुपैया कमाया तथा सार्वजनिक कामों में खर्च किया। आपने कानोड़ तथा कानपुर में एक २ धर्मशाला बनवाई तथा एक बहुत बड़ी रकम धर्मखाते में दी जिसकी रजिस्ट्री संवत् १९५२ मे सरकार द्वारा हो गई है। इस रकम से करीब १५ हजार रुपैया सालाना आमदनी होती है। जो धर्मखाते में खर्च की जाती है। कानोड़ तथा बनारस में आपकी ओर से एक २ विद्यालय तथा अन्न क्षेत्र भी स्थापित है, तथा आपकी ओर से कई कूप वगैरह भी बनाये गये। कहने का मतलब यह है कि आपका धार्मिक जीवन बहुत अच्छा रहा है। आप अपने ही सामने अपने ६ हों पुत्रों को अलग २ कर गये थे। जिनके नाम क्रमशः मंगतरामजी, गणपतरामजी, सादीरामजी, नन्दकिशोरजी, रामनिरंजनजी तथा हरप्रसादजी हैं। सेठ राधाकृष्णजी का स्वर्गवास संवत् १९५२ में होगया।

तभी से सेठ शादीरामजी उपरोक्त नाम से अपना
कुशल सज्जन हैं। आपने अपनी फर्म की और
का व्यापार प्रारंभ किया। संवत् १९१७ में आपने
उसकी खराब हालत थी। उसे आपने सुधारकर

शादीरामजी हैं। आपके एक पुत्र हैं। जिनका नाम
ा नाम क्रमशः ब्रजमोहनलालजी और देवीप्रसाद
ा कर रहे हैं। आप भी मिलनसार एवं सज्जन
करते हैं।
ार है—
A. Flour—यहाँ हे० आ० है। तथा गंजेज
ड़ मील रोजाना ३००० मन आटा, मैदा, सूजी,

ड़तल्ला स्ट्रीट T. A. Samganga—यहाँ सब

लाला शादीरामजी कानोड़िया (शादीराम गंगाप्रसाद) कानपूर

लाला गंगाप्रसादजी कानोड़िया (शादीराम गंगाप्रसाद) कानपूर

बाबू राधेश्याम गुप्त (जीवनलाल कन्हैयालाल) कानपूर

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार ।

मेसर्स—रामजसमल श्रीराम नयागंज कानपुर—
होता है। यहाँ फर्म का हेड आफिस है।

मेसर्स—श्रीराम महादेवप्रसाद हरीशगंज कानपुर
जिनिंग, प्रेसिंग एण्ड रोलर फ्लावर मिल
उमदा तैयार होती हैं। यहाँ रेल्वे तथा ग

मेसर्स—श्रीराम हेमराज कोपरगंज, कानपुर T.
मिल के नाम से यहाँ तेल का मिल है।

मेसर्स—रामजसमल श्रीराम बस्ती—

मेसर्स—रामजसमल श्रीराम नोगढ़ बाजार (बस्त

मेसर्स—रामजसमल श्रीराम चौराचौरी (गोरखपु

मेसर्स—रामजसमल श्रीराम शोहरतगंज (बस्ती

इस फर्म की ओर से नारनोल में एक सं
शाला चल रही है। इसमें कुछ विद्यार्थी तो भो
करते हैं।

मेसर्स सादीराम

इस समय फर्म की बहुत उन्नति हुई। तभी से सेठ शादीरामजी उपरोक्त नाम से अपना स्वतंत्र व्यापार कर रहे हैं। आप बड़े व्यापारकुशल सज्जन हैं। आपने अपनी फर्म की और भी शाखा खोली। तथा फर्म पर कई प्रकार का व्यापार प्रारंभ किया। संवत् १९१७ में आपने गंजेज फ्लावर मिल को खरीदा। उस समय उसकी खराब हालत थी। उसे आपने सुधारकर उन्नतावस्था पर पहुँचा दिया।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक लाला शादीरामजी हैं। आपके एक पुत्र हैं। जिनका नाम गंगाप्रसादजी हैं। आपके २ पुत्र हैं जिनका नाम क्रमशः ब्रजमोहनलालजी और देवीप्रसाद जी हैं। बड़े पुत्र एफ० ए० में विद्याध्ययन कर रहे हैं। आप भी मिलनसार एवं सज्जन महानुभाव हैं। आप भी फर्म का संचालन करते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

कानपुर—मेसर्स शादीराम गंगाप्रसाद T. A. Flour—यहाँ हे० आ० है। तथा गंजेज फ्लॉवर मिल का काम होता है। यह मील रोजाना ३००० मन आटा, मैदा, सूजी, और चोकड़ी तैय्यार करता है।

कलकत्ता—मेसर्स शादीराम गंगाप्रसाद २२ बड़तल्ला स्ट्रीट T. A. Samganga—यहाँ सब प्रकार की आढ़त का व्यापार होता है।

कपड़े के व्यापारी

मेसर्स गोपीनाथ छंगामल

इस फर्म की स्थापना सन् १९०१ ई० में कानपुर में हुई थी। इसके आदि संस्थापक राय साहब बाबू गोपीनाथजी मेहरोत्रा तथा बाबू छंगामलजी हैं। यह फर्म आरम्भ से ही विलायती कपड़े का थोक व्यापार करती चली आयी है अतः वर्तमान में यह फर्म कानपुर में विलायती कपड़े का थोक व्यापार करनेवाली फर्मों में प्रधान मानी जाती है। यह फर्म सभी प्रकार के विलायती कपड़े का व्यापार करने वाली मानी जाती है यही कारण है कि यह फर्म सदा अपने यहाँ विलायती कपड़े का सभी प्रकार का बहुत बड़ा स्टाक रखती है जिससे उत्तर भारत के सभी केन्द्रों को अच्छे परिमाण में माल सप्लाई करती है। विलायती कपड़े के सम्बन्ध में इस फर्म का व्यापारिक सम्बन्ध विदेश के ब्रूटेन, फ्रान्स, अस्ट्रिया, जर्मनी एवं इटली आदि कितने ही औद्योगिक केन्द्रों से है। अतः उपरोक्त विदेशी केन्द्रों में तैयार होनेवाला सभी प्रकार का विलायती कपड़ा इस फर्म से तैयार या डिलीवरी के रूप में सदा मिल सकता है। इस फर्म का हेड आफिस कानपुर में [illegible]था इस फर्म के अन्य ब्रांच आफिस दिल्ली और अमृतसर में भी हैं।

इस फर्म के वर्तमान मालिक राय साहिब बाबू गोपीनाथजी मेहरोत्रा तथा बाबू छंगामलजी कपूर हैं। आप दोनों ही महानुभाव फर्म के व्यापार संचालन में प्रधान भाग लेते हैं। आप दोनो ही खत्री समाज के सज्जन हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

कानपुर—मेसर्स गोपीनाथ छंगामल पुरानी चावल मंडी—यहाँ फर्म का हेड आफिस है तथा सभी प्रकार के फैंसी विलायती माल का व्यापार होता है तथा बहुत बड़े परिमाण में माल सदा स्टाक में रहता है।

दिल्ली—मेसर्स गोपीनाथ छंगामल क्लाथ मार्केट—यहाँ पीसगुड्स का इम्पोर्ट आफिस है और विलायती कपड़े का व्यापार होता है।

अमृतसर—मेसर्स गोपीनाथ छंगामल सेन्ट्रल बैंक बिल्डिंग्स—यहाँ पीसगुड्स का इम्पोर्ट आफिस है तथा विलायती कपड़े का व्यापार होता है।

मेसर्स गंगाधर बैजनाथ

इस फर्म के संचालकों का आदि निवास स्थान चुरू (बिकानेर) का है। आप अग्रवाल वैश्य समाज के बागला सज्जन हैं। इस फर्म की स्थापना करीब ६० वर्ष पूर्व हुई। इसके स्थापक सेठ गंगाधरजी हैं आपने यहाँ आकर कपड़े एवं गल्ले का व्यापार प्रारंभ किया। आपके दो पुत्र हुए सेठ बैजनाथजी और सेठ मदीलालजी। सेठ बैजनाथजी का अल्पायु में ही स्वर्गवास हो गया। इस समय फर्म का संचालन सेठ गंगाधरजी तथा आपके पुत्र मदीलालजी करते थे। आपके सामने ही मदीलालजी के सुपुत्र बाबू दीनानाथजी फर्म के कार्य का संचालन करने लग गये थे। आप व्यापारकुशल और चतुर सज्जन थे। आपने शुरू २ में स्वदेशी काटन मिल की सोल एजेंसी ली। इसके पश्चात् कानपुर काटन मिल की भी एजेंसी आपने ली जो वर्तमान में भी सुचारू रूप से चल रही है। अहमदाबाद के भी कई मिलों के कपड़ों की आपने एजेन्सी ली। आप कॉटन का बहुत बड़ा व्यापार करते थे। कहने का मतलब यह है कि आप व्यापार में बहुत चतुर थे। व्यापार के साथ ही साथ सार्वजनिक कार्यों में भी आप बहुत योग देते थे। आपका यहाँ बहुत सम्मान था। आप करीब २० वर्ष तक म्युनिसिपल कमीश्नर रहे। आपका सार्वजनिक कार्यों में बड़ा अनुराग रहता था। आप अपर इंडिया चेम्बर आफ कॉमर्स और यू० पी० चेम्बर आफ कॉमर्स के जनक थे। मारवाड़ी स्कूल के स्थापित करने में सब से बड़ा भाग आप ही का था। स्थानीय सनातनधर्म कमर्शियल कालेज के स्थापन में भी आप खास व्यक्तियों में से थे। शिक्षा से आपको अधिक प्रेम था। आप

सेठ दीनानाथजी बागला (गंगाधर बैजनाथ) कानपूर

बाबू गणेशप्रसादजी बागला (गंगाधर बैजनाथ) कानपूर

बाबू रामेश्वरदासजी बागला एम० एल० ए०
(गंगाधर बैजनाथ) कानपूर

बाबू हरिशङ्करजी बागला (गंगाधर बैजनाथ) कानपूर

यहाँ की कई सार्वजनिक संस्थाओं के सभापति आदि के आसन सुशोभित कर चुके थे। तथा इन संस्थाओं को काफी आर्थिक सहायता भी समय २ पर प्रदान किया करते थे। आपका स्वर्गवास संवत् १९७४ में, सेठ गंगाधरजी का संवत १९७३ और सेठ मदीलालजी का स्वर्ग-वास संवत् १९७४ में हो गया।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ बैजनाथजी के पुत्र सेठ गणेशीलालजी तथा सेठ दीवानाथजी के पुत्र सेठ रामेश्वरप्रसादजी तथा हरीशंकरजी हैं। आप तीनों ही सज्जन मिलन-सार, शिक्षित एवं सुधरे हुए विचारों के हैं। वर्तमान में आपही लोग फर्म का संचालन करते हैं।

बा० रामेश्वरप्रसादजी म्युनिसिपल कमिश्नर हैं। आप यू० पी० के मुख्य २ शहरों की तरफ से मेम्बर ऑफ लेजिस्लेटिव एसेम्बली हैं। आप यहाँ की प्रायः सभी सार्वजनिक संस्थाओं में भाग लेते रहते हैं। कई के आप मेम्बर तथा कई के सभापति आदि हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

मेसर्स—गंगाधर बैजनाथ जनरलगंज, कानपुर—T. A. Bagla यहाँ बैंकिंग तथा कपड़े का व्यापार होता है। इस फर्म पर स्वदेशी काटनमिल, कानपुर काटनमिल और अहमदा-बाद की कई मिलो के कपड़े की सोल एजेंसी है।

मेसर्स गणेशनारायन मन्नालाल

इस फर्म का हेड आफिस पडरौना (गोरखपुर) है जहाँ इस फर्म के मालिक सेठ सूरज-मलजी रहते हैं। यहाँ यह फर्म इस नाम से बम्बई वाले सर करीम भाई इब्राहिम की १४ मिलो की एजेन्ट है तथा इन मिलों के बने हुए कपड़े की बिक्री का काम करती है। इसका सचित्र परिचय पडरौना हेड आफिस के साथ दिया गया है।

मेसर्स गणेशप्रसाद दलाल

इस फर्म के मालिक अग्रवाल वैश्य समाज के सज्जन हैं। आप लोगों का आदि निवास-स्थान भोज नगर (जयपुर) का है। शुरू २ में गणेशप्रसादजी यहाँ आये तथा सूत की दलाली का व्यापार शुरू किया। इसमे आपको अच्छी सफलता मिली। पश्चात् आपने अपनी फर्म स्थापित की। आपका स्वर्गवास हो गया है। आप व्यापार-चतुर और मेधावी सज्जन थे।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक लाला गणेशप्रसादजी के भाई हनुमानदासजी, रामेश्वर-दासजी और भूरामलजी और आपके पौत्र रघुनाथप्रसादजी हैं। रामेश्वरप्रसादजी सार्वजनिक कार्यों में भी अच्छा योग देते रहते हैं। मारवाड़ी स्कूल के आप आनरेरी मंत्री हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

मेसर्स—गणेशप्रसाद दलाल जनरलगंज, कानपुर T. A. Dalal—यहाँ हेड आफिस है तथा मीलों के सूत का तथा कपड़े की एजंसी का व्यापार, आढ़त का काम तथा मिलों की एजेंसी का काम होता है ।

मेसर्स—हनुमानदास केसरीप्रसाद नौघड़ा, कानपुर—यहाँ सूत की बिक्री का काम होता है।

मेसर्स—फूलचंद गजानन्द जनरल गंज, कानपुर—यहाँ कपड़े का व्यापार होता है ।

मेसर्स ज्वालाप्रसाद राधाकृष्ण

इस फर्म के मालिकों का आदि निवासस्थान पंजाब है पर एक अर्से से आप लोग कानपुर में ही रहते हैं। आप लोग खत्री समाज के सज्जन हैं। इस फर्म की स्थापना लगभग १८ वर्ष पूर्व लाला गोपालदासजी तथा लाला बुद्धूलालजी ने कानपुर में की थी। आप लोगों ने आरम्भ में कपड़े की फुटकर बिक्री का व्यापार कर उसे उन्नत अवस्था पर पहुँचा और आज यह फर्म कपड़े का थोक व्यापार करती हैं। इसकी प्रधान उन्नति इन्हीं महानुभावों के हाथों से हुई। आप लोगो का प्रधान कार्यक्षेत्र व्यापारी वातावरण है फिर भी आप लोग सार्वजनिक कार्यों में सहयोग देने में हर्ष मानते हैं ।

इस फर्म के वर्तमान मालिक लाला गोपालदासजी तथा लाला बुद्धूलालजी हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स—सीतलप्रसाद श्यामलाल चटाई मोहाल कानपुर—यहाँ कपड़े का काम होता है।

मेसर्स—ललितराम मंगीलाल जेनरल गंज कानपुर—यहाँ कपड़े का काम होता है।

मेसर्स—ज्वालाप्रसाद राधाकृष्ण काहू की कोठी कानपुर T. A. Importer यहाँ कपड़े के इम्पोर्ट का काम होता है।

मेसर्स—ज्वालाप्रसाद राधाकृष्ण ३७ कैनिंग स्ट्रीट कलकत्ता—यहाँ कपड़े का काम होता है।

मेसर्स—छंगामल बालकृष्ण कपड़ा बाजार फरुखाबाद—यहाँ कपड़े का काम होता है।

मेसर्स जुगुलकिशोर बल्देवसहाय

इस फर्म की स्थापना लगभग ७० वर्ष पूर्व लाला जुगुलकिशोरजी ने की थी। आप लोग रस्तोगी समाज के सज्जन हैं। इस फर्म पर आरम्भ से ही कपड़े का काम हो रहा है। इस फर्म के वर्तमान मालिक लाला वृन्दावनजी हैं। आप ही फर्म का प्रधान संचालन करते हैं। इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स—जुगुलकिशोर बलदेवसहाय पुराना गुदड़ीबाजार—आपके यहाँ सभी प्रकार के कपड़े की आढ़त का काम होता है।

मेसर्स निहालचन्द बलदेवसहाय

इस फर्म के वर्तमान मालिक लाला रामानन्दजी तथा स्व० लाला बृजलालजी के पुत्र लाला जगदीशप्रसादजी, लाला श्रवणलालजी और स्व० लाला छंगामलजी के पुत्र लाला रामचन्द्रजी हैं। इस फर्म का संचालन आप ही लोग करते हैं और साथ ही पं० तुलसीरामजी और लाला मानसिंहजी जो सम्वत् १९४३ में फर्म में शामिल हुए थे फर्म के विस्तृत व्यवसाय संचालन कार्य को करते हैं। लाला रामचन्द्रजी अच्छे उत्साही होनहार नवयुवक हैं।

फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

मेसर्स—निहालचन्द बलदेवसहाय नयागंज कानपुर—यहाँ फर्म का हेड आफिस तथा बैंकिंग और रुई का काम होता है और मिलों को रुई सप्लाई की जाती है। जीनिंग का काम भी होता है।

मेसर्स—निहालचन्द बलदेवसहाय रामबाजार न्यूक्लाथ मार्केट दिल्ली—यहाँ म्योर मिल की की एजेन्सी है जहाँ इस मिल के बने कपड़े की बिक्री का काम होता है।

मेसर्स—निहालचन्द बलदेवसहाय न्यूक्लाथ मिल्स अमृतसर—म्योर मिल के कपड़े की बिक्री का काम होता है।

मेसर्स—निहालचन्द बलदेवसहाय मुलतान—म्योर मिल के कपड़े की बिक्री का काम होता है।

मेसर्स—निहालचन्द बलदेवसहाय झाँसी—म्योर मिल के कपड़े की बिक्री का काम होता है।

मेसर्स—रूपनारायण रामचन्द्र जेनरलगंज कानपुर—यहाँ एलगिन मिल के कपड़े तथा सूत की एजेन्सी है और यहीं माल बिक्री होता है।

मेसर्स—रूपनारायण रामचन्द्र न्यूकटरा दिल्ली—एलगिन मिल के कपड़े तथा सूत की बिक्री का काम होता है।

मेसर्स—रूपनारायण रामचन्द्र मुजफ्फरपुर—यहाँ एलगिन मिल के कपड़े तथा सूत की बिक्री का काम होता है।

मेसर्स—रूपनारायण रामचन्द्र अमृतसर—यहाँ एलगिन मिल के कपड़े और सूत का काम होता है।

मेसर्स—निहालचन्द बलदेव सहाय जेनरलगंज कानपुर—यहाँ म्योर मिल के कपड़े तथा सूत की बिक्री का काम होता है।

मेसर्स—निहालचन्द बलदेव सहाय नारनौल—यहाँ बैंकिंग का काम होता है। यहाँ आदि निवासस्थान है।

मेसर्स बंशीधर गोपालदास

इस फर्म के मालिक फरुखाबाद के निवासी हैं। आप लोग रस्तोगी समाज के सज्जन हैं। इस फर्म का सचित्र परिचय हमारे इसी ग्रन्थ के प्रथम भाग के बम्बई विभाग के पृष्ठ १२८ में दिया गया है। यहाँ यह फर्म कपड़े का व्यापार करती है।

मेसर्स बेगराज हरद्वारीमल

इस फर्म के मालिकों का आदि निवासस्थान भिवानी है। आप लोग अग्रवाल वैश्य समाज के बागड़िया सज्जन हैं। इस फर्म के आदि संस्थापक सेठ बेगराजजी लगभग ६० वर्ष पूर्व कानपुर आये और कपड़े का व्यापार करने लगे। आपके पुत्र लाला हरद्वारीमलजी अपने पूज्य पिताजी की देख रेख में व्यापार संचालन का काम करने लगे। आप लोगोंने फर्म को अच्छी उन्नत अवस्था पर पहुँचाया। लाला बेगराजजी का स्वर्गवास सम्वत् १९६० मे हो गया तब से आपके पुत्र लाला हरद्वारीमलजी अपनी फर्म का संचालन करने लगे। आप व्यापारकुशल सज्जन थे। आपका स्वर्गवास सम्वत् १९६७ मे हुआ और फर्म के संचालन कार्य को आपके पुत्र लाला बद्रीदासजी ने सम्हाला। आपने बम्बई, कलकत्ता, दिल्ली आदि कितने ही व्यापारिक केन्द्रों में अपनी फर्में खोलीं जो आज भी पूर्ववत् व्यापार कर रही हैं। आपने अपनी फर्म को अच्छी उन्नति दी है। इस समय इस फर्म के मालिक लाला बद्रीदासजी बागड़िया हैं। आप धार्मिक व्यक्ति हैं आपने एक धर्मशाला, बगीचा, गंगाजी का घाट तथा मन्दिर आदि स्थानीय आनन्देश्वर मंदिर परसर घाट पर बनवाये हैं। आपने भिवानी में भी जलकुण्ड तैयार कराया है। यहाँ की धर्मशाला में सदाव्रत की व्यवस्था भी है। आपने आनन्देश्वरजी के मंदिर का जीर्णोद्धार कराया है।

फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

मेसर्स—बेगराज हरद्वारीमल जेनरलगञ्ज कानपुर—यहाँ फर्म का हेड आफिस है। यहाँ कपड़ा और बैंकिंग का काम होता है।

मेसर्स—बद्रीदास बागड़िया जेनरलगंज कानपुर T. A. Ramunkar—यहाँ कपड़े के इम्पोर्ट का काम होता है।
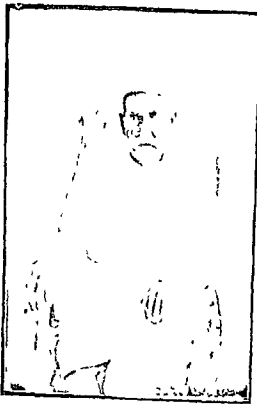
लाला विहारीलालजी (विहारीलाल रामचरन), कानपुर

बाबू गणेशनारायणजी लाखोटिया (मनोहरदास रामप्रसाद) कानपुर

बाबू रामरतनजी गुप्त (विहारीलाल रामचरन) कानपुर

बाबू हरिकृष्णजी गुप्त (मनोहरदास रामप्रसाद) कानपुर

मेसर्स—बद्रीदास बागड़िया २०१ हरीसन रोड कलकत्ता T. A. Anandeswar यहाँ कपड़ा और आढ़त का काम होता है।

मेसर्स—बद्रीदास बागड़िया न्यू क्लाथ मार्केट दिल्ली—यहाँ विलायती कपड़े की एजेन्सी का काम होता है।

मेसर्स—वेगराज जुगलकिशोर चम्पागली बम्बई नं० २ T. A. Punchkuti.—यहाँ कपड़े की आढ़त का काम होता है।

मेसर्स—बद्रीदास गयाप्रसाद जनरलगंज, कानपुर—यहाँ देशी कपड़े का व्यापार होता है।

मेसर्स बिहारीलाल रामचरन

इस फर्म की स्थापना लाला जग्गूमलजी ने लगभग ७५ वर्ष पूर्व कानपुर में की थी। इस फर्म पर आरम्भ से ही कपड़े का थोक व्यापार होता आ रहा है। इस फर्म के आदि संस्थापक लाला जग्गूमलजी ने फर्म के व्यापार को उन्नत अवस्था में पहुँचाया पर आपके पुत्र लाला बिहारीलालजी ने अपने व्यापारकौशल से फर्म को नगर की समुन्नत फर्मों की उच्च श्रेणी पर पहुँचाया। आपके पुत्र बाबू रामरतनजी गुप्त भी व्यापार में अच्छा भाग लेते हैं। आप सुधरे हुए विचारों के एक होनहार नवयुवक हैं। आप यू० पी० चेम्बर ऑफ कामर्स की एक्जीक्यूटिव कमेटी के सदस्य, कानपुर कपड़ा कमेटी के सीनियर वायस चेयर मैन, यू० पी० ट्रेड यूनियन के कैशियर तथा कानपुर म्यूनिसिपलबोर्ड के सदस्य हैं।

वर्तमान में इस फर्म के मालिकों में लाला बिहारीलालजी, लाला रामचरनजी, और लाला रामकिशनजी ही प्रधान हैं। आप लोग अग्रवाल वैश्य समाज के सज्जन हैं और कानपुर के आदि निवासियों में है। इस फर्म के विस्तृत व्यापार का संचालन लाला बिहारीलालजी ही प्रधान रूप से करते हैं।

इस फर्म की देख रेख में नगर में कपड़े की ११ फर्में तथा गल्ले की १ फर्म चल रही है। जहाँ थोक व्यापार होता है। इसके अतिरिक्त कपड़े के इम्पोर्ट का एक पीसगुड्स इम्पोर्ट आफिस भी है। इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१ मेसर्स बिहारीलाल रामचरन जेनरल गंज कानपुर T. A. Gopal—यहाँ फर्म का हेड आफिस है तथा बैंकिंग, लैण्ड होल्डर्स एवं गवर्नमेंट कन्ट्राक्ट का व्यापार भी होता है।

२ मेसर्स—चंद्रिकाप्रसाद रामस्वरूप जेनरल गंज कानपुर—यहाँ कपड़े का थोक व्यापार होता है तथा जापानी और देशी मिलों के माल का व्यापार भी होता है। यह फर्म कमीशन एजेन्ट के रूप में काम करती है। यहाँ मलमल आदि का काम होता है।

३ मेसर्स बुलाकीदास रामगोपाल जेनरलगंज कानपुर—यहाँ फैन्सी कपड़े का काम होता है।

४ मेसर्स रामचरन रामेश्वर जेनरलगंज कानपुर—यहाँ भारतीय मिलों का माल तथा विलायती माल सफेद बाना जैसे मलमल और खास तौर से छींट आदि का व्यापार होता है।

५ मेसर्स—रामगोपाल रामप्रसाद जेनरलगंज कानपुर—यहाँ कमीशन एजेन्ट के रूप में फर्म काम करती है। यहाँ देशी मिलों के कपड़े का काम होता है।

६ मेसर्स—बलिभद्रचंद मुन्नालाल जेनरलगंज कानपुर—यहाँ कपड़े का थोक काम होता है।

७ मेसर्स—हनुमानदास सूरजप्रसाद जेनरलगंज कानपुर—यहाँ फैन्सी कपड़े का व्यापार होता है।

८ मेसर्स—सीताराम श्यामसुन्दर जेनरलगंज कानपुर—यहाँ धोती जोड़े का थोक व्यापार होता है।

९ मेसर्स भगवानदास काशीप्रसाद जेनरलगंज कानपुर—यहाँ कमीशन एजेन्ट के रूप में फर्म कपड़े का काम करती है।

१० मेसर्स—मत्तूलाल बलदेवप्रसाद जेनरलगंज कानपुर—यहाँ कमीशन एजेन्ट के रूप में फर्म कपड़े का व्यापार करती है।

११ बाबूराम सीताराम जेनरलगंज कानपुर—यहाँ कमीशन एजेण्ट के रूप में फर्म कपड़े का व्यापार करती है।

मेसर्स—बनवारीलाल राम भरोस कलेक्टरगंज कानपुर—यहाँ गल्ला और रुई का व्यापार होता है और आढ़त का काम भी फर्म करती है।

मेसर्स—बनवारीलाल रामभरोस कलेक्टरगंज कानपुर—यहाँ एक दुकान चावल की है।

मेसर्स—धीरजलाल रामप्रसाद जेनरलगंज कानपुर T. A. Kishan. यहाँ फर्म का कपड़ा संबंधी इम्पोर्ट आफिस है। यहाँ कोबी (जापान) की मेसर्स सी. टशमेश्रो एण्ड को० तथा मैनचेस्टर की मेसर्स सर जेकब बेहमन् एण्ड सन्स की एजेन्सी भी है। इस इम्पोर्ट आफिस की एक शाखा कलकत्ता और दूसरी दिल्ली में है।

मेसर्स—धीरजलाल रामप्रसाद १९१ हरीसन रोड कलकत्ता—यहाँ कानपुर वाले इम्पोर्ट आफिस का ब्राँच आफिस है।

मेसर्स—धीरजलाल रामप्रसाद चाँदनी चौक दिल्ली—यहाँ कानपुर वाले इम्पोर्ट आफिस का ब्राँच आफिस है।

बाबू रामरतनजी गुप्त चटाई मोहाल कानपुर—यहाँ मालिकों का निवासस्थान है और पास ही एक विशाल मन्दिर है जहाँ प्रतिवर्ष श्रावण और जन्माष्टमी पर अच्छा उत्सव होता है।

सेठ केदारनाथजी (भवानीप्रसाद गिरधरलाल) कानपुर।

बाबू द्वारकानाथजी (भवानीप्रसाद गिरधरलाल) कानपुर।

बाबू विशम्भरनाथजी (भवानीप्रसाद गिरधरलाल) कानपुर।

बाबू बलभद्रप्रसादजी (भवानीप्रसाद गिरधरलाल) कानपुर।

मेसर्स भवानीप्रसाद गिरधरलाल

इस फर्म की स्थापना सेठ गिरधरलालजी द्वारा सम्वत् १९२७ में हुई। पहले इस फर्म के संचालक मेसर्स बिहारीलाल भवानीप्रसाद के नामसे देशी कपड़े एवं सूत का व्यापार करते थे। इस समय भी इस फर्म पर अपना पुराना व्यवसाय देशी कपड़ा एवं सूत का होता है। इस फर्म की सेठ गिरधरलालजी ने अच्छी उन्नति की। आप अग्रवाल वैश्य समाज के सज्जन थे। आपका खास निवासस्थान टांडा (फैजाबाद) का है। आपके २ भाई और हैं जिनके नाम रामेश्वरप्रसादजी तथा विशम्भरनाथजी हैं। सेठ गिरधरलालजी का स्वर्गवास सम्वत् १९७२ में हो गया।

आपके पश्चात् फर्म के संचालन का कार्य आपके भ्राता एवम् आपके पुत्र केदारनाथजी वलभद्रप्रसादजी एवम् द्वारकानाथजी करते हैं। आप लोगो ने फर्म के व्यवसाय को बहुत उन्नतावस्था में पहुँचाया। आपने सम्वत् १९७३ में कानपुर में तथा सम्वत् १९७८ में बटुवल (नेपाल) और नेपालगंज में फर्म खोले तथा टांडा में छपाई का कारखाना खोला, जिसमें १२५ मजदूर रोजाना कार्य करते हैं। इसी प्रकार अपने व्यापार को शनैः २ उन्नति देते हुए सम्वत् १८८० में आपने कानपुर काटन मिल के कपड़े की एजेन्सी ली। इसके पश्चात् रामचन्द्र काटन मिल हाथरस तथा श्री गङ्गा काटन मिल्स मिर्ज़ापुर के सूत की विक्री की एजंसी इस फर्म पर हुई। इसी प्रकार अहमदाबाद के भी कई मिलों के माल की सेलिग एजेन्सी इस फर्म पर है। आप लोगों ने कानपुर में ही किराने का व्यवसाय करने के लिए एक किराने की भी फर्म खोली। इसी प्रकार आप लोगों ने अपने व्यवसाय को बहुत उन्नतावस्था में पहुँचाया। वर्तमान में आप लोग ही इस फर्म के मालिक हैं।

बा० वलभद्रप्रसादजी टांडा म्युनिसिपल कमेटी के चेअरमेन रह चुके हैं। आप वर्तमान में ऑनरेरी मेजिस्ट्रेट हैं। यू. पी. चेम्बर आफ़ कामर्स के आप मेम्बर हैं। इसी प्रकार कई संस्थाओं मे आपका सहयोग है।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

टांडा (फैजाबाद)—मेसर्स भवानीप्रसाद गिरधरलाल—यहां हेड आफिस है। तथा बैंकिंग, जमींदारी, कपड़ा, सूत एवम् गल्ले का व्यापार और आढ़त का काम होता है। यहाँ आपका एक कारखाना है जिसमे १२५ आदमी कपड़े की छपाई का काम करते हैं।

कानपुर—मेसर्स भवानीप्रसाद गिरधरलाल हटियागंज, T. A. Bhawani–यहाँ बैंकिंग, कपड़ा, सूत एवम् किराने की आढ़त का व्यापार होता है। इस फर्म में कई मिलों की कपड़े एवम् सूत की सेलिग एजंसियाँ हैं।

बटुबल (नेपाल)—मेसर्स भवानीप्रसाद गिरधरलाल—यहाँ कारखाने का छपा हुआ कपड़ा एवम् मिलों के कपड़े का व्यापार होता है।

नेपालगंज (नेपाल)—मेसर्स भवानीप्रसाद गिरधरलाल—यहाँ भी छपे हुए कपड़े एवम् मिल के कपड़े का व्यापार होता है।

देहली—मेसर्स भवानीप्रसाद गिरधरलाल न्यू क्लाथ मार्केट—यहाँ कानपुर काटन मिल के कपड़े की बिक्री का काम होता है।

मेसर्स मनोहरदास रामप्रसाद

इस फर्म के मालिक मूल निवासी बगड़ (जयपुर) के हैं आप माहेश्वरी समाज के लाखोटिया सज्जन हैं। करीब ९० वर्ष पूर्व इसके स्थापक लाला रूपरामजी यहाँ आये तथा मेसर्स रूपराम दीनानाथ के नाम से शक्कर के व्यापार के लिये फर्म खोली। रूपरामजी का स्वर्गवास हो गया। आपने कलक्टरगंज में एक श्रीरामचन्द्रजी का सुन्दर मन्दिर तथा गंगाघाट बनवाया। आपके दो पुत्र हुए। लाला मनोहरदासजी और लाला रामप्रसादजी। संवत् १९५५ में आपने अपनी फर्म का नाम बदल कर उपरोक्त नाम किया। इस फर्म पर कपड़े तथा मिलों को रुई सप्लाय करने का काम शुरू हुआ। आपने इस फर्म की अच्छी उन्नति की। मनोहरदासजी का स्वर्गवास संवत् १९६४ में हो गया। आपके पश्चात् इस फर्म के कार्य का संचालन आपके छोटे भाई लाला रामप्रसादजी देखने लगे। आपका भी संवत् १९७५ में स्वर्गवास हो गया। इसके पश्चात् लाला रामप्रसादजी के पुत्र लाला रामेश्वरदासजी ने कार्य संभाला। पर आपका भी संवत् १९७८ में शरीरान्त हो गया। इस समय मनोहरदासजी के दत्तक पुत्र ला० गणेशनारायणजी नाबालिक थे। अतएव फर्म के संचालन का कार्य मनोहरदासजी के भानजे ला० चुन्नीलालजी बागड़ ने संभाला।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक गणेशनारायणजी तथा रामेश्वरप्रसादजी के पुत्र बाबू हरीकृष्णजी तथा बाबू कैलाशनाथजी हैं। आप दोनों अभी पढ़ते हैं। बाबू गणेशनारायणजी फर्म का संचालन करते हैं। आप मिलनसार, मेधावी, एवम् सज्जन पुरुष हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कानपुर—मेसर्स मनोहरदास रामप्रसाद जनरलगंज, T. A. Lakhotia—यहाँ बैंकिंग, कपड़ा तथा किराने का व्यापार तथा आढ़त का काम होता है।

कानपुर—मेसर्स मनोहरदास रामप्रसाद कलक्टर गंज—यहाँ रुई तथा गल्ले का व्यापार तथा आढ़त का काम होता है।

मेसर्स रामनारायन किशनदयाल

इस फर्म का हेड आफिस बम्बई है। जहाँ इसके वर्तमान मालिक सेठ घनश्यामदासजी रहते हैं। बम्बई में यह फर्म मेसर्स चेनीराम जेसराज के नाम से व्यापार करती है। यहाँ यह फर्म टाटा की मिलों की ऐजेन्ट है अतः टाटा की मिलों का बना कपड़ा यहाँ वेंचती है। इसका सचित्र परिचय ग्रन्थ के प्रथम भाग के बम्बई विभाग में पृष्ठ ४५ पर दिया गया है।

मेसर्स रामकुमार रामेश्वरदास

इस फर्म के मालिक नवलगढ़ (राजपुताने) के आदि निवासी हैं। आप लोग अग्रवाल वैश्यसमाज के सज्जन हैं। इस फर्म की स्थापना लगभग २६ वर्ष पूर्व सेठ रामकुमारजी के पूर्वजों ने की थी पर फर्म का प्रधान संचालन आरम्भ से आप ही करते आ रहे हैं। आप की फर्म पर यों तो सभी प्रकार के कपड़े का घरू बिक्री और आढ़त का काम बहुत बड़ी तादाद में होता है पर साथ ही बुढ़ानपुर की मील तथा लखनऊ की गुरुसहाय मिल के माल की एजन्सी भी है। इस फर्म के मालिक सेठ रामकुमारजी, तथा आपके भ्राता सेठ रामेश्वरदासजी तथा आपके अन्य भ्राता लोग हैं। सेठ रामकुमारजी लगभग १३ वर्ष तक स्थानीय म्यूनिसिपलबोर्ड के कमिश्नर रहे हैं। आप स्थानीय फाइनेन्स कमेटी के चेयरमैन तथा यहाँ के यूनाइटेड चेम्बर आफ कामर्स के वायस चेयरमैन, कानपुर कपड़ा कमेटी के चेयरमैन तथा मारवाड़ी हाईस्कूल के सेक्रेटरी हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

मेसर्स—रामकुमार रामेश्वरदास काहू की कोठी T. A. Newatia कानपुर—यहाँ सभी प्रकार के कपड़े की बिक्री तथा आढ़त का बहुत बड़ा काम होता है।

नेवटिया आइल मिल्स गाजीपुर—यहाँ इस फर्म का एक आइल मील तथा आइस फैक्टरी है।

इसके अतिरिक्त कलकत्ता तथा बम्बई आदि अन्य स्थानों पर भी फर्म की शाखायें है। जहाँ फर्म कपड़े का काम करती है।

मेसर्स लक्ष्मीनारायण गिरधारीलाल

इस फर्म के मालिकों का मूल निवास स्थान भिवानी (पंजाब) का है। आप लोग अग्रवाल वैश्यसमाज के बजाज सज्जन हैं। यह फर्म करीब २० वर्षों से इसी नाम से कपड़े का कारबार कर रही है। इसकी स्थापना से० लक्ष्मीनारायणजी ने की। शुरू २ में इस पर

कपड़े का व्यापार प्रारम्भ किया गया जो वर्तमान में भी सुचारु रूप से हो रहा है। इस फ़र्म पर न्यू विक्टोरिया मिल्स कानपुर की सोल एजंसी है तथा अहमदाबाद के सारवामिल और जुबली मिल तथा रणछोड़ भाई मिल के कपड़े का व्यापार होता है। इस फर्म की विशेष तरक्की सेठ लक्ष्मीनारायणजी ही के द्वारा हुई। आप ही वर्तमान में फर्म के प्रधान संचालक हैं। आपके गिरधारीलालजी नामक एक पुत्र हैं। आप भी अपने पिताजी को व्यवसाय संचा· लन में योग देते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

कानपुर—मेसर्स लक्ष्मीनारायण गिरधारीलाल T. A. Girdhari—यहाँ न्यू विक्टोरिया मिल कानपुर एवं अहमदाबाद की मिलों के कपड़े एवम् सूत का व्यापार होता है। न्यू० वि० मि० की यह फर्म सोल एजंट है।

मेसर्स लक्ष्मीनारायण प्रह्लाददास

इस फर्म के वर्तमान संचालक सेठ लक्ष्मीनारायणजी हैं। आप माहेश्वरी वैश्य समाज के महानुभाव हैं। इस फर्म की और भी कई शाखाएँ हैं जो भिन्न २ स्थानों में भिन्न २ व्या· पार करती हैं। यह फर्म जेनरलगंज में है जहाँ कपड़े का व्यापार तथा कमीशन का काम होती है। यहाँ का तार का पता Layal है। इसका अधिक परिचय इस ग्रन्थ के प्रथम भाग के मध्य भारत विभाग पृष्ठ ४२ में दिया गया है।

मेसर्स वासुदेव शिवकरणदास

इस फर्म के वर्तमान मालिक बाबू सूर्यप्रकाशजी तथा बाबू गजानन्दजी हैं। इसका हेड आफिस फरुखाबाद है अतः विशेष परिचय वहीं दिया गया है। यहाँ यह फर्म काहू की कोठी में है और इसका तारका पता Khemaka है। यहाँ यह फर्म बैंकिंग तथा कमीशन एजेण्ट का काम करती है तथा अमदाबाद की कपड़े की मिलों की एजेंट भी है जिसका बना कपड़ा यहाँ बेंचती है।

बैङ्कर्स एण्ड कण्ट्राक्टर्स

मेसर्स इच्छाराम रामदयाल

इस फर्म के मूल संस्थापक स्व० बाबू इच्छारामजी हैं। आपने लगभग १५० वर्ष पहले अपने मूलनिवास-स्थान भगवन्त नगर (उन्नाव) में बर्तनों का व्यापार प्रारम्भ किया था। इसमें आपको अच्छी सफलता मिली। जिस समय अंग्रेजों ने कानपुर में अपनी बस्ती बसाई उस समय आपने भी अपनी शाखा कानपूर में खोल दी। बाबू इच्छारामजी का स्वर्गवास होने के पश्चात् इसके मालिक अलग २ होगये। तब से बाबू देवीदीनजी और बाबू रामप्रसादजी ने अपना व्यापार उपरोक्त नाम से प्रारम्भ कर दिया। कुछ समय पश्चात् इस फर्म ने अपने धातु वाने के व्यवसाय को बन्दकर बैङ्किंग व्यवसाय को उत्तेजित किया। बाबू देवीदीनजी और बाबू रामप्रसादजी के पश्चात् इस फर्म का प्रधान संचालन बाबू गोविन्दलालजी उर्फ राजा, तथा आपके छोटे भ्राता बाबू शाहिजादा लालजी के हाथों में आया। बाबू शाहिजादा लालजी के हाथों से इस फर्म के बैङ्किङ्ग व्यापार को बहुत तरक्की मिली। आपके समय में इस फर्म ने अच्छी ख्याति प्राप्त की। इस टाइम में इस फर्म की जमींदारी भी बहुत विस्तीर्ण होगई। बाबू बालगोविन्द तथा बाबू शाहिजादेलाल के स्वर्गवास के पश्चात् इस फर्म का संचालन भार, बाबू बालगोविन्दजी उर्फ राजा के एकमात्र पुत्र बाबू जुगलकिशोरजी के हाथ मे आया। आपके हाथो से भी इस फर्म के बैङ्किंग व्यवसाय और जमीदारी को बहुत तरक्की मिली। आपने अपने पूज्यपिता और चचा की स्मृति में सनातन धर्म कॉलेज का दर्शनीय हॉल निर्माण करवाकर उसमें दोनो महानुभावो के तैलचित्र लगवाये।

इस फर्म के वर्तमान मालिक बाबू जुगलकिशोरजी तथा आपके पुत्र बाबू मनमोहनलालजी, बाबू शिवमोहनलालजी, बाबू गुरु प्रसादजी तथा बाबू गुरु चरणजी हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

कानपूर—मेसर्स इच्छाराम रामदयाल बैङ्कर्स मालरोड—यहाँ पर बैङ्किङ्ग और जमींदारी का बहुत बड़ा काम होता है।

पण्डित गुरुप्रसादजी शुक्ल

आप कान्यकुब्ज-ब्राह्मण समाज के शुक्ल सज्जन हैं। आपके पूर्वज जि० उन्नाव, तहसील सादीपुर गांव पट्टी उसमान के रहनेवाले थे। इस शुक्ल परिवार के पूर्व पुरुष पं० बद्रीनाथजी व्यापारिक क्षेत्र में पूरी गति विधि रखते थे। इस सम्बन्ध में आपने सरकारी

सर्विस का काम भी हाथ में लिया और कमसरियट के एजेन्ट हो कर कलकत्ते गये जहाँ बहुत समय तक आप सफलतापूर्वक अपना कार्य करते रहे। आपके बाद आपके भतीजे पं० विन्द्राबनजी शुक्ल ने आपके काम को संभाला। इन्ही विन्द्राबनजी शुक्ल के पुत्र पं० गुरुप्रसादजी शुक्ल हैं। आपने अपने पिता श्री को व्यापार कार्य संचालन में सहयोग देना आरम्भ कर दिया और उनके सामने ही सब कार्य संभाल लिया, फलतः स्वयं संचालन कार्य करने लगे आपने कानपुर का प्रसिद्ध कैलास मंदिर बनवाया जो इस नगर का एक दर्शनीय स्थान है। इसीके समीप दुर्गाजी का मंदिर भी निर्माण कराया। आपने अपने पूर्वजो के निवास-स्थान में भी एक विशाल मंदिर बनवाया है। इस प्रकार धार्मिक जीवन व्यतीत करते हुए आप का सम्वत् १९३९ में स्वर्गवास हुआ। आपके पुत्र न था अतः आपके नवासे (दोहिते) पं० शिवशंकर लालजी तथा पं० दुर्गाप्रसादजी वाजपेई आपके उत्तराधिकारी हुए और वर्तमान में आप दोनों ही महानुभाव पं० गुरुप्रसादजी शुक्ल की स्टेट के मालिक हैं। पं० गुरुप्रसादजी ने मंदिरों के खर्च के लिये बहुत बड़ी स्टेट धर्मार्थ में लगा दी है जिसका प्रबन्ध निरीक्षण भी आप लोग ही करते हैं। आप लोगों के यहाँ जमींदारी तथा मकानों का काम है।

पं० दुर्गाप्रसादजी के पुत्र पं० गंगाप्रसादजी वाजपेई सुशिक्षित और बहुत ही योग्य महानुभाव हैं। स्टेट का संचालन आप ही करते हैं। आप स्थानीय कण्टूनमेन्ट के मेम्बर, कण्टूनमेन्ट के आनरेरी मैजिस्ट्रेट तथा कान्यकुब्ज हाईस्कूल के मैनेजर हैं।

पं० दुर्गाप्रसादजी ने दुर्गा पुस्तकालय खोला है।

पं० गुरुप्रसादजी शुक्ल कानपुर—यहाँ बैंकर्स तथा लैण्ड लार्ड एवं प्रापर्टी होल्डर का काम होता है।

मेसर्स मुन्नालाल कम्पनी

इस फर्म के मालिक अग्रवाल वैश्य समाज के गर्ग सज्जन हैं। आप लोग यहीं के आदि निवासी हैं। इस फर्म की स्थापना लाला मुन्नालालजी ने सन् १८७८ ई० में की और अपने ही नाम से 'वेस्ट काटन' का व्यापार करने लगे। आपको अल्पकाल में ही इस व्यवसाय में अच्छी सफलता मिली। आपने अपने व्यापार को विस्तृत एवं सम्मुन्नत बनाया तथा 'वेस्ट काटन' के व्यवसाय के अतिरिक्त कंट्राक्टर, बैंकर्स और कितने ही प्रकार के कमीशन के व्यापार भी क्रमशः आपने आरम्भ किये और उन्हें सफल बनाया। आपने व्यापार की उन्नति कर स्थायी सम्पत्ति भी अच्छी बना ली तथा ख्याति भी अच्छी उपार्जित की। आपका स्वर्गवास सन् १९१८ में हुआ। आपके चार पुत्र हैं जो वर्तमान में इस फर्म का संचालन करते हैं। इनके नाम क्रमानुसार लाला लक्ष्मीनारायणजी, लाला चुन्नीलालजी, लाला चंदनलालजी तथा लाला राम-

नारायणजी हैं। आप सभी अपने पिता के समान व्यापार संचालन में दक्ष हैं। आप लोगों के उद्यम और व्यापार कौशल का ही यह परिणाम है कि फर्म क्रमशः उन्नति की ओर शीघ्रता से बढ़ रही है। आप लोगों ने मुन्नालाल स्पिनिंग एण्ड वीविंग मिल्स, तथा मुन्नालाल आइल जीनिंग एण्ड फ्लोर मिल्स नामक दो मिल्स खोले हैं। तथा अपने पिताजी के नाम से मुन्नालाल स्ट्रीट नामक विशाल रास्ता बनवाया है। लाला लक्ष्मीनारायणजी ने एक बहुत भारी इमारत चुन्नीगंज के नाम से तैयार करायी है। आप लोग व्यापार के अतिरिक्त अपने जातीय सुधार कार्य की ओर भी काफी ध्यान देते हैं। लाला चुन्नीलालजी गर्ग अग्रवाल सभा के सभापति और लाला रामनारायणजी उसके जेनरल सेक्रेटरी हैं। लाला रामनारायणजी बी०ए० स्थानीय डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के चेअरमैन तथा स्थानीय म्यूनिसिपल बोर्ड एवं इम्प्रूवमेण्ट के सुयोग्य सदस्य हैं। यह परिवार कानपुर का एक प्रतिष्ठित परिवार है। इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स—मुन्नालाल कम्पनी परेट कानपुर—यहाँ बैंकिंग, कंट्राक्टिंग, एवं हाउस प्रापर्टी का काम होता है। यह फर्म दो तीन मीलों की मैनेजिंग एजंट भी है।

मेसर्स मुन्नालाल एण्ड सन्स

इस फर्म की स्थापना तथा विशेष उन्नति स्व० बाबू नन्दनलालजी के पुत्र बाबू मदनलालजी के हाथों से हुई। आपके पश्चात् आपके पुत्र बाबू गुरुनारायणजी और राय साहिब गोविन्द प्रसादजी ने इसको और भी उन्नति की ओर अग्रसर किया। आपने सरकार से डाक पहुँचाने, तालाब और नदी खुदवाने के ठेके लिए और उसमें अच्छी सफलता प्राप्त की। अभी हालही में इस फर्म ने शारदा कैनाल का ठेका बड़े सन्तोषजनक रूप में पूरा किया है। इसी प्रकार इस फर्म ने आबकारी के ठेके भी लिए, मध्य भारत में शराब चुआने की भट्टी भी बनवाई। तथा काबुल वार के समय में लाला गुरुनारायणजी ने परचेजिंग एजण्ट का काम किया। इन सब बातो से इस फर्म ने बहुत तरक्की की।

इस समय इस फर्म के मालिक रायसाहिब गोपीनाथजी मेहरोत्रा, तथा आपके भाई रायसाहिब बाबू बलभद्रदासजी, रायसाहिब बाबू सिद्धनाथजी, रायसाहिब बाबू सुखलालजी, बाबू जंगबहादुरजी तथा बाबू मंगल सेनजी हैं। इस फर्म का प्रधान संचालन बाबू गोपीनाथजी और सब भाइयो के सहयोग से करते हैं।

इस परिवार ने सन् १८८८ में स्थानीय गुरुनारायण हाई स्कूल की स्थापना की। स्कूल

को मिलनेवाली सरकारी आर्थिक सहायता के अतिरिक्त, यह फर्म भी काफी आर्थिक सहायता पहुँचाती है।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कानपुर—मेसर्स मुन्नालाल एण्ड सन्स चौक—यहाँ फर्म का हेड आफिस है तथा मालिकों का निवासस्थान है।

कानपुर—मेसर्स मुन्नालाल एण्ड सन्स मालरोड—यहाँ मोटर की ऐजेन्सी है तथा मोटर पार्ट्स और ऐसेसरीज का व्यापार होता है।

झाँसी—मेसर्स मुन्नालाल एण्ड सन्स सदर बाजार—यहाँ फर्म का ब्रांच आफिस है। जहाँ मोटर की ऐजेन्सी, मोटर पार्ट्स और मोटर ऐसेसरीज का व्यापार होता है। यहाँ की इम्पीरियल बैंक ब्रांच की यह फर्म खजानची है तथा झाँसी इलेक्ट्रिक सप्लाई स्कीम का काम भी है।

मेसर्स रेवतीराम प्रयागनारायण तिवारी

आप लोग कान्यकुब्ज ब्राह्मण समाज के तिवारी सज्जन हैं। लगभग १०० वर्ष पूर्व पं० रेवतीरामजी तिवारी ने गवर्नमेण्ट कमसरियट का काम आरम्भ किया था। इस कार्य में आप को अच्छी सफलता मिली और परिणामतया सम्पत्ति के साथ २ प्रतिष्ठा भी आपको अच्छी प्राप्त हुई। आपने श्रीवैष्णव धर्म पद्धति के अनुसार सं० १९०४ में श्रीरुक्मिणी कृष्ण भगवान का एक मंदिर पटकापुर में बनवाया। आपका स्वर्गवास गंगातट पर सम्वत् १९१७ में हुआ और इसके बाद कानपुर के प्रसिद्ध वैकुण्ठ मंदिर की आधारशिला महाराज प्रयागनारायणजी ने सम्वत् १९१८ में रक्खी। महाराज प्रयागनारायणजी ने गवर्नमेण्ट खजाना तथा रेलवे व कमसरियट के बहुत बड़े कार्य संचालित किये और अच्छी प्रतिष्ठा तथा सम्पत्ति उपार्जित की। आपने अपने पूज्य पिताजी की इच्छानुसार स्थानीय वैकुण्ठ मंदिर के कार्य को पूरा करा प्रतिष्ठा कराई और उसकी सुव्यवस्था के लिये काफी रियासत लगा दी। इस प्रकार गौरवमय जीवनोपभोग कर आप संवत् १९३८ में स्वर्गवासी हुए। आपके बाद आपके पुत्र महाराज गंगानारायण तिवारी तथा महाराज जमुनानारायणजी तिवारी ने फर्म के विस्तृत कारभार को संभाला। आप लोगो ने अपने यहाँ के पुराने व्यापार के अतिरिक्त हवड़ा ब्रिज जैसे बड़े कन्ट्राक्ट का काम किया। पं० गंगानारायणजी तिवारी आनरेरी मैजिस्ट्रेट रहे हैं। आपके पुत्र महाराज सूर्यनारायणजी तिवारी तथा महाराज जमुनानारायणजी के पुत्र महाराज शेषनारा-

पं० सरयूनारायणजी तिवारी (रेवतीराम प्रयागनारायण) कानपूर
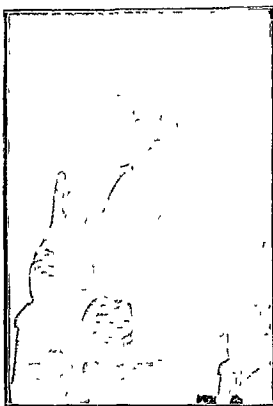
पं० शेषनारायणजी तिवारी (रेवतीराम प्रयाग-नारायण) कानपूर

पं० नित्यानन्दजी तिवारी (रेवतीराम प्रयाग-नारायण) कानपूर

चपड़े के व्यापारी

मेसर्स शालिगराम कल्लूमल

इस फर्म के मालिक फतेगढ़ (यू० पी०) के निवासी अग्रवाल वैश्य समाज के सज्जन हैं। संवत् १९१४ में लाला कल्लूमल जी यहाँ आये तथा आपने चपड़े का काम शुरू किया। इस समय इस फर्म पर मे० वंशीधर कल्लूमल के नाम से व्यापार होता था। पश्चात् सं० १९५५ में लाला वंशीधरजी अलग हो गये और तब ही से इस फर्म पर शालिगराम कल्लूमल के नाम से व्यापार हो रहा है। कल्लूमलजी की निगाह चपड़े के व्यापार में बहुत अच्छी थी। यही कारण है, कि यहाँ इस व्यापार को करने के लिये कई फर्में स्थापित हुई और उठ गई मगर आपकी फर्म कायम रही। आपने संवत् १९४४ में उदयरामजी मालपाणी के साझे में किराना के व्यवसाय के निमित्त मेसर्स उदयराम गोपीराम के नाम से फर्म खोला। संवत् १९५५ में मेसर्स कल्लूमल उदयराम के नाम से बम्बई में और संवत् १९६६ में मेसर्स कल्लूमल सत्यनारायण के नाम से कानपुर में और फर्में खोली गईं। इस प्रकार व्यापारिक क्षेत्र में काफी उन्नति कर आपका स्वर्गवास संवत् १९८३ में हुआ। आपके बड़े पुत्र गोपीरामजी का स्वर्गवास सं० १९६० में आपकी मौजूदगी ही में हो गया था। लाला उदयरामजी मालपाणी भी अच्छे व्यापारिक सज्जन थे। आपका स्वर्गवास संवत् १९८६ में हो गया।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक ला० कल्लूमलजी के पुत्र सुखनन्दनलालजी, रामचरनजी, सत्यनारायणजी और कृष्णलालजी गुप्त एडवोकेट तथा गोपीरामजी के पुत्र त्रिलोकीनाथजी हैं। उदयराम गोपीराम वाली फर्म में उदयरामजी के पुत्र कृष्णगोपालजी मालपाणी भी मालिक हैं।

मेसर्स शालिगराम कल्लूमल की फर्मों में हेड मुनीम राजारामजी अग्रहरी हैं। आप संवत् १९५१ से इस फर्म में काम कर रहे हैं।

इस फर्म की ओर से कल्लूमल उदयराम के नाम से मिश्रीक (जि० सीतापुर) में एक बड़ी धर्मशाला बनी हुई है। कल्लूमलजी तथा उदयरामजी दोनों ही धार्मिक विचारों के पुरुष थे।

बा० कृष्णलालजी गुप्त बी० ए० एल० एल० बी० कानपुर सेवा-समिती बोर्ड के सभापति थे तथा यू० पी० किराना सेवासमिति के मंत्री, यू० पी० चेम्बर आफ कामर्स के मेम्बर और बनारस बैंक लि० के डायरेक्टर हैं। इसी प्रकार और भी कई संस्थाओं के आप मेम्बर तथा डायरेक्टर हैं। इस फर्म के सभी मालिक सज्जन और मिलनसार व्यक्ति हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

कानपुर—मेसर्स शालिगराम कल्लूमल, कल्लूमल स्ट्रीट, T. A. Shellac—यहाँ हेड आफिस

है। तथा बैंकिंग और चपड़े का व्यापार होता है। इस फर्म का संचालन बा० रामचरनजी करते हैं।

कानपुर—मेसर्स उदयराम गोपीराम जनरलगंज, T. A. Jaishiva—यहाँ किराने का एवं आढ़त का काम होता है। इस फर्म में कृष्णगोपालजी मालपाणी तथा त्रिलोकीनाथजी कार्य देखते हैं।

बम्बई—मेसर्स कल्लूमल उदयराम कालबादेवी रोड, T. A. Jaishankar—यहाँ किराना, कपड़ा, सूत, गल्ला, चीनी घातबाना इत्यादि २ की आढ़त का काम होता है। यहाँ हेड मुनीम रामगोपालजी कार्य देखते हैं।

कानपुर—मेसर्स कल्लूमल सत्यनारायण नयागंज, T. A. Prakash—यहाँ किराने का थोक काम तथा आढ़त का काम होता है। इस फर्म पर मेसर्स मन्नीलाल मूलजी के रंग की सोल एजंसी भी है। इसमें बा० सत्यनारायणजी काम देखते हैं।

चाँदी-सोने के व्यापारी

मेसर्स गुलाबसिंह फतेसिंह

इस फर्म के संस्थापकों के पूर्व पुरुष मेसर्स ताराचंद निहालचंद के नाम से कानपुर में ज्वैलर्स, बैंकर्स तथा लैण्ड लार्डस का काम करते थे। परन्तु मालिकों के अलग हो जाने से सेठ गुलाबसिंहजी ने अपना स्वतंत्र व्यवसाय उपरोक्त नाम से स्थापित किया और तब से आपकी फर्म अपना पुश्तैनी व्यवसाय सोना, चाँदी तथा जवाहिरात का कर रही है।

इस फर्म का प्रधान संचालन सेठ गुलाबसिंहजी करते हैं और आपके पुत्र बाबू फतेसिंहजी भी व्यापार के संचालन में सहयोग देते हैं। आप लोग जोधपुर (मारवाड़) के निवासी हैं परन्तु लगभग ८ पुश्त से कानपुर में ही बस गये हैं। आप लोग श्रीमाल जैन श्वेताम्बर सम्प्रदाय के हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

कानपुर—मेसर्स एस० गुलाबसिंह फतेसिंह गुलाब निवास चौक T. A. Gurudeoji—यहाँ बुलियन मर्चेन्ट्स तथा ज्वैलर्स का काम होता है। इस फर्म की यहाँ लैण्डेड प्रापर्टी भी अच्छी है।

मेसर्स चिमनराम मोतीलाल

इस फर्म का हेड आफिस बम्बई है अतः इसका विशेष परिचय इस ग्रन्थ के प्रथम भाग के बम्बई विभाग में पृष्ठ १९८ में दिया गया है। यहाँ इस फर्म का आफिस नयागंज में है जहाँ यह फर्म सोने-चाँदी का व्यापार करती है। यहाँ कमलापत मोतीलाल के नाम से जो शक्कर की मिल है उसमें इस फर्म का साझा है।

मेसर्स लालबिहारी सेवाराम

इस फर्म के मालिक यहीं के निवासी हैं। आप उमर वैश्य समाज के सज्जन हैं। करीब २५ वर्ष पूर्व इस फर्म की स्थापना लाला लालबिहारीजी के द्वारा हुई। उस समय इस फर्म पर मेसर्स लालबिहारी श्रीकृष्ण नाम पड़ता था। शुरू से ही इस फर्म पर चाँदी-सोना तथा बने हुए जेवर का काम होता चला आ रहा है। लालबिहारीजी का स्वर्गवास संभवतः १९७० में हुआ। आपके पश्चात् इस फर्म का संचालन आपके भतीजे सेवारामजी करते हैं। आप मिलनसार सज्जन हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

कानपुर—मेसर्स लालबिहारी सेवाराम चौक—यहाँ बैंकिंग, चाँदी-सोना तथा बने हुए जेवर का काम होता है।

मेसर्स शिवसहाय सघनप्रसाद

आप लोग घाटमपुर (उन्नाव) के रहने वाले कान्यकुब्ज ब्राह्मण समाज के दीक्षित सज्जन हैं। पं० शिवसहाय दीक्षित ने उपरोक्त फर्म की स्थापना सम्वत् १९८१ मे कानपुर में की और चाँदी-सोने का व्यापार आरम्भ किया। जो यह फर्म बराबर कर रही है।

आप उन्नाव जिले के अच्छे जमीन्दार और पुराने रईस हैं। आपके पूर्वजों ने बंगाल में अपना व्यापार जमाया था और आपके पिता पं० रामचरनजी ने महाजनी लेन-देन के साथ २ जमींदारी खरीदनी आरम्भ की और अपने समय में ही बहुत अच्छी जमींदारी हाथ में कर ली। आपकी जमींदारी बंगाल में मैमनसिंह जिला में और अवध के उन्नाव जिले में हैं।

इस फर्म के मालिक पं० शिवसहायजी दीक्षित तथा आप के पुत्र पं० सघनप्रसादजी दीक्षित हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

कानपुर—मेसर्स शिवसहाय सघनप्रसाद चौक सराफा—यहाँ सोना, चाँदी तथा जेवरात का काम और महाजनी लेन-देन का व्यापार होता है।

कानपुर—मेसर्स मंगलप्रसाद शिवसहाय नयागंज—यहाँ सोना, चाँदी तथा जेवरात का काम होता है।

गूजामलका(जमालपुर)—मेसर्स मंगलप्रसाद रामचरन —यहाँ बैंकर्स एण्ड लैण्ड लार्डस का काम होता है।

मैमनसिंह—मेसर्स मङ्गलप्रसाद रामचरन—यहाँ आपकी कोठी है तथा आफिस है।

घाटमपुर उन्नाव—पं० शिवसहायजी दीक्षित—यहाँ मालिकों का निवास स्थान है और महाजनी तथा जमींदारी का काम होता है

मेसर्स हजारीमल सोहनलाल

इस फर्म की स्थापना स्व० लाला हजारीमलजी सराफ ने सम्वत् १९७० में कानपुर में की थी। इस फर्म में आरम्भ से ही सोने, चाँदी, तथा जेवरात का काम होता आ रहा है और इसी के साथ रूई का व्यापार भी यह फर्म आरम्भ से ही करती आ रही है। वर्तमान में यह फर्म उपरोक्त व्यापार अर्थात् सोना, चाँदी, जेवरात और रूई का काम करती है। इसकी स्थापना स्व० लाला हजारीमलजी ने का थी पर आपके बाद आपके पुत्रों ने फर्म के व्यापार को अच्छी उन्नत अवस्था पर पहुँचाया।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ रंगलालजी सराफ तथा सेठ सीतारामजी सराफ हैं। आप लोग फतेपुर (जयपुर) के आदि निवासी हैं और अग्रवाल वैश्य समाज के सराफ सज्जन हैं। फर्म का संचालन तीनों ही भाई करते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

कानपुर—मेसर्स हजारीमल सोहनलाल नयागंज T. A. money—यहाँ सोना, चाँदी तथा रूई का व्यापार होता है। यह फर्म कानपुर की मिलों को तैयार रूई सप्लाई करती है।

कानपुर—मेसर्स हजारीमल सोहनलाल नयागंज—यहाँ सोना, चाँदी जेवरात और ज्वैलरी का काम होता है।

किराने के व्यापारी

मेसर्स जगन्नाथ मन्नीलाल

इस फर्म के मालिक मौजा कुलहा जिला उन्नाव के रहनेवाले हैं। करीब ८० वर्ष पूर्व लाला जगन्नाथजी यहाँ आये तथा किराने और आढ़त का व्यापार प्रारंभ किया। उस समय इस फर्म पर गयादीन जगन्नाथ नाम पड़ता था। संवत् १९३५ में जगन्नाथजी का स्वर्गवास हो गया। तब से आपके पुत्र ला० मन्नीलालजी ने फर्म का नाम बदल कर उपरोक्त नाम कर दिया। करीब संवत् १९६० में आपने किराने का थोक व्यापार आरंभ किया। इसमें आपको बहुत अच्छी सफलता मिली। आपने बहुत सी जमींदारी भी खरीद की। इस प्रकार आपने अपनी स्थायी सम्पत्ति भी काफी बढ़ाई। कानपुर के लक्ष्मी आइल मिल को भी आपने खरीदा। इसमें २२२ कोल्हू तथा धान की कल है।

वर्तमान में लाला मन्नीलालजी ही इस फर्म के मालिक हैं। आपके चार पुत्र हैं। बड़े मदनगोपालजी आपकी देख रेख मे फर्म का संचालन करते हैं। शेष अभी छोटे हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

कानपुर—मेसर्स जगन्नाथ मन्नीलाल नयागंज,—यहाँ हे० आ० है। तथा बैंकिंग और किराने का व्यवसाय होता है।

कानपुर—मेसर्स मन्नीलाल मदनगोपाल नयागंज,—यहाँ भी किराने का व्यापार होता है।

दी लक्ष्मी आईल मिल भवानीपुरवा कानपुर—यहाँ एक तेल की मिल है।

मेसर्स तुलसीराम जियालाल

इस फर्म की स्थापना लगभग ६० वर्ष पूर्व सेठ जियालालजी ने कानपुर में की थी। इस फर्म के मालिकों के पूर्व पुरुष लगभग ३०० वर्ष से व्यापार करते चले आ रहे हैं और कानपुर की उपरोक्त फर्म की स्थापना के पूर्व इसके संस्थापक अपने आदि निवास स्थान बेरी (रोहतक) में अपना स्वतंत्र व्यवसाय भी करते थे।

इस फर्म के वर्तमान मालिक लाला केशवरामजी तथा आपके पुत्र लाला तोतारामजी, लाला रामलालजी और श्रीकृष्णदासजी हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

मेसर्स तुलसीराम जियालाल नयागंज कानपुर T. A. Beriwal—यहाँ फर्म का हेड आफिस है तथा किराना, गल्ला और तिलहन का व्यापार होता है।

कानपुर—मेसर्स तुलसीराम जियालाल कलेक्टर गंज—यहाँ बर्मा शेल की तेल की ऐजेन्सी है।

कानपुर—मेसर्स तुलसीराम जियालाल मालरोड—यहाँ मोटर पार्ट्स एण्ड ऐसेसरी तथा बर्मा शेल के पेट्रोल की ऐजेन्सी है।

आगरा—मेसर्स तुलसीराम जियालाल परतापपुरा—यहाँ पेट्रोल की ऐजेन्सी है।

(रोहतक)—मेसर्स खूबीराम केशोराम बेरी—यहाँ बैङ्कर्स एण्ड लैण्डलार्ड्स् का काम होता है।

मेसर्स बिहारीलाल मन्नीलाल

इस फर्म के मालिक बारागाँव (फतहपुर) के रहने वाले ऊमर वैश्य समाज के सज्जन हैं। करीब ४५ वर्ष पूर्व लाला बिहारीलालजी यहाँ आये तथा किराने की दलाली का काम शुरू किया। पश्चात् संवत् १९५७ में यह फर्म स्थापित की। इस पर आपने किराने का ही व्यापार प्रारंभ किया। इस फर्म की उन्नति का श्रेय आपही को है। ला० बिहारीलालजी का स्वर्गवास संवत् १९७२ में हो गया। आप के दो पुत्र हुए जिनके नाम लाला मुन्नीलालजी तथा सरयूप्रसादजी हैं। वर्तमान में आपही इस फर्म के मालिक हैं। आप लोगों ने समय २ पर अपने व्यापार की उन्नति के लिये भिन्न २ नामों से और शाखाएँ खोलीं। तथा फर्म की काफी उन्नति की। आप लोग मिलनसार, सरल, एवं सज्जन महानुभाव हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

कानपुर—मेसर्स बिहारीलाल मन्नीलाल नयागंज—यहाँ फर्म का हेड आफिस है। यहाँ बैंकिंग किराना तथा आढ़त का काम होता है।

कानपुर—मेसर्स सरयू प्रसाद रामचरन नयागंज T. A. Surjoo—यहाँ किराने की आढ़त का काम होता है।

कानपुर—मेसर्स बिहारीलाल रामकृष्ण नयागंज—यहाँ फुटकर किराना तथा आढ़त का व्यापार होता है।

कानपुर—मेसर्स मोतीलाल मुन्नालाल नयागंज,—यहाँ किराने का व्यापार होता है।

कानपुर—मेसर्स बिहारीलाल बालकृष्ण नयागंज, T. A. Shawji—यहाँ एनि लाइन डाइज एण्ड केमिकल & Chewical, की रंग की एजंसी है।

गल्ले के व्यापारी

मेसर्स गोपीराम रामचंद्र

इस फर्म का हेड आफिस कलकत्ता है। यहाँ यह फर्म बैंकिंग तथा हुंडी चिट्ठी का काम करती है। इसका यहाँ का तार का पता Tikamani है। इस फर्म का विस्तृत और सचित्र परिचय हमारे इसी ग्रन्थ के प्रथम भाग के बम्बई विभाग में पृष्ठ ४४ में दिया गया है।

मेसर्स गोकुलचन्द नानकचन्द

इस फर्म की स्थापना संवत् १९७० में हुई। इसके स्थापक लाला चुन्नीलालजी हैं आप माहेश्वरी समाज के बगड़ सज्जन हैं। शुरू में इस फर्म पर आढ़त का काम शुरू किया गया था जो आज भी सुचारू रूप से हो रहा है। वर्तमान में इस फर्म के मालिक लाला परसादीलाल जी हैं। आप मिलनसार एवम् मेधावी सज्जन हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

कानपुर—मेसर्स गोकुलचंद नानकचंद कलक्टरगंज T. A. Jaiganga.—यहाँ रूई, गल्ला, चीनी किराना आदि का व्यापार एवम् आढ़त का काम होता है।

मेसर्स चुन्नीलाल हीरालाल

इस फर्म का विशेष परिचय सीतापुर में दिया गया है। यहाँ यह फर्म गल्ला, शक्कर, कत्था आदि का व्यापार और कमीशन का काम करती है। यह फर्म यहाँ पर नयेगंज में है। इसका यहाँ का तार का पता Parikha है। इसके वर्तमान मालिक सेठ छोटालालजी हैं। आप गुजराती सज्जन हैं।

मेसर्स तेजपाल जमनादास

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ रामेश्वरदासजी हैं। इस फर्म का हेड आफिस मिर्जापुर है। इसकी कलकत्ता, कानपुर, आगरा आदि स्थानों में शाखाएँ हैं। इस फर्म का विशेष परिचय इसी ग्रन्थ के दूसरे भाग में पेज नं० ३६८ में दिया गया है। यहाँ यह फर्म सब प्रकार की कमीशन एजंसी और गल्ले का व्यापार करती है। यहाँ की सुप्रसिद्ध काहू कोठी भी आप ही की है। इसका तार का पता है "Dwarkadhish"

मेसर्स तुलसीदास मेघराज

इस फर्म के वर्तमान मालिक ला० मेघराजजी एवं आपके २ पुत्र हैं। इस फर्म पर बहुत बड़ा व्यापार होता है। इसकी भिन्न २ स्थानों पर कई शाखाएं हैं। जिनका विस्तृत विवरण इस ग्रंथ के द्वितीय भाग में पेज नं० ३१२ में दिया गया है। इस फर्म पर बैंकिंग, शक्कर और गल्लेका व्यापार होता है। इसका यहाँ का पता नयागंज है। तार का पता है—"Miyaniwala"

मेसर्स निहालचन्द किशोरीलाल

इस फर्म के मालिक नारनौल निवासी, अग्रवाल समाज के केजड़ीवाल सज्जन हैं। इसकी स्थापना संवत् १९१३ में लाला जानकीदासजी ने मेसर्स जानकीदास बलदेवसहाय के नाम से कर नमक का व्यापार प्रारम्भ किया। इसमें तरक्की होने पर इस फर्म पर गल्ला, आढ़त और बैङ्किङ्ग का व्यापार भी आरम्भ किया गया। संवत् १९१८ में आपने लखनऊ और फैजाबाद में भी इसकी शाखाएं खोल दीं। लाला जानकीदासजी का स्वर्गवास संवत् १९२१ में होगया। अतः फर्म का संचालन आपके चचा सेठ हरगोपालजी और आपके तीन पुत्र लाला निहाल चन्दजी, बलदेवसहायजी, रामजसमलजी और फर्म के साझीदार लाला शिवबक्षजी माहेश्वरी करने लगे। संवत् १९३६ में लाला हरगोपालजी का देहान्त हो गया और संवत् १९४३ में फर्म के सब हिस्सेदार अलग २ होगये। फलतः संवत् १९४७ में लाला निहालचन्दजी ने अपने भाई बलदेवसहायजी के साथ मेसर्स निहालचन्द बलदेवसहाय के नाम से स्वतंत्र फर्म की स्थापना की। इस टाइम में इस फर्म ने म्योरमिल की एजन्सी ली तथा दिल्ली और अमृतसर में अपनी शाखाएं खोलीं। संवत् १९६० में सेठ निहालचन्दजी का और संवत् १९६७ में सेठ बलदेव सहायजी का देहान्त होगया। आपके पश्चात् लाला निहालचन्दजी के तीनो पुत्र लाला किशोरी लालजी, लाला रामानन्दजी, लाला ब्रजलालजी और बलदेवसहायजी के पुत्र लाला छंगामलजी इस फर्म के मालिक हुए। १९७१ में लाला किशोरीलालजी फर्म से अलग हो गये। और अपनी स्वतंत्र फर्म मेसर्स निहालचन्द किशोरीलाल के नाम से स्थापित कर गल्ला, तिलहन, रूई, बैङ्किङ्ग और कमीशन एजन्सी का काम प्रारम्भ किया। इसमें आपने अच्छी उन्नति की। और चांवल का कारखाना तथा जीनिंग फैक्टरी भी खोली।

इस समय इस फर्म के मालिक लाला किशोरीलालजी तथा आपके पुत्र बाबू रामबिलासजी, रामेश्वरप्रसादजी तथा बिशनदयालजी हैं। आप सब व्यापार संचालन में भाग लेते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

कानपुर—मेसर्स निहालचन्द किशोरीलाल नयागंज—यहाँ फर्म का हेड ऑफिस है। तथा रूई, गल्ला, आढ़त और शेयरों का व्यापार होता है।

कानपुर—मेसर्स निहालचंद किशोरीलाल कलेक्टरगंज—यहाँ चीनी, चावल तथा नमक का काम होता है।

कानपुर—मेसर्स निहालचंद किशोरीलाल कोपरगंज—यहाँ राइस फैक्ट्री है जहाँ चावल तैयार होता है और गल्ला तेलहन की थोक आढ़त का काम होता है।

नौघड़ा बाजार (जि० बस्ती)—मेसर्स निहालचंद किशोरीलाल—यहाँ चावल और गल्ले की आढ़त का काम होता है।

शोहरतगंज (जि० बस्ती)—मेसर्स निहालचंद किशोरीलाल - यहाँ चावल और गल्ले की आढ़त का काम होता है।

कानपुर—न्यू जमना जीनिंग फैक्ट्री बाँसमण्डी—यहाँ जीन फैक्ट्री है जिसमें ४८ डबल जीन हैं और आइल मिल भी है।

मेसर्स नारायणदास गोपालदास

इस फर्म के मालिक अग्रवाल वैश्य समाज के भरतिया सज्जन हैं। संवत् १९३१ में इस फर्म की स्थापना हुई। इसके स्थापक सेठ अनन्तरामजी थे। आपने इस पर गल्ला, किराना तथा सूत का व्यापार प्रारंभ किया था जो वर्तमान में उसी प्रकार हो रहा है। आप धार्मिक विचारों के सज्जन थे। आपने व्यापार में बहुत सम्पत्ति उपार्जित कर काफी नाम पाया। आपने संवत् १९६२ में कानपूर फीलखाना बाजार मे एक विशाल धर्मशाला का निर्माण करवाया। यहाँ सदावर्त भी बाँटा जाता है। आपका स्वर्गवास संवत् १९६९ में हो गया। आपके तीन पुत्र हुए। नारायणदासजी, गोपालदासजी और बंसीधरजी आप तीनों सज्जनों ने भी फर्म की अच्छी उन्नति की। आप तीनों ही सज्जनों का स्वर्गवास हो गया है।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ गोपालदासजी के पुत्र लाला रामस्वरूप जी हैं। आप मिलनसार, मेधावी एवं प्रतिभाशालि व्यक्ति हैं। आपने संवत् १९८० में कानपुर टेक्सटाईल मिल की एजंसी ली है।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

मेसर्स—नारायणदास गोपालदास द्वारकाधीश रोड, कानपुर T. A. Bhartia—यहाँ हेड आफिस है। तथा बैंकिंग, किराना और रूई का व्यापार तथा आढ़त का काम और मिलों की एजंसी का काम होता है।

स्व० लाला लक्ष्मणदासजी अग्रवाल (लक्ष्मणदास बाबूराम) कानपूर

स्व० सेठ अनन्तरामजी भरतिया (नारायणदास गोपालदास) कानपूर
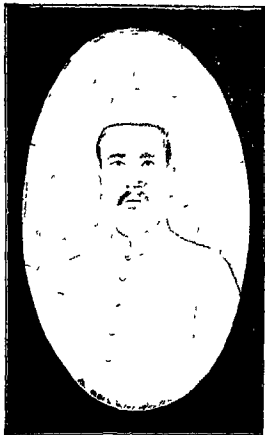
स्व० लाला बाबूरामजी (लक्ष्मणदास बाबूराम) कानपूर

लाला रामस्वरूप भरतिया (नारायणदास गोपालदास) कानपूर

सेठ रामविलासजी खेतान (वसंतलाल मुन्नालाल) कानपूर

सेठ वसंतलालजी खेतान (वसंतलाल मुन्नालाल) कानपूर

सेठ मुन्नालालजी खेतान (वसंतलाल मुन्नालाल) कानपूर

सेठ चिरंजीलालजी खेतान (वसंतलाल मुन्नालाल) कानपूर

मेसर्स पुरुषोत्तमदास बनारसीदास

इस फर्म की मालिक कलकत्ते की मेसर्स दामोदर चौबे एण्ड कम्पनी है। इसका आफिस हालसी रोड पर है। जहाँ यह फर्म बैंकिंग और सब प्रकार की आढ़त का काम करती है। इसका हेड आफिस कलकत्ता है। वहीं इसका विस्तृत परिचय दूसरे भाग के पेज नं० ३६६ में दिया गया है।

मेसर्स प्रभुदयाल गनेशप्रसाद

इस फर्म के वर्तमान मालिक ला० गनेशप्रसादजी एवं ला० सुन्दरलालजी हैं। इसका हेड आफिस लखनऊ है। यहाँ यह फर्म गल्ला एवं आढ़त का व्यापार करती है। इसका यहाँ का पता नयागंज है। इसका विस्तृत परिचय लखनऊ में दिया गया है।

मेसर्स फूलचन्द मोहनलाल

इस फर्म का हेड आफिस हाथरस है पर इसकी कितनी ही शाखाएं कलकत्ता बम्बई आदि व्यापारिक केन्द्रों में हैं। इसका विशेष परिचय हमारे ग्रन्थ के प्रथम भाग के बम्बई विभाग में ९८ पृष्ठ पर तथा इसी भाग में हाथरस के साथ दिया गया है। यहाँ इस फर्म का आफिस नयागंज में है जहाँ यह फर्म सराफी लेन देन, रूई तथा आढ़त एवं गल्ले का काम करती है। इसकी जमींदारी भी यहाँ है। चित्र सहित परिचय के लिए हाथरस में देखिये।

मेसर्स बसन्तलाल मुन्नालाल

इस फर्म के मालिकों का आदि निवास स्थान झुंझुनू (जयपुर) है। आप लोग अग्रवाल वैश्य समाज के खेतान सज्जन हैं। इस फर्म की स्थापना बा० बसन्तलालजी खेतान तथा आपके भाई बाबू मुन्नालालजी खेतान ने सम्वत् १९७४ में की। यह फर्म कानपुर में कपड़ा तथा आढ़त का बड़ा व्यापार करती है। इसके अतिरिक्त इस फर्म की और भी चार ब्राँचें गोरखपुर जिले में हैं जहाँ गल्ला, गुड़ तथा दाल आदि का व्यापार और आढ़त का काम अच्छी उन्नत अवस्था में होता है।

इस फर्म के संस्थापकों का पारिवारिक विवरण हमारे इस ग्रन्थ के प्रथम भाग में बम्बई विभाग पृष्ठ १३१ में विस्तारपूर्वक दिया गया है। इसके वर्तमान मालिक बा० बसन्तलालजी खेतान तथा आपके भाई बाबू मुन्नालालजी खेतान हैं। बाबू मुन्नालालजी खेतान के चार

पुत्र हैं जिनके नाम क्रमशः इस प्रकार हैं—बाबू भगवतीप्रसादजी, बाबू चण्डीप्रसादजी, बाबू भवानीप्रसादजी और बाबू परमेश्वरीप्रसादजी हैं। इनमें से बाबू भवानी प्रसादजी सेठ बसन्तलालजी के यहाँ दत्तक दिये गये हैं।

इस फर्म के व्यवसाय को उन्नत अवस्था पर पहुँचाने का श्रेय इसके संस्थापको को ही है। आप लोगों ने बड़ी योग्यता से व्यापार संचालित कर अपनी फर्म को उन्नत बनाया है। आप लोग सभी मिलनसार और सरल स्वभाव के सज्जन हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कानपुर—मेसर्स बसन्तलाल मुन्नालाल जेनरलगंज T. A. Mansadevi-यहाँ फर्म का हेड आफिस है। कपड़े के इम्पोर्ट तथा बैंकिंग और मीलों को माल सप्लाई करने का काम इस फर्म पर होता है। किराना, गल्ला, तथा कपड़े की आढ़त का काम भी होता है।

चौरी चौरा (गोरखपुर)—मेसर्स मुन्नालाल चन्डीप्रसाद—यहाँ गल्ला और गुड़ का व्यापार तथा आढ़त का काम होता है।

संहजनवा (गोरखपुर)—मेसर्स मुन्नालाल चन्डीप्रसाद—यहाँ गल्ला, और गुड़ का व्यापार तथा आढ़त का काम होता है।

रावतगंज (गोरखपुर)—मेसर्स मुन्नालाल चन्डीप्रसाद—यहाँ दाल का कारखाना है तथा दाल दिसावरों को सप्लाई की जाती है।

घुगली (जि० गोरखपुर)—मेसर्स रामविलास रामजी बसन्तलाल—यहाँ गुड़ की खरीदी और गुड़ की आढ़त का काम होता है।

झुंझुनू (जयपुर)—मेसर्स बसन्तलाल मुन्नालाल—यहाँ फर्म के मालिकों का आदि निवासस्थान है।

मेसर्स बाबूलाल हरिशंकर

इस फर्म के मालिक हाथरस के निवासी हैं। आप लोग अग्रवाल वैश्य समाज के सज्जन हैं। यहाँ यह फर्म हुण्डी, चिट्ठी तथा कमीशन का काम करती है। इसका अधिक परिचय हमारे ग्रन्थ के प्रथम भाग के बम्बई विभाग पृष्ठ ९९ में दिया गया है।

मेसर्स भगतराम रामनारायण

इस फर्म के वर्तमान संचालक सेठ शिवप्रतापजी, सेठ रामनारायणजी तथा सेठ लक्ष्मीनारायणजी टिकमाणी हैं। आप लोग अग्रवाल वैश्य समाज के सज्जन हैं। यहाँ पर यह फर्म

सेठ लीलाधरजी (वसन्तलाल मुन्नालाल) कानपुर

बा० भगवतीप्रसादजी खेतान (वसन्तलाल मुन्नालाल) कानपुर

बा० चंडीप्रसादजी खेतान (वसन्तलाल मुन्नालाल) कानपुर

बारदान, गल्ला तथा आढ़त का व्यवसाय करती है। इसका सचित्र परिचय प्रथम भाग के बम्बई विभाग पृष्ठ ५७ पर दिया गया है।

मेसर्स मन्नालाल फूलचन्द

इस फर्म के मालिक लाला फूलचन्दजी है। इसका हेड आफिस लखनऊ है जहाँ विशेष परिचय दिया गया है। यहाँ यह फर्म गल्ला, आढ़त तथा बैङ्किंग का काम करती है। यहाँ यह फर्म नयेगंज में है।

मेसर्स रामकरणदास रामबिलास

इस फर्म के मालिकों का आदि निवास-स्थान झुंझुनू (जयपुर) है। आप लोग अग्रवाल वैश्य समाज के खेतान सज्जन हैं। इस परिवार का व्यापार सम्बन्धी पूर्व परिचय विस्तृत रूप से हमारे इसी ग्रन्थ के प्रथम भाग के बम्बई विभाग में पृष्ठ १३१ में दिया गया है। इस फर्म की स्थापना कानपुर में सम्वत् १९३४ में हुई और कपड़ा, शक्कर किराना आदि की आढ़त का काम आरम्भ किया गया तथा गुटैया मील और सीवान मील की शक्कर की एजेन्सियाँ भी ली गयीं। सम्वत् १९७४ तक यह फर्म सम्मलित परिवार की सम्पत्ति के रूप में काम करती रही पर इसी वर्ष इस फर्म के आदि संस्थापक सेठ रामबिलासरायजी व्यापारिक क्षेत्र से अलग हो गये अतः आपके पाँचों पुत्र भी अलग २ हो गये और अपना अपना स्वतंत्र व्यापार अपनी स्वतंत्र फर्म खोल कर करने लगे। फलतः इस नाम से जो फर्म कानपुर में थी वह केवल कपड़े का व्यापार करने लगी और इसकी आय इसके आदि संस्थापक सेठ रामबिलासरायजी के हाथ खर्च में लगती है।

इसका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

कानपुर—मेसर्स रामकरणदास रामबिलास जेनरलगंज—यहाँ कपड़े का काम होता है।

सेठ रामबिलासरायजी के पाँच पुत्र हैं। बाबू बसन्तलालजी, बाबू मुन्नालालजी, बा० चिरंजीलालजी, बा० मदनलालजी तथा बा० लीलाधरजी। आप लोग नीचे क्रमानुसार व्यापार करते हैं।

१. मेसर्स बसन्तलाल मुन्नालाल—मालिक बा० बसन्तलालजी और मुन्नालालजी

२. मेसर्स रामबिलासराय चिरंजीलाल—मालिक बा० चिरंजीलाल

३. मेसर्स रामबिलासराय मदनलाल—मालिक बा० मदनलालजी

४. बम्बई—मेसर्स रामकरणदासजी खेतान—इस फर्म के सभी भाई मालिक हैं अतः बा० लीलालीधरजी का साझा है। इस का संचालन बा० बसन्तलालजी करते हैं।

सेठ रामबिलासरायजी व्यापार से अलग होते समय कानपुर के जेनरलगंज वाले ३ लाख के कीमत का एक मकान तथा गोरखपुर के देवरिया तहसील के ३ मकान धर्मादे में लगा गये हैं।

मेसर्स रामबिलासराय चिरञ्जीलाल

इस फर्म की स्थापना बाबू चिरंजीलालजी ने सम्वत १९८१ में कर किराने का व्यापार तथा आढ़त का काम आरम्भ किया जो यह फर्म आज भी पूर्ववत् रीति से कर रही है। इस फर्म की यहाँ के व्यापारी समाज में अच्छी प्रतिष्ठा है। इस फर्म पर बैंकिंग का काम भी होता है।

इस फर्म के मालिक बाबू चिरंजीलालजी हैं। आप अपने आदि निवास स्थान झुंझुनू में ही रहते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कानपुर—मेसर्स रामबिलासराय चिरंजीलाल नयागंज—यहाँ किराने की बिक्री तथा आढ़त का काम और बैंकिंग व्यवसाय होता है।

झुंझुनू (जयपुर)—मेसर्स रामबिलासराय चिरंजीलाल—यहाँ मालिकों का आदि निवास स्थान है। यहाँ बा० चिरंजीलालजी रहते हैं।

मेसर्स रामबिलासराय मदनलाल

इस फर्म की स्थापना बा० मदनलालजी ने सम्वत् १९८१ में की थी। आरम्भ में इस फर्म ने शक्कर की बिक्री तथा शक्कर की आढ़त का व्यापार खोला और साथ ही कपड़े की बिक्री का व्यापार भी आरम्भ किया जो यह फर्म पूर्ववत् कर रही है। इस फर्म की एक दूसरी ब्रांच बस्ती में है।

इस फर्म के वर्तमान मालिक बा० मदनलालजी हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

कानपुर—मेसर्स रामबिलासराय मदनलाल जेनरलगंज T. A. Khetan—यहाँ फर्म का हेड आफिस है। शक्कर की आढ़त तथा बेचवाली का काम और बैंकिंग का व्यवसाय होता है।

बस्ती—मेसर्स मदनलाल खेतान—यहाँ कपड़े का काम होता है।

मेसर्स रामदयाल माधोप्रसाद

इस प्रसिद्ध फर्म का हेड आफिस झूसी है। कई स्थानों पर इसकी शाखाएँ हैं। प्रायः सभी स्थानों पर बैंकिंग और गल्ले का व्यापार होता है। इस फर्म का निज का शक्कर का कारखाना भी है। इसका विस्तृत परिचय इसी ग्रंथ के दूसरे भाग में पेज नं० ४०१ में चित्रों सहित दिया गया है। यहाँ यह फर्म गल्ले का व्यापार करती है। यहाँ इसका पता कोपरगंज है।

मेसर्स सनेहीराम जुहारमल

इस फर्म का विस्तृत एवं सचित्र परिचय हमारे इसी ग्रन्थ के प्रथम भाग के बम्बई विभाग के पृष्ठ ५८ पर दिया गया है। यह फर्म यहाँ पर बैंकिंग का व्यवसाय तथा मिलों को काटन सप्लाई करने का काम करती है। इस फर्म के मालिक अग्रवाल वैश्य समाज के सज्जन हैं। फर्म का हेड आफिस कलकत्ता में है।

मेसर्स सूरजमल हरीराम

इस फर्म का हेड आफिस पडरौना (गोरखपुर) में है। जहाँ इस फर्म के मालिक सेठ सूरजमलजी रहते हैं। आप अग्रवाल वैश्य समाज के सज्जन हैं। इस फर्म का परिचय हमारे इसी ग्रन्थ के प्रथम भाग के बम्बई विभाग के पृष्ठ १२४ में दिया गया है। यह फर्म यहाँ गुड़ तथा शक्कर की आढ़त का व्यापार तथा कमीशन का काम करती है। विशेष परिचय पडरौना में दिया गया है।

मेसर्स सूरजमल छोटेलाल

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ छोटेलालजी कानोड़िया हैं। इस फर्म की और भी स्थानों पर शाखाएं हैं। इसका विस्तृत परिचय चित्रों सहित इसी ग्रन्थ के द्वितीय भाग में देखना चाहिये। यहाँ इस फर्म का पता नयागंज है। यह फर्म यहाँ बैंकिंग, बोरे एवं गल्ले का व्यापार और आढ़त का काम करती है। इसका तार का पता है "Suraj"

मेसर्स हरनन्दराय अर्जुनदास

इस फर्म का हेड आफिस दिल्ली में है। यह फर्म प्रतिष्ठित फर्मों में मानी जाती है। इसका एक कॉटन मिल भी है और भी स्थानों में इसकी शाखाएँ हैं। जिनका परिचय दूसरे भाग में पेज नं ३२७ में दिया गया है और विस्तृत परिचय इसी भाग में देहली में छापा गया है। यहाँ यह फर्म बोरे का और बैंकिंग का व्यापार करती है।

लोहे के व्यापारी

मेसर्स जीवनलाल रणजीतमल

इस फर्म का हेड आफिस देहली है। लोहे के व्यापार करनेवाली भारत की मशहूर फर्मों में से यह भी है। इसकी कई स्थानों पर शाखाएँ हैं। इसका परिचय चित्रों सहित इसी ग्रंथ के द्वितीय भाग में पेज नं० ५०३ में और विस्तृत परिचय चित्रों सहित इसी भाग में करांची में दिया गया है। यहाँ इसका पता हालसी रोड है। यह फर्म यहाँ लोहे का व्यापार करती है।

मेसर्स जीवनराम कन्हैयालाल

इस फर्म की स्थापना करीब ७० वर्ष पूर्व लाला जीवनरामजी द्वारा लोहे का व्यापार करने के लिये हुई। आप वैश्य समाज के सज्जन हैं। आपका स्वर्गवास हो गया है। आपके ४ पुत्र हुए केदारनाथजी, कन्हैयालालजी, नारायणदासजी एवं बाबूलालजी। आप लोगो ने फर्म के कार्य का संचालन किया। तथा अच्छी उन्नति की। आप चारों सज्जनों का स्वर्गवास हो गया है। साथ ही कन्हैयालालजी के पुत्र लाल्लूमलजी का भी स्वर्गवास हो गया। आप लोगो के पश्चात् लाल्लूमलजी के पुत्र देवीदयालजी, रामलखनजी एवं संतशरणजी और नारायणदास-जी के पुत्र राधेश्यामजी ने संवत् १९८० तक सम्मिलित रूप से फर्म के व्यापार का संचालन किया। पश्चात् लाल्लूमलजी के पुत्र फर्म से अलग हो गये। वर्तमान में इस फर्म के मालिक राधेश्यामजी ही हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

कानपुर—मेसर्स जीवनराम कन्हैयालाल हालसी रोड T. A. Supplier—यहाँ लोहा, किराना तथा बिसातखाने का व्यापार एवं आढ़त का काम होता है।

मेसर्स तेजनलाल दीनानाथ

इस फर्म के मालिक भगवन्त नगर (हरदोई) के उमर वैश्य सज्जन हैं। तेजनलालजी अपने पिता मन्नीलालजी के साथ यहाँ आये और देशी लोहे तथा ठेके का काम प्रारंभ किया। इस फर्म की स्थापना सन् १८३८ में हुई। दीनानाथजी, तेजनलालजी के भाई थे। तेजनलालजी के पश्चात् दीनानाथजी ही ने फर्म के कार्य का संचालन किया। आपके पश्चात् आपके पुत्र रघुवरदयालजी तथा द्वारकाप्रसादजी ने कार्य को संभाला। आप लोगो ने फर्म को अच्छी तरक्की पर पहुँचाया। आप दोनों का भी स्वर्गवास होगया। ला० रघुवरदयालजी के चुन्नीलाल-

जी तथा प्यारेलालजी और ला० द्वारकाप्रसादजी के मन्नूलालजी, रिखिलालजी तथा जगन्नाथजी नामक पुत्र हैं। इनमें से लाला रिखीलालजी तथा जगन्नाथजी इस फर्म से अलग हो गये और अपना स्वतंत्र व्यापार करते है। शेष तीनों ही भाई इस फर्म के मालिक हैं। आप तीनों ही इसका संचालन करते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

कानपुर—मेसर्स तेजनलाल दीनानाथ हालसीरोड, नई सड़क T. A. Latus—यहाँ हार्डवेअर और सेंडरी गुड्स का इम्पोर्ट और टाटा कम्पनी के लोहे के माल की बिक्री का काम होता है। यह फर्म ए० एफ० रेटी एण्ड कम्पनी बरलिन एजंट हैं।

मेसर्स प्यारेलाल कन्हैयालाल

इस फर्म के मालिक हीयात नगर (मुरादाबाद) के निवासी हैं। करीब ७५ वर्ष पूर्व सेठ प्यारेलालजी तथा कन्हैयालालजी ने यहाँ आकर फर्म स्थापित की। आप दोनों भाई २ थे। आप अग्रवाल समाज के महानुभाव हैं। संवत् १९५६ में से० प्यारेलालजी का स्वर्गवास हो गया। आपके पश्चात् फर्म के कार्य का संचालन कन्हैयालालजी ने सँभाला। आपका स्वर्गवास संवत् १९६७ में हुआ। आपने कलकत्ते मे भी अपनी ब्रांच स्थापित की। आपके पश्चात् फर्म का संचालन आपके पुत्र सेठ नवलकिशोरजी ने सँभाला। आपने इस फर्म की बहुत उन्नति की। आपका यहाँ अच्छा सम्मान था। आपने गव्हर्नमेंट से कई कंट्राक्ट भी लिये थे। आपका स्वर्गवास संवत् १९८५ में हो गया।

वर्तमान में इस फर्म के संचालक नवलकिशोरजी के पुत्र लाला देवकुमारजी हैं। आपके चार भाई और हैं जो छोटे हैं और शिक्षा लाभ कर रहे हैं। देवकुमारजी मिलनसार एवं सरल स्वभाव के सज्जन हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

कानपुर—मेसर्स प्यारेलाल कन्हैयालाल हालसी रोड, T. A. Jain यहाँ बैंकिंग तथा लोहे का व्यापार होता है। यह फर्म विलायत से डायरेक्ट इम्पोर्ट करती है।

मेसर्स प्यारेलाल कन्हैयालाल ६८ राजा कटरा कलकत्ता T. A. steelmark—यहाँ लोहा, धातबाना, किराना आदि का व्यापार एवं आढ़त का काम होता है।

मेसर्स रतनजी भगवानजी एण्ड को०

इस फर्म का हेड आफिस धनबाद में है। इसकी और भी स्थानों में कई शाखाएँ हैं जिनका विस्तृत परिचय इसी ग्रन्थ के दूसरे भाग में पेज नं० ९३ में बिहार विभाग में दिया गया है। यहाँ यह फर्म मिल जीन स्टोअर सप्लायर और मोटर की एजंसी तथा पेट्रोल का काम करती है। इसका यहाँ का पता लाटुश रोड है।

मेसर्स लछमनदास बाबूराम

इस फर्म के मालिकों का मूल निवासस्थान हाथरस यू० पी० है। आप लोग अग्रवाल वैश्य समाज के जैनी सज्जन हैं। यह फर्म करीब ५० वर्षों से व्यापार कर रही है। इस पर पहले मेसर्स लछमनदास चम्पाराम नाम पड़ता था। अब उपरोक्त नाम से व्यापार होता है। इस फर्म के स्थापक ला० लक्ष्मणदासजी थे। आप बड़े व्यापारचतुर, मेधावी एवं सज्जन व्यक्ति थे आप ही की बुद्धिमानी एवं व्यापारचतुरता से फर्म ने इतनी तरक्की की है। आपका ध्यान केवल व्यापार की ओर रहा हो सो बात नहीं थी। जितना ध्यान आपका व्यापार की तरक्की की ओर था उतना ही सार्वजनिक कामों की ओर भी रहा था। आपने यहाँ लाठी उद्यान में एक सुन्दर धर्मशाला निर्माण करवाई। इसी प्रकार हाथरस वगैरह स्थानों पर कई कुएं भी आपने बनवाये। सम्वत् १९६४ में यहाँ होने वाले जैन उत्सव के समय आपने काकोमी मिल के पास एक सुन्दर कोठी और बगीचा बनवाया था उसको आपने पब्लिक कर दिया। उसमें आस पास के देहाती आदमी विश्राम पाते हैं। आपका ध्यान गरीब ब्राह्मणों की ओर भी बहुत रहा है। आपने कई ब्राह्मणों की कन्याओं की शादी अपने पास से रुपये लगाकर करवा दी। इसी प्रकार गौरवमय जीवन व्यतीत करते हुए आप का स्वर्गवास करीब १० वर्ष पूर्व हो गया।

आपके तीन पुत्र हुए, सेठ चम्पारामजी, सेठ बाबूरामजी एवम् सेठ फूलचन्दजी। इनमें से सेठ चम्पारामजी अपने पिताजी के समय से करीब ६ वर्ष पहिले ही से अलग हो गये थे। दूसरे पुत्र ला० बाबूराम का करीब ३ वर्ष पूर्व स्वर्गवास हो गया है।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक फूलचन्दजी हैं। आप ही फर्म का संचालन करते हैं। बाबूरामजी के ऋषभकुमारजी नामक एक पुत्र हैं। तथा ला० फूलचन्दजी के मनोहरलालजी हैं। ला० मनोहरलालजी तथा ऋषभकुमार जी भी फर्म का संचालन करते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय ईस प्रकार है।

कानपुर—मेसर्स लक्ष्मणदास बाबूराम नई सड़क T. A. Babuniwas यहाँ सब प्रकार के लोहे का व्यापार होता है।

कलकत्ता-लक्ष्मणदास चम्पाराम ४१ राजा कटरा—यहाँ लोहा धातु बाना और किराने का व्यापार होता है।

बरेली—लक्ष्मणदास बाबूराम टाउनहाल—यहाँ टाटा कम्पनी की एजेन्सी है तथा और दूसरे प्रकार के लोहे का व्यापार होता है।

जनरल मर्चेण्ट्स

पं० प्यारेलाल शुक्ला तमाखूवाले

इस फर्म के मालिकों का मूल निवासस्थान कन्नौज है। करीब ८ वर्ष से आप लोग यहाँ निवास करते हैं। यह फर्म कन्नौज में सन् १८९१ में स्थापित हुई थी। इसकी स्थापना पंडितजी ने स्वयं की थी। जिस समय फर्म की स्थापना की गई उस समय आपकी साधारण स्थिति थी। आप व्यापारकुशल और मेधावी सज्जन हैं। अतएव आपने अपनी बुद्धिमानी एवं व्यापार कुशलता से फर्म की अच्छी तरक्की की।

सन् १९२७ में आपने अपने व्यापार की फर्म तथा अपना आफिस भारत के प्रसिद्ध व्यापारिक नगर कानपुर मे स्थापित किया। यहाँ ही आपने अच्छी सफलता प्राप्त की। आपने बहुत बड़ी जमींदारी भी खरीद की। वर्तमान में आप अच्छे रईस और जमींदार हैं।

आपका कारखाना इस समय बहुत अच्छी अवस्था मे चल रहा है। आपका माल भारत के प्रायः सभी शहरों, कस्बा एवं देहातों में तो जाता ही है इसके अलावा स्टाक, चीन, ब्रह्मा, सीलोन, अरब, अफ्रिका आदि विदेशी स्थानो पर भी जाता है। आपके माल में सब वस्तुएँ धर्म की रक्षक होती हैं।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक पं० प्यारेलालजी शुक्ल हैं।

आपकी फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कानपुर—पं० प्यारेलाल शुक्ल तमाखूवाले T. A. Pan bilas—यहाँ पान के मसाला बिन बनी हुई तमाखू का बहुत बड़ा व्यापार होता है। मुख विलास और ताम्बूल अम्बरी इस कारखाने की मशहूर चीजें हैं।

कपड़े के व्यापारी

मेसर्स गनपतराय ऋद्धकरण जनरलगंज
,, गंगाधर बैजनाथ ,,
,, गोपीनाथ छंगामल ,,
,, चिरंजीलाल सीताराम ,,
,, जुग्गीलाल कमलापत ,,
,, ज्वालाप्रसाद राधाकृष्ण ,,
,, जीवनराम श्यामसुन्दर ,,
,, नारायण ब्रदर्स ,,
,, वेगराज हरद्वारीमल ,,
,, बाबूलाल केडिया ,,
,, बद्रीदास बागड़ी ,,
,, बिहारीलाल रामचरन ,,
,, बुलाकीदास रामगोपाल ,,
,, बंशीधर गोपालदास ,,
,, मुन्नूलाल खत्री ,,
,, मदनचन्द रामचन्द ,,
,, महावीरप्रसाद मन्नालाल ,,
,, रामेश्वरदास गंगाप्रसाद ,,
,, रामकरणदास रामविलास ,,
,, रामनारायण गुरुदयाल ,,
,, रामलाल बुलाकीदास ,,
,, राधाकृष्ण बेणीप्रसाद ,,
,, राधाकृष्ण भैरवप्रसाद ,,
,, रामकुमार रामेश्वर ,,
,, शङ्करलाल लक्ष्मीनारायण ,,
,, सिद्धनाथ बैजनाथ ,,
,, सालिगराम हीरालाल ,,
,, हरकिशनदास रूपनारायण ,,
,, हीरालाल पूरनमल ,,

मिल एजेण्ट्स—

मेसर्स गंगाधर बैजनाथ जनरलगंज
,, जुग्गीलाल कमलापत
,, ज्वालाप्रसाद राधाकृष्ण
,, नन्दलाल भण्डारी मिल्स क्लॉथशॉप
,, बिहारीलाल पोद्दार
,, भवानीदयाल गिरधरलाल
मेसर्स रामनारायण किशनदयाल
,, राजकुमार मिल्स क्लॉथ शॉप
,, हुकुमचंद मिल्स क्लॉथ शॉप

कपड़े के इम्पोर्टर्स—

मेसर्स गोपीनाथ छंगामल
,, जुग्गीलाल कमलापत
,, ज्वालाप्रसाद राधाकृष्ण
,, द्वारिका शिवाजी
,, धीरजराम रामप्रसाद

बैंक—

अलाहाबाद बैंक लि० मालरोड
अलाहाबाद बैंक सिटी ब्रांच जेनरलगंज
सेन्ट्रल बैंक आफ इण्डिया लि०
इम्पीरियल बैंक आफ इण्डिया
इम्पीरियल बैंक आफ इण्डिया सिटी ब्रांच
चार्टर्ड बैंक आफ इण्डिया आस्ट्रेलिया एण्ड चाइना
नेशनल बैंक आफ इण्डिया लि०
पंजाब नेशनल बैंक
पीपुल्स बैंक आफ नदर्न इण्डिया लि०

सोने चाँदी के व्यापारी—

मेसर्स लालबिहारी सेवाराम
,, केदारनाथ रामदयाल

मेसर्स शिवकुमार रामकुमार
,, शिवसहाय सदनप्रसाद
,, रामदयाल मदनमोहन
,, पुत्तीलाल जग्गेलाल
,, शिवशंकरसिंह महेश प्रतापसिंह
,, कालीचरण वंशीधर जौहरी
,, मूलचन्द लक्ष्मीनारायण जौहरी
,, धनीराम चुन्नीलाल
,, कामताप्रसाद मोहनलाल
,, जीवनराम सेठ
,, पन्नालाल दुर्गाप्रसाद (नयागंज)
,, सेवाराम रामरतन
,, श्रीकृष्णदास बिहारीलाल
,, हजारीलाल सोहनलाल
,, मोतीराम चिम्मन

ज्वैलर्स—

कालीचरण बाबूराम
कालीचरण वंशीधर
गुलाबचंद फतेसिंह
मूलचंद जौहरी
सन्तोषचंद जौहरी (बिहारीजी की गली)

गल्ले की आढ़त वाले—

मेसर्स मुन्नालाल मथुराप्रसाद (कलक्टर)
,, लालमन काशीराम
,, नारायणदास मातादीन
,, रामचरण मौनीलाल
,, देवीदयाल विश्वनाथप्रसाद
,, बनवारीलाल रामभरोसे
,, मनोहरदास रामप्रसाद
,, गंगादीन छुब्बलाल

मेसर्स चिरंजूलाल रामनारायण
,, बंदीदीन शिवप्रसाद
,, फूलचंद मुन्नालाल
,, बच्चू पहेलवान
,, चिम्मनलाल जीवनलाल
,, गोकुलचंद नानकचंद
,, जगन्नाथ रामलाल
,, रामकरणदास जगन्नाथ
,, कालिकाप्रसाद छन्नूलाल
,, लालमन हीरालाल
,, सीताराम शिवदयाल
,, रामभरोसे मुन्नालाल

गल्ले के व्यापारी—

मेसर्स सूरजमल छोटेलाल (नयागंज)
,, हाजी इस्माइल नूर मोहम्मद
,, मनोहरदास रामप्रसाद
,, दाऊजी दादा भाई
,, भजनलाल भगवतीप्रसाद
,, नारायणदास मातादीन
,, वंशगोपाल शिवनारायण
,, चंद्रशेखर चंद्रभाल
,, निहालचंद किशोरीलाल
,, गणेशप्रसाद विसेसरप्रसाद
,, रामदयाल माधोप्रसाद

कपड़े की आढ़त वाले

मेसर्स गुलाबराम पन्नालाल
,, जुगलकिशोर बलदेवसहाय
,, पुत्तनलाल दलाल जेनरलगंज गली
,, लल्लूमल मूलचन्द (सिरकी मोहाल)
,, सीतलप्रसाद श्यामलाल

मेसर्स रामचरन कन्हैयालाल
,, गंगाधर बाबूलाल
,, शिवचरनलाल लालमन
,, मनोहरदास रामप्रसाद
,, रामगोपाल मूलचन्द
,, रामेश्वरदास दलाल
,, जुगीलाल कमलापत
,, गजानन्द चिरंजीलाल
,, रामरतन रामगोपाल
,, नानकचंद सादीराम
,, दीनानाथ माधोराम
,, बैजनाथ विशम्भरनाथ
,, बाबूलाल शिवनारायण
,, केदारनाथ रामभरोसे
,, रामप्रसाद सागरमल
,, जगन्नाथ अवधविहारी
,, अवधबिहारी रामनाथ
,, रामेश्वरदास रामकुमार
,, रामभजन लक्ष्मीनारायण
,, बृजमोहनदास राजकुमार
,, दयाशंकर हरवंशमोहन
,, हुलासीलाल रामदयाल
,, महावीरप्रसाद मन्नालाल
,, बिहारीलाल रामचरण
,, रामनारायण गुरुदयाल
,, वंशीधर गोपालदास
,, निरंजनलाल वंशीधर (अनवरगंज)
,, गोपीराम गोविंदराम
,, रामगोपाल गनपतराय

जूतेवाले—

काश्मीर हाउस फैल्स हाऊस
एशियाटिक लेदर कम्पनी
दि अग्रवाल लेदर वर्क्स
श्याल लेदर वर्क्स
दि प्रीमियर लेदर वर्क्स
एस० अमीर एण्ड सन्स
कूपर ऐलेन एण्ड को०
वेस्ट एण्ड लेदर कम्पनी
हलीम बूट फैक्ट्री

सेडलर्स, काठी जीनवाले—

मेसर्स एस. मोहम्मद इस्माइल एण्ड को० लेदर डीलर्स इम्पोर्टर्स एण्ड एक्सपोर्टर्स
,, एस. अबीबुलाहक्क ब्रदर्स
,, एस. ए. अलेक झॅण्ड एण्ड को०
,, एस. अजीजुलहक एण्ड ब्रदर्स
,, कानपुर लेदर गुड्स स्टोर्स
,, एस मोहम्मद रफीक एण्ड सन्स
,, एस. एम. कासिम ब्रदर्स
,, एस. एम. शाद मोहम्मद एण्ड सन्स
,, एस. एम अमीन एण्ड को०
,, एस. अब्दुल मजीद अब्दुल रसीद
,, एस. मोहम्मद हाफिज मोहम्मद सिद्दीक
,, दि अग्रवाल लेदर वर्क्स
,, श्याल लेदर वर्क्स
,, कपूर ऐलेन एण्ड को०
,, वेस्ट एण्ड लेदर कम्पनी
,, कर्जन लेदर वर्क्स

बर्तन अलम्यूनियमवाले—

मेसर्स कन्नूलाल परसोत्तमदास

मेसर्स दालचंद हरनारायण

,, राधेलाल पन्नालाल

पीतल फूल के बर्तनवाले (हटिया वाले)—

मेसर्स लालाराम रामावतार

,, प्रयागदास रामनारायण

,, ज्वालाप्रसाद गौड़

,, शिवनारायण गोविंदप्रसाद

,, श्यामसुन्दर छगनलाल

,, श्यामलाल पुत्तीलाल चौक

,, पुत्तीलाल लालमन

,, मानिकचंद शिवप्रसाद

,, राधाकृष्ण मन्नीलाल

ताम्बे वाले—

प्रागदास भगवानदास

विन्दावन बरातीलाल नई सड़क

लोहे—

लल्लूमल शिवरतनलाल

बिहारीलाल भजनलाल

जीवनलाल कन्हैयालाल

जीवनलाल रणजीतमल

प्यारेलाल कन्हैयालाल

चंदूलाल बाबूराम

मूलचंद गोविन्ददास

सुखानंदराम नारायण

लल्लूमल महेन्द्रनाथ

लछमनदास बाबूराम

राधेलाल मोतीलाल

भूदेवप्रसाद बाबूराम

तेजननाथ दीनानाथ

फुन्दूराम बाबूराम

रिक्षादास मनोहरदास

नन्हूमल जोतीप्रसाद

कामताप्रसाद ब्रजमोहनलाल

देवीप्रसाद मालवी

राधाकृष्ण सूरजप्रसाद

हेमराज लक्ष्मीचंद

सूतवाले—

मेसर्स गंगाधर बैजनाथ

,, नारायणदास गोपालदास

,, रूपनारायण रामचन्द्र

,, निहालचन्द बलदेवसहाय

सूत निवाड़ कुकड़ी (Coff) रस्सी—

मेसर्स मदनमोहन रामेश्वर

,, फूलचन्द सूतवाले

,, हनुमानदास केशरीप्रसाद

,, केदानाथ गौरीशंकर

,, गुरुमुखराम अनन्दराम

इत्र तेल—

सोमनाथ भोलानाथ

कुंजबिहारी शंकरसहाय

जैनारायण परमात्मा नारायण

मक्खनलाल चैनसुखदास

हनुमानप्रसाद शुक्ल

माल (Export)—

चिम्मनलाल जीवनलाल

चुन्नीलाल हरगोविन्द

जीवाभाई मंगनलाल

चुन्नीलाल हीरालाल

छगनलाल गिरधर

मेवालाल रणछोड़दास

भगतराम रामनारायण

गोपीराम रामचन्द्र
रमणलाल बलदेवदास
परसोत्तमदास सूरचन्द

शक्करवाले—

मेसर्स मातादीन भगवानदास
,, गनेशप्रसाद विसेसरप्रसाद
,, निहालचन्द किशोरीलाल
,, रामविलास मदनलाल
,, बसन्तलाल मुन्नालाल
,, रमणलाल बलदेवदास
,, हरणचन्द बिहारीलाल

लकड़ी—

मेसर्स बद्रीप्रसाद गयाप्रसाद
,, गंगानारायण गंगाप्रसाद
,, रामचरण ठाकुरप्रसाद
,, हाजी जहाँगीर मोहम्मद इस्माइल

गुड़ बेचनेवाले—

मेसर्स गुलजारीलाल दुर्गाप्रसाद
,, नारायणदास बिहारीलाल
,, नारायलदास कल्लूमल

गुड़ की आढ़तवाले—

मेसर्स मनोहरदास रामप्रसाद
,, गोकुलचंद नानकचंद
,, मोतीलाल छन्नूलाल

किराना (आढ़त) विक्रवाली—

मेसर्स बिहारीलाल रामकृष्ण
,, मणीलाल मदनगोपाल
,, वंशीधर कुंजीलाल
,, शंकरलाल गोकुलप्रसाद
,, श्रीराम रामसहाय
,, श्रीराम जैगोपालजी

मेसर्स बन्नालाल ऊमर
,, राधाकृष्ण भगवानदीन
,, कल्लूमल सत्यनारायण
,, मोतीलाल मुन्नालाल
,, जेठमल लक्ष्मीचंद
,, द्वारिकाराम जुगलकिशोरी
,, श्रीकिशन गोपीकिशन
,, परमानंद नारायणदास
,, रामचरण परसोत्तम
,, तुलसीराम जियालाल
,, लक्ष्मीनारायण राजाराम
,, राधारमण श्यामसुन्दर
,, लीधर रामस्वरूप
,, जमनादास दलाल
,, मुक्ताप्रसाद गयाप्रसाद
,, घासीराम गंगाप्रसाद

किराना (आढ़त)—

मेसर्स उदयराम गोपीराम
,, शिवबक्स किशनलाल
,, हुलासीराम रामदयाल
,, घासीराम रामनाथ
,, बिहारीलाल मन्नीलाल
,, बिहारीलाल रामकृष्ण
,, जुगलकिशोर बलदेवसहाय
,, रामदयाल अढ़तिया
,, लल्लूमल मूलचन्द
,, हरदेवदास मुन्नालाल
,, चुन्नीलाल हीरालाल
,, नानकचंद सादीराम
,, लक्ष्मीनारायण रामकुमार
,, भवानीप्रसाद गिरधरलाल

राय बहादुर लाला गंगासहायजी झांसी ।
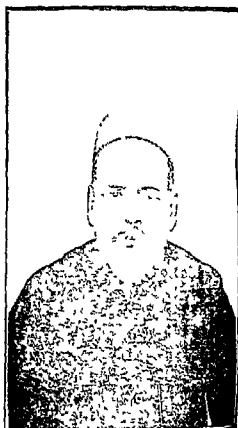
पं० प्यारेलाल शुक्ल कानपुर

हेड ऑफिस आगरा, माणिकचन्द रामलाल झाँसी

झांसी

झांसी का इतिहास पुराना है। इस पर शुरू से ही हिन्दुओं का राज्य रहा है। यहाँ कई बार युद्ध हुए। उन्नीसवीं शताब्दी में यहाँ भारत वीरांगना महारानी लक्ष्मीबाई राज्य करती थी। यहाँ उनकी राजधानी थी। गदर के समय महारानी ने जो अपनी अपूर्व वीरता एवम् अद्वितीय प्रतिभा का परिचय दिया यह इतिहास के पाठकों से छिपा नहीं है। महारानी ही के पास से यह स्थान अंग्रेजों के पास आया और तब से इन्हीं के पास है। महारानी के महल आज भी देखने की वस्तुएँ हैं। यहाँ महारानी का किला जो अपनी मजबूती में प्रसिद्ध है, देखने लायक है।

यहाँ की पैदावार चना, गेहूँ, जौ, मटर, मूंग, उर्द, चावल और दाल है। यही यहाँ से बाहर जाती हैं। इसके अतिरिक्त चीरोंजी का भी यहाँ बहुत बड़ा व्यापार होता है जो टीकमगढ़ स्टेट से यहाँ आती है। आस पास जंगल होने से गोंद एवम् कत्था भी यहाँ आता है।

यहाँ का तोल चिरोंजी एवम् किराने के लिये ४२ सेर के मन से, गोंद ४२॥ सेर से, कत्था ४५ सेर से एवम् शेष सब वस्तुएँ ४० सेर मन से माना जाता है।

यहाँ की इंडस्ट्रीज में कालीन एवम् आसन हैं। यहाँ के कालीन एवम् आसन बहुत सुन्दर मजबूत और टिकाऊ होते हैं।

यह स्थान जी० आई० पी० रेल्वे की देहली बम्बई वाली मेन लाईन पर अपने ही नाम के स्टेशन से २ मील की दूरी पर स्थित है। यहाँ से इसी रेल्वे की एक लाइन कानपुर एवम् दूसरी लाइन मानिकपुर जंकशन को भी गई है।

यहाँ के व्यापारियों का परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स गंगासहाय मुत्सद्दीलाल

इस फर्म के मालिक खत्री समाज के आरोड़ा सज्जन हैं। इस फर्म के पूर्व पुरुष ला० शीलचन्दजी तथा आपके भाई मक्खनलालजी के द्वारा यह फर्म पहले पहल मुरार छावनी में स्थापित हुई। छावनी के टूट जाने से मक्खनलालजी यहाँ आये तथा मक्खनलाल गंगासहाय के नाम

से फर्म स्थापित की। शीलचंदजी के पुत्र रा० बा० गंगासहायजी व्यापारदक्ष पुरुष थे। आपने इस फर्म की बहुत उन्नति की तथा फर्म का नाम बदलकर उपरोक्त नाम से कारबार शुरू किया। आपको भारत सरकार ने प्रसन्न होकर राय बहादुर का खिताब प्रदान किया। आपके भाई भजनलालजी थे। आपका और आपके भाई का स्वर्गवास होगया। भजनलालजी के पुत्र रोशनलालजी भी होनहार युवक थे मगर युवावस्था ही में उनका भी स्वर्गवास होगया।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक रा० बा० गंगासहायजी के पौत्र ला० मुसद्दीलालजी हैं। आप मिलनसार व्यक्ति हैं। आप झाँसी म्युनिसिपल बोर्ड एवं कंटोनमेंट बोर्ड के मेंबर हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

झाँसी—मेसर्स गंगासहाय मुसद्दीलाल सदर बाजार—यहाँ बैंकिंग एवं जमींदारी का काम होता है। यहाँ आपकी एक बर्फ की फैक्टरी गंगा आईस फैक्टरी के नाम से है।

मेसर्स द्वारकादास बनारसीलाल

इस फर्म का हेड आफिस बम्बई में है। वहाँ यह फर्म मेसर्स बसंतलाल गोरखराम के नाम से व्यापार करती है। अतएव इसका विस्तृत परिचय इसी ग्रंथ के प्रथम भाग में बम्बई विभाग के पेज नं० ९८ में दिया गया है। यहाँ यह फर्म गल्ला एवं आढ़त का व्यापार करती है।

मेसर्स बिरदीचंद मक्खनलाल

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ बिरदीचंदजी के पुत्र सेठ मक्खनलालजी एवं सेठ हीरालालजी हैं। आप लोग आगरा निवासी खण्डेलवाल वैश्य समाज के सज्जन हैं। यह फर्म यहाँ सन् १८९० में सेठ बिरदीचंदजी द्वारा स्थापित हुई और इसको विशेष तरक्की भी आप ही के द्वारा प्राप्त हुई। आपने इसकी और भी शाखाएँ स्थापित कीं। आपका स्वर्गवास हो गया। आपके स्वर्गवासी होने के पश्चात् आपके पुत्र सेठ मक्खनलालजी ने रेमसे थिएटर के नाम से एक सिनेमा खोला और इसी प्रकार और भी फर्म की तरक्की की।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

झांसी—मेसर्स बिरदीचंद मक्खनलाल सदरबाजार T. A. Londonhouse—यहाँ बैंकिंग, कपड़ा एवं टेलरिंग का काम होता है।

झांसी—मेसर्स बिरदीचन्द मक्खनलाल हाजीगंज T. A. Sikhhar—यहाँ गल्ला एवं आढ़त का व्यापार होता है।

जबलपुर—मेसर्स बिरदीचंद मक्खनलाल सदरबाजार T. A. Londonhouse—हे० आ० है। यहाँ बैंकिंग और सराफी का काम होता है। तथा मेसर्स वृद्धिचंद प्रतापचंद के नाम से एक कपड़े की दुकान है।

बरुआ सागर (झांसी)—मेसर्स बिरदीचंद मक्खनलाल—यहाँ गल्ले का व्यापार होता है।

मेसर्स भिखमचंद रामचन्द्र

इस फर्म का हेड आफिस यही है। इसके मालिक सेठ मिलापचंदजी वेद थे। मगर दुःख है कि दो महीने पहले ही उनका युवावस्था में ही शरीरान्त हो गया है। आपका विस्तृत परिचय हम इसी ग्रंथ के प्रथम भाग में राजपूताना विभाग के बीकानेर में दे चुके हैं। यहाँ यह फर्म जवाहरात, बैंकिंग और जमींदारी का काम करती है।

मेसर्स मुन्नालाल एण्ड सन्स

इस फर्म का हेड आफिस कानपुर है अतः इसका विशेष परिचय वहीं दिया गया है। यहाँ यह फर्म मोटर का काम करती है तथा स्थानीय इम्पीरियल बैंक ब्राँच की ट्रेजरर है। इस फर्म के वर्तमान मालिक राय साहिब लाला गोपीनाथजी तथा आपके भाई हैं।

मेसर्स मानिकचन्द रामलाल

इस फर्म का हेड आफिस आगरा है। आप लोग खण्डेलवाल वैश्य समाज के वैष्णव सज्जन हैं। आगरा में यह फर्म पुरानी है। वहाँ इसका स्थापन ला० माणिकचन्द द्वारा करीब ४० वर्ष पूर्व हुआ। आपके तथा आपके पुत्र रामलालजी के समय में इसकी साधारण उन्नति हुई। आपके पश्चात् आपके पुत्र गंगाप्रसादजी, मथुरादासजी एवम् चुन्नीलालजी के द्वारा इस फर्म की अच्छी उन्नति हुई और झाँसी तथा बरेली में इसकी शाखाएँ स्थापित की गई।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ गंगाप्रसादजी के पुत्र भगवतीप्रसादजी, सेठ मथुरादासजी के पुत्र भवानीप्रसादजी एवम् मुन्नीलालजी और चुन्नीलालजी के पुत्र लक्ष्मीनारायणजी हैं। आप सब लोग व्यापार संचालन कार्य करते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

झाँसी—मेसर्स माणिकचन्द रामलाल सदरबाजार—यहाँ कपड़ा एवम् जमीन जायदाद का काम होता है।

बरेली—मेसर्स माणिकचन्द रामलाल—यहाँ भी कपड़े का व्यापार होता है। यहाँ आपका रामेश्वर रोलर एण्ड फ्लोअर मिल है।

आगरा—मेसर्स माणिकचन्द रामलाल कन्टोनमेंट T. A. Manik—यहाँ कपड़ा, मकानात एवम् किराये का काम होता है।

गल्ले के व्यापारी—

मेसर्स गणपतराव विश्वनाथ
,, छीतरमल नारायणदास
,, जगन्नाथ रामसहाय
,, द्वारकादास बनारसीलाल
,, नारायणदास पन्नालाल
,, पन्नालाल हाजी नूरमहम्मद
,, बैजूराम उपासीराम
,, गयाराम गोविन्दराम
,, रामदयाल घमण्डी
,, शिवदयाल मन्नीलाल

कपड़े के व्यापारी—

मेसर्स जगन्नाथ छोटेलाल बजाजा
,, जगन्नाथ गोपालदास ,,
,, पद्मसिंह रामनाथ ,,
,, बिरदीचंद मक्खनलाल सदर
,, भगवानदास घनश्यामदास बजाजा
,, माणिकचंद रामलाल सदर
,, मानमल राजमल बजाजा
,, मन्नूलाल मिसोरिया ,,
,, रामदास बन्नीलाल ,,

मेसर्स गनेश सेठ गलीचा वाले

किराना के व्यापारी—

मेसर्स रामदयाल बुलैया
,, लल्लीराम सुन्दरलाल

लोहा के व्यापारी—

मेसर्स गोपालदास रामचरन बड़ाबाजार
,, नारायणदास जगन्नाथ ,,
,, माठूमल रामलाल ,,
,, मन्नूलाल मूलचन्द ,,

चाँदी-सोना के व्यापारी—

मेसर्स किशुन मनसुख
,, गनपत विश्वनाथ
,, द्वारकादास बनारसीलाल
,, पुनितराम सीताराम
,, भगवानदास नन्नेलाल

जनरल मर्चेंट्स—

मेसर्स अब्दुल गनी एण्ड सन्स
,, खादिमअलि एण्ड सन्स
,, जानकीप्रसाद एण्ड संस
,, पन्नालाल एण्ड संस
,, परमानन्द बाबूलाल
,, बैजनाथ भगवानदास

इलाहाबाद

इलाहाबाद का पुराना नाम प्रयाग है। इसे आज भी अधिकांश हिंन्दू जनता प्रयाग के नाम से पुकारती है। वर्तमान इलाहाबाद का एक और भी पुराना नाम था। इसे प्रतिष्ठानपुर भी कहते थे यह प्रतिष्ठानपुर वर्तमान झूसी नामक गाँव के समीप बसा था। इसके ऊँचे २ टीले आज भी बता रहे हैं कि किसी समय यहाँ पर बड़ी बड़ी अट्टालिकायें और राजप्रसाद अवस्थित थे। प्रतिष्ठानपुर में चंद्रवंशी राजा राज करते थे। पुरुरुव नामक राजा यहाँ का प्रसिद्ध शासक हो गया है। कलिदास के विक्रमोर्वशीय नाटक का कथानक इसी प्रतिष्ठानपुर से सम्बन्ध रखता है।

प्रयाग और प्रतिष्ठानपुर में अंतर केवल इतना ही है कि प्रतिष्ठानपुर जहाँ गंगा के उस पार बसा था वहाँ प्रयाग इस पार था। प्रयाग का वर्तमान नाम अकबर ने सन् १५८४ में प्रसिद्ध किला बनवाकर इलाहाबाद रक्खा।

इलाहाबाद संयुक्त प्रान्त की राजधानी है। यह शहर समुद्र की तल से ३४० फीट ऊँचा है। शहर के नीचले भूभाग को गंगा की बाढ़ से बचाने के लिये अकबर के समय में एक मजबूत बाँध बाँधा गया था। शहर का दारागंज नामक महल्ला जिसे शाहजहाँ के पुत्र दारा-शिकोह ने बसाया था इसी बाँध पर बसा हुआ है।

गंगा और जमुना के संगम का उल्लेख तो ऋग्वेद में भी है। हाँ प्रयाग का नाम वेदों में नहीं है पर रामायण और महाभारत के समान ऋषिप्रणीत ग्रंथों में अवश्य ही प्रयाग की चर्चा आयी है। इसी प्रकार बौद्धकालीन युग मे भी प्रयाग की महिमा पूर्ववत् जागरुक थी ऐसे प्रमाण मिलते हैं। मसीह सन् से ५ शताब्दी पूर्व गौतमबुद्ध ने यहाँ कितने ही व्याख्यान दिये थे। कितने ही हिन्दुओं को अपने नव स्थापित धर्म में दीक्षित किया था। इसके ३०० वर्ष बाद अशोक ने कितने ही स्तूप और विहार यहाँ बनवाये थे। जिनमें से एक पत्थर का स्तम्भ आज भी किले के भीतर विद्यमान है। ईसा की सातवीं शताब्दी में यह नगर कन्नौज के राजा हर्षवर्द्धन के हाथ में था। १२ वीं शताब्दी में जयचंद को परास्त कर शहाबुद्दीन ने प्रयाग को अपने हाथ में किया। कुछ दिन बाद इस नगर को मानिकपुर के सूबे में मिला लिया गया।

१३वीं शताब्दी में यह नगर अलाउद्दीन के हाथ लगा और सन् १५२९ में बाबर ने इसे पठानों से छीन लिया। तब से मुगल शासनकाल में यह स्थान ऐतिहासिक महत्व का रहा पर १७७१ में जब शाहआलम देहली चले गये तो अंग्रेजों ने शाहआलम के राज्य का कुछ अंश लेकर इलाहाबाद के सूबे को अपने कब्जे में किया और इसे ५० लाख रुपये पर नवाब अवध के हाथ बेंच डाला। १८०१ ई० में नवाब अवध ने गंगा और जमुना के बीच का देश अंग्रेजों को दे दिया। सन् १८३४ ई० में पश्चिमोत्तर-देशीय सरकार इलाहाबाद में स्थापित हुई पर साल भर बाद आगरे चली गयी। सन् १८५७ में सिपाही विप्लव के बाद पुनः संयुक्त प्रान्त की राजधानी इलाहाबाद हुई।

दर्शनीय स्थान—

अकबरी किला—यह किला अकबर ने सन् १५७५ में गंगा और जमुना के संगम पर बनवाया था। वर्तमान समय में इस किले में बहुत सा परिवर्तन हो गया है पर उपयोगिता की दृष्टि से इस परिवर्तन से किले का महत्व अधिक बढ़ गया है। इस किले में जमीन के नीचे पातालपुरी का विख्यात मंदिर है, जो प्रायः चौकोर है और जिसमें जाने का रास्ता ढालू है। इसकी छत खम्भों पर सधी हुई है। मन्दिर के बीच में शिवलिंग है और वहीं एक ओर अक्षयवट है। इसे प्रयागवाले ११००० वर्ष का प्राचीन बताते हैं। किले के भीतर अशोक का प्राचीन स्तम्भ है। वह ३५ फुट लम्बा और ३ फुट मोटा है। इस पर अशोक के ६ आदेश बराबर पंक्तियों में चारों ओर से अंकित हैं। अक्षर सब बराबर साफ और बहुत गहरे खुदे हुए हैं। इसकी तीसरी और चौथी पंक्ति जहाँगीर ने अपने पूर्वजो के नाम से लिखकर खराब कर दी है। इन अशोक की इन पंक्तियो के नीचे गुप्त वंशी नरेश समुद्रगुप्त का विख्यात और बड़ा लेख है। इस स्तम्भ पर बीरबल का भी एक लेख है।

खुशरो का बाग—यहाँ का एक प्रसिद्ध स्थान है। उसमें खुशरो, उसकी माता जो महाराज मानसिंहजी की बहन थी, तथा खुशरों की बहन इन सब की कब्रें हैं। यहाँ की इमारतें सादी परन्तु विशाल हैं। मुख्य भवन के भीतर फूलों और चिड़ियों के बहुत सुन्दर चित्र हैं।

प्रयाग के सात प्राचीन पवित्र स्थान—त्रिवेणी, माधव, सोमेश्वर, भरद्वाजाश्रम, वासुकि, अक्षयवट और शेष।

बैंकर्स एण्ड कण्ट्राक्टर्स

मेसर्स गप्पूमल कन्हैयालाल

इस फर्म की स्थापना लाला मनोहरलालजी ने करीब ६० वर्ष पूर्व उपरोक्त नाम से कर कपड़े का व्यापार प्रारम्भ किया था। इस व्यापार में सफलता मिलने के पश्चात् इस फर्म पर बैङ्किग व्यापार प्रारम्भ किया गया और धीरे २ कपड़े का व्यापार बन्द कर बैङ्किग व्यापार को उत्तेजना दी जाने लगी। बैङ्किग के साथ २ इस फर्म ने बहुत सी जमींदारी भी खरीद ली। इस व्यवसाय मे इतनी तरक्की हुई कि, कुछ ही समय में यह परिवार बहुत बड़ा जमींदार और रईस परिवार माना जाने लगा। लाला मनोहरलालजी के स्वर्गवास के पश्चात् इस फर्म का संचालन आपके दूसरे पुत्र रायबहादुर रामचरनलालजी ने किया। आप बड़े देशभक्त सज्जन थे। आपका स्वर्गवास सन् १९१७ में हुआ, आपके पश्चात् आपके पुत्र लाला अयोध्याप्रसादजी ऑनरेरी मजिस्ट्रेट ने तथा इनके भी स्वर्गवासी होने पर इनके पुत्र लाला मनमोहनदासजी ने इस फर्म को संचालित किया। आप ही इसके वर्तमान मालिक हैं। आप ऑनरेरी मजिस्ट्रेट, म्यूनिसिपल डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के सदस्य तथा कई कम्पनियो के डायरेक्टर्स, ट्रेभरर्स और लोकल एडवाइसर हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

अलाहाबाद—मेसर्स गप्पूमल कन्हैयालाल रानीमन्डी—यहाँ बैंकिंग और जमींदारी का काम होता है।

राय बहादुर जगमल राजा

आपका आदि निवासस्थान नाघोर (कच्छ) है। आप क्षत्री समाज के चौहान सज्जन हैं। आपके पिता और चाचा संयुक्त प्रांत में कन्ट्राक्ट का काम करते थे अतः आप भी इसी प्रान्त में काम करने लगे और कंट्राक्टर के रूप में व्यापारिक क्षेत्र में प्रवेश किया। इस कार्य में आपको बहुत बड़ी सफलता मिली। आपने रेल्वे के पुलों का कण्ट्राक्ट लेना आरम्भ किया और परिणाम यह हुआ कि आपने आगरे का 'जमुनाबृज' अलाहाबाद के दो जमुनाबृज, और गंगा का इजेट बृज, डेरी-आन्सोनबृज, कोयल बृज आदि के कठिन ठेके पूरे किये। आप उद्योग प्रिय भी हैं। आपने सन् १९१३ में इलाहाबाद का जमुनाबृज बनवाते समय एक छोटी सी ग्लास फैक्ट्री चलाने के लिये पट्टे पर ली और कुछ समय बाद उसे खरीद लिया। आपने बड़ी उलझनों के बाद १५ लाख की पूंजी से उस छोटे से कारखाने को वर्तमान

इलाहाबाद ग्लास वर्क्स बना दिया। इस कारखाने में सभी प्रकार का कांच का काम तैयार होता है। इसके अतिरिक्त इलाहाबाद में आपकी एक आइस फैक्ट्री और एक टाइल फैक्ट्री भी है। आपकी राजापुर कोलरी के नाम से झरिया में कोयले की खान है। वर्तमान में आप कलकत्ते का 'बाली ब्रिज' नामक पुल तैयार करा रहे हैं। इसका ठेका ३ करोड़ का हुआ है।

आप जितने उद्योगी और साहसी हैं उतने ही उदार और दानशील भी हैं। यही आप की विशेषता है। आपने अपने पुत्र बाबू जयरामजी को कांच के कारखाने में प्रवेश कराया और इस विषय का जानकार बनाया। आप वर्त्तमान में कलकत्ते रहते हैं।

इलाहाबाद ग्लास वर्क्स—यहाँ इलेक्ट्रिक शेड, शोडा बाटल, फ्लावर ग्लास, विंडो ग्लास, चिमनी ग्लोब और शिशियाँ तैयार होती हैं।

मेसर्स पीरूमलराय राधारमण

आप लोगों का आदि निवास स्थान जौनधन (कर्नाल) है पर बहुत समय से आप लोग प्रयाग में रहते हैं। आप लोग अग्रवाल समाज के गर्ग गोत्रीय सज्जन हैं। इस फर्म के आदि संस्थापक सेठ पीरूमलजी अपने समय के भारी महाजन माने जाते थे। आपने बैंकिंग के व्यवसाय में अच्छी सफलता प्राप्त की। आपके स्वर्गवास के बाद आपकी फर्म का प्रधान संचालन आपके बड़े पुत्र सेठ रामरिखजी ने सँभाला। आप अपने हे० आ० इलाहाबाद में रहते थे। आपकी फर्म की एक शाखा आगरे में थी। सिपाही विप्लव के समय आपने सरकार को धन, जन से सहायता दी जिसके उपलक्ष में सरकार ने आपको 'राय' की पदवी से सम्मानित कर खिलत प्रदान की। तभी से फर्म के मालिकों में प्रधान महानुभाव 'राय' के नाम से सम्मानित किये जाते हैं। आपके स्वर्गवास के बाद आपके पुत्र राय राधारमणजी ने फर्म के काम को सँभाला। आपने अपने यहाँ के बैंकिंग व्यवसाय को उन्नत करने के साथ ही जमींदारी भी बढ़ाई जो आज कल अलाहाबाद, मिर्जापुर, गाजीपुर, फतेहपुर तथा मुंगेर के जिले मे हैं। आपके बाद आपके पुत्र राय अमरनाथजी फर्म के प्रधान पद पर आये। आप शिक्षित एवं मिलनसार नवयुवक हैं। आप आनरेरी मुंसिफ तथा म्यूनिसिपल कमिश्नर हैं। दारागंज हाईस्कूल आपकी सहायता से चल रहा है और आप ही इसके चेयर मैन हैं। आपके दो भाई और हैं बाबू रामचरणजी तथा बाबू रामकिशोरजी। इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

अलाहाबाद—मेसर्स पीरूमल राय राधारमण बड़ी कोठी दारागंज—यहाँ बैंकिंग का बहुत बड़ा काम और जमींदारी है।

आगरा—मेसर्स पीरूमल राय राधारमण बड़ी कोठी बेलनगंज—यहाँ बैंकिंग का बहुत बड़ा व्यवसाय और कमीशन का काम होता है।

मेसर्स पी० एल० जेटली एण्ड को०

इस फर्म का हेड आफिस यहीं है। इलेक्ट्रिक का काम करनेवाली भारतीय फर्मों में इसका नाम ऊँचा है। इसके वर्तमान प्रधान संचालक बा० पुरुषोत्तमलालजी जेटली हैं। इसका विस्तृत परिचय इसी ग्रंथ के दूसरे भाग में पेज नं० ४९९ में दिया गया है। यहाँ यह फर्म बिजली के सभी प्रकार के सामान का व्यापार करती है तथा कई इलेक्ट्रिक सप्लाई कंपनियों की मैनेजिंग एजंट है। इसका पता कैनिंगरोड है। तार का पता Getly है। इसकी एक शाखा यहाँ हीवट रोड में भी है। जहाँ हार्डवेअर और इलेक्ट्रिक सप्लाईंग स्टोअर्स का व्यापार होता है।

व्यापारी और कमीशन एजण्ट

मेसर्स बाबू कन्हैयालाल

इस फर्म का हेड आफिस झूंसी में है। वहाँ यह फर्म बहुत समय से व्यापार कर रही है। इसकी और भी स्थानों पर कई शाखाएं हैं जिन पर प्रायः गल्ले का व्यापार होता है। यहाँ भी यह फर्म गल्ला एवं कमीशन का काम करती है। इसका पता मुट्ठीगंज है। विशेष परिचय इसी ग्रंथ के दूसरे भाग में पेज नं० ४०१ में दिया गया है।

मेसर्स कल्लूमल विसेसर प्रसाद

इस फर्म का हेड आफिस कलकत्ता है। वहाँ यह फर्म शक्कर एवं चाँवल का बड़ा व्यापार करती है। इसके वर्तमान मालिक सेठ विसेश्वरप्रसादजी हैं। इसका विशेष परिचय चित्रों सहित इसी ग्रंथ के द्वितीय भाग में पेज नं० ४०६ में दिया गया है। यहाँ यह फर्म शक्कर और चाँवल का व्यापार करती है। इसका यहाँ का पता चौक है।

मेसर्स गुरुप्रसाद नारायणदास

इस फर्म की स्थापना इसके वर्तमान मालिक लाला नारायणदासजी ने लगभग ४० वर्ष पूर्व यहाँ की थी और तभी से आप गल्ला और तेलहन का काम कर रहे हैं। आप अग्रवाल वैश्य समाज के सज्जन हैं। आपके पूर्वज लाला गोकुलचंदजी दिल्ली पुराने किले से सन् १८७४ ई० में प्रयाग आये थे। तभी से ये लोग यहाँ रहते हैं। लाला नारायणदासजी के पुत्र बाबू रणछोड़दासजी बहुत होनहार नवयुवक हैं। इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है-

अलाहाबाद—मेसर्स गुरुप्रसाद नारायणदास मुट्ठीगंज T. A. Ranchore—यहाँ गल्ला और तेलहन की आढ़त, बैंकिंग और कंट्राक्ट का काम होता है।

मेसर्स जीतमल कल्लूमल

आप लोग चूरु के आदि निवासी हैं और जाति के माहेश्वरी वैश्य हैं। इस फर्म की स्थापना ८० वर्ष पूर्व सेठ जीतमलजी ने की थी तब से यह फर्म कपड़ा और गल्ले का व्यापार कर रही है। इस फर्म के वर्तमान मालिक बाबू रामेश्वरप्रसादजी तथा आपके पुत्र बाबू राधाकृष्ण, बाबू गोपीकृष्ण, बाबू हरिकृष्ण तथा बाबू रामकृष्णजी हैं। इसका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

अलाहाबाद—मेसर्स जीतमल कल्लूमल महाजनी टोला—यहाँ कपड़ा, शक्कर तथा आढ़त का काम होता है।

कलकत्ता—मेसर्स जीतमल कल्लूमल ८।१ सुखलाल जवेरीलेन बांसतल्ला स्ट्रीट—यहाँ चलानी का काम होता है। यहाँ आफिस और मकानादि हैं। T. A. Pragawala

---

मेसर्स जीतमल गौरीदत्त

इस फर्म के मालिक चूरु के आदि निवासी हैं। आप लोग माहेश्वरी वैश्य समाज के सुखानी सज्जन हैं। चूरु से ८० वर्ष पूर्व सेठ जीतमलजी प्रयाग आये और अपनी फर्म खोली। आपके स्वर्गवास के बाद आपके पुत्र सेठ गौरीदत्तजी अपने बड़े भ्राता सेठ कल्लूमल से अलग हो गये और आपना स्वतंत्र व्यापार उपरोक्त नाम से करने लगे। आपका स्वर्गवास सं० १९७७ में हुआ, तब से फर्म का संचालन आपके पुत्र सेठ हनुमानप्रसादजी करते हैं। सेठ हनुमानप्रसादजी के तीन पुत्र हैं जिनके नाम बाबू चतुर्भुजजी, बाबू गंगाप्रसादजी तथा बाबू मोहनलाल जी हैं। फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

अलाहाबाद—मेसर्स जीतमल गौरीदत्त चौक-
कलकत्ता—मेसर्स जीतमल गौरीदत्त जगमोह
तेलहन और किराने की आढ़त का
बम्बई—मेसर्स जीतमल गौरीदत्त—यहाँ गल्ल
का काम होता है।
प्रतापगढ़—मेसर्स जीतमल गौरीदत्त माधोगं
काम होता है।

मेसर्स पुरुषोत्त

इस फर्म की स्थापना ४० वर्ष पूर्व लाला
आरम्भ किया था जो यह फर्म आज भी कर
की और अपनी फर्म की शाखायें बम्बई तथा
नाम लाला मुंशीलालजी, लाला सुमेरचंदजी त
व्यापार में लगाया। आपका स्वर्गवास २ व
अपना व्यापार करते हैं। अतः इस फर्म के व

इसका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:-
अलाहाबाद—मेसर्स पुरुषोत्तमदास सराफ चौ
चाँदी का व्यापार होता है।

फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

अलाहाबाद—मेसर्स पुरुषोत्तमदास सुमेरचंद जैन ठठेरी बाजार—यहाँ चाँदी-सोना तथा बैंकिंग का काम होता है। तार का पता-Sumer है।

कलकत्ता—मेसर्स पुरुषोत्तमदास सुमेरचंद जैन नं० २२ सोनापट्टी—यहाँ आढ़त का काम होता है। तार का पता-Sitabjaini है।

बम्बई—मेसर्स पुरुषोत्तमदास मुंशीलाल १९४ मोती बाजार—यहाँ आढ़त का काम होता है। तार का पता-Chandani है।

मेसर्स बाबूलाल बृजमोहनदास

इस फर्म की स्थापना ३० वर्ष पूर्व लाला बृजमोहनदासजी ने की थी। आपने कपड़े का व्यापार आरम्भ किया जो यह फर्म आज भी अच्छे ढंग से कर रही है। इस फर्म का प्रधान संचालन आप ही करते हैं और आपकी देख रेख में आपके पुत्र बाबू राजारामजी, बाबू जानकी प्रसादजी तथा बाबू राजकुमारजी करते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

अलाहाबाद—मेसर्स बाबूलाल बृजमोहनदास चौक—यहाँ सभी प्रकार के देशी तथा विदेशी कपड़े का व्यापार होता है।

मेसर्स भगवतीप्रसाद रामस्वरूप

इस फर्म की स्थापना ५ वर्ष पूर्व लाला भगवती प्रसादजी ने की थी। इस फर्म पर गल्ले और तेलहन का काम और आढ़त का काम होता है। इस फर्म के प्रधान संचालक लाला भगवती प्रसादजी और लाला महादेव प्रसादजी हैं। आप लोग वैश्य समाज के सज्जन हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

अलाहाबाद—मेसर्स भगवतीप्रसाद रामस्वरूप मुट्ठीगंज—यहाँ गल्ला तथा तेलहन का परू और आढ़त का काम होता है।

मेसर्स माधुरीदास नारायणदास

इस फर्म की स्थापना २० वर्ष पूर्व लाला नारायणदासजी ने की थी। तब से यह फर्म तेल, गुड़, घी तथा चीनी की आढ़त का काम कर रही है। इस फर्म के मालिक लाला पुरुषोत्तमदासजी और लाला शिवप्रसादजी हैं। इसका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

स्व० पं० शङ्करलालजी भार्गव (राधाकृष्ण बेणीप्रसाद शङ्करलाल) इलाहाबाद

स्व० पं० रामदासजी भार्गव (राधाकृष्ण बेणीप्रसाद शङ्करलाल) इलाहाबाद

स्व० पं० कालकाप्रसादजी भार्गव (राधाकृष्ण बेणीप्रसाद शङ्करलाल) इलाहाबाद

पं० कन्हैयालालजी भार्गव (राधाकृष्ण बेणीप्रसाद शङ्करलाल) इलाहाबाद

अलाहाबाद—मेसर्स माधुरीदास नारायणदास मीरगंज—यहाँ चीनी का काम प्रधान रूप से होता है।

मेसर्स राधाकृष्ण बेनीप्रसाद

इस फर्म की स्थापना लाला शंकरलालजी ने सर्व प्रथम उपरोक्त नाम से बनारस में की थी। उस समय आपने बड़े साहस से अपना व्यापार चलाया था। रेल के न होने से आप अपना माल अपनी नावों में लदा कर सीधा कलकत्ते भेजते थे। आप अपने समय के प्रतिभा-शाली नागरिक एवं प्रतिष्ठित व्यापारी थे। आपने अपनी फर्म अलाहाबाद में खोली जहाँ आज भी आपका परिवार प्रतिष्ठापूर्वक निवास करता है। आप लोग शहजादपुर (टांडा) के आदि निवासी गौड़ ब्राह्मण समाज के भार्गव सज्जन हैं। इसका अधिक परिचय इसी ग्रन्थ के दूसरे भाग के कलकत्ता विभाग में पृष्ठ ४१४ में देखिये। इसके वर्तमान मालिक लाला शंकरलालजी के पौत्र लाला कालिका प्रसादजी के पुत्र लाला कन्हैयालालजी और लाला मनोहरलालजी हैं।

मेसर्स लक्ष्मीनारायण बब्बूलाल

इस फर्म के आदि संस्थापक लाला बब्बूलालजी का आदि निवास स्थान यहीं का है पर उपरोक्त नाम से आप गोंडा और तुलसीपुर (गोंडा) में अपनी फर्में खोल कर बहुत अर्से से गल्ले का व्यापार करते थे। आपने लगभग ८ वर्ष पूर्व उपरोक्त नाम से यहाँ भी फर्म खोली। तब से यहाँ यह फर्म गल्ले का व्यापार और आढ़त का काम कर रही है। इसके मालिक आप ही हैं। इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

इलाहाबाद—मेसर्स लक्ष्मीनारायण बब्बूलाल मुट्ठीगंज—यहाँ गल्ला, तेलहन तथा चीनी की आढ़त का काम होता है।

गोंडा—मेसर्स लक्ष्मीनारायण बब्बूलाल—यहाँ गल्ले और तेलहन की आढ़त का काम होता है।

तुलसीपुर (गोंडा)—मेसर्स लक्ष्मीनारायण बब्बूलाल—यहाँ गल्ले तथा तेलहन की आढ़त का काम होता है।

मेसर्स शिवदत्त अयोध्याप्रसाद (लोहिया पाँडे)

इस फर्म के संस्थापक पं० शिवदत्तजी ने ९० वर्ष पूर्व अपने आदि निवासस्थान मिर्जापुर में अपनी फर्म खोल कर लोहे का व्यापार आरम्भ किया था। कुछ वर्ष बाद आपने इलाहाबाद में उपरोक्त नाम से व्यापार आरम्भ किया और यहीं रहने भी लगे। आपको व्यापार में अच्छी

सफलता मिली। आपने सरकारी कंट्राक्ट का काम भी किया और गल्ले तथा बैंकिंग के व्यवसाय को भी किया। यह सभी काम आज भी आपकी फर्म कर रही है। आपका स्वर्गवास १९१७ में हुआ। आपके बाद फर्म का संचालन भार आपके पुत्र पं० गंगाप्रसादजी पांडे ने सँभाला है। वर्तमान में आपही फर्म के मालिक हैं। आप बड़े मिलनसार और सरल महानुभाव हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

इलाहाबाद—मेसर्स शिवदत्त अयोध्याप्रसाद बहादुरगंज—यहाँ लोहा और इमारती लोह का व्यापार तथा बैंकिंग और गल्ले का काम होता है।

मिर्जापुर

मेसर्स आशाराम जोहारमल

इस फर्म का हेड आफिस कलकत्ता है। और भी कई स्थानों पर इसकी शाखाएँ हैं प्रायः सभी पर चपड़ा एवंम् लाख की खरीदी का काम होता है। इसका विस्तृत परिचय इसी ग्रंथ के दूसरे भाग में दिया गया है। यहाँ यह फर्म चपड़े की खरीदी कर कलकत्ता भेजती है। इस फर्म में दो भागीदार हैं। एक सेठ चिमनलालजी एवम् दूसरे सेठ जवाहरमलजी के पुत्र।

मेसर्स किशन प्रसाद विशुनप्रसाद

इस फर्म का हेड आफिस यहीं है। इसके वर्तमान मालिक सेठ किशुनप्रसादजी एवम् आपके पुत्र बा० सीतारामजी, बंशीधरजी, मुरलीधरजी एवं बिहारीलालजी हैं। इस फर्म का विस्तृत परिचय इसी ग्रंथ के द्वितीय भाग के कलकत्ता विभाग में पेज नं० ४९६ में दिया गया है। यहाँ यह फर्म बैंकिंग, लैंडलार्ड एवम् चपड़े का व्यापार करती है। इसके अतिरिक्त आपका श्रीराधाकृष्ण विविंग मिल्स के नाम से एक कपड़े का मिल चल रहा है। इस मिल के साथ आयर्न फाउंडरी, आईल मिल और फ्लावर मिल भी हैं।

मेसर्स खुशालचंद गोपालदास

इस फर्म का हेड आफिस जबलपुर है। यह फर्म यहाँ पर आढ़त का व्यवसाय करती है। इसकी जमींदारी भी यहाँ पर है। इसके वर्तमान मालिक स्व० राजा गोकुलदासजी के पौत्र सेठ जमनादासजी हैं। इसके विस्तृत विवरण के लिये हमारे इसी ग्रन्थ के प्रथम भाग के बम्बई विभाग पृष्ठ ४१ को देखिये।

मेसर्स गोपालदास कन्हैयालाल

इस फर्म के वर्तमान मालिक बा० वंशीधरजी एवं हीरालालजी के पुत्र बा० जवाहरलालजी एवं बा० गनेशप्रसादजी हैं। इस फर्म का हेड आफिस कलकत्ता है। वहाँ यह फर्म चपड़े एवं लाख का बड़ा व्यापार मेसर्स हीरालाल अग्रवाल के नाम से करती है। इसका विस्तृत परिचय दूसरे भाग में पेज नं० ४९४ में दिया गया है। यहाँ यह फर्म बैंकिंग और चपड़े का व्यापार करती है।

मेसर्स गरीबराम छेदीलाल

इस फर्म का प्रधान व्यापार चपड़े का है जो यह फर्म बहुत पुराने समय से करती आ रही है। इस फर्म के आदि संस्थापक भी चपड़े ही का काम करते थे। उस समय वे लोग मेसर्स गरीबराम फकीरराम के नाम से अपना व्यापार करते थे। परन्तु सम्वत् १९५१ में वे लोग अलग अलग हो गये, अतः बाबू छेदीलालजी ने अपनी स्वतंत्र फर्म मेसर्स गरीबराम छेदीलाल के नाम से स्थापित कर ली, और अपनी फर्म के व्यापार को और भी उन्नत कर सुदृढ़ बना दिया। आपका स्वर्गवास १९६३ में हो गया तब आपके पुत्र बाबू केदारनाथजी ने व्यापार संचालन भार ग्रहण किया। इस समय फर्म के वर्तमान मालिक बाबू केदारनाथजी हैं जो व्यापार का संचालन करते हैं। आप लोग जैसवाल समाज के सज्जन हैं।

इस फर्म ने चपड़े के व्यापार में अच्छी उन्नति की है और साथ ही माल की उत्तमता के लिये फर्म की ख्याति भी खूब है। यही कारण हैं कि (B) (ocl. B.) के नाम का चपड़ा उत्तम माना जाता है।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

मिर्जापुर—मेसर्स गरीबराम छेदीलाल—यहाँ प्रधानतया चपड़े का काम तथा बैंकिंग और जमींदारी का काम भी है।

मिर्जापुर—लालडिग्गी लैक फैक्ट्री—यहाँ चपड़ा बनाने का कारखाना है जो अच्छी उन्नत अवस्था में काम कर रहा है।

मेसर्स जमनादास पन्नालाल

इस फर्म के आदि संस्थापक बा० जमनादास तथा आपके भाई बा० पन्नालालजी ने सं० १९५५ के लगभग इस फर्म की स्थापना मिर्जापुर में की थी। यह फर्म आरम्भ से ही धातु बाने का व्यापार करती चली आ रही है। संस्थापकों के उद्योग से फर्म को अच्छी सफलता

मिली। फलतः धातु बाने के अतिरिक्त लाख, गल्ला और नमक का व्यापार भी क्रमशः खोला गया और समय पाकर फर्म ने कपड़े का व्यापार भी आरम्भ कर दिया है। अतः यह फर्म उपरोक्त व्यापार को ही अपना प्रधान व्यापार मानती है।

इस फर्म के आदि संस्थापकों में से बा० जमनादासजी का स्वर्गवास हो गया है अतः फर्म के वर्तमान मालिक बा० पन्नालालजी तथा स्व० बा० जमनादासजी के पुत्र बा० छोटेलाल जी, बा० लक्ष्मीचंदजी, और बा० हीरालालजी तथा बा० पन्नालालजी के पुत्र बा० कपूरचंदजी हैं। आप लोग वैश्य समाज के जैन धर्मावलम्बी महानुभाव हैं। तथा एक अर्से से मिर्जापुर में ही यह परिवार निवास करता है।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

मिर्जापुर—मेसर्स जमनादास पन्नालाल T. A. Gunmetal—यहाँ धातु बाना, लाख और चपड़े का प्रधान काम होता है।

मिर्जापुर—मेसर्स जमनादास फूलचंद—यहाँ गल्ला, कपड़ा तथा नमक का प्रधानतया काम होता है।

मेसर्स तेजपाल जमनादास

इस फर्म का हेड आफिस यहीं मिर्जापुर में है। इसके वर्तमान मालिक सेठ रामेश्वरदासजी हैं। यहाँ की प्रसिद्ध फर्मों में से यह एक है। इसकी और भी स्थानों पर शाखाएँ हैं। यहाँ यह फर्म कपड़े का व्यापार और बैंकिंग तथा जमींदारी का काम करती है। इसकी यहाँ बहुत बड़ी जमींदारी है। इसका विस्तृत परिचय इसी ग्रंथ के द्वितीय भाग में पेज नं० ३६८ में दिया गया है।

मेसर्स प्रयागदास पुरुषोत्तमदास

इस फर्म का हेड आफिस यहीं हैं पर इसके मालिकों का मूल निवासस्थान बीकानेर है अतः इसका विशेष परिचय हमारे इस ग्रन्थ के प्रथम भाग के राजपूताना विभाग में पृष्ठ १२५ में दिया गया है। यहाँ यह फर्म सोना चाँदी तथा लोहे को छोड़ कर सभी प्रकार की धातुओं का व्यापार करती है।

सेठ रामेश्वरदासजी बजाज भरतिया (तेजपाल जमनादास) मिर्जापुर

बाबू रमेश सिंहजी जायसवाल (महादेव प्रसाद काशी प्रसाद) मिर्जापुर

बाबू केदारनाथजी जायसवाल (गरीबराम छेदीलाल) मिर्जापुर

बाबू सीतारामजी (पाल्हमल भोलानाथ) बनारस

मेसर्स बाबूलाल भागीरथीराम

इस फर्म का हेड आफिस कलकत्ता है। इसके वर्तमान मालिक रायबहादुर भागीरथीरामजी एवं गरीबदासजी हैं। आपका निवासस्थान यहीं का है। इस फर्मका विस्तृत परिचय इसी ग्रन्थ के दूसरे भाग में दिया गया है। यहाँ यह फर्म चपड़े की खरीदी का काम करती है। इस फर्म की ओर से यहाँ एक बाबूलाल हायस्कूल चल रहा है।

मेसर्स बल्देवदास सन्स एण्ड कम्पनी

इस फर्म के आदि संस्थापक बाबू हजारीलालजी सेठ ने सन् १८८५ ई० के लगभग मेसर्स हजारीलाल बल्देवदास के नाम से अपनी फर्म स्थापित कर व्यापार का सूत्रपात किया था। आरम्भ में यह फर्म नावों के कन्ट्राक्ट का काम करती थी पर जैसे २ फर्म को सफलता मिलती गयी वैसे २ फर्म ने पत्थर का व्यापार भी आरम्भ कर उन्नति की ओर अग्रसर किया। फर्म की विशेष उन्नति बाबू बल्देवदासजी सेठ के हाथों हुई। आपने फर्म के पत्थर के व्यापार को अधिक उन्नति दी। वृद्धावस्था के कारण कार्यक्षेत्र से आप वर्तमान समय में अलग हैं। अतः आपके ज्येष्ठ पुत्र बाबू केदारनाथजी सेठ के हाथों में फर्म के व्यवसाय संचालन का भार आया। आपने फर्म के व्यापार को बहुत उत्तेजन दिया।

इस फर्म के वर्तमान प्रधान संचालक बाबू केदारनाथजी सेठ हैं। आप लोग खत्री समाज के सेठ सज्जन हैं। आप लोग बहुत पुराने समय से मिर्जापुर में रहते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

मिर्जापुर—मेसर्स बल्देवदास सन्स एण्ड कम्पनी गऊघाट—यहाँ पत्थर तथा कन्ट्राक्ट का काम होता है।

कलकत्ता—मेसर्स बल्देवदास सन्स एण्ड कम्पनी १ गौरदास बैसाख स्ट्रीट—यहाँ पत्थर और बैंकिंग तथा कन्ट्राक्ट का काम होता है।

पथौड़ (दुमका)—मेसर्स बल्देवदास सन्स एण्ड कम्पनी—यहाँ पत्थर का काम होता है। विंध्याचल, गैपुरा, बिरोही, मिर्जापुर, झिगुरा, टगमगपुर में इस फर्म की पत्थर की खानें हैं।

मेसर्स मूलचंद नारायणदास

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ नारायणदासजी, केदारनाथजी और कैलासनाथजी खंडेलवाल हैं। इस फर्म का हेड-आफिस कलकत्ता है। इसका विशेष हाल दूसरे भाग के पेज नं० ३२९ में दिया है। यहाँ यह फर्म बैंकिग और कपड़े का व्यापार करती है।

मेसर्स महादेवप्रसाद काशीप्रसाद

इस फर्म की स्थापना बाबू महादेव प्रसादजी जैसवाल ने सन् १८९२ ई० में मिर्जापुर में की थी। आपने अपनी फर्म में चपड़े का व्यापार आरम्भ किया और अपने उद्योग से फर्म के

व्यापार को अच्छी उन्नत अवस्था पर पहुँचा दिया। फलतः यह फर्म बंगाल, बिहार, उड़ीसा तथा मध्य भारत में लाख खरीदकर अपने नहरघाट वाले चपड़े के कारखाने में चपड़ा तैयार कराती है। यह फैक्ट्री ५० हजार की लागत से तैयार करायी गयी है। इसी प्रकार एक दूसरी फैक्ट्री मालदा में है। इस प्रकार अन्य स्थानों से लाख खरीद २ कर आती है और फर्म अपने दोनों कारखानों में इसी लाख का चपड़ा तैयार कराती है और दूर विदेशों को भेजती है। फर्म के ऐजेन्ट लन्दन, न्यूयार्क और पेरिस में हैं जहाँ फर्म द्वारा भेजे गये माल की बिक्री आदि का प्रबन्ध है।

इसके अतिरिक्त फर्म जंगल की दूसरी उपज की बिक्री का काम भी करती है और साथ ही मिर्जापुरी कालीन तथा रंग का व्यापार भी यह फर्म करती है। नकली ज्वैलरी के काम में आनेवाले Corundum stone को खानों से खोद कर विदेश में बेंचने का काम भी यह फर्म करती है।

इस फर्म ने चपड़े के काम में अच्छी ख्याति प्राप्त की है फलतः सन् १९०५ ई० में बनारस की नुमायश में सोने का मेडल तथा सन् १९१० ई० में इलाहाबाद की नुमायश में सर्टीफिकेट और चाँदी का पदक मिला है। बटन स्टैम्पड शेलक तथा टंकलैक (बाजू) नामक चपड़े के प्रकार को जन्म देनेवाली यही फर्म है। इसके कितने ही रजिस्टर्ड ट्रेड मार्क हैं *(Lion), (M.)* B. N. Button Lac. M. P. T. Tongue Lac. इनमें से M. P. I; M. D. और M. P. V. आदि चपड़े के ऊँचे ग्रेड हैं।

इस फर्म के वर्तमान मालिक बाबू रमेशसिंह जैसवाल तथा बाबू केशरीसिंहजी जैसवाल हैं। इसका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मिर्जापुर—मेसर्स महादेवप्रसाद काशीप्रसाद T. A. Koti—यहाँ चपड़ा, लाख, ईस्ट इंडियन प्रोड्यूस तथा कोरंडम स्टोन का काम होता है।

मेसर्स लक्ष्मीनारायण हनुमानदास

इस फर्म की स्थापना फतेपुर निवासी बाबू लक्ष्मीनारायणजी तथा चूरू निवासी बाबू हनुमानदासजी ने लगभग २० वर्ष पूर्व मिर्जापुर में की थी। आप दोनों ही महानुभावों ने सम्मिलित रूप से इस फर्म को खोला और कमीशन का काम आरम्भ किया, जो यह फर्म आज भी उसी प्रकार से करती जा रही है।

इस फर्म पर लाख, चपड़ा, बर्तन तथा धातु बाने के कमीशन का काम तो होता ही है पर इसके अतिरिक्त यह फर्म अन्य सभी प्रकार के माल की खरीद तथा बिक्री का काम कमीशन एजेन्ट के रूप में करती है।

इस फर्म के वर्तमान मालिक बाबू लक्ष्मीनारायणजी तथा फर्म के दूसरे भागीदार बाबू हनुमानदासजी हैं। इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

मिर्जापुर—मेसर्स लक्ष्मीनारायण हनुमानदास बुन्देलखण्डी—यहाँ सभी प्रकार के माल की आढ़त का काम होता है।

बनारस

<u>ऐतिहासिक परिचय</u>

इस प्रसिद्ध शहर और तीर्थ स्थान का इतिहास बहुत पुराना है। आज से पच्चीस शताब्दी पहले सारनाथ में महात्मा बुद्धदेव ने धर्मोपदेश देकर बौद्ध मत का प्रचार किया और कितने ही शिष्य बनाये। इसी समय जगद्गुरु शंकराचार्य भी भारत में भ्रमण करते हुए काशी में आये और भिन्न भिन्न मतवालों से शास्त्रार्थ कर उन्हें परास्त किया तथा अपने धर्मोपदेशों से लोगों को अपने धर्म में दीक्षित किया।

सन् १०१८ में महमूद ग़ज़नी ने काशी के राजा बनार पर चढ़ाई की लड़ाई में वे हार गये, उनका किला तोड़ डाला गया, बचे हुए लोग इधर उधर भाग गये। इस लड़ाई में मरे हुए मुसलमान राजघाट के पास गंज शहीद नाम की मसजिद के पास गाड़े गये और उन्हीं के स्मारक में यह मसजिद बनाई गई।

इसके उपरांत बनारस कन्नौज के राठौर वंशीय राजा गोविन्दचन्द, राजा विजयचन्द और राजा जयचन्द के अधिकार में रहा। सन् ११९४ में कन्नौज के राजा और क़ुतुबुद्दीन ऐबक में इटावे के पास घोर युद्ध हुआ। इसी युद्ध में बनारस उनके हाथ से निकल गया और बाद में गहरवार जाति के लोग इसके शासक हुए। क़ुतुबुद्दीन मुहम्मद गोरी का सेनापति था, मुहम्मद गोरी बनारस की विजय सुन कर स्वयं आया और हजारों हिन्दू मन्दिर तथा शहर के अच्छे भागों को तोड़ ताड़ कर उजाड़ कर डाला और अपनी तरफ़ से एक अधिकारी को यहाँ रख सैकड़ों ऊँटों पर धन आदि लदवा कर वह अपने देश को चला गया। सन् १३९४ मे सिकन्दर लोदी भी चुनार से यहाँ आया, वह भी बचा खुचा धन ले चलता हुआ। इस प्रकार सोलहवीं शताब्दी तक काशी में खूब उलट फेर रहा।

मुगल सम्राट अकबर सन् १५६५ ई० में यहाँ आये। आप के समय इस नगर में बहुत कुछ धार्मिक उन्नति हुई और कितने ही नए मन्दिर और घाट बने। मगर समय ने फिर पलटा खाया। सन् १६६९ ई० में औरंगजेब काशी मे आया और निज स्वभाव के अनुसार उसने कितने ही मन्दिरों को तुड़वा दिया और उसके सामान से उसने मसजिदें बनवाई। इसका उदाहरण चौखम्भा

मसजिद, बकरिया कुण्ड की मसजिद, लाट भैरव की मसजिद, ढाई कँगूरा मसजिद, आलमगीरी मसजिद आदि कितनी ही हैं, जिनमें मन्दिरो के खम्भे, गुम्मज और पत्थर लगे हुए हैं। ढाई कँगूरे वाली मसजिद की छत में एक पत्थर के टुकड़े पर संस्कृत भाषा में एक लिपि खुदी हुई है जिसमें सम्वत् १२४८ में वाराणसी नगरी तथा इसके चारों ओर मन्दिर पुष्करिणी मठ आदि के बनाने का उल्लेख है। इसी प्रकार ज्ञानवापी के पास विश्वनाथजी का प्रसिद्ध मन्दिर तोड़ कर उसी स्थान पर मसजिद बनाई है और सदा के लिये हिन्दुओं का चित्त दुखाने के लिये मन्दिर का एक भाग मसजिद के पिछले हिस्से में ज्यो का त्यों रहने दिया है। यहीं तक नहीं पंचगंगा घाट पर बेनीमाधव का मन्दिर तोड़ कर उसके सामान से मसजिद तैयार हुई है जिसमें दो ऊँची मीनारें हैं और वह माधवराव के धराहरा के नाम से प्रसिद्ध है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि मुसलमानी राजत्व काल में सब से अधिक औरंगजेब के जमाने में काशी के धार्मिक जीवन को धक्का पहुँचा। बाद में यह सूबा नवाब अवध के आधीन में आया।

सन् १७३० ई० में सआदत खाँ अवध के नवाब हुए उन्होंने मुरतजा खाँ नाम के एक उमराव से सात लाख सालाना मालगुजारी पर बनारस, गाजीपुर, जौनपुर और चुनार के चारों परगने लेकर अपनी तरफ से आठ लाख रुपया मालगुजारी पर अपने मित्र मीर रुस्तम अली को देकर उन्हे फौजदार बनाया, तब से रुस्तम अली सब प्रबंध करने लगे, माल दीवानी और फौजदारी सभी इनके अधिकार में थी। उसके पश्चात् यह शहर ब्रिटिश शासन के अधिकार में आ गया।

दर्शनीय स्थान

क्वीन्स कालेज—जगतगंज की सड़क पर सन् १७९२ मे कालेज की यह देखने योग्य इमारत बनी है। चुनार के पत्थर से इसका बाहरी भाग और ऊपर का टावर तैयार हुआ है। कालेज का जो हिस्सा जिसके खर्च से बना है वहाँ दाता का नाम पत्थर के उभड़े हुए हिन्दी और अंग्रेजी अक्षरो में खुदा है अन्य लोगों के दान के अतिरिक्त सरकार का १९०३५०) रु० व्यय हुआ है। पूर्व में कालेज लाइब्रेरी और पश्चिम तरफ में म्यूजियम है जिसमें मेजर किटो द्वारा लाई गई सारनाथ की चीजें हैं। पत्थर का सुन्दर फौवारा, हौज, धूप घड़ी और ३२ फुट ऊँचा एक स्तम्भ देखने योग्य है। यह स्तम्भ सन् १८५० ई० में गाजीपुर से लाकर यहाँ खड़ा किया गया है, पिलर पर खुदे हुए अक्षरो से यह चौथी सदी का मालूम होता है। इसमें संस्कृत कालेज विभाग भी खोला गया है।

मान मन्दिर—सवाई जयसिंह जिन्होने १७२८ ई० में जयपुर को बसाया था उन्हीं जयसिंह के बनवाये मान मन्दिर में ज्योतिष विद्या के यंत्र देखने योग्य हैं। वहाँ जाने पर सबसे

पहिले 'याम्योत्तर भित्ति' यंत्र मिलता है। महाराज जयसिंह ने इस यंत्र द्वारा सूर्य की सब से बड़ी क्रांति २३ अंश और २८ कला निकाली थी। पास ही में यंत्रसम्राट, नाड़ीयंत्र, धूप घड़ी, चक्रयंत्र, दिगंशयंत्र आदि ज्योतिष विद्या के चमत्कार दिखलाते हैं। चार वर्ष के लगभग हुए इनकी फिर से मरम्मत कर दी गई है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि काशी में यह स्थान देखने योग्य है।

माधवराव का धरहरा—घाट के ऊपर औरंगजेब की बनवाई हुई १४२ फुट ऊँची एक बड़ी मसजिद है, जो वहीं के बेनीमाधव के मन्दिर की सामग्री से बनी है। मीनार पर चढ़कर देखने से बनारस की बहार दिखलाई पड़ती है। ऊपर धरहरे पर जाने के लिये चक्करदार सीढ़ियाँ हैं। दो पैसा फी आदमी लेकर वहाँ का मुसलमान लोगों को ऊपर चढ़ने देता है। मीनार का नाम माधवराव का धरहरा पड़ा है।

हिन्दूविश्वविद्यालय—

श्रद्धेय पं० मदनमोहन मालवीयजी की यह अमर कीर्ति है। इस विश्वविद्यालय की नींव सन् १९१६ के फरवरी मास में श्रीमान् लार्ड हार्डिञ्ज ने दी थी। जिस स्थान पर नींव का शिलान्यास हुआ वहाँ पर वर्षा काल में गंगाजी बढ़ कर आ गईं। इस कारण कुछ दूर हट कर विश्वविद्यालय के कालेज और होस्टेल बनाये गये हैं। नींव देने के समय भारत के कितने ही राजे, महाराजे, विद्वान् और सम्भ्रांत पुरुष सम्मिलित हुए थे उस समय का समारोह दर्शनीय था। काशी नरेश की दी हुई जमीन के अतिरिक्त कई लाख रुपये की और भी जमीन ली गई है जिससे विश्वविद्यालय का विस्तार बहुत अधिक बढ़ गया है।

श्रद्धेय मालवीयजी ने खोज २ कर बड़े २ विद्वानों और विशेषज्ञों को यहाँ एकत्रित किया है। इस विद्यालय में इञ्जीनियरिंग कालेज, आर्टस् कालेज, साइंस की लेबोरेटरियो के भवन, छात्रावास, व्यायाम शाला, पुस्तकालय, अस्पताल, डाक और तार, शिक्षकों के रहने के स्थान आदि बन कर तैयार हो गये हैं। इस विद्यालय में व्याख्यान बराबर हुआ करते हैं। विश्वविद्यालय देखने के लिए नित्य प्रति लोग आया करते हैं। इस विश्वविद्यालय का उद्‌घाटन श्रीमान् प्रिंस आफ वेल्स ने किया था उस समय का दृश्य देखने योग्य था।

अजमतगढ़ पैलेस—श्रीमान् राजा मोतीचंद साहब सी० आई० ई० ने इसे सन् १९०४ में बनवाया था। यह सुन्दर और दर्शनीय कोठी, इसकी चित्ताकर्षक सजावट और मोतीझील की बहार देखने योग्य है। वर्षा ऋतु में यह स्थान बड़ा रमणीक मालूम होता है। झील के उस पार हनुमानजी का दर्शन होता है। बाहरी तरफ के शौकीन प्रायः नित्य ही झील पर आया करते हैं।

फूल बंगला—

काशी के प्रसिद्ध रईस स्वर्गीय बाबू कामेश्वर प्रसाद ने श्री निवास मन्दिर को सम्वत् १९४६ में स्थापित किया था और खर्च का इतना अच्छा प्रवन्ध कर दिया है जिससे उसके प्रत्येक कार्य और उत्सव का प्रबंध बाबू लक्ष्मीनारायणजी भली प्रकार करते हैं। आजकल कोठी के मालिक बाबू किशोरीरमणप्रसादजी हैं।

पूजनीय स्थान—

विश्वनाथजी का मन्दिर पत्थर का बना ५१ फुट ऊँचा है। मन्दिर के दरवाजों के किवाड़ों पर चाँदी चढ़ी हुई है। मन्दिर के ऊपरी हिस्से और जगमोहन के गुम्बज के ऊपर ताँबे पर सोने का पत्तर है, जिसको लाहौर के महाराज रणजीतसिंह ने सन् १८३९ में दीवान तेजासिंह को भेज कर चढ़वाया था, मन्दिर के बाहर महाराज नैपाल का चढ़ाया एक घण्टा है जिसकी आवाज दूर २ तक पहुँचती है। मन्दिर के भीतर अंगरेजी ढंग के पत्थर अब लगाये गये हैं। महाराज बहादुर कृष्णप्रताप शाही के० सी० आई० ई० हथुआ नरेश के बनवाये सुन्दर चाँदी के हौज में शिव लिंग स्थापित है। फाल्गुन सुदी रंगभरी एकादशी को अपूर्व श्रृङ्गार होता है। चाँदी और सोने की सुन्दर मूर्ति अधिकारी के यहाँ से लाकर रखी जाती हैं। मन्दिर की सजावट दर्शनीय होती है। इस मन्दिर को इन्दौर की महाराणी अहिल्याबाई ने सन् १७८५ ई० में बनवाया था।

इसके अतिरिक्त अन्नपूर्णाजी का मन्दिर, ज्ञानवापी, काशी करवट, संकटादेवी, आत्माविश्वेश्वर, राममन्दिर, जड़ाऊ मन्दिर, आदिकेशव, लाटभैरव, गोपालमन्दिर, लक्ष्मणबाला, द्वारकाधीश, वेणीमाधव, त्रिलोचन महादेव इत्यादि कई स्थान यहाँ पर दर्शनीय और पूजनीय हैं—

व्यापारिक परिचय—

इसमें कोई सन्देह नहीं कि बनारस किसी खास चीज की व्यापारिक मण्डी न होने पर भी देशी दस्तकारी, जरदोजी का सुन्दर काम, बनारसी माल और किमखाब के थान तथा चाँदी के हौदे, कुर्सी के लिये प्रसिद्ध है। यहाँ से यह चीजें तैयार होकर देशी रजवाड़ों में जाती हैं, वास्तव मे इन चीजों के बनाने मे कारीगर कमाल करते हैं। काठ के सुन्दर खिलौने, पीतल की एक से एक चढ़ बढ़कर नक्काशीदार चीजें और सादे बर्तन, सुरती की गोली आदि यहाँ अच्छी तैयार होती हैं।

व्यापारिक बाजार—

यहाँ के देखने योग्य बाजारों में बनारसी माल के लिये कुंजगली, जरदोजी की टोपी के लिये लक्खी चबूतरा, पीतल सिलवर और अल्यूमिनियम के बर्तन के लिये ठठेरी बाजार और साक्षी विनायक हैं। काठ के खिलौने, सुरती की गोली, जर्दा, तमाखू के लिये चौक है। ठाकुरजी के मुकुट और शृंगार की चीजों के लिये गोपालमन्दिर, पीतल और सिलवर के जेवरों के लिये ढुंढिराज और साक्षी विनायक है। थोक गल्ला, घी, चीनी विश्वेश्वरगंज में, साग सब्जी फल वगैरह के लिए विश्वेश्वरगंज, चौखम्भा, चौक, ब्रह्मनाल, दशाश्वमेध और कमच्छा की सट्टी है। किराना और मसाले के लिये गोला दीनानाथ, फलहारी मिठाई के लिये बीबी हटिया, चौखम्भा, सिद्धेश्वरी और ठठेरी बाजार, अनाजी मिठाई पूरी आदि के लिये कचौरी गली और ज्ञानवापी है। मुरब्बा रानी कुंआ पर, मेवे और फल चौक बाजार में, कहाँ तक लिखा जाय जिस गली में आप जाइये वहाँ कुछ चीजें अवश्य मिलेंगी। अंग्रेजी ढंग की चीजें और फर्निचर आप बनारस छावनी मे पावेंगे।

यहाँ के व्यापारियों का परिचय इस प्रकार है।

बैंकर्स एण्ड लैंड लार्ड्स

मेसर्स कामेश्वरप्रसाद गयाप्रसाद

इस फर्म की स्थापना स्व० बाबू कामेश्वरप्रसादजी ने बनारस में की थी। इस परिवार का पूर्व इतिहास स्वयं बहुत पुराना है और साथ ही भारत के ऐतिहासिक शासक शेरशाह के समय से शृंखलाबद्ध चला आ रहा है। १६ वीं शताब्दी में इस परिवार ने अच्छी ख्याति प्राप्त की थी उस समय के यवन शासक शेरशाह के प्रधान खजांची भी इसी परिवार के महा-पुरुष थे। जिस समय विजेता शेरशाह बंगाल गये उस समय उनके साथ स्वयं बंगाल न जाकर इस परिवार के लाला दीपचंदजी शाहाबाद जिले के चैनपुर नामक स्थान में बस गये। इस प्रकार इस परिवार में बैंकिंग और उससे सामीप्य सम्बन्ध रखने वाले जमीदारी कारबार का काम बहुत पुराने समय से चला आ रहा हैं। लाला दीपचंदजी के वंशज लाला जबराजशाहु सरकारी खजाने के खजांची थे। आपके पौत्र बाबू दुर्गाप्रसादजी की धर्मपत्नी श्रीमती कुन्नन कुँवर ने स्व० बाबू कामेश्वर प्रसादजी को दत्तक लिया था बाबू कामेश्वर प्रसादजी ही ने उपरोक्त नाम से अपनी फर्म बनारस में स्थापित की थी।

स्व० बाबू कामेश्वर प्रसादजी बड़े ही व्यवहार कुशल सज्जन थे। आपने अपनी स्थावर सम्पत्ति को इतना अधिक समुन्नत कर लिया कि आप अल्पकाल में ही गया तथा शाहाबाद मे

बहुत बड़े जागीरदार माने जाने लगे। आपने नगर के मध्य भाग में लक्ष्मीनारायण का मन्दिर निर्माण कराया और साथ ही ५० हजार की भारी नकद रकम और १२ हजार वार्षिक आय के गाँव उसमें लगा दिये, जिससे दैनिक कार्य के अतिरिक्त विशेष अवसरों पर होने वाला उत्सव आदि कार्य सरलता से सँभाला जा सके। इसकी एक शाखा गयाजी में भी है जहाँ लोगो को दैनिक सदावर्त मिलता है। आपके तीन पुत्र थे जिनमें ज्येष्ठ पुत्र बाबू गयाप्रसादजी थे जिनका स्वर्गवास आपके समय में ही हो गया था। बाबू गयाप्रसादजी के पुत्र बाबू गोपालनारायन प्रसादजी थे, जिनका स्वर्गवास निःसन्तान अवस्था में हुआ। अतः आपके शेष दो पुत्र बाबू गदाधर प्रसादजी और बाबू किशननारायणप्रसादजी ही आपके स्वर्गवासी होने के बाद फर्म का काम देखते रहे।

बाबू गदाधरप्रसादजी ने अयोध्याजी में सर्यू तट पर गोलाघाट नामक एक घाट बनवाया और वहाँ के श्रीसतगुरु-सदन नामक मन्दिर का निर्माण कराया और ७ हजार की वार्षिक आय वाला एक गाँव उस मन्दिर की रक्षा के लिये लगा दिया। इसी प्रकार आपने कितनी ही छात्र-वृत्तियाँ निर्धनों को देने के लिये व्यवस्था कर दी, जिससे साधारण विद्यार्थी भी सरलता से उच्च शिक्षा प्राप्त कर B. A. L. L. B. हो सकते हैं। आपने अपने पुत्र बाबू किशोरी रमण के जन्म के उपलक्ष में गया में एक संस्कृत पाठशाला स्थापित की। आप स्वभावतः सरल एवं आस्तिक विचार के महानुभाव थे। अतः फर्म का सारा संचालन भार अपने छोटे भ्राता बाबू कृष्णनारायणप्रसादजी को सौंप कर स्वयं शान्ति लाभ करने लगे। बाबू कृष्णनारायण प्रसाद-जी ने स्टेट का प्रबन्ध बड़ी बुद्धिमानी से किया पर आपका स्वर्गवास बहुत ही अल्पकाल में हो गया और फर्म का काम काज बा० किशोरीरमण प्रसादजी के बहुत छोटे होने के कारण उलझ सा गया। पर राजा मोतीचंदजी सी० आई० ई० ने उस समय के कलेक्टर मि० जे० एच० डारविन के सहयोग से बनारस, गया, कानपुर तथा दिल्ली के रईसो की एक कमेटी बनाई जिसके हाथ में सारा प्रबन्ध भार दे दिया और बा० किशोरीरमणप्रसादके मामा मैनेजर नियुक्त कर दिये गये। बा० किशोरीरमणप्रसादजी १९२५ में बालिग हुए और आज तक बराबर अपने पूर्व पुरुषों के अनुसार ही में काम चलाये जा रहे हैं।

बाबू किशोरी रमणप्रसादजी बड़े ही सरल स्वभाव के होनहार नवयुवक हैं। आपने भी कितनी ही संस्थाओं को आर्थिक सहायता दी है। आप ने कानपुर के सनातनधर्म कालेज, पिलग्रिम फण्ड बनारस, बनारस अनाथालय तथा भभुआ (शाहाबाद) अनाथालय आदि को अच्छा दान दिया है। आप यहाँ के इण्डस्ट्रियल ट्रेड ऐसोसियेशन तथा डार्विन पिलग्रिम ट्रस्ट की कार्यकारिणी कमेटी के सदस्य भी हैं आपके वर्तमान झुकाव से सार्वजनिक हित की ओर अच्छी आशा की जाती है। आपही फर्म का काम काज देखते हैं।

इस फर्म के प्रधान मालिक बाबू किशोरीरमणप्रसाद तथा आपके चाचा बाबू किशन-नारायणजी के पुत्र बाबू राधारमणप्रसादजी हैं। जो नाबालिक होने के कारण शिक्षा प्राप्त करते हैं। इसका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

बनारस—मेसर्स कामेश्वरप्रसाद गयाप्रसाद कोठी कचौड़ी गली—यहाँ हेड़ आफिस है और बैंकर्स तथा लैण्ड लार्ड्स का बहुत बड़ा काम होता है।

गया—मेसर्स कामेश्वर प्रसाद गया प्रसाद कोठी गायत्री घाट—यहाँ बैंकर्स तथा लैण्डलार्ड्स का काम होता है।

रायबहादुर बाबू बटुकप्रसाद खत्री

इस परिवार के लोग खत्री समाज के सज्जन हैं। आपका मूल निवासस्थान लाहौर (पंजाब) का है। आपके पूर्वज पंजाब केशरी रणजीतसिंह के यहाँ पर युद्ध मंत्री के सम्माननीय पद पर रहे थे। मगर आप एक दीर्घकाल से यहीं पर बस गये हैं। सर्वप्रथम इस परिवार के पूर्वपुरुष बाबू राम्भामलजी यहाँ पर आये, और इस नगरी की स्वर्गोपम महिमा को देख कर यहीं पर बस गये। यहाँ पर आपके दो पुत्र हुए, जिनके नाम क्रम से बा० गोकुलचन्दजी और बा० मथुराप्रसादजी था। बा० गोकुलचन्दजी बाल्यकाल ही से बड़े कुशाग्रबुद्धि थे। आपने केवल १४ वर्ष की आयु में ही विद्याध्ययन समाप्त कर व्यापार आरम्भ किया। जिसमें आपको अच्छी सफलता और सम्पत्ति प्राप्त हुई। आपने अपना धन जमींदारी खरीदने में लगाया। फलतः आप बहुत बड़े जमींदार हो गये। आपके दो पुत्र हुए जिनके नाम बा० शङ्करसहायजी और बा० बटुकप्रसादजी था। आपने अपने पुत्रों को अच्छी शिक्षा दे शिक्षित बना दिया तथा विवाह भी कर दिये। बा० शङ्करसहायजी के दो पुत्र हुए। थोड़े समय पश्चात् आपके बड़े पुत्र बा० शङ्करसहायजी का देहान्त हो गया जिससे आपके हृदय को बहुत धक्का लगा और आप सांसारिक कार्य्यों से उदासीन हो गये। आपने काशी के प्रसिद्ध मणिकर्णिका घाट का जीर्णोद्धार कराया तथा इसी प्रकार और भी कई सार्वजनिक और धार्मिक कार्य्यों में सहायता दी। आपके स्वर्गवास के पश्चात् समस्त कारबार का भार रायबहादुर बटुकप्रसादजी के हाथों में आया। आपका जीवन बड़ा उदार और सार्वजनिक रहा। आपने कई लोकोपकारी और सार्वजनिक कार्य्यों में मुक्तहस्त हो सहायताएँ पहुँचाईं। सन् १९२५ में आपने एक लाख रुपया दान दे कर कलाकौशलसम्बन्धी विद्यालय स्थापित किया जिसमें सभी प्रकार की कलाकौशल सम्बन्धी शिक्षा दी जाती है। इसका सब प्रबन्ध भार आपने प्रान्तीय सरकार को दे दिया है। इसके सिवा आपने सारस्वत खत्री विद्यालय को १५००० का मकान मुफ्त में

दिया। मच्छोदरीकुण्ड का जीर्णोद्धार करवा कर उसके चारों ओर बगीचा लगवा कर उसे सार्वजनिक उपयोग के लिए म्यूनिसिपैलिटी को दे दिया। इसी प्रकार आपने और भी कई अच्छे २ कार्य्यों में दान दिये। हाल ही में आपका स्वर्गवास हो गया है।

इस समय इस परिवार के विशाल कारबार का संचालन स्व० बा० शङ्करसहायजी के पुत्र बा० गुरुचरणप्रसादजी तथा बा० जगन्नाथप्रसादजी कर रहे हैं। आप भी बड़े योग्य सज्जन हैं। बा० गुरुचरणप्रसादजी के पुत्र बा० राजेन्द्रप्रसादजी तथा बा० गुलाबचन्दजी और बा० जगन्नाथप्रसादजी के पुत्र बा० कृष्णप्रसादजी और शम्भूप्रसादजी हैं।

आपकी फर्म पर बैकिङ्ग और जमींदारी का बहुत बड़ा कारबार होता है।

ऑनरेबल राजा मोतीचन्द साहब सी० आई० ई०

आपका जन्म दूसरी अगस्त सन् १८७६ ई० में हुआ था। आपके पूर्वज अजमतगढ़ के प्रसिद्ध रईस थे, सन् १८५७ के बलवे के समय बृटिश सरकार की आपके पूर्वजों ने बड़ी सहायता की थी। राजा साहब पर बहुत थोड़ी अवस्था से ही कुटुम्ब तथा रियासत का बोझ पड़ गया किन्तु आपने जिस कुशलता एवं दूरदर्शिता से उसका प्रबंध किया उसका सब से अच्छा प्रमाण आपकी अब तक की सफलता से मिलता है। इसमें सन्देह नहीं कि आपकी तीक्ष्ण बुद्धि, कार्यदक्षता, योग्यता और परिश्रम का फल बहुत ही अच्छा हुआ है।

श्रीमान् राजा साहब सन् १९१३ में प्रान्तीय कौन्सिल के सदस्य हुए। सन् १९१६ में बनारस म्युनिस्पल बोर्ड के प्रथम हिन्दुस्तानी चेयरमैन चुने गये। बनारस बंक लिमिटेड के आप सभापति हैं। सन् १९२० में आप कौन्सिल आफ स्टेट के सदस्य हुए। हिन्दू विश्वविद्यालय को आपने १,०००००) रु० दिया। यू० पी० चेम्बर आफ कामर्स के आप मेम्बर, भारत अभ्युदय काटन मिल्स कलकत्ता के मालिक, बनारस काटन एण्ड सिल्क मिल के संचालक, बनारस इण्डस्ट्रीज के सभापति, बृटिश इण्डिया एसोसियेशन, आगरा जमींदार सभा, प्रांतीय जमींदार सभा, भारतीय लैण्डहोल्डर्स असोसियेसन, तथा नागरी प्रचारिणी सभा बोर्ड आफ ट्रस्टीज के आप सदस्य हैं। भवाली सैनेटोरियम की आपने १०,०००) से सहायता की है।

पहली जनवरी सन् १९१६ में आपको सी० आई० ई० की उपाधि मिली। सन् १९१८ की तीसरी जून को आप राजा के टाइटिल से सम्मानित किये गये। वार बोर्ड और म्युनिशन कमेटी के आप सदस्य हैं। सन् १९१८ में भारत सरकार से आपको युद्धसम्बन्धी सहायता के लिये सनद और बैज मिला है। सन् १९१९ में आपकी १०००) की सालाना मालगुजारी

माफ हुई। मतलब यह कि राजा साहब काशी के कितने ही सार्वजनिक कामों में बराबर योग देते और उनकी सहायता करते हैं।

राजा मुंशी माधोलाल साहब सी० एस० आई० काशी

आपके पूर्व पुरुष १८ वीं शताब्दी मे अहमदाबाद से दिल्ली को चले आये और वहाँ से लखनऊ में अवध के नव्वाबों के यहाँ काम करने लगे। सब से प्रथम मुन्शी भवानीलालजी बनारस में आये। आपके कुटुम्ब के कुछ लोग सरकारी नौकरी करने लगे। कुछ लेन देन के व्यवहार से अच्छी सफलता प्राप्त हुई। मुन्शी लक्ष्मीलाल बनारस में सरकारी वकील थे, अपने समय में इन्होंने जायदाद और इलाके खरीद किये। आपके भाई मुन्शी गिरधरलाल के पुत्र मुन्शी बेनी-लालजी हुए जो कि बनारस और बलिया में मुन्सिफ थे। आपही के पुत्र मुन्शी माधोलालजी और मुन्शी साधोलालजी हुए। मुन्शी साधोलालजी कोठी का काम देखने लगे और मुन्शी माधोलालजी सरकारी काम करने लगे। समय पाकर आप सब-जज हुए, आपके भाई मुन्शी साधोलालजी का बिना सन्तान के शरीरान्त हो गया तब राजा साहब को जमींदारी का सब भार भी लेना पड़ा। सन् १९०० में आप प्रान्तीय कौंसिल के सदस्य हुए और सन् १९०६ में बड़े लाट की व्यवस्थापक सभा के सदस्य चुने गये।

आपके कुटुम्ब के लोग चौखम्भा की कोठी में रहते हैं। आपका एक बाग चेतगंज और दूसरा बाग शहर से चार मील बाहर भूलनपुर में है जिसे अब बालापुर भी कहते हैं। आप का यह स्थान बड़ा रमणीक है।

राजा साहब ने २५०००) रु० से सरस्वती भवन लाइब्रेरी बनवाई, अपने भाई मुन्शी साधोलाल के स्मारक में ४०,०००) से संस्कृत की उच्च शिक्षा में उत्तीर्ण होने वाले छात्रों को छात्रवृत्ति देने का प्रबंध किया। किंग एडवर्ड अस्पताल की सहायता की। ५०००) लखनऊ में फव्वारे के लिये दिया।

आप बनारस क्लब, नैनीताल क्लब, ओरियण्टल क्लब, कलककत्ता क्लब और लखनऊ के छत्तर मंजिल क्लब के मेंबर थे।

आपको जनवरी सन् १९०९ में सी० एस० आई० का और जून सन् १९१० में राजा का सम्मानित टाइटिल मिला। आपका स्वर्गवास ८४ वर्ष की अवस्था मे हुआ। आप अपने बाला-पुर वाले बाग में ही रहते थे। कई वर्ष पूर्व से ही आपने अपने स्टेट का सब प्रबन्धभार अपने बड़े नाती राय बहादुर कुँवर नन्दलालजी को दे दिया था। इस समय कुँवर साहब ही उत्तराधिकारी

हैं। इसमें सन्देह नहीं कि राजा साहब का इतना मान सम्मान होने पर भी आपमें बड़ी सादगी थी।

राय बहादुर लेफ्टिनेण्ट कुँवर नन्दलाल एम० एल० सी०, काशी

आपका जन्म सन् १८९२ में हुआ है। आप राजा मुंशी माधोलाल सी० एस० आई० के सबसे बड़े नाती हैं। आपकी शिक्षा क्वीन्स कालेजियट स्कूल में हुई थी। राजा साहब ने अपने सामने ही राज्य का सब प्रबंध भार आपको दे दिया था। आपने भी इस काम को भली प्रकार सम्हाला है। कुँवर साहब ऑनरेरी मैजिस्ट्रेट हैं, और आप मुंशी माधोलाल ट्रस्ट फण्ड, किंग एडवर्ड अस्पताल, पूना के भंडारकर रीसर्च इन्स्टीट्यूट और कलकत्ता क्लब के मेम्बर हैं।

प्रान्तीय कौंसिल के आप सदस्य भी हुए थे। सन् १९१२ की फरवरी में आप श्रीमान् काशी नरेश के परसनल स्टाफ के ए० डी० सी० और बनारस स्टेट लैंसर के ऑनरेरी लेफ्टिनेण्ट नियुक्त हुए हैं। सन् १९१८ में शाही इण्डियन लैंड फोर्स के सेकेण्ड लेफ्टिनेण्ट बनाये गये।

आपको जनवरी सन् १९२२ में रायबहादुर का टाइटिल मिला है। आप भी सार्वजनिक कामों में बराबर योग देते हैं और उनकी सहायता भी करते हैं। आपके दो छोटे भाई पं० गिरधर लाल व्यास और पं० गोविन्दलाल व्यास हैं जिनको राजा साहब ने गाँव इलाके अलग दे दिये हैं। इस थोड़ी अवस्था ही में आपने सब कामो को सम्हाल लिया है और स्टेट का प्रबंध बहुत अच्छी तरह कर रहे हैं।

बनारसी माल एवं चांदी सोने के व्यापारी

मेसर्स गोकुलचन्द रामचन्द्र

इस फर्म के मालिक लाहोर निवासी खत्री समाज के कपूर सज्जन हैं। इसकी स्थापना क़रीब १०० वर्ष पूर्व दीवान देशराजजी ने की। शुरू से ही इस फर्म पर बनारसी माल का व्यापार होता चला आ रहा है आपके स्वर्गवासी हो जाने के पश्चात् फर्म का संचालन आपके पुत्र दीवान बालमुकुन्दमलजी ने संभाला। आप बनारसी माल, पश्मीना, जेवरात और चाँदी सोने का सामान रियासतों में भेजते थे। करीब ३५ वर्ष पूर्व उपरोक्त नाम से व्यापार होता चला आ रहा है। फर्म ने अपने माल की ज्यादा खपत होते देख बनारस मे लक्ष्मीकुंड पर एक सिल्क मिल दी बालमुकुन्द सिल्क मिल के नाम से स्थापित किया। दीवान बालमुकुन्दजी

का अभी २ स्वर्गवास हो गया है। आप व्यापारचतुर सज्जन थे। आपने जातीय हित के कई काम किये।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक दीवान गोकुलचंदजी, ए० दीवान रामचन्द्जी हैं। आप ही लोग फर्म के काम का संचालन करते हैं। बा० गोकुलचंदजी कपूर आनरेरी मेजिस्ट्रेट, काशी सिल्क व्यापार सभा के मंत्री, इंडट्रीयल ट्रेड असोसियेशन के मंत्री आदि हैं। ला० रामचन्द्रजी भी शिक्षित एवं मिलनसार हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

बनारस—मेसर्स गोकुलचन्द रामचन्द लखी चौतरा—यहाँ बनारसी माल का व्यापार होता है।

लंदन—मेसर्स बालमुकुन्द एण्ड सन्स, १० हनोवर स्ट्रीट—यहाँ बनारसी सभी प्रकार के फैन्सी कपड़े, क्यूरियो आदि २ का व्यापार एवं आढ़त का काम होता है।

बनारस—दी बालमुकुन्दमल सिल्क फैक्टरी लक्ष्मीकुंड—यहाँ इस नाम से आपकी सिल्क फैक्टरी है, जहाँ फेन्सी बनारसी माल तैयार होता है।

मेसर्स गिरधरदास जगमोहनदास

इस फर्म के मालिक बनारस के निवासी हैं। आप लोग अग्रवाल वैश्य समाज के सज्जन हैं। इस फर्म की स्थापना करीब ७० वर्ष पूर्व सेठ जगमोहनदासजी द्वारा हुई और आपही के द्वारा इसकी उन्नति भी हुई। आपका स्वर्गवास हो गया है।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक स्व० ला० जगमोहनदासजी के पुत्र बा० लक्ष्मीदासजी बी० ए० तथा बा० नरसिंहदासजी बी० ए० हैं। आप दोनो ही सज्जन फर्म का संचालन करते हैं।

इस फर्म के संचालकों ने बनारसी माल का प्रसार युरोप में करने का उद्योग किया, जिसमें इन्हें सफलता भी हुई। आपने युरोपियनों की अभिरुचि के अनुसार माल को तैयार करवा कर वहाँ के प्रधान २ केन्द्रों द्वारा इस माल का प्रसार किया। फलतः विदेशों में इस माल की अच्छी खपत होने लगी। इस फर्म के बढ़िया माल के लिये लार्ड कर्जन, लार्ड मिन्टो आदि से लेकर वर्तमान वाइसराय तक और सम्राट् एवं सम्राज्ञी ने लेटर आफ अपाइन्टमेट दिये है। संसारप्रसिद्ध विम्बली एक्जीबिशन में इस फर्म को अच्छी ख्याति एवं स्वर्ण-पदक प्राप्त हुआ।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

बनारस—मेसर्स गिरधरदास जगमोहनदास, सुखलाल साहु का फाटक, T. A. Brocadis—यह फर्म सभी प्रकार के फैन्सी बनारसी माल, चाँदी, सोना एवं जवाहरात का व्यापार करती है। इस फर्म के द्वारा देशी राज्यों में भी बहुत माल सप्लाय होता है।

मेसर्स गोपालमल परसोत्तमदास

यह फर्म बनारस में लगभग ८० वर्ष पूर्व स्थापित हुई थी। इसके संस्थापक बाबू गोपाल-मलजी अमृतसर के रहने वाले खत्री जाति के सज्जन थे। आपने स्वदेश से बनारस आकर व्यापार कार्य आरम्भ किया। आपके बाद आपके पुत्र बाबू परसोत्तमदासजी ने उपरोक्त फर्म की स्थापना कर बनारसी माल का व्यापार आरम्भ किया जो आज भी यह फर्म पूर्ववत् करती आ रही है। आपने अपने बुद्धिबल एवं पुरुषार्थ से व्यापार में अच्छी सफलता प्राप्त की। आपके यहाँ प्रधान रूप से बनारसी साड़ी का व्यापार होता है। इसके मालिक बाबू परसोत्तम-दासजी हैं। आपके तीन पुत्र हैं। जिनके नाम बाबू बनारसीदासजी, बाबू परमेश्वरीदासजी तथा बाबू जगदीशप्रसादजी हैं। सभी लोग व्यापार में सहयोग देते हैं। आपकी ओर से अन्नपूर्णाजी के पास एक मंदिर तैयार हो रहा है।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

बनारस—मेसर्स गोपालमल परसोत्तमदास लाहोरी टोला नीलकंठ महादेव—यहाँ सभी प्रकार की सिल्क तथा बनारसी माल का व्यापार होता है।

मेसर्स चुन्नीलाल कुंवरजी

इस फर्म का हेड आफिस बम्बई है अतः इसका विशेष परिचय इस ग्रन्थ के प्रथम भाग के बम्बई विभाग में पृष्ठ १७९ में दिया गया है। इस फर्म के मालिक सेठ परमानन्दभाई बी० ए० एल० एल० बी० हैं। यहाँ यह फर्म चौक में है जहाँ पक्के कलाबत्तू का व्यापार होता है। यहाँ का तार का पता Kala battu है।

मेसर्स जैगोपाल लक्ष्मीनारायण

इस फर्म का हेड आफिस अमृतसर है। वहाँ यह फर्म मेसर्स सीताराम जयगोपाल के नाम से व्यापार करती है। इसका अधिक परिचय हमारे इसी ग्रन्थ के प्रथम भाग के बम्बई विभाग मे पृष्ठ १५३ में दिया गया है। यहाँ यह फर्म कुंज गली में है जहाँ बनारसी साड़ी, दुपट्टे आदि का व्यवसाय करती है।

मेसर्स जयनारायण हरनारायण

इस फर्म का हेड आफिस पटना मे है। बनारस फर्म के भागीदार बाबू छगनलालजी सिंहल, अग्रवाल हैं। यहाँ यह फर्म करीब ३० वर्षों से स्थापित है। इसका विस्तृत परिचय इसी ग्रंथ के

दूसरे भाग में बिहार विभाग में पटना में दिया गया है। यहाँ इसका पता नीचीबाग है। यह फर्म यहाँ बनारसीमाल जैसे साड़ी, सिल्क, टकुआ साड़ी, चिकन, गोटा, पट्टा, एवं चाँदी का सामान जैसे, हौदा, कुरसी, घोड़े का साज आदि का व्यापार करती है।

मेसर्स दिलसुखराय जयदयाल

इस फर्म की स्थापना करीब २५ वर्ष पूर्व सूरजगढ़ निवासी स्व० सेठ जयदयालजी अग्रवाल द्वारा हुई। आपही के द्वारा इसकी तरक्की भी हुई। वर्तमान में इस फर्म के मालिक आपके पुत्र ला० गजानन्दजी हैं। आप ही फर्म का संचालन करते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

बनारस—मेसर्स दिलसुखराय जयदयाल, गोपालदास साहु का मोहल्ला—T. A. Kashipuria—यहाँ बनारसी माल जैसे काशी सिल्क, बनारसी साड़ी, टकुआ साड़ी, किनखाप, गोटा, पट्टा आदि का थोक व्यापार होता है।

कलकत्ता—मेसर्स जयदयाल गजानन्द—१५८ क्रास स्ट्रीट—यहाँ फैन्सी उनी और सिल्की माल का व्यापार होता है।

मेसर्स दुर्गादास द्वारकादास

इस फर्म का हेड आफिस अमृतसर है जहाँ मेसर्स हीरालाल दीवानचंद के नाम से व्यापार होता है। इसके अतिरिक्त वहाँ इस फर्म की और भी कितनी ही दुकानें हैं जो भिन्न २ नाम से व्यापार करती हैं। इसका अधिक परिचय हमारे इसी ग्रन्थ के प्रथम भाग के बम्बई विभाग में पृष्ठ १३६ में दिया गया है। इस फर्म का यहाँ नन्दन साव के मोहल्ले में आफिस है जहाँ यह फर्म बनारसी साड़ी आदि का व्यापार करती है।

मेसर्स दुर्गासहाय रामलाल

इस फर्म की स्थापना बा० दातारामजी कपूर ने सम्वत् १९६१ में बनारस में की थी। आरम्भ से ही यह फर्म बनारसी माल का व्यवसाय करती आ रही है। इस फर्म का अधिक माल बम्बई की बाजार में खपता है और वहाँ से अरब, पैलेस्टाइन और मिश्र के लिये रवाना होता है।

इस फर्म के वर्तमान मालिक बा० दाताराम कपूर और आपके पुत्र बा० रामलालजी हैं। आप लोग अमृतसर के रहने वाले हैं और खत्री समाज के कपूर सज्जन हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

बनारस—मेसर्स दुर्गासहाय रामलाल छोटी कुंजगली—यहाँ ऊँचे दर्जे के फैन्सी बनारसी माल का व्यापार होता है।

मेसर्स नन्दगोपाल मकसूदनदास

इस फर्म के मालिकों का मूल निवासस्थान मुबारकपुर (आजमगढ़) है। संवत् १९४४ में बाबू नन्दगोपालजी एवं मकसूदनदासजी दोनों भाई यहाँ आये तथा संवत् १९५८ में आपने अपनी फर्म स्थापित कर काशी सिल्क का व्यापार प्रारम्भ किया। आप व्यापारचतुर सज्जन हैं। अतएव शीघ्र ही आप लोगों के द्वारा फर्म की उन्नति हुई। आपका माल हिन्दुस्थानी एवं यूरोपियन दोनों ही लोगों में बिक्री होता है। संवत् १९७० में आपने अपनी फर्म पर गोटा, पट्टा का भी व्यापार फैलाया। क्रमशः उन्नति करते हुए आपने बनारसी माल भी अपने यहाँ बनवाना प्रारंभ किया। आपकी सच्चाई की वजह से आपका माल बहुत बिकने लगा। अतएव माल की विशेष बनवाई के लिये आपने स्थानीय कबीरचौरा रोड के पास जालपादेवी पर एक सिल्क मील खोला। जो वर्तमान में भी अपनी उन्नतावस्था में काम कर रहा है। यह मील आपके पुत्र बा० प्रह्लाददासजी द्वारा खोला गया। आप लोगों का ध्यान काशी-सिल्क की ओर अधिक है। इसी लिये आप हमेशा इसमें नये २ डिजाइन निकाला करते हैं। इसके अतिरिक्त आपके यहाँ जवाहरात, सोने चाँदी के जेवरात, हौदा कुर्सी वगैरह का भी काम होता है।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक बा० नन्दगोपालजी एवं मकसुदनदासजी तथा आपके पुत्र बा० प्रह्लाददासजी, बा० नरसिंहदासजी और बा० जमनादासजी हैं। आप सब लोग व्यापार संचालन करते हैं। ला० नन्दगोपालजी वयोवृद्ध होने से शांतिलाभ करते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

बनारस—मेसर्स नन्दगोपाल मकसूदनदास नन्दनसाहु लेन—यहाँ सभी प्रकार के सिल्क, बनारसी माल एवं सोने चाँदी के मढ़े हुए फर्निचर तथा गोटा पट्टा का व्यापार होता है।

स्थानीय जालपादेवी पर इस फर्म का एक सिल्क मिल भी है।

मेसर्स नन्दलाल एण्ड सन्स।

इस फर्म की स्थापना सन् १८९३ ई० में बा० नंदलालजी ने की थी। आपने ही फर्म के व्यापार को उन्नति की ओर बढ़ाया। यह फर्म आरम्भ से ही बनारसी माल का व्यापार करती आ रही है, यों तो यह फर्म सभी प्रकार के बनारसी माल का व्यापार करती है पर बनारसी माल में भी यह फर्म साड़ी का प्रधान रूप से काम करती है और साड़ी की स्पेशलिष्ट है। फर्म में सभी स्थानों के फैशन का माल तैयार कराया और भेजा जाता है पर उत्तर भारत के लिये फर्म में बहुत बड़े स्टाक में माल सदा तैयार रहता है।

इस फर्म के प्रधान संचालक बा० नन्दलालजी हैं और आपही की देख-रेख में फ़र्म का सारा संचालन होता है।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

बनारस—मेसर्स नन्दलाल एण्ड सन्स रानीकुआँ चौक—यहाँ सभी प्रकार के बनारसी माल का व्यापार होता है।

मेसर्स पालूमल भोलानाथ

इस फर्म की स्थापना करीब ५५ वर्ष पूर्व ला० भोलानाथजी के द्वारा हुई। आप खत्री समाज के सज्जन हैं। शुरू २ आपने अपनी फर्म पर बनारसी माल का व्यापार आरंभ किया था जो वर्तमानमें भी हो रहा है। आपका स्वर्गवास हो गया।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक ला० सीतारामजी हैं। आपके २ पुत्र हैं बा० लालचन्दजी एवं बा० ज्ञानचंदजी। आप दोनों ही इस समय पढ़ते हैं। फर्म का संचालन ला० सीतारामजी ही करते हैं। आप मिलनसार व्यक्ति हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

बनारस—मेसर्स पालूमल भोलानाथ, कुंजगली गेट—यहाँ सभी प्रकार की ज्वेलरी, बनारसी माल एवं सोने चाँदी के फर्निचर का व्यापार होता है।

बनारस—मेसर्स सीताराम गंगाप्रसाद सती चौतरा—यहाँ भी सभी प्रकार के बनारसी माल, चाँदी सोने के फर्निचर एवं जवाहरात का व्यापार और कमीशन का काम होता है।

कटक—मेसर्स पालूमल भोलानाथ एण्ड सन्स, बालू बाजार—यहाँ बनारसी कपड़ा एवं फर्निचर का काम होता है।

झाऊआपारा (संभलपुर)—मेसर्स पालूमल भोलानाथ एण्ड सन्स—यहाँ भी बनारसी माल का व्यापार होता है।

इस फर्म को कालाहांडी, मयूरभंज, सोनपुर, बामारा, पुरी एवं गंगापुर दरबार का अपाइन्टमेन्ट है।

मेसर्स परमानन्द सीताराम

इस फर्म की स्थापना बाबू परमानन्दजी ने सम्वत् १९४१ में बनारस में की थी। यह फर्म आरम्भ से ही बनारसी माल तथा हौदा कुर्सी तैयार कराने का काम करती है। यों तो यह फर्म सभी प्रान्तों के लिये माल तैयार करा कर भेजती है पर विशेष रूप से इस फर्म का माल बम्बई जाता है।

वर्तमान में फर्म के प्रधान संचालक बाबू परमानन्दजी हैं। आप अमृतसर के आदि निवासी हैं और खत्री जाति के मेहरा सज्जन हैं पर अर्से से बनारस रहते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

बनारस—मेसर्स परमानन्द सीताराम लक्खी चौतरा (सुखलालसाहु का फाटक)—यहाँ बनारसी माल और सोने चाँदी के फर्नीचर का काम होता है और रियासतों को भेजा जाता है।

मेसर्स बब्बूलाल बनारसीदास।

इस फर्म की स्थापना लगभग ३० वर्ष पूर्व सेठ सुन्दरमलजी ने की थी। यह फर्म आरम्भ से ही गोटा किनारी तथा बनारसी माल का व्यवसाय करती आ रही है। इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ बब्बूलालजी तथा बा० बनारसीदासजी हैं। आप लोग रामगढ़ (सीकर जयपुर) के निवासी हैं और अग्रवाल वैश्य जाति के सज्जन हैं। इस फर्म की उन्नति इसके संस्थापक सेठ सुन्दरमलजी के हाथों हुई। आपके स्वर्गवासी होने के बाद आपके पुत्र सेठ बब्बूलालजी ने इस कार्य को सँभाला।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

बनारस—मेसर्स बब्बूलाल बनारसीदास चौखम्भा T. A. Truth—यहाँ गोटा, किनारी तथा बनारसी माल का व्यापार और बैंकिंग का काम होता है।

मेसर्स मनीराम हरजीवनराम

इस फर्म के वर्तमान प्रधान संचालक रायसाहिब पं० माधोरामजी संड हैं। आपके पितामह पं० हरीरामजी संड ने इस फर्म की आधारशिला रक्खी थी। जिस समय भारत में रेलवे लाइन का प्रसार न हुआ था उस समय भी पं० हरीरामजी संड बनारस में कालीसूसी

की साड़ी तैयार करा कर दक्षिण भारत के नागपुर ऐसे केन्द्रों को भेजते थे। आपको इस व्यापार में अच्छी सफलता मिली फलतः दक्षिण भारत के प्रायः सभी व्यवसायिक केन्द्रों में आपका माल जाने लगा। सम्वत् १९५४ में आपके स्वर्गवासी होने के बाद से इस फर्म के व्यापार संचालन का भार आपके पुत्र पं० मनीरामजी संड पर पड़ा। पं० मनीरामजी संड ने अपनी व्यापार चातुरी से अच्छी सफलता प्राप्त की। बनारसी माल के आप अपने समय के अच्छे जानकार थे। आपने कलकत्ता तथा मद्रास में अपनी आढ़तें स्थापित कीं। आपके यहाँ उच्च कोटिका बनारसी माल तैयार कराया जाता था। आपके छोटे भ्राता पं० हरजीवनरामजी संड ने अपने हाथ में रियासतों को बनारसी माल सप्लाई करने का काम लिया। आपने थोड़े ही समय में इस ओर भी अच्छी सफलता प्राप्त कर ली। पं० हरजीवनरामजी संड के स्वर्गवास के बाद रियासतों का काम पं० मनीरामजी संड के जेष्ट पुत्र पं० शिवरामजी संड ने संभाला। इस कार्य में पं० शिवरामजी संड के छोटे सहोदर भ्राता पं० माधोरामजी संड ने भी सहयोग देना आरम्भ कर दिया। फलतः अल्पकाल में ही दोनों भाइयों ने फर्म का सभी काम संभाल लिया और पं० मनीरामजी ने शान्ति लाभार्थ व्यवसायिक कार्य से अवकाश ले लिया। आपने सम्वत् १९५८ में बैकुंठ मन्दिर स्थापित किया। आपका स्वर्गवास सम्वत् १९६६ में हुआ। आपके पुत्रों ने व्यापार में अच्छी उन्नति की। आपके पुत्र पं० शिवरामजी परम आस्तिक थे। आपने भी कैलाश नामक एक मंदिर निर्माण कराया। आपका स्वर्गवास सम्वत् १९८५ में हुआ।

इस समय इस फर्म के व्यवसाय को रायसाहिब पं० माधोरामजी संड संचालित करते हैं। इस कार्य में आपके भाई प० मुकुन्दरामजी सहयोग देते हैं। आप दोनों ही भाइयों के पारस्परिक सहयोग द्वारा फर्म का व्यवसाय सुचारुरूप से संचालित होता है। रायसाहिब पं० माधोरामजी संड बड़े ही व्यापार पटु हैं। आपका मेल देश के प्रायः सभी राजा महाराजा और सरकारी अफसरों तथा अन्य रईसो से है। आपके गुणों पर मुग्ध हो सरकार ने आपको उपरोक्त उपाधि प्रदान की है। आप बड़े ही सरल एवं मिलनसार हैं।

यह फर्म अपने बनारसी माल और रत्नजटित जड़ाऊ सामान के व्यवसाय में देश-विदेश सभी जगह प्रसिद्ध है। यही कारण है कि देश के सभी ऊँच वर्ग के परिवार में इसके माल की अच्छी मॉग रहती है। इसे लन्दन की विम्बली प्रदर्शिनी में और प्रयाग की प्रदर्शिनी में प्रतिष्ठा सूचक पदक मिले हुए हैं। सन् १९०३ ई० और सन् १९१२ ई० के दिल्ली दरबार के समय शाही व्यवहार के लिये इसी फर्म ने वस्त्र तैयार कराये थे। इतना ही क्यों सम्वत् १९७९ ई० में इस फर्म ने एक जोड़ कुर्सी तैयार कराई थीं जिन पर मीना के ऊपर हीरा का काम किया गया था जिसे देख स्वयं प्रिन्स आफ वेल्स ने प्रशंसा की थी। और रायसाहिब पं० माधोरामजी की अभिरुचि एवं पारखी बुद्धि की सराहना की थी।

इस फर्म का जहाँ व्यवसाय बहुत विस्तृत है वहाँ स्थायी सम्पत्ति भी इसकी विस्तृत है। इसकी जमींदारी बनारस, जौनपुर, भागलपुर तथा पुरनिया जिलों में है।

इसका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

बनारस—मेसर्स मनीराम हरजीवनराम गायघाट, बंगाली बाड़ा—यहाँ सभी प्रकार के ऊँचे दर्जे के फैन्सी बनारसी माल, सोना, चाँदी जटित जेवरात तथा जवाहिरात का काम होता है। इसके अतिरिक्त लैण्ड लार्ड्स और बैंकर्स का व्यवसाय भी होता है।

मेसर्स मोतीचन्द फूलचन्द

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ मोतीचन्दजी हैं। आपही के द्वारा करीब ३० वर्ष पूर्व इसकी स्थापना हुई। इसकी उन्नति का श्रेय भी आप ही को है। दानधर्म आदि के कार्यों की ओर भी आपका अच्छा ध्यान रहा है। आपके ६ पुत्र हैं, जिनके नाम क्रमशः बाबू कुंजीलालजी, बा० केसरीचंदजी, बा० फूलचंदजी, बा० सूरजप्रसादजी, बा० बनारसीदासजी एवं बा० निहालचंदजी हैं। आप लोग दिगम्बर जैन धर्मावलम्बीय सज्जन हैं। बा० सूरजप्रसादजी यहाँ की फर्म मेसर्स खड़गसेन उदयराज के यहाँ दत्तक गये हैं।

इस फर्म का व्यापार अपने ढंग का निराला व्यापार है। इस फर्म पर चाँदी सोने की नकाशी निकाली हुई मोटरें, गाड़ियाँ, सिंहासन, छत्र, चँवर आदि कितनी ही प्रकार की फैन्सी वस्तुओं का व्यापार होता है।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

बनारस—मेसर्स मोतीचंद फूलचंद मोतीकटरा T. A. Singhahi—इस फर्म पर चाँदी-सोने के रथ, मोटर, गाड़ियाँ, सिंहासन, ऐरावत हाथी, वेदी आदि बेश-कीमती सामान तैय्यार होता है तथा बिक्री किया जाता है। इसके अतिरिक्त कमीशन पर भी यह फर्म काम करवा देती है।

बनारस—मेसर्स मोतीचंद कुंजीलाल, सिल्कहाऊस मोतीकटरा—यहाँ बनारसी माल, साड़ियाँ, लहँगे आदि पर सलमा-सितारे का काम और जरी की वस्तुओं का व्यापार होता है। इसके अतिरिक्त काशी-सिल्क का व्यापार भी यह फर्म करती है।

कलकत्ता—मेसर्स मोतीचन्द फूलचन्द, १६१/१ हरिसन रोड—यहाँ बनारस के बने हुए सभी प्रकार के जरी के बेश-कीमती कपड़े एवं चाँदी सोने की बनी हुई उपरोक्त वस्तुओं का व्यापार होता है। यहाँ यह फर्म कमीशन का भी काम करती है।

सेठ मोतीचंदजी सिंघई (मोतीचंद फूलचंद) बनारस

सेठ फूलचंदजी सिंघई (मोतीचंद फूलचंद) बनारस

मोती कटरा (चाँदी कोठी) बनारस
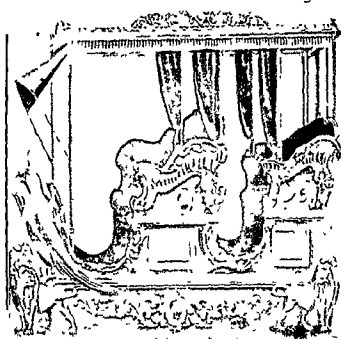
चाँदी का हौदा (मेकर-मोतीचंद फूलचंद) बनारस

मेसर्स राधाकृष्ण शिवदत्तराय

इस फर्म की स्थापना लगभग ५० वर्ष पूर्व सेठ राधाकृष्णजी डिडवानियों ने बनारस में की थी। इस फर्म पर आरम्भ में बनारसी माल का व्यवसाय होता था जो आज भी उसी प्रकार से होता है। ज्यों-ज्यों फर्म ने उन्नति की त्यों-त्यों गल्ला, सन (Hemp), अलसी, चीनी, चाँदी-सोना, गोटा-पट्टा तथा काशी सिल्क आदि के काम खोले गये जो आज भी पूर्ववत् हो रहे हैं। इस फर्म ने लगभग १९ वर्ष पूर्व बनारस के समीप शिवपुर में 'पार्वती हेम्प बेलिंग प्रेस' नामक एक मिल खोला जो आज अच्छी अवस्था में काम कर रहा है।

सेठ राधाकृष्णजी का स्वर्गवास हुए लगभग ३९ वर्ष हुए। आपके बाद आपके पुत्र सेठ शिवदत्तरायजी ने व्यापार को सँभाला था। आपके समय में फर्म ने अच्छी उन्नति की। आपका स्वर्गवास सम्वत् १९८३ में हुआ। वर्तमान में फर्म का व्यवसाय संचालन आपके पुत्र बाबू महादेवप्रसादजी तथा बाबू रामकुमारजी करते हैं। आपकी ओर से बनारस के ज्ञानवापी नामक स्थान में राधाकृष्ण धर्मशाला नाम की एक अच्छी धर्मशाला बनी हुई है। इसी प्रकार रामनिरंजन सेठ की पाठशाला के नाम से एक संस्कृत पाठशाला भी चल रही है।

इस फर्म के वर्तमान मालिक बाबू महादेव प्रसादजी तथा रामकुमारजी हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

बनारस—मेसर्स राधाकृष्ण शिवदत्तराय चित्रघन्टा देवी की गली T. A. Didwaniya —यहाँ फर्म का हेड-आफिस है। यहाँ बनारसी माल तथा जरदोजी का काम होता है तथा पास ही दूसरी फर्म पर गोटे-पट्टे का व्यापार होता है।

१—चौक बनारस—मेसर्स राधाकृष्ण शिवदत्तराय—यहाँ चाँदी-सोने के जेवरात, हौदा, कुर्सी का काम है। यह फर्म कमीशन पर काम करती है।

२—विसेसरगंज बनारस—यहाँ उपरोक्त नाम से बिलायती चीनी का काम होता है।

३—शिवपुर (जि० बनारस)—T. A. gute.—यहाँ गल्ला, सन तथा अलसी का काम होता है।

मेसर्स वैष्णवदास जीवनदास।

इस फर्म के मालिकों का आदि निवासस्थान गुजरात प्रान्त का है। आप लोग नागर बीसा वैश्य समाज के सज्जन हैं। यह परिवार लगभग ३०० वर्ष से बनारस में निवास करता है। इस परिवार के पूर्व पुरुष सेठ कुमनदासजी ने अपने भाई सेठ अनूपनदासजी के साथ मेसर्स कुमनदास अनूपनदास के नाम से फर्म स्थापित कर बनारसी माल का व्यवसाय आरम्भ किया। आप लोगों ने बनारसी माल में मुख्यतया कीनखाब का काम जोरों से किया। मद्रास

की ओर से आने वाले बहोरे व्यापारियों के हाथ कीनखाब की बिक्री का काम आप लोग करते थे। इस व्यापार में आप लोगों ने अच्छी सफलता प्राप्त की। आप लोगों के बाद आप लोगों की संतति भी यही व्यापार करती रही तथा चौथी पीढ़ी में जाकर वे लोग अलग २ हो गये। अतः सेठ जीवनदासजी ने अपनी स्वतंत्र फर्म मेसर्स वैष्णवदास जीवनदास के नाम से सम्वत् १९३० में स्थापित की और व्यापार करने लगे। तब से यह फर्म इसी नाम से व्यापार कर रही है।

सेठ जीवनदासजी के सेठ बालगोविंददास, रायबहादुर हरीदास, राय साहिब हरिकृष्णदासजी, सेठ जयकृष्णदासजी, सेठ रामकृष्णदास, सेठ उदयकरणदास नामक पुत्र थे जिनमें से वर्तमान में राय साहिब हरिकृष्णदासजी, तथा सेठ उदयकरणदासजी ही विद्यमान हैं और शेष स्वर्गवासी हो चुके हैं।

सेठ जीवनदासजी के बाद इस फर्म का कारोबार सेठ बालगोविन्ददासजी करते थे और रायबहादुर हरीदासजी ने अपना सारा जीवन सार्वजनिक कार्यों में लगाया। आप बुआ साहब के नाम से सुविख्यात थे। आपने सदैव मानव हितकर कार्यों में अपनी पूरी शक्ति से सहयोग दिया। आप इतने लोकप्रिय थे कि बनारस की ज्ञानवापी वाली मस्जिद के झगड़े को जो वर्षों से हिन्दू मुसलमानो के बीच चला आता था आपने सदा के लिये शान्त करा दिया जिसकी प्रशंसा ब्रिटेन की सरकार ने स्वयं प्रशंसा पत्र देकर की है।

इस फर्म के वर्तमान मालिक राय हरिकृष्णदासजी, तथा आपके भाई सेठ उदयकरणदासजी और आपके भतीजे बाबू जगमोहनदासजी हैं। इस फर्म का प्रधान संचालन राय हरिकृष्णदासजी करते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

बनारस—मेसर्स वैष्णवदास जीवनदास गोला गली—यहाँ बनारसी माल, जवाहिरात तथा सोने चाँदी के फर्नीचर का काम होता है। इसके अतिरिक्त आप लोगों की यहाँ बहुत बड़ी जमीदारी है तथा बैंकिंग का काम होता है।

बनारस—मेसर्स नागर ब्रदर्स गोला गली T. A. Unity—यहाँ सभी प्रकार के फैन्सी बनारसी माल, साड़ी, कीनखाब वगैरः का काम होता है और बहुत बड़ी तादाद में एक्सपोर्ट किया जाता है।

स्व० राय बहादुर हरिदासजी नागर (वैष्णवदास जीवनदास) बनारस

रायसाहब हरिकृष्णदासजी नागर (वैष्णवदास जीवनदास) बनारस

श्री० बाबू उदयकृष्णदासजी नागर (वैष्णवदास जीवनदास) बनारस

बाबू जगमोहनदासजी नागर (नागर ब्रदर्स) बनारस

मेसर्स वैष्णवदास परसोत्तमदास

इस फर्म के मालिकों का आदि निवासस्थान गुजरात प्रान्त का है। आप लोग नागर वीसा वैश्य समाज के सज्जन हैं। इस परिवार के पूर्व पुरुष मेसर्स कुमनदास अनूपनदास के नाम से व्यापार करते थे पर सम्वत् १९३० में मालिकों के अलग २ हो जाने पर सेठ अनूपनदासजी के पौत्र सेठ परसोत्तमदासजी ने अपनी स्वतंत्र फर्म उपरोक्त नाम से स्थापित कर व्यापार आरम्भ किया। आपके पिताजी का नाम सेठ वैष्णवदासजी था।

इस फर्म पर बनारसी माल, जेवरात और सोने चाँदी के फर्नीचर का काम होता है।

इस फर्म के वर्तमान मालिक स्व० सेठ परसोत्तमदासजी के तीनों पुत्र सेठ श्यामदासजी, सेठ नरोत्तमदासजी और सेठ नवनीतदासजी हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

बनारस—मेसर्स वैष्णवदास परसोत्तमदास गोलागली—यहाँ बनारसी माल, जवाहिरात और सोने चाँदी के फर्नीचर का काम होता है, जो रजवाड़ों को खासतौर से भेजा जाता है। और बैंकिंग तथा जमींदारी का भी काम होता है।

मेसर्स बृजपालदास मुकुन्दलाल

यह फर्म बनारसी माल का व्यापार करने के लिये सन् १९२३ ई० मे बाबू बृजपालदास और बाबू मुकुन्दलालजी ने स्थापित की थी। यह फर्म आरम्भ से ही बनारसी माल, काशी सिल्क, जेवरात और चाँदी के बर्तन का व्यापार करती आ रही है। इसके अतिरिक्त चाइना, आसाम, सिल्क तथा शाल का व्यापार भी करती है।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

बनारस—मेसर्स बृजपालदास मुकुन्दलाल ठठेरी बाजार T A. Brij—यहाँ फर्म का हेड आफिस और शो रूम है।

मेसर्स सोहनलाल गिरधरलाल पाठक

इस फर्म की स्थापना ६० वर्ष पूर्व पं० सोहनलाल पाठक ने बनारसी माल का व्यापार करने के लिये की थी। यह फर्म बनारस के कारीगरों से बनारसी माल तैयार कराती और बनारस में ही बनारस के दूकानदारों के हाथ अपना माल बेंचती है। यह फर्म बाहर को अपना माल न तो भेजती ही है और न बाहर वालों के हाथ ही माल बेंचती है। यह फर्म रेशमी याने कलाबत्तू तथा चाँदी के तार का व्यापार भी करती है। इस फर्म के द्वारा ३० चौक से ६०

चौक तक का चाँदी का तार तैयार कराया जाता है जो यह फर्म बनारस के व्यापारियों के हाथ तो बेचती ही है पर साथ ही फर्म बहुत बड़े परिमाण में सूरत के समान अन्य कितने ही रेशमी कपड़ा बुनने वाले केन्द्रों को भी भेजती है। चाँदी के तार सलमा, सितारा और गोटा फट्ठा तैयार करने के काम आते हैं। आपके यहाँ का तैय्यार माल मद्रास और सीलोन की ओर व्यवहार करने योग्य होता है।

इस फर्म के वर्तमान मालिक पं० गिरधरलालजी तथा आपके भाई पं० गणेशरामजी, पं० महेशरामजी तथा पं० श्यामसुन्दरजी हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है

बनारस—मेसर्स सोहनलाल गिरिधरलाल जतनबर पत्थर गल्ली—यहाँ सभी प्रकार के बनारसी माल का व्यापार होता है।

मेसर्स सोहनलाल बसन्तलाल

इस फर्म की स्थापना बाबू सोहनलालजी लड्ढाने सन् १९१३ ई० में बनारस में की थी पर इस फर्म के मालिक इसके पूर्व मेसर्स गोपालदास नान्हूमल के नाम से व्यापार करते थे। इस फर्म पर आरम्भ से ही बनारसी माल का व्यापार होता आया है। इस व्यापार में फर्म ने अच्छी सफलता प्राप्त की है।

इस फर्म के वर्तमान मालिक बा० अनन्तलालजी लड्ढा, बा० बसन्तलालजी लड्ढा, बा० चम्पालालजी लड्ढा और बा० भैरवलालजी लड्ढा हैं। आप लोग डीडवाना (बीकानेर) के रहने वाले हैं और माहेश्वरी वैश्य समाज के सज्जन हैं। आप लोग सम्वत १८२३ में बनारस आये और तभी से यहाँ व्यवसाय करते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है। जिसे बा० अनन्तलालजी लड्ढा और बा० बसन्तलालजी लड्ढा संचालित करते हैं।

बनारस—मेसर्स सोहनलाल बसन्तलाल लक्खी चौतरा—यहाँ बनारसी माल, सोने चाँदी का फर्नीचर तथा जेवरात का व्यापार होता है।

मेसर्स हरिशंकरलाल रामशंकरलाल नैपाली

इस फर्म की स्थापना सन् १८८७ ई० में बाबू हरिशंकरलालजी ने बनारस में की थी। आपके पूर्वज नैपाल के काठमाण्डू नगर के रहने वाले वैश्य जाति के सज्जन थे। पर वर्तमान में कई पुश्तों से यह परिवार संयुक्तप्रान्त में ही रहता है।

लाला नन्दलालजी (नन्दलाल एण्ड सन्स) बनारस

म से ही कस्तूरी का व्यापार करना
वाली एक विशेष प्रकार की डिजा-
ाव्वत को भेजने और उसके बदले में
र में फर्म को अच्छी सफलता मिली,
ान में यह फर्म भारत के प्रायः सभी

को कितने ही आयुर्वेदिक सम्मेलनों
ार करायी गई कीनखाब के लिये भी

। और आप के भाई बाबू रामशंकर

चौखम्भा T. A. Nepali—इस फर्म
तया होता है। इसके अतिरिक्त चँवर,
अच्छा व्यापार होता है।

बाबू हरिशङ्करलालजी नैपाली बनारस

बाबू रामशङ्करलालजी नैपाली बनारस

मेसर्स रघुनाथदास गोविन्ददास जौहरी।

इस फर्म के मालिक लगभग २८ वर्ष से उपरोक्त नाम से व्यापार करते हैं। पर इस परिवार का बनारस में व्यापार लगभग १२५ वर्ष से चला आ रहा है और इसी प्रकार लगभग ७० वर्ष से इसके मालिक जवाहिरात का काम करते हैं। यह फर्म जवाहिरात के अतिरिक्त कमीशन एजेन्ट और जेनरल मर्चेन्ट का भी काम करती है।

यहाँ डायमंड के कटिंग और पालिशिंग का काम होता है। इसके अतिरिक्त जेवर हमेशा तैयार रहते हैं और आर्डर मिलने पर जैसा चाहें वैसा तैयार करवा देते हैं। कई भारतीय राज्यों में आपका व्यापारिक संबंध है।

इस फर्म के वर्तमान मालिक बाबू रघुनाथदासजी, बाबू गोविन्ददासजी और बाबू फतेचंदजी हैं। आप लोग डीडवाना (मारवाड़) के रहने वाले हैं। और जाति के माहेश्वरी वैश्य समाज के शारड़ा सज्जन हैं पर अर्सेसे बनारस रहते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

बनारस—मेसर्स रघुनाथदास गोविन्ददास जौहरी रतनफाटक के सामने बीबी हटिया—यहाँ जवाहिरात के जेवरात सभी प्रकार के तैयार कराये जाते हैं। यहाँ कमीशन एजेन्ट तथा जेनरल मर्चेन्ट का काम भी होता है।

मेसर्स जोशी शिवनाथ विश्वनाथ।

आप लोग गुजरात प्रान्त निवासी ब्राह्मण समाज के सज्जन हैं। पर लगभग ३ सौ वर्ष से आप लोगो का परिवार बनारस में ही रहता है। यह परिवार पेशवाई के समय से प्रधानतया जवाहिरात का व्यापार कर रहा है और इसी कारण यह परिवार बहुत पुराना जौहरी परिवार है। फलतः नौरत्न के व्यवसाय में इसने अच्छी प्रतिष्ठा एवं ख्याति प्राप्त की है। सब से प्रथम इस परिवार के पूर्व पुरुष जोशी केशवजी गुजरात से बनारस आये थे और अपना वंशानुगत जवाहिरात का व्यापार आरम्भ किया था।

वर्तमान में इस फर्म के प्रधान संचालक जोशी दामोदर कामनाथजी हैं। आप नौरत्न के अच्छे जानकार और कुशल व्यापारी हैं। आपकी देख रेख में आपके पुत्र एवं आपके भाई स्व० जोशी सोमनाथजी के पुत्र जोशी गौरीशंकरजी, जोशी बेनीशंकर, जोशी कृपाशंकर तथा जोशी गोविन्दशंकरजी भी व्यापार संचालन का कार्य करते हैं। आपके दो पुत्र हैं जिनका नाम क्रमशः जोशी गंगाधरजी तथा जोशी गिरजाधरजी है।

ते काम कर रही है। यहाँ डायमण्ड, रुबीज,
ा अच्छा काम होता है तथा नौरत्नजटित
ी मांग भारत और विदेश में पूरीतौर से
न्ध भारत के देशी नरेशों तथा रईसों से
अच्छा व्यापार करती है। जहाँ काश्मीर,
अप्वाइन्टमेन्ट रोल्डर यह फर्म है वहाँ यह
भी करती है।

।

ला T. A. Jweller—यहाँ सभी प्रकार
!।

एण्ड ब्रदर्स

इनका परिवार गुजरात का आदि निवासी है
मैसूर चले गये थे और बहुत समय तक वहाँ
नमय जब वहाँ विप्लव उठ खड़ा हुआ तो पं०
वार वर्तमान में भी जवाहिरात का व्यापार

इस फर्म का प्रधान व्यापार जवाहिरात का है और साथ ही यह फर्म डायमण्ड कटिंग का काम भी कराती है। इसके यहाँ जवाहिरात के जेवरात भी तैयार कराये जाते हैं। इसी प्रकार यह फर्म जहाँ सोने-चाँदी के हौदे और फर्नीचर तैयार कराती है वहाँ बनारसी माल का व्यापार भी करती है।

इस फर्म के वर्तमान मालिक पं० रविशंकरजी, पं० लक्ष्मीशंकरजी, पं० प्रेमशंकरजी, तथा पं० देवशंकरजी हैं। आप लोग गुजराती ब्राह्मण-समाज के पाँड्या सज्जन हैं।

इस फर्म को बनारसी माल और ज्वैलरी के सम्बन्ध में सन् १९०८ ई० को नागपुर नुमाइश से स्वर्णपदक मिला हुआ है।

इसका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

बनारस—एस. शंकर एण्ड ब्रदर्स बाल्लूजी का फर्श—यहाँ जवाहिरात, बनारसी माल तथा सोने-चाँदी का सामान तैयार कराने का व्यापार होता है।

गल्ले के व्यापारी

मेसर्स अभयराम चुन्नीलाल

इस फर्म की स्थापना लगभग १५० वर्ष पूर्व हुई थी। तब से यह फर्म बराबर अपना व्यापार करती चली आ रही है। इस फर्म पर प्रधान रूप से कमीशन एजेण्ट का काम होता है। इसका हेड आफिस बनारस के सुड़िया नामक मोहल्ले में है।

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ चम्पालालजी मूंदड़ा हैं। आप माहेश्वरी वैश्य जाति के मूंदड़ा सज्जन हैं। आपके पूर्व पुरुष सेठ अगरचंदमलजी मूंदड़ा बीकानेर के आदि रहेवासी थे और वहीं से आप बनारस आये थे। आपके परिवार ने बनारस में व्यापार स्थापित किया था जो आज उन्नत अवस्था पर संचालित हो रहा है।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

बनारस—मेसर्स अभयराम चुन्नीलाल सुड़िया—यहाँ फर्म का हेड आफिस है तथा सभी प्रकार की आढ़त और बैंकिंग का व्यापार होता है।

बनारस—मेसर्स अभयराम चुन्नीलाल बिसेसरगंज—यहाँ गल्ला, घी तथा चीनी की आढ़त का व्यापार होता है।

जौनपुर—मेसर्स अभयराम चुन्नीलाल—यहाँ आढ़त तथा चाँदी सोने की बिक्री का काम होता है।

पिपरिया (हुशंगाबाद)—मेसर्स अभयराम चुन्नीलाल—यहाँ गल्ला और रूई का व्यापार होता है। और यहाँ पर फर्म की एक जीनिंग एण्ड प्रेसिंग फैक्ट्री तथा आइल मिल है।

मेसर्स किशोरीलाल मुकुन्दीलाल

इस फर्म का हेड आफिस भूसी (अलाहाबाद) है। यह एक प्रतिष्ठित गल्ले का बड़ा व्यापार करने वाली फर्म है। इसका विस्तृत परिचय चित्रों सहित इसी ग्रन्थ के दूसरे भाग में पेज नं० ४०१ में दिया गया है। यहाँ यह फर्म गल्ले एवं आढ़त का व्यापार करती है। इसके मैनेजमेंट में भटनी एवं शिवान दोनों स्थानों पर एक २ शुगर मिल चलती है। इसका यहाँ का पता बिसेसरगंज है।

मेसर्स नागरमल देवकिशन

इस फर्म की स्थापना करीब २५ वर्ष पूर्व फतेहपुर निवासी अग्रवाल वैश्य समाज के सेठ नागरमलजी जालान ने शिवपुर में की थी। इस वर्ष की विशेष तरक्की सेठ नागरमलजीके

स्व० सेठ बक्षीरामजी (बक्षीराम रामेश्वरदास) बनारस

स्व० सेठ जीवनरामजी (बक्षीराम रामेश्वरदास) बनारस
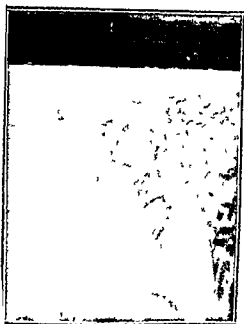
सेठ [illegible]जी (बक्षीराम रामेश्वरदास)

सेठ रामेश्वरदासजी (बक्षीराम रामेश्वरदास)

छोटे भाई सेठ देवकिशनजी के द्वारा हुई। आप मिलनसार सज्जन हैं। सेठ नागरमलजी का स्वर्गवास हो गया है।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ देवकिशनदासजी एवं स्व० सेठ नागरमलजी के पुत्र सेठ महावीरप्रसादजी हैं। सेठ देवकिशनदासजी के पुत्र का नाम बाबू रघुनाथप्रसादजी है। आप सब लोग व्यापार संचालन कार्य्य करते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

शिवपुर (बनारस)—मेसर्स नागरमल देवकिशन T. A. Nagar—यहाँ कपड़ा, गल्ला एवं आढ़त का अच्छा व्यापार होता है।

कलकत्ता—मेसर्स रामदेव नागरमल, काली गोदाम, हरिसन रोड, T. A. Dukandar—यहाँ सब प्रकार की चलानी का काम होता है।

बाबतपुर (बनारस)—मेसर्स रघुनाथप्रसाद महावीरप्रसाद—यहाँ गल्ले की खरीदी का व्यापार होता है।

सैय्यदराजा (बनारस)—मेसर्स विश्वनाथ देवीप्रसाद—यहाँ भी गल्ले की खरीदी का काम होता है।

मेसर्स बक्सीराम रामेश्वरदास

इस फर्म के मालिकों का आदि निवासस्थान नवलगढ़ (जयपुर) है। आप लोग अग्रवाल वैश्य समाज के नवलगढ़िया सज्जन के नाम से प्रख्यात हैं। लगभग ४० वर्ष पूर्व सेठ बक्सीरामजी अपने भाइयों के साथ बनारस आये और गल्ले तथा कपड़े का व्यापार आरम्भ किया। फर्म ज्यों ज्यों उन्नति करती गई त्यों त्यों गल्ले और कपड़े के अतिरिक्त हेम्प, हेम्प्रेस, आइलमिल, बैंकिंग और मकानात आदि का काम समय २ पर खोला गया जो यह फर्म आज भी अच्छी रीति से कर रही है।

सेठ बक्सीरामजी के तीन भाई और थे जिनके नाम क्रमशः सेठ जीवनरामजी, सेठ पालीरामजी तथा सेठ हरजीमलजी था। इस समय सेठ हरजीमलजी, वर्तमान हैं और शेष तीनों भाई स्वर्गवासी हो चुके हैं। आप वयोवृद्ध हैं अतः शान्ति लाभ करते हैं।

इस फर्म की प्रधान उन्नति का श्रेय बाबू रामेश्वरदासजी को है। आप बड़े व्यापारकुशल एवं उद्योगी महानुभाव हैं। आपने अपनी फर्म को बहुत अधिक उन्नत अवस्था पर पहुँचाया है। आपने अपनी फर्म पर हेम्प का काम भी खोला और फर्म को हेम्प का व्यवसाय करने वाली प्रधान फर्मों की श्रेणी पर पहुँचा दिया। आपकी फर्म अच्छी

तादाद में हेम्प का एक्सपोर्ट करती है। इसके लिये आपका एक हेम्प प्रेस भी है जिसमें हेम्प की गाँठें बाँधी जाने के अतिरिक्त तेल मिल भी है और साथ ही फाउण्ड्री भी है जहाँ लोहे की ढलाई का काम और खास तौर पर कोल्हू ढाले जाते हैं। साथ ही मकानात भी आपके शहर में कितने ही हैं। जिनमें से बुलानाले का रामेश्वर थियेटर हाल एक भव्य भवन है। आप केवल व्यापार में ही अच्छी गति विधि नहीं रखते वरन सार्वजनिक कार्यों में भी आपका अच्छा हाथ रहता है। आप मिलनसार और हृदय के उदार सज्जन हैं।

इस फर्म के प्रधान संचालक बाबू रामेश्वरदासजी हैं। आपके दो पुत्र हैं जिनके नाम क्रमशः बाबू परसोत्तमदासजी तथा बाबू नरोत्तमदासजी हैं। आप लोग अभी शिक्षा प्राप्त करते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स—बक्सीराम रामेश्वरदास कर्नघण्टा बनारस—यहाँ फर्म का हेड आफिस है। यहाँ बैंकिंग तथा हेम्प के एक्सपोर्ट आदि का काम होता है तथा गल्ले का व्यापार होता है।

मेसर्स—कृष्णा मिल्स शिवपुर बनारस—इस मिल में हेम्प प्रेस, आइल मिल तथा आयर्न फाउण्ड्री है। इसमें मेसर्स जयदयाल मदनगोपाल का साझा है।

इसके अतिरिक्त सन की फसल में कितने ही स्थानों पर यह फर्म अपनी एजंसियाँ खोलती है।

मेसर्स शिवनारायण धर्मदत्त

इस फर्म के मालिक रामगढ़ (राजपूताना) निवासी अग्रवाल वैश्य-समाज के सरावगी सज्जन हैं। इस फर्म की स्थापना हदौली में करीब-करीब १५,२० वर्ष पूर्व हुई। इसका स्थापन स्व० सेठ शिवनारायणजी द्वारा हुआ। आपके पश्चात् इस फर्म का संचालन धर्मदत्तजी ने सँभाला। आपका भी स्वर्गवास हो गया।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक बाबू मोतीलालजी, बाबू हीरालालजी एवं बाबू पुखराजजी हैं। इस फर्म का बाबू शिवनारायणजी के ही समय से मेसर्स जयदयाल मदनगोपाल बनारस वालों के साथ व्यापारिक सम्बन्ध है।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

बनारस—मेसर्स शिवनारायण धर्मदत्त साक्षी-विनायक—यहाँ सन की पक्की गाँठो का एवं गल्ले का व्यापार होता है। यह फर्म गाँठों को एक्सपोर्ट करती है।

कदौली (बाराबंकी)—मेसर्स शिवनारायण धर्मदत्त—यहाँ गल्ले एवं कपड़े का व्यापार होता है।

कटहरी (फैजाबाद)—मेसर्स पुखराज मुरलीधर—यहाँ गल्ले का व्यापार तथा आढ़त का काम होता है।

मालीपुर (फैजाबाद)—मेसर्स हीरालाल रघुनाथदास—यहाँ भी गल्ले का व्यापार एवं आढ़त का काम होता है।

सैदपुर (गाजीपुर)—मेसर्स शिवनारायण धर्मदत्त—यहाँ गल्ले का व्यापार होता है।

मेसर्स श्रीराम सूरजमल

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ छोटेलालजी कानोड़िया हैं। इस फर्म का हेड-आफिस कलकत्ता है। अतएव विस्तृत परिचय इसी ग्रंथ के दूसरे भाग में चित्रों सहित पेज नं० ३२६ में दिया गया है। यहाँ इसका पता नीलकंठ महादेव है। तथा यहाँ इस फर्म पर गल्ला और आढ़त का व्यापार होता है।

मेसर्स श्रीराम लक्ष्मीनारायण

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ चाँदमलजी कानोडिया हैं। इसका हेड आफिस कलकत्ता है। अतएव इसका विस्तृत परिचय चित्रों सहित पेज नं० ३२५ में दूसरे भाग मे दिया गया है। यहाँ यह फर्म बैंकिंग, हुंडी, चिट्ठी, महाजनी लेनदेन, गल्ला एवं आढ़त का व्यापार करती है। इसका यहाँ का पता नीलकंठ महादेव है।

बर्तनों के व्यापारी

मेसर्स प्रयागदास जमनादास

इसके मालिकों का आदि निवासस्थान बीकानेर है अतः इसका सचित्र परिचय इस ग्रन्थ के प्रथम भाग के राजपूताना विभाग में पृष्ठ १२४ में दिया गया है। यहाँ यह फर्म सुंड़िया मोहल्ले में है जहाँ सराफी लेन देन तथा धातुबाने का व्यापार होता है।

मेसर्स बैजनाथप्रसाद सेठ एण्ड कम्पनी

इस फर्म की स्थापना २२ वर्ष पूर्व बा० बैजनाथप्रसादजी सेठ ने की। आप खत्री समाज के पंजाबी सज्जन हैं। आपने इस फर्म पर बर्तनों का व्यवसाय आरंभ किया और उसे अच्छी उन्नतावस्था पर पहुँचाया। आप बर्तनो का डायरेक्ट एक्सपोर्ट भी करते थे। आपका स्वर्गवास हो गया हैं। वर्तमान में इस फर्म के मालिक बा० लक्ष्मीनारायणजी, बा० जगतनारायण

जी, बा० बृजनारायणजी और बा० प्रेमनारायणजी हैं। बा० लक्ष्मीनारायणजी ही फर्म का प्रधान संचालन करते हैं। शेष तीनों अभी विद्याध्ययन करते हैं।

इस फर्म के पास भारतीय कारीगरी का पुराना संग्रह भी अच्छा रहता है। जो पुरानी वस्तुओं के प्रेमियों के हाथ अच्छी तादाद में सेल किया जाता है।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

बनारस—मेसर्स बैजनाथप्रसाद सेठ एण्ड कम्पनी लक्खीचौतरा—यहाँ बर्तनों का एक्सपोर्ट होता है। पर फर्म बनारसी माल का व्यापार भी करती है।

मेसर्स विश्वेश्वर प्रसाद पुरुषोत्तमदास, सफरीवाले

आप लोग बनारस के निवासी और जाति के कुशवाहे क्षत्री हैं। इस फर्म के मालिकों के यहाँ व्यापार कार्य बहुत समय से चला आ रहा है पर भारत प्रख्यात बनारसी टिकली का व्यापार इनके यहाँ लगभग २५० वर्ष से होता आ रहा था कि इस फर्म के वर्तमान प्रधान मालिक बाबू विश्वेश्वर प्रसादजी ने लगभग ५५ वर्ष पूर्व उपरोक्त नाम से अपनी फर्म की स्थापना कर टिकली के अतिरिक्त गिलट के जेवर का व्यापार भी आरम्भ किया। आपको व्यापार में अच्छी सफलता मिलती गयी। आपके बड़े पुत्र बाबू पुरुषोत्तमदासजी ने फर्म के प्रधान प्रबन्ध का संचालन अपने हाथ में ले लिया तथा आपके छोटे पुत्र नरोत्तमदासजी ने अलम्यूनियम फैक्टरी का काम सम्हाल लिया। आपके छोटे पुत्र बाबू नरोत्तमदासजी का स्वर्गवास ४ वर्ष हुए हो गया तब से फर्म का सारा व्यापार संचालन आपके बड़े पुत्र बाबू पुरुषोत्तदासजी ही करते हैं। आप ८८ वर्ष के वयोवृद्ध होने के कारण शान्तिलाभ कर रहे हैं। स्व० बाबू नरोत्तमदासजी के पुत्र बाबू अनन्तलालजी भी अपने चचा बाबू पुरुषोतमदासजी की देख रेख में व्यापार संचालन का काम करते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

बनारस—मेसर्स विश्वेश्वर प्रसाद पुरुषोत्तमदास सफरीवाले पितरकुण्डा T. A. Sa Friwala. यहाँ फर्म का हेड आफिस है तथा टिकली, गिलट का जेवर बर्तन के अतिरिक्त महाजनी और बैंकिंग का काम है।

बनारस—मेसर्स विश्वेश्वर प्रसाद पुरुषोत्तमदास सराय हड़हा चौक—यहाँ दूकान है जहाँ टिकली, गिलट का सामान और इसी प्रकार की अन्य फैन्सी चीजें बिकती हैं।

बनारस कैंट—श्रीशंकर अलम्यूनियम फैक्टरी स्टेशन के पास—यहाँ अलम्यूनियम का कारखाना है जहाँ सभी प्रकार के बर्तन तथा जर्मन सिलवर का सामान बनता है। आपके यहाँ का ट्रेड मार्क त्रिशूल है।

बनारसी माल के व्यापारी—

मेसर्स अर्जुनमल रामशरण
,, गोकुलचन्द रामचन्द लखीचौतरा
,, गिरधरदास जगमोहनदास, सुखलाल साहु का फाटक
,, गोपालमल पुरुषोत्तमदास, नीलकंठ
,, गोपालदास द्वारकादास
,, गिरधरदास हरिदास रघुनाथदास चौक
,, चुन्नीलाल कुँवरजी चौक
,, जयगोपाल लक्ष्मीनारायण कुंजगली
,, जयनारायण हरनारायण नीचीबाग
,, तीरथराम सीताराम लखी चौतरा
,, दिलसुखराय जयदयाल गोपाल साहु का मोहल्ला
,, दुर्गादास द्वारकादास नन्दनसाहु लेन
,, दुर्गासहाय रामलाल छोटी कुंजगली
,, नन्दगोपाल मकसूदनदास नन्दनसाहु लेन
,, नन्दलाल एण्डसंस रानी कुवाँ
,, नागर ब्रदर्स बुलानाला
,, पाल्हमल भोलानाथ कुंजगली गेट
,, पूरनचंद हरिनारायण लखीचबूतरा
,, परमानन्द सीताराम सतीचौतरा
,, बब्बूलाल बनारसीदास चौखम्भा
,, मोतीचंद फूलचंद
,, मनीराम हरजीवनदास गायघाट
,, मझमल गोवर्धनदास कुंजगली
,, राधाकृष्ण शिवदत्तराय चित्रघंटागली
,, वैष्णवदास जीवनदास गोलागली

मेसर्स वैष्णवदास पुरुषोत्तम गोलागली
,, बृजपालदास मुकुन्दलाल ठठेरी बाजार
,, सोहनलाल गिरधरलाल जतनबर
,, सोहनलाल बसंतलाल लखीचौतरा
,, हरतीरथराम दयाराम ,,

कलाबत्तू वाले—

गिरधारीलाल साहु अलयीपुर के पास
झिंगनसाहु नागकुवाँ
मेवालाल रामसहाय कम्पनी टाउनहाल पीछे
रामेश्वर नेमचंद बड़े गनेश

बैंकर्स एण्ड लैंडलार्ड्स—

मेसर्स कामेश्वरप्रसाद गयाप्रसाद कचौड़ी०
रायबहादुर बटुकप्रसादजी खत्री चौकाघाट
राजा मोतीचन्द सी. आई. ई. अजमतगढ़ पेलेस
मुंशी माधोलाल सी. एस. आई.
राय बैजनाथदास नीची ब्रह्मपुरी
बाबू बीसूजी, गोपालदास साहु का मोहल्ला
बाबू माधवजी, ठठेरीबाजार
रायकृष्णचंदजी चौखम्भा
माधोलाल बेनीप्रसाद ,,
बैजनाथदासजी B. A. सुंडिया
रायकृष्णजी रंगीलदास का फाटक

गल्ले के व्यापारी—

मेसर्स अभयराम चुन्नीलाल बिसेसरगंज
,, किशोरीलाल मुकुन्दीलाल ,,
,, नागरमल देवकिशन शिवपुर
,, बक्षीराम रामेश्वरदास कर्णघंटा
,, शिवनारायण धर्मदत्त साक्षी विना०

मेसर्स श्रीराम सूरजमल नीलकंठ
,, श्रीराम लक्ष्मीनारायण नीलकंठ
,, वैजनाथ बिहारीलाल बिसेसरगंज
,, अमीचंद जंगीलाल ,,
,, मोतीलाल मंगलचंद ,,

ज्वेलर्स—
मेसर्स अमीरचंद चतरसिंह चौखम्भा
जोशी परसोत्तमदास भैरवनाथ, सूतटोला
मेसर्स बनारसीदास काशीप्रसाद सुतई इमली
,, बांकेलाल खत्री ,,
,, बनारसीदासजी जौहरी भाट की गली
,, रघुनाथदास गोविन्ददास रतनफाटक
,, जोशी शिवनाथ विश्वनाथ सूत टोला
,, एस. शंकर एण्ड ब्रदर्स बालूजी का फर्श

बर्तनों के व्यापारी—
गोकुलप्रसाद छेदीलाल ठठेरी बाजार
जगबँधू चटर्जी ढुंढ़ीराज
जगत महादेव ठठेरी बाजार
गुरुप्रसाद रामचरन मानमन्दिर
प्रयागदास जमनादास सुंडिया
वैजनाथप्रसाद सेठ एण्ड को०
लक्खी चौतरा
विशेसरप्रसाद पुरुषोत्तमदास पितरकुंडा
(एल्यूमिनियम)
विशेसरप्रसाद शीतलप्रसाद ठठेरी बाजार

रेशम वाले—
मेसर्स जगन्नाथदास वर्म्मन चौखम्भा
,, मुन्नालाल मदनलाल लखी चौतरा

चाँदी के तार वाले—
मेसर्स गोपालदास सीताराम रेशम कटरा
मेसर्स पन्नालाल परसोत्तमदास भाट की गली
,, भगवानदास रेशम कटरा
,, माधोलाल बेनीलाल चौखम्भा

फिनिशर्स—
अब्दुल रजाक अब्दुला मदनपुरा
सुमारु पनारु मदनपुरा
शमसुद्दीन हाजी मदनपुरा

बनारसी माल के बुननेवाले—
ताजा वारिस मदनपुरा
मुन्ना नूर मदनपुरा
हाजी यार महम्मद बघवपुरा (अलयीपुरा)

सलमा-सितारावाले—
कल्लूमल खत्री रेशम कटरा

काशी सिल्क के व्यापारी—
मेसर्स गोकुलचन्द रामचन्द, लक्खी चौतरा
,, गोपालमल पुरुषोत्तमदास, नीलकंठ
,, के० एस० भुन्नेय्या कम्पनी दशाश्वमेध
,, नन्दगोपाल मकसूदनदास नन्दनसाहुलेन
,, बालाजी कम्पनी चौक
,, सिल्क पिताम्बर कम्पनी केदारघाट

बुकसेलर्स एण्ड पब्लिशर्स—
उपन्यास तरंग कार्य्यालय
उपन्यास बहार आफिस काशी
नागरी प्रचारिणी सभा,
नन्द किशोर एण्ड ब्रदर्स
वैजनाथ प्रसाद बुकसेलर राजादरवाजा
भारतेन्दु पुस्तकालय
भार्गव बुकडिपो गायघाट
मुकुन्ददास गुप्त एण्ड को० चौक
मास्टर खेलाड़ीलाल कचौरी गली

लहरी बुक डिपो चौक
हिन्दी पुस्तक एजंसी चौक
ज्ञानमंडल बुक डिपो कबीरचौरा
श्री वैंकटेश्वर बुक डिपो चौक

प्रिंटिंग प्रेस—

श्री लक्ष्मीनारायण प्रेस
ज्ञानमण्डल प्रेस
हितचिन्तक प्रेस
इंडियन प्रेस बनारस कैंट
भार्गवभूषण प्रेस
तारा प्रेस
लहरी प्रेस
भूमिहार प्रेस
जार्ज प्रिंटिंग वर्क्स
जगन्नाथ प्रेस
आर्ट प्रेस

पेपर एण्ड इंक मरचेंट्स—

दी जनरल ट्रेडिंग कम्पनी चौक
,, बनारस पेपर ट्रेडिंग कंपनी
मेसर्स भोलानाथ दत्त एण्ड संस चौक

बनारसी तमाखू सुर्ती के व्यापारी—

मेसर्स गंगाप्रसाद विश्वनाथप्रसाद चौक
,, देवीप्रसाद सुंघनीसाहु हौज कटोरा
,, बदलराम लक्ष्मीनारायण चौक
,, बेनीराम माधोराम पानदरीबा

टिकली, गिलटवाले—

मेसर्स विशेश्वरप्रसाद पुरुषोत्तमदास पितरकुंडा

चाँदी सोने के व्यापारी—

मेसर्स कृष्णराम तिवाड़ी चौक
,, कन्हैयालाल सराफ चौक
,, भरतदास बलदेवदास चौक
,, राधाकृष्ण शिवदत्तराय चौक

बलिया

बी० एन० डब्ल्यू० आर० की बनारस-छपरा वाली ब्रांच लाइन का यह बड़ा स्टेशन है। यह यू० पी प्रान्त के अपने ही नाम के जिले का प्रधान स्थान है। गंगा नदी इसके पास से होकर बहती हैं। दो बार यह शहर गंगा की बाढ़ से नष्ट हो गया है। इस बार फिर तीसरे मर्तबा इसे बसाया गया है। इस बार का इसका नक्सा सुन्दर बना है।

यहाँ की पैदावार धान, गेहूँ, घी, चना एवम् शक्कर है। यहाँ की शक्कर सारे भारतवर्ष में मशहूर है। इसे हर जगह "बलिया की शक्कर" के नाम से सम्बोधित करते हैं। यहाँ शक्कर के व्यवसाय को विशेष उत्तेजन देने का श्रेय यहाँ की प्रसिद्ध फर्म मेसर्स मनोरथ भगत ध्यानराम को है। खिसारी भी यहाँ पैदा होती है जो बंगाल में सप्लाय होती है।

यहाँ की इण्डस्ट्री में यहाँ बनने वाले लोहे के बर्तन हैं। यह काफी मशहूर हैं। इनके बनानेवाले यहीं रहते हैं। इसके अतिरिक्त पास ही सिकन्दरपुर में तेल चमेली और गुलाब आदि का इत्र निकाला जाता है जिनका अच्छा व्यापार है। यह भी यहाँ की मशहूर वस्तुयें है।

कार्तिक पौर्णिमा को गंगा के किनारे बड़ा भारी मेला लगता है।

यहाँ के व्यापारियों का परिचय नीचे लिखे अनुसार है।

मेसर्स जिन्दाराम नारायणदास

इस फर्म का हेड आफिस मुजफ्फर नगर (विहार) है। इसका विस्तृत परिचय इसी ग्रंथ के द्वितीय भाग मे विहार विभाग के पेज नं० ३२ मे दिया गया है। यहाँ यह फर्म शक्कर की आढ़त का व्यापार करती है।

मेसर्स मनोरथ भगत ध्यानराम

इस फर्म के मालिकों का मूल निवासस्थान हनुमानगंज (वलिया) है। आप लोग मध्य-देशीय वैश्य समाज के सज्जन हैं। इस फर्म के व्यवसाय की स्थापना वा० ध्यानरामजी के समय में हुई। तथा आप के पुत्र बा० देवीप्रसादजी, बा० किशुनप्रसादजी एवम् बा० विशुन-प्रसादजी के समय में विशेष तरक्की हुई। आप लोगों के समय में कानपुर में भी ब्रांच खोली गई। इस फर्म के मालिको ने शक्कर के ही व्यापार की ओर विशेष ध्यान दिया और इसमें पूर्ण सफलता भी प्राप्त की। आप लोगों ने यहाँ एक धर्मशाला, मन्दिर तथा हनुमानगंज में पोखरा एवम् मन्दिर बनवाया है। यहाँ एक संस्कृत पाठशाला भी चल रही है। आप तीनों सज्जनों का देहावसान हो गया है। यहाँ जमींदारी को छोड़कर शेष व्यापार अब अलग २ होता है।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक बा० किशुनप्रसादजी के पुत्र बा० सरयूप्रसादजी, लक्ष्मी-प्रसादजी और स्वर्गीय श्यामसुन्दरप्रसादजी के पुत्र ज्वालाप्रसादजी, तथा मुक्तेश्वरप्रसादजी, स्व र्गीय बा० विशुनप्रसादजी के पुत्र शिवप्रसादजी, शिवकुमारजी तथा वद्रीनारायणजी और स्व० देवीप्रसादजी के पौत्र तथा जमुनाप्रसादजी के पुत्र बा० महादेवप्रसादजी हैं। यह खानदान सम्माननीय और शिक्षित खानदान है। इस परिवार की बहुत बड़ी जमींदारी है। बा० महादेव प्रसादजी स्थानीय आनरेरी असिस्टेंट कलक्टर हैं। आपके पिताजी आनरेरी मेजिस्ट्रेट थे।

इस परिवार का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

आगरा—मेसर्स मनोरथ भगत ध्यानराम वेलनगंज—यहाँ चीनी एवं गल्ले का व्यापार और आढ़त का काम होता है।

कानपुर—मेसर्स सरयूप्रसाद बाबू जमुनाप्रसाद पुराना जनरलगंज—यहाँ किराने का व्यापार होता है।

स्व० बाबू देवीप्रसादजी (मनोरथ भगत ध्यानराम) बलिया

स्व० बाबू किशुनप्रसादजी (मनोरथ भगत ध्यानराम) बलिया

स्व० बाबू विशुनप्रसादजी (मनोरथ भगत ध्यानराम) बलिया

सेठ हरदत्तरायजी (मगनीराम हरदत्तराय) छपरा

उपरोक्त फर्मों का व्यवसाय शामिलात का है। इसके अतिरिक्त बलिया में आप लोगों की तीन फर्में हैं, जो तीनों भाइयों की हैं अलग २ हैं। उनपर शक्कर, बैंकिंग एवं जमींदारी का काम होता है। जमींदारी का काम भी सब शामिल ही है।

मेसर्स लच्छूभगत किशुनराम

इस फर्म के मालिक मनियर (बलिया) निवासी मध्य-देशीय वैश्य-समाज के सज्जन हैं। करीब १०० वर्ष यह फर्म सेठ लच्छूभगत और सेठ बिल्लाभगत ने साझेदारी में शुरू की। २४ वर्ष के पश्चात् आप दोनों अलग २ हो गये। तब से इसका संचालन सेठ लच्छूभगत करते रहे। आपने इस फर्म की कई शाखाएँ खोलीं तथा उन्नति की। आपके तीन पुत्र हुए सेठ किशुनराम, सेठ बिशुनराम एवं सेठ रामनारायण। अपने पिता की मौजूदी में आप तीनों ही भाई शामिलात में व्यापार करते रहे पश्चात् अलग २ हो गये। आप लोगों को अलग २ हुए करीब १४ वर्ष हुए। वर्तमान फर्म के मालिक सेठ किशुनराम के पुत्र सेठ रामेश्वरजी हैं। आपही फर्म का संचालन करते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

बलिया—मेसर्स लच्छूभगत किशुनराम—यहाँ गल्ला, चीनी एवं घी का व्यापार तथा आढ़त का काम होता है।

पटना—मेसर्स लच्छूभगत किशुनराम मारूफगंज—यहाँ गल्ला एवं आढ़त का व्यापार होता है।

इसके अतिरिक्त इसी नाम से खगड़ा (मुर्शिदाबाद) नारायणगंज (बंगाल) भैरवबाजार (मैमनसिंह) में भी आपकी दुकानें हैं जहाँ गल्ला, चीनी, दाल और चाँवल का व्यापार होता है।

मेसर्स लच्छूभगत बिशुनराम

इस फर्म का पूर्व परिचय ऊपर दिया जा चुका है। यह फर्म सेठ लच्छूभगत के द्वितीय पुत्र की है। इसके वर्तमान मालिक स्व० सेठ बिशुनरामजी के पुत्र बा० सूरजप्रसादजी, श्यामाप्रसादजी, बा० मथुराप्रसादजी, गोकुलप्रसादजी, वृन्दावनप्रसादजी और केदारप्रसादजी हैं। इनमें से प्रथम २ भाई करीब २ साल से अपना स्वतंत्र व्यापार करते हैं। जिसपर मेसर्स लच्छूभगत सूरजप्रसाद के नाम से कारबार होता है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

मेसर्स लच्छूभगत बिशुनराम के नाम से भैरवबाजार, नारायणगंज, पटना, बलिया आदि स्थानों पर दुकानें हैं जहाँ गल्ला, शक्कर और आढ़त का व्यापार होता है।

मेसर्स लच्छूभगत सूरजप्रसाद के नाम से बलिया, पटना, भैरव बाजार में दुकानें हैं जहाँ गल्ला और आढ़त का काम होता है।

मेसर्स लच्छू भगत रामनारायण

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ लच्छू भगत के तृतीय पुत्र सेठ रामनारायणजी हैं। आप का पूर्व परिचय ऊपर दिया जा चुका है। इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

बलिया—मेसर्स लच्छू भगत रामनारायण—यहाँ गल्ला, शक्कर आदि का व्यापार एव आढ़त का काम होता है।

कलकत्ता—मेसर्स लच्छू भगत रामनारायण—यहाँ भी उपरोक्त काम होता है।

इसके अतिरिक्त खगड़ा (मुर्शिदाबाद) नारायणगंज में भी आपकी दुकानें हैं जहाँ गल्ला और आढ़त का व्यापार होता है।

शक्कर के व्यापारी—

मेसर्स जिन्दाराम नारायणदास
,, नारायणदास घनश्यामदास
,, बद्रीदास रामानुजदास
,, भगवानदास केदारनाथ
,, मनोरथ भगत ध्यानराम

गल्ले के व्यापारी—

मेसर्स लच्छूभगत किशुनराम
,, लच्छूभगत विशुनराम
,, लच्छूभगत रामनारायण
,, लच्छूभगत सूरजप्रसाद
,, सरयू प्रसाद भगवतीप्रसाद
,, हरीराम भगत दुःखीराम

किराने के व्यापारी—

मेसर्स देवीराम नारायणदास
,, रामयाद गिरधारी

कपड़े के व्यापारी—

मेसर्स कनई भगत हरकिशन राम
,, खादिम अली बाजिदअली
,, पुरुषोत्तमदास वैजनाथदास
,, फकीरचन्द सरयूप्रसाद
,, बेनीराम बखतराम

चाँदी सोना के व्यापारी—

मेसर्स आदित्यराम गोपालराम
,, कामता प्रसाद राधाकिशन
,, गौरीशङ्कर सीताराम
,, सहदेवराम शिवनाथ प्रसाद

जेनरल मर्चेंट्स—

मेसर्स वैजूप्रसाद सरयूप्रसाद
,, मालीराम हरिहरप्रसाद
,, राधाकिशन शिवशंकर प्रसाद
,, शर्मा एण्ड को०

छपरा

छपरा विहार प्रांत में अपने ही नाम के जिले का प्रधान सेंटर है। यह बी० एन० डब्ल्यू रेल्वे लाइन का जंकशन हैं। यह एक पुरानी बस्ती है। यहाँ की आबादी ४१ हजार है। यहाँ की पैदावार आलू, घी, अरंडी (रेंडी) तीसी, सरसों आदि हैं। यहाँ तथा आस पास शक्कर भी बनती है। और यही माल यहाँ से बाहर एक्सपोर्ट होता है।

इसके आस पास महाराजगंज, मीरगंज, सेवान मसरक, डिघवारा आदि छोटी २ पर व्यापारिक मंडियाँ हैं। जहाँ शक्कर और गल्ला पैदा होता है। शक्कर के कारखाने भी इन स्थानों पर हैं। यहाँ अरंडी (रेंडी) का तेल निकालने का भी एक मिल है। इस मिल में केस्टर आईल तैय्यार होता है।

यहाँ आस पास में निम्नलिखित शुगर फैक्टरियाँ हैं।

न्यू सेवान शुगर मिल

नूरुमियाँ शुगर मिल सेवान

सीतामढ़ी शुगर वर्क्स सेवान

सारा भाई अम्बालाल शुगर फैक्टरी पचरुक्खी

वेक्सदरलैंड शुगर आयरन मिल मढ़ौरा

केस्टर आईल का मिल

यहाँ के व्यापारियों का परिचय इस प्रकार है—

मेसर्स मगनीराम हरदत्तराय

इस फर्म के मालिकों का मूल निवासस्थान फतहपुर (जयपुर) है। आप अग्रवाल वैश्य समाज के जैनी सज्जन हैं। यह फर्म सेठ मगनीरामजी द्वारा स्थापित हुई। आपके २ पुत्र हुए सेठ केदारमलजी एवं सेठ हरदत्तरायजी। आप लोगों के समय में फर्म की बहुत उन्नति हुई। आपने यहाँ धर्मशाला भी बनवाई। इसी प्रकार के और भी कार्य आपके द्वारा हुए। आप दोनों ही सज्जनों का स्वर्गवास हो गया है।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक स्व० सेठ केदारमलजी के पुत्र बा० शिवचंदजी, बा० रामेश्वरजी और बा० द्वारकाप्रसादजी तथा सेठ हरदत्तरायजी के पुत्र बा० सम्पतरायजी हैं। आप सब लोग मिलनसार एवं शिक्षित सज्जन हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

छपरा—मेसर्स मगनीराम हरदत्तराय कटरा—यहाँ कपड़ा एवं बैंकिंग का काम होता है। यह फर्म इंपीरियल बैंक की खजांची है। यहाँ एशियाटिक और बर्मा शेल की तेल की एजंसी है।

कलकत्ता—मेसर्स मगनीराम केदारमल १३२ काटन स्ट्रीट T. A. Bariguddi—यहाँ बैंकिंग तथा गल्ला और कपड़े का व्यापार और आढ़त का काम होता है।

छपरा—साहब गंज-मेसर्स मगनीराम हरदत्तराय—यहाँ कपड़े का व्यापार होता है। मगनीराम का कटरा आप ही का है।

बैंकर्स—

दी.इम्पीरियल बैंक ब्रांच
को आपरेटिव बैंक
बिहार बैंक लिमिटेड
मगनीराम हरदत्तराय
हरिप्रसाद शंकरप्रसाद

क्लाथ मरचेंट्स

मेसर्स दुर्गादत्त श्रीराम
,, धुप्पनराम साधुराम
,, बैजनाथ रामेश्वर
,, महादेवलाल सत्यनारायण
,, मगनीराम हरदत्तराय
,, रामेश्वर प्रसाद महादेवलाल
,, लाखूराम हरिराम
,, हरिचरनराम सरयूप्रसाद

ग्रेन मरचेंट्स एण्ड कमीशन एजंट—

मेसर्स किशोरीलाल रामभवनसिंह
,, तपेसरराम सूरतराम
,, पलकसा पदारथराम
मेसर्स रामप्रसाद गंगाप्रसाद
,, रघुनन्दनप्रसाद बेनीप्रसाद
,, हनुमानराम रामसेवक
,, हीरालाल गोपालजी

चाँदी सोना के व्यापारी—

मेसर्स बिरदासाहु मथुरासाहु
,, रामपुनीतराम रामदास
,, रामदास रामेश्वर

किराने के व्यापारी—

मेसर्स लक्ष्मणसाहु मिश्रीलाल साहबगंज
,, शंकरप्रसाद सीताराम ,,

घी के व्यापारी—

मेसर्स देवीप्रसाद जगन्नाथप्रसाद साहबगंज
,, शीतलप्रसाद जिनवरदास ,,

जनरल मरचेंट्स—

मेसर्स अयोध्याप्रसाद मथुराप्रसाद
,, मुरलीप्रसाद बिसाती
,, एल. एन. नियोगी एण्ड सन्स

स्व० सेठ केदारमलजी (मगनीराम हरदत्तराय) छपरा

बाबू द्वारकाप्रसादजी सरावगी (मगनीराम हरदत्तराय) छपरा

सेठ शिखरचन्दजी सरावगी (मगनीराम हरदत्तराय) छपरा

सेठ रामेश्वरलालजी सरावगी (मगनीराम हरदत्तराय) छपरा

सेठ रामचन्द्रजी गनेड़ीवाला गोरखपुर
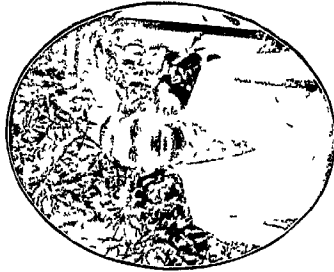
सेठ राधाकृष्णजी गनेड़ीवाला गोरखपुर
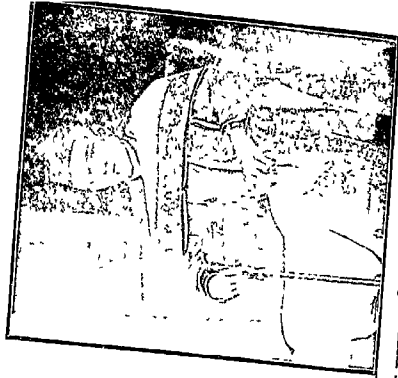
सेठ सम्पतरायजी सरावगी (मँगनीराम हरदत्तराय) छपरा

गोरखपुर

गोरखपुर यू. पी. प्रांत के अपने ही नाम के जिले का हेड-कार्टर है। कहा जाता है कि बाबा गोरखनाथ के नाम से इसका नाम गोरखपुर पड़ा। यह राप्ती नदी के किनारे पर बसा हुआ है। यहाँ गोरखनाथ का मन्दिर एवं आसिफुद्दौला का इमामबाड़ा देखने की वस्तु हैं। यह स्थान बी. एन. डब्लू० की मेनलाइन पर बसा हुआ है। इस रेलवे का बड़ा वर्कशाप भी यहीं है जिसमें हजारों आदमी काम करते हैं।

यहाँ का प्रधान व्यापार गल्ले का है। यहाँ की पैदावार गेहूँ, अरहर, मसूर, सरसों, तीसी, मटर, चना, जौ इत्यादि हैं। तीसी, सरसों, गेहूँ, कलकत्ता, एवं दाल अरहर, तथा मसूर आसाम की ओर जाती है। मौसिम में यहाँ करीब १० हजार टन तक तीसी आती है।

यहाँ का तौल साबत चीजों जैसे गेहूँ, अरहर, तीसी, सरसों वगैरह का १४४ रुपया भर का सेर एवं २८ सेर के मन से और दाल की किस्म का तौल १२८ रुपैया भर के सेर से २५ सेर के मन से माना जाता है। कपड़े के लिये ४० इंच का गज माना जाता है।

यहाँ की नारंगी एवं अनन्नास अच्छे होते हैं। यहाँ गीता प्रेस के नाम से एक संस्था है जो गीता का प्रसार करना ही अपना मुख्य उद्देश समझती है। यहाँ से कल्याण नामक धार्मिक मासिक पत्र भी निकलता है जिसका पता उर्दू बाजार है।

मेसर्स बालकिशनदास नन्दलाल

यह फर्म सुप्रसिद्ध फर्म मेसर्स ताराचन्द घनश्यामदास की ब्रांच है इसका विस्तृत परिचय चित्रों सहित इसी ग्रन्थ के प्रथम भाग में प्रकाशित किया जा चुका है। यह फर्म कलकत्ता फर्म के अंडर में काम करती है। इसमें मुकुन्दगढ़ (जयपुर) निवासी सेठ रामचन्द्रजी का साझा है। आप ही ने यह शाखा खुलवाई। आप आयुर्वेद के अच्छे जानकार थे। आप का स्वर्गवास हो गया। वर्तमान में आपके पुत्र राधाकृष्णजी फर्म का संचालन करते हैं। आप मिलनसार एवं शिक्षित सज्जन हैं। इस फर्म पर तेल की बिक्री का काम होता है इसकी निम्न स्थानों पर शाखाएँ हैं—

गोरखपुर, बस्ती, खजिमाबाद, गोंडा, बहराईच, कर्नलगञ्ज, नानपारा, बलरामपुर, पढ़नी, शोहरतगंज, उस्काबाजार, अजमनगंज, नोतनवाँ, सिसुवाबाजार, चोराचोरी आदि स्थानों पर करीब ४०, ५० शाखाएं हैं। सब पर तेल की बिक्री का काम होता है।

मेसर्स मुरारीलाल मकसूदनदास

इस फर्म के वर्तमान मालिक रायसाहब मुरारीलालजी एवं आपके भाई मकसुदनदासजी हैं। आप लोग यहीं के निवासी अग्रवाल वैश्य समाज के जैनी सज्जन हैं। इस फर्म की स्थापना आपके पिताजी अभयनन्दनप्रसादजी के द्वारा हुई। आपने इसकी बहुत उन्नति की। गोरखपुर में आप प्रतिष्ठित रईस माने जाते थे। आपने जैन धर्म और दूसरे धर्मों में भी काफी दान धर्म दिया। सरकार से आपको रायबहादुर की पदवी प्राप्त हुई थी। आपने जमींदारी के अतिरिक्त गल्ला एवं कपड़ा का भी व्यापार प्रारम्भ किया। यू० पी० कौन्सिल के भी आप मेम्बर रहे। मतलब यह है कि आप यहाँ के अच्छे व्यक्ति थे। आपका स्वर्गवास हो गया। इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

गोरखपुर—मेसर्स मुरारीलाल मकसूदनदास उर्दू बाजार, साहबगंज,—यहाँ कपड़ा, गल्ला, बैंकिंग का काम होता है। इसके अतिरिक्त सहजनवाँ, गढ़ई में खेती होती है।

मेसर्स हरकिशनदास कन्हैयालाल

संवत् १९४८ में यह फर्म सेठ हरकिशनदासजी के द्वारा स्थापित हुई और गल्ले का व्यापार खोला गया जो वर्तमान मे यह फर्म कर रही है। इसकी विशेष उन्नति भी आप ही के द्वारा हुई। आपका स्वर्गवास हो गया है। वर्तमान में इस फर्म के मालिक आपके पुत्र रामेश्वरलालजी, द्वारकादासजी, कन्हैयालालजी और सागरमलजी हैं। आप अग्रवाल वैश्यसमाज के सज्जन हैं। इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

गोरखपुर—मेसर्स हरकिशनदास कन्हैयालाल—यहाँ गल्ला, तिलहन आदि का व्यापार और आढ़त का काम होता है।

कलकत्ता—मेसर्स रामेश्वरलाल द्वारकादास ४ नारायण बाबू लेन T. A. People—यहाँ सब प्रकार की आढ़त का काम होता है।

इसके अतिरिक्त हरकिशनदास रामेश्वरलाल के नाम से गोंडा, सिसुवाबाजार, बलरामपुर और सहजनवाँ नामक स्थानों पर बर्माशेल के तेल की एजंसी है।
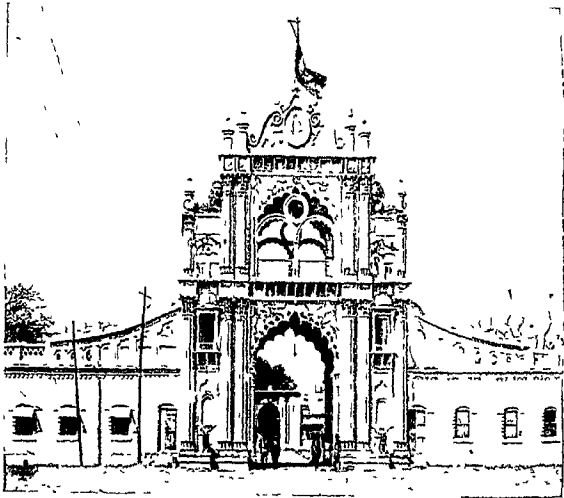
श्रीव्रजनारायण द्वार पडरौना राज
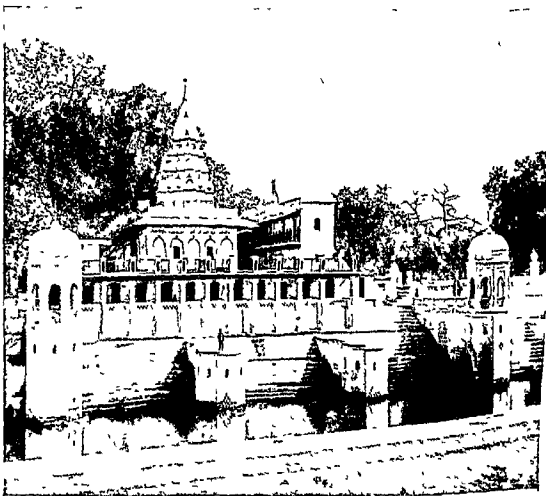
पडरौना-राजवंश

इस सुप्रसिद्ध राजवंश का इतिहास प्राचीन, गौरवपूर्ण एवं उज्वल है। इस परिवार के इतिहास का प्रत्येक पृष्ठ आदर्शमय है। जिसके पढ़ने से मनुष्य की उज्वल और नैतिक मनो-वृत्तियाँ सहज ही में जागृत होती हैं।

इस वंश का इतिहास कड़ा मानिकपुर के निवासी सुप्रसिद्ध गहरवार क्षत्रिय वीर राय भुआलराय से प्रारम्भ होता है। आप मुगल सम्राट् के सेना विभाग में अफसर थे। उन्हींसे आपको "राय" का खिताब प्राप्त हुआ था। आपने अपने बाहुबल से गोरखपुर जिले के पडरौना नामक स्थान में अपनी राजधानी स्थापित की। इस स्थान की भौगोलिक परिस्थति के कारण भविष्य में इस राजवंश को अपनी उन्नति करने तथा अपनी राजसीमा बढ़ाने का अच्छा सुयोग प्राप्त हो गया। इसी राजवंश में बादशाह औरंगजेब के समय में राय नाथरायजी हुए, जिनके वीरत्व पर मुग्ध होकर बादशाह ने ३३ ग्राम नानकार में दिये। इसके सिवाय समय समय पर और भी ग्राम प्राप्त हुए। जिससे इस राज्य का विस्तार बढ़ता ही गया।

राय ईश्वरीप्रताप नारायणरायजी

इसी प्रसिद्ध राजवंश में सन् १८०२ ई० मे राय ईश्वरीप्रताप नारायणरायजी—जिनका उपनाम प्रतापसिंहजी था—का जन्म हुआ। आप इस राजवंश में अत्यन्त प्रतापी महापुरुष हुए। आपका जीवन कण्टकाकीर्ण, उद्यमपूर्ण और कठिनाइयों से परिपूर्ण रहा। भूमि सम्बन्धी झगड़ो के कारण आपको कलकत्ते से आगरा तक की दौड़ करना पड़ती थी। क्योंकि उस समय एक जगह राजधानी थी तो दूसरी जगह दीवानी अदालत। आप एक ओर जमींदारी का झगड़ा लड़ते थे और दूसरी ओर अपनी उत्कट काव्य प्रतिभा से काव्यरचना भी करते थे। आपके 'रहस्य काव्य शृंगार' तथा 'भक्तमाल' आदि ग्रन्थ अब भी आपकी कीर्ति को उज्वल कर रहे हैं।

आपका धार्मिक जीवन बड़ा उत्कृष्ट रहा। वृन्दावन के समीप आपने एक मन्दिर और एक सुन्दर कुंज बनवाया जो आज भी पड़रौना कुंज के नाम से प्रसिद्ध है। पड़रौना में आपने श्याम-धाम नाम से एक भव्य मन्दिर बनवाया। इस मन्दिर के समीप ही नदी के बीच आपने

एक बृहत् तलाब सवा लाख रुपया व्यय कर बनवाया जो रामधाम के नाम से प्रसिद्ध हुआ। मन्दिर में श्रीराधाकृष्ण की स्थापना हुई। जहाँ सभी त्यौहार आज भी बड़े समारोह से मनाये जाते हैं। यहाँ आपने ठाकुरजी के हिंडोले और आनन्द विहार के लिए "वृन्दावन" नामक एक उपवन भी बनवाया है। जिसमें वृन्दावन के सम्पूर्ण वृक्ष लगाये गये हैं। जिनके नीचे मथुरा-वृन्दावन ही मिट्टी मंगाकर बिछाई गई है। वास्तव में आप परम भक्त थे। आपकी भक्ति का सहज ही में अनुमान किया जा सकता है।

आपका जीवन सभी दृष्टि से गौरव पूर्ण रहा। आप आनरेरी मजिस्ट्रेट भी थे। आप सन् १८६६ ई० मे स्वर्गवासी हुए।

रायमदन गोपालसिंहजी

राय ईश्वरीप्रताप नारायणजी के पश्चात् आपके छोटे पुत्र राय मदनगोपालसिंहजी गद्दी पर बैठे। आप राधाकृष्ण के अनन्य भक्त थे। साधु, ब्राह्मण और बृजवासियों पर आपकी बहुत अधिक श्रद्धा थी। आपको सन्तान सुख प्राप्त न था। आपने बरसाना पहाड़ी पर के श्री लाड़िलीलालजी के मन्दिर पर चढ़ने के लिए ३०० पक्की सीढ़ियाँ बनवायीं और उसी पहाड़ी पर बड़ी लागत के साथ एक विशाल कुँआ भी बनवा दिया जिससे जल का बहुत आराम हो गया। पडरौना और नन्दगाँव बरसाने के आस-पास अनेक कुँए, कुंज और वृक्षादि लगवाये। पडरौना मे आपने एक विशाल गोपालमन्दिर भी बनवाया।

आपने अपने निकट सम्बन्धी राय उदितनारायणसिंहजी को पुत्र स्वीकार कर अपनी रियासत का आधिकारी बनाया औप स्वयं भगवद् सेवा में लीन हो गये। आपका स्वर्गवास सन् १८९० ई० में हो गया।

राजा राय उदितनारायण सिंहजी—

राजा राय उदितनारायणसिंहजी बुद्धिमान् एवं विचारवान पुरुष थे। आपने अपनी सारी रियासत का नवीन संगठन किया। आप हर साल अपनी रियासत का दौरा करके स्वयं प्रजा के दुःख-सुख का निरीक्षण करते थे। देशोपकार तथा धार्मिक कामो में भी आपने पर्याप्त धन व्यय किया। आपने पडरौना मे एक संस्कृत पाठशाला खोली। इस पाठशाला की वर्तमान राजा साहब के समय मे बहुत उन्नति हो गई है। इसके अतिरिक्त उस समय तक गोरखपुर शहर में कोई सर्वसाधारण गृह नहीं था। इस कमी की पूर्ति के लिये एक विशाल टाउनहाल बनाने की योजना की गई और राजा साहब के विशेष सहायता से एक अत्यन्त सुन्दर भवन बनकर तैयार हुआ, लोग उसे 'पडरौना हाल' भी कहते हैं। अपने पूज्य पितामह के बनवाये हुए श्याम-धाम को आपने सजाया—इसके धरातल मे आपने संगमरमर और

राजाबहादुर ब्रजनारायणसिंहजी पडरौना

रायबहादुर जगदीशनारायणसिंहजी पडरौना

कुंवर रुद्रप्रतापनारायणसिंहजी पडरौना
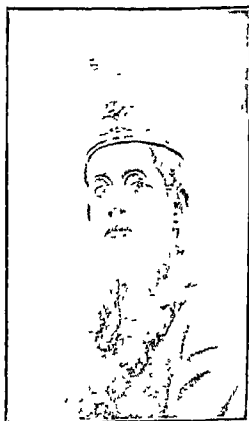
स्वर्गीय कुमार विष्णु प्रतापनारायणसिंहजी पडरौना

सङ्गमूसा जड़वाया तथा फाटक को गंगाजमुनी काम से सजादिया। आप गवर्नमेंट द्वारा ऑनरेरी मजिस्ट्रेट नियुक्त किये गये थे। सन् १९०० ई० में आपका स्वर्गवास होगया।

राजा बहादुर राजा व्रजनारायण सिंहजी—

राजा उदितनारायणसिंहजी के पश्चात् आपके ज्येष्ठ पुत्र राजाबहादुर राजा व्रजनारायण सिंहजी ने रियासत के काम को ग्रहण किया। आपका जन्म वैशाख बदी ५ संवत् १९३२ का है। आप बड़े ही कुशाग्रबुद्धि हैं। आप फारसी भाषा के पण्डित हैं आप फारसी में कविता भी करते हैं। हिन्दी भाषा पर भी आप का बहुत अधिक अनुराग है। गोरखपुर वाले १९ वें हिन्दी साहित्य सम्मेलन की स्वागतकारिणी के आप सभापति थे। आपका भाषण सराहनीय हुआ था। आपने एक अच्छी रकम सम्मेलन को संग्रहालय के लिए प्रदान की है। आप अंग्रेजी तथा संस्कृत के भी अच्छे ज्ञाता हैं। स्त्रीशिक्षा के आप विशेषरूप से पक्षपाती हैं। जैसा कि सेण्ट्रल हिन्दू स्कूल काशी के २६वें वार्षिकोत्सव पर सभापति की हैसियत से आपके दिये गये भाषण से स्पष्ट है। आपने कन्या पाठशाला को लॉरी के लिए एक अच्छी रकम भी प्रदान की। अनेक कन्याएँ आपसे सहायता पाकर अध्ययन करती हैं। इसके अतिरिक्त आपने वर्नाक्यूलर मिडिल स्कूल, उसका बोर्डिंग, कुआँ, प्राइमरी स्कूल तथा पडरौना की कन्या पाठशाला आदि भी बनवाये हैं।

आप कट्टर वैष्णव हैं फिर भी विचार बड़े उदार हैं। आपकी धार्मिक उदारता का पता महात्माजी के साथ मिस स्लेड को श्यामधाम में ले जाने की अनुमति देने ही से लगता है।

वर्तमान शिक्षा-प्रणाली-सम्बन्धी आपके विचार श्लाघ्य हैं। कई शिक्षण संस्थाएँ आपसे बहुत सहायता पाती रहती हैं। हाल ही में आपने अपने पूज्य पितृव्य के नाम पर मदनगोपाल अनाथालय नामक एक अनाथालय स्थापित किया है। इसके सिवाय आपने विक्टोरिया मेमोरियल हास्पिटल बनवाया तथा उसका कुल व्यय राज्य ही से होता है तथा पीसमेमोरियल पार्क बनवा कर उसमें सम्राट् पंचमजार्ज की मूर्ति भी स्थापित की है।

गरीब प्रजा की सुविधा के लिए आपने "जिरायती बैंक" खोला है जिसके द्वारा दो लाख रुपया रियासत का प्रजा को कर्ज दिया जाता है। अकाल आदि कष्ट के अवसरों पर जो रियायतें दूसरे बैंक करते हैं पड़रौना जिरायती बैंक द्वारा उनसे भी अधिक रियायतें की जाती हैं। इससे प्रजा को पूरी सहायता मिलती है।

सरकार में भी आपका बहुत बड़ा विश्वास है। यूरोपीय युद्ध में आपने धन, जन से सरकार को सहायता की। जिससे आपको राजा बहादुर का खिताब तथा तलवार पुरस्कार में मिली। आप तीन वर्षों तक युक्त प्रान्तीय कौन्सिल के नॉमिनेटेड मेम्बर रहे। आप डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के

बहुत समय से मेम्बर और पड़रौना टाऊन के स्पेशल मजिस्ट्रेट हैं। जो व्यक्ति आपसे एक बार मिल लेता है वह हमेशा आपके शील और सौजन्य की प्रशंसा करता है। आपके लघुभ्राता

रायबहादुर जगदीशनारायण सिंहजी

का जन्म संवत् १९४२ में हुआ। आपका भी हिन्दी और फारसी दोनो ही भाषाओं पर अधिकार है। साहित्य-जगत् के इतिहास के तो आप विशेषज्ञ ही हैं। आपकी लेखनशैली बड़ी मनोहर है। अंग्रेजी और संस्कृत भाषा पर भी आपका अच्छा अधिकार है। शिल्प-विद्या और चित्र-कला का भी आपको शौक है। आपके महल में लगे हुए बड़े २ कई चित्र आपकी चित्र-कला के नमूने हैं। मशीनरी का भी आपको अच्छा ज्ञान है। आपने अपनी खास देख रेख मे पड़रौना में चीनी का एक बहुत बड़ा कारखाना खोला है। जिसका नाम पड़रौना राज श्रीकृष्ण शुगर वर्क्स लिमिटेड है। आप ही इसके मैनेजिंग डाइरेक्टर हैं। इस कारखाने ने थोड़े ही वर्षों में बेहद उन्नति की, और आज तो यह विशाल कारखाना एक लाख मन से ऊपर चीनी प्रतिवर्ष तैयार करता है। यह फैक्टरी इस समय डबल की जा रही है। और कुछ ही समय में डबल हो जाने के पश्चात् यह फैक्टरी भारतवर्ष की सब चीनी की फैक्टरियों में बड़ी और अधिक चीनी तैयार करनेवाली हो जावेगी। यह आपकी प्रखर बुद्धि, कलाकौशल प्रेम और सुप्रबन्ध का ज्वलन्त प्रमाण है।

इस फैक्टरी से भी अधिक महत्व का काम "एग्री कल्चरल फार्म" नामक नवीन स्कीम का है। जिसके लिए शीघ्र ही सामान मँगवाया गया है। और श्री बक्षलाल अस्थाना एम० आर० ए० सी०; एम० आर० ए० एस० जिन्होंने यूरोप में भ्रमण कर इस विषय का विशेष ज्ञान प्राप्त किया है,—को इसके लिये नियुक्त किया है। फल स्वरूप कई हजार एकड़ जंगल काट कर साफ किया गया, और इसमे ईख की विशाल खेती प्रारम्भ की गई है। इस कार्य में आशातीत सफलता हो रही है। अब इस बात का भी प्रयत्न हो रहा है कि पडरौना से २० मील दूर "खड्डे" में ६००० एकड़ का एक और फार्म बढ़ाया जाय। आपके सत्परामर्श के अनुसार राजकुमार कृष्णप्रतापनारायणसिंहजी इस विभाग का सम्पादन कर रहे हैं। इस समय आपने पडरौना बाजार में बिजली की रोशनी का पूर्ण प्रबन्ध कर दिया है।

आप ऑनरेरी मुन्सिफ हैं। इतनी बड़ी सम्पत्ति और सत्ता के स्वामी होते हुए भी आपमें अभिमान और आलस्य का लेश भी नहीं है। यह अत्यन्त प्रसन्नता की बात है।

इस सारे विशाल कारोबार का प्रबन्ध राजासाहब और रायबहादुर जगदीशनारायण सिंह जी स्वयं ही करते हैं। प्रजा के कष्टों को आप दोनों भाई बड़े ही ध्यान के साथ सुनते हैं और उन्हें दूर करने के उचित उपाय करते हैं।
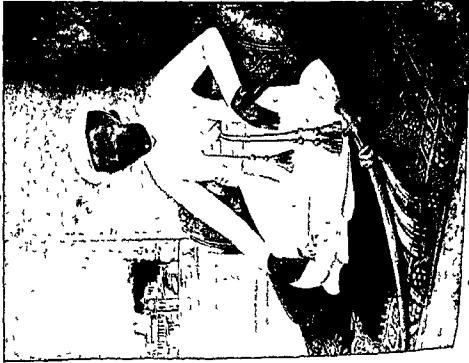
स्व० कवि ईश्वरीय प्रतापनारायण सिंहजी पड़रौना।

स्व० राजा उदितनारायण सिंहजी पड़रौना।
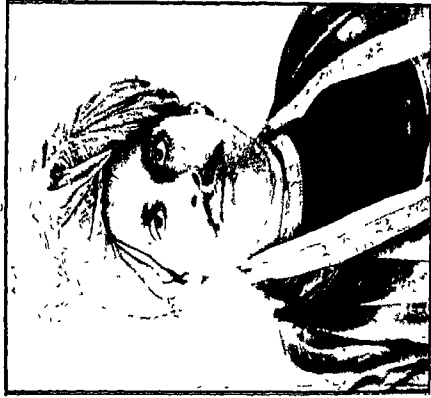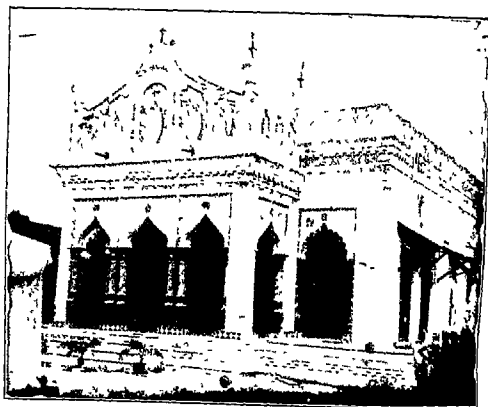
श्री दुर्गाजी का मन्दिर (देवीदत्त सूरजमल) पडरौना
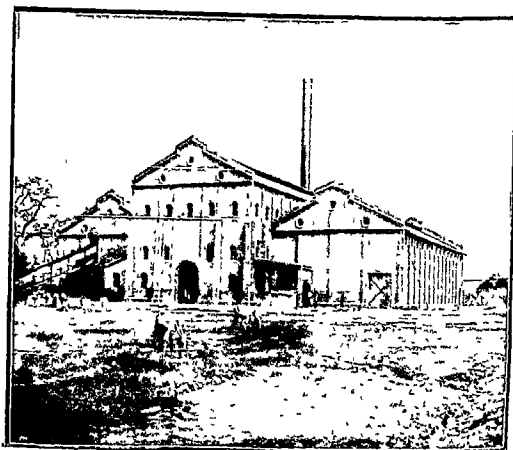
श्री ईश्वरी खेतान शुगर मर्स लक्ष्मीगंज (देवीदत्त सूरजमल) पडरौना

सन्तान

राजासाहब के कुल तीन और रायबहादुर जगदीशनारायणसिंहजी के छः पुत्र हुए। जिनमें सबसे बड़े—

राजकुमार कृष्णप्रतापनारायणसिंहजी

हैं। आपने अंग्रेजी साहित्य और फारसी भाषा का अच्छा अध्ययन किया है। अनेक वर्षों से आप ऑनरेरी असिस्टेण्ट कलक्टर निश्चित किये गये हैं और बड़ी सावधानी से उस कार्य्य का सम्पादन करते हैं। जब राजासाहब और रायबहादुर साहब यात्रा में रहते हैं तब राज्य का कुल कार्य्य आप ही की आज्ञानुसार होता है। आप पडरौना राज शुगर फार्म के संचालक हैं। राजासाहब के द्वितीय पुत्र—

स्व० श्रीविष्णुप्रतापनारायणसिंह

थे। मगर आपका अल्पायु में ही स्वर्गवास हो गया जिससे इस राजवंश पर एकाएक वज्राघात हुआ। ये राजकुमार पढने में बड़े तेजस्वी और प्रतिभासम्पन्न थे। हिन्दू विश्वविद्यालय द्वारा संचालित सेन्ट्रल हिन्दूस्कूल से इन्होंने एडमिशन परीक्षा पास की थी। इनके स्मारक स्वरूप रायबहादुर महोदय ने एक बड़ी रकम सेण्ट्रल हिन्दूस्कूल को दान देकर स्कॉलरशिप स्थापित की है और बोर्डिंग हाउस में बिजली फिटिंग करवाई है।

रायबहादुर जगदीशनारायणसिंहजी के ज्येष्ठ कुमार रुद्रप्रतापनारायणसिंह, का जन्म कार्तिक बदी ६ सं० १९११ ई० को हुआ। इस समय आप बी० ए० क्लास मे अध्ययन कर रहे हैं। अर्थशास्त्र और राजनीति आपका प्रधान विषय हैं। संस्कृत में भी आपने प्रवेशिका परीक्षा पास की है। आप बड़े होनहार मालुम पड़ते हैं।

रियासत के अन्य छोटे कुमार चि० रविप्रतापनारायणसिंह, चि० लक्ष्मीप्रतापनारायण सिंह, चि० सूर्यप्रतापनारायणसिंह, चि० रामप्रतापनारायणसिंह आदि बालगोपाल हैं।

पडरौना राजका भविष्य निर्मल है। इनके पूर्वजों का साहस, उनकी हिम्मत, उनकी प्रतिभा राजपरिवार में वर्तमान है। इनके द्वारा देश कार्य होने की बहुत कुछ आशा है।

मेसर्स डेढ़राज द्वारकादास

इस फर्म के मालिकों का मूलनिवास-स्थान मलसीसर (राजपूताना) है। आप अग्रवाल समाज के केडिया सज्जन हैं। करीब ३० साल पहले सेठ डेढ़राजजी के द्वारा यह फर्म स्थापित की गई। आपके तीन भाई और थे, सेठ भूरामलजी, सेठ बद्रीदासजी एवं सेठ सूरजमलजी। इनमें से सेठ बद्रीदासजी एवं सेठ सूरजमलजी का स्वर्गवास हो गया है।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ डेढ़राजजी, सेठ भूरामलजी तथा सेठ बद्रीदासजी

के पुत्र द्वारकादासजी एवं सूरजमलजी के पुत्र बृजलालजी हैं। सेठ डेढ़राजजी के पुत्र रामरतन-जी तथा सेठ भूरामलजी के पुत्र नानूरामजी हैं। इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

पडरौना—मेसर्स डेढ़राज द्वारकादास—यहाँ महाजनी लेन-देन तथा कपड़े का व्यापार होता है।

सिसुआबाजार—मेसर्स भूरामल रामरतन—यहाँ कपड़े तथा गल्ले का व्यापार होता है।

अहमदाबाद—मेसर्स द्वारकादास नानूराम T. A. Malsi-Sarka—यहाँ देशी कपड़े का धरू और आढ़त का काम होता है।

इसके अतिरिक्त चनपटिया (चम्पारन) और घुघली (गोरखपुर) में आपकी फर्में हैं जहाँ गल्ले का व्यापार होता है।

मेसर्स देवीदत्त सूरजमल

इस फर्म के मालिक अलसीसर (जयपुर-स्टेट) निवासी अग्रवाल वैश्यसमाज के खेतान सज्जन हैं। करीब ७० वर्ष पूर्व इस फर्म की स्थापना सेठ देवीदत्तजी ने की। शुरू २ में इस पर कपड़े का बहुत छोटे रूप में व्यापार प्रारंभ किया गया। आपके चार पुत्र हुए सेठ सूरज-मलजी, सेठ रामानन्दजी, सेठ रामप्रतापजी एवं सेठ मितानन्दजी। वर्तमान सेठ सूरजमलजी को छोड़ शेष सज्जन स्वर्गवासी हैं। संवत् १९५० में सेठ देवीदत्तजी की मौजूदगी ही में इस फर्म की एक शाखा कलकत्ता में खोली गई। पश्चात् ज्यों २ कारबार बढ़ता गया त्यों २ फर्म ने बम्बई, कानपुर आदि व्यापारिक केन्द्रों में भी फर्म की स्थापना की। आप चारों भाइयों ने ही इसे उन्नतावस्था पर पहुँचाया।

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ सूरजमलजी तथा सेठ रामानन्दजी के पुत्र हरीरामजी, सेठ रामप्रतापजी के पुत्र सेठ सागरमलजी और सेठ मितानन्दजी के पुत्र गणेशनारायणजी तथा केदारनाथजी हैं। सेठ सूरजमलजी के पुत्र घनश्यामदासजी का स्वर्गवास करीब २० साल पूर्व हो गया है। गणेशनारायणजी के पुत्र रामचन्द्रजी भी होनहार नवयुवक थे। आपने करीब तीन वर्ष पूर्व लक्ष्मीगंज में एक शुगर मील की स्थापना की। आपका ३ मास पूर्व स्वर्गवास हो गया है।

इस फर्म की ओर से यहाँ श्रीदुर्गाजी का मन्दिर बना हुआ है। तथा आलसीसर में एक स्कूल चल रहा है। इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

पडरौना—मेसर्स देवीदत्त सूरजमल, T. A, Khetan—यहाँ बैंकिंग, जमींदारी एवं कपड़े का व्यापार होता है। यहाँ आईल एजंसी भी है। पास ही लक्ष्मीगंज में आपका एक शक्कर का मील है।

इसके अतिरिक्त तमकुही रोड, सिसुआ बाजार, कलकत्ता, कानपुर, बम्बई आदि स्थानों पर भी फर्में हैं इनका विस्तृत परिचय प्रथम भाग में बम्बई विभाग में मेसर्स. गणेशनारायण औंकारमल के नाम से दिया गया है।

सेठ गणेशनारायणजी खेतान (देवीदत्त सूरजमल) पडरौना

सेठ केदारनाथजी खेतान बा० मैजि० (देवीदत्त सूरजमल) पडरौना

स्व० सेठ रामचंद्रजी खेतान (देवीदत्त सूरजमल) पडरौना

बा० ओंकारमलजी खेतान S/O सेठ घनश्यामदासजी खेतान पडरौना

मध्य-प्रदेश

CENTRAL PROVINCES

मेसर्स महेशदास भोमसिंह

इस फर्म के मालिकों का आदि निवासस्थान बीकानेर है। आप लोग माहेश्वरी समाज के कोठारी सज्जन हैं। इस फर्म की स्थापना लगभग १०० वर्ष पूर्व नागपुर में हुई। आरम्भ में इस फर्म पर गल्ला का व्यापार और महाजनी लेन देन के रूप में बैंकिंग का काम होता था जो अभी तक बराबर हो रहा है। और साथ ही गल्ला, सोना, चाँदी, किराना आदि का व्यापार होता है। बैंकिंग और मालगुजारी तथा रुई का काम भी यह फर्म करती है।

इस फर्म की विशेष उन्नति सेठ आशारामजी के समय में हुई। आपने फर्म को अच्छी उन्नत अवस्था पर पहुँचा दिया। अतः आप ही फर्म के प्रधान स्थम्भ माने जाते हैं। आपका स्वर्गवास सम्वत् १९५३ में हुआ। आपके बाद आपके पुत्र सेठ मोतीलालजी कोठारी ने व्यापार संचालन अपने हाथ मे लिया, तब से आप भी उसी योग्यता से कार्य्य कर रहे हैं। आप व्यापारकुशल महानुभाव हैं। आप यहाँ की म्यूनिसिपैलिटी के मेम्बर तथा आनरेरी मैजिस्ट्रेट भी रह चुके हैं। आप सभी लोकोपकारी कार्यों से सहानुभूति रखते हैं।

इस फर्म के मालिकों की धार्मिक कार्यों की ओर सदा से अच्छी मनोवृत्ति रही है। आपकी ओर से पुरी में एक विशाल धर्मशाला बनी हुई है और उसकी सुव्यवस्था के लिये एक गांव भी लगा दिया है।

आपकी मालगुजारी में ४-६ गांव भी हैं जो आशारामजी ने खरीदे थे।

सेठ मोतीलालजी ने कलकत्ता, रामपुर आदि में दुकानें खोलीं जो उन्नत रूप में हैं। इस प्रकार जहाँ आशारामजी ने फर्म को प्रधान उन्नति दी वहाँ सेठ मोतीलालजी ने फर्म के काम को अच्छा बढ़ाया।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

मेसर्स महेशदास भौमसिंह नवी सुकरवारी नागपुर 506 T. ph.	यहाँ फर्म का हेड ऑफिस है तथा गल्ला, रूई, सोना चाँदी और कमीशन एजन्सी का काम होता है। साथ ही मालगुजारी और महाजनी लेनदेन तथा हुण्डी-चिट्ठी काम होता है।
मेसर्स मोतीलाल कोठारी इतवारी बाजार	चाँदी, सोना, सराफी, किराना और कॉटन का काम होता है।
मेसर्स कोठारी एण्ड को० सदर बाजार, नागपुर 549 T. ph.	यहाँ फ्याट मोटर कम्पनी की एजेन्सी है जहाँ मोटर तथा मोटर पार्ट एवं ऐसेसरीज को बिक्री का काम होता है।

मेसर्स अड्डाराम मोतीलाल कालबादेवी रोड़ बम्बई T. A. Bhagwati T. ph. 23722	बैंकर्स, जनरल मर्चेण्ट्स और कमीशन एजेण्ट्स का काम होता है।
मेसर्स ठाकुरदास अड्डाराम ९५ लोअर चीतपुर रोड़ T. A. Anand mauje	बैंकर्स, जनरल मर्चेण्ट्स एण्ड कमीशन एजेण्ट्स
मेसर्स ठाकुरदास अड्डाराम सदर बाजार रायपुर	बैंकर्स, जेनरल मर्चेण्ट्स एण्ड कमीशन एजेण्ट्स
मेसर्स मोतीलाल कोठारी गंज बाजार रायपुर	बैंकर्स एण्ड कमीशन एजेण्ट्स
मेसर्स मोतीलाल कोठारी सदर बाजार सम्भलपुर	बैंकर्स जनरल मर्चेण्ट्स एण्ड कमीशन एजेण्ट्स
मेसर्स ठाकुरदास अड्डाराम वग (waf) झालावाड़ स्टेट	यहाँ जीनिंग प्रेसिंग फैक्टरी है।
मेसर्स अड्डाराम मोतीलाल बीकानेर कोठारीवार	बैंकर्स, जनरल मर्चेण्ट्स एण्ड कमीशन एजेण्ट्स

मेसर्स रामकरन हीरालाल

आप लोगों का आदि निवासस्थान होशियारपुर (पञ्जाब) है। पर बहुत समय से आप लोग नागपुर ही रहते हैं। आप लोग जैन ओसवाल समाज के सज्जन हैं।

इस फर्म की स्थापना सम्वत् १८९० के लगभग सेठ रामकरणजी ने उपरोक्त नाम से की थी। आपने आरम्भ से ही जवाहिरात का काम किया जो फर्म आज कल भी कर रही है। इस फर्म की प्रधान उन्नति सेठ हीरालालजी के समय में हुई। आपने अपनी फर्म को अच्छी उन्नत अवस्था पर पहुँचा दिया।

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ केसरीचन्दजी हैं जो फर्म का संचालन करते हैं। आपके पुत्र बाबू पानमलजी और बाबू इन्द्रचन्द्रजी है।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

मेसर्स रामकरन हीरालाल इतवारी बाजार, नागपुर	यहाँ बैंकिंग और ज्वैलर्स का काम होता है।
मेसर्स रामकरन हीरालाल ज्वैलर्स, इन्द्रभवन छावनी नागपुर	यहाँ मालिकों का निवासस्थान है।

चाँदी-सोने के व्यापारी

जवाहरमल हजारीलाल

इस फर्म के वर्तमान मालिक नाबालिग हैं। आप लोग अपने हेड आफिस छिंदवाड़ा में रहते हैं। वहाँ यह फर्म प्रतिष्ठित फर्मों में से है। इस पर वहाँ छोगालालजी काम देखते हैं। यहां भी इस फर्म पर सोना-चाँदी का व्यापार होता है। इसका पता इतवारी बाजार नागपूर है। यहाँ इसका संचालन श्रीयुत गेंदालालजी पाटनी करते हैं। इसका विशेष परिचय चित्रों सहित छिंदवाड़ा में इसी ग्रन्थ में छापा गया है।

मेसर्स शिवलाल मोतीलाल

आप लोगो का आदि निवासस्थान जोधपुर राज्य के अन्तर्गत लोनवा नामक स्थान का है। आप वैश्य जाति के जैन खण्डैलवाल समाज के पाटनी सज्जन हैं।

इस फर्म की स्थापना सेठ शिवलालजी ने लगभग ५० वर्ष पूर्व उपरोक्त नाम से की थी। इस परिवार के पूर्व पुरुष सेठ गुमानीरामजी देश से नागपुर आये और उन्होंने यहाँ पर अपना स्थान कायम किया। आपके बाद आपके पुत्र सेठ शिवलालजी ने उपरोक्त नाम से व्यापार किया। आरम्भ में यह फर्म सोना चाँदी का व्यापार करती थी पर ज्यों २ फर्म ने व्यापार में उन्नति की त्यों २ सोना चाँदी के अतिरिक्त हुण्डी चिट्ठी लेन-देन का काम समय २ पर आरम्भ किया गया जो यह फर्म आज भी बराबर कर रही है।

इस फर्म की विशेष उन्नति सेठ मोतीलालजी के हाथों हुई। आपने ही फर्म को उन्नत अवस्था पर पहुँचाया। सेठ शिवलालजी के स्वर्गवासी होने के बाद फर्म का व्यापार संचालन
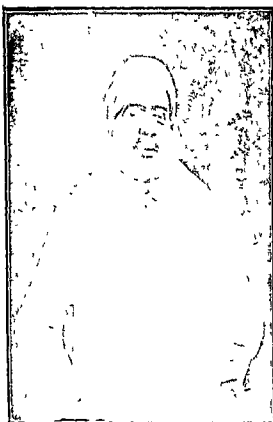
सेठ केशरीचंदजी जौहरी (रामकरन हीरालाल) नागपुर

सेठ करणीदानजी धाडीवाल (प्रतापमल छोगमल) नागपुर

बाबू पानमलजी जौहरी (रामकरन हीरालाल) नागपुर

...समय में बहुत काल तक एक्सचेंज
...दासजी राठी भी आरम्भ में एक्सचेंज
...पक रूप से आप करते थे पर बंगाल
...। सेठ जी ने अपना निज फर्म खोल
...को औद्योगिक क्षेत्र में अच्छी सफलता
यूरोपीय समर के समय परिस्थिति से
...दि कितने ही काम खोल दिये। इस
...भाविक था अतः आपने अच्छा लाभ
...कान भी खोल दी जो आज तक बराबर

नागपुर ब्रॉंच तथा जमशेदपुर ब्रॉंच की
का काम और बैंकिंग व्यवसाय होता है।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है :—

मेसर्स शंकरदास मथुरादास इतवारी बाजार, नागपुर	सोना चाँदी की बिक्री तथा बैंकिंग का काम होता है।
मेसर्स मथुरादास राठी नागपुर	यहाँ इम्पीरियल बैंक की नागपुर ब्रांच के खजानची का काम है।
मेसर्स मथुरादासजी राठी जमशेदपुर	यहाँ जमशेदपुर ब्रांच इम्पीरियल बैंक के खजानची का काम है।

कपड़े के व्यापारी

मेसर्स जमनाधर पोद्दार एण्ड को०

आप लोग अग्रवाल समाज के पोद्दार सज्जन हैं। आप लोगों का आदि निवास-स्थान बिसाऊ है। सब से प्रथम यह परिवार स्वदेश से बम्बई गया और वहाँ अन्य परिवार-सम्बन्धी कार्यों के अतिरिक्त टाटा कम्पनी से व्यापारिक सम्बन्ध स्थापित किया फलतः जब टाटा कम्पनी के जन्मदाता सेठ टाटा ने नागपुर में इम्प्रेस मिल स्थापित किया तो उन्होंने सेठ नाथूराम-जी के परामर्श से सेठ जमनाधरजी को कार्य्य सम्हालने के लिए भेजा और इस प्रकार सेठ जमनाधरजी यहाँ आए। सन् १८७५ में उपरोक्त नाम से सेठ जमनाधरजी ने अपनी फर्म स्थापित कर टाटा की इस मिल की एजेन्सी का काम आरम्भ किया और फलतः इसी सम्बन्ध में स्थान २ पर और भी एजेन्सियाँ आपने स्थापित कीं। आपका स्वर्गवास सन् १९२६ की १ जनवरी को हुआ।

इस समय इस फ़र्म के वर्तमान मालिक सेठ जीवराजजी पोद्दार, सेठ नागरमलजी पोद्दार और सेठ अमोलखचंदजी पोद्दार हैं। जिसमें वयोवृद्ध होने के कारण सेठ जीवराजजी काशीवास करते हैं। अतः फर्म का प्रधान संचालन सेठ नागरमलजी करते हैं। यह फर्म सोल एजेण्ट के रूप में मिल का बना माल बेचने और मिल के लिए रुई खरीदने का काम करती है। इसका विस्तृत परिचय चित्रों सहित दूसरे भाग के कलकत्ता विभाग में दिया गया है।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

मेसर्स जमनाधर पोद्दार एण्ड को० ओल्ड स्टेशन रोड नागपुर	यहाँ हेड ऑफिस है और नागपुर की टाटा की मिलो की सोल एजन्सी है।

इसी नाम पर से इस फर्म की ब्रांचेस इस प्रकार हैं:—

उमरेल, रायपुर, बिलासपुर, सम्भलपुर, चांईबासा, रांची, मोहाड़, खेड़ी, वर्धा, हिंगनघाट, बारोरा, चांदा, आकोला, नादोरा, शोलापुर, मद्रास, अहमदाबाद, बेजवाड़ा, लायलपुर, रंगून।

मेसर्स नागरमल पोद्दार—करांची, आभोरमण्डी।
मेसर्स सोनीराम जीतमल—कलकत्ता, बराकर।

मेसर्स प्रतापचन्द छोगमल

आप लोग बीकानेर निवासी ओसवाल समाज के धाड़ीवाल सज्जन हैं। आप जैन श्वेताम्बर सम्प्रदाय के अनुयायी हैं। इस फर्म की स्थापना लगभग सम्वत् १९०५ के सेठ प्रतापचंद जी तथा आपके भाई सेठ लक्ष्मीचन्दजी ने आकर नागपुर में उपरोक्त नाम से की और अपना व्यापार आरम्भ किया। उस समय इस फर्म पर किराने का व्यापार किया गया और ज्यो ज्यों फर्म ने उन्नति की त्यों २ किराने के अतिरिक्त सोना चाँदी का काम और साथ ही साहूकारी लेन-देन का काम किया गया फलतः फर्म उन्नति की ओर अग्रसर हुई। और यही कारण है कि वर्तमान में इस फर्म पर साहूकारी लेनदेन, गिरवी और पुलगाँव की मिल की एजेन्सी का काम होता है।

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ करनीदानजी धाड़ीवाल हैं आपके तीन पुत्र हैं बाबू रतनलालजी धाड़ीवाल, बाबू केशरीचन्द धाड़ीवाल तथा बाबू सूरजमलजी धाड़ीवाल। अभी सब लोग शिक्षा प्राप्त करते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

मेसर्स प्रतापचन्द छोगमल, इतवारी बाजार, नागपुर — पुलगाँव मिल की सोल एजेन्सी है। यहाँ महाजनी लेनदेन तथा गाँठ गिरवे का काम होता है।

मेसर्स प्रतापचन्द छोगमल, इतवारी बाजार, नागपुर — यहाँ पर पुलगाँव मिल का माल बिक्री होता है।

मेसर्स प्रतापचन्द छोगमल, पुलगाँव जि० वर्धा — यहाँ पुलगाँव मिल की एजेन्सी है।

मेसर्स बुलाखीदास गोपालदास

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ गोपालदासजी मोहता हैं। आपका हेड आफिस हिंगनघाट में है। वहाँ यह फर्म प्रतिष्ठित मानी जाती है। इस फर्म के पास कई जिनिंग और प्रेसिंग फेक्टरियाँ हैं। इसके अतिरिक्त अकोला में इस फर्म का एक मिल भी चल रहा है। इसका

विशेष परिचय चित्रों सहित इसी ग्रंथ के इसी भाग में हिंगनघाट में दिया गया है। यहाँ यह फर्म बैंकिंग तथा अपने मिल के बने हुए कपड़े का व्यापार करती है। इसका पता इतवारी बजार नागपूर है।

मेसर्स मथुरादास गिरधरदास

इस फर्म के वर्तमान मालिक श्रीमथुरादासजी मोहता हैं। आपका हेड आफिस हिंगनघाट में है। वहाँ यह फर्म रायसाहब रेखचंद मोहता स्पिनिंग एण्ड विविंग मिल्स की मालिक है। इस फर्म पर यहाँ पहले भीखमचंद रेखचंद नाम पड़ता था। अभी २ करीब ४, ५ माह से उपरोक्त नाम से व्यापार होने लगा है। सेठ मथुरादासजी एवं गोपालदासजी दोनों भाई अलग २ अपना व्यापार करते हैं। यहाँ इस फर्म पर बैंकिंग और अपने मिल के बने हुए कपड़े का व्यापार होता है। इसका विशेष परिचय इसी ग्रन्थ के प्रथम भाग में बीकानेर में दिया गया है।

मेसर्स रामनाथ रामरतन

इस फर्म का हेड आफिस-पूना में है। इसके वर्तमान मालिक हनुमंतरामजी हैं। इस फर्म की और भी कई शाखाएँ हैं। जहाँ भिन्न २ प्रकार का व्यापार होता है। यहाँ यह फर्म कपड़े का व्यापार करती है। इसका पता इतवारी बाजार है। इसका विशेष परिचय चित्रों सहित इसी ग्रंथ के प्रथम भाग में बम्बई विभाग पेज नं० १३० में दिया गया है।

गल्ले के व्यापारी

मेसर्स कालूराम वच्छराज

इस फर्म के मालिकों का मूल निवासस्थान रामनगर जि० जैपुर है। आप लोग खण्डेल-वाल जैन समाज के बगेरा सज्जन हैं। लगभग १०० वर्ष पूर्व सेठ कालूरामजी और आपके भाई सेठ वच्छराजजी ने इस फर्म की स्थापना नागपुर में की थी और आरम्भ से ही यह फर्म गल्ले का व्यापार और आढ़त का काम करती आ रही है।

इस फर्म की प्रधान उन्नति सेठ कालूरामजी के पुत्र सेठ जोहारमलजी तथा सेठ वच्छराज जी के पुत्र सेठ छोगालालजी के हाथों से हुई। आप लोगों ने फर्म के व्यापार को अच्छी उन्नत अवस्था पर पहुँचा दिया। आप लोगों ने अनाज के व्यापार और आढ़त के काम के अतिरिक्त

साहुकारी लेन-देन और हुण्डी-चिट्ठी का काम भी आरम्भ किया जो यह फर्म आज भी पूर्ववत करती जा रही है।

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ चम्पालालजी हैं। सेठ जोहारमलजी का स्वर्गवास सम्वत १९६६ मे हुआ अतः आपके वाद फर्म का संचालन आपके भाई सेठ छोगालालजी करते रहे। सेठ छोगालालजी का स्वर्गवास सम्वत् १९८२ में हुआ। तब से फर्म का संचालन सेठ जोहारमलजी के पुत्र सेठ चम्पालालजी करते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

मेसर्स कालूराम वच्छराज नवी शुक्रवारी बाजार नागपुर	यहाँ हेड ऑफिस है। तथा अनाज और आढ़त तथा हुण्डी चिट्ठी का काम होता है।
मेसर्स कालूराम वच्छराज इतवारी बाजार नागपुर	यहाँ गल्ले का व्यापार होता है। और गल्ले की आढ़त का काम है।
मेसर्स जोहारमल छोगालाल दुर्ग C. .P	गल्ला, आढ़त और हुण्डी चिट्ठी का काम होता है।

मेसर्स नैनसुख कनीराम

इस फर्म का हेड ऑफिस कामठी है। यहां यह फर्म अच्छी प्रतिष्ठित मानी जाती है। इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ मोहनलालजी तथा गौरीशंकरजी हैं। आप दोनों का हिस्सा है। इस फर्म की और भी कई स्थानों पर शाखाएं हैं। इसका विशेष परिचय इसी ग्रंथ के इसी भाग में कामठी में दिया गया है। यहां यह फर्म गल्ले का व्यापार करती है। इसका पता इतवारी बाजार नागपुर है।

रामप्रताप गनेशराम

इस फर्म का हेड ऑफिस जालना (निजाम-स्टेट) है इसके वर्तमान मालिक सेठ राधाकृष्णजी एवं सेठ गोपीकृष्णजी हैं। इसकी और भी स्थानों पर शाखाएं हैं। इसका विस्तृत परिचय इसी ग्रंथ में जालना में दिया गया है। यहां इस फर्म पर गल्ले का व्यापार होता है। इसका पता इतवारी बाजार नागपुर है।

मेसर्स ब्रिजलाल रामचन्द सराफ

आप लोग मूल निवासी सामेर (नागपूर) के हैं। आप खत्री जाति के रघुवंशी ठाकुर हैं। आप करीब २०-२५ साल से (Plants-Merchant) हर किस्म के पौधे, बीज तथा फलों का व्यापार करते हैं। इस समय इस फर्म के मालिक श्रीयुत ब्रिजलाल जी और रामचन्द्र जी सराफ हैं।

आपके यहां पर नागपुरी सन्तरा, कमला सन्तरा तथा और सब प्रकार के फलों के पौधे, सस्ते दामों पर बढ़िया मिलते हैं। नागपुर के इस किस्म के खास २ व्यापारियों में यह फर्म प्रसिद्ध है। हिन्दुस्तान के सभी भागों में यह फर्म पौधे और बीज सप्लाय करती है। कई बड़े २ आदमियों ने इस फर्म को अच्छे २ सार्टीफिकेट दिये हैं।

फर्म का पता—ब्रिजलाल रामचन्द्र सराफ नर्सरी एण्ड सीड्स मेन चांदी सोना ओली नागपूर सिटी।

बैंकर्स

दी अलाहाबाद बैंक लिमिटेड नागपुर ब्रॉंच
,, इम्पिरियल बैंक लिमिटेड नागपुर ब्रॉंच
मेसर्स गंगाधरराव चिटनवीस इतवारी
,, गोपालराव बूटी सीताबर्डी
,, चन्द्रभान बंसीलाल इतवारी
,, प्रतापचन्द छोगमल ,,
,, बंशीलाल अबीरचंद रायबहादुर
,, मथुरादास गिरधरदास इतवारी
,, माधवराव नारायण घटाटे ,,
,, मोतीलाल कोठारी शुक्रवारी
,, शिवलाल मोतीलाल इतवारी

चाँदी-सोना के व्यापारी

मेसर्स गोविन्दा भाऊकिसन इतवारी
,, चन्द्रभान बंसीलाल ,,
,, छोगमल नथमल ,,
,, जवाहरमल हजारीलाल ,,
मेसर्स नेमीचन्द सरदारमल इतवारी
,, नारायण गणपति बांगड़े ,,
,, बलदेवदास गीगराज ,,
,, बाड़ीलाल जीवन ,,
,, मोतीचन्द भवानभाई ,,
,, महादेव रामदेव ,,
,, रामाजी तुकाराम ,,
,, रामचन्द मारुती ,,
,, रामकृष्ण पैकाजी ,,
,, शंकरदास मथुरादास ,,
,, शिवलाल मोतीलाल ,,

कपड़े के व्यापारी

मेसर्स अहमद दाउद इतवारी
,, उमरावलाल भालोटिया ,,
दी एम्प्रेस मिल क्लॉथ शाप ,,
मेसर्स ठाकुरदास चन्द्रभान ,,
,, तुलसीराम भिखूलाल ,,

मेसर्स	नागरमल विशनदयाल	इतवारी
,,	नित्यानंद अगरवाला	,, (ऊलन)
,,	बुलाखीदास गोपालदास	,,
दी	विदर्भ मिल क्लॉथशाप	,,
दी	माडल मिल क्लॉथशाप	,,
मेसर्स	मथुरादास गिरधरदास	,,
,,	मोतीलाल राधाकृष्ण	,,
,,	सूरजकरन गनेशराम	,,
,,	हाजी करीम नूरमहम्मद	,,
,,	हाजी रहीमतुल्ला नूरमहम्मद	,,

सूत के व्यापारी

मेसर्स	कासम हाजी अब्दुल्ला	इतवारी
,,	ठाकुरदास चन्द्रभान	,,
,,	तुलसीदास भिक्खूलाल	,,
,,	हाजी करीम नूरमहम्मद	,,
,,	हाजी हसन दादा	,,

रंग के व्यापारी

मेसर्स	तैय्यब अलि बदरुद्दीन	बसराई
,,	माधौराम मणिलाल	इतवारी
,,	हाजी हसन दादा	,,
,,	हाजी करीम नूर	,,

पेपर एण्ड स्टेशनरी

मेसर्स	अब्दुल हुसेन कीकाभाई	इतवारी
,,	निसार अलि हैदर अलि	,,

गल्ले के व्यापारी

मेसर्स	काल्रूराम बच्छराज	इतवारी
मेसर्स	घासीराम मूलचन्द	इतवारी
,,	जमनाधर पोद्दार	,,
,,	दशरथ ढोंडबा	,,
,,	नैनसुख कनीराम	,,
,,	नानजी नागसी	,,
,,	भोला गनेश	,,
,,	मूलजी देवजी	,,
,,	मन्नू रामप्रसाद	,,
,,	रायचन्द नारायण	,,
,,	हनुमान काल्रूराम	,,

किराने के व्यापारी

मेसर्स आदम लतीफ कासम
,, अब्दुल लतीफ हासम
,, आदमजी मूसा उस्मान
,, कालकाप्रसाद हरदेवदास
,, खन्नूलाल गरीबदास
,, जगजीवन तुलसीदास
,, रामदेव गनेशराम
,, लतीफ हाजी कासम इसाक

नागपुरी कपड़े के व्यापारी

मेसर्स तुलसीराम जाल्रूराम
,, भारमल भागीरथ
,, भेरुबक्ष मोहनलाल
,, राधाकिशन किशनराम
,, रामनाथ रामरतन
,, सुन्दरसाहु गंगासाहु

जनरल मरचेंट्स

दी अबीदी शाप सीताबर्डी
दी दाऊदी शाप इतवारी
मेसर्स मुल्लां शरफअली शेख अब्दुल अली
" एम० हसनजी एण्ड संस इतवारी
दी हबीबी शाप "

हार्डवेअर मरचेण्ट्स

मेसर्स अब्दुल हुसेन मुलां अलाबक्ष
" फिदा अली सुल्तान अली
" एम० हसनजी एण्ड संस
" महमद भाई अब्देअली

मोटरकार डीलर्स एण्ड असेसरि मरचेंट्स

मेसर्स धन्नाराम हीरालाल हास्पिटलरोड
" बोरा ब्रदर्स सिविल लाईंस
दी बाम्बे गेरेज सदर बाजार
सेठ मोतीलाल कोठारी "
दी सी. पी. इन्जिनियरिंग कम्पनी माडेट रोड

साईकल मरचेंट्स

दी कोहिनूर साईकल कम्पनी सदर
मेसर्स दास एण्ड को० हास्पिटल रोड
दी मॉडर्न साईकल कम्पनी सदर

कामठी

कामठी नागपुर जिले का एक अच्छा व्यापारिक स्थान है। यह बी० एन० आर की मेन लाईन पर स्थित है। यहाँ से एक दूसरी लाईन रामटेक नामक तीर्थ पर गयी है। यहाँ का व्यापार गल्ला एवंम् बीड़ी का है। व्यापारिक गतिविधी के ज्यादा होने एवंम् व्यापारियों के विशेष आवागमन की वजह से यहाँ अच्छी चहल पहल रहती है। यहाँ से नागपुर, रामटेक आदि स्थानों पर हमेशा मोटरें रन करती रहतीं हैं। बीड़ी के यहाँ बड़े २ कारखाने हैं। यहाँ की बसावट सुन्दर है। यहाँ विशष व्यापार गल्ले का है। जो यहाँ से बाहर जाता है। यहाँ कई जीनिंग और प्रेसिंग फेक्टरियाँ भी हैं।

यहाँ के व्यापारियों का परिचय इस प्रकार है:—

मेसर्स नैनसुख कनीराम

आप लोगों का आदि निवास-स्थान मेहर बैराठ (राजपूताना) का है। आप लोग अग्रवाल समाज के गोयल गोत्रीय सज्जन हैं। सब से प्रथम सेठ नैनसुखजी तथा कनीरामजी दोनों भाई यहाँ कामठी आये और उन्होंने इस फर्म की स्थापना लगभग ७० वर्ष पूर्व की। आपने इस फर्म पर आरम्भ में ही अनाज और आढ़त का व्यापार आरम्भ किया था जो यह फर्म आज भी करती आ रही है।

इस फर्म का काम सेठ नैनसुखजी के बाद आपके पुत्र सेठ हीरालालजी ने संचालित किया। आपका स्वर्गवास सन् १९२३ ई० के लगभग हो गया तब से फर्म को सेठ गौरीशङ्करजी खण्डेवाल संचालित करते हैं।

इस फर्म में सेठ गौरीशंकरजी का हिस्सा है। आपके पिता सेठ गोविन्दरामजी लगभग ६५ वर्ष पूर्व इस फर्म के भागीदार हुए थे तब से आप लोगों का बराबर साझा चला आ रहा है।

इस फर्म के वर्तमान मालिक स्व० सेठ हीरालोलजी के पुत्र बाबू मोहनलालजी जो अभी नाबालिग है तथा फर्म के हिस्सेदार सेठ गौरीशंकरजी हैं।

इस फर्म पर वर्तमान में गल्ला तथा कमीशन एजन्सी का व्यापार प्रधान रूप से होता है।

इसका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

(१) कामठी—मेसर्स नैनसुख कनीराम लाला ओली	यहाँ फर्म का हेड ऑफिस है तथा गल्ला और कमीशन एजेण्ट का काम होता है।
(२) नागपुर—मेसर्स नैनसुख कनीराम इतवारी बाजार	अनाज और कमीशन एजेण्ट का काम होता है।
(३) तुमसर (भण्डारा)—मेसर्स नैनसुख कनीराम	अनाज और आढ़त का काम होता है।
(४) गोंदिया—मेसर्स नैनसुख कनीराम	अनाज और आढ़त का व्यापार होता है।
(५) राजनाँदगाँव—मेसर्स नैनसुख कनीराम	अनाज और आढ़त का व्यापार होता है।
(६) रायपुर—मेसर्स नैनसुख कनीराम गंज बाजार	अनाज और आढ़त का व्यापार होता है।

मेसर्स बंसीलाल अबीरचन्द रायबहादुर

इस फर्म का हेड ऑफिस कामठी में है। यह फर्म भारतवर्ष की मारवाड़ी फर्मों में अपना बहुत ऊँचा स्थान रखती है। इसके वर्तमान संचालक सेठ सर बिशेशरदासजी डागा हैं। इस फर्म पर बैंकिंग का व्यापार प्रधान रूप से होता है। इसकी बहुत सी शाखाएँ हैं। यहाँ की फर्म पर भी बैंकिंग हुंडी चिट्ठी एवं महाजनी लेन-देन का काम होता है। यहाँ इसका तार

का पता "Rai Bahadur" है। इसका विशेष परिचय चित्रों सहित इस ग्रन्थ के प्रथम भाग में राजपूताना विभाग के बीकानेर में दिया गया है।

मेसर्स महारामदास हजारीमल

आप लोगों का मूल निवासस्थान डीडवाना का है। आप अग्रवाल वैश्य जाति के सज्जन हैं। करीब ७० वर्ष से यह फर्म अपना व्यापार कर रही है। इसकी स्थापना सेठ महारामदासजी ने की। आपका ३०-३२ वर्ष पहले स्वर्गवास हो चुका है। आपके चार पुत्र थे। जिनके नाम क्रमशः बद्रीनारायणी, रघुनाथजी, हजारीमलजी एवं कन्हैयालालजी था। आप चारो का भी स्वर्गवास हो गया है। इस समय इस फर्म के मालिक सेठ हजारीमलजी के पुत्र सेठ किशनदास-जी एवं सेठ कन्हैयालालजी के पुत्र सेठ चतुर्भुजजी हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

कामठी—महारामदास हजारीमल } यहाँ गल्ले का व्यापार एवं आढ़त का काम होता है।

राजनांदगाँव—महारामदास हजारीमल } यहाँ भी उपरोक्त व्यापार होता है।

भाटापाड़ा—महारामदास हजारीमल } यहाँ भी गल्ले का व्यापार और कमीशन का काम होता है।

मेसर्स माणिकचंद प्रभुदान

यह फर्म करीब १२५ वर्षों से स्थापित है। इसके स्थापक सेठ माणिकचंदजी डीडवाना से यहाँ आये। आप अग्रवाल वैश्य समाज के सज्जन हैं। आपका स्वर्गवास हो गया। आपके पश्चात् इस फर्मका संचालन क्रमशः सेठ प्रभुदानजी, पूरनमलजी, भैरोंबक्षजी ने सम्हाला। सेठ भैरोंबक्ष के यहाँ सेठ मोतीलालजी दत्तक आये। वर्तमान में आप ही इसके मालिक हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

कामठी—माणिकचंद प्रभुदान } यहाँ चाँदी सोने का व्यापार होता है।

तुमसर—भैरोंबक्ष मोतीलाल } यहाँ आपका बीड़ी का कारखाना है।

नागपूर—माणिकचंद प्रभुदान } यहाँ आपकी एक जीनिंग फैक्टरी है।

स्व० सेठ हीरालालजी (नैनसुख कनीराम) कामठी

स्व० सेठ मोतीलालजी चाण्डक (बुलीदान मोतीलाल) काटोल

सेठ गौरीशङ्करजी (नैनसुख कनीराम)
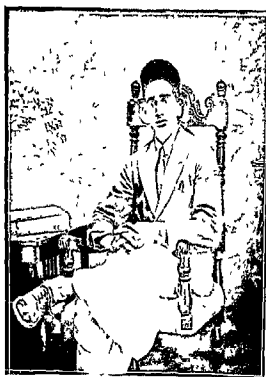
बाबू कस्तूरचन्दजी (कस्तूरचन्द किशनलाल)

मेसर्स रामप्रताप रामदेव

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ राधाकृष्णजी एवं सेठ गोपीकृष्णजी हैं। इस फर्म का हेड ऑफिस जालना (निजाम-स्टेट) में है। यहाँ यह फर्म अच्छी प्रतिष्ठित मानी जाती है। इसकी और भी कई स्थानों पर शाखाएँ हैं। जिनका विशेष वर्णन इसी भाग में हैदराबाद के पोर्शन में दिया गया है। यहाँ यह फर्म बैंकिंग एवं लेनदेन का व्यापार करती है।

काटोल

सी० पी० प्रांत के नागपुर जिले का अपने ही नाम की तहसील का यह हेड क्वार्टर है। यह जाम नदी के किनारे बसा हुआ है। नागपुर यहाँ से ३६ मील की दूरी पर स्थित है। नदी के दूसरे किनारे का बुधवारा नामक देहात इसीमें मिला लिया गया है। यहाँ के पुराने किले का भग्नावशेष और बहुत समय पहिले बने हुए पुराने मंदिर की कारीगरी के निशान अब भी शहर में मौजूद हैं। काटोल मे म्युनिसिपेलिटी नहीं है। मगर यहाँ की सफाई और सेनिटेशन के लिये टाउनफण्ड नामक एक फंड है उससे खर्च किया जाता है।

यह इस प्रांत का आवश्यकीय काटन का मार्केट है। यहाँ करीब ६ जीनिंग और ३ प्रेसिंग फैक्टरियाँ हैं। यहाँ की पैदावार में विशेष कर कपास ही है और यही यहाँ से बाहर जाता है। यहाँ के आम भी मशहूर हैं मगर वे इधर ही इधर खप जाते हैं। इसके अतिरिक्त मूँग, उड़द, जवरी भी यहाँ से बाहर जाती है।

व्यापारिक सुविधा के लिये आजकल यहाँ से मोटरें भी रन करती हैं। यह स्थान जी० आई० पी० रेल्वे की इटारसी नागपुर सेक्शन पर अपने ही नामके स्टेशन के पास बना हुआ है।

मेसर्स खुशालचन्द गोपालदास

इस फर्म का हेड आफिस जबलपुर में हैं। इसके वर्तमान मालिक सेठ जमनादासजी भालपाणी हैं। इसकी कई स्थानों पर ब्रांचेज तथा काटन जिनिंग और प्रेसिंग फैक्टरियाँ हैं। यहाँ भी इसकी जिनिंग फैक्टरी है तथा रूई का व्यापार होता है। इसका विशेष परिचय चित्रों सहित इसी ग्रन्थ के प्रथम भाग के बम्बई विभाग के पृष्ठ नं० ४० में दिया गया है।

मेसर्स बुलीदान मोतीलाल चाण्डक

यह फर्म यहाँ करीब १०० वर्षों से अपना व्यापार कर रही है। इसकी स्थापना सेठ खेतसीदासजी के द्वारा हुई। आपके पश्चात् इस फर्म का संचालन आपके पुत्र सेठ बुलीदानजी ने तथा आपके पश्चात् आपके दत्तक पुत्र सेठ मोतीलालजी ने सम्हाला। आप माहेश्वरी वैश्य जाति के चांडक गौत्रिय सज्जन थे। आपके समय में फर्म की बहुत उन्नति हुई। आप धार्मिक, मिलनसार, एवं व्यापार-चतुर पुरुष थे। आपका स्वर्गवास हो गया है।

वर्तमान में इस फर्म की मालिक सेठ मोतीलालजी की धर्मपत्नी हैं। तथा इसका संचालन किशनलालजी के पुत्र सेठ कस्तूरचन्दजी करते हैं। आप नवयुवक, मिलनसार एवं शिक्षित सज्जन हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

काटोल—मेसर्स बुलीदान मोतीलाल } यहाँ बैंकिंग तथा महाजनी लेन-देन और खेती का काम होता है।

गल्ले के व्यापारी

मेसर्स अजीतमल जुगलकिशोर
" आदमजी कासम
" गजलाल रामगोपाल
" चन्द्रभान जगन्नाथ
" मणिलाल बलदेव

कपड़े के व्यापारी

मेसर्स केशवलाल हिम्मतलाल
" जमनादास पन्नालाल

बैंकर्स एण्ड मरचेंट्स

मेसर्स चुन्नीलाल कन्हैयालाल
" चन्द्रभान जगन्नाथ
" बुलीदान मोतीलाल
" भवानीराम भिखूलाल

कॉटन मरचेंट्स

मेसर्स काशीराम हिम्मतराम
" खुशालचन्द गोपालदास
" गंगाधर गोपालदास
" गंगाराम नरसिंहदास
" सोनीराम जीवराज

वर्धा

वर्धा सी० पी० प्रांत के अपने ही नाम के जिले का हेड कार्टर है। यह इस जिले का प्रधान व्यापारिक स्थान है। कॉटन की तो यह बहुत बड़ी मण्डी है। यहाँ से सालाना बहुत सा कपास एवं रुई बाहर जाती है। कई जीनिंग और प्रेसिंग फैक्टरियों के होने से यहाँ के व्यापारियों को रुई लोढ़ने एवं उसकी गाँठें बँधवाने में बड़ी सहूलियत है।

यह स्थान जी० आई० पी० रेलवे की भूसावल-नागपुर ब्रांच का एक बड़ा स्टेशन है। यहाँ से एक और लाईन बलारशाह तक गई है।

यहाँ म्युनिसिपेलिटी है और उसका अच्छा प्रबन्ध है। रुई का सौदा सब काटन मार्केट में होता है। जहाँ मौसिम में रोजाना सैकड़ों गाड़ियाँ कपास की आती हैं।

यहाँ के व्यापारियों का परिचय इस प्रकार है—

बैंकर्स एण्ड कॉटन मर्चेंट्स

मेसर्स जगनीराम प्रेमसुख

इस फर्म के मालिकों का मूल निवासस्थान लक्ष्मणगढ़ (जयपुर) है। आप अग्रवाल जाति के बांसल गौत्रीय बजाज सज्जन हैं। वर्धा मे सेठ प्रेमसुखदासजी करीब ५५ वर्ष पूर्व आये और अपना कारबार शुरू किया। आप संवत् १९५६ में स्वर्गवासी हुए। आपके पश्चात आपके पुत्र सेठ रुक्मानन्दजी के हाथों से इस फर्म के कारबार की उन्नति हुई। आप कुछ समय पूर्व वर्द्धा म्यु० कमेटी के वाइस चेयरमैन रह चुके हैं। आपके पुत्र का नाम श्री सत्यनारायणजी है। इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

वर्द्धा—मेसर्स जगनीराम प्रेमसुख (T. A. Rukmanand) — यहाँ पर आपकी जीनिंग फेक्टरी है तथा रुई का व्यापार होता है।

पुलगाँव—मेसर्स प्रेमसुखदास रुक्मानन्द—यहाँ रुई का कारोवार होता है।

मेसर्स नरसिंहदास जानकीदास

इस फर्म का हेड आफिस हिंगनघाट है। बरार तथा सी० पी० के कई स्थानों में इस फर्म की जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरियाँ तथा शाखाएँ हैं। इसके व्यापार का विस्तृत परिचय इस ग्रन्थ के हिंगनघाट के परिचय में दिया गया है। वर्धा में भी इस फर्म की कॉटन जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी है।

मेसर्स वच्छराज जमनालाल बजाज

इस फर्म का हेड ऑफ़िस यहीं है। इसके वर्तमान मालिक त्यागमूर्ति सेठ जमनालालजी बजाज हैं। आपको भारतवर्ष में प्रायः सभी कोई जानते हैं। आपके विषय में विशेष क्या लिखा जाय। इस फर्म का विशेष परिचय इसी ग्रंथ के प्रथम भाग में बम्बई विभाग में दिया गया है। यहाँ यह फर्म रूई का व्यापार करती है। इसकी यहाँ जीनिंग प्रेसिंग फैक्टरी भी है।

मेसर्स वच्छराज एण्ड कम्पनी लिमिटेड

यह एक लिमिटेड कम्पनी है। इसका हेड आफ़िस करांची है। वहां यह फर्म अच्छा व्यापार करती है इसका विस्तृत परिचय इसी ग्रन्थ के इसी भाग में करांची विभाग में दिया गया है। यहाँ यह फर्म कॉटन का व्यापार करती है।

मेसर्स रेखचंद गोपालदास

इस फर्म के मालिक सेठ गोपालदासजी मोहता हैं। इसका हेड ऑफ़िस हिंगनघाट में मेसर्स भिखमचंद रेखचंद मोहता के नाम से है। यह फर्म बहुत प्रतिष्ठित फर्म मानी जाती है। इसकी एक कपड़े की मिल भी है। यहाँ इस फर्म पर कॉटन का व्यापार होता है। साथ ही यहाँ आपकी एक जीनिंग और एक प्रेसिंग फैक्टरी है।

मेसर्स शिवनारायण लद्धड़

इस फर्म के मालिक सेठ शिवनारायणजी रवीचंद (फलोदी) निवासी माहेश्वरी समाज के लद्धड़ सज्जन हैं। आप यहाँ ३० सालों से कारबार करते हैं। बहुत समय तक आप मेसर्स वच्छराज जमनालाल के साथ कामकाज करते रहे। इधर २ सालों से आप उपरोक्त नाम से अपना स्वतंत्र व्यवसाय करते हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

वर्द्धा—मेसर्स शिवनारायण लद्धड़ कच्छी बाजार	इस नाम से रूई का व्यापार तथा आढ़त का काम होता है।

हीरालाल रामगोपाल

इस दुकान का स्थापन संवत् १९२६ में वर्द्धा मे सेठ हीरालालजी गनेड़ीवाला के हाथों से हुआ। आपका हेड आफिस बम्बई है। संवत् १९६९ तक यह फर्म मेसर्स बच्छराज जमनालाल के साथ कामकाज करती रही। उसके पश्चात् अपनी पुरानी जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी बच्छराजजी सेठ की फर्म को देकर इस दुकान के मालिकों ने अपनी नई जीन प्रेस फेक्टरी खोली। इस दुकान पर श्री बंशीलालली गोरखरामजी संवत् १९३८ से मुनीमात करते हैं। यह फर्म यहाँ के व्यापारिक समाज में अच्छी प्रतिष्ठित समझी जाती है। इस फर्म का विस्तृत परिचय मालिकों के चित्रों सहित इस ग्रन्थ के प्रथम विभाग में पृष्ठ १०३ में बम्बई विभाग में दिया गया है। यहाँ का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

वर्द्धा—मेसर्स हीरालाल रामगोपाल T. A. Honour.	यहाँ इस फर्म की जीन प्रेस फेक्टरी है। तथा कॉटन और बैङ्किंग का कारबार होता है।

क्लाथ मरचेंट्स

मेसर्स जमनाधर पोद्दार

इस फर्म का हेड आफिस नागपुर है। इसके व्यवसाय का परिचय मालिकों के फोटो सहित इस ग्रन्थ के द्वितीय भाग में कलकत्ता-विभाग में दिया गया है। वर्द्धा में इस फर्म की टाटा संस लिमिटेड की मिलों का कपड़ा बेंचने की एजंसी है।

मेसर्स विसेसरलाल गोविंदराम

इस फर्म के मालिक लक्ष्मणगढ़ (शेखावाटी) निवासी अग्रवाल वैश्य समाज के सिंहल गौत्रीय सज्जन हैं। करीब ५० वर्ष पूर्व इस दुकान का स्थापन सेठ हरदत्तरायजी और सेठ विसेसरलालजी दोनों भ्राताओ ने किया। आरम्भ से ही आपके यहाँ कपड़े का व्यवसाय होता आ रहा है। सेठ हरदत्तरायजी के पुत्र सेठ गोविन्दरामजी भी फर्म के व्यापार-संचालन में भाग लेते हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

वर्द्धा—मेसर्स विसेसरलाल गोविन्दराम—यहाँ कपड़े का कारबार होता है।

वर्द्धा—मेसर्स विसेसरलाल गोविंदराम—इस नाम से गल्ले की तिजारत होती है।

मेसर्स बृजमोहन हरीराम

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ हरीरामजी मुरारका हैं। आपके पूर्वज सेठ रामनाथजी मुरारका ने करीब ४५-५० वर्ष पूर्व नवलगढ़ (सीकर स्टेट) से आकर कपड़े का कारबार शुरू किया। तथा आरम्भ से ही आप यही काम करते आ रहे हैं।

सेठ रामनाथजी के ४ पुत्र हुए। सेठ बृजमोहनजी, सेठ हरीरामजी, सेठ मिट्ठूलालजी तथा सेठ गुलजारीलालजी मुरारका। बृजमोहनजी सेठ करीब १७-१८ साल पूर्व स्वर्गवासी हो गये हैं। आपके नाम पर आपके छोटे भ्राता श्रीहरीरामजी दत्तक गये हैं।

श्रीयुत हरिरामजी मुरारका बड़े सुधारप्रिय सज्जन हैं। आप स्थानीय विधवाविवाह प्रचारक समिति के सभापति हैं। इसी प्रकार के सुधार के कार्यों में भाग लेते हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

वर्द्धा—मेसर्स बृजमोहन हरीराम—कपड़े का व्यापार होता है।

वर्द्धा—श्रीहरीराम मुरारका—कपड़े का व्यवसाय होता है।

जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरीज़

ईसाजी नत्थूभाई बोहरा जीनिंग फेक्टरी
गोपालदास रेखचंद जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी
गामडिया नवरोजजी जहाँगीरजी जीनिग प्रेसिंग फेक्टरी
जगनीराम प्रेमसुख जीनिंग फेक्टरी
नरसिंहदास जानकीदास जीनिंग प्रेसिग फेक्टरी
दामोदर नीलकंठ खरे जीनिंग फेक्टरी इलेक्ट्रिक वर्क शाप
बच्छराज एण्ड कं० १ जीनिंग २ प्रेसिंग फेक्टरी
रंगनाथ श्रीनिवास जीनिंग फेक्टरी
रामनाथ हरीबगस जीनिंग फेक्टरी
साधूराम तोलाराम जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी
हीरालाल रामगोपाल जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी

कपड़े के व्यापारी

जमनाधर पोद्दार
डी० जेठाभाई
पुरुषोत्तमदास गोकुलदास
पोपटलाल लादूराम
बिसेसरलाल गोविंदराम
बृजमोहन हरीराम
बालाराम चूड़ीवाला
मॉडमिल नागपुर क्लाथ शाप
रामनाथ हरीबगस
रामनाथ मिट्ठूलाल
सेवकराम हरीकिशन
हरीराम मुरारका

गल्ले के व्यापारी और आढ़तिया

झूथालाल गनेशनारायण
तुलसीदास लीलाधर
एन० केन्ना, विसेसरलाल गोविंदराम
मोतीलाल परमानंद
वल्लभदास फतेचंद
हाजीदाउद उसमान

किराना के व्यापारी

माणिकचंद प्रेमजी
वल्लभदास फतेचंद
हासम कासम
हाजीदाउद उसमान

जनरल मरचेंट्स

अब्दुल हुसेन ईसाजी
आदमजी नत्थूभाई
इस्माइलजी ईसाजी
काले एण्ड संस
कादरभाई रज्जबअली अकबरी शाप
कृष्ण फार्मेसी (केमिस्ट)
जेठमल द्वारकादास भय्यावंधु (मोटर, साइकल स्टोर्स)
महम्मद भाई बोहरा
लिबर्टी एण्ड कम्पनी (केमिस्ट)

बिनोले के व्यापारी

खेराज हीरजी
तुलसीदास लीलाधर

रूई के व्यापारी

जगतीराम प्रेमसुख
वच्छराज एण्ड कम्पनी
विसेसरलाल गोविंदराम
रंगनाथ श्रीनिवास
शिवनारायण लढ्ढ़
साधूराम तोलाराम
हेमराज रामकिशन
हीरालाल रामगोपाल

एजंसियाँ

गोसो कावूसी केसा (एजण्ट नरसिंहदास जानकीदास)
जापान कॉटन कम्पनी—एजण्ट वच्छराज कं०
पटेल ब्रदर्स, टोयोमेन का केशा, फारबस केम्बिल, कं० रायली ब्रदर्स — एजण्ट हीरालाल रामगोपाल
वालकट ब्रदर्स सब एजंसी

हिंगनघाट

हिंगनघाट सी० पी० प्रांत के वर्धा जिले का एक छोटा सा स्थान है। मगर यहाँ का व्यापार सी० पी० प्रांत में दूसरे नम्बर का माना जाता है। यह जी० आई० पी० रेल्वे की वर्धा-बलारशाह ब्रांच का स्टेशन है। इसकी बसावट साफ, चौड़ी, एवं तरतीब वार है। स्टेशन के पास ही बसा हुआ होने की वजह से व्यापार में बड़ी सुविधा है। एक छोटा शहर होते हुए भी यहाँ का व्यापार बड़ी तेजी पर है। यहाँ २ काटन मिलस हैं। एक बीकानेर निवासी मेसर्स बंसीलाल अबीरचन्द की और दूसरी भी बीकानेर निवासी सेठ मथुरादासजी मोहता की है। इन मिलो का कपड़ा सुन्दर, महीन और मजबूत होता है। सी० पी० प्रांत में इनका कपड़ा बहुत मशहूर है। इनके अतिरिक्त यहाँ २० फ्लोअर मिल, ८ जिनिंग फेक्टरियाँ, ६ प्रेसिंग फेक्टरियाँ एवं ४ कच्चे प्रेस हैं। तेल निकालने वाली भी यहाँ एक फैक्टरी है। मगर तेल बहुत कम निकलता है।

यहां की पैदावार में कपास, गेहूँ, ज्वार, तुवर, अलसी, तिल्ली, अरंडी, महुआ आदि हैं। इनमें बाहर जाने वाले माल में पहला नम्बर कपास का है दूसरा गेहूँ का एवं तीसरा नम्बर ज्वार, अलसी, तिल्ली का है। चौथे नम्बर में महुआ एवं अरंडी हैं। कपास की यहाँ २ फसलें होती हैं जो दो तरह की होती हैं। एक बणी का माल जो बड़ी मौसिम कहलाती है तथा दूसरा चांदा जड़ी जो दूसरी एवं छोटी मौसिम कहलाती है। कुल कपास करीब ४५००० हजार गांठ हो जाता है।

बाहर से आने वाले माल में जब कि यहाँ गल्ले की कमी हो जाती है गेहूँ एवं ज्वार आती है। चावल, मटर, चना, कपड़ा, सूत, जनरल मरकेण्टाईज, लोहा, एवं मिल जीन स्टोअर सप्लाइंग का सब प्रकार का मटेरियल बाहर से यहाँ आता है।

मिल-ऑनर्स

मेसर्स बंशीलाल अबीरचंद

इस फर्म के वर्तमान मालिक राय बहादुर सर बिशेसरदास जी डागा हैं। इस फर्म का हेड आफिस बीकानेर में है। भारतवर्ष की पुरानी और मजबूत फर्मों में से यह एक है। इसकी

स्व० रायसाहब रेखचंद जी मोहता (भीखमचंद रेखचंद) हिंगन घाट

सेठ गोपालदास जी मोहता (भीखमचंद रेखचंद) हिंगनघाट
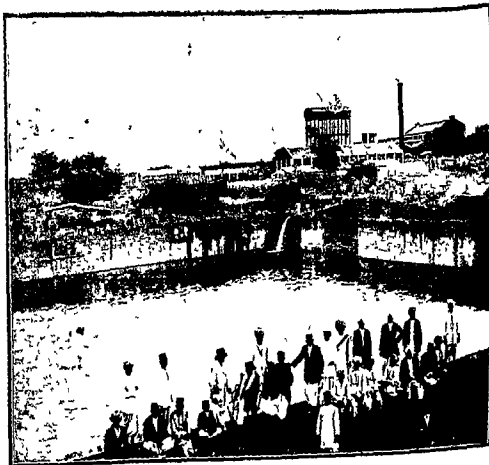
भारतवर्ष के भिन्न २ स्थानों पर कई ब्रांचेज हैं। यह फर्म विशेष कर बैंकिंग का व्यापार करती है। इसका विशेष परिचय चित्रों सहित इसी ग्रंथ के प्रथम भाग में बीकानेर शहर में दिया गया है। यहाँ इस फर्म का एक प्रायवेट कपड़े का मिल है। इस मिल का कपड़ा इस प्रांत में बड़ा प्रतिष्ठाप्राप्त समझा जाता है। इसके अतिरिक्त यहाँ कॉटन और बैंकिंग का व्यापार होता है। इस फर्म के अंडर में और भी छोटी शाखाएँ हैं।

मेसर्स भिखनचंद रेखचंद

इस फर्म के मालिकों का मूल निवासस्थान बीकानेर है। आप लोग माहेश्वरी वैश्य समाज के मोहता सज्जन हैं। इस फर्म की स्थापना करीब १०० वर्ष पूर्व सेठ भिखनचंदजी ने की थी। आपके २ पुत्र हुए, सेठ लखमीचंदजी तथा सेठ रेखचंदजी। सेठ भिखनचंदजी के समय में इस फर्म की साधारण उन्नति हुई। पश्चात् सन् १९०५ में सेठ लखमीचंदजी के पौत्र सेठ नरसिंह-दासजी अपना व्यापार अलग करने लगे। इस समय तक इस फर्म का संचालन-भार सेठ रेखचंदजी सम्हालते रहे। आप बड़े व्यापार-कुशल, मेधावी एवं सज्जन व्यक्ति थे। आपने अपनी व्यापार-चातुरी से फर्म की बहुत उन्नति की। आपने सन् १९०० में राय साहब रेखचंद मोहता स्पिनिंग एण्ड विविंग मिल्स की स्थापना की। आपका स्वर्गवास सन् १९०५ में होगया है। आपके २ पुत्र हुए, सेठ बुलाखीदासजी तथा सेठ नरसिंहदासजी। इनमें से सेठ नरसिंह-दासजी सेठ लखमीचंदजी के पुत्र सेठ प्रयागदासजी के यहाँ दत्तक चले गये। कुछ समय पश्चात् सेठ बुलाखीदासजी का स्वर्गवास होगया। आप के २ पुत्र हुए, सेठ मथुरादासजी और सेठ गोपालदासजी। आप दोनो सज्जन कई वर्षों तक अपना व्यापार ज्वाईंट रूप से करते रहे। अभी कुछ माह पूर्व आप लोग अलग २ होगये हैं।

उपरोक्त फर्म के वर्तमान मालिक सेठ गोपालदासजी हैं। आप नवयुवक एवं मिलनसार व्यक्ति हैं। हाल ही में आपने अकोले का दी हुकुमचंद डालमियां मिल खरीदा है। इस मिल में ४५८ लूम्स और २२५०० स्पेंडिल्स हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

हिंगनघाट—मेसर्स भिखनचंद रेखचंद मोहता
T. A. "Rekhachand"
— यहाँ फर्म का हेड आफिस है। तथा बैंकिंग-हुंडी, चिट्ठी और साहुकारी देन-लेन का व्यापार होता है। यहां आपकी एक जिनिंग और प्रेसिंग फैक्टरी भी है।

वर्धा—मेसर्स रेखचंद गोपालदास	यहां आपकी जीनिंग और प्रेसिंग फैक्टरी है।
गोंदिया—श्रीगणेश आईल एण्ड राईस मिल	यहाँ इस नाम से आपका कारखाना है। तथा बुलाखीदास गोपालदास के नाम से मिल के कपड़े की बिक्री का काम होता है।
अकोला—राय साहब रेखचंद गोपालदास स्पिनिंग विविंग मिल्स	यह आपका प्रायव्हेट कपड़े का मिल है। इसमें ४५८ लूम्स और २२५०० स्पेंडिल्स हैं।
नागपूर—मेसर्स बुलाखीदास गोपालदास इतवारी	यहाँ बैंकिंग, हुंडी-चिट्ठी साहुकारी लेनदेन तथा कपड़े का व्यापार होता है।

दी० आर० एस० रेखचंद मोहता मिल

इस मिल के वर्तमान मालिक सेठ मथुरादासजी मोहता हैं। पहले आपकी फर्म पर मेसर्स भिखनचंद रेखचंद मोहता नाम पड़ता था मगर करीब ५—६ माह से इसके मालिक लोग अलग अलग हो गये। तब ही से यह मिल सेठ साहिब के पार्ट में आयी। इस मिल का कपड़ा मजबूत, सुन्दर और महीन होता है। विशेषकर सी० पी० में इस मिल के कपड़े की खपत होती है। इस फर्म का विशेष परिचय इसी ग्रन्थ के प्रथम भाग में बीकानेर में दिया गया है।

कॉटन मरचेंट्स

मेसर्स खुशालचन्द गोपालदास

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ जमनादासजी मालपाणी हैं। आपका हेड आफिस जबलपुर में है। इस फर्म की और भी कई स्थानों पर शाखाएँ हैं। इसका विस्तृत परिचय चित्रों सहित इसी ग्रन्थ के प्रथम भाग में पेज नं० ४० में दिया गया है। यहाँ यह फर्म काटन का व्यापार करती है। इसका यहाँ जीन और प्रेस भी है।

मेसर्स जमनाधर पोद्दार

इस फर्म का हेड आफिस नागपुर है। इसके वर्तमान मालिक सेठ जीवराजजी, नागरमलजी चौथमलजी आदि हैं। इस फर्म की इसी नाम से एवंम् सोनीराम जीतमल के नाम से बहुत सी शाखाएँ हैं। सब शाखाओं पर टाटा संस लि० की मिलों के बने हुए कपड़े का व्यापार होता है। यह फर्म इन मिलों की सोल एजंट है। इस फर्म का विशेष परिचय चित्रों सहित हमारे इसी ग्रन्थ के दूसरे भाग में कलकत्ता विभाग में दिया गया है। यहाँ यह फर्म बैंकिंग, हुंडी-चिट्ठी और काटन का व्यापार करती है। आढ़त का काम भी इस फर्म पर होता है।

मेसर्स भीखमचन्द लखमीचन्द

आप लोगो का आदि निवास-स्थान बीकानेर है। आप लोग माहेश्वरी वैश्य समाज के मोहता सज्जन हैं। इस परिवार के सेठ भीखमचन्दजी ने स्वदेश से हिंगनघाट आ उपरोक्त फर्म की स्थापना लगभग १०० वर्ष पूर्व की थी। सन् १९९५ में रेखचन्दजी की फर्म ने अपना फर्म अलग खोल लिया। और फर्म का संचालन सेठ नरसिंहदासजी करने लगे। आपको सरकार ने रायबहादुर के सम्मानसूचक पद से विभूषित किया था। आपका स्वर्गवास हो गया है। वर्तमान मे आपके दत्तक पुत्र जानकीदासजी इस फर्म के मालिक हैं। आप अभी नाबालिग हैं।

इस फर्म में प्रधानतया बैंकर्स एण्ड लैण्ड लार्ड का काम होता है। इस फर्म की यहाँ एक जीनिंग तथा प्रेसिंग फैक्टरी है।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

मेसर्स भीखमचन्द लखमीचन्द हिंगनघाट जि० वर्धा C. P.	यहाँ फर्म का हेड ऑफिस है तथा बैंकिंग और लैण्ड लार्ड का काम होता है। यहाँ आप की जीनिंग और प्रेसिंग फैक्टरी है।
रा० ब० नरसिंहदास जानकीदास वर्धा	रुई का व्यापार तथा बैंकिंग का काम होता है और जीनिंग प्रेसिंग फैक्टरी है।
मेसर्स प्रयागदास नरसिंहदास पुलगाँव (वर्धा)	बैंकिंग, लैण्डलॉर्ड, जीनिंग प्रेसिंग फैक्टरी एवं कॉटन का व्यापार होता है।
मेसर्स प्रयागदास नरसिंहदास वरोरा (चाँदा)	बैंकिंग, लैण्डलार्ड, जीनिंग प्रेसिंग फैक्टरी एवं कॉटन और आइलसीड़ का व्यापार होता है।

मेसर्स रा०ब० नरसिंहदास जानकीदास चाँदा	बकिंग, आइलसीड़ एवं आढ़त का काम होता है।
मेसर्स प्रयागदास नरसिंहदास वर्धा जि० यवतमाल	बैंकिंग का काम और जीनिंग, प्रेसिंग, फेक्टरी है। तथा आईलसीड का व्यापार होता है।

क्लाथ मरचेण्ट्स

मेसर्स चुन्नीलाल चाँदमल

आप लोगों का आदि निवास-स्थान अजमेर है। आप लोग खण्डेलवाल जैन श्रावक सज्जन हैं। इस फर्म की स्थापना लगभग १०० वर्ष पूर्व सेठ छबीलचन्दजी ने देश से आकर की थी और हिंगनघाट में अपना व्यापार आरम्भ किया था। आपके बाद आपके पुत्र सेठ चुन्नीलालजी ने फर्म का संचालन किया। आपने अपनी फर्म पर कपड़े का व्यापार आरम्भ किया था। जो अभी तक यह फर्म कर रही है। लगभग सम्वत् १९३६ में आपका स्वर्गवास हुआ। आपके यहाँ सेठ चांदमलजी गोद आये। आपने अपने समय मे फर्म का संचालन किया। आपके यहां सेठ निहालचंदजी गोद आये और वर्तमान में आप ही फर्म का प्रधान रूप से संचालन करते हैं। इस फर्म की विशेष रूप से सेठ निहालचन्दजी के द्वारा ही अधिक उन्नति हुई। आपने ही फर्म के प्रधान व्यवसाय को बढ़ा कर महाजनी लेन-देन के काम को अधिक उत्तेजन दिया।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

मेसर्स चुन्नीलाल चाँदमल हिंगनघाट C. P.	यहाँ कपड़ा और महाजनी लेन-देन का काम होता है।

मेसर्स मोतीराम नंदराम

आप लोग आदि निवासी पर्वतसर (जोधपुर) के हैं। आप लोग माहेश्वरी वैश्य समाज के भांगड़िया सज्जन हैं। इस फर्म की स्थापना लगभग ६० वर्ष पूर्व सेठ मोतीरामजी ने हिंगनघाट में की थी। आरम्भ में इस फर्म पर कपड़े का काम किया गया था जो यह फर्म वर्तमान समय में भी प्रधान रूप से कर रही है।

इस फर्म के संस्थापक सेठ मोतीराम जी के बाद आपके पुत्र सेठ नंदरामजी ने फर्म का

काम संचालित किया और फर्म की उन्नति की। आपके सम्वत् १९४८ में स्वर्गस्थ होने के बाद आपके पुत्र सेठ रघुनाथदासजी ने फर्म का संचालन किया पर संवत् १९६१ में आप भी स्वर्ग-वासी हो गये। अतः फर्म का संचालन आपके ज्येष्ठ पुत्र सेठ रामगोपालजी के हाथ में आया। आपने फर्म को अच्छी अवस्था पर पहुँचाया।

वर्तमान में आप ही फर्म के प्रधान संचालक हैं और आपकी अनुमति एवं देख-रेख में आपके दोनो भ्राता सेठ मदनगोपालजी एवं सेठ रामचन्द्रजी फर्म के संचालन में योग देते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

मेसर्स मोतीराम नंदराम हिंगनघाट (वर्धा)—यहां कपड़े तथा सूत का काम होता है और साथ ही महाजनी लेन-देन तथा हुण्डी-चिट्ठी का काम भी यह फर्म करती है।

मोतीराम नंदराम बालाघाट C. P.—कपड़े और महाजनी लेन-देन का काम होत है तथा यहाँ आपकी जमीदारी भी है।

रघुनाथदास मदनगोपाल चिमूर (जि० चांदा०) C. P.—कपड़ा, सोना, चांदी, महाजनी लेन-देन का काम होता है।

रूपजी हीरालाल चांदा—यहां कपड़ा और सूत का व्यापार होता है।

मेसर्स रायमल मगनमल

आप लोग हरसोर (मारवाड़ जोधपुर) के आदि निवासी हैं। आप लोग ओसवाल समाज के पोचा मुथा सज्जन हैं। इस फर्म की स्थापना सम्वत् १९१६ के लगभग सेठ रायमलजी ने उपरोक्त नाम से कर कपड़े का व्यवसाय आरम्भ किया। आपका स्वर्गवास १९३६ मे हुआ। आपके बाद आपके पुत्र सेठ मगनमलजी ने फर्म का संचालन-भार ग्रहण किया। आपका स्वर्गवास सम्वत् १९७१ में हुआ। आपके बाद फर्म का कार्य सेठ चन्दनमलजी ने हाथ में लिया। आपने परिश्रम एवं व्यापार कौशल से फर्म को अच्छी उन्नत अवस्था पर पहुँचाया। फर्म की प्रधान उन्नति का श्रेय सेठ चंदनमलजी को ही है। आपकी व्यक्तिगत योग्यता ने फर्म को यहाँ की फर्मों में विशेष श्रेणी की अवस्था पर पहुँचा दिया है।

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ चंदनमलजी तथा आपके भाई धनराजजी तथा मगन-मलजी के पौत्र बाबू पोखराजजी और धनराजजी के पुत्र बाबू बंशीलालजी हैं।

इस फर्म का प्रधान संचालन सेठ चंदनमलजी तथा आपके भ्राता सेठ धनराजजी करते हैं और आपकी देख-रेख में बाबू पोखराजजी एवम् बंशीलालजी भी फर्म के व्यापार-संचालन मे योग देते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

मेसर्स रायमल मगनमल हिंगनघाट C. P.—यहाँ कपड़ा-महाजनी लेन देन तथा जमींदारी का काम होता है।

मेसर्स चन्दनमल धनराज धारावार (जि० यवतमाल)—कपड़ा और महाजनी लेन-देन का व्यापार होता है।

मेसर्स हीरालाल हजारीमल वणी (यवतमाल)—कपड़ा और महाजनी का व्यापार होता है।

मेसर्स धनराज तखतमल पोहना जि० वर्धा—यहाँ महाजनी का काम होता है।

मेसर्स पोखराज कोचर हिंगनघाट—कपड़े का काम होता है।

मेसर्स श्रीराम चतुर्भुज मोहता

इस फर्म के मालिक बीकानेर निवासी माहेश्वरी समाज के मोहता सज्जन हैं। करीब ८५ वर्ष पूर्व सेठ श्रीरामजी और चतुर्भुजजी मोहता ने इसे स्थापित किया, और आपही दोनों सज्जनों के हाथों से व्यवसाय वृद्धि हुई। आपके यहाँ सेठ प्रेम सुखदासजी दत्तक आये। आपने ३५ वर्षों तक फर्म का काम संचालित किया। आप बड़े दृढ़ सकल्पी, उदार एवं कष्टसहिष्णु थे। आपके यहाँ श्रीयुत बद्रीनारायणजी मोहता दत्तक आये। आपही वर्तमान में इस फर्म के मालिक हैं। आप सुधार प्रेमी एवं देशभक्त सज्जन हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

हिंगनघाट—मेसर्स श्रीराम चतुर्भुज मोहता—इस फर्म पर इजारदारी मालगुजारी व बैङ्किग का कारबार होता है।

मेसर्स रामकरन हनुमानबक्स शारदा

इस फर्म के मालिक बड़ी खाँटू (जोधपुर राज्य) के आदि निवासी हैं। आप लोग माहेश्वरी समाज के सारदा सज्जन हैं। इस फर्म की स्थापना सम्वत् १९३६ में सेठ शिवनारायणजी शारदा ने स्वदेश से आकर हिंगनघाट में मेसर्स शिवनारायण रामकरन के नाम से की और कपड़े का व्यापार आरम्भ किया। कुछ समय में ही फर्म को अच्छी सफलता मिली। सम्वत् १९७२ में इसके मालिक अलग २ हो गये। अतः सेठ शिवनारायणजी के भ्राता सेठ रामकरनजी के पुत्र सेठ रामदीनजी अपना व्यापार मेसर्स रामकरन रामदीन के नाम से करने लगे। और संवत् १९७५ में सेठ रामकरनजी के पुत्र सेठ हनुमानबक्सजी ने अपना स्वतन्त्र काम मेसर्स रामकरन हनुमानबक्स के नाम से खोला।

सेठ सिधकरणजी गोलेछा (अमरचंद अगरचंद) चांदा

बाबू चैनकरणजी गोलेछा (अमरचन्द अगरचन्द) चांदा

बाबू बद्रीनारायणजी मोहता (श्रीराम चतुर्भुज) हिंगनघाट

सेठ रामगोपालजी भांगडया (मोतीराम नन्दराम) हिंगनघाट

सेठ निहालचन्दजी डोसी (चुन्नीलाल चांदमल) हिंगनघाट

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ हनुमानबक्सजी शारदा तथा आपके पुत्र बाबू अमरचंदजी, बाबू रतनलाल तथा बाबू घनश्यामजी हैं। फर्म का प्रधान संचालन सेठ हनुमानबक्सजी शारदा करते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

हिंगनघाट—मेसर्स रामकरन हनुमानबक्स—यहाँ कपड़ा, सूत, आढ़त और लेन-देन का व्यापार होता है।

व्यापारियों के पते

कॉटन मरचेंट्स—

मेसर्स जमनाधन पोद्दार
,, बंशीलाल अबीरचंद रा० ब०
,, भिखमचन्द लखमीचन्द
,, भिखमचन्द रेखचन्द
दी रेखचन्द मोहता मिल
मेसर्स साधुराम तोलाराम
,, हरिचन्द बागमल

बैंकर्स—

मेसर्स चुन्नीलाल चाँदमल
,, जमनाधर पोद्दार
,, फूलचंद सुगनमल
,, बंसीलाल अबीरचंद
,, मनसाराम गनेशदास
,, रेखचंद मोहता
,, रायमल मगनमल
,, लालचंद हीरालाल
,, हरिचंद अमोलकचंद
,, हरिचन्द बागमल

कपड़े के व्यापारी—

मेसर्स मोतीराम नन्दराम
मेसर्स रायमल मगनमल
,, रामकरन हनुमानबक्ष
,, रामदयाल रामचन्द्र
,, रेखचन्द कालूराम
,, शिवजीराम राधाकृष्ण
,, सुजानसिंह मोहता

गल्ले के व्यापारी—

मेसर्स जयराम वीरजी
,, लक्ष्मीनारायण मनसुखदास
,, सुजानसिंह मोहता

चाँदी-सोना के व्यापारी—

मेसर्स आलमचन्द शोभाचन्द
,, मगनमल गनेशमल
,, हेमराज जवरीमल

किराना के व्यापारी—

मेसर्स महम्मद युसब
,, भगवान करमसी
,, हस्तीमल कनकमल

जनरल मरचेंट्स—

मेसर्स जीया भाई हाजी करीम
,, तैय्यब अली आदमजी
,, रहमतुल्ला हलाना

चाँदा

यह स्थान निजाम स्टेट और सी० पी० प्रान्त के बीच में स्थित है। इसका इतिहास पुराना है। पहले इस स्थान पर गोड़ लोगों का अधिकार था। कई वर्षों तक इनके वंशज इसके आस-पास के स्थान पर राज्य करते रहे। चाँदा उस समय उनकी राजधानी थी। आज कल भी उन लोगों की बनाई हुई कई प्राचीन वस्तुएँ मौजूद हैं। उनमें से विशेष प्रसिद्ध यहाँ का किला एवं शहर के चारों ओर बनी हुई चहारदिवारी हैं।

यहाँ होने वाले व्यापार में कपास, कोयला आदि प्रधान हैं। यहाँ की पैदावर अरंडी, अलसी, तिल्ली, कपास, ज्वारी, चाँवल, गेहूँ और घी है। गेहूँ यहाँ कम पैदा होता है। इसके अतिरिक्त यहाँ कोयले की खानें भी हैं जिनसे कोयला निकाला जाता है तथा पीली मिट्टी भी यहाँ बहुत होती है। यह मिट्टी रँगने एवं दवाइयों के काम में आती है।

बाहर से आने वाले माल में किराना, कपड़ा, चाँदी, सोना, बिल्डिंग मटेरियल्स आदि हैं।

यह स्थान जी० आई० पी० रेल्वे की वर्धा एवं बलारशाह वाली लाइन का स्टेशन है। यहाँ से बी० एन० आर० की छोटी लाईन नागपुर तक गई है।

यहाँ के व्यापारियों का परिचय इस प्रकार है—

मेसर्स अमरचन्द अगरचन्द

इस फर्म के मालिक ओसवाल वैश्य समाज के बीकानेर के निवासी सज्जन हैं। यह फर्म यहाँ करीब १०० वर्षों से व्यापार कर रही है। इसकी स्थापना सेठ अमरचन्दजी के द्वारा हुई। आपको यहाँ के गौड़ राजा नागपुर से यहाँ लाये थे। आपके पश्चात् फर्म के संचालन का भार आपके पुत्र सेठ अमरचन्दजी ने किया। आपके समय में इस फर्म की बहुत उन्नति हुई।

वर्तमान मे इस फर्म के मालिक अमरचन्दजी के पुत्र सेठ सिद्धकरणजी हैं। फर्म का संचालन आपके पुत्र सेठ चेतकरनजी करते हैं। आप नवयुवक हैं। यहाँ की प्रायः सभी सार्वजनिक संस्थाओं में आपका हाथ है।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

चाँदा—मेसर्स अगरचन्द अमरचन्द — यहाँ बैंकिंग, महाजनी देन-लेन, रुई, गल्ला, सोना चाँदी आदि का व्यापार तथा आढ़त का काम होता है।

मेसर्स राय ब० नरसिंहदास जानकीदास

इस फर्म का विस्तृत परिचय इसी विभाग के पृष्ठ ३० पर दिया गया है। यहाँ इस फर्म पर बैङ्किंग, ऑइलसीड्स और आढ़त का काम होता है।

कपड़े के व्यापारी—

मेसर्स फतेचन्द किशनचन्द
,, हीरालाल कृष्णलाल
,, भीमराज धनराज
,, रूपजी हीरालाल
,, जेठमल धनराज
,, इन्दुचन्द ताराचन्द

गल्ले के व्यापारी—

मेसर्स उत्तमचन्द वर्धमान
,, नाना मलाना वाणी
,, सुगनचन्द रतनचन्द

चाँदी-सोना के व्यापारी—

मेसर्स अमरचन्द अगरचन्द
,, गम्भीरचन्द सुजानमल

किराना के व्यापारी—

मेसर्स हाजी दादाअली

जबलपूर

यह स्थान जी० आई० पी०, ई० आइ० आर० और बी० एन० आर तीनो रेलवे का जंकशन है। मध्य प्रांत के बड़े २ शहरों में इसकी गिनती है। ई० आइ० आर० की लाईन अलाहाबाद से यहाँ तक आती है। दूसरी जी० आई० पी० यहाँ से शुरू होकर इटारसी तक गई है। वहाँ वह मेन लाईन में जा मिलती है। तथा बी० एन० आर० की छोटी लाईन यहाँ से बालाघाट होती हुई गोंदिया एवं नैनपुर होती हुई छिंदवाड़ा तक गई है। यहाँ से सागर, दमोह को मोटरें भी जाती हैं। कभी २ सिवनी तक भी यहाँ से मोटर का प्रबंध हो जाता है। तीनों रेल्वे का जंकशन होने से यहाँ रेलवे में काम करने वाले बहुत से व्यक्ति रहते हैं। रेल्वे से एक मील के करीब में बस्ती है। स्टेशन के पास ही यहाँ के प्रसिद्ध व्यापारी सेठ गोकुलदासजी की एक सुन्दर धर्मशाला बनी हुई है।

यहाँ का प्रधान व्यापार बिड़ी का है। इसके पश्चात् सूत एवं साड़ियों के व्यापार का नम्बर है। आस पास के देहाती लोग यहाँ से सूत ले जाते हैं तथा साड़ियाँ बुन कर लाते हैं। यही साड़ियाँ यहाँ के व्यापारियों के द्वारा बाहर जाती हैं। यहाँ की साड़ियाँ सुन्दर और मजबूत होती हैं। इसके सिवा बिड़ी के लिये तो यह शहर भारतवर्ष में मशहूर हो गया है। जिसमे खास कर "शेर छाप" का नाम तो बहुत ही मशहूर है। इसका तथा यहाँ के बीड़ी के व्यापारियों का विशेष जिक्र आगे किया जायगा। इसके अलावा यहाँ मेसर्स मोजीलाल एण्ड संस नामक फर्म ने हाथ के काम में याने रबर मोहर, ब्रास वर्क्स वगैरह की दस्तकारी में अच्छा काम किया है।

कल-कारखानों में यहाँ एक राजा गोकुलदास काटन मिल नामक कपड़े का मिल है। यह आजकल गुजराती सज्जन के हाथ में है तथा एक लकड़ी का मिल जिसका नाम राजा गोकुलदास सा मिल है नया खुला है। यह मिल भारत के लकड़ी के मिलों में अपना ऊँचा स्थान रखता है। इसके अतिरिक्त २ पाटेरी वर्क्स हैं। जहाँ मिट्टी के सुन्दर बर्तन बनाए जाते हैं। यहाँ एक छोटा, तेल का मिल भी है।

यहाँ के प्रधान व्यापारिक स्थान जवाहरगंज, जिसे पहले लार्डगंज कहते थे, गोविंदगंज,

जिसे पहले मिलौनीगंज कहते थे, सदर, निवारगंज, कोतवाली बाजार आदि हैं। जवाहरगंज में विशेषकर बैंकिंग, कपड़ा और बिड़ी का व्यापार होता है। गोविन्दगंज में बड़े २ जमींदारों की हवेलियाँ है तथा गल्ले का साधारण व्यापार होता है। कोतवाली बाजार में जनरल मरचेण्टों की दुकाने हैं। इसके अतिरिक्त सोनाहाई, कमानियाँ आदि छोटे २ बहुत से बाजार हैं जहाँ सभी प्रकार का व्यापार होता है। सोनाहाई में विशेषकर चाँदी सोने का व्यापार होता है। सदर छावनी को कहते हैं। यहाँ यूरोपियन ढंग की दूकानें विशेष हैं।

म्युनिसिपैलिटी वगैरह की यहाँ अच्छी व्यवस्था है। शहर में सफाई मालूम होती है। सेनिटेशन एवं सुन्दरता के लिहाज से यह शहर अच्छा है। जहाँ चारो ओर से रास्ते मिलते हैं वहाँ फव्वारे वगैरह लगे हुए हैं। इससे शहर की सुन्दरता बढ़ गई है।

यहाँ के व्यापारियों का परिचय इस प्रकार है—

बैंकर्स

मेसर्स राजा गोकुलदास, जीवनदास, गोविन्ददास

इस फर्म के वर्तमान मालिक देशभक्त बाबू गोविन्ददासजी मालपाणी हैं। आप इस समय देश के लिये जेल गये हुए हैं। यह फर्म यहाँ की बहुत प्रतिष्ठित एवं पुरानी फर्म है। इसकी बहुत सी शाखाएँ हैं। यह फर्म जमींदारी का भी बहुत बड़ा काम करती है। इसका हेड आफिस यहीं है। यहाँ बैंकिंग एवं जमीदारी का काम प्रधान रूप से होता है। इसके अतिरिक्त आपका यहाँ एक "राजा गोकुलदास सा मिल" नामक एक लकड़ी का मिल है। भारतवर्ष के बड़े २ लकड़ी के मिलों में इसका स्थान है। इस फर्म का विशेष परिचय चित्रों सहित देखने वाले सज्जनों को इसी ग्रंथ के प्रथम भाग में बम्बई विभाग मे देखना चाहिये।

मेसर्स चन्द्रभान वंसीलाल रा० ब०

इस फर्म का हेड आफिस कामठी है। इसके वर्तमान प्रधान मालिक सर विश्वेश्वरदासजी डागा हैं। यह फर्म सी० पी० प्रांत की मशहूर फर्मों में से है। इसकी और भी कई शाखाएँ हैं। सब पर प्रायः बैंकिंग व्यापार होता है। इसका विस्तृत परिचय चित्रों सहित इसी ग्रन्थ के प्रथम भाग में राजपूताना विभाग के पृष्ठ ११४ मे दिया गया है। यहाँ यह फर्म बैंकिंग का व्यापार करती है। इसकी स्थायी सम्पत्ति भी यहाँ है। इसका पता कमानियाँ जबलपुर है।

सवाई सिंघई भवानीप्रसाद चेतूलाल

आप लोग बुन्देलखण्ड (पन्ना) राज्य के रहनेवाले हैं। वहाँ पर आपके पूर्वज उच्च पदाधिकारी थे, अतः यह वंश पोद्दार के नाम से विख्यात है। इस वंश में माइन परमसुख सिंघई प्रसिद्ध हो गये हैं आप राजा की अप्रसन्नता के कारण जबलपुर आये और साथ में हीरे की प्रतिमा लाये थे जो यहाँ के हनुमानलाल के मंदिर में स्थापित की थी।

सब से प्रथम माइन परमसुख सिंघई के नाम से यहाँ सभी प्रकार का कारबार होता था। इस प्रकार आरम्भ होकर वर्तमान उपरोक्त नाम से स० सि० भवानीप्रसाद चेतूलाल नाम पड़ा। यह समय ७५ वर्ष पूर्व का है जब चेतूलालजी ने अपना काम स्वतन्त्र चलाया। आपने महाजनी बैंकिंग और जमींदारी का काम अच्छी तरक्की से चलाया। आपके बाद आपके सुपुत्र सेठ भोलानाथजी ने काम सम्हाला और अच्छी प्रतिष्ठा प्राप्त की। आपने अपने प्रथम पुत्र स्व० कस्तूरचंदजी के नाम से कस्तूरचन्द हितकारिणी हाईस्कूल की स्थापना कराई तथा अपने पूर्वजों के मन्दिर हनुमानताल में सोने की पच्चीकारी का देखने योग्य कार्य्य कराया। उसीमें अपने पूर्वजों की लाई हुई हीरे की प्रतिमा भी आपने विराजमान की। आपका स्वर्गवास ३०-४-१९१८ में हुआ। उस समय आपके एकमात्र पुत्र स० सि० रतनचन्दजी की अवस्था ९ वर्ष की थी। अतः आपकी शिक्षा-दीक्षा तथा फर्म की सारी स्टेट का प्रबन्ध संचालन आपकी माता श्री स० सिं० राजरानी के हाथ में आया।

वर्तमान में स० सिं० रतनचन्दजी की अवस्था २० वर्ष की है। अतः स्टेट का भार आप १ वर्ष बाद ग्रहण करेंगे। आप बड़े होनहार हैं अतः अब भी स्वयं सब काम में अच्छी दिलचस्पी रखते हैं और स्वयं सब काम देखने लग गये हैं। इस काम में आपके पर्सनल मैनेजर सिंघई मौजीलालजी नरसिंहपुर निवासी बड़े अनुभवी हैं और आपको संचालन कार्य्य में अच्छा सहयोग देते हैं।

वर्तमान में इस फर्म के सरकारी तौर पर गार्डियन राय० स० भय्यालालजी तिवारी जबलपुर हैं।

आपकी जमीदारी १३ गाँवों में है जो जबलपुर जिले में हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

मेसर्स स० सिं० भवानीप्रसाद चेतूलाल, लार्डगंज जबलपुर।	यहाँ बैंकिंग और जमीदारी का बहुत बड़ा काम होता है।

सवाई सिंघई मोहनलाल पचौरीलाल

आप लोग जबलपुर निवासी दिगम्बर जैन धर्मावलम्बी सज्जन हैं। इस फर्म की स्थापना लगभग २०० वर्ष पूर्व जबलपुर में सेठ मोहनलालजी तथा आपके भाई सेठ पचौरीलालजी ने की थी। इस फर्म पर आरम्भ में कपड़े का व्यापार होता था पर जैसे २ उन्नति होती गई वैसे २ महाजनी, मालगुजारी, मकान तथा बंगलों का काम होता गया। इस फर्म की उन्नति यों तो क्रमशः आरम्भ से ही हुई थी परन्तु सेठ गरीबदासजी के समय में फर्म ने अच्छी उन्नति की। आपने ही फर्म की स्थायी सम्पत्ति बढ़ाई।

इस समय इस फर्म के मालिक सेठ गरीबदासजी तथा आपके पुत्र सेठ गुलजारीलालजी हैं। सेठ गुलजारीलालजी के पुत्र बाबू मुन्नालालजी, बाबू पद्मचन्दजी तथा बाबू रामचन्दजी और बाबू मुन्नालालजी के पुत्र बाबू द्वारकादासजी हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

मेसर्स स० सिं० मोहनलाल पचौरीलाल लार्डगंज जबलपुर	यहाँ बैंकिंग और मालगुजारी का बहुत बड़ा काम होता है।

मेसर्स हंसराज वख्तावरचन्द

आप लोग फलोदी (जोधपुर) के रहनेवाले ओसवाल समाज के गोलेछा सज्जन हैं। इस फर्म की स्थापना लगभग ६८ वर्ष पूर्व सेठ हंसराजजी ने की थी और उस समय महाजनी लेन-देन का काम आप ने आरम्भ किया था जो आज भी यह फर्म पूर्ववत् करती जा रही है। इसके अतिरिक्त वर्तमान में इस फर्म के कितने ही मकानात और बँगले हैं जिनके किराये का काम भी होता है।

इस फर्म की उन्नति प्रधानतया सेठ हंसराजजी के हाथों से हुई। आपने ही फर्म के काम को आरम्भ किया उसे उच्च अवस्था पर पहुँचा दिया। आपका स्वर्गवास संवत् १९५९ में हुआ। आपके बाद आपके पुत्र सेठ प्रतापचन्दजी तथा सेठ धनराजजी ने फर्म का संचालन-भार ग्रहण किया और तब से बहुत समय तक फर्म का संचालन करते रहे। सेठ धनराजजी का स्वर्गवास सम्वत् १९८२ में हुआ। तब से फर्म का प्रधान संचालन सेठ प्रतापचन्दजी तथा रतनचन्दजी करते हैं।

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ प्रतापचन्दजी तथा स्व० धनराजजी के पुत्र बाबू रतनचन्दजी तथा बाबू लालचन्दजी हैं। आप लोग सभी सभ्य एवं सरल महानुभाव हैं।

इसका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

मेसर्स हंसराज बख्तावरचन्द सदरबाजार जबलपुर	यहाँ महाजनी लेनदेन, मकान तथा बँगले के किराये का काम होता है।

चाँदी-सोने के व्यापारी

मेसर्स चौथमल चांदमल (भूरा)

आप लोग (बीकानेर) देशनोक के आदि निवासी हैं। पर लगभग १०० वर्ष पूर्व से यह परिवार जबलपुर में ही रहता है। सेठ परशुरामजी सबसे प्रथम देश से यहीं आये और इस प्रकार यह परिवार यहाँ बस गया। सेठ परशुरामजी के दूसरे भाई लोग सीवनी चले गये अतः जबलपुर में केवल आप ही ठहरे रहे। आपके स्वर्गवासी हो जाने के बाद आपके पुत्र सेठ चोथमलजी ने अपना स्वतन्त्र कार्य किया और आपके बाद आपके पुत्र चांदमलजी ने ६० वर्ष पूर्व इस फर्म की स्थापना उपरोक्त नाम से की। प्रथम आपने अपनी फर्म पर सोने, चांदी के व्यापार का काम आरम्भ किया। आप बड़े अनुभवी एवं व्यापारदक्ष थे अतः आपसे फर्म के काम को अच्छा उत्तेजन मिला। जिस प्रकार फर्म उन्नति करती गई उसी प्रकार अन्य प्रकार के व्यवसाय की वृद्धि की गई। आप बड़े प्रतापी महापुरुष थे आपने फर्म को अच्छी अवस्था पर पहुँचा दिया। आपका स्वर्गवास ७० वर्ष की आयु में सम्वत १९७९ को हुआ। आपके बाद फर्म का सारा कारबार आपके पुत्र बाबू राजमलजी, ऋषभदासजी, बाबू मोतीलालजी और बा० हीरालालजी ने संचालन किया जो आज भी कर रहे हैं।

वर्तमान में फर्म के मालिक सेठ राजमलजी, सेठ रिखभदासजी, बा० मोतीलालजी और बा० हीरालालजी भूरा है।

बा० मोतीलालजी सन् १९२१ से स्थानीय म्यूनिसिपैलिटी के सदस्य हैं तथा स्थानीय और भी सार्वजनिक संस्थाओं के आप सदस्य एवं संचालक हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

मेसर्स चोथमल चाँदमल सोना हाई बाजार जबलपुर T. A. Bhura	सोना, चाँदी का थोक तथा फुटकर तथा चाँदी, सोने के सभी प्रकार के डिजाइन के जेवरात का व्यापार होता है महाजनी लेन-देन तथा गाँठ गिरों के काम भी यह फर्म करती है साथ ही स्थायी सम्पत्ति का भी काम होता है। तथा जवाहिरात और गल्ले का काम भी होता है।

सेठ प्रतापचन्दजी गोलेछा (हंसराज बख्तावरचन्द)
जबलपुर

बाबू रतनमलजी गोलेछा (हंसराज बख्तावरचन्द)
जबलपुर

व्यापारी

न्द्र जवाहरमल

ान बिसाऊ (जयपुर-स्टेट) का है। आप लोग
;० वर्ष पूर्व इसका स्थापन सेठ रामचंद्रजी तथा
फर्म के स्थापन के कुछ समय पश्चात् सेठ साहब के
था ब्रजलालजी था भी आ गये। आप लोगों
। शुरू से ही यह फर्म कपड़े का व्यापार करती
यहाँ यह फर्म पहली ही मानी जाती है।
के पुत्र रामकुमारजी, सेठ बृजलालजी के पुत्र
ात्र रतनलालजी हैं। इसका संचालन सेठ राम-
लालजी अभी पढ़ते हैं।
शाला बनी हुई है।

यहाँ कपड़े के थोक माल का व्यापार
होता है।

—

ा किशनदयाल

सजी पोद्दार हैं। आप अभी नाबालिक हैं।
े कई स्थानों पर शाखाएं हैं। प्रायः सभी
व्यापार होता है। यहां भी इस फर्म पर
ा जवाहरगंज जबलपुर है। इसकी विशेष
ई विभाग में पेज नं० ४६ में चेनीराम जेसराज

—

ाद फूलचन्द

। इसके पूर्व इसका नाम नथमल शारदाप्रसाद
म काज होता है सेठ नथमलजी इस समय काम

लिक हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

जबलपुर—मेसर्स शारदाप्रसाद फूलचन्द सदरबाजार T. A. Phulchand	यहाँ कपड़ा एवं जनरल मरकेंटाईज का व्यापार होता है।

सूत के व्यापारी

मेसर्स भूरामल रामदयाल

आप लोग चुरु के रहने वाले अग्रवाल वैश्य समाज के सज्जन हैं। लगभग ६० वर्ष पूर्व जबलपुर में सेठ भूरामलजी ने उपरोक्त नाम से फर्म खोल सूत का व्यापार आरम्भ किया था। आपने अपनी फर्म का संचालन अच्छे ढंग से किया पर फर्म की विशेष उन्नति आपके पुत्र सेठ रामदयालजी के हाथों हुई।

वर्तमान में इस फर्म का संचालन सेठ रामदयालजी के पुत्र सेठ तुलसीदासजी और सेठ राधाकृष्णजी करते हैं।

वर्तमान में यह फर्म प्रधानरूप से सूत का व्यवसाय करती है और साथ ही महाजनी लेन-देन और मकानात का काम भी होता है। अहमदाबाद के पास पेटलाद के दोनों कारखाने की, जहाँ रंगाई का काम होता है, यह फर्म एजेण्ट है।

मेसर्स भूरामल रामदयाल की धार्मिक कार्यों की ओर भी अच्छा अनुराग है और यही कारण है कि इसके मालिकों की ओर से जबलपुर के लार्डगंज में एक धर्मशाला बनी हुई है। नर्मदाजी के तीर खारीघाट पर भी इसकी ओर से धर्मशाला बनी हुई है।

सेठ भूरामलजी का देहावसान सम्वत् १९७४ में तथा सेठ रामदयालजी का सम्वत् १९६८ में हुआ।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

मेसर्स भूरामल रामदयाल, लार्डगंज जबलपुर	यहाँ सूत का काम होता है।
मेसर्स भूरामल रामदयाल नयाबाजार दमोह C. P.	यहाँ कपड़ा, किराना और गल्ला का काम होता है।

फुटकर व्यापारी

मेसर्स रामप्रसाद गंगाप्रसाद रावत

आप लोग आदि निवासी रियासत बिजावर (बुन्देल खण्ड) के रहने वाले हैं पर लगभग ८० वर्ष से आप लोग जबलपुर में रहते हैं। इस फर्म की स्थापना लगभग ८० वर्ष पूर्व सेठ रामप्रसादजी रावत ने उपरोक्त नाम से आरम्भ कर किराना, पीतल के बर्तन तथा कपड़े का काम आरम्भ किया। पर ज्यों २ फर्म ने उन्नति की त्यों २ व्यवसाय की वृद्धि की गई। और कुछ ही समय में आपने फर्म को अच्छी उन्नत अवस्था पर पहुँचाया। आपका स्वर्गवास सम्वत् १९४६ के लगभग हुआ था। आपके बाद आपके पुत्र बाबू हजारीलालजी ने फर्म के कार्य को संचालित किया और उसी प्रकार अपनी फर्म को प्रतिष्ठित बनाये चले जा रहे हैं।

इस फर्म के वर्तमान मालिक बाबू हजारीलालजी बाबू गोविन्ददासजी तथा बाबू शारदाप्रसादजी हैं। इस फर्म का प्रधान संचालन बाबू हजारीलालजी करते हैं और आपकी देख-रेख में आपके पुत्र बाबू गोबिन्ददासजी फर्म के काम काज का संचालन करते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

मेसर्स रामप्रसाद गंगाप्रसाद रावत मिलौनी गंज जबलपुर	किराना तथा गल्ले का काम होता है तथा जमीदारी का काम भी होता है।

मेसर्स मोहनलाल हरगोविन्ददास

आप लोग अहमदाबाद निवासी वैश्य समाज के सज्जन हैं। इस फर्म की स्थापना लगभग ३० वर्ष पूर्व सेठ मोहनलालजी तथा आपके भाई सेठ हरगोविन्ददासजी ने जबलपुर में की और बीड़ी का उद्योग आरम्भ किया। इस लाईन में फर्म ने बहुत अच्छी सफलता प्राप्त की। आरम्भ में आपने कण्ट्राक्ट पर कार्य्य कराया और स्वयं सामान देकर बीड़ी बनवाया करते। इस प्रकार बीड़ी तैयार कराकर बाहर दूर २ के स्थानों में एजेण्ट भेज कर आपने बीड़ी की खपत का संगठित उद्योग किया फलतः थोड़े समय में ही व्यापार चल निकला और आज देश के सभी स्थानो में इनके माल की अच्छी खपत होती है। इस फर्म का रजिस्टर्ड ट्रेड मार्क "शेर छाप" के नाम से सुविख्यात है।

इसकी उन्नति दोनों ही भाइयों की औद्योगिक परदर्शिता का पारिणाम है। सेठ हरगोविन्द-दास का स्वर्गवास लगभग ८ वर्ष पूर्व हो गया। आपके बाद सेठ मोहनलालजी काम संचालित करते रहे पर दो वर्ष बाद उनका भी स्वर्गवास हो गया। दोनो के निःसन्तान होने के कारण

बा० परमानन्दजी दत्तक लिये गये हैं। इनकी आयु अभी ९ वर्ष के लगभग है अतः फर्म का संचालन सेठानियो की देख-रेख में होता है।

इसका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

जबलपुर—मेसर्स मोहनलाल हरगोविन्ददास जवाहर गंज T. A. Biriwala	यहाँ बीड़ी का बहुत बड़ा व्यापार होता है।

सेवाई मौजीलाल एण्ड सन्स

आपलोग नरसिंहपुर निवासी दिगम्बर जैन समाज के सज्जन हैं। सेठ मौजीलालजी जी बड़े ही अनुभवी महानुभाव हैं। भारतव्यापी भ्रमण करने के बाद आज से लगभग ८ वर्ष पूर्व आपने पुस्तको का काम आरम्भ किया पर उसमें यथेच्छ सफलता न मिलने के कारण राष्ट्रीय तस्वीरों का काम आरम्भ किया और उसके बाद आपने अपने बड़े पुत्र अमृत-लालजी को मैट्रिक के बाद बम्बई के उम्बर कालेज में पास कराकर व्यापारिक क्षेत्र में लगाया। फलतः सुशिक्षित नवयुवक और अनुभवी संचालन दोनों के पारस्परिक सहयोग से अच्छा काम हुआ।

आपने सबसे प्रथम रबर स्टैम्प का काम किया और कुछ ही समय बाद इनग्रेविंग का काम आरम्भ कर सीलिंग बक्स साईन बोर्ड और स्टेम्प का काम प्रारम्भ और साथ ही चपरास आदि का काम किया गया और अन्त मे लेटर्स ढालने, कारट तैयार करने, मोल्ड तयार करने आदि का काम होने लगा। आपके यहाँ प्रेस आदि का काम भी होता है।

वर्तमान में इसका संचालन बाबू मौजीरामजी और आपके पुत्र बाबू अमृतलालजी करते हैं। आपके भाई बाबू गरीबदासजी मैनेजर, वर्क शाप हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

मेसर्स सं० मौजीलाल एण्डसन्स कमानिया जबलपुर	रबर स्टैम्प, बैजेस हर वर्दी का सामान, चपरास, ब्रास-लेट सभी प्रकार के, सभी भाषाओं के ब्रासनेम, प्लेट, साइन बोर्ड, ब्लाक, स्टील टाइज, इम्बासिंग आदि प्रिंटिंग-मैटर नम्बर प्लेण्टस, स्पेअर पार्ट की ढलाई का काम भी होता है।

व्यापारियों के पते

कपड़े के व्यापारी—

मेसर्स अब्दुलसकूर इब्राहिम, जवाहरगंज
,, टोडरमल मानिकचन्द ,,
,, धनजी मुरारजी ,,
,, मुन्नीलाल बप्पूलाल ,,
,, रामचन्द्र जवाहरमल ,,
,, रामनारायण किशनदयाल ,,
,, हाजीकरीम नूरमहम्मद ,,
,, हीरचन्द मानमल ,,

सोना-चाँदी के व्यापारी—

मेसर्स कुंजीलाल जानकीप्रसाद सोनाहाई
,, चौथमल चाँदमल ,,
,, बलदेवप्रसाद नन्हूलाल ,,
,, प्रानसुख खूबचन्द लुनीहाई
,, प्रेमसुख फतेचन्द ,,
,, मुन्नीलाल खुशालचन्द ,,
,, महेशीलाल सराफ सोनहाई
,, मन्नूलाल छकोड़ीलाल ,,

गल्ले के व्यापारी—

मेसर्स कोदूमल दशरथलाल, निवारगंज
,, गुलाबचन्द कपूरचन्द भँवरलाल ,,
,, ठाकुरप्रसाद दशादीन ,,
,, रामदीन देवीदीन ,,
,, हीरजी गोविन्दजी ,,
,, श्रीगोपाल रामेश्वर ,,

बैंकर्स—

दी अलाहाबाद बैङ्क लिमिटेड
दी इम्पीरियल बैङ्क लिमिटेड
मेसर्स गोकुलदास, जमनादास, गोविन्ददास
,, भगवानदास चेतूलाल
दी भार्गव बैङ्क

बिड़ी के व्यापारी—

मेसर्स अनवरखाँ महबूबखाँ, हनुमानताल
,, मगनलाल भिखाभाई, जवाहरगंज
,, मोहनलाल हरगोविन्दास ,,
,, राधाकृष्ण नारायणदास

सूत के व्यापारी—

मेसर्स फूलचन्द नत्थूलाल
,, भूरामल रामदयाल

किराना के व्यापारी—

मेसर्स वालिमहम्मद हाजीअली
,, बंशीलाल कल्लूलाल

जनरल मरचेण्ट्स—

दी अकबरी शाप, कोतवाली बाजार
डा० अब्दुलाभाई ,,
मेसर्स सुलेमानजी गनीभाई ,,
,, सुलेमानजी डोसाभाई ,,

लोहे के व्यापारी—

मेसर्स बेनीप्रसाद हरिचन्द्र, कम्पनीगेट

सागर

सागर सी० पी० प्रान्त के अपने ही नाम के जिले का हेड़ कार्टर है। यह जी० आई० पी० रेलवे की बीना-कटनी ब्रेंच पर अपने ही नाम के स्टेशन से आधा मील की दूरी पर बसा हुआ है। यहाँ का इतिहास पुराना है। जिसका परिचय यहाँ के बने हुए प्राचीन दुर्ग एवं शहरपनाह से मिलता है। सागर की बसावट ऊँची नीची साफ़ और लम्बी है।

व्यापारिक स्थान यहाँ पर मंडी, कटरा, बड़ा बाजार, जवाहरगंज आदि हैं। मंडी में गल्ले का व्यापार होता है। कटरा में किराना एवं कुछ जनरल मरचेंट्स की दूकाने हैं। बड़ा बाजार में कपड़े का बहुत बड़ा व्यापार होता है। इसके अतिरिक्त कटलरी, जनरल मरचेंट वगैरह भी इसी बाजार में हैं। जवाहरगंज में चाँदी-सोने का व्यापार होता है। सदर में फैन्सी वस्तुओं की इंगलिश तरीके की दुकानें हैं।

यहाँ होने वाले व्यापारों में गल्ला, बैंकिंग और कपड़ा प्रधान है। कपड़ा सब बाहर से इम्पोर्ट होता है। कपड़े के कई व्यापारी यहाँ निवास करते हैं। गल्ले में यहाँ की पैदावार तिल्ली, रामतिल्ली, जुवार, सरसों, चाँवल, गेहूँ, चना, महुआ, गुली, अलसी आदि हैं। यही यहाँ से बाहर जाते हैं। घी की भी यह अच्छी मंडी है। यहाँ से घी भी बहुत बाहर जाता है। सी० पी० के अच्छे २ स्थानों में इसकी गिनती होने से यहाँ का व्यापार अच्छा है। यहाँ से जबलपुर तक मोटर सर्विस भी रन करती है।

म्युनिसीपैलिटी का यहाँ अच्छा प्रबंध है। यहाँ धर्मशाला वगैरह भी अच्छी बनी हुई है। यहाँ का तालाब बड़ा सुन्दर और अच्छा बना हुआ है।

यहाँ के व्यापारियो का परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स कन्हैयालाल हुकुमचंद

यह फर्म करीब २७ वर्षों से गल्ले का व्यापार कररही है। इसका स्थापन सेठ कन्हैयालालजी के द्वारा हुआ। आपका स्वर्गवास हो गया है। आपके पश्चात् इस फर्म का संचालन आपके पुत्र सेठ हुकुमचंदजी ने किया और वर्तमान में भी आप ही इसका संचालन कर रहे हैं। आपका मूल

निवासस्थान यहाँ से पास ही माणिक चौक नामक स्थान है। आपके इस समय तीन पुत्र हैं जिनके नाम क्रमशः रामचन्द्रजी, नाथूरामजी और बाबूलालजी हैं। इनमें से प्रथम दो दुकान का संचालन करते हैं। आपके तीन भाई भी हैं जिनका नाम क्रमशः पूरनचन्द्जी, जयचन्दजी और रा० सा० प्यारेलालजी हैं। आप जमींदारी का काम देखते हैं। इस फर्म की विशेष उन्नति सेठ हुकुमचन्द्जी ने की।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

सागर—मेसर्स कन्हैयालाल हुकुमचन्द T. A. "malguzar"	यहाँ बैंकिंग, मालगुजारी, गल्ला एवं आढ़त का व्यापार होता है।
दमोह—मेसर्स कन्हैयालाल हुकुमचन्द मागंज	यहाँ भी गल्लेका व्यापार और आढ़त का काम होता है।
सागर—मेसर्स-कन्हैयालाल पूरनचन्द कटरा	यहाँ थोक तथा परचुरन कपड़े का व्यापार होता है।

मेसर्स कारेलाल कुन्दनलाल

इस फर्म के मालिक गोला पूरब वैश्य समाज के दिगम्बर जैन धर्मावलम्बीय सज्जन हैं। यह फर्म यहाँ सेठ कारेलालजी द्वारा स्थापित हुई थी। आपका स्वर्गवास हो गया है। वर्तमान में इसके मालिक आपकेपुत्र सेठ कुन्दनलालजी हैं। आपके द्वारा फर्म की बहुत उन्नति हुई। इस फर्म का प्रधान संचालन आप स्वयं, एवं कुन्दनलालजी घी वाले और आपके भतीजे भैया-लालजी करते हैं।

इस फर्म के मालिकों का दान-धर्म की ओर भी अच्छा खयाल रहा है। आपने यहाँ एक जैनपाठशाला स्थापित की है। गरीबों के प्रति आपकी अच्छी सहानुभूति रहती है। आपने यहां जैन लायब्रेरी के लिये एक मकान बनवा दिया है।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

सागर—मेसर्स कारेलाल कुन्दनलाल हाक गंज T. A. Singhai	यहां गल्ला एवं घी का बड़ा व्यापार तथा आढत का काम होता है।
सागर—मेसर्स कारेलाल कुन्दनलाल कटरा T. A. Oilwells	यहां किराने का व्यापार होता है तथा वर्मा शेल की तेलकी एजंसी है।

मेसर्स गुलाबचंद लखमीचंद दुलिचंद

इस फर्म के मालिक यहीं के मूल निवासी हैं। यह फर्म यहाँ बहुत पुराने समय से व्यापार कर रही है। करीब ६० वर्ष पहले से इस पर मेसर्स गुलाबचंद डालचंद के नामसे व्यापार होता था। और करीब ५ वर्ष से उपरोक्त नाम से व्यापार हो रहा है। शुरु से ही यह फर्म महाजनी लेनदेन का व्यापार करती चली आ रही है। इसकी विशेष उन्नति युद्ध के समय में हुई। उस समय इस फर्म के पास कई मिलों की एजंसी थी। आज कल सिर्फ जलगाँव मिल की एजंसी रह गई है। वह भी आपके चचा के पास है।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ लखमीचंदजी और सेठ दुलिचंदजी हैं। आप लोग परवार वैश्य जातिके जैन सज्जन हैं। आप ही वर्तमान में फर्म का संचालन करते हैं। आप शिक्षित एवं स्वदेश भक्त सज्जन हैं। यहाँ की प्रायः सभी सार्वजनिक संस्थाओं से आपका सम्बन्ध है। इस फर्मकी ओर से यहाँ बड़े जैन मन्दिर के पास एक धर्मशाला बनी हुई है।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

सागर—मेसर्स गुलाबचंद लखमीचंद दुलिचन्द T. A. Modl.	यहाँ बैंकिंग, हुंडी और महाजनी लेनदेन का व्यापार होता है।
सागर—मेसर्स गुलाबचंद दुलिचंद गाँधीचौक	यहां चांदी-सोने का व्यापार होता है।

मेसर्स गोपालदास वल्लभदास

इस फर्म के वर्तमान संचालक सेठ जमनादासजी मालपाणी हैं। आपका हेड़ आफिस जबलपुर मे है। वहाँ यह फर्म बहुत पुरानी है। इसकी कई शाखाएं हैं, उनमें से एक शाखा यहाँ भी है। यहाँ जमींदारी एवं बैंकिंग का काम होता है। इस फर्म का विस्तृत परिचय चित्रों सहित इसी ग्रंथ के प्रथम भाग में बम्बई विभाग के पेज नं० ४० में देखना चाहिये।

चन्द्रभान बंसीलाल रायबहादुर

इस फर्म का नाम बहुत मशहूर है। इसका हेड़ आफिस कामठी है। सी० पी० प्रांत में इस फर्म की बहुत सी शाखाएं हैं। प्रत्येक स्थान पर यह फर्म फर्स्टक्लास बैंकरों में से है। इसके वर्तमान मालिक सेठ सर बिसेसरदासजी डागा हैं। आपका विस्तृत परिचय राजपूताना विभाग

में पेज नं० ११४ में इसी ग्रंथ के प्रथम भाग में दिया गया है। यहाँ यह फर्म बैंकिंग का व्यापार करती है।

मेसर्स चिन्तामन दुर्गाप्रसाद

इस फर्म के वर्तमान मालिक ला० दुर्गाप्रसाद, ला० चौखेलाल, ला० दुलारेलाल एवं ला० तुलसीराम हैं। आप चारों ही भाई इस फर्म के संचालन का कार्य्य करते हैं। यह फर्म १८ वर्ष से स्थापित है। इसके स्थापक सेठ चिन्तामनजी थे। आप लोग हैहय क्षत्री समाज के सज्जन हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

सागर—मेसर्स चिन्तामन दुर्गाप्रसाद कटरा	यहाँ किराने का अच्छा व्यापार होता है।
सागर—मेसर्स चिन्तामन छोटेलाल बड़ा बाजार	यहाँ थोक और खुदरा दोनो प्रकार का कपड़े का व्यापार होता है।

मेसर्स हीरालाल टीकाराम

इस फर्म के मालिक यहीं के मूल निवासी हैं। आप लोग गोला पूरब वैश्य समाज के

सिं० कुन्दनलालजी (कारेलाल कुन्दनलाल) सागर
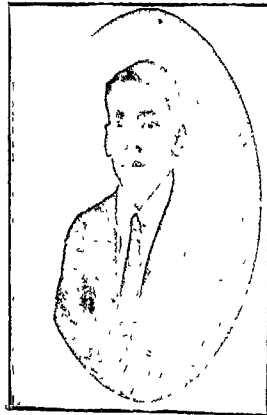
बाबू दुलिचन्दजी मोदी (गुलाबचन्द लखमीचन्द दुलिचन्द) सागर

सागर—मेसर्स शिवप्रसाद शोभाराम हाकगंज	यहाँ गल्ले एवं आढ़त का काम होता है।
ललितपुर—मेसर्स हीरालाल टीकाराम	यहाँ किराना तथा घी का व्यापार होता है।
दमोह—मेसर्स हीरालाल टीकाराम माँगंज	यहाँ भी किराना एवं घी का व्यापार होता है।

व्यापारियों के पते

गल्ले के व्यापारी—

मेसर्स कन्हैयालाल हुकुमचन्द, हाकगंज
" कारेलाल कुन्दनलाल "
" कारेलाल नाथूराम "
" दुर्गाप्रसाद गनेशदास "
" दुर्गाप्रसाद राजाराम "
" नारायणदास बाबूलाल "
" रूपचंद जग्गूलाल "

घी के व्यापारी—

मेसर्स कारेलाल कुन्दनलाल, हाकगंज
" कारेलाल नाथूराम "
" हीरालाल टीकाराम, कटरा

किराने के व्यापारी—

मेसर्स कारेलाल रज्जीलाल, बड़ाबाजार
" चिन्तामन दुर्गाप्रसाद, कटरा
" फकीरमहम्मद खमीसा "
" राजाराम मुन्नालाल "
" हीरालाल टीकाराम "

चाँदी-सोना के व्यापारी—

मेसर्स चन्द्रभान बंसीलाल रा० ब०
" रतनलाल डालचंद, बड़ाबाजार
" लखमीचंद दुलिचंद, गांधीचौक

कपड़े के व्यापारी—

मेसर्स उदयचंद बाबूलाल
" कन्हैयालाल पूरनचंद
" गनेश हीरालाल
" गिरधारीलाल मुन्नीलाल
" डालचंद धरमचंद मोदी
" नाथूराम मुन्नालाल
खा० ब० फकीर महम्मद खमीसा
" मुन्नीलाल पूरनचंद
मेसर्स रज्जीलाल कसरिया
" रामकिशन मोतीराम
" हजारीलाल बाबूलाल (सूत)

जनरल मरचेंट्स—

मेसर्स कालेखाँ मनिहार, बड़ाबाजार
" फूंदीखाँ मनिहार "
" गुलाबचंद जौहरी "
" रतनचंद दीपचंद "
" हुकुमचंद जौहरी "

बीड़ी के व्यापारी—

मेसर्स कालिदास अम्बालाल, कटरा
" जंग डिंगलीप्रसाद, बड़ाबाजार
मेसर्स भगवानदास शोभालाल, बड़ाबाजार
" मोहनलाल हरगोविन्ददास
" लल्लूभाई बेचरदास

दमोह

यह जी० आई० पी० रेल्वे की कटनी-बीना वाली ब्रेंच लाईन पर अपने ही नामके स्टेशन के पास बसा हुआ है। इसकी बसावट साफ एवं सुथरी है। गंज बाजार तो यहाँ का बहुत ही अच्छा बना है। यहाँ का प्रधान व्यापार गल्ले का है। यहाँ से तीन चार स्टेशन आगे गनेशगंज नामक स्थान पर कपास काफी मात्रा मे पैदा होता है। वहाँ जिनिंग एवं प्रेसिंग फैक्टरी भी है।

यहाँ पैदा होने वाली वस्तुओं में तिल्ली, जुवार, रामतिल्ली, सरसों, चावल, (बढ़िया) गेहूँ (जलालिया) चना, महुआ, गुल्ली, अलसी आदि हैं। ये ही वस्तुएँ यहाँ से बाहर भी जाती हैं। इसके अतिरिक्त यहाँ बंगला एवं कपूरी पान और परवल भी बहुत पैदा होते हैं। पास के जङ्गल में गोंद, जलाऊ लकड़ी, इमारती लकड़ी, कोयला एवं पत्थर होता है।

बाहर से आनेवाले माल में विशेष कर हार्डवेअर, किराना, कपड़ा, सूत आदि प्रधान हैं। यहाँ किसी किस्म के कल-कारखाने नहीं है।

व्यापारियों की सुविधा के लिये यहाँ की म्युनिसिपेलिटी ने स्टेशन के पास ही एक सुन्दर धर्मशाला बना रखी है। यहाँ से जबलपुर और सागर मोटरें जाया करती हैं। तोल यहाँ प्रायः अंग्रेजी ही है।

यहाँ के व्यापारियों का परिचय इस प्रकार है—

मेसर्स कन्हैयालाल हुकुमचंद

इस फर्म का हेड आफिस सागर में है। वहाँ यह फर्म अच्छी प्रतिष्ठित मानी जाती है। इसके वर्तमान मालिक एवं प्रधान संचालक मानक चौक वाले चौधरी हुकुमचन्द हैं। यह फर्म यहाँ १ साल से काम कर रही है। यहाँ पर गल्ले का व्यापार एवं आढ़त का काम होता है। इसका पूरा परिचय चित्रों सहित इसी ग्रन्थ मे सागर के साथ दिया गया है। यहाँ इस दुकान का संचालन बा० रामचन्द्रजी करते हैं।

मेसर्स भूरामल रामदयाल

इस फर्म का हेड आफिस जबलपुर में है। वहाँ यह फर्म बहुत प्रतिष्ठित समझी जाती है।

वहाँ इस फर्म पर सूत का व्यापार होता है। यहाँ इस पर कपड़ा तथा सूत का व्यापार होता है। यहाँ भी यह फर्म अच्छी समझी जाती है। इसका विस्तृत परिचय चित्रों सहित इसी ग्रन्थ के इसी भाग में जबलपुर में दिया गया है।

मेसर्स हीरालाल टीकाराम

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ शिवप्रसादजी एवं आपके भाई हैं। इसकी और भी ब्रांचेस हैं। जहाँ यह फर्म गल्ला, घी एवं किराने का व्यापार करती है। इसका हेड आफिस सागर में है। वहीं इसका विस्तृत परिचय छापा गया है। यहाँ यह फर्म गल्ले, किराने और घी का व्यापार करती है। इसका पता सागंज है।

व्यापारियों के पते

गल्ले के व्यापारी—

मेसर्स कन्हैयालाल हुकुमचन्द गंज
" गनेश जुगुल "
" दुर्गाप्रसाद कुंजीलाल "
" धौंकलप्रसाद मोजीलाल "
" नन्हेलाल वल्लीलाल "
" सूरतदीन प्यारेलाल "
" हीरालाल टीकाराम "

घी और किराने के व्यापारी—

मेसर्स बलदेवदास जेतरूप नयाबाजा
" बल्ले बिहारी "
" बब्बू रघु "
" मनमोहन धरमपुरावाला "
" हीरालाल टीकाराम "

कपड़े के व्यापारी—

मेसर्स दामोदरदास धनीराम
" बलदेवदास जेतरूप
" वृन्दावन राजधर
" भूरामल रामदयाल

चाँदी-सोना के व्यापारी—

मेसर्स कस्तूरचंद लखमीचंद
" देवदत्त प्रतापशंकर
" बनखंडी भगोली
" रामशंकर हरिशंकर
" लीलाधर गुलाबचन्द
" श्यामशंकर प्रभाशंकर

कत्थे के व्यापारी—

मेसर्स शाकरहुसेन इमदादअली

हार्डवेअर मरचेण्ट—

मेसर्स अब्दुल कय्यूम
" इस्मालजी मुल्लां अब्दुलहुसेन
" कमरुद्दीन अब्दुलरसूल

जनरल मरचेण्ट्स—

मेसर्स इस्माईलजीमुल्लां अब्दुलहुसेन
" सैय्यद जाफर हुसेन
" हीरचंद पूनमचन्द

इमारती लकड़ी के व्यापारी—

मेसर्स देवदत्त प्रतापशंकर नयाबाजार
" रूपनारायण टंडन "
" त्रिवेणी शंकर कायस्थ "

कटनी

कटनी सी० पी० प्रांत के जबलपुर डिस्ट्रिक्ट के मुंडवारा तहसील का रेलवे जंकशन है। इस स्थान पर बी० एन० आर०, जी० आई० पी० आर० और ई० आई० आर० तीनों लाइनें आकर मिलती हैं। यह कलकत्ता से ७२७ मील और बम्बई से ६७३ मील की दूरी पर बसा हुआ है, बी० एन० आर० की ब्रॉंचलाइन यहाँ से १६८ मील-चल कर बिलासपुर में अपनी मेनलाइन से मिल जाती है। जी० आई० पी० यहाँ से १६३ मील चल कर बीना नामक जंकशन पर मिल जाती है।

यह स्थान सिमेंट के लिये भारत भर में प्रसिद्ध है। यहाँ का सिमेंट प्रायः सभी जगह जाता है। सिमेंट बनाने का यहाँ से करीब चार, पाँच मील पर कारखाना है। अतएव यहाँ चूना, सिमंट और पत्थर का बड़ा व्यापार होता है। इसके अतिरिक्त यहाँ पैदा होने वाली वस्तुएँ गेहूँ, चावल, चना, अलसी, महुआ, गुली, तिल्ली, लाल सरसों, लाख और घी हैं। यही चीजें यहाँ से बाहर जाती हैं।

यहाँ पर आने वाले माल में प्रधान कपड़ा, किराना, हार्डवेअर केरोगेटेड शीट्स है।

यहाँ का तौल अंग्रेजी है।

यहाँ के व्यापारियों का परिचय नीचे दिया जाता है।

मेसर्स सवाई सिंघई कन्हैयालाल गिरधारीलाल

आप लोग आदि निवासी तिउरी (जबलपुर) के हैं। इस फर्म की स्थापना सम्वत् १९३३ में बाबू कन्हैयालालजी ने कटनी में की थी और तभी से यह फर्म कपड़े का प्रधान रूप से व्यापार कर रही है। इस व्यवसाय में फर्म ने अच्छी उन्नति की और क्रमशः उन्नति करते हुए समय २ पर अन्य व्यापार भी आरम्भ किये जो अभी तक पूर्ववत् जारी हैं। फर्म के मालिकों के आदि निवास-स्थान तिउरी के पास हरड़ा का बहुत सघन जङ्गल है अतः वहाँ बहुत बड़े परिमाण में हरड़ा संग्रह किया जाता था और यही कारण है कि यह फर्म वहां हरडे का भारी व्यापार करती थी और साथ ही जमींदारी और महाजनी लेन-देन का काम भी जो पहले से चला आ रहा है यह फर्म अभी तक उसी प्रकार कर रही है।

इसके वर्तमान मालिक बाबू कन्हैयालालजी तथा आपके भाई रतनचन्दजी हैं। आप लोग दिगम्बर जैन परवार जाति के सज्जन हैं।

इस फर्म की ओर से कटनी में जैन पाठशाला नामक संस्था है जिसमें सभी जातियों के बच्चों के लिए शिक्षा की व्यवस्था करके उसे सार्वजनिक स्वरूप दिया गया है। इसी प्रकार इसके साथ ही एक छात्रावास भी है जहाँ छात्र विद्याध्ययन करते हुए रह भी सकते हैं। इस फर्म के उद्योग से एक कन्या पाठशाला भी अभी हाल में खोली गई है जहाँ अच्छी संख्या में बालिकाएँ आती हैं। इसका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स सवाई सिंघई कन्हैयालाल गिरधारीलाल, रघुनाथ गंज कटनी	यहाँ कपड़ा तथा बैंकिंग का बहुत बड़ा काम होता है।

मेसर्स राजाराम सीताराम

आप लोग बनारस के रहनेवाले वैश्य समाज के सज्जन हैं। इस फर्म के आदि संस्थापक बाबू राजारामजी ने लगभग २५ वर्ष पूर्व कटनी में मेसर्स नारायणराम बिहारीलाल के नाम से गल्ले की आढ़त और तम्बाकू के व्यवसाय को आरम्भ किया था जो क्रमशः उन्नति करता गया और वर्तमान में इस अवस्था पर पहुँचा है। लगभग १० वर्ष हुए जब बाबू राजारामजी ने अपने तथा अपने भाई के नाम से यह फर्म उपरोक्त नाम से आरम्भ कर दी। बाबू राजारामजी का स्वर्गवास लगभग ४ वर्ष हुए हो गया है।

वर्तमान में इस के मालिक स्वयं राजारामजी के भाई बाबू राघोसाहु तथा राजारामजी के भतीजे पन्नालालजी हैं।

इस फर्म का काम-काज आप दोनों ही सज्जन देखते हैं। इसका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

मेसर्स राजाराम सीताराम हनुमानगंज कटनी	गल्ला तथा तम्बाकू का काम प्रधानरूप से होता है और सभी प्रकार की कमीशन एजेन्सी का काम करते हैं।
मेसर्स नारायणराम भैरवप्रसाद रेशमकटरा बनारस	यहाँ महाजनी लेनदेन का काम होता है।

सेठ जयदयालजी सराफ (शिवलाल जुहारमल) कटनी ।
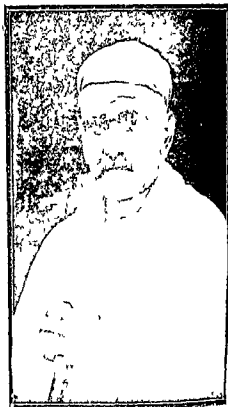
सिंघई कन्हैयालालजी (सवाई सिंघई कन्हैयालाल गिरधरलाल) कटनी ।

सेठ श्रीनिवास जी सराफ (शिवलाल जुहारमल) कटनी ।

बाबू कमला प्रसादजी सराफ (शिवलाल जुहारमल) कटनी ।

मेसर्स राधेलाल हनुमानप्रसाद

आप लोग मिर्जापुर निवासी खण्डेलवाल जाति के महानुभाव हैं। बाबू राधेलालजी ने लगभग ३० वर्ष पूर्व इस फर्म की स्थापना उपरोक्त नाम से यहाँ की थी। इस फर्म पर आरम्भ में लाख और कमीशन एजेन्सी का काम आरम्भ किया गया जो अभी तक बराबर हो रहा है। यही कारण है कि यह फर्म लाख का प्रधान काम कर रही है और साथ ही दूसरे सभी प्रकार के माल की कमीशन एजेन्सी का काम होता है।

इस फर्म के वर्तमान मालिक बाबू राधेलालजी तथा बाबू हनुमान प्रसादजी हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय यों है:—

मेसर्स राधेलाल हनुमानप्रसाद हनुमानगंज कटनी	यहाँ लाख का प्रधान व्यापार होता है तथा सभी प्रकार के माल की कमीशन एजेन्सी का काम होता है।

मेसर्स शिवलाल जुहारमल

इस फर्म के वर्तमान मालिक स्व० सेठ जुहारमलजी के पुत्र सेठ जयदयालजी हैं। आप अग्रवाल वैश्य समाज के सराफ सज्जन हैं। आपकी फर्म को करीब ५० वर्ष पूर्व आपके पितामहने स्थापित की थी। जिस समय फर्म स्थापित की गई थी उस समय आपके पितामह की साधारण स्थिति थी। इसकी उन्नति आपके पिताजी जोहारमलजी के समय में हुई। और विशेष तरक्की आप ही के समय में हुई। आपकी व्यापारिक नीति ही की वजह से फर्म ने यहाँ अच्छा नाम पैदा किया। आपने यहाँ स्टेशन पर एक सुन्दर धर्मशाला भी बनवाई है। आपके पुत्र श्री निवासजी कपड़े की दुकान का संचालन करते हैं। सेठ श्री निवासजी के ४ पुत्र हैं। बड़े बा० कमलाप्रसादजी फर्म का संचालन करते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

कटनी—मेसर्स शिवलाल जुहारमल	यहाँ गल्ला, घी, किराना, चूना, सिमेंट का व्यापार और आढ़त का काम होता है। यह फर्म कटनी क्रेस्टल ब्रेंड सिमेंट की सब एजंट है।
कटनी—दी सत्यनारायण खद्दर भण्डार	यहाँ खादी वगैरह देशी माल का व्यापार होता है।

व्यापारियों के पते

कपड़े के व्यापारी—

मेसर्स कन्हैयालाल गिरधरलाल
„ गोविन्द वेणीमाधव
„ टोडरमल कन्हैयालाल
„ विन्द्रावन बलभद्रदास
„ सीताराम जयदयाल
„ हलकेलाल कल्लूलाल

गल्ले के व्यापारी—

मेसर्स मुंशीराम किशनप्रसाद
„ रामप्रसाद शिवप्रसाद
„ राजाराम सीताराम
„ रामशरण नत्थूलाल
„ रामदास महादेव
„ हरकिशुन रामकिशुन

किराने के व्यापारी—

मेसर्स अयोध्याप्रसाद श्रीकृष्ण
„ बलदेव प्रसाद कुंजबिहारी
„ महमद उसमान कच्छी
„ रामचन्द्र भैय्यालाल
„ वृन्दावन नारायणदास

चाँदी-सोने के व्यापारी—

मेसर्स अमृतलाल शांतिलाल
„ मुनईलाल सरयूप्रसाद

लाख के व्यापारी—

मेसर्स मन्नालाल वल्लभदास

घी के व्यापारी—

मेसर्स प्रेमसुख रामेश्वर
„ शिवलाल जुहारमल

जनरल मरचेंट्स—

मेसर्स मुलां अहमद गुलाम हुसेन
„ छप्पेलाल रामकिशन

बिलासपुर

यह स्थान बी० एन० आर की हवड़ा नागपुर वाली मेन लाईन का जंकशन है। यहाँ से एक ब्रांच लाइन कटनी तक गई है। इस शहर की बसावट अच्छी है। इसके पास बहुत जंगल है। जंगली पैदावार जैसे लकड़ी, मोम, शहद, पीली मिट्टी वगैरह इस जंगल में काफी होती है।

यहाँ का प्रधान व्यापार गल्ले का है। जो यहाँ से बाहर जाता है। गल्ले में भी चाँवल का भाग ज्यादा है। यहाँ का चाँवल सस्ता एवं अच्छा होता है।

यहाँ की और आस-पास की जनसंख्या में विशेष नम्बर सतनामी और गौड़ लोगों का है। येही लोग जंगलों की पैदावार लाते हैं तथा मजदूरी करते हैं। इनके सामाजिक नियम बड़े भिन्न हैं। इनमें नैतिक चरित्र की बड़ी कमी रहती है। यहाँ का पानी स्त्रियों के लिये विशेष मुफीद माना जाता है।

आस-पास जंगली स्थान आ जाने से पास में कोई बड़ा शहर नहीं है। अतएव आस-पास के रहने वाले अपनी आवश्यकता की पूर्ति यहीं से पूर्ण करते हैं। अतएव यहाँ कपड़ा, किराना वगैरह काफी मिकदार मे बाहर से आता है। सूत भी यहाँ काफी आता है। यहाँ के व्यापारियो के पास बहुत से मिलो के कपड़े एवं सूत की एजंसियाँ हैं। जिनका विशेष परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स बक्सीराम गुरुमुखराय

आप लोग लक्ष्मणगढ़ निवासी अग्रवाल समाज के जालोदिया सज्जन हैं। इस फर्म की स्थापना लगभग सम्वत् १९५५ में सेठ गुरुमुखरायजी ने की थी और आपने कपड़े का काम आरम्भ किया जो अभीतक आपकी फर्म बराबर करती जा रही है। आप व्यापारकुशल एवं अनुभवी व्यक्ति थे अतः आपने अपनी फर्म को अल्पकाल में ही अच्छी अवस्था पर पहुँचा दिया। आपकी फर्म वर्तमान में बिलासपुर की अग्रगण्य फर्मों में मानी जाती है।

इस फर्म पर प्रधानरूप से कपड़े का काम तथा राय सा० रेखचन्दजी मोहता हिंगनघाट

के मिल की सूत और कपड़े की एजेन्सी, और रा० ब० बंशीलाल अबीरचन्द हिंगनघाट की कपड़े तथा सूत की एजेन्सी है। अकोला कॉटन मिल अकोला की कपड़े और सूत की एजेन्सी भी इस फर्म के पास है। इसके अतिरिक्त सराफी और लेनदेन का काम भी यह फर्म करती है।

इस फर्म के अन्तर्गत बिलासपुर में मेसर्स बासदेवलाल जगदेवलाल के नामसे एक और फर्म है जहाँ ग्रेन तथा कमीशन एजेन्सी और मोतीलाल जमनादास डाइंग मिल पेटलाद (गुजरात) तथा बुलाकीदास कृष्णदास मिल्स पेटलाद की एजेन्सी है यह फर्म श्रीबजरंग ऑइल फ्लोर एण्ड राइस मिल की भी मालिक है।

मेसर्स नगन्ना अमन्ना बदनेस मिल, दि बरार मैन्यूफैक्चरिंग मिल लि० की कपड़े और सूत की एजेन्सी मेसर्स नगन्ना अमन्ना बिलासपुर के नाम से है।

इसके अतिरिक्त खुरसिया (Khursia Bilaspur Raigarh Estate) में एक फर्म है जहाँ मेसर्स राधाकृष्ण लालचन्द नाम पड़ता है। वहाँ ग्रेन और कमीशन एजेण्ट का काम होता है।

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ गुरुमुखरायजी तथा आपके भाई सेठ सागरमलजी तथा सेठ गुरुमुखरायजी के पुत्र बाबू जगदेवलाल, बाबू लालचन्दजी, बाबू महावीर प्रसाद बाबू द्वारकादासजी तथा सेठ सागरमलजी के पुत्र बाबू वासुदेवलाल, बाबू गजाधरजी, बाबू राम सहायमलजी हैं। सेठ गुरुमुखरायजी स्थानीय म्यूनिसिपेलिटी के सदस्य हैं और सभी सार्वजनिक कार्य्यों में भाग लेते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

मेसर्स बक्सीराम गुरुमुखराय बिलासपुर	यहाँ कपड़ा और सूत का प्रधान काम होता है तथा कई मिलों की एजेन्सी है।
मेसर्स बासुदेवलाल जगदेवलाल सदर बिलासपुर	यहाँ ग्रेन मर्चेन्ट तथा कमीशन एजेन्सी का काम होता है तथा दो मिलों के सूत की एजेन्सी है।
मेसर्स राधाकृष्ण लालचन्द खरसिया (बिलासपुर)	यहाँ ग्रेन मर्चेन्ट और कमीशन एजेन्सी का काम होता है।
मेसर्स नगन्ना अमन्ना सदर बजार	इसके आप सीनियर पार्टनर्स हैं।

मेसर्स वच्छराज अमोलकचन्द बजाज

आप लोग लक्ष्मणगढ़ निवासी अग्रवाल वैश्य समाज के बजाज सज्जन हैं। इस फर्म की स्थापना २० वर्ष पूर्व सेठ रामेश्वरजी बजाज ने बिलासपुर में की थी। आपने आरंभ में कपड़े और सूत का व्यापार आरम्भ किया और साथ ही गल्ले की आढ़त का काम भी आरम्भ किया था। इसके पूर्व इस फर्म के मालिक सेठ रामेश्वरजी कपड़े का अच्छा व्यापार करते थे जब आपने अपनी उपरोक्त नाम से फर्म खोली तो आपको शीघ्र ही सफलता मिली और आपने फर्म को अल्पकाल में ही अच्छी उन्नत अवस्था पर पहुँचा दिया। फलतः वर्तमान में यह फर्म कपड़े की थोक बिक्री, सूत की गाँठों की बिक्री करती है तथा पेटलाद की नारायण भाई केशोलाल मिल की रंगीन सूत की एजेन्सी इसके पास है इसके सिवा मेसर्स साँवतराम रामप्रसाद मिल अकोला की सूत की एजेन्सी तथा गल्ले की आढ़त का काम है जिसमें माल बाहर भेजा जाता है।

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ रामेश्वरजी बजाज तथा आपके भतीजे बाबू वच्छराजजी तथा बाबू अमोलखचन्दजी बजाज (स्व० शिव भगवान बजाज के पुत्र) हैं।

सेठ रामेश्वरजी बजाज स्थानीय सभी धार्मिक कार्यों में अच्छा भाग लेते हैं और इसी फर्म से अच्छी सहायता देते रहते हैं।

इस फर्म के मालिक के भाई स्व० शिवभगवानजी लगभग ४० वर्ष पूर्व स्वदेश से आए थे आपने आकर यहाँ व्यापार का सिलसिला जमाया। और काम आरम्भ किया इस प्रकार व्यापारिक क्षेत्र में प्रवेश कर लगभग २० वर्ष पूर्व बाबू रामेश्वरजी ने आरम्भ किया।

इसका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

मेसर्स वच्छराज अमोलखचन्द बिलासपुर C. P.	यहां कपड़ा, सूत की थोक बिक्री और गल्ले की आढ़त का काम होता है।

रायपुर

बैंकर्स

मेसर्स कश्मीरचन्द कपूरचन्द

आप लोग बीकानेर के निवासी माहेश्वरी समाज के डागा सज्जन हैं। आप लोग ८० वर्ष से रायपुर में ही रहते हैं। सब से प्रथम सेठ कपूरचन्दजी यहाँ आये। आपके दूसरे भाई दौलतरामजी तथा सुलतानचन्दजी थे और वह भी आपके साथ ही यहाँ आये। आपने यहाँ आकर उपरोक्त नाम से अपनी फर्म की स्थापना की और व्यापार करने लगे। आप बड़े ही व्यापारकुशल थे और इस कार्य्य में आपके भाई भी वैसे ही पटु थे अतः आप लोगों के सम्मिलित उद्योग और कार्य्य-क्षमता के कारण फर्म को अच्छी उन्नति मिली और अल्पकाल में ही यह फर्म सम्मुन्नत अवस्था में पहुँच गई। सर्व प्रथम आपके यहाँ अनाज का व्यापार होने लगा और क्रमशः मालगुजारी का विस्तार एवं जमींदारी की वृद्धि की गयी जो आज तक बराबर सम्मुन्नत अवस्था पर चल रही है। कपूरचन्दजी का स्वर्गवास सम्वत् १९४९ में हुआ। आपके बाद आपके पुत्र सेठ बिसेश्वरदासजी ने व्यापार का भार ग्रहण किया। आपके समय में भी फर्म का काम सुचारु रूप से होता रहा। वर्तमान में आप वयोवृद्ध होने के कारण शान्तिलाभ करते हैं और व्यापार संचालन आपके पुत्र सेठ शिवदासजी डागा करते हैं।

सेठ शिवदासजी डागा व्यापार चतुर एवं सम्मुन्नत विचार के महानुभाव हैं। आपने अपने यहाँ हरड़ा का काम विशेष रूप से किया है। हरड़ा समीप के जंगलों में अधिक पैदा होता है। अतः आप उसको खरीद कर कम्पनियों को बेंच देते हैं। यह फर्म यहाँ के समीपी हरड़ा केन्द्रों का कंट्राक्ट लेती है और संग्रह कर कंपनियों को सप्लाई करने का काम करती है।

आपने इस प्रकार फर्म के काम को और भी उत्तेजन दिया है।

आपका सम्बन्ध सभी सार्वजनिक मामलों से रहता है। आप अपनी जातीय सभा समाजों में तो भाग लेते ही हैं पर साथ ही राजनैतिक आन्दोलन में भी पर्याप्त सहानुभूति रखते हैं। आप राष्ट्रीय दल की ओर से सी० पी० कौंसिल के सदस्य भी हैं।

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ विशेश्वरदासजी डागा तथा आपके पुत्र सेठ शिवदासजी डागा एम्० एल० सी० तथा सेठ सूरजरतनजी डागा हैं।

सेठ शिवदासजी डागा के एक पुत्र हैं जिनका नाम बाबू ग्वालदासजी है।

इस फर्म का प्रधान काम सेठ शिवदासजी करते हैं और आपके छोटे भ्राता सेठ सूरज रतनजी मालगुजारी का काम देखते हैं।

इसका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

मेसर्स कश्मीरचन्द कपूरचन्द सदरबाजार रायपुर	यहाँ आपका हेड ऑफिस है तथा यहाँ लैण्डलॉर्ड, बैंकर्स और गल्ले का काम होता है।
मेसर्स सेठ शिवदासजी डागा सदरबाजार रायपुर C. P.	यहाँ आपका हरडा विभाग है। तथा रायपुर डि० के जंगलों में हरों के सेएटर में सीजन में एजेन्सियाँ रहती हैं।

मेसर्स चांदमल वीरचंद

इस फर्म का हेड आफिस आगरा (यू० पी०) है। इसके वर्तमान मालिक सेठ वीरचंद जी हैं। यह फर्म यहाँ बड़ी दुकान के नाम से मशहूर है। इस फर्म की बहुतसी शाखाएँ हैं। जिनका विस्तृत परिचय इसी ग्रंथ के इसी भाग में आगरा विभाग में छापा गया है। यहाँ इसका पता सदर बाजार है। इस पर यहाँ बैंकिंग, हुंडी, चिट्ठी और महाजनी देन-लेन का काम होता है। इस फर्म के अंडर में बलौदा बाजार डि० के १० गाँव जमींदारी में हैं। अतएव उनका भी काम इसी फर्म पर होता है।

मेसर्स रामचन्द्र रामरतनदास रा० ब०

इस फर्म के वर्तमान मालिक सर विसेसरदासजी डागा हैं। यह फर्म सी० पी० में बहुत मशहूर है। इसकी कई स्थानों पर शाखाएँ हैं। इसके अतिरिक्त कई मिल, जिनिंग प्रेसिंग फैक्टरियाँ और कोयले की खानें आदि हैं। इस फर्म पर यहाँ बैंकिंग और हुंडी चिट्ठी का व्यापार होता है। इसका पता सदर बाजार है। इसका विस्तृत परिचय चित्रों सहित इसी ग्रंथ के प्रथम भाग के मेसर्स बंसीलाल अबीरचन्द के नाम से राजपूताना विभाग में बीकानेर में दिया गया है।

मेसर्स शालिगराम नत्थाणी

इस फर्म के वर्तमान संचालक सेठ बालकिशनदासजी एवं आपके भाई रामकिशनदासजी हैं। यह फर्म यहाँ कपड़ा, गल्ला, बैंकिंग और आढ़त का व्यापार करती है। यहीं इसका हेड आफिस भी है। मगर मालिकों का मूल निवास स्थान बीकानेर होने से इस फर्म का विस्तृत परिचय इसी ग्रन्थ के प्रथम भाग में राजपूताना विभाग के पेज नं० १२७ में दिया गया है।

मेसर्स शालिगराम गोपीकिशन

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ गोपीकिशनजी हैं। आपका भी निवास स्थान बीकानेर ही है। आपका विस्तृत परिचय भी वहीं राजपूताना विभाग में दिया गया है। यहाँ इस फर्म पर बैंकिग, जमींदारी और आढ़त का काम होता है। यहाँ इसका पता सदर बाजार है।

गल्लेके व्यापारी

मेसर्स ठाकुरदास आज्ञाराम

इस फर्म के मालिक सेठ मोतीलालजी कोठारी हैं। आपका निवासस्थान बीकानेर है। इस फर्म का हेड आफिस नागपुर में है। वहाँ यह फर्म बैंकिंग और गल्ले का व्यवसाय करती है। इसका पता शुक्रवारी बाजार है। इसकी और भी कई शाखाएँ हैं। इसका विशेष परिचय नागपूर के पोर्शन में दिया गया है। यहाँ इस फर्म की एक और शाखा मोतीलाल कोठारी के नामसे है। इसका पता गंजबाजार है। इसपर बैंकिंग और गल्ले का व्यापार होता है। तथा उपरवाले नाम से सदर बाजार में फर्म है। यहाँ बैंकिंग और हुंडी चिट्ठी का काम होता है।

मेसर्स दुलीचन्द मांगीलाल

आप लोग पाली (जोधपुर) के आदि निवासी हैं और ओसवाल समाज के दूगड़ सज्जन हैं। इस फर्म की स्थापना लगभग १५ वर्ष पूर्व उपरोक्त नाम से सेठ दुलीचंदजी ने रायपुर में की थी। इसके पूर्व सेठ दुलीचंदजी दूगड़ अपने खुद के नाम से अपना व्यापार करते थे। आपने आरम्भ में घी का व्यापार आरम्भ किया और ज्यों २ आपको व्यापार में सफलता मिलती गई त्यों २ आपने अपनी फर्म पर किराना, तथा दाल का कारखाना और

एक ऑइल मिल सरस्वती ऑइल मिल के नाम से स्थापित किया। इस प्रकार सेठ दुलीचंद-जी दूगड़ ने अपनी व्यापार-चतुरता और औद्योगिक कार्य्य-तत्परता से अपनी फर्म को उच्च स्थानापन्न फर्मों की श्रेणी पर पहुँचा दिया। आप उन महानुभावों में हैं जो सामान्य अवस्था से अपने स्वावलम्बी पुरुषार्थ से व्यापार को समुन्नत अवस्था पर प्रतिष्ठित करते हैं। आप धार्मिक मनोवृत्ति के महानुभाव हैं।

इस फर्म के वर्तमान मालिकों में सेठ दुलीचंदजी दूगड़ तथा आपके पुत्र मांगीलालजी दूगड़ हैं। फर्म का संचालन सेठ दुलीचन्दजी स्वयं ही करते हैं।

इसका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

मेसर्स दुलीचन्द माँगीलाल सदर बाजार रायपुर	यहाँ हेड ऑफिस है तथा किराने का प्रधान व्यापार होता है।
मेसर्स दुलीचन्द मांगीलाल घुड़ियारी रायपुर	किराने का काम होता है।
दि सरस्वती आइल मिल रायपुर स्टेशन के पास	यहाँ तिल्ली, अलसी आदि सभी प्रकार के तेल का काम तथा खल्ली का व्यापार होता है। और धान कूट कर चावल तयार करने का काम भी मिल में होता है।

मेसर्स धूलचन्द भट्टड़

आप लोग जोधपुर के समीप भवाल के रहनेवाले माहेश्वरी समाज के भट्टड़ सज्जन हैं। उपरोक्त नाम से लगभग ७।८ वर्ष के पूर्व इस फर्म की सेठ हनूतराम भट्टड़जी ने रायपुर में स्थापना की थी। इस फर्म पर गल्ले का व्यापार होता है।

सेठ हनूतरामजी भट्टड़ लगभग ४६ वर्ष पूर्व सी० पी० आए थे और आपने आकर कुछ समय तक राजनाद गाँव में व्यापार किया और फिर वहाँ से रायपुर चले आये और नेवरा (रायपुर) से तीन स्टेशन पर अपना हेड़ ऑफिस बनाया। जहाँ अब भी मेसर्स हनूतराम धूलचन्द के नाम से व्यापार हो रहा है।

मेसर्स हनूतराम धूलचन्द के नाम से सेठ हनूतरामजी भट्टड़ ने आरम्भ से ही काम किया था। और उसी नाम से आपका प्रधान कार्य्य आज भी हो रहा है। आपने आरम्भ से ही गल्ले का काम आरम्भ किया और आज भी आप प्रधान रूप से वही कर रहे हैं पर उसके

अतिरिक्त भी आपने महाजनी लेन-देन, मालगुजारी, कपड़ा, किराना, सोना, चाँदी का काम भी अपने हेड कार्टर नेवरा में कर रक्खा है।

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ हनूतरामजी भट्टड़ तथा बाबू गोवर्धनदासजी भट्टड़ हैं। इस फर्म का संचालन सेठ हनूतरामजी करते हैं और आपकी देख-रेख में आपके दोनों ही पुत्र व्यापार कार्य्य करते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

मेसर्स धूलचन्द भट्टड़ गंजबारा रायपुर (रामसागर पारा)	यहाँ गल्ला तथा कमीशन एजेण्ट का काम होता है।
मेसर्स हनूतराम धूलचन्द नेवरा (रायपुर) सी० पी०	यहाँ हेड ऑफिस है तथा महाजनी लेनदेन, मालगुजारी, कपड़ा, गल्ला, किराना, सूत, सोना, चाँदी आदि सभी प्रकार का व्यापार होता है।
मेसर्स हनूतराम धूलचन्द भाटापारा (रायपुर)	गल्ला तथा कमीशन एजेण्ट का काम होता है।
मेसर्स हनूतराय मगनीराम गंज दुरुग	यहाँ गल्ला तथा कपड़ा कमीशन एजेन्सी का काम होता है।
मेसर्स हनूतराम भट्टड़ बेमेतरा (दुरुग) बेमेतरा-दुरुग	मालगुजारी, गल्ला, लेनदेन आदि का काम होता है।

मेसर्स नैनसुख कनीराम

इस फर्म का हेड आफिस कामठी है। वहाँ यह फर्म गल्ले के व्यापारियों में प्रतिष्ठित मानी जाती है। भिन्न २ स्थानों पर इस फर्म की और भी शाखाएँ हैं। प्रायः सभी पर गल्ले एवं आढ़त का व्यापार होता है। यहाँ भी यही गल्ले एवं आढ़त का काम होता है। यहाँ इसका पता गंज बाजार है। इसका विस्तृत परिचय इसी ग्रंथ मे सी० पी० में ही कामठी में छापा गया है।

बर्तनों के व्यापारी

मेसर्स भवानीदास अर्जुनदास

आप लोग बीकानेर निवासी ओसवाल डागा समाज के श्वेताम्बर जैन सज्जन हैं। इस फर्म की स्थापना लगभग १०० पूर्व सेठ भवानीदासजी ने रायपुर में की थी। आप ही देश से रायपुर आये थे और फर्म की स्थापना आपने ही आकर की थी। आपके यहाँ प्रथम ही से महाजनी का काम होता आया है। जैसे २ फर्म ने उन्नति की वैसे २ व्यापार भी उन्नति करते गया और कपड़ा तथा बर्तन का काम होने लगा। इस प्रकार फर्म ने अच्छी उन्नति की और यहाँ की स्थानीय फर्मों की प्रतिष्ठित श्रेणी पर पहुँच गई। भवानीदासजी के बाद आपके पुत्र सेठ अर्जुनदासजी ने काम सम्हाला और बाद सम्वत् १९४० में आपके पुत्र सेठ गम्भीरमलजी ने काम का संचालन किया। आपका स्वर्गवास सम्वत १९५७ में हुआ। तब से फर्म का संचालन आप के पुत्र सेठ जसकरणजी डागा ने सम्हाला और आज कल आप ही फर्म का संचालन करते हैं।

वर्तमान समय में फर्म पर प्रधानतया मनीलेडिंग तथा बर्तन का थोक व्यापार होता है। आपकी फर्म यहाँ भी माल तैयार कराती है। इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ जसकरणजी तथा आपके पुत्र बाबू सम्पतलालजी हैं।

अर्जुनदासजी बड़े प्रतापी थे। आपके ही समय में फर्म ने प्रधान उन्नति की और गम्भीरमलजी धार्मिक मनोवृत्ति के थे और धार्मिक कार्यों में भाग लेते थे। आपके पुत्र सेठ जसकरणजी सुधरे हुए विचारों के नवयुवक हैं और एफ० ए० तक शिक्षित हैं तथा सार्वजनिक कार्यों में भाग लेते हैं। स्थानीय मारवाड़ी छात्र सहायक समिति के मन्त्री भी है। काँग्रेस कमेटी के सदस्य भी है।

इसका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

मेसर्स भवानीदास अर्जुनदास सदर-बाजार रायपुर	यहाँ हेड ऑफिस है तथा मनीलेडिंग और बर्तन का काम होता है।
मेसर्स अर्जुनदास गम्भीरमल राजिम (रायपुर)	यहाँ बर्तन तैयार कराने का काम होता है।

मेसर्स भवानीदास जावतमल

इस फर्म की स्थापना सेठ भवानीदासजी ने लगभग १०० वर्ष पूर्व रायपुर में आकर की थी। आपके यहाँ प्रथम गल्ला किराना का काम हुआ और क्रमशः जैसी उन्नति होती गई वैसे

कपड़ा, बर्तन तथा महाजनी लेन-देन का काम होने लगा। आपके दो पुत्र थे जिनके नाम क्रमशः जावतमलजी और अर्जुनदासजी थे। भवानीदासजी के स्वर्गवास के बाद फर्म का काम दोनों भाई सम्हालते थे। कुछ समय बाद दोनो भाई अलग हो गये अतः सेठ जावतमलजी ने अपना व्यापार अपने उपरोक्त नाम से संचालित करने लगे। आपके यहाँ मालगुजारी का काम भी होने लगा। आपके बाद आपके पुत्र सेठ घोगमलजी ने फर्म के काम को सम्हाला। आप उद्यमी महानुभाव थे। अतः आपके ही समय में फर्म ने प्रधान उन्नति की और मालगुजारी का काम और भी बढ़ाया और अच्छी उन्नति कर ली। आपका स्वर्गवास लगभग सम्वत् १९२८ में हुआ। आपके बाद आपके पुत्र लूनकरणजी ने फर्म का संचालन किया और आपके समय में कपड़ा और बर्तन का काम भी जोरों से होने लगा। आपका स्वर्गवास लगभग सम्वत् १९५५ में हुआ। आपके बाद आपके पुत्र सेठ छोटमलजी ने फर्म का संचालन किया और आपके बाद आपके पुत्र सेठ जोरावरमलजी ने फर्म का काम सम्हाला जो अब भी बड़ी तत्परता से कर रहे हैं। आप स्थानीय म्यूनिसिपैलिटी के सदस्य हैं तथा आप मालगुजार हैं।

वर्तमान में यह फर्म महाजनी, मालगुजारी तथा बर्तन का थोक व्यापार करती है। सोना, चाँदी, गल्ला तथा किराने का काम भी होता है। वर्तमान मालिक सेठ जोरावरमलजी हैं।

इसका व्यापारिक परिचय इस प्रकार हैः—

मेसर्स भवानीदास जावतमल सदर बाजार रायपुर C. P.	यहाँ हेड आफिस है और महाजनी, मालगुजारी तथा बर्तन का थोक काम होता है।
मेसर्स छोटमल जोरावरमल चांपा (बिलासपुर)	गल्ला, सोना, चाँदी, किराना का काम होता है।
मेसर्स छोटमल जोरावरमल राजिम (रायपुर)	यहाँ बर्तन तैयार कराने का काम होकर बिक्री भी होता है।
कनकी (रायपुर) छोगमल लूनकरण	यहाँ मालगुजारी और महाजनी का काम होता है।

मांदा डीह (रायपुर)—यह फ़र्म कनकी के अण्डर में है।

व्यापारियों के पते

बैंकर्स—मेसर्स इन्दुचन्द्र छोगमल सदर
मेसर्स कश्मीरचन्द कपूरचंद "
मेसर्स—चाँदमल वीरचन्द सदर
" बालचन्द रामलाल "
" मोतीलाल कोठारी "

मेसर्स—मुल्तानचन्द हीरचन्द सदर
„ रामचन्द्र रामरतनदास रा० ब०
„ शालिगराम गोपीकिशन „

कपड़े के व्यापारी—

मेसर्स अगरचन्द उत्तमचन्द सदर
„ पन्नालाल चन्दनमल „
„ पन्नालाल रामचंद्र „
„ मुल्तानचंद हीरचंद „
„ शालिगराम नत्थाणी „

गल्ले के व्यापारी—

मेसर्स घासीराम मूलचंद गञ्ज
„ ठाकुरदास आशाराम „
„ तेजपाल साकरचंद सदर
„ देवकरन हरदेवदास गंज
„ धूलचंद भट्टड़ „
„ नैनसुख कन्नीराम „
„ मन्नूरामप्रसाद „
„ लीलाधर डाह्या भाई „
„ लक्ष्मणदास शंकरलाल „
„ लखमीचंद सूरजमल सदर
„ सोहनलाल मुंशीलाल गंज

बर्तन वाले—

मेसर्स भवानीदास जावतमल

मेसर्स—भवानीदास अर्जुनदास
„ लगवासा रामचन्द्र

हर्रे के व्यापारी—

मेसर्स कल्याणदास ब्रदर्स
„ परसोत्तमदास मथुरादास
„ रतनजी शापुरजी टाटा कम्पनी
„ शिवदास डागा सदर

किराने के व्यापारी—

मेसर्स जुहारमल सूरजमल
„ दुलिचन्द माँगीलाल
„ थादराम बंशीधर
„ राजाराम श्रीराम
„ शालिगराम नत्थाणी
„ हाजी सुलेमान उमर
„ हासम एण्ड कासम

चाँदी-सोना के व्यापारी—

मेसर्स इन्द्रचन्द छोगमल
„ चन्दनमल तेजमल
„ बालचन्द रामलाल
„ मेघराज कानमल
„ रमणलाल शंकरलाल

जनरल मरचेंट्स—

मेसर्स अहमदजी भाई सदर
„ जे० शुक्ला एण्ड क० „
„ एस० गिरधारीलाल „

—

धमतरी

यह स्थान बी० एन० आर० की छोटी लाईन का अंतिम स्टेशन है। यह लाईन रायपुर से शुरू होकर यहीं तक गई है। यहाँ जंगल विशेष है। जहाँ हरें पैदा होती है। इसके सिवा यहाँ की पैदावार चावल, लाख, उड़द, मूँग, सरसों, हरें, महुआ वगैरह है। इनमें भी चावल, उड़द, मूग और हरें बहुत बाहर जाती है।

यहाँ के तौल में ५। सेर का काँठा और ७॥ कांठा का मन माना जाता है।

यहाँ के व्यापारियों का परिचय इस प्रकार है:—

गल्ले के व्यापारी—

मेसर्स रामस्वरूप रामदयाल
,, रामलाल बुद्धमल
,, सोहनलाल मुंशीलाल
,, हंसराज तेजपाल
,, ठाकुरलाल शिवप्रसाद

किराने के व्यापारी—

मेसर्स हाजी सुलेमान उमर
,, सुलेमान अब्दुला
,, हाजी हासम अहमद

कपड़ा एवं चाँदी-सोने के व्यापारी—

मेसर्स चुन्नीलाल जुगराज
,, रेखचंद जुहारमल
,, ज्ञानमल हीरालाल

हरें के व्यापारी—

मेसर्स कल्याणदास ब्रदर्स
,, पुरुषोत्तम मथुरादास
,, श्री जीवनदास कम्पनी

लाख के व्यापारी—

मेसर्स सोहनलाल शिवप्रसाद
,, हांडुलाल शिवप्रसाद

राजिम

यह भी बी० एन० आर० की छोटी लाइन पर बसा हुआ है। यहां रायपुर से भी गाड़ी जाती है। इसके अतिरिक्त यहाँ से धमतरी एवं रायपुर दोनों जगह मोटरें भी जाया आया करती हैं। राजिम छोटा होते हुए भी अच्छा है। यहाँ का व्यापार विशेष कर हरें का तथा काँसे के बर्तनों का

है। आस पास के जंगल में काफी हर्रें पैदा होती है। काँसा के बर्तन बनाने की यहाँ होम इंडस्ट्री है यहाँ से रायपुर के व्यापारी बर्तनों को ले जाते हैं तथा वे लोग वहाँ से बाहर एक्सपोर्ट करते हैं। इसके अतिरिक्त चाँवल, मूग, उड़द, सरसों महुआ आदि भी यहाँ पैदा होता है जो यहाँ से बाहर जाता है। यहाँ के व्यापार का विशेष सम्बंध रायपुर एवं धमतरी से है।

यहाँ के व्यापारियों का परिचय इस प्रकार है—

हर्रें के व्यापारी—

मेसर्स कल्याणदास ब्रदर्स

,, परसोत्तमदास मथुरादास

गल्ले के व्यापारी—

मेसर्स प्रभुलाल गुलाबचन्द

,, रेखराज चतुरभुज

कपड़े के व्यापारी—

मेसर्स कालूराम अमरचन्द

बर्तनों के व्यापारी—

मेसर्स अर्जुनदास गम्भीरमल

,, जोरावरमल

सोना चाँदी के व्यापारी—

मेसर्स ढालूराम अमरचन्द

राजनांदगांव

सी० पी० प्राँत की मंडियों में राजनाँदगाँव मंडी भी एक है। यह बी० एन० आर की मेन लाईन पर अपने ही नाम के स्टेशन से मिला हुआ बसा है। यहाँ की बसावट अच्छी है। बिजली की लाईट का भी यहाँ प्रबंध है। यहाँ का प्रधान व्यापार गल्ले का है। चाँवल यहाँ बहुत होते हैं तथा बाहर जाते हैं। यहाँ का तोल सब अँग्रेजी है। इसके आस-पास डोंगरगढ़ और द्रुग नामक मंडियाँ हैं। दोनों ही स्थानों पर रेलवे जाती है। द्रुग और राजनाँदगाँव के बीच मोटर भी रन करती है। यहाँ से गल्ला वगैरह बाहर जाता है। और कपड़ा, किराना, लोहा वगैरह बाहर से यहाँ आता है। यह सब माल यहाँ के पास के देहातों में सेल होता है।

यहाँ के व्यापारियो का परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स कालूराम गनेशराम

यह फर्म यहाँ करीब ७० वर्षों से अपना व्यापार कर रही है। इसके वर्तमान मालिक स्व० सेठ कालूरामजी के पुत्र नरसिंहदासजी है। आप माहेश्वरी वैश्य समाजके हमीरपुर (अलवर

स्टेट) के रहने वाले हैं। इस फर्म की स्थापना सेठ कालूरामजी ने की। आपके पश्चात् आपके भाई गनेशरामजी ने फर्म का संचालन किया। आप लोगों का स्वर्गवास हो गया है।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

राजनाँदगाँव—मेसर्स कालूराम गनेशराम	यहाँ किराने का प्रधान एवं कपड़े और गल्ले का व्यापार होता है। इस फर्म की धान साफ़ करने की एक फेक्टरी भी है।

मेसर्स जीतमल जीवणचन्द

इस फर्म के मालिक लोहावट (जोधपुर स्टेट) के निवासी हैं। आप लोग ओसवाल वैश्य जाति के सज्जन हैं। यह फर्म ६१ वर्ष पूर्व सेठ जीतमलजी ललवानी ने स्थापित की थी। आपका स्वर्गवास हो गया है। वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ जीवणचन्दजी हैं। आप मिलनसार एवं सज्जन व्यक्ति हैं। सार्वजनिक-दान धर्म के कामों में भी आप अनुराग रखते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

राजनाँदगाँव—मेसर्स जीतमल जीवणचन्द	यहाँ सोना, चाँदी, कपड़ा एवं बर्तनों का व्यापार होता है।

मेसर्स जीवनलाल चाँदमल

करीब ४० वर्षों से यह फर्म यहाँ अपना व्यापार कर रही है। इसके स्थापक सेठ जुहारमलजी थे। आपके पश्चात् फर्मका संचालन आपके भाई जीवनलालजी ने किया। आप दोनों ही सज्जनों का स्वर्गवास होगया है। वर्तमान में इस फर्मके मालिक सेठ जीवणलालजीके पुत्र सेठ चाँदमलजी एवं सूरजमलजी हैं। आप खण्डेलवाल सरावगी जाति के सज्जन हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

राजनांदगाँव—मेसर्स जीवनलाल चाँदमल	यहाँ गल्ले का व्यापार और आढ़त का काम होता है। यहाँ आपका दाल का कारखाना भी है।
द्रुग—मेसर्स जीवनलाल चाँदमल	यहाँ गल्ले का व्यापार होता है। यहाँ भी दाल की फैक्टरी है।

मेसर्स दीपचंद मगनमल

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ दीपचंदजी एवं मगनमलजी हैं। आप ओसवाल वैश्य समाज के चौपड़ा सज्जन हैं। आपका मूलनिवास-स्थान सेतरावा (जोधपुर) का है। इस फर्म की स्थापना आप लोगों के पिता सेठ जोरावरमलजी ने करीब ३० वर्ष पूर्व की थी। आपका स्वर्गवास हो गया है। आपके बड़े पुत्र सुगनचंदजी कलकत्ता में जवाहरात की दलाली करते हैं। तथा शेष दोनों भ्राता यहाँ का काम देखते है।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

राजनांदगाँव—मेसर्स दीपचंद मगनमल } यहाँ बैंकिंग, कपड़ा एवं कमीशन एजंसी का काम होता है।

दुग—मेसर्स दीपचंद मगनमल } यहाँ गल्ले का व्यापार और आढ़त का काम होता है।

मेसर्स नैनसुख कनीराम

इस फर्म के मालिक कामठी में रहते हैं। यहाँ यह फर्म पुरानी एवं प्रतिष्ठित मानी जाती है। इसकी और भी शाखाएँ हैं। सब पर प्रायः गल्ले और आढ़त का व्यापार होता है। इसका विशेष परिचय चित्रों सहित इसी ग्रंथ में कामठी में देखना चाहिये। यहाँ यह फर्म गल्ले का व्यापार और आढ़त का काम करती है।

मेसर्स धनजी मुरलीधर

इस फर्म के मालिकों का मूल-निवास-स्थान कुचामन (मारवाड़) का है। आप लोग अग्रवाल जाति के सज्जन हैं। करीब १२५ वर्ष पूर्व इसकी स्थापना पहले पहल कामठी में हुई। इसके स्थापक धनजी सेठ थे। आपके पश्चात् इसका संचालन आपके पुत्र मुरलीधरजी ने सम्हाला। आपका स्वर्गवास हो गया। वर्तमान में इस फर्म के मालिक रामविलासजी हैं। आप योग्य एवं सज्जन व्यक्ति हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

राजनाँदगाँव—मेसर्स धनजी मुरलीधर } यहाँ गल्ला एवं आढ़त का व्यापार होता है।

नेवरा—मेसर्स धनजी मुरलीधर } यहाँ भी गल्ला एवं आढ़त का काम होता है।

स्टेट) के रहने वाले हैं। इस फर्म की स्थापना सेठ कालूरामजी ने की। आपके पश्चात् आपके भाई गनेशरामजी ने फर्म का संचालन किया। आप लोगों का स्वर्गवास हो गया है।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

राजनाँदगाँव—मेसर्स कालूराम गनेशराम } यहाँ किराने का प्रधान एवं कपड़े और गल्ले का व्यापार होता है। इस फर्म की धान साफ करने की एक फेक्टरी भी है।

मेसर्स जीतमल जीवणचन्द

इस फर्म के मालिक लोहावट (जोधपुर स्टेट) के निवासी हैं। आप लोग ओसवाल वैश्य जाति के सज्जन हैं। यह फर्म ६१ वर्ष पूर्व सेठ जीतमलजी ललवानी ने स्थापित की थी। आपका स्वर्गवास हो गया है। वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ जीवणचन्दजी हैं। आप मिलनसार एवं सज्जन व्यक्ति हैं। सार्वजनिक-दान धर्म के कामों में भी आप अनुराग रखते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

राजनाँदगाँव—मेसर्स जीतमल जीवणचन्द } यहाँ सोना, चाँदी, कपड़ा एवं बर्तनों का व्यापार होता है।

मेसर्स जीवनलाल चाँदमल

करीब ४० वर्षों से यह फर्म यहाँ अपना व्यापार कर रही है। इसके स्थापक सेठ जुहारमलजी थे। आपके पश्चात् फर्मका संचालन आपके भाई जीवनलालजी ने किया। आप दोनों ही सज्जनो का स्वर्गवास होगया है। वर्तमान में इस फर्मके मालिक सेठ जीवणलालजीके पुत्र सेठ चाँदमलजी एवं सूरजमलजी हैं। आप खण्डेलवाल सरावगी जाति के सज्जन हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

राजनांदगाँव—मेसर्स जीवनलाल चाँदमल } यहाँ गल्ले का व्यापार और आढ़त का काम होता है। यहाँ आपका दाल का कारखाना भी है।

द्रुग—मेसर्स जीवनलाल चाँदमल } यहाँ गल्ले का व्यापार होता है। यहाँ भी दाल की फैक्टरी है।

मेसर्स दीपचंद मगनमल

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ दीपचंदजी एवं मगनमलजी हैं। आप ओसवाल वैश्य समाज के चौपड़ा सज्जन हैं। आपका मूलनिवास-स्थान सेतरावा (जोधपुर) का है। इस फर्म की स्थापना आप लोगों के पिता सेठ जोरावरमलजी ने करीब ३० वर्ष पूर्व की थी। आपका स्वर्गवास हो गया है। आपके बड़े पुत्र सुगनचंदजी कलकत्ता में जवाहरात की दलाली करते हैं। तथा शेष दोनो भ्राता यहाँ का काम देखते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

राजनांदगाँव—मेसर्स दीपचंद मगनमल	यहाँ बैंकिग, कपड़ा एवं कमीशन एजंसी का काम होता है।
द्रुग—मेसर्स दीपचंद मगनमल	यहाँ गल्ले का व्यापार और आढ़त का काम होता है।

मेसर्स नैनसुख कनीराम

इस फर्म के मालिक कामठी में रहते हैं। यहाँ यह फर्म पुरानी एवं प्रतिष्ठित मानी जाती है। इसकी और भी शाखाएँ हैं। सब पर प्रायः गल्ले और आढ़त का व्यापार होता है। इसका विशेप परिचय चित्रों सहित इसी ग्रंथ में कामठी में देखना चाहिये। यहाँ यह फर्म गल्ले का व्यापार और आढ़त का काम करती है।

मेसर्स धनजी मुरलीधर

इस फर्म के मालिकों का मूल-निवास-स्थान कुचामन (मारवाड़) का है। आप लोग अग्रवाल जाति के सज्जन हैं। करीब १२५ वर्ष पूर्व इसकी स्थापना पहले पहल कामठी मे हुई। इसके स्थापक धनजी सेठ थे। आपके पश्चात् इसका संचालन आपके पुत्र मुरलीधरजी ने सम्हाला। आपका स्वर्गवास हो गया। वर्तमान में इस फर्म के मालिक रामविलासजी हैं। आप योग्य एवं सज्जन व्यक्ति हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

राजनाँदगाँव-मेसर्स धनजी मुरलीधर	यहाँ गल्ला एवं आढ़त का व्यापार होता है।
नेवरा—मेसर्स धनजी मुरलीधर	यहाँ भी गल्ला एवं आढ़त का काम होता है।

कामठी—मेसर्स धनजी मुरलीधर	यहाँ इसका हेड आफिस है। यहाँ मेगनेस एवं लोहे की खदानों का काम होता है। आप कच्चा लोहा निकाल कर विलायत भेजते हैं। तुमसर के पास आपकी खदाने हैं।

मेसर्स प्रताप रघुनाथ

करीब ८० वर्ष पूर्व इस फर्म की स्थापना प्रताप सेठ और रघुनाथजी सेठ के द्वारा कामठी में हुई। आप लोगों का निवास-स्थान साँभर है। आप अग्रवाल वैश्यजाति के सज्जन हैं। आप दोनों भाइयो के पश्चात् आपके पुत्र राधामोहनजी एवं सूरजमलजी ने इस फर्म के काम को सम्हाला। आप दोनों का भी स्वर्गवास हो गया। वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ राधा-मोहनजी के पुत्र रामविलासजी एवं सेठ सूरजमलजी के पुत्र हरिश्चन्द्रजी हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

राजनाँदगाँव—मेसर्स प्रताप रघुनाथ	यहाँ गल्ले का व्यापार और आढ़त का काम होता है।

इसके अतिरिक्त इसी नाम से कामठी, गोंदिया एवं नेवरा बाजार में भी यही काम होता है।

महारामदास हजारीमल

इस फर्म के वर्तमान संचालक सेठ किशनदासजी और सेठ चतुर्भुज जी हैं। इसका हेड आफिस कामठी में है। यहाँ यह फर्म गल्ले का व्यापार करती है। इसका विशेष परिचय इसी ग्रंथ में कामठी के साथ दिया गया है।

मेसर्स मुकनचंद धौंकलचंद

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ धौंकलचंदजी एवं सेठ लखमीचंदजी हैं। आप पांचौड़ी (जोधपुर) निवासी श्रीश्रीमाल सज्जन हैं। यह फर्म करीब ५० वर्ष पूर्व सेठ मुकनचंदजी द्वारा स्थापित हुई थी।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

राजनाँदगाँव—मेसर्स मुकनचंद धौंकलचंद	यहाँ गल्ले का व्यापार एवं कमीशन एजेन्सी का काम होता है।
महोतरा—मेसर्स मुकनचंद धौंकलचंद	यहाँ भी गल्ला एवं बैंकिंग काम का होता है।

बा० सुखलालजी ओसतवाल (सुखलाल सम्पतलाल) राजनांदगांव

बा० दीपचंदजी चोपड़ा (दीपचंद मगनमल) राजनांदगांव

बा० सम्पतलालजी (सुखलाल सम्पतलाल) राजनांदगांव

बा० मगनलालजी चोपड़ा (दीपचंद मगनमल) राजनांदगांव

मेसर्स सुखलाल सम्पतलाल

इस फर्म के मालिक लोहावट (मारवाड़) निवासी ओसतवाल समाज के सज्जन हैं। यह फर्म करीब २ साल से इस नाम से व्यापार कर रही है। इसके पहले इस पर साहबराम सूरजमल नाम पड़ता था। इसकी स्थापना सेठ साहबरामजी द्वारा हुई थी। आपके तीन भाई और थे सेठ सूरजमलजी, सेठ केवलचंदजी और सेठ कस्तुरचंदजी। उपरोक्त फर्म सेठ केवलचंद जी एवं कस्तुरचंदजी के वंशजों की है। वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ सुखलालजी एवं सेठ सम्पतलालजी हैं। आप दोनों ही सज्जन क्रमशः केवलचंदजी एवं कस्तूरचंदजी के यहाँ दत्तक आये हैं। आप लोगों का दान-धर्म-सम्बन्धी कामों में भी अच्छा योग रहता है।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

राजनाँदगाँव—मेसर्स सुखलाल सम्पतलाल } यहाँ सोना चाँदी एवं कपड़ेका व्यापार होता है। कमीशन का काम भी यह फर्म करती है।

गल्ले के व्यापारी—

मेसर्स जीवनलाल चाँदमल
,, धनजी मुरलीधर
,, नैनसुख कनीराम
,, प्रताप रघुनाथ
,, महारामदास हजारीलाल
,, मुकनचंद धोकलचंद
मेसर्स दीपचंद मगनमल
,, सरदारमल हीरालाल
,, सुखलाल सम्पतलाल
,, शिवराज नेमीचंद

कपड़े के व्यापारी—

मेसर्स आईदान जमनालाल
,, जीतमल जीवनचंद

चाँदी-सोना के व्यापारी—

मेसर्स जीतमल जीवनचंद
,, दौलतराम भोमराज
,, सुखलाल सम्पतलाल

किराने के व्यापारी—

मेसर्स कालूराम गनेशराम

गोंदिया

सी० पी० प्रान्त के भण्डारा जिले का प्रधान स्थान है। यह बी० एन० आर० की मेन लाईन का जंकशन स्टेशन है। नागपुर से ७५ मील की दूरी पर यह बसा हुआ है। यहाँ से एक छोटी लाईन नैनपुर होती हुई जबलपुर तक गई है। तथा दूसरी लाईन नागबीर होती हुई चाँदा फोर्ट तक गई है।

यहाँ का प्रधान व्यापार लाख, बीड़ी, एवं चाँवल का है। लाख और बीड़ी के यहाँ बड़े २ कई कारखाने हैं। राईस फैक्टरियाँ भी यहाँ हैं। आसपास जङ्गल आजाने से बीड़ी के पत्ते एवं छोले (पलास) के झाड़ यहाँ बहुत मात्रा में पैदा होते हैं। इसीसे लाख की आमद यहाँ बहुत है। लाख दो फसलों में आती है कार्तिक और बैसाख। इन दोनो में मिलकर करीब १२५००० मन लाख यहाँ से पैदा होकर बाहर जाती है। चाँवल भी यहाँ बहुत पैदा होता है। यहाँ तक कि २, २ लाख थैली तक पोते रहता है। लाख से यहाँ चपड़ा भी बनाया जाता है। बीड़ी के पते भी यहाँ से बाहर जाते हैं। लाख का तौल ४२ सेर के मन से एवं चाँवल का ५ मन की खण्डी से होता है।

कारखानो मे यहाँ ७ लाख के कारखाने, ३ चाँवल की मिलें, एक तेल की मिल और एक काँच का कारखाना है। इनके नाम आगे दिये जायँगे।

यहाँ के व्यापारियों का परिचय इस प्रकार है:—

मेसर्स अयोध्याप्रसाद महाबीरप्रसाद

इस फर्म के मालिक मिर्जापुर के निवासी हैं। यह फर्म यहाँ करीब १५ वर्ष पूर्व बा० महावीरप्रसादजी द्वारा स्थापित हुई। आप जयसवाल समाज के सज्जन हैं। आप बा० अयोध्याप्रसादजी के पुत्र हैं। वर्तमान में इस फर्म के मालिक बा० हनुमानप्रसादजी एवं महादेवप्रसादजी दोनों भाई हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

गोंदिया—मेसर्स अयोध्याप्रसाद महाबीरप्रसाद — यहाँ लाख का व्यापार होता है। तथा चपड़ा तैयार करने की फैक्टरी है।

मेसर्स नैनसुख कनीराम

इस फर्म का हेड आफिस कामठी में है। इसकी सब ब्रांचेज पर गल्ले का व्यापार होता है। कामठी की अच्छी फर्मों में इसकी गिनती है। यहाँ भी यह फर्म गल्ले का व्यापार करती है। इसके मालिक सेठ गौरीशंकरजी तथा मोहनलालजी हैं। इसका विशेष परिचय इसी ग्रन्थ के इसी भाग में कामठी में चित्र सहित दिया गया है।

मेसर्स बालूराम चुन्नीलाल

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ बालूरामजी हैं। आप ही ने करीब ४० वर्ष पूर्व इस फर्म को स्थापित किया। आपका मूल निवासस्थान डेगाना (मारवाड़) है। आप माहेश्वरी वैश्य समाज के सज्जन हैं। आपके देवीकिशनजी नामक एक पुत्र हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

गोंदिया—मेसर्स बालूराम चुन्नीलाल } यहाँ गल्ला एवं कमीशन का काम होता है। तथा गनेश आईल मिल में आपका साझा है।

मेसर्स बुलाखीदास गोपालदास

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ गोपालदासजी मोहता हैं। आपका हेड आफिस हिंगनघाट है। आपका विशेष परिचय इसी ग्रंथ के इसी भाग में हिंगनघाट में दिया गया है। यहाँ यह फर्म अपने मिल के कपड़े का व्यापार करती है। इसके अतिरिक्त श्रीगनेश आईल एण्ड राईस मिल के नाम से आपका एक तेल और चाँवल का मिल है।

मेसर्स रामप्रताम लक्ष्मण राम

इस समय इस फर्म के मालिक सेठ रामप्रतापजी हैं। आपका मूल-निवास-स्थान नीम्बोद (मारवाड़) का है। आप अग्रवाल वैश्य समाज के सज्जन हैं। आप यहाँ के आनरेरी मेजिस्ट्रेट हैं। आपका स्वभाव मिलनसार एवं धार्मिक है। आपने यहाँ एक गणेश मन्दिर एवं कई कुएं बनवाये हैं। यह फर्म करीब ५० वर्षों से सी० पी० में काम कर रही है। आपके पुत्र रोढ़ूलाल जी का स्वर्गवास हो गया है। उनके नाम पर शंकरलालजी को दत्तक लिया है।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

गोंदिया—मेसर्स रामप्रताप लक्ष्मणराम	यहाँ बैंकिंग, सराफी एवं सोने-चाँदी का व्यापार होता है।

मेसर्स रामगोपाल रामकिशन

इस फर्म के मालिक मूँडवा (मारवाड़) के निवासी हैं। आप माहेश्वरी जाति के मुंदड़ा सज्जन हैं। यह परिवार करीब ८० वर्षों से सी० पी० में व्यापार कर रहा है। इस फर्म पर पहले कामठी में नवलराम रामधन और फिर जीवनराम गोपालराम के नाम से व्यापार होता था। संवत् १९६६ से उपरोक्त नाम से व्यापार होता है। इसके वर्तमान मालिक रामगोपालजी के पुत्र रामकिशनजी हैं। आप योग्य एवं सुधरे हुए विचारों के पुरुष हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

गोंदिया—मेसर्स रामगोपाल रामकिशन	यहाँ बैंकिंग, लाख एवं कमीशन एजंसी का काम होता है।

लाख के कारखाने—

अयोध्याप्रसाद महावीरप्रसाद
इसरदास अग्रवाल
खूबचन्द ताराचन्द
डी० के० ब्रदर्स
महावीर हीरालाल
रामप्रताप प्यारेलाल
रामगोपाल रामकिशन
हीरालाल जायसवाल

चाँवल की मिलें—

श्रीगनेश राईस एण्ड आईल मिल
पेमराज जगन्नाथ राईस मिल
वारडोली राईस मिल

काँच का कारखाना—

दी ओनामो ग्लास वर्क्स लिमिटेड

सिवनी

बी० एन० आर० की गोंडिया जबलपूर लाईन पर नैनपुर जंक्शन से आगे अपने ही नाम के स्टेशन पर यह शहर बसा हुआ है। इसकी बसावट बड़ी सुन्दर और रमणीक है। स्टेशन से कुछ ही दूर पर दादूसाहब की एक सुन्दर धर्मशाला मुसाफिरों के ठहरने के लिए बनी हुई है। इस धर्मशाला में सफाई तथा मुसाफिरों के आराम के लिए बहुत उत्तम प्रबन्ध है। सिवनी के अन्तर्गत दर्शनीय स्थानों में यहाँ के जैन मन्दिर बहुत उल्लेखनीय हैं। इनकी पच्चीकारी, सुन्दरता और विशालता देखने ही योग्य है। यहाँ की सार्वजनिक संस्थाओं में सेठ पूरनसाहजी का गोपाल जैन औषधालय, शिखरचन्द जैन पाठशाला और बोर्डिंग हाऊस, गुन्नीबाई जैन सरस्वती आश्रम, गुन्नीबाई जैन महिलाश्रम तथा नेमिचन्द धर्मशाला उल्लेखनीय हैं।

सिवनी की खास पैदावार गेहूँ, चाँवल, अलसी, चना, महुवा, गुल्ली, उरद, लाख, सन और हरड़ हैं। ये सब वस्तुएँ यहाँ से बाहर जाती हैं। तथा बाहर से आनेवाली वस्तुओं में कपड़ा, किराना और जनरल मर्चेण्टाइज प्रधान है। यहाँ पर तौल सब अंग्रेजी है।

यहाँ के व्यापारियो का परिचय इस प्रकार है—

मेसर्स गोपालशाह पूरनशाह

इस प्रतिष्ठित फर्म के वर्तमान मालिक श्रीमान् सेठ पूरनशाहजी हैं। आप उन लोगों में से हैं जिन्होंने अपनी उदारता, दानवीरता और धार्मिकता से इतिहास के पृष्ठों पर अपना नाम अङ्कित कर लिया है। आप दिगम्बर जैन धर्मावलम्बी सज्जन हैं।

सेठ पूरनशाहजी श्रीमान् स्वर्गीय सेठ गोपालशाहजी के यहाँ दत्तक आये हैं। सेठ गोपालशाहजी बड़े शास्त्रानुरागी एवं धर्म-प्रेमी पुरुष थे। अतएव आपके संस्कारों का सेठ पूरनशाहजी पर भी अच्छा असर पड़ा। फल यह हुआ कि जहाँ आपने ज्ञान और अनुभव से फर्म के व्यापार और कारबार को बढ़ाया, वहाँ अपनी उदारता और धर्मप्रेम से कई ऐसी स्मृतियाँ भी स्थापित कर दीं जो दीर्घ काल तक आपके नाम को भारत में गौरव के साथ बनाए रक्खेगी।

सेठ पूरनशाहजी की दोनों धर्मपत्नियों से आपके करीब ११ सन्तानें हुईं, मगर दुर्दैव से उनमें से एक भी जीवित नहीं है। आपके एक पुत्र शिखरचन्दजी तो १५ वर्ष की परिपक्व अवस्था में स्वर्गीय हुए। जिनकी बालविधवा धर्मपत्नी अभी विद्यमान है। दूसरे पुत्र नेमिचन्दजी १२ वर्ष की अवस्था पाकर परलोकगामी हुए। अपने दोनो प्रियपुत्रों की स्मृति मे सेठजी ने बहुत सा द्रव्य खर्च करके कई सार्वजनिक संस्थाओ का निर्माण करवाया। जिनमे श्रीयुत नेमिचन्दजी के स्मारक में सिवनी में श्रीनेमिचन्द धर्मशाला नामक एक विशाल धर्मशाला तथा श्रीसम्मेद शिखर में करीब एक लाख रुपयों के व्यय से एक विशाल मन्दिर का निर्माण करवाया। जिसके प्रतिष्ठा महोत्सव में करीब ४० हजार मनुष्य एकत्रित हुए थे। इसी प्रकार श्रीयुत शिखरचन्दजी के स्मारक में सिवनी में श्री शिखरचन्द जैन पाठशाला और बोर्डिङ्ग, तथा श्री शिखरचन्द म्यूनिसिपल प्रायमरी स्कूल का निर्माण करवाया। इसी प्रकार अपनी धर्मपत्नी श्री गुन्नीबाई के एक असाध्य बीमारी से निरोग होने के उपलक्ष्य में आपने एक लाख रुपयों का दान निकाला जिससे सिवनी में श्री गुन्नीबाई जैन सरस्वती भवन तथा एक महिलाश्रम प्रस्तुत किया गया है। इसके अतिरिक्त आपने एक जैन मन्दिर नासिक में, एक सम्मेद शिखर में तथा एक मन्दिर सिवनी में बनवाया जिनमें से सीवनी का मन्दिर अत्यन्त अच्छा और विशाल है। इसमें किया हुआ संगमरमर, कांच और पच्चीकारी का कार्य्य अत्यन्त दर्शनीय है। यह मन्दिर सीवनी की एक प्रसिद्ध दर्शनीय वस्तु है। इसके अतिरिक्त सेठ साहब ने और भी बहुत से दान किये हैं। जिन सब का उल्लेख यहाँ असम्भव है।

सेठ पूरनशाहजी करीब दस वर्षों तक यहाँ की डिस्ट्रिक्ट कौन्सिल के मेम्बर तथा बीस वर्षों तक म्यूनिसिपैलिटी के वाईस प्रेसिडेण्ट रहे हैं। सरकार ने आपको दरबारी, कुरसी नशीनी फर्स्टक्लास ऑनरेरी मजिस्ट्रेटी तथा रायबहादुर की अत्यन्त प्रतिष्ठासम्पन्न उपाधियाँ प्रदान की हैं। इसी प्रकार जैन समाज की ओर से आपको श्रीमान्, श्रीमन्त, सेठ, दानवीर आदि कई उपाधियाँ मिली है।

आपके इस समय कोई सन्तान न होने की वजह से आपने अपने स्वर्गीय पुत्र शिखरचन्दजी के नाम पर श्रीयुत कुँवर बिरधीचन्दजी को दत्तक लिया है। कुँवर बिरधीचन्दजी भी बड़े विनम्र, सुशील और बुद्धिमान युवक हैं—

फर्म का परिचय इस प्रकार है—

सिवनी—मेसर्स गोपालशाह पूरनशाह—बैङ्किङ्ग और जमीदारी का बहुत बड़ा काम होता है।

रायसाहब दादू रघुनाथ सिंह

इस परिवार का इतिहास बहुत पुराना है। आपके पूर्वज रायबरेली के रहने वाले थे। देवगढ़ के राजा की ओर से आपको "व्योहारी" का पद मिला था। सन् १७२२ में मण्डला के राजा की ओर से व्योहार फूलसिंहजी कायस्थ को बचई का इलाका मिला। बाद में भैरोगढ़ का ताल्लुका भी आपको प्राप्त हुआ। आपके पुत्र डोमनशाह सन् १७२२ की लड़ाई में मारे गये, तब राजा निजामशाह ने खंगरायजी को मय उनकी जागीर और व्योहारी का पद सौंप दिया। सन् १७७९ में खंगरायजी मंडला के राजा का पक्ष लेकर सागर के मराठों से लड़े। इसमें वे काम आये। इस समय भैरोगढ़ का इलाका तबाह हो गया। तब से आपके चार पुत्र लखनादौन में रहने लगे। पश्चात् इनमें से भगवन्तसिंहजी और मोतीरामजी सिवनी में रहने लगे। जिस समय नागपुर के भौंसलों ने खंग भारती गुसांई को सिवनी का सूबेदार बनाया उस समय भगवंतसिंहजी नायब का काम करते थे। तथा आपके भाई देशमुखी का काम देखते थे। अंग्रेजी सल्तनत तक आप इसी पद पर काम करते रहे। आपके पश्चात् आपके पुत्र भैरोसिंहजी भी इसी पद पर रहे। आपका स्वर्गवास हो गया। आपके स्वर्गवास के समय में दादू गुलाबसिंहजी छोटी वय के थे। अतएव स्टेट का प्रबंध कोर्ट आफ वार्डस के अंडर में था। आपके बालिग होने पर आपने अपनी योग्यता का परिचय दिया। आप बड़े प्रतापी और उदार थे। भारत सरकार ने आपको रायबहादुर की पदवी प्रदान की थी। आपने यहाँ एक सुन्दर धर्मशाला बनवाई जो आज भी उसी रूप मे खड़ी है और भी कई जगह आपने दान दिया। आपका स्वर्गवास सन् १९१२ में हुआ। आपके ४ पुत्र हुए। जिनमें से तीन सज्जनों का स्वर्गवास हो चुका है। जिनके नाम क्रमशः विश्वनाथसिंहजी, विशंभरनाथसिंहजी और जयनाथसिंहजी था।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक चौथे पुत्र दादू रघुनाथसिंहजी एवं विशंभरनाथसिंहजी के पुत्र द्वारकानाथसिंह एवं जयनाथसिंहजी के पुत्र महेन्द्रनाथसिंहजी और रूपनाथसिंहजी हैं। इस परिवार में सभी सज्जन पढ़े लिखे हैं। कई सज्जन रायबहादुर और रायसाहब की पदवी से सम्मानित हैं। यह परिवार यहाँ का अग्रगण्य परिवार है। इस समय इस परिवार के पास ९७ मौजे की जमींदारी है।

इसका परिचय इस प्रकार है—

सिवनी—रायसाहब दादू रघुनाथसिंह } यहाँ बैङ्किग एवं जमींदारी का काम होता है।

मेसर्स शिवनारायणदास प्रभुदयाल

इस फर्म के मालिक नारनोल (पटियाला) निवासी अग्रवाल वैश्य समाज के सज्जन हैं। इस फर्म के पूर्व पुरुष करीब १०० वर्ष पहले महूकेंट, कामठी और कटंगी होते हुए यहाँ आये। शुरू २ में इसकी स्थापना सेठ ठाकुरदासजी ने की थी। आपके २ पुत्र हुए रायबहादुर लाला ओंकारदासजी एवं ला० शिवनारायणदासजी। ला० ओंकारदासजी बड़े प्रतिभा सम्पन्न और प्रतिष्ठित व्यक्ति हो गये हैं। आपने तथा सेठ शिवनारायणदासजी ने फर्म की बहुत उन्नति की। व्यापार के साथ २ आपने जमींदारी भी खरीद की। सेठ ओंकारदासजी आनरेरी मेजिस्ट्रेट भी रह चुके थे। आप दोनों ही का स्वर्गवास हो गया है। स्वर्गवासी होने के पूर्व ही आप दोनों भाई अलग २ हो गये थे। लाला ओंकारदासजी के ३ पुत्र हुए। ला० महानन्दरायजी, (दत्तक लिये हुए), नर्मदाप्रसादजी और प्रभुदयालजी। इनमें से प्रभुदयालजी सेठ शिवनारायणदासजी के यहाँ दत्तक रहे। वर्तमान में यह फर्म सेठ शिवनारायणदासजी के पुत्र प्रभुदयालजी की है। आप योग्य सज्जन हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

सिवनी—मेसर्स शिवनारायणदास प्रभुदयाल } यहाँ बैंकिंग हुंडी चिट्ठी एवं जमींदारी का काम होता है।

चाँदी-सोना के व्यापारी

मेसर्स तिलोकचन्द गनेशदास

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ माणिकचन्दजी और सेठ दुलिचन्दजी हैं। आप लोग ओसवाल समाज के गजरुप-देसर (बीकानेर) के निवासी हैं। करीब ७० वर्ष पूर्व इस फर्म की स्थापना आपके पितामह सेठ तिलोकचन्दजी के द्वारा हुई। आपके पश्चात् फर्म का संचालन आपके पुत्र सेठ गनेशदासजी ने किया। आप लोगों के समय में फर्म की अच्छी उन्नति हुई। वर्तमान में यह फर्म यहाँ अच्छी मानी जाती है।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

सिवनी—मेसर्स तिलोकचन्द गनेशदास } यहाँ बैंकिङ्ग, सोना चाँदी एवं मालगुजारी का काम होता है।

सेठ रामप्रतापजी (रामप्रताप लक्ष्मीनारायण) गोंदिया

स्व० सेठ हजारीलालजी (जवाहरमल हजारीलाल) छिंदवाड़ा

सेठ टेकचन्दजी (कपूरचन्द टेकचन्द) सिवनी

व्यापारी

नेशदास

और सेठ दुलिचन्दजी हैं। आप लोग
हैं। करीब ७० वर्ष पूर्व इस फर्म की
ई। आपके पश्चात् फर्म का संचालन
समय मे फर्म की अच्छी उन्नति हुई।

ना चाँदी एवं मालगुजारी का काम

मेसर्स पूनमचन्द किशनलाल

इस फर्म के मालिक देशनोक (बीकानेर) निवासी ओसवाल जाति के सज्जन हैं। यह फर्म यहाँ करीब ७० वर्ष से अपना व्यापार कर रही है। इसकी स्थापना सेठ भैरोदानजी द्वारा हुई। आपके पश्चात् इस फर्म के काम को क्रमशः गिरधारीलालजी, अगरचन्दजी, पूनमचन्दजी और किशनलालजी ने सम्हाला। सेठ पूनमचन्दजी का स्वर्गवास सं० १९९५ में हुआ। आपके २ पुत्र हैं बा० रतनचन्दजी और रामचन्द्रजी। इनमें से रतनचन्दजी गिरधारीलालजी के पुत्र हरकचन्दजी के यहाँ दत्तक गये हैं। सेठ किशनलालजी के भी २ पुत्र हैं। जिनके नाम क्रमशः कपूरचन्दजी और सूरजमलजी हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

सिवनी—मेसर्स पूनमचन्द किशनलाल } यहाँ बैंकिङ्ग, जमींदारी एवं चाँदी-सोने का व्यापार होता है।

कपड़े के व्यापारी

मेसर्स कपूरचंद टेकचंद

इस फर्म की स्थापना करीब ५० वर्ष पूर्व टेकचंदजी ने की। आपका निवासस्थान यहीं का है। आपके हाथों ही से इस फर्म की उन्नति हुई। आपके २ भाई और थे जिनका नाम सेठ हुकुमचंदजी एवं सेठ पन्नालालजी था। आप दोनों का स्वर्गवास हो गया है।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ टेकचंदजी एवं आपके पुत्र चुन्नीलालजी, विरदीचंदजी, मोतीलालजी और आपके भाई स्व० हुकुमचंदजी के पुत्र कोमलचंदजी एवम सुमेरचंदजी हैं। आप लोग शिक्षित और योग्य हैं। इस फर्म की ओर से दानधर्म भी काफी किया गया है।

इसका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

सिवनी—मेसर्स कपूरचंद टेकचंद } यहाँ बैंकिंग और कपड़े का व्यापार होता है।

मेसर्स बहादुरमल लखमीचंद

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ लखमीचंदजी है। आपकी आयु इस समय ७० वर्ष की है। इस फर्म की स्थापना आपके पिता बहादुरमलजी ने १०० वर्ष पूर्व की थी। आपका मूल

निवासस्थान करनीमाता का मठ (बीकानेर) है। सेठ लखमीचंदजी ने यहाँ मन्दिर वगैरह बनवाने में पर्याप्त समय एवं शक्ति खर्च की है। आप करीब ४० वर्ष तक म्युनिसिपेलिटी के मेम्बर रहे। तथा समय २ पर आपको भारत सरकार ने सार्टिफिकेट भी दिये हैं। आपके छोटे भाई बिरदीचंदजी का छोटी उम्र में ही स्वर्गवास होगया।

सेठ लखमीचंदजी के २ पुत्र हैं जिनके नाम सेठ केसरीचंदजी एवं ताराचंदजी हैं। सेठ केसरीचंदजी के २ पुत्र श्रीयुत् डालचंदजी एवं कस्तुरचंदजी और श्रीयुत ताराचंदजी के भी २ पुत्र हैं इन्द्रचंद्रजी एवं दीपचंदजी। श्रीडालचंदजी और कस्तुरचंदजी कपड़े की दुकान का संचालन करते हैं। दीपचंदजी खदान का काम देखते हैं। यहाँ आपकी घोघरी कालेरी के नाम से २ कोयले की खदाने हैं मगर कोयले की बहुत मन्दी होने से कुछ समय से ये बन्द है।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

सिवनी—मेसर्स बहादुरमल लखमीचंद	यहाँ कपड़ा, सोना चाँदी एवं कोयले का व्यापार होता है। यहाँ आपकी घोघरी कॉलेरी के नाम से २ कोयले की खानें हैं।

गल्ले के व्यापारी

मेसर्स शिवजीराम परमानंद

इस फर्म के मालिक बलौदा (जयपुर) के निवासी अग्रवाल वैश्य जाति के सज्जन हैं। इस फर्म की स्थापना संवत् १९४० में सेठ परमानंदजी द्वारा हुई और आपही के द्वारा इस फर्म की तरक्की भी हुई। आपके इस समय ४ पुत्र है। जिनके नाम क्रमशः वंशीलालजी, सूरजमलजी, चाँदमलजी और रामनाथजी हैं। प्रथम तीन व्यापार में भाग लेते हैं और एक पढ़ते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

सिवानी—मेसर्स शिवजीराम परमानंद	यहाँ सन, गल्ला और आढ़त का काम होता है। यह फर्म सन का डायरेक्ट विलायत एक्सपोर्ट करती है।
छिंदवाड़ा—मेसर्स शिवजीराम परमानंद	यहाँ गल्ले का व्यापार तथा कमीशन का काम होता है।

पलारी—शिवजीराम परमानंद	यहाँ भी गल्ले का व्यापार होता है।
बम्बई—शिवजीराम परमानंद कालबा देवी	यहाँ एक्सपोर्टिंग बिजिनेस होता है।

मेसर्स सेढ़मल जयनारायण

यह फर्म करीब ४० वर्ष से गल्ले का व्यापार कर रही है। इसके स्थापक सेढ़मलजी थे। आपके पश्चात् इसका संचालन आपके पुत्र जयनारायणजी तथा मुन्नालालजी ने किया। आप लोगों के समय में इसकी बहुत उन्नति हुई। आपका भी स्वर्गवास हो गया है। वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ जयनारायणजी के पुत्र गेंदालालजी, फूलचंदजी एवं केसरीचंदजी तथा सेठ मुन्नालालजी के पुत्र खेमकरनजी हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

सिवनी—मेसर्स सेढ़मल जयनारायण	यहाँ गल्ले का व्यापार और आढ़त का व्यापार होता है।
छिंदवाड़ा—मेसर्स सेढ़मल जयनारायण	यहाँ शक्कर का कारखाना है तथा गल्ले का व्यापार होता है।
मंडला—मेसर्स सेढ़मल जयनारायण	यहाँ गल्ले और किराने का व्यापार होता है।
चौराई—(छिंदवाड़ा) जयनारायण मुन्नालाल	यहाँ गल्ले का व्यापार और आढ़त का काम होता है।

मेसर्स रतनचंद दीपचंद

इस फर्म के मालिक यहीं के निवासी हैं। आप परवार समाज के सज्जन हैं। यह फर्म करीब ४०, ५० वर्षों से किराने का व्यापार कर रही है। इसकी स्थापना सेठ रतनचंदजी द्वारा हुई थी। इस समय इस फर्म के मालिक आपके पुत्र सेठ दीपचंदजी, कालूरामजी और फतेचंदजी हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

सिवनी—मेसर्स रतनचंद दीपचंद	यहाँ किराने का बड़ा व्यवसाय होता है।

छिंदवाड़ा

छिंदवाड़ा बी. एन. आर. की छोटी लाईन का जंकशन स्टेशन है। एक लाइन जबलपुर से नैनपुर सिवनी होती हुई यहाँ आती है। दूसरी लाइन यहाँ से नागपुर को जाती है। एवं तीसरी लाइन परासिया को जाती है। जहाँ वह जी. आइ. पी. की इटारसी-आमलावाली लाइन को मिलाती है। छिंदवाड़ा जिले का प्रधान स्थान है। यह चारों ओर पहाड़ों से घिरा हुआ है। यहाँ की बसावट ऊँची नीची एवं लम्बी है। यहाँ एक सुन्दर तालाब भी है। जो इसकी सुन्दरता को बढ़ाता है। यहीं के एक सेठ ने यहाँ धर्मशाला भी बनवा दी है।

छिंदवाड़ा का प्रधान व्यापार कोयले का है। इस स्थान के पास ही कोयले की कई खदानें हैं। यहाँ का कोयला उत्तम श्रेणी का माना जाता है। इसके पश्चात् यहाँ की दूसरी पैदावार हर्रे की है। यह करीब १ लाख मन बाहर जाती है। यह भी जंगलों ही से यहाँ आती है। इसके सिवाय गेहूँ, उर्द, चना, मूँग, जुवार, बरबटी, तुवर, राजगिरा, गुल्ली, महुआ, कपास, सन, चारोली (चिरोंजी) अरंडी, तिल्ली, जगनी (रहमतीला) अलसी, घी और मसूर भी यहाँ पैदा होती है तथा मौसिम एवं फसल के अनुसार बाहर जाती है। यहाँ का इम्पोर्ट व्यापार विशेष उल्लेखनीय नहीं है। कारखानों में यहाँ शावालेस कम्पनी की जीनिंग और प्रेसिंग फैक्टरी है।

यहाँ का तोल चारोली, घी, हर्रे एवं सन के लिये ४० सेर के मन का होता है। अनाज का वजन १०० भर की पाई, ८ पाई का कुडो, और २० कुडों की खंडी से माना जाता है। आईल शीड्स के लिये ४ मन की खण्डी, अरंडी के लिये ३-½ मन की खंडी एवं गुल्ली के लिये ३ मन की खण्डी से व्यवहार होता है।

यहाँ के व्यापारियों का परिचय इस प्रकार है—

मेसर्स कचौरीमल सुखलाल

इस फर्म के मालिक खण्डेलवाल जैन समाज के मारोठ (मारवाड़) निवासी हैं। यह फर्म करीब १०० वर्ष पूर्व सेठ कचौरीमलजी ने स्थापित की। शुरू २ में इस फर्म पर साधारण

स्व० सेठ सुखलालजी पाटनी (कचौरीमल सुखलाल) छिन्दवाड़ा

रायसाहब सेठ लालचन्दजी पाटनी (कचौरीमल सुखलाल) छिन्दवाड़ा

बाबू देवेन्द्रकुमारजी S/O सेठ लालचन्दजी पाटनी

सेठ राधाकृष्णजी काबरा (चम्पालाल गुलाबचन्द)

दुकानदारी का काम होता था। इस फर्म की विशेष तरक्की आपके तथा आपके भाई सेठ सुखलालजी के द्वारा हुई। सेठ सुखलालजी यहाँ के प्रतिष्ठित व्यक्ति हो गये हैं। आप यहाँ के म्युनिसिपल मेम्बर, डिस्ट्रीक्ट बोर्ड मेम्बर, आनरेरी मजिस्ट्रेट एवं ट्रेभरर थे। आपका स्वर्गवास हो गया है।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक सुखलालजी के पुत्र रायसाहब सेठ लालचन्दजी पाटनी हैं। आपने फर्म की बहुत उन्नति की है। आप भी यहाँ के म्युनिसिपल मेम्बर, डिस्ट्रीक्ट कौंसिल के चेअरमन, आनरेरी मेजिस्ट्रेट, कोआपरेटिव्ह बैंक के मेम्बर आदि हैं। आपका प्रायः सभी संस्थाओं से सम्बन्ध है। आपके एक पुत्र श्री देवेन्द्र कुमारजी हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

छिंदवाड़ा—मेसर्स कचौरीमल सुखलाल	यहाँ बैंकिंग, हुंडी, चिट्ठी, महाजनी लेन-देन और जमींदारी का काम होता है। यह फर्म कोयलों की खदानों की बैंकर हैं।

मेसर्स खेमचन्द लखमीचन्द

इस फर्म की स्थापना करीब १०० वर्ष पूर्व कुम्हेड़ी (टीकमगढ़) निवासी सेठ भूरा साहु के द्वारा हुई थी। इसकी विशेष उन्नति सेठ खेमचन्दजी के द्वारा हुई। आप व्यापार कुशल व्यक्ति थे। आप सवाई सिंघई के नाम से सम्बोधित होते थे। आप धार्मिक विचारों के सज्जन थे। आपने जैन धर्म के कामों में हजारों रुपया खर्च किया। आप यहाँ के आनरेरी मजिस्ट्रेट, म्युनिसिपल मेम्बर आदि रहे। आपका स्वर्गवास हो गया। आपके ६ माह के पश्चात् ही आपके पुत्र सेठ लखमीचन्दजी का भी स्वर्गवास हो गया। आप भी यहाँ के आनरेरी मजिस्ट्रेट वगैरह थे। वर्तमान में इस फर्म का संचालन सेठ लखमीचन्दजी की धर्म पत्नी श्रीमती छितिया बाई करती हैं। आपका भी धार्मिक जीवन ही विशेष है। इस फर्म पर साहुकारी लेन-देन बैंकिंग और मालगुजारी का काम होता है।

मेसर्स खुनकेलाल रतनलाल

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ खुनकेलाल के दत्तक पुत्र सेठ रतनलालजी हैं। आप लोगों का निवासस्थान यहीं है। यह फर्म इस नाम से करीब ३० वर्षों से काम कर रही है। इसकी उन्नति खुनकेलालजी ही के जमाने में हुई। इस फर्म पर बैंकिंग और जमींदारी का काम होता है।

मेसर्स चम्पालाल गुलाबचन्द

इस फर्म के मालिक माहेश्वरी समाज के काबरा सज्जन हैं। यह फर्म करीब ८० वर्ष पूर्व रेवासा (सीकर-राजपूताना) निवासी सेठ बिशनीरामजी द्वारा स्थापित हुई। इसको विशेष उत्तेजन आपके पुत्र सेठ रामदेवजी ने दिया। आपके पश्चात् श्रीयुत चम्पालालजी एवं गुलाबचंदजी हुए। आप लोगो के समय में भी अच्छी उन्नति हुई। मगर आप लोगों का देहान्त युवावस्था में ही हो गया।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक राधाकृष्णजी हैं। आप इस समय नाबालिग हैं अतएव फर्म का संचालन बा० कन्हैयालालजी जाकोटिया एवं शिवनारायणजी बापेचा करते हैं। आप दोनों ही सज्जनों का पब्लिक जीवन सराहनीय है। इस फर्म की ओर से सार्वजनिक कामों में अच्छी सहायता प्रदान की जाती है। आपकी ओर से यहाँ एक मन्दिर बना हुआ है।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

छिंदवाड़ा—मेसर्स चम्पालाल गुलाबचन्द — यहाँ बैंकिंग, हुंडी, चिट्ठी, सोना, चाँदी एवं जमींदारी का काम होता है।

मेसर्स जवाहरमल हजारीलाल

इस फर्म की स्थापना करीब १००, १२५ वर्ष पूर्व सेठ गुमानीरामजी पाटनी के द्वारा हुई। आपका निवासस्थान लूनवाँ (जोधपुर) का था। इस फर्म पर पहले मेसर्स गुमानी रामकेसरीमल नाम पड़ता था। आप दोनों का स्वर्गवास हो गया है। आपके पश्चात् आपके पुत्र सेठ जवाहरमलजी ने इस फर्म के काम का संचालन किया। आपके समय में इस फर्म की अच्छी उन्नति हुई। आपके पश्चात आपके दत्तक पुत्र सेठ हजारीमलजी ने फर्म के काम को संचालित किया। आपके जमाने में तो यह फर्म बहुत उन्नति कर गई। आप यहाँ के प्रतिष्ठित रईस, म्युनिसिपल मेम्बर, दरबारी, ऑनरेरी मजिट्रेट और बैंकर थे। आपका स्वर्गवास हो गया है।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ हजारीलालजी के पुत्र बा० घीसूलालजी तथा हरकचंदजी हैं। आप लोग इस समय नाबालिग हैं। अतएव फर्म का संचालन सेठ हजारीलालजी के छोटे भाई बा० छोगालालजी करते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

छिंदवाड़ा—मेसर्स जवाहरमल हजारीलाल — यहाँ बैंकिंग, हुण्डी, चिट्ठी, साहुकारी लेन-देन एवम् मालगुजारी और सोना-चाँदी का व्यापार होता है।

हजारीलाल

हजारीलाल

स्व० सेठ नरसिंहदासजी चाण्डक (नरसिंहदास गिरधारीलाल) छिन्दवाड़ा
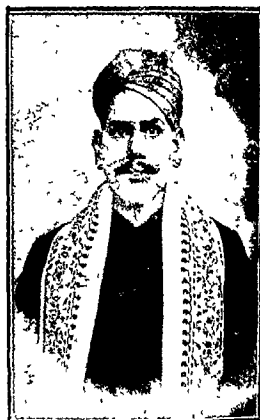
सेठ गुलाबचन्दजी बाकलीवाल (प्रतापमल गणेशीलाल) छिन्दवाड़ा

स्व० सेठ गिरधारीलालजी चाण्डक (नरसिंहदास गिरधारीलाल) छिन्दवाड़ा

बाबू कन्हैयालालजी चाण्डक (नरसिंहदास गिरधारीलाल) छिन्

मेसर्स नरसिंहदास गिरधारीलाल

यह फर्म इस नाम से सन् १९१० से व्यापार कर रही है। इसके पहले इस फर्म पर मोहकमचन्द नरसिंहदास के नाम से व्यापार होता था। इस फर्म के मालिक जेसलमेर के निवासी माहेश्वरी जाति के चांडक सज्जन हैं। इन पर शुरू से ही महाजनी देन-लेन का व्यापार होता चला आ रहा है। इसके वर्तमान मालिक सेठ कन्हैयालालजी हैं। आप अभी नाबालिग हैं। आप मोहगाँव (छिंदवाड़ा) में, जहाँ इस फर्म का हेड आफिस है, निवास करते हैं। इस फर्म का संचालन यहाँ के मुनीम श्रीरामकृष्णजी करते हैं। यो तों इस फर्म की स्थापना सेठ मोहकमचंदजी ने की थी। मगर इसकी प्रधान उन्नति का श्रेय इनके पुत्र नरसिंहदासजी को तथा नरसिंहदासजी के पुत्र गिरधारीलालजी को है। आप दोनों सज्जनों के हाथ से इस फर्म ने बहुत तरक्की की। आप दोनों सज्जनों का स्वर्गवास हो गया है। इस फर्म के वर्तमान मालिक इन्हीं गिरधारीलालजी के पुत्र हैं।

इस फर्म की ओर से बाढ़मेर (राजपुताना) एवम् गिरिराज में एक २ धर्मशाला बनी हुई है। यहां आपकी ओर से नरसिंह लायब्रेरी चल रही है।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

छिंदवाड़ा—मेसर्स नरसिंहदास गिरधारीलाल	यहां बैंकिंग, हुंडी, चिट्ठी और महाजनी देन-लेन का काम होता है।
मोहगांव—मेसर्स नरसिंहदास गिरधारीलाल	यहां जमीदारी एवम् बैंकिंग का काम होता है। आपकी जमींदारी करीब ४२ गांवों में है।
सावनेर (नागपुर) मेसर्स नरसिंहदास गिरधारी लाल	यहां कॉटन और बैंकिंग का काम होता है। यहां आपकी एक जिनिंग और एक प्रेसिंग फेक्टरी है।

मेसर्स प्रतापमल गनेशीलाल

इस फर्म के मालिकों का मूल निवासस्थान लूलवां (जोधपुर) का है। आप लोग खण्डेलवाल वैश्य समाज के सज्जन हैं। करीब ८० वर्ष पूर्व इस फर्म की स्थापना सेठ प्रतापमलजी के द्वारा हुई। आपके पश्चात् इस फर्म के काम का संचालन आपके पुत्र सेठ गनेशीलालजी ने किया। आपने फर्म की अच्छी उन्नति की। आप दोनों का स्वर्गवास हो गया है।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ गुलाबचंदजी बाकलीवाल हैं। आप सेठ गनेशीलालजी के सामने ही दत्तक आ गये थे। आपने फर्म की बहुत ज्यादा उन्नति की। इस समय आप

लोकल बोर्ड के प्रेसिडेण्ट, डिस्ट्रीक्ट कौन्सिल के वाइस प्रेसिडेण्ट, म्युनिसिपल मेम्बर आदि हैं। आप कोआपरेटिव बैंक के खजांची भी हैं। खद्दर से आपको विशेष प्रेम है।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

छिंदवाड़ा—मेसर्स प्रतापमल गनेशीलाल — यहां बैंकिंग, साहुकारी देन-लेन, जमीदारी, गल्ला एवं चांदी सोने का व्यापार होता है।

मेसर्स रामलाल शिवलाल

इस फर्म के मालिक धनवाँ (जेसलमेर) निवासी पल्लीवाल ब्राह्मण समाज के सज्जन हैं। इसकी स्थापना सेठ प्रेमराजजी ने जिन्हे दादू साहब भी कहते थे, करीब १०० वर्ष पूर्व की थी। उस समय आपने भोंसलों से गांवों की ठेकेदारी का काम किया था। उसी मे आपने अच्छी सफलता प्राप्त की। आपके पश्चात् इस फर्म का संचालन आपके भाई सेठ रामलालजी ने किया। आपके समय में भी अच्छी सफलता रही। आप धार्मिक विचारों के सज्जन थे। आप का भी स्वार्गवास हो गया है।

सेठ शिवलालजी वर्तमान में इस फर्म के मालिक हैं। आप शिक्षित सज्जन हैं। आप सी० पी० कौन्सिल के मेम्बर रह चुके हैं। साथ ही लोकल बोर्ड एवम् सेनिटेशन के भी आप मेम्बर रहे। आपका निवास मोहगाँव में होता है। वहीं आप जमींदारी का काम देखते हैं। इस फर्म पर उम्मेदमलजी पाटनी मुनीमात का काम करते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

छिंदवाड़ा—मेसर्स रामलाल शिवलाल — यहाँ बैंकिंग, हुंडी चिट्ठी और जमींदारी का काम होता हैं।

मोहगाँव—मेसर्स रामलाल शिवलाल — यहाँ भी उपरोक्त व्यापार होता है। आपकी जमींदारी ४२ गांवों में है।

इसके अतिरिक्त उमरेठ, चिमनखापा आदि स्थानों पर भी आपका व्यापार होता है।

मेसर्स लाला साहु कन्हैया साहु

इस फर्म के मालिक परासिवनी (नागपुर) के घरई जाति के सज्जन हैं। इसके वर्तमान मालिक लाला कन्हैया साहु हैं। यह फर्म बहुत समय से व्यापार कर रही है। इस पर पहले इसनाजी छन्नू साहु के नाम से कारबार होता था। इसकी स्थापना इसनाजीसाहु ने
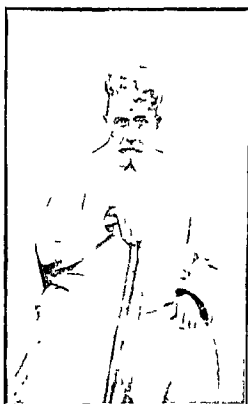
स्व० सवाई सिघई सेठ खेमचन्दजी छिन्दवाड़ा ।

पं० रामलालजी (रामलाल शिवलाल) छिन्दवाड़ा ।

स्व० सवाई सिघई सेठ लखमीचन्दजी छिन्दवाड़ा ।
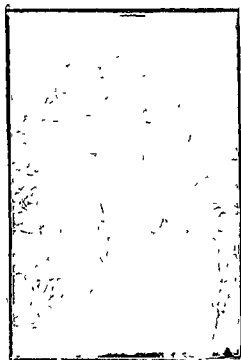
पं० शिवलालजी शर्मा (रामलाल शिवलाल) छिन्दवाड़ा

की थी। आपके पश्चात् इसका संचालन आपके पुत्र धन्ना साहु, लाला साहु और जगन्नाथ साहु ने किया। इसके वर्तमान मालिक लाला कन्हैया साहु यहाँ आनरेरी मेजिस्ट्रेट हैं। इस फर्म पर साहुकारी देन-लेन, बैंकिंग और जमींदारी का काम होता है। इसी नाम से आपकी २ दुकानें और हैं जहाँ पीतल के बर्तन और कपड़े का व्यापार होता है। यह यहाँ प्रतिष्ठित फर्म मानी जाती है।

गल्ले के व्यापारी

मेसर्स जयकिशनदास मूलचंद

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ मूलचंद जी एवंम् टोल्लूरामजी हैं। आप लोग डीडवाना (जोधपुर) निवासी अग्रवाल वैश्य समाज के सज्जन हैं। यह फर्म करीब २५ वर्ष से गल्ले का व्यापार कर रही है। यहाँ इस फर्म की स्थापना जयकिशनदासजी के पुत्र सेठ नरसिंह-दासजी ने की। वर्तमान में इसके मालिक नरसिंहदासजी के भाई हैं। आपकी ओर से यहाँ स्टेशन के पास एक धर्मशाला बनी हुई है।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

छिंदवाड़ा—मेसर्स जयकिशनदास मूलचंद — यहाँ गल्ले का व्यापार और आढ़त का काम होता है।

मेसर्स शिवजीराम परमानंद

इस फर्म का हेड आफिस सिवनी में है। इसकी और भी शाखाएं हैं। उन सब पर प्रायः गल्ले का व्यापार होता है। इसका विस्तृत परिचय इसी ग्रंथ में सिवनी में छापा गया है यहाँ यह फर्म गल्ले का व्यापार एवं आढ़त का काम करती है।

मेसर्स सैढमल जयनारायण

इस फर्म का हेड आफिस भी सिवनी ही है। यहाँ यह फर्म गल्ले एवं शक्कर का व्यापार करती है। इसकी और भी शाखाएं हैं। जिनका विस्तृत परिचय इसी ग्रंथ में सिवनी में छापा गया है।

व्यापारियों के पते—

कपड़े के व्यापारी—

मेसर्स केसरीमल सुवालाल
„ गोकुलप्रसाद श्यामलाल
„ गुलाबचंद मोतीलाल
„ चुन्नीलाल हजारीमल
„ बुधमल चाँदमल
„ मोतीलाल चेनसुख

ग्रेन मरचेंट्स—

मेसर्स अहमद हाजी तैय्यब
„ ताराचंदसाहु चेतरामसाहु
„ पूँजा भाई मूलजी
„ महमदहाजी तैय्यब
„ शिवजीराम परमानंद
„ सेढमल जयनारायण

चाँदी-सोने के व्यापारी—

मेसर्स जवाहरमल हजारीलाल
„ पूरनलाल जीवनलाल
„ प्रतापमल गनेशीलाल
„ बुधमल चाँदमल

किराने के व्यापारी—

मेसर्स अलिमहम्मद ईसा
„ अहमद हाजी तैय्यब
„ चेतराम साहु टीकाराम साहु
„ महमद हाजी तैय्यब
„ रामवतार सुखदयाल

बैंकर्स एण्ड लैंडलार्डस—

मेसर्स कचौरीमल सुखलाल
„ खेमचंद लखमीचंद
„ चम्पालाल गुलाबचंद
„ जवाहरमल हजारीलाल
„ नरसिंहदास गिरधारीदास
„ रा० ब० मथुराप्रसाद मोतीलाल एण्ड संस
„ रामलाल शिवलाल
„ लालासाहु कन्हैयासाहु

जनरल मरचेंट्स—

मेसर्स अकबर अली जमात अली
दी मेंहदी बाग शाप
मेसर्स रघुनन्दन शिवनन्दन

स्व० सेठ लक्ष्मीचन्दजी गोठी (प्रतापमल लखमीचन्द) बैतूल। सेठ मिश्रीलालजी गोठी (प्रतापमल लखमीचन्द) बैतूल।

धर्मशाला इटारसी (प्रतापमल लखमीचन्द) बैतूल।
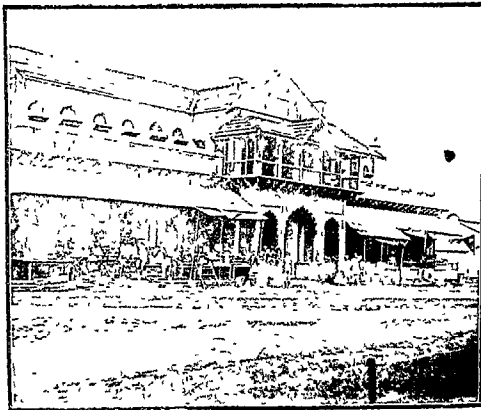
बैतूल-बिदनूर

सी० पी० प्रांत के अपने ही नाम के जिले का हेड क्वार्टर है। यह जी० आई० पी० रेल्वे की इटारसी-आमला-नागपूर वाली ब्रेंचलाइन का बड़ा स्टेशन है। यहाँ से इटारसी वगैरह स्थानों पर मोटर सर्विस भी रन करती है। जिले का प्रधान स्थान होने से एवं आसपास छोटे छोटे देहातों के आ जाने से वहाँ का सब माल यहीं के बाजार में आता है। इस माल को यहाँ के व्यापारी खरीद कर बाहर एक्स पोर्ट करते हैं।

इस जिले की पैदावार में चिरोंजी, हर्रें, महुआ, गुली, सन, गुड़ एवं सागवान की लकड़ी प्रधान है। गल्ला भी यहाँ पैदा होता है मगर कम। चिरोंजी करीब ४००० बोरे, महुआ, हर्रें ७०, ८० हजार बोरे, गुली ३० हजार बोरे, बाहर जाते हैं। सन भी पहले काफी पैदा होता था मगर आजकल १५००० मन के करीब बाहर जाता है। इसके अतिरिक्त गुड़ की भी पैदावार कम हो गई है फिर भी मौसिम में २० हजार मन बाहर चला जाता है। सागवान की लकड़ी भी इस जिले से करीब ६ लाख रुपयों की बाहर जाती है।

बाहर से आने वाले माल में कपड़ा, किराना प्रधान है। डिस्ट्रीव्यूटिंग स्टेशन होने से यहाँ अच्छी गति विधी है। यहाँ के व्यापारियों का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है—

मेसर्स प्रतापमल लखमीचन्द

इस प्रतिष्ठित फर्म के मालिक रास (जोधपुर-स्टेट) के निवासी हैं। आप ओसवाल वैश्य जाति के गोठी सज्जन हैं। करीब १०० वर्ष पूर्व सेठ प्रतापमलजी के पिता शेरमलजी ने यहाँ अपना व्यवसाय स्थापित किया। आपके पश्चात् आपके पुत्र सेठ प्रतापमलजी ने उपरोक्त नाम से व्यापार आरम्भ किया। आपके पश्चात् आपके पुत्र सेठ लखमीचन्दजी हुए। आप यहाँ के बड़े प्रतिष्ठित व्यक्ति हो गये हैं। आपने इस फर्म की बहुत उन्नति की। आप यहाँ के ऑनरेरी मेजिस्ट्रेट थे। आपके लिये आर्म्स एक्ट माफ था। आपके तिलोकचंदजी नामक एक भाई थे। आप दोनों का स्वर्गवास हो गया। सेठ तिलोकचन्दजी के कोई पुत्र न था।

सेठ लखमीचन्दजी के ६ पुत्र हुए जिनके नाम सेठ मिश्रीलालजी (मानकचंदजी) मेघराजजी, धनराजजी, पन्नराजजी, केसरीचंदजी, दीपचंदजी और फूलचंदजी हैं। इनमें से श्रीधनराजजी का स्वर्गवास हो गया है। श्रीयुत् मिश्रीलालजी तिलोकचंदजी के यहाँ दत्तक हैं। आप सब लोगों का व्यापार सम्मिलित रूप से होता है और वर्तमान में आप ही लोग फर्म के मालिक हैं। सेठ लखमीचंदजी स्वर्गवासी होने के पहले ही वसीयतनामा कर गये थे। उसीके अनुसार सब कार्य हो रहा है।

इस फर्म की ओर से एक जैन स्कूल एवं सदावर्त चल रहा है। इटारसी में स्टेशन के पास आपकी ओर से एक बहुत सुन्दर धर्मशाला भी बनी हुई है। इसकी लागत करीब ७० हजार लगी है। आप सब लोग बड़े सज्जन हैं। सब मिल कर प्रेम से रहते हैं। श्रीयुत् दीपचंदजी कौन्सिल के मेम्बर थे मगर कांग्रेस के आदेश से आपने उससे इस्तिफा दे दिया है। आप यहाँ की कांग्रेस कमेटी के प्रेसिडेण्ट हैं तथा आल इंडिया कांग्रेस के आप मेम्बर हैं। इस समय आप स्वदेश के लिये जेल में निवास कर रहे हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

बेतूल-बिदनूर—मेसर्स प्रतापमल लखमीचंद	यहाँ हेड आफिस है। तथा बैङ्किंग, मालगुजारी, खेती एवं मकानों के किराये का काम होता है। आपकी मालगुजारी में करीब ६५ गाँव हैं।
बेतूल-गंज—मेसर्स लखमीचंद केसरीचंद	इस फर्म पर गल्ले का व्यापार और आढ़त का काम होता है। यहाँ से यह फर्म यहाँ की सभी प्रकार की पैदावार बाहर भेजती है।
इटारसी—मेसर्स लखमीचंद मानकचंद	यहाँ गल्ला, बैङ्किंग, चाँदी, सोना एवं आढ़त का व्यापार होता है।
जूनारदेव—(छिंदवाड़ा) मेसर्स प्रताप-मल लखमीचंद	यहाँ चाँदी सोना और कोयले का व्यापार होता है। यहाँ आपकी कॉलेरी हैं।
बेतूल—मेसर्स लखमीचंद दीपचंद	यह फर्म एडलर और मण्डलोस कम्पनी की सोने की मशीनों का जर्मनी से इम्पोर्ट करके व्यापार करती है।

मेसर्स जुगलकिशोर देवीदीन

इस फर्म के वर्तमान मालिक बा० नंदकिशोरजी, बा० व्रजकिशोरजी, बा० रामकिशोरजी एवं बा० श्यामकिशोरजी हैं। इस फर्म का हे० आ० इटारसी में हैं अतएव इसका विस्तृत परिचय वहीं दिया गया है। यहां यह फर्म गल्ला, महुआ और आढ़त का व्यापार करती है।

मेसर्स शेरसिंह मानिकचन्द

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ कस्तुरचंदजी डागा-ओसवाल-समाज के बीकानेर निवासी सज्जन हैं। यह फर्म करीब १०० वर्ष आपके पितामह सेठ शेरसिंहजी द्वारा स्थापित हुई थी। आपके पश्चात् फर्म का संचालन आपके पुत्र सेठ माणिकचन्दजी ने किया। आप लोगों के समय में फर्म की अच्छी उन्नति हुई। वर्तमान में यह फर्म बैङ्किग, साहुकारी देन-लेन एवं मालगुजारी का काम करती है।

मेसर्स सुन्दरलाल लक्ष्मीनारायण

इस फर्म के मालिक रेवाड़ी निवासी भार्गव-ब्राह्मण समाज के सज्जन हैं। इस फर्म को करीब १०० वर्ष पूर्व पं० गिरधारीलालजी एवं पं० बिशनसिंहजी ने स्थापित की और तरक्की प्रदान की। आप लोगों के पश्चात् आपके पुत्र पं० देवकीनंदनजी ने फर्म के काम को सम्हाला। आप प्रसिद्ध व्यक्ति हो गये हैं। रेवाड़ी में आप ऑनरेरी मजिस्ट्रेट और म्युनिसिपल कमिश्नर रहे। आपके तीन पुत्र हुए पं० बिहारीलालजी, पं० गनेशीलालजी एवं पंडित सुन्दरलालजी। पं० बिहारीलालजी रेवाड़ी में म्युनिसिपल प्रेसिडेण्ट और ऑनरेरी मजिस्ट्रेट रहे। आपका एवं पं० गनेशीलालजी का स्वर्गवास हो गया है। पं० गनेशीलालजी के वंशजों का भाग सं० १९१० से अलग हो गया है।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक पं० सुन्दरलालजी राय साहब हैं। आपके तीन पुत्र हैं पं० चुन्नीलालजी, पं० दामोदरलालजी एवं पं० गोपीनाथजी। पं० चुन्नीलालजी मुल्ताई में ऑनरेरी मजिस्ट्रेट हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय निम्न प्रकार है—

बेतूल—मेसर्स सुन्दरलाल लक्ष्मीनारायण } यहाँ हे० आ० है। यहाँ बैंकिंग और जमींदारी का काम होता है। आपकी जमीदारी में ५० गाँव के करीब हैं।

इटारसी—मेसर्स गिरधारीलाल विशनसिंह	यहाँ बैंकिंग, हाऊस प्रापर्टी और आढ़त का काम होता है।
मुल्ताई—मेसर्स गिरधारीलाल विशनसिंह	यहाँ मालगुजारी का काम होता है।
रेवाड़ी—मेसर्स सुन्दरलाल लक्ष्मीनारायण	यहाँ भी मालगुजारी के गाँव हैं।

इटारसी

यह जी० आई० पी० रेल्वे की देहली बम्बईवाली मेन लाइन का बड़ा जंकशन है। यहाँ से एक लाइन जबलपुर होती हुई अलाहाबाद तक गई है। दूसरी लाइन आमला-परसिया होती हुई नागपुर तक गई है। जंकशन होनेसे इस स्थान में अच्छी चहल पहल रहती है। यह स्थान रेल्वे स्टेशन के पास ही बसा हुआ है। यहाँ बैतूल वालों की एक सुन्दर धर्मशाला भी बनी हुई है।

इटारसी का सागवान बहुत मशहूर है। यह यहाँ से करीब ४० मील की दूरी पर धांई बोरी नामक जंगल से आता है। यहाँ का सागवान सेकंड क्वालिटी का है। पहले इटारसी ही इस सागवान की मंडी थी। इसीसे यहाँ का सागवान मशहूर कहलाता है। आजकल इसकी आमद यहां कम हो गई है। पास ही सोहागपुर नामक स्थान पर एवं टिमरनी नामक स्टेशन पर इसकी बहुत आमद होती है। इस इटारसी सागवान को पहले पहल मेसर्स दौलतदीन नारायणदास और टिमरनी निवासी बा० हंसकुमारजी ने निकाला था। आपके बाद राय साहब जुगलकिशोरजी ने इसे निकाला। आप लोग पहले गवर्नमेंट से जंगल का ठेका लिया करते थे इससे इसका व्यापार जोरों पर था। आजकल रेल्वे के लिये जंगल रिमर्व रहता है। और गवर्नमेट ही जंगलो से सागवान निकालती है। ठेके देने का काम बंद कर दिया गया है। इसी कारण आजकल यहां इस व्यापार में शिथिलता आगई है। सागवान के सिवा यहां गेहूँ, तिल्ली, ज्वार, तिवड़ा, मसूर और अलसी भी बाहर जाते हैं। लाख भी यहां पैदा होती है मगर कम। यहां घी भी काफी मिकदार में जंगलों से आता है।

यहां से बेतूल, हुशंगाबाद आदि स्थानों पर मोटरें जाती हैं।

यहाँ के व्यापारियों का परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स जुगलकिशोर देवीदीन

इस फर्म के वर्तमान मालिक राय साहब जुगलकिशोरजी के पुत्र ला० नन्दकिशोरजी, ला० व्रजकिशोरजी, ला० रामकिशोरजी एवं ला० श्यामकिशोरजी हैं। आप लोगों का मूल निवास स्थान जिला रायबरेली है। करीब ६० साल पूर्व यह फर्म ला० जुगलकिशोरजी द्वारा स्थापित हुई। आपने इस फर्म की बहुत उन्नति की। भारत सरकार ने प्रसन्न होकर आपको रायसाहब की पदवी प्रदान की। इस इटारसी की बस्ती को बसाने में आपका बहुत हाथ रहा है। जिस समय आप यहाँ आये थे यह एक छोटासा देहात था। यहाँ की म्युनिसिपैलिटी के प्रथम प्रेसिडेण्ट आप ही नियुक्त हुए थे। आपका स्वर्गवास हो गया है।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

इटारसी—मेसर्स जुगलकिशोर देवीदीन	यहाँ बैंकिंग, जमीदारी, लेन-देन एवं गवर्नमेंट कंट्राक्ट तथा महुआ और लकड़ी का व्यापार होता है।
इटारसी—मेसर्स नन्दकिशोर व्रजकिशोर	यहाँ गल्ला, कपड़ा, किराना और आढ़त का काम होता है।
इटारसी—मेसर्स जुगलकिशोर एण्ड संस	यहाँ जनरल मरचेंट्स का काम होता है।
बेतूल—मेसर्स जुगलकिशोर देवीदीन	यहाँ महुआ तथा गल्ले का व्यापार होता है।
जगदलपुर (बस्तर-स्टेट) जुगलकिशोर नंद-किशोर	यहाँ गवर्नमेंट कंट्राक्ट का काम होता है।

मेसर्स लखमीचंद मानकचंद

इस फर्म के वर्तमान मालिक स्व० सेठ लखमीचंदजी के पुत्र हैं। इस फर्म का हेड आफिस बेतूल-बिदनूर में है। इसका विशेष परिचय चित्रों सहित वहाँ दिया गया है। यहाँ यह फर्म चाँदी-सोना, गल्ला और मालगुजारी का काम करती है। आढ़त का काम भी यहाँ होता है। इसकी ओर से यहाँ एक सुन्दर धर्मशाला भी बनी हुई है।

मेसर्स सुन्दरलाल लक्ष्मीनारायण

इस फर्म के वर्तमान मालिक पं० सुन्दरलालजी हैं। आपको भारत सरकार ने राय साहब की पदवी प्रदान की है। आपका विशेष परिचय आपके हेड आफिस बेतूल में छापा गया है। यहाँ यह फर्म गल्ला एवं मालगुजारी और आढ़त का व्यापार एवं हाउस प्रापर्टी का काम करती है।

व्यापारियों के पते—

गल्ले के व्यापारी—

मेसर्स चुन्नीलाल अग्रवाला
,, छगनलाल प्रेमजी
,, मोहनलाल हीरालाल
,, लखमीचंद मानकचंद
,, हरचरन रामगुलाम

कपड़ा-किराना के व्यापारी—

मेसर्स खमीसा जुसब
,, दाउद हाजी इब्राहिम
,, नन्दकिशोर ब्रजकिशोर
मेसर्स हाजी महम्मद अब्बा

सोना-चाँदी के व्यापारी—

मेसर्स छोगमल हजारीमल
,, लखमीचंद माणकचंद

लकड़ी के व्यापारी—

मेसर्स चिमनलाल हजारीलाल
,, जुगलकिशोर देवीदीन
,, हरचरन रामगुलाम

जनरल मरचेंट्स—

मेसर्स ए० इसा०
,, जुगलकिशोर एण्ड संस

हुशंगाबाद

यह सी० पी० प्रांत के अपने ही नाम के जिले का प्रधान स्थान है। यह जी० आई० पी० की मेन लाइन पर इटारसी से एक स्टेशन दूर बसा हुआ है। यहाँ से इटारसी तक हमेशा मोटरें जाती रहती हैं। पास में इटारसी जंकशन के हो जाने से यहाँ का व्यापार मारा गया। आज कल यहाँ कोई व्यापार ऐसा नहीं है जिसका उल्लेख किया जाय। यों तो जिले का प्रधान स्थान होने से लोकल व्यापार होता है मगर बाहर से सम्बन्ध रखने वाला कोई व्यापार नहीं है। हाँ, आने वाले माल में कपड़ा, लोहा, किराना आदि साधारण मात्रा में अवश्य आते हैं। यहाँ के व्यापारियों के नाम निम्न प्रकार है—

कपड़े के व्यापारी—
मेसर्स नारायणदास नन्हेलाल
,, विहारीलाल छबीलचन्द
,, मन्नीलाल मुन्नीलाल
,, लक्ष्मीचन्द कन्हैयालाल
,, सरदारसिंह कालूराम

गल्ले के व्यापारी—
मेसर्स बृजलाल हरगोविन्द
,, मुकुन्दीलाल टीकाराम

किराने के व्यापारी—
मेसर्स बृजलाल हरगोविन्द

लोहे के व्यापारी—
मेसर्स शिवलाल हरगोविन्द

चाँदी सोना के व्यापारी—
मेसर्स गोविन्दराम जगन्नाथ
,, चुन्नीलाल बद्रीनारायण
,, मंगलजीत बद्रीदास

गाडरवाड़ा

गाडरवाड़ा सी० पी० प्रांत के नरसिंहपुर जिले की एक तहसील है। यह जी० आई० पी० रेल्वे की इटारसी-जवलपुरवाली ब्रेंच लाईन पर अपने ही नाम के स्टेशन से १ मील की दुरी पर बसा हुआ है। व्यापारियों के ठहरने आदि के लिये यहां बड़ी अव्यवस्था है। जवलपुरवाले राजा गोकुलदासजी की एक धर्मशाला यहां बनी हुई अवश्य है मगर उसमें भले आदमी तो नहीं ठहर सकते। नाम मात्रके लिये वह धर्मशाला है। नरसिंहपुर जिलेकी बड़ी तहसील होने से एवं लोकल सेल की वजह से यहां का इम्पोर्ट व्यापार अच्छा है। एक्सपोर्ट व्यापार में गल्ला ही ऐसी वस्तु है जो बाहर जाती है। इम्पोर्ट में कपड़ा एवं लोहा और जनरल सामान प्रधान है। किराना वगैरह भी बाहर ही से यहां आता है। गल्ले में यहां से गेहूं, चना, तीवड़ा, मसूर, बटला, अरहर, तिल्ली, अलसी, मूँग, उड़द बाहर जाते हैं। कपास भी यहां से बाहर जाता है। इन सब में तीवड़ा ज्यादा बाहर जाता है। यहां जीनिंग प्रेसिंग फैक्टरी भी है। तथा दाल के कारखाने हैं। यहां से दाल भी बाहर जाती है। यहां के व्यापारियों का परिचय इस प्रकार है-

मेसर्स रामलाल मोहनलाल

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ लक्ष्मीनारायणजी हैं। आप यहां के प्रतिष्ठित रईस एवं जमींदार हैं। आपका मूल-निवास-स्थान मांडलगढ़ (उदयपुर) है। आप माहेश्वरी वैश्य समाज के सज्जन हैं। भारत सरकारने आपको रायसाहब की पदवी प्रदान की है। यह

फर्म यहाँ बहुत पुरानी है। करीब १५० वर्ष पहले इसका स्थापन हुआ था। इस फर्म की ओर से इसके पूर्व मालिकों ने कई स्थानों पर मुसाफिर खाने, धर्मशालाएँ, कुएँ आदि बनवाये हैं।

इस समय इसका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

गाडरवाड़ा—मेसर्स रामलाल मोहनलाल हे० आ०	यहां बैंकिंग, हुंडी चिट्ठी और जमींदारी का काम होता है।
गाडरवाड़ा—मेसर्स रामलाल घासीराम	यहाँ बैंकिंग, हुंडी चिट्ठी और लेनदेन का काम होता है।
गाडरवाड़ा—मेसर्स खूबचंद नर्मदाप्रसाद	यहाँ मालगुजारी का काम होता है।
गाडरवाड़ा—मेसर्स रामलाल छदामीलाल	यहाँ गल्ले का व्यापार और आढ़त का काम होता है।
गाडरवाड़ा—मेसर्स घांसीराम लक्ष्मीनारायण	यहाँ हुंडी चिट्ठी का काम होता है।

इसके अतिरिक्त पिपरिया, करेली, गोबरगांव, साँगाखेड़ा, शरहगंज, शिलवानी, देवरी, चौरास, रिछावर, बरेली आदि स्थानों पर भिन्न २ नामों से गल्ला एवं जमींदारी और आढ़त एवं बैंकिंग का काम होता है। नरसिंहपुर जिले में यह फर्म बहुत बड़ी मानी जाती है।

गल्ले के व्यापारी—

मेसर्स ढंकारदास गौरीशंकर
,, कालूराम हरकरन
,, गरीबदास धन्नालाल
,, तुलसीप्रसाद मोहनलाल
,, बिहारीलाल जेठमल
,, भवानजी लालजी
,, महादेव कन्हैयालाल
,, माणकचंद बलदेव
,, रामरतन सुखदेव
,, रामलाल पूनमचंद

कपड़े के व्यापारी—

मेसर्स अचरुलाल मन्नालाल
,, कानजी मकनजी
,, नानूराम बलदेव
,, भगवानदास जगन्नाथ
,, मूलचंद बालचंद

चाँदी-सोना के व्यापारी—

मेसर्स अचरुलाल मन्नालाल
,, अमरचंद भगवानदास
,, शिवपाल धनराज

भोपाल*

मध्य भारत में भोपाल प्रथम श्रेणी की एक महत्वपूर्ण रियासत है। यहाँ के राज्यशासक मुसलमान हैं। इस राज्य के मूल स्थापक दोस्त महम्मदखाँ सन् १७०८ में खैबर प्रान्त के तराई नामक ग्राम से भारत में आये थे। आपने अपने बाहुबल, वीरत्व, कूटनीति और बुद्धिमानी के बल से, डूबते हुए मुगलसाम्राज्य के समय की परिस्थिति से लाभ उठाया और कई छोटे २ जागीरदारों को कौशलपूर्वक जीतकर इस राज्य की स्थापना की थी जिसका इतिहास बड़ा ही विचित्र और घटनापूर्ण है। सन् १७४० में आपका देहान्त होगया। आपके पश्चात् इस राज्य की मसनद पर नवाब यार महम्मदखाँ, फैज महम्मद खाँ, हयात महम्मद खाँ, जहाँगीर महम्मद खाँ, क्रम से बैठे। नवाब जहाँगीर महम्मद खाँ का देहान्त सन् १८४४ में हो गया। तब से इस राज्य में स्त्री शासिकाएँ गद्दी नशीन होने लगीं। इन शासिकाओं में क्रम से सिकन्दर बेगम, शाहजहाँ बेगम और सुलतान जहाँ बेगम हुई। श्रीमती सुलतान जहाँ बेगम ने यहाँ की उन्नति और स्त्री-शिक्षा की ओर बहुत ध्यान दिया।

उत्तर भारत मे भोपाल सबसे बड़ी मुसलमानी रियासत है। इसका विस्तार ६८५९ वर्गमील और जनसंख्या ७२०००० से ऊपर है। इस राज्य मे ७३ फीसदी हिन्दू, १३ फीसदी मुसलमान और १४ फीसदी दूसरी जातियो के लोग बसते हैं।

इस राज्य में शिक्षा और चिकित्सा का भी अच्छा प्रबन्ध है।

भोपाल शहर के व्यापारियों का परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स गंभीरमल कनकमल

इस फर्म के मालिक मेड़ता निवासी ओसवाल समाज के डोसी सज्जन हैं। करीब ८० वर्ष पूर्व यह फर्म सेठ गंभीरमलजी द्वारा स्थापित की गई थी। आपके २ पुत्र हुए, सेठ सिरेमलजी एवं सेठ कनकमलजी। सिरेमलजी अपना स्वतंत्र व्यापार करने लग गये थे। आपके पश्चात् इस

---

* भोपाल मध्य भारत में है। मगर सी० पी० के साथ इसका विशेष व्यापारिक सम्बन्ध होने से इसका परिचय यहाँ छापा गया है।

फर्म का संचालन सेठ कनकमलजी के पुत्र सेठ नथमलजी ने सम्हाला। आप यहाँ के प्रतिष्ठित व्यक्ति हो गये हैं। आप ही के समय में फर्म की बहुत उन्नति हुई है। आपका स्वर्गवास हो गया है।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ नथमलजी के पुत्र सेठ राजमलजी डोसी हैं। आप यहाँ के आनरेरी मजिस्ट्रेट हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

भोपाल—मेसर्स गंभीरमल कनकमल चौक } यहाँ बैङ्किंग, हुंडी, चिट्ठी, आढ़त और रूई का व्यापार होता है।

भेलसा—मेसर्स गंभीरमल कनकमल } रूई, गल्ले का व्यापार और आढ़त का काम होता है।

मेसर्स गोपालदास वल्लभदास

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ जमनादासजी मालपाणी हैं। आपका हेड आफिस जबलपुर है। इस फर्म की कई जगह जमींदारी, जीनिंग-प्रेसिंग फैक्टरी और ब्रांचें हैं जिनका विस्तृत परिचय चित्रों सहित इसी ग्रंथ के प्रथम भाग में बम्बई विभाग के पेज नं० ४० में दिया गया है। यहाँ यह फर्म बैंकिंग और जमींदारी का काम करती है।

मेसर्स पूनमचंद हीरालाल

इस फर्म की स्थापना सेठ पूनमचन्दजी एवं आपके पुत्र सेठ हीरालालजी द्वारा करीब ५६ वर्ष पूर्व हुई। आप लोगों का मूल-निवास-स्थान मेड़ता (मारवाड़) है। आप लोगों ने फर्म की अच्छी उन्नति की। वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ मूलचन्दजी ललवानी हैं। आपको भोपाल सरकार ने राय की पदवी प्रदान की है। आप मिलनसार और धार्मिक विचारों के सज्जन हैं। आप यहाँ के ऑनरेरी मेजिस्ट्रेट भी हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

भोपाल—मेसर्स पूनमचंद हीरालाल चौक } यहाँ बैंकिग, रूई, गल्ला एवं आढ़त का व्यापार होता है।

पोसार (पिपरिया)—मेसर्स मूलचन्द मोतीलाल } यहाँ बैंकिग, रूई, गल्ला एवं आढ़त का व्यापार होता है।

सेठ बालकृष्णदासजी बजाज स्टेट खजानची भोपाल

बाबू नन्दकिशोरजी चौधरी (जुगुलकिशोर देवीदीन) इटारसी

बाबू नरदेवदासजी बजाज बैंकर्स भोपाल

...लाल

...पके पुत्र सेठ हीरालालजी द्वारा करीब
मेड़ता (मारवाड़) है। आप लोगों ने
मालिक सेठ मूलचन्दजी ललवानी हैं।
है। आप मिलनसार और धार्मिक विचारों
।

...किंग, रूई, गल्ला एवं आढ़त का व्यापार
...ता है।

...किंग, रूई, गल्ला एवं आढ़त का व्यापार
...ता है।

इसके अतिरिक्त भोपाल स्टेट में शाहगंज, मनकापुर, नजीराबाद और चन्दपुरा में आपकी दुकाने हैं। जहाँ जमींदारी, महाजनी देन-लेन का काम होता है। चंदपुरा में सरकारी खजाने का काम भी होता है।

सेठ बलदेवदास बैंकर्स

यह फर्म करीब १०० वर्षों से स्थापित है। इसके स्थापक मेड़ता निवासी सेठ नंदरामजी माहेश्वरी थे। आपके पश्चात फर्म का संचालन सेठ करनमलजी ने किया। आप यहां के प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। आपने अपनी व्यापार-प्रतिभा के बलपर बहुत सम्पत्ति प्राप्त की। आपके पश्चात् आपके पुत्र सेठ नारायणदासजी हुए। आपने अपने पिता ही की भाँति फर्म के कारबार का संचालन किया। आपको भारत सरकार ने रायसाहब की पदवी से सम्मानित किया। यहां की हिन्दू एवं मुसलिन दोनों समाज की जनता आपसे प्रसन्न थी। आपने धार्मिक कार्यों में भी बहुत रुपया खर्च किया। भोपाल-स्टेट की बेगम साहबा के आप पूर्ण विश्वासपात्रों में से एक थे। आपका स्वर्गवास हो गया है। वर्तमान में आपके २ पुत्र हैं। एक सेठ बालकृष्णदासजी एवं दूसरे सेठ बलदेवदासजी। आप दोनों ही अपना अलग-अलग व्यापार करते हैं। सेठ बालकृष्णदासजी यहां के खजाने के खजांची हैं तथा म्युनिसिपेलिटी के मेम्बर और अनाथालय के प्रेसिडेण्ट हैं। विथहिया में आपकी दुकाने हैं जहां गल्ला एवं कच्ची आढ़त का व्यापार होता है।

सेठ बलदेवदासजी का व्यापार जमींदारी एवं बैंकिंग हैं। भोपाल के अलावा उबेदुल्लागंज, देवीपुरा, देहरी और चिकलोद में भी आपकी दुकानें हैं। सब जगह जमींदारी और लेन-देन का व्यापार होता है।

मेसर्स दौलतराम शिवनारायण

इस फर्म का हेड आफिस सिहोर है। इसकी और भी शाखाएं हैं जिनका विस्तृत परिचय इसी ग्रन्थ में सिहोर में छापा गया है। यहाँ यह फर्म गल्ले का एवं आढ़त का अच्छा व्यापार करती है। इसके वर्तमान मालिक सेठ मांगीलालजी हैं।

मेसर्स बनेचंद अमरचंद

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ रतनलालजी हैं। आप ओसवाल वैश्य समाज के सज्जन हैं। आप यहाँ के ऑनरेरी मजिस्ट्रेट हैं। यह फर्म करीब ७० वर्षों से स्थापित है। इसके

स्थापक सेठ रतनलालजी के पिता सेठ अमरचंदजी थे। आप ही ने इसे उन्नतावस्था पर पहुँचाया। आपका ध्यान सार्वजनिक दानधर्म की ओर भी अच्छा था। आपका स्वर्गवास होगया है। आपका मूल-निवास-स्थान मेड़ता (जोधपुर) का था।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

भोपाल—मेसर्स बनेचंद अमरचंद चौक } यहाँ बैंकिंग, जमींदारी, गल्ला एवं आढ़त का व्यापार होता है।

इसके अतिरिक्त फतेमल रतनलाल के नाम से गोहरगंज और धारमला में जमींदारी एवं देनलेन का व्यापार होता है।

मेसर्स संतोषचंद रखबदास

इस फर्म को यहाँ स्थापित हुए ७५ वर्ष हुए। शुरू से ही यह फर्म इसी नाम से चाँदी-सोने का व्यापार करती आ रही है। इसके स्थापक ओसवाल समाज के मेड़ता निवासी सेठ रखबदासजी थे। आपके पश्चात् इस फर्म का संचालन आपके पुत्र सेठ गौड़ीदासजी ने सम्हाला। आप यहाँ के अत्यन्त प्रतिष्ठित सज्जन हो गये हैं। आपका स्वभाव धार्मिक, मिलनसार एवं सज्जन था। आपको शुरू से ही धार्मिक शिक्षा मिली थी। यही कारण है कि आपका आजीवन समय धार्मिक कार्यों में ही बीता। आपने छोटे २ बच्चों को धार्मिक शिक्षा देने में भी कमी नहीं की। धार्मिक कार्यों में आपने हजारों रुपये व्यय किये। आप व्यापारकुशल भी काफी थे। आपने अपने हाथों से हजारों रुपैया भी पैदा किया। आपका स्वर्गवास होगया है।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ गौड़ीदासजी के पुत्र सेठ अमीचंदजी हैं। आप भी अपने पिता ही की भाँति सज्जन व्यक्ति हैं। आपका यहाँ अच्छा सम्मान है। आपने अपने पिताजी के सामने ही १० हजार रुपया पुण्यकार्यों में खर्च करने के लिये निकाला था। यह फर्म यहाँ की प्रतिष्ठित फर्मों में से है। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

भोपाल—मेसर्स संतोषचंद रखबदास चौक } यहाँ बैंकिंग, सोना-चाँदी, गल्ला, एवं आढ़त का व्यापार होता है।

सेठ थानमल मेहता

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ थानमलजी मेहता हैं। आप ओसवाल समाज के सज्जन हैं। आपके पिता सेठ सौभागमलजी इच्छावर दुकान का संचालन करते हैं। सेठ सौभा-

„ [illegible]

„ पन्नालाल गुलाबचन्द

„ मनमोहन मथुरादास

„ रणछोड़लाल टीकमदास

„ हीरालाल छगनलाल

चांदी-सोने के व्यापारी—

मेसर्स अमरचन्द ज्ञानमल

„ खूबचन्द चुन्नीलाल

„ खुन्नीलाल रामचन्द्र

„ गोकुलचन्द भगवानदास

„ गोकुलदास पन्नालाल

„ चुन्नीलाल कन्हैयालाल

„ बुद्धाजी पन्नालाल

„ रामरतन राधाकिशन

„ लक्ष्मणदास प्रानचन्द

„ गम्भीरमल कनकमल

सेठ थानमल मेहता

मेसर्स दौलतराम शिवनारायण

„ प्रेमसुखदास ज्वालादत्त

„ बागमल लखमीचन्द

„ भगवानजी मदन

„ रामकिशन बृजमोहनदास

किराना के व्यापारी—

मेसर्स इस्माईल अहमद

„ उसमान अब्दुल रहमान

„ चुन्नीलाल दौलतराम

„ नन्दकिशोर बुलाखीचन्द

„ लीलाधर गयाप्रसाद

„ सेनराज चुन्नीलाल

सिहोर

सिहोर जी० आई० पी० रेल्वे की भोपाल-उज्जैन ब्रेंच का स्टेशन है स्टेशन पर सिहोर मंडी एवं यहां से आधा मिल पर सिहोर वस्ती बसी हुई है। यह कुछ माह पूर्व तक ब्रिटिश शासन में था। यहाँ छावनी थी। अब यह भोपाल रियासत में आगया है। ब्रिटिश सरकार ने संधि के अनुसार अपनी छावनी हटा ली है। जब यह स्थान भारत सरकार के अंडर में था। यहां अच्छा व्यापार होता था। मगर अब यहां का व्यापार गिर गया है। अब यहां मालूम होता है कि यह मंडी शीघ्रगामी गति से अवनति की ओर अग्रसर हो रही है। इसके पास ही इच्छावर नाम का स्थान है। यहां कुछ अच्छे २ व्यापारी निवास करते हैं। वे लोग प्रायः खेती वगैरह का काम करते हैं। यहां का व्यापार प्रधानतया गल्ले का है गल्ला यहाँ से बाहर भी जाता है। यहां माल की विशेष खपत नहीं है। सिर्फ कपड़ा थोड़ा बहुत यहां आता है। यहां किसी प्रकार के कल-कारखाने नहीं हैं। यहाँ से इच्छावर, भोपाल आदि स्थानो पर मोटरें जाती हैं। इसके पास ही अकोदिया, सुजालपुर, शाहजहाँपुर नामक मंडियाँ हैं। इनका परिचय हम गवालियर स्टेट में प्रथम भाग में दे चुके हैं।

यहाँ के व्यापारियों का परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स भागीरथ रामदयाल

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ रामदयालजी के पुत्र सेठ विष्णुदत्तजी हैं। आप पर्वतसर (जोधपुर) निवासी माहेश्वरी जाति के सज्जन हैं। यह फर्म करीब १०० वर्षों से स्थापित है। इसकी स्थापना सेठ भागीरथजी के द्वारा हुई। इसकी विशेष उन्नति सेठ रामदयालजी ने की। आप व्यापार कुशल सज्जन थे। आप दोनों सज्जनों का स्वर्गवास हो गया है।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

सिहोर—मेसर्स भागीरथ रामदयाल } यहाँ रूई, गल्ला और आढ़त का व्यापार होता है।

सिहोरमंडी—मेसर्स भागीरथ रामदयाल } यहाँ रूई, गल्ला और आढ़त का व्यापार होता है।

मेसर्स रामकिशन जसकरन

इस फर्म को करीब १०० वर्ष पूर्व डिडवाना निवासी सेठ रामकिशनजी ने स्थापित किया। इसकी विशेष उन्नति भी आप ही के द्वारा हुई। आपके पश्चात् इसका संचालन आपके पुत्र सेठ जसकरन जी ने किया। आपका स्वर्गवास हो गया है। वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ जसकरन जी के पुत्र सेठ जुम्मालालजी हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

सिहोर—मेसर्स रामकिशन जसकरन	यहाँ बैंकिग तथा महाजनी देन-लेन का काम होता है।
सिहोरमंडी—मेसर्स जुम्मालाल किशनलाल	यहाँ रूई, गल्ले का व्यापार और आढ़त का काम होता है।
रसुलिया (राजगढ़-स्टेट)—मेसर्स जसकरन जुम्मालाल	यहाँ इस नाम से आपकी फैक्टरी है। तथा आढ़त का काम होता है।

मेसर्स शिवजीराम शालिगराम

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ जयकिशनदासजी धूत हैं। इसका हेड आफिस इन्दौर है। अतएव इसका विस्तृत परिचय इसी ग्रंथ के प्रथम भाग में मध्य भारत विभाग के इन्दौर में देखिये। यहां यह फर्म गल्ला, रूई एवं आढ़त का व्यापार करती है। इसके मुनीम जुगलकिशोरजी मंत्री हैं।

मेसर्स शिवनारायण बछराज

इस फर्म को यहाँ स्थापित हुए करीब १०० वर्ष हुए। इसकी स्थापना डीडवाना निवासी अग्रवाल जाति के सेठ दौलतरामजी ने की। आपके पश्चात् इसका संचालन आपके पुत्र सेठ शिवनारायणजी एवं सेठ बछराजजी ने किया। आप लोगो के समय में इसकी अच्छी उन्नति हुई। आप लोगों का स्वर्गवास हो गया है। वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ मांगीलालजी हैं। आप सज्जन एवं मिलनसार व्यक्ति हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

सिंहोर—मेसर्स शिवनारायण बछराज	यहाँ कपड़ा तथा आढ़त का व्यापार होता है।

सिहोर-मंडी—मेसर्स दौलतराम शिवनारायण	यहाँ गल्ला और रूई का व्यापार और आढ़त का काम होता है।
सिहोर—मेसर्स रामदेव दौलतराम	यहाँ चाँदी-सोने का व्यापार होता है।
भेलसा—मेसर्स बछराज मांगीलाल	यहाँ रूई, गल्ला और कमीशन का काम होता है।
भोपाल—मेसर्स दौलतराम शिवनारायण	यहाँ बैंकिंग, गल्ला, हुंडी, चिट्ठी और आढ़त का व्यापार होता है।
कुरावल (नरसिंहगढ़)—मेसर्स शिवनारायण बछराज	यहाँ इस नाम से आपकी एक जीनिंग फैक्टरी है।

चाँदी-सोने के व्यापारी—

मेसर्स बंशीधर जगन्नाथ
,, भागीरथ बालमुकुन्द
,, रामचन्द्र श्रीकृष्ण
,, हरकिशन बालकिशन

गल्ला, रूई के व्यापारी—

मेसर्स भागीरथ रामदयाल
,, मेघराज शिवकिशन
,, रामाकिशन अखेराज
,, रामाकिशन जसकरन
,, रामदेव दौलतराम

कपड़े के व्यापारी—

मेसर्स आसाराम नन्दलाल
मेसर्स मौजीराम रामाकिशन
,, मेघराज शिवकिशन
,, रामनाथ सरदारमल
,, रामदेव दौलतराम
,, हीरालाल बालाबक्ष

किराना के व्यापारी—

मेसर्स बीजराज राधाकिशन
,, रघुनाथ भागरीवाला
,, रामसुख रामनारायण
,, सूरजमल रामप्रताप

बीड़ी के व्यापारी—

मेसर्स कन्हैयालाल भँवरलाल

बरार और खानदेश

BERAR & KHANDESH

अमरावती

यह स्थान सी० पी० और बरार प्रान्त का प्रधान कॉटन सेंटर है। यह जी० आई० पी० रेलवे की भुसावल नागपुर ब्रांच के बड़नेरा नामक स्थान से ८ मील की दूरी पर बसा हुआ है। बड़नेरा से यहाँ तक रेलवे लाईन गई है। आजकल व्यापारियों की सुविधा के लिये यहाँ चारों ओर के प्रधान २ स्थानों से मोटरें आती तथा जाती हैं।

यहाँ की मुख्य पैदावार कपास है। इसके पश्चात जवारी, चने एवं तुवर का नम्बर आता है। रूई की प्रायः प्रतिवर्ष एक लाख से सवा लाख गाँठ तक बंधती हैं। यहाँ रुई का सौदा खण्डी से होता है। यहाँ का तौल २८ रतल का मन, और २९ मन की खण्डी होती है। रुई की गाँठ १४ मन की होती है। सौदे का भाव रुई का गाँठ पर और कपास का मन पर होता है। जवार यहाँ से विशेष पैदा होने पर ही बाहर जाती है। हाँ, चने एवं तुवर अलबत्तः बाहर जाते हैं। यहाँ के व्यापारी इनकी दाल भी यहाँ से बाहर भेजते हैं। यहाँ दाल बनाने के भी कारखाने हैं। यहाँ तिलहन बाने की ओर भी अच्छा ध्यान दिया जा रहा है। मूँगफली की खेती की ओर लोगों का विशेष झुकाव है। तेल निकालने की भी यहाँ २ मिले हैं। जिनमें अलसी का तेल पेरा जाता है।

कॉटन को जीन तथा प्रेस करने के लिये भी यहाँ बहुत से कारखाने हैं। करीब २० जीनिंग फेक्टरियाँ है जहाँ कपास लोढ़ा जाता है। कपास की गाँठ बाँधने के लिये करीब १४ प्रेसिंग फेक्टरियाँ हैं। इन फेक्टरियो में से ८ जिंनिग फेक्टरियाँ विलायती हैं। जिसमें ६ तो प्यूअर विदेशी हैं। शेष भारतीय हैं। तेल के मिल तथा दाल की फैक्टरियों का जिक्र हम उपर कर ही चुके हैं। यही यहाँ कारखाने हैं।

व्यापारियों की सुविधा एवं उनके आपसी झगड़ों को निपटाने के लिये यहाँ एक कॉटन-कमेटी स्थापित है। इसमें २ सदस्य स्थानीय म्युनिसिपेलिटी के तथा शेष कॉटन मरचेंट्स ब्रोकर्स एण्ड एजण्ट्स रहते हैं। ये ही लोग कॉटन की व्यवस्था करते हैं।

पैदावार के लिये यहाँ की जमीन बड़ी अच्छी है। इसे "ब्लक-काटन-स्वायल" कहते हैं। यहाँ पानी की बड़ी कमी है। इसीलिये कॉटन का प्रधान सेंटर होते हुए भी यहाँ कोई स्पि-

निंग एण्ड विचिंग मिल नहीं है। और न खोली ही जा सकती है। यदि यहाँ पानी की सुविधा होती तो और सब प्रकार की सुविधाएँ यहाँ मौजूद हैं।

यहाँ बाहर से आने वाले माल मे चावल, किराना, हार्डवेअर, कपड़ा आदि प्रधान हैं। कपड़े में विशेष कर मारवाड़ी पहनावे का कपड़ा बहुत आता है। मोटरों के विशेष व्यवहार से यहाँ इसका भी व्यापार अच्छा है। इसका भी बहुत सामान बाहर से यहाँ आता है। इसके व्यापारी मारवाड़ी ही हैं। इन लोगों का ध्यान आज कल मशिनरी लाईन में भी अच्छा जाने लगा है। बाहर से माल विशेष आने का कारण यहाँ की लोक-संख्या से नहीं है। क्योंकि यहाँ की लोक-संख्या तो सिर्फ ५० हजार ही है। मगर अमरावती के आस-पास बहुत से व्यापारिक स्थान हैं जहाँ यहाँ से माल जाता है। जैसे चांदूर बाजार, मोरशी, एलिचपुर, हीवर खेड़, शेंदूर जऊ, बड़नेरा आदि।

यहां व्यापार करने वाली जातियों से विशेष कर मारवाड़ी, गुजराती एवं बुन्देलखण्डी हैं। जिनका विशेष परिचय इस प्रकार है—

कॉटन-मर्चेन्ट्स

मेसर्स जवाहरमल बालमुकुन्द

आप लोग जोधपुर राज्य के रहनेवाले माहेश्वरी वैश्य समाज के बजाज सज्जन हैं। इस फर्म की स्थापना लगभग ४० वर्ष पूर्व सेठ आसारामजी ने की थी। आरम्भ में इस फर्म पर आढ़त का व्यापार किया जाता था। इस फर्म की विशेष उन्नति सेठ आशारामजी के हाथों से हुई, आपका स्वर्गवास २ वर्ष पूर्व हो गया है तब से इस फर्म का संचालन स्व० सेठ बालमुकुन्दजी के पुत्र सेठ रामचन्द्रजी करते हैं।

इस फर्म पर वर्तमान में रूई का व्यापार प्रधान रूप से होता है और इसके अतिरिक्त महाजनी लेन-देन आदि का व्यापार भी यह फर्म करती है।

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ रामचन्द्रजी बजाज तथा आपके भाई सेठ श्रीकृष्णजी बजाज हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

मेसर्स जवाहरमल बालमुकुन्द अमरावती T. A. Bajaj	यहाँ रूई का व्यापार प्रधान रूप से होता है। आपकी यहाँ एक जीन प्रेस फैक्टरी भी है।

मेसर्स जयरामदास भागचंद

इस फर्म का हेड आफिस धामणगाँव है। इसके मालिक अग्रवाल वैश्य समाज के सज्जन हैं। आपका और भी कई स्थानों पर व्यापार होता है तथा जिनिंग और प्रेसिंग फैक्टरियाँ हैं। यहाँ यह फर्म कॉटन का व्यापार करती है। यहाँ इसकी जिनिंग और प्रेसिंग फैक्टरी है। इसका विशेष परिचय इसी ग्रंथ में धामण गाँव के पोर्शन में दिया गया है।

मेसर्स तखतमल श्रीवल्लभ

आप लोग पिपाड़ (जोधपुर) निवासी हैं। आप माहेश्वरी वैश्य समाज के चांडक सज्जन हैं। इस फर्म की स्थापना लगभग ५० वर्ष पूर्व सेठ तखतमलजी ने उपरोक्त नाम से की थी। यह परिवार देश से लगभग १५० वर्ष पूर्व अमरावती आया था

इस फर्म पर आरम्भ से ही महाजनी लेन-देन का काम होता आ रहा है। जो यह फर्म वर्तमान में भी पूर्ववत् कर रही है। इस फर्म की प्रधान उन्नति सेठ तखतमलजी और सेठ श्रीवल्लभजी दोनों ही के हाथ से हुई।

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ रामरतनजी चांडक हैं।

इसका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

मेसर्स तखतमल श्रीवल्लभ अमरावती — यहाँ महाजनी लेन-देन का व्यापार प्रधान रूप से होता है और रुई का काम काज है।

मेसर्स धनराज पोकरमल

इस फर्म के मालिकों का आदि निवास-स्थान रामगढ़ (शेखावाटी) है। आप लोग अग्रवाल समाज के गनेड़ीवाल सज्जन हैं। इस फर्म की स्थापना लगभग १५०-वर्ष के पूर्व सेठ धनराजजी गनेड़ीवाल ने अमरावती में की थी।

यह परिवार रामगढ़ से निजाम हैदराबाद आया और वहाँ बस गया। इस परिवार ने वहाँ अच्छा प्रभाव स्थापित कर लिया और अपना सब कार्य्य मेसर्स महानन्दराम पूरणमल के नाम से करने लगा। इस फर्म के संचालकों ने राजकाज-सम्बन्धी ठेकों का काम प्रधानरूप से करना आरम्भ किया। इसी सम्बन्ध में सेठ धनराजजी बरार प्रान्त का ठेका ले अमरावती आये और उपरोक्त नाम से अपनी फर्म यहाँ स्थापित कर काम करने लगे। आप बड़े प्रबन्ध-

कुशल महानुभाव हो गये हैं। आपका स्वर्गवास सम्वत् १९०२ में हुआ। तब से फर्म का संचालन आपके पुत्र सेठ पोकरमलजी करने लगे। आपका स्वर्गवास सम्वत् १९३४ मे हुआ अतः फर्म का संचालन आपके पुत्रों के हाथ मे आया। जिनमें सेठ किशनदयालजी ने अपनी स्वतन्त्र फर्म मेसर्स पोकरमल किशनदयाल के नाम से नागपुर मे खोल ली और वह वहीं रहने लगे अतः पुरानी फर्म पर सेठ किशनदयालजी के छोटे भ्राता सेठ रामबिलासजी काम संचालित करने लगे। सेठ किशनदयालजी बड़े प्रतापी पुरुष थे। आपका स्वर्गवास सम्वत् १९२६ में हुआ। सेठ रामबिलासजी जैसे व्यापार-कुशल थे वैसे ही प्रभावशाली भी थे। आप स्थानीय म्यूनिसिपैलिटी के मेम्बर तथा आनरेरी मैजिस्ट्रेट भी रहे हैं। आपको सरकार ने रायसाहब की उपाधि से सम्मानित किया था। आपका स्वर्गवास सम्वत् १९५६ में हुआ। तब से इस फर्म का संचालन सेठ श्रीनारायणजी गनेड़ीवाल करते हैं। आप वयोवृद्ध सज्जन हैं। आप स्थानीय म्यूनिसिपैलिटीके २५ वर्ष तक मेम्बर रहे। आप लगभग १५ वर्ष तक फर्स्ट क्लास आनरेरी मैजिस्ट्रेट भी रह चुके हैं। आजकल आप इन दोनों कार्य्यों से अवकाश ले शान्ति-लाभ कर रहे हैं। आप भगवद्भक्ति-परायण महानुभाव हैं। इस फर्म का प्रधानरूप से आप ही संचालन करते हैं।

इस फर्म के वर्त्तमान मालिक सेठ श्रीनारायणजी गनेड़ीवाला तथा आपके पुत्र बाबू मदन-गोपालजी, बाबू मुरलीधरजी, बाबू गोविन्दप्रसादजी तथा बाबू हरिरामजी हैं।

इस फर्म पर प्रधान रूप से बैंकर्स एण्ड लैण्ड लार्ड का काम होता है। इसकी बहुत बड़ी स्थायी सम्पत्ति भी है। यह फर्म रुई का काम भी करती है। इसकी जीनिंग फैक्टरी भी है। और कमीशन एजण्ट का काम होता है।

मेसर्स—धनराज पोकरमल अमरावती	यहाँ बैंकर्स और लैण्ड लार्ड का काम होता है। एक जीन फैक्टरी है तथा आढ़त का काम होता है।
मेसर्स—धनराज पोकरमल चांदूर (अमरावती)	यहाँ एक जीन फैक्टरी है और कमीशन एजेण्ट का काम होता है।

मेसर्स मन्नालाल शिवनारायण

इस फर्म का प्रधान ऑफिस बम्बई में है। इस ग्रन्थ के प्रथम भाग में बम्बई विभाग में इस फर्म का विस्तृत परिचय चित्रों सहित मेसर्स सनेही राम जुहारमल के नाम से दिया गया है।

यहाँ पर इस दुकान का मैनेजमेण्ट सेठ सदारामजी झुंझनूवाला करते हैं। आप सेठ शिव-चन्द्र रायजी के काका हैं। इस दुकान के प्रधान मुनीम श्रीयुक्त रामचन्द्रजी ब्राह्मण हैं। आपका मूल निवास नारनौल में है। आप करीब २५ वर्षों से जब से यह फर्म यहाँ पर स्थापित हुई तभी से काम करते हैं। इस फर्म की खरीदी के मैनेजर श्रीयुत गंगाराम बापू हैं। आप फर्म की खरीदी का काम ३० वर्षों से कर रहे हैं। आप दोनों वयोवृद्ध और अनुभवी सज्जन हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

मेसर्स—मन्नालाल शिवनारायण (T. A. Business) यहाँ पर रूई का बहुत बड़ा व्यापार होता है।

मेसर्स रामरतन गणेशदास

इस फर्म के मालिकों का आदि निवास-स्थान खिवतसर (जोधपुर) है। आप लोग माहेश्वरी वैश्य समाज के राठी सज्जन हैं। इस परिवार के पूर्व पुरुष लगभग १५० वर्ष पूर्व मारवाड़ से बरार प्रान्त आए और अमरावती जिले के तिवसा नामक स्थान में बस गये। वहाँ इस परिवार ने अपना व्यापार स्थापित किया और अच्छी सफलता प्राप्त की। फलतः आज भी वहाँ पर इस फर्म के वर्तमान मालिकों की दो प्रतिष्ठित फर्म मेसर्स मौजीराम गंगाराम और मेसर्स मौजीराम स्वरूपचंद के नाम से व्यापार कर रही हैं। इन दो फर्म की स्थापना हो चुकने

समय बाबू वल्लभदासजी राठी करते हैं। अब आप ही कॉटन मार्केट के चेअरमेन हैं। आप सेठ गणेशदासजी के भाई सेठ ठाकुरदासजी के पुत्र हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

मेसर्स रामरतन गणेशदास अमरावती (T. A. Ramratanji)	यहाँ कॉटन का व्यापार होता है तथा एक जीन प्रेस फैक्टरी है। यहाँ फर्म का हेड ऑफिस है।
मेसर्स रामरतन गणेशदास आर्वी (वर्धा)	यहाँ कॉटन का व्यापार होता है तथा एक जीन प्रेस फैक्टरी है।
मेसर्स मौजीराम गंगाराम तिउसा (अमरावती)	यहाँ बैंकिंग और लैण्ड लार्ड्स का काम और खेती का काम होता है।
मेसर्स मौजीराम स्वरूपचन्द तिउसा (अमरावती)	यहाँ बैंकिग और लैण्ड लार्ड्स का काम तथा खेती का काम होता है।

मेसर्स शिवलाल शालिगराम

इस फर्म के मालिकों का आदि निवासस्थान पोकरन (जोधपुर) है। आप लोग माहेश्वरी वैश्य समाज के राठी सज्जन हैं। इस परिवार ने लगभग २०० वर्ष पूर्व अपने आदि निवासस्थान में मेसर्स मूलचन्द शिवलाल के नाम से फर्म स्थापित कर लेन-देन का व्यापार आरम्भ किया था जो १०० वर्ष तक होता रहा। पर उसके बाद इस परिवार ने "नमून" जिला संगमनेर में मेसर्स खुशालचन्द मूलचन्द के नाम से एक दूसरी फर्म खोली और वहाँ भी महाजनी लेन-देन करने लगे। जहाँ वे लोग "हुण्डीवाले" के नाम से प्रख्यात हैं। आज से लगभग ७५ वर्ष पूर्व इस परिवार के सेठ शिवलालजी राठी ने मेसर्स श्रीराम शालिगराम के नाम से अपनी एक फर्म खोली और महाजनी लेन देन तथा जीन प्रेस फैक्टरी खोलकर व्यापार करने लगे। इसके बाद ही अमरावती में उपरोक्त नाम से इस फर्म ने एक नवीन फर्म खोली। इस प्रकार यह परिवार एक अर्से से बराबर व्यापार कर रहा था कि सम्वत् १९६० में सब लोग अलग २ हो गये जिसमें मेसर्स शिवलाल शालिगराम फर्म का संचालन इस परिवार के सेठ फतेहलालजी राठी के हाथ में आया पर सम्वत् १९७५ में पुनः इस फर्म के मालिक लोग अलग हो गये अतः तब से इस फर्म के मालिक स्व० सेठ फतेलालजी के भाई स्व० सेठ सुन्दरलालजी राठी के पुत्र राय साहिब सेठ नारायणदासजी राठी हुए और वर्तमान में इस फर्म के विस्तृत व्यवसाय का प्रधान संचालन आप ही करते हैं।

राय साहिब नारायणदासजी राठी बड़े मिलनसार एवम् उदार महानुभाव हैं। आपने नासिक में एक धर्मशाला और मथुरा में दूसरी धर्मशाला बनाई है। आपकी ओर से विश्राम-घाट में सदाव्रत चल रहा है। आपने पोकरन और धामन गाँव में अस्पताल भी स्थापित किये हैं। आपको सरकार ने सन् १९२५ में राय साहिब की पदवी से अकुलंत किया था। आप ऑनरेरी मैजिस्ट्रेट भी हैं। आपके एक पुत्र हैं जिनका नाम बाबू जैकिशनदास है। आप बड़े होनहार मालूम होते हैं।

इस फर्म के वर्तमान मालिक राय साहिब नारायणदाजी राठी तथा आपके पुत्र बाबू जैकिशनदासजी राठी हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

मेसर्स—शिवलाल शालिगराम अमरावती T.A. Diamond — यहाँ बैंकिंग तथा कॉटन और काटनसीड़ का व्यापार होता है और जीन प्रेस फैक्टरी भी है।

आपकी यहाँ पर एक मोटर की दुकान भी है।

मेसर्स साधुराम तोलाराम

इस फर्म का हेड आफिस कलकत्ता है। वहाँ यह फर्म मिल मालिक है तथा कॉटन का अच्छा व्यापार करती है। इसकी और भी कई शाखाएँ हैं। जहाँ रूई का व्यापार होता है। इसके अतिरिक्त कई स्थानों पर जिनिंग और प्रेसिंग फैक्टरियाँ भी हैं। यहाँ यह फर्म कॉटन का व्यापार और आढ़त का काम करती है। इसकी यहाँ जिनिंग फैक्टरी भी है। इस फर्म का विशेप परिचय चित्रों सहित इसी ग्रंथ के दूसरे भाग में कलकत्ता विभाग के मिल आनर्स में दिया गया है।

मेसर्स सीताराम रामविलास

इस फर्म के मालिक मेड़ता के रहने वाले हैं। इस फर्म के संस्थापक सेठ जानकीदासजी करीब ८०-८५ वर्ष हुए इस प्रान्त में आये सबसे पहले आपने मथुरादास जानकीदास के नाम से अपना फर्म चालू किया। आपका स्वर्गवास संवत १९३७ में हुआ। तब से आपके पुत्र सेठ सीतारामजी ने इस फर्म के काम को सम्हाला। आपने मौजरी में सीताराम रामविलास के नाम से अपना फर्म स्थापित किया। वहाँ पर आपकी जीनिंग फैक्टरी और मालगुजारी है। इसके पश्चात् संवत् १९५७ में आप अमरावती आये और सेठ गणेशदासजी के साझे में आपने फर्म खोला। इसके बाद संवत् १९६२ में आपने मेसर्स सीताराम रामविलास के नाम से फर्म स्थापित किया। आप बड़े उद्योगी, व्यापार कुशल सज्जन हैं। आपके छोटे भ्राता सेठ रामवि-

लासजी का स्वर्गवास संवत् १९६८ में हुआ। आपके दो पुत्र हैं। जिनके नाम सेठ हरगोविन्दजी और सेठ श्रीवल्लभ जी हैं। इनमें से सेठ श्रीवल्लभजी बलगाँव के सेठ बद्रीदासजी के यहाँ दत्तक गये हैं।

आपकी तरफ से मौजरी (अमरावती) में एक धर्मशाला और एक सार्वजनिक डिस्पेन्सरी खोली हुई है। इसके अतिरिक्त यहाँ के रामदेव जी के मन्दिर में भी आपने अच्छी सहायता दी है। आपकी तरफ से अमरावती में एक कन्या पाठशाला भी चल रहती है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

अमरावति—मेसर्स सीताराम रामविलास—इस फर्म पर रुई और बैंकिंग का काम होता है।

मोजरी—मेसर्स सीताराम रामविलास—यहाँ आपकी जीन है। तथा मालगुजारी और काम लेनदेन का होता है। खड़की, गोईवाड़ा आपके गाँव हैं।

मेसर्स श्रीराम रूपराम

इस फर्म के मालिकों का मूल निवासस्थान पोकरन (जोधपुर-स्टेट) है। आप माहेश्वरी जाति के बजाज सज्जन हैं इस खानदान को बरार में आये करीब ८० वर्ष हुए। पहले पहल सेठ तिलोकचन्दजी बजाज यहां पर आये और आपने कारबार शुरू किया। आपके पश्चात् आपके पुत्र सेठ श्रीरामजी ने इस फर्म के कारबार को तरक्की दी। सेठ श्रीरामजी के बाद सेठ रूपरामजी ने कारबार सम्हाला। आपका स्वर्गवास संवत १९८४ में हुआ। आपके पुत्र श्रीयुत मदनगोपालजी का स्वर्गवास आपके पहले ही हो चुका था। इसलिए सेठ मदनगोपालजी के नाम पर श्रीयुत मोहनलालजी को गोद लिया गया। इस समय आप ही फर्म के मालिक हैं। आप इस समय हीवर खेड में ही रहते हैं।

आपकी ओर से हीवर खेड़ में एक धर्मशाला बनी हुई है।

फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:-

हीवर खेड़ (मोरसी)—मेसर्स तिलोकचन्द श्रीराम—यहां पर आपका हेड ऑफिस है। पहले पहल सेठ तिलोकचन्दजी ने यहीं से व्यापार शुरू किया। यहां पर आपकी जीनिंग फैक्टरी है। तथा बैंकिंग, रुई और खेती बाड़ी का काम होता है।

उमरावती—मेसर्स श्रीराम रूपराम, यह फर्म यहां करीब ५० साल से स्थापित है। यहाँ भी आपकी जीनिंग फैक्टरी है। तथा बैंकिंग, और रुई का व्यापार होता है।

मरूड़— यहां पर आपकी जीनिंग फैक्टरी है तथा रुई का व्यापार होता है।
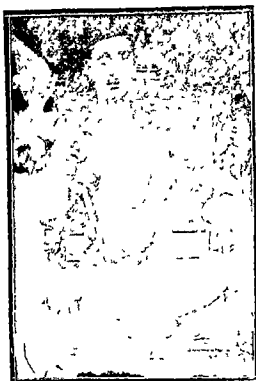
बाबू मोहनलालजी बजाज (श्रीराम रूपराम) अमरावती
(बरार पे० नं १०)

सेठ जसकरणजी डागा (भवानीदास अर्जुनदास) रायपुर
(सी० पी० पेज नं० ६५)
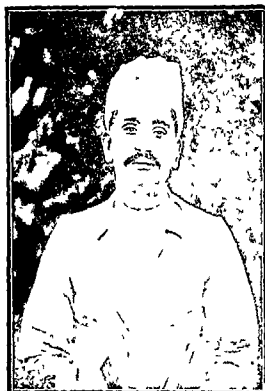
सेठ रामविलासजी (धनजी मुरलीधर) राजनान्दगांव
(सी० पी० पेज नं० ७१)

सेठ ब्रिजलाल रामचन्द्र सराफ़ नागपूर
(सी० पी० पेज नं० १४)

बलगांव

यह अमरावती के पास एक छोटा सा खेड़ा है। मगर यहाँ बड़े बड़े बैंकर्स की पाँच सात दुकानें होने से गुलचमन मालूम होता है। यहाँ के व्यापारी कृषि तथा महाजनी लेन-देन का काम करते हैं। यहाँ की खास पैदावार कपास है जो अमरावती के बाजार में बिकता है। अमरावती तथा यहाँ के बीच में हमेशा मोटरें जाया करती हैं। यहाँ के व्यापारियो का परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स चतुर्भुज शिवनारायण

इस फर्म के मालिकों का मूल निवासस्थान मेड़ता (मारवाड़) में है। आपके परिवार को सी० पी० में आये हुए करीब १३० वर्ष हुए। पहले पहल आपकी फर्म सिवणा गाँव और बलगांव में स्थापित हुई। सब से पहले सेठ चतुर्भुजजी लड्ढा यहाँ पर आये और आपने मेसर्स चतुर्भुज शिवनारायण के नाम से अपना फर्म स्थापित किया। सेठ चतुर्भुजजी का स्वर्गवास हुए करीब ७० वर्ष हुए। आपके पश्चात् आपके दत्तक पुत्र सेठ शिवनारायणजी ने इस फर्म के काम को सम्हाला। आपका स्वर्गवास संवत् १९५७ में हुआ। शिवनारायणजी के पुत्र श्रीयुत गोपीनाथजी थे आपके बहुत शान्त और सरल होने की वजह से सेठ शिवनारायणजी के पश्चात् फर्म का काम आपके पौत्र श्रीयुत बद्रीनाथजी ने सम्हाला। आपने इस फर्म की बहुत उन्नति की। श्रीयुत बद्रीनाथजी का स्वर्गवास संवत् १९७५ के आश्विन मे हो गया। इस समय इस फर्म का काम आपके दत्तक पुत्र सेठ श्रीवल्लभजी करते हैं।

इस फर्म का दान-धर्म और सार्वजनिक कार्य्यों की ओर भी अच्छा लक्ष्य है। बलगाँव मे आपकी ओर से एक धर्मशाला और एक चतुर्भुजनाथ का मन्दिर बना हुआ है। इनमे करीब लाख सवा लाख की लागत लगी है। इसके सिवा काशी में आपकी ओर से एक अन्नक्षेत्र भी चल रहा है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

बलगाँव-मेसर्स-चतुर्भुज शिवनारायण—यहाँ पर मुख्यतया बैंकिंग और खेती का काम होता है।

इस फर्म के मारवाड़ मे बहुत से मकानात हैं तथा अमरावती में बद्रीनाथ श्रीवल्लभ के नाम से फर्म और बंगला है।

मेसर्स चौथमल शिवनाथ

इस फर्म के मालिकों का मूल निवासस्थान खिंवसर (जोधपूर स्टेट) में है। आप माहेश्वरी जाति के राठी सज्जन हैं। आपकी फर्म को यहाँ पर स्थापित हुए करीब ८०-९० वर्ष हुए। पहले पहल सेठ जेठमलजी राठी ने बहुत साधारण स्थिति में अपना काम शुरू किया। सेठ जेठमलजी के दो पुत्र थे, जिनके नाम सेठ स्वरूपचन्दजी और सेठ चौथमलजी था। सेठ जेठमलजी के पश्चात् सेठ चौथमलजी ने फर्म के काम को सम्हाला। आपके हाथों से इस फर्म की खूब उन्नति हुई। सेठ चौथमलजी के पश्चात् उनके पुत्र सेठ शिवनाथजी ने फर्म के काम को सम्हाला। आपका स्वर्गवास संवत् १९४४ में हुआ। आपके कोई पुत्र न होने से आपने लक्ष्मीनारायणजी राठी को दत्तक लिया। तब से आप ही इस फर्म का संचालन करते हैं। आपके इस समय चार पुत्र हैं। उनके नाम क्रम से श्रीयुत शङ्करलालजी, माणिकलालजी, रतनलालजी और हीरालालजी हैं।

इस फर्म के मालिको की सार्वजनिक कार्य्यों की ओर भी अच्छी रुचि रही है। आपकी ओर से बलगाँव में एक ए० वी० स्कूल चल रहा है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

बलगाँव—मेसर्स चौथमल शिवनाथ यहाँ पर बैंकिंग बिजीनेस और देन-लेन का काम होता है।

गवान—मेसर्स चौथमल शिवनाथ—यहाँ पर खेती का काम होता है।

मेसर्स रघुनाथदास चतुर्भुज

इस फर्म के मालिकों का मूल निवासस्थान रैन (जोधपुर-स्टेट) है। आप माहेश्वरी जाति के सारडा सज्जन हैं। इस फर्म को बलगाँव में आये करीबन १०० वर्ष हुए। पहले पहल सेठ रघुनाथदासजी ने इस फर्म को स्थापित किया। रघुनाथदासजी के भाई श्रीयुत चतुर्भुजजी थे। श्रीयुत चतुर्भुजजी के बाद श्रीयुत पाण्डुरंगजी ने इस फर्म के काम को सम्हाला। सेठ पाण्डुरंगजी के पश्चात् सेठ तुलसीरामजी ने इस फर्म के काम को सम्हाला। आपका स्वर्गवास संवत् १९६६ मे हुआ आपके पश्चात् आपके पुत्र सेठ हरिरामजी ने इस फर्म के काम को सम्हाला। आपका स्वर्गवास अल्प वय मे सन् १९१९ ई० मे हो गया। इस समय इस फर्म के

कपड़े के व्यापारी

मेसर्स फतेचन्द मांगीलाल

इस फर्म के मालिकों का मूल निवासस्थान रीयां (जोधपुर-स्टेट) है। आप ओसवाल जाति के फलोदिया जैन सज्जन हैं। इस खानदान को अमरावती में आये करीब ८० वर्ष हुए। यहां पर इस फर्म की स्थापना सेठ पूनमचन्दजी ने की। पहले यह फर्म मेसर्स मानमल गुलाब चन्द के साझे में काम करती थी। संवत् १९५० में सेठ पूनमचन्दजी का स्वर्गवास हो गया। आपके कुल तीन पुत्र हुए। जिनके नाम सेठ शोभाचन्दजी, सेठ फतेचन्दजी और सेठ मांगीलाल जी हैं। इनमें से सेठ शोभाचन्दजी का स्वर्गवास संवत् १९६२ में हो गया। इस समय इस फर्म का संचालन सेठ फतेचन्दजी और सेठ मांगीलालजी करते हैं। करीब २० वर्ष पूर्व आप लोगों ने मेसर्स फतेचन्द मांगीलाल के नाम से फर्म स्थापित किया। तब से यह फर्म इसी नाम से अपना काम कर रही है। इस फर्म की अमरावती में बहुत अच्छी प्रतिष्ठा है।

इस फर्म की दान-धर्म और सार्वजनिक कार्य्यों की ओर बहुत रुचि रही है। आपकी ओर से अमरावति में एक जैन मन्दिर और एक धर्मशाला करीब पचास हजार की लागत से बनाई हुई हैं और भी धर्म-प्रचार के कार्य्यों में आपके हाथों से बहुत खर्च होता है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

अमरावति—मेसर्स फतेचन्द मांगीलाल (T. A. "Jain") इस फर्म पर कपड़ा, सोना चांदी तथा सब प्रकार की कमीशन एजेन्सी का काम होता है।

मेसर्स रतनचन्द छगनमल

इस फर्म के मालिकों का मूल निवास स्थान पीपाड़ (मारवाड़) में है। आप ओसवाल जाति के मुणोत सज्जन हैं। इस खानदान को अमरावति में आये करीब ७० वर्ष हुए।

इस समय इस फर्म के मालिक सेठ मगनमलजी तथा सेठ फतेचन्दजी हैं। सेठ मगनमलजी के पिता का नाम सेठ धनराजजी तथा सेठ फतेचन्दजी के पिता का नाम सेठ रतनचन्दजी है। इस दुकान में तथा बम्बई दुकान में श्रीयुत् भीकमचन्दजी मुणोत का साझा है। आप रीयाँ के रहने वाले हैं।

आपकी तरफ से पीपाड़ में ४० हजार की लागत से एक स्कूल खोला गया है। और भी बहुत से धार्मिक कामों में आप सहायता देते रहते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

हेड ऑफिस—केलसी (रत्नागिरी) मेसर्स नवलमल चाँदमल, इस दुकान पर बैंकिंग, कपड़ा और किराने का व्यापार होता है।

इञ्जरला—(रत्नागिरि) मेसर्स मानमल गुलाबचन्द—यहाँ भी कपड़ा, किराना, बैंकिंग का काम होता है।

बम्बई—मेसर्स मानमल गुलाबचन्द प्रिन्सेस स्ट्रीट बम्बई नं० २—यहाँ पर कमीशन एजन्सी का काम होता है।

अमदाबाद—मेसर्स धनराज अनराज रेलवे पुरा प्रेमचन्द केदारदास मार्केट—यहाँ पर कपड़े की कमीशन एजन्सी का काम होता है।

अमरावति—मेसर्स रतनचन्द, छगनमल—यहाँ पर कपड़े का व्यापार होता है। यह फर्म जलगाँव मिल की कमीशन एजण्ट है।

गुलेजगुड़ (बीजापुर) मेसर्स धनराज मगनमल—यहाँ पर रेशमी कपड़े का व्यापार होता है।

इसके सिवा पंजाब के अन्दर मोघा, बरनाला और कैथल इन तीनो मण्डियों में सूरजमल मिश्रीमल के नाम से आपकी फर्में हैं जहाँ का तार का पता (Suraj) है। इन तीनों दुकानों पर गल्ले का व्यापार होता है।

कॉटन मरचेंट्स

मेसर्स जगन्नाथ करनीदान
" जवाहरमल बालमुकुन्द
" जयरामदास भागचन्द
" तखतमल श्रीवल्लभ
" धनराज पोकरमल
" बालकदास शिवनाथ
" मानमल गुलाबचंद
" मन्नालाल शिवनारायण
" रामरतन गनेशदास
" शिवलाल शालिगराम
" सीताराम रामविलास
" साधुराम तोलाराम
" श्रीराम रूपराम

कपड़े के व्यापारी

मेसर्स आत्माराम हरिसा
" कुँवरजी लखमीदास
" गनेश स्टोअर
" जेठा भाई कालीदास
" जोशी देशपांडे
" झूमरमल राठी
" पूरनलाल बंसीलाल
" फतेचंद मॉगीलाल
" वंसीलाल पन्नालाल
" मोतीराम तुलाराम
" रतनचन्द छगनमल
" हाजी कासम हाजी इसाक

मालिक श्रीयुत हरिरामजी के लघुभ्राता श्रीयुत राधाकृष्णजी सारडा हैं। आप बड़े कुशल युवक हैं। आपका जन्म संवत् १९६५ का है।

आपकी ओर से बलगाँव में अन्नक्षेत्र है जिसमें हमेशा सदाव्रत बँटता है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

१—बलगाँव-मेसर्स रघुनाथदास चतुर्भुज—यहाँ पर बैंकिंग, लेनदेन और खेती का काम होता है।

मेसर्स रामसुख पूरनमल

इस फर्म के मलिकों का मूल निवासस्थान संखवाय (जोधपुर) में है। आप माहेश्वरी जाति के हेड़ा सज्जन हैं। इस खानदान को बलगाँव में आये करीब ७० वर्ष हुए। सब से पहले सेठ रामसुखजी देश से बलगाँव में आये और आपने फर्म स्थापित किया। रामसुखजी के पश्चात् उनके पुत्र सेठ पूरनमलजी हुए। आपके हाथों से इस फर्म की बहुत उन्नति हुई। पूरनमलजी का स्वर्गवास हुए करीब २० वर्ष हुए। आपके कोई पुत्र न होने से आपने सेठ राधावल्लभजी को दत्तक लिया। अभी आप नाबालिग हैं। इस लिए फर्म का संचालन मुनीम करते हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

बलगाँव—मेसर्स रामसुख पूरनमल—इस फर्म में बैंकिंग, लेन-देन और कृषि का काम होता है।

अकोला

जी० आई० पी० रेलवे की भुसावल नागपुर लाइन में बरार प्रांत की मध्य आवादी के बीच यह शहर स्थित है। यह शहर बरार प्रांत के आबाद एवं व्यवसायिक शहरों में दूसरा नम्बर रखता है। कपास, कपड़ा, गल्ला, किराना एवं तेल का यहाँ बहुत बड़ा व्यवसाय होता है। इन सब व्यापारों में प्रधान व्यापार कपास का है। इस स्थान पर २१ कॉटन जीनिंग एवं १४ प्रेसिंग फैक्टरियां है। इसके अलावा २ कॉटन मिल एवं ३ ऑयल मिल हैं। प्रतिवर्ष १ लाख से अधिक गांठे रुई यहाँ तैयार होती है। अमरावती से इस शहर का टेलीफोन सम्बन्ध भी है। यहाँ के व्यापार पर भाटिया, मारवाडी एवं कच्छी तीन कौमों का अधिकार है। कच्छी लोग विशेष कर किराने एवं गल्ले के व्यापार को अपनाये हुए हैं एवं शेष दोनों जातियाँ रुई तथा कपड़े के व्यवसाय में प्रधान रूप में संलग्न हैं। व्यवसायिक दृष्टि से यह शहर बरार प्रांत में बहुत आगे माना जाता है। प्रसिद्ध २ सभी विदेशी फर्मों की एजंसियाँ रुई की खरीदी के लिये इस शहर में रहती हैं। तथा तमाम भारतीय मिल भी यहाँ से माल खरीदते रहते हैं। संवत् १९४५ से इस प्रांत में कपास की आमद क्रमशः वृद्धि पाती गई और आज तो प्रांत कपास के ही कारण मालदार भूमि बन रहा है। यहाँ से रुई बम्बई, अहमदाबाद, कलकत्ता, कानपुर आदि स्थानो मे एवं सरकी पंजाब, काठियावाड़ एवं बम्बई की ओर निकास होती है। खामगांव में कपासिया की २० मन की खंडी एवं अकोले मे २८ मन की खंडी से व्यवहार होता है। इसी प्रकार कपास की २८ मन की खंडी (१४ सेर का मन) एवं रूई का १४ मन का बोझा (१४ सेर का मन) पर भाव होता है। कपास के व्यवसाय के अलावा मुँगफली का व्यापार भी यहाँ दिन दिन बढ़ रहा है। १० वर्ष पूर्व मूँगफली यहाँ बिल्कुल पैदा नहीं होती थी, और आज ३-४ ऑइल मील सफलतापूर्वक चल रहे हैं। कपास की पैदावार बढ़ने से यहाँ गल्ला कम पैदा होने लगा। फलतः इस प्रांत मे गल्ला विशेषकर पंजाब, सी० पी० और मालवे से आता है। यहाँ की मीलों का बना कपड़ा भारत के सभी प्रान्तों में जाता है।

फैक्टरीज और इण्डस्ट्रीज

दि अकोला कॉटन मिल्स लिमिटेड

इस मिल की स्थापना सन् १९०६ में ७ लाख की पूँजी से दि अकोला मिड इंडिया स्पीनिंग एण्ड वीविंग कम्पनी लिमिटेड के नाम से हुआ था। बाद में इसकी पूँजी ३५ लाख तक हो गई थी। सन् १९१५ तक यह मिल त्रीकमदास जीवनदास एण्ड कम्पनी की मेनेजिंगशिप में काम करती रही। इसके बाद १९१९ तक त्रीकमजी वाड़िया इसके एजंट रहे। पश्चात् मेसर्स हुकुमचंद रामभगत बम्बईवालोंने २८ लाख में इसे खरीदा और सन् १९२२ तक यह मिल हुकुमचंद डालमियाँ मिल के नामसे काम करती रही। इन तीन सालों की अवधि में इस मिलने १२ और १० परसेंट मुनाफा भी बाँटा था। बाद मे यह मिल बंद पड़ी रही और अंतमें १९२६ की १९ अगस्त को इसे लिक्विडेशन में जाना पड़ा। इस प्रकार अपने जीवन में कई उथल-पथल एवं नामो के हेरफेर के बाद वर्तमान में यह मिल "दि अकोला कॉटन मिल्स लिमिटेड" के नाम से काम कर रही है। इसे कुछ समय पूर्व बम्बई के मेसर्स मामराज रामभगत एवं शिवनारायण सूरजमल नेमानी ने खरीदा है।

इस समय इस मिल की एजंट मेसर्स बालकृष्णदास सूरजमल एण्ड कम्पनी है। इसके आफिस का पता १२।१४ शेख-मेमन स्ट्रीट, बम्बई है और तार का पता Akola Mill है इस समय मिल में २२४७६ स्पेंडिल्स और ४५८ लूम काम करते हैं। रोजाना काम करनेवाले मजदूरो की संख्या १४०० है। यह मिल ५५० गाँठ कपड़ा तथा २५० गाँठ सूत प्रति मास तयार करता है। मिल की ओर से कपड़ा और सूत बेंचने के लिये अकोला और गोंदिया में दुकानें तथा दिल्ली, भागलपुर, कलकत्ता एवं बिलासपुर में एजेंसियाँ है।

दी सावंतराम रामप्रसाद कॉटन मिल्स कम्पनी लिमिटेड

इस मिल का स्थापन १९१२ में १५१० शेअरों में ७ लाख ५५ हजार की पूँजी से हुआ। आरंभ में इसमें १५० लूम और ७ हजार स्पेंडिल्स काम करते थे। तथा वर्तमान में २५० लूम्स और ११ हजार स्पेंडिल्स हैं। इसकी मैनेजिंग एजंट मेसर्स सावंतराम रामप्रसाद नामक फर्म है। इस मिल में करीब चोदह आनी शेअर्स उपरोक्त फर्म के हैं। यह मिल प्रतिवर्ष १५ लाख का कपड़ा और ३ लाख का सूत बाहर भेजती है। मिल में प्रतिदिन १० गाँठ कपड़ा और ६ गाँठ सूत तयार होता है। प्रतिदिन काम करने वाले मनुष्यो की संख्या ८०० है। इसका माल कलकत्ता, रायपुर, बिलासपुर, पंजाब, यू० पी०, बरार आदि प्रान्तों में जाता है।

मिल ऑनर्स

मेसर्स सावतराम रामप्रसाद

इस फर्म के वर्तमान मालिक बाबू किशनलालजी गोयनका अग्रवाल वैश्य समाज के गोयल सज्जन हैं। आपका खास निवासस्थान बलारा (नवलगढ़-जयपुर स्टेट) में है। इस फर्म का स्थापन करीब १०० से अधिक वर्ष पूर्व सेठ सावंतराम जी के हाथों से दहीहंडा (आकोट तालुका) में हुआ था। उस समय सेठ सावंतरामजी, हैदराबाद स्टेट के रिसाले को रसद सप्लाई करने का काम करते थे। आपके पश्चात् आपके पुत्र सेठ रामप्रसादजी ने अकोले में करीब ५०।६० साल पहिले अपनी फर्म स्थापित की। अकोला दुकान की तरक्की और प्रतिष्ठा का प्रधान श्रेय आपके मुनीम श्री जयकृष्ण बगाजी नाइक को है। श्री नाइकजी के हाथों से फर्म के व्यवसाय की बहुत वृद्धि हुई। सेठ रामप्रसादजी करीब ३५ साल पहिले स्वर्गवासी हुए। आपके पश्चात् आपके पुत्र सेठ ओंकारदासजी ने कार्य्यभार ग्रहण किया। सेठ ओंकारदासजी बड़े मिलनसार, सरलस्वभाव के व्यापार दक्ष सज्जन थे। सन् १९१२ में आपने सावंतराम रामप्रसाद कॉटन मिल्स को जन्म दिया। इस मिल के अधिकांश शेअर आप के ही पास हैं। तीन साल तक मिल का कार्य दक्षता पूर्वक संचालन कर आप १९७१ के फाल्गुन मास में स्वर्गवासी हो गये। आपकी अकाल मृत्यु से मिल के उज्ज्वल भविष्य में बहुत धक्का लगा। सेठ ओंकारदासजी के स्वर्गवासी होने के समय उनके एक मात्र पुत्र बाबू कृष्णलालजी गोयनका १३ वर्ष के थे। अतः फर्म का व्यवसाय संचालन सेठानी श्रीमती कस्तूरी बाई करती रहीं। और अब भी मिलकी मेनेजिंग डायरेक्टर आपही हैं।

श्रीयुत कृष्णलालजी गोयनका उन्नत एवं सुधरे विचारों के नवयुवक हैं। हाल ही में आप विलायत यात्रा करके वापस आये हैं। आपको शुद्ध खादी पहिनने का शौक है। यहाँ के सार्वजनिक कामों में आप भाग लेते रहते हैं। अपने पिताजी के स्मरणार्थ आपने श्री ओंकारदास औषधालय स्थापित किया है। आपकी फर्म आकोले एवं बरार प्रांत में बहुत मातबर एवं प्रतिष्ठित मानी जाती है। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

अकोला—मेसर्स सावंतराम रामप्रसाद साहु—बैंकिंग, लैंडलार्ड्स, मिल एजंसी एवं कमीशन का काम होता है।

दहीहंडा (आकोट) मेसर्स सावंतराम रामप्रसाद—यहाँ आप का प्रधान निवास है एवं खेती का बहुत बड़ा काम काज होता है।

इन्दौर केम्प—मेसर्स सावंतराम रामप्रसाद—सराफी लेन-देन का काम होता है।

पीपल्या (इन्दौर स्टेट) किशनलाल उंकारदास—जीनिंग फेक्टरी है तथा खेती का काम होता है।

सेठ कृष्णलालजी गोयनका, अकोला (सां० रा०)

दी सावतराम रामप्रसाद मिल्स लिमिटेड, अकोला
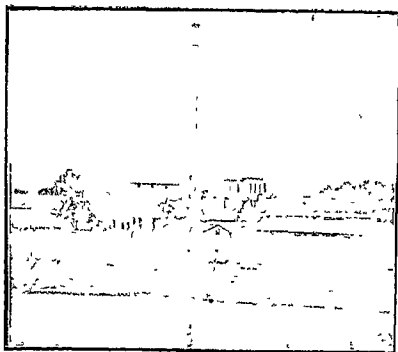
स्व० सेठ सांगीदासजी मोहता (मानमल आईदान) अकोला

सेठ आईदानजी मोहता (मानमल आईदान) अकोला

सेठ तोलारामजी मोहता (मानमल आईदान) अकोला

सेठ खुशालसिंहजी मोहता (मानमल आईदान) अकोला

बैंकर्स

मेसर्स बद्रीदास रामराय सरावगी

इस फर्म के मालिक नवलगढ़ (जयपुर स्टेट) निवासी अग्रवाल वैश्य समाज के सरावगी सज्जन हैं। संवत् १९२८ के करीब सेठ बद्रीदासजी देश से अकोला आये, यहां आप मामूली काम काज करते रहे। सेठ बद्रीदासजी के पिता पन्नालालजी एवं पितामह सेठ बज्जूरामजी थे, सेठ बज्जूरामजी बहुत सम्पत्तिशाली एवं प्रतिष्ठित सज्जन थे।

सेठ बद्रीदासजी के पुत्र बाबू रामरायजी, लक्ष्मीनारायणजी एवं पुंगीलालजी के हाथों से फर्म के व्यापार की विशेष वृद्धि हुई। बद्रीदासजी १९४७ में और रामरायजी १९६१ में स्वर्गवासी हुए। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

अकोला—मेसर्स बद्रीदास रामराय—सराफी लेनदेन का काम होता है।

अकोला—सरावगी जीन प्रेस फेक्टरी—इस नाम से आपकी कॉटन जीनिंग और प्रेसिंग है।

मेसर्स मानमल आईदान

इस फर्म के मालिक जेसलमेर निवासी माहेश्वरी वैश्य समाज के टावरी (मोहता) सज्जन हैं। करीब १०० वर्षों से खामगाँव मे इस फर्म का जयसिंहदास हंसराज के नाम से कारबार होता था। संवत् १९५३ में जसराज श्रीराम, नैनसुखदास गोकुलदास, मानमल आईदान एवं विसनसिंह हरीसिंह के नाम से इस फर्म की ४ शाखाएँ हो गई। तब से उपरोक्त फर्म अपना स्वतंत्र व्यापार कर रही है। सेठ सांगीदासजी के हाथो से इस फर्म के व्यापार की विशेष वृद्धि हुई। आप बड़े दृढ़प्रतिज्ञ एवं चरित्रवान् सज्जन थे। आप ही के समय में अकोला, हिंगोली आदि स्थानों में जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरियाँ खोली गई। संवत् १९७६ में आप स्वर्गवासी हुए।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ सांगीदासजी के पुत्र सेठ आईदानजी एवं सेठ तोला-रामजी हैं। आपका कुटुम्ब माहेश्वरी समाज में अच्छा प्रतिष्ठित माना जाता है, सेठ आईदानजी ने अकोला एवं धामनगाँव में होनेवाले माहेश्वरी महासभा अधिवेशन के स्वागताध्यक्ष का पद सुशोभित किया था। आपके पुत्र श्रीयुत खुशालसिंहजी कारबार में भाग लेते हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

अकोला—मेसर्स मानमल आईदान } बैङ्किंग, जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी एवं कॉटन का व्यापार होता है।

नीमगाँव (नांदूरा) झुम्मारसिंह सांगीदास—कृषि का कारबार होता है।

कारंजा—मेसर्स मानमल ऑइदान—आढ़त और रूई का व्यापार होता है।
आकोट— " " — " "
वाशीम— " " — " "
वाशीटांकली (अकोला)—गोपीकिशन गोपालदास—जीन फेक्टरी है।
हिंगोली (निजाम) हिंगोली जीन कम्पनी—जीन फेक्टरी है।

मेसर्स रघुनाथदास रामप्रताप

इस फर्म के मालिकों का मूल निवासस्थान लक्ष्मणगढ़ (सीकर) है। आप माहेश्वरी वैश्य समाज के तोषनीवाल सज्जन हैं। इस फर्म का स्थापन सेठ रघुनाथदासजी के हाथों से करीब १०० साल के पूर्व हुआ था। आपके सेठ रामप्रतापजी एवं सेठ मन्नालालजी दो पुत्र हुए, सेठ रामप्रतापजी के हाथो से इस फर्म के कारवार की वृद्धि हुई, आपने अकोला में एक धर्मशाला बनाई। आप संवत् १९६४ में स्वर्गवासी हुए।

सेठ रामप्रतापजी के यहाँ सेठ लक्ष्मीनारायणजी दत्तक लाये गये तथा सेठ लक्ष्मीनारायण जी के यहाँ सेठ राधाकृष्णजी संवत् १९७१ में दत्तक लाये गये।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक बाबू राधाकृष्णजी तोषनीवाल हैं। आपने फर्म के व्यापार को भिन्न २ लाइनों में बाँट दिया है। ६,७ साल पूर्व आपने कॉटन जीनिंग फेक्टरियां स्थापित कीं। बरार प्रांत में बढ़ते हुए मोटर व्यापार से लाभ उठाने के लिये अभी २ साल पूर्व से फोर्ड मोटर का व्यापार आरंभ किया। हाल ही में प्रताप थियेटर के नाम से आपने एक सुंदर थियेटर हाल बनवाया है। व्यवसायिक उन्नति के साथ २ सामाजिक एवं व्यापारिक जगत् में भी आपका अच्छा सम्मान है। आप माहेश्वरी महासभा के अकोला अधिवेशन के स्वागत मंत्री थे। अकोले के कॉटन मार्केट के सभापति एवं म्युनिसिपैलेटी के मेम्बर भी आप रह चुके हैं। आप वच्छराज कम्पनी लिमिटेड के डाइरेक्टर हैं। आपकी ओर से यहाँ एक बहुत सुंदर धर्मशाला बनी है। शहर से ७ मील की दूरी पर आपका सुन्दर बँगला एवं बगीचा बना है। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

अकोला—मेसर्स रघुनाथदास रामप्रताप T. No 17 } बैङ्किंग एवं कॉटन का व्यापार होता है।
अकोला—मेसर्स राधाकृष्ण तोषनीवाल—इस नाम से यहाँ आपकी जीन फेक्टरी है।
नांदूरा— " " — " " "

सेठ रघुनाथदासजी तोपनीवाल (रघुनाथदास रामप्रताप) अकोला

सेठ रामप्रतापजी तोपनीवाल (रघुनाथदास रामप्रताप) अकोला

सेठ राधाकृष्णजी तोपनीवाल (रघुनाथदास रामप्रताप) अकोला

सेठ कन्हैयालालजी तोपनीवाल (राधाकृष्ण एण्ड कम्पनी) अकोला

स्व० सेठ मोतीलालजी (मोतीलाल बंशीलाल) अकोला

श्री० सेठ उत्तमचंदजी (मोतीलाल बंशीलाल) अकोला

ला० जसकरनलालजी (किशनलाल संतोषीलाल) अकोला

अकोला—मेसर्स राधाकृष्ण कम्पनी—फोर्ड मोटर की एजंसी है। यहाँ मोटर नगदी से व किश्त से बेंची जाती है। इसके अलावा मोटर एसेसरीज, बाड़ी बिल्डर्स, इंजिनियर्स एवं पेट्रोल का व्यापार होता है।

नांदूरा—राधाकृष्ण कम्पनी—यहाँ भी उपरोक्त व्यापार होता है।

यवतमाल— ,, ,, ,, ,,

इस फर्म के मोटर व्यवसाय में सेठ राधाकृष्णजी के बड़े भ्राता बाबू कन्हैयालालजी तोषनीवाल का भाग है।

मेसर्स मोतीलाल वंशीलाल

इस फर्म के मालिक रामपुर (सारंगपुर यू० पी०) के निवासी अग्रवाल वैश्य समाज के जिंदल गौत्रीय सज्जन हैं। इस फर्म का स्थापन करीब १०० साल पूर्व सेठ बंशीलालजी के द्वारा हुआ। आपने इस फर्म में बैंकिंग व्यापार, लेन-देन एवं खेती में बहुत सम्पत्ति एकत्रित की। अकोले में आपकी बहुत बड़ी प्रतिष्ठा थी। आपने ७० वर्ष पूर्व श्रीलक्ष्मीनारायणजी का मंदिर बनवाया एवं इस मंदिर के स्थाई प्रबंध के लिये ५।६ लाख की सम्पत्ति एक ट्रस्ट के जिम्मे की। करीब ५० वर्ष पूर्व आप स्वर्गवासी हुए।

सेठ वंशीलालजी के २ पुत्र हुए, सेठ मोतीलालजी एवं सेठ बालचंदजी। इन दोनों भाइयों का कारबार करीब ३५ साल पहिले अलग २ हो गया। सेठ मोतीलालजी भी बड़े धर्मात्मा सज्जन थे। आपने बद्रीनारायण, देवप्रयाग, इलाहाबाद तथा नाशिक में धर्मशालाएँ बनवाई। इसी प्रकार कई धार्मिक कामो में आपने आजीवन योग दिया। आप ६-१०-२५ को स्वर्गवासी हुए हैं। ६ साल पूर्व आपने अकोले में लोकमान्य थियेटर बनाया है।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ मोतीलालजी के पुत्र श्रीयुत् उत्तमचंदजी हैं इस समय आपकी वय १७ वर्ष की है। आप अपने पिताजी के स्मरणार्थ एक सुन्दर संगमरमर की छतरी बनवाने की योजना कर रहे हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

अकोला—मेसर्स मोतीलाल बंशीलाल — जमीदारी, लेन-देन, स्थाई सम्पत्ति एवं कपास की आढ़त का व्यापार होता है।

खामगाँव—मेसर्स मोतीलाल बंशीलाल—लेनदेन का काम होता है।

मेसर्स रामानंद दानमल

इस फर्म का स्थापन १०० साल पहिले सेठ रामानंदजी के हाथों से हुआ। उस समय यहाँ तेल और गल्ले का व्यापार होता था। सेठ रामानंदजी के बाद सेठ दानमलजी के हाथों से फर्म के व्यापार की वृद्धि हुई, आपने यहाँ एक श्री खोलीश्वर का मंदिर बनवाया। वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ रामगोपालजी हैं। आप सावंतराम रामप्रसाद कॉटन मिल के डायरेक्टर हैं। आपके यहाँ बैंकिंग, रेहन गिरवी, आढ़त, गल्ला तथा रूई का व्यापार होता है।

कॉटन मरचेंट्स एण्ड कमीशन एजंट्स

मेसर्स किशनलाल संतोखीलाल

इस फर्म के मालिक अरोड़ा खत्री समाज के सज्जन हैं। आपका मूल निवास पंजाब है। वहाँ से आपका कुटुम्ब नागोर और नागोर से करीब १०० वर्ष पूर्व लाला संतोखीरामजी के समय में यहाँ आया। आपके पुत्र लाला किशनलालजी ने व्यवसाय-वृद्धि की। आपने इस फर्म में अच्छी प्रतिष्ठा पाई। आप १९७६ में स्वर्गवासी हुए।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक लाला किशनलालजी के पौत्र (लाला गणपतलालजी के पुत्र) श्रीयुत जसकरण लालजी हैं। आप शिक्षित सज्जन हैं। वर्तमान में आप स्थानीय कॉटन मार्केट के प्रेसिडेंट एवं म्युनिसिपल मेम्बर हैं। आपने फर्म के बैंकिंग व्यापार एवं स्थाई सम्पत्ति में विशेष वृद्धि की है। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

अकोला—मेसर्स किशनलाल संतोखीलाल—बैंकिंग और कपास की आढ़त का व्यापार होता।
अकोला—मेसर्स जसकरणलाल गणपतलाल—कपड़े का व्यापार होता है।

मेसर्स गुलाबराय गोविंदराम

इस फर्म के मालिक नवलगढ़ (सीकर) निवासी अग्रवाल वैश्य समाज के गोयनका सज्जन हैं। सर्व प्रथम सेठ गुलाबरायजी के पिता सेठ भजूरामजी अकोला आये थे। गुलाब· रायजी के पुत्र गोविंदरामजी के हाथों से फर्म के व्यवसाय की वृद्धि हुई। सेठ गोविंदरामजी के पुत्र गुरुप्रतापजी, सूरजमलजी तथा सीतारामजी हुए। करीब ३५ साल पहिले से सूरजमलजी एवं सीतारामजी का कुटुम्ब अलग २ व्यापार करता है।

सेठ पन्नालालजी खण्डेलवाल (पन्नालाल हीरालाल) अकोला

सेठ नौरंगरायजी झूंझनूवाला (नौरंगराय पन्नालाल) अकोला

सेठ हीरालालजी खण्डेलवाल (पन्नालाल हीरालाल) अकोला

सेठ बंशीधरजी झूंझनूवाला (नौरंगराय पन्नालाल) अकोला

वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ सूरजमलजी एवं सेठ सीतारामजी के पुत्र श्रीरामजी है। सेठ सूरजमलजी के पुत्र लक्ष्मीचंदजी तथा राधाकिशनजी एवं श्रीरामजी के पुत्र बृजमोहनजी भी व्यापार संचालन में भाग लेते हैं। इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

अकोला—मेसर्स गुलाबराय गोविंदराम—जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी है तथा बेङ्किंग और कॉटन का व्यापार होता है।

आकोट—मेसर्स सूरजमल श्रीराम—यहाँ कॉटन जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी है।

वाशीम—मेसर्स गुलाबराय गोविन्दराम— ,, ,, ,,

मालेगाँव—मेसर्स लक्ष्मीचंद बृजमोहन— ,, ,, ,,

पूसद—मेसर्स राधाकिशन बृजमोहन— ,, ,, ,,

मेसर्स गुलाबराय हरदयाल

इस फर्म का स्थापन करीब १०० साल पहिले सेठ गुलाबरायजी ने किया। आपके पुत्र सेठ हरदयालजी, गोविंदरामजी और बालाप्रसादजी गुलाबराय गोविंदराम के नाम से कारबार करते थे। संवत् १९५५ में गुलाबराय गोविंदराम और गुलाबराय हरदयाल के नाम से इनकी दो फर्में हो गई।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ हरदयालजी के पुत्र गुरुप्रतापजी हैं। आपके पुत्र गणपतरायजी व्यापार संचालन करते हैं। सेठ गुरुप्रतापजी सनातन धर्मसभा अकोला के सभापति हैं। आपकी ओर से यहाँ एक धर्मशाला बनी है। इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

अकोला—मेसर्स गुलाबराय हरदयाल—जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी है, तथा सराफी और रूई का व्यापार होता है।

वाशीम—मेसर्स गुलाबराय हरदयाल—जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी और रूई का व्यापार होता है।

मेसर्स नौरंगराय बंशीधर

इस फर्म के मालिक चिड़ावा (सीकर) निवासी अग्रवाल वैश्य समाज के झूँझनूवाला सज्जन हैं। सेठ नौरंगरायजी ५० साल पूर्व अकोला आये। एवं ४० साल पूर्व आपने बाबू पन्नालालजी खंडेलवाल के भाग में नौरंगराय पन्नालाल नामक फर्म स्थापित की। अभी २ संवत् १९८६ में आप दोनों सज्जनों की फर्में अलग २ हो गईं।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ नौरंगरायजी है। आपके पुत्र बंशीधरजी तथा नथमलजी फर्म का कार्य्य-संचालन करते हैं।

आप अकोला मिल, सावंतराम रामप्रसाद मिल एवं माधवदास अमरसी के ब्रोकर हैं। इसके अलावा आपकी आढ़त में कानपुर, कलकत्ता, दिल्ली, गवालियर, व्यावर आदि की मिलों की खरीदी रहा करती है। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

अकोला—मेसर्स नौरंगराय वंशीधर T. No 2I } रुई की दलाली और आढ़त का व्यापार होता है।

आकोट—मेसर्स नौरंगराय वंशीधर—रुई की खरीदी का व्यापार होता है।

मेसर्स पन्नालाल हीरालाल

इस फर्म के वर्तमान मालिक बाबू पन्नालालजी खंडेलवाल हैं। आपका मूल निवास स्थान नवलगढ़ (शेखावाटी) है। सेठ पन्नालालजी ने करीब ४० साल पहिले सेठ नौरंगरायजी झूँझनूवाला के भाग में नौरंगराय पन्नालाल नामक दुकान खोली। एक साल पूर्व तक उपरोक्त फर्म सफलता के साथ रूई का व्यापार और दलाली का कार्य करती आती थी। १९८६ में दोनों सज्जनों का हिस्सा अलग २ हो गया तब से यह फर्म पन्नालाल हीरालाल के नाम से व्यापार करती है। सेठ पन्नालालजी के पुत्र बाबू हीरालालजी खंडेलवाल शिक्षित सज्जन हैं एवं तत्परता से व्यवसाय संचालित करते हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

अकोला—मेसर्स पन्नालाल हीरालाल—रूई की दलाली तथा आढ़त का काम होता है, आपकी आढ़त में बम्बई, कलकत्ता, दिल्ली, कानपुर आदि स्थानों की खरीदी रहा करती है।

आकोट— „ „ —आढ़त तथा रूई की खरीदी होती है।

वाशिम— „ „ — „ „ „

ऊन (यवतमाल) „ „ — „ „ „

मेसर्स बख्शीराम रूड़मल

इस फर्म के मालिक मूल निवासी नवलगढ़ (सीकर) के हैं। आप अग्रवाल वैश्य समाज के गोयनका सज्जन हैं। सेठ बख्शीरामजी ने पहिले दहीहण्डे में दुकान स्थापित की। पश्चात सेठ रूड़मलजी ने ५०-६० साल पहिले अकोले में फर्म खोली। आप साधारण परिस्थिति में गल्ला और कृषि का कारवार करते थे।

सेठ बख्शीरामजी के भाई सेठ गुलाबरामजी एवं सेठ सांवतरामजी थे। इस समय आप तीनों भाइयो की फर्में बख्शीराम रूड़मल, सांवतराम रामप्रसाद एवं गुलाबराम गोविंदराम के नाम से व्यापार करती हैं।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ रूड़मलजी के पुत्र सेठ केदारमलजी, गजाधरजी, रामजीवनजी, किशनलालजी एवं नारायणदासजी हैं। आप लोगों ने फर्म के व्यापार को अच्छी तरक्की दी है। सेठ रूड़मलजी २८ साल पहिले स्वर्गवासी हो गये हैं, सेठ गजाधरजी शिक्षित सज्जन हैं व्यापार में आपकी अच्छी निगाह है। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

अकोला—मेसर्स बखशीराम रूड़मल—यहाँ कमीशन, कॉटन, कपासिया, गल्ला, कंट्राक्ट आदि का व्यापार होता है, विशेष कर आपका बिनोले का व्यापार प्रधान है। आप बिनोले का एक्सपोर्ट भी करते हैं। पंजाब सी० पी० बम्बई, कलकत्ता आदि भारत के प्रधान व्यापारिक स्थानों से आपका व्यापारिक सम्बन्ध है।

मेसर्स साधूराम तोलाराम

इस फर्म का हेडआफिस कलकत्ता है। कलकत्ते की राधाकृष्ण मिल नं० १ और २ की यह फर्म मालिक है। कलकत्ता, बम्बई, बरार तथा सी० पी० के व्यापारिक समाज में यह फर्म बहुत बड़ा व्यापार करती है। अकोला, अमरावती, वर्द्धा, हिंगनघाट, नागपुर आदि स्थानो पर इस फर्म की जीनिंग फेक्टरियाँ हैं, और कपास का व्यापार होता है। इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ तोलारामजी गोयनका, बाबू गौरीशंकरजी गोयनका एवं बाबू कन्हैयालालजी गोयनका हैं। आपका विस्तृत परिचय कई चित्रों सहित हमारे ग्रन्थ के द्वितीय भाग में दिया जा चुका है।

अकोले में इस फर्म का स्थापन ४० साल पहिले हुआ। यहाँ एक जीनिंग फेक्टरी है तथा कॉटन का व्यापार होता है।

ऑइल मिल्स

दि लक्ष्मी ऑइल मिल्स कम्पनी लिमिटेड

यह मिल १ मार्च १९०५ को स्थापित हुई। एवं १९०६ में इसकी मशीनरी चालू हुई। इसके स्थापनकर्ता राय बहादुर दत्तात्रय विष्णु भागवत सन् १९०० के करीब हाई कोर्ट की वकीली करते थे। उस समय चेम्बर में बैठे २ आप रसायनशास्त्र-सम्बन्धी पुस्तकें पढ़ा करते थे। आपके इस अध्ययन-कार्य्य की आपके साथी लोग हँसी किया करते थे। सन् १९०५ में आपने वकीली छोड़कर आइल मिल खोलना निश्चय किया। इस कार्य में आपके गुरु विष्णु मोरेश्वर उर्फ अन्नासाहब ने आपको समय २ पर पूँजी और विश्वास दिलाया। मि० भागवत

साहब ने मिल की दिन प्रति दिन उन्नति कर दिखाई। आपने १७ वर्ष तक मिल का कार्य संचालन कर इसकी साम्पत्तिक स्थिति को अच्छा दृढ़ बनाया। सन् १९८३ में आपने अपने स्थान पर रा० ब० रामचन्द्र विष्णु उर्फ दादा साहब महाजनि की नियुक्ति कर मिल के मैनेजिंग डायरेक्टर पद से इस्तीफा दिया

ऑइल मिल की उन्नति कर रा० ब० भागवत साहब ने अपने नाती को रसायन-शास्त्र की शिक्षा देने एवं चरबी रहित साबुन तयार करने के लिये बंगलोर गव्हर्नमेंट सोप फेक्टरी में दाखिल कराया और स्वयं ७० वर्ष की अवस्था मे आपने भी उपरोक्त फेक्ट्री के उम्मीदवारों मे अपना नाम लिखाया। वहाँ से ज्ञान प्राप्त करके जर्मनी मशीनों के लिये आर्डर दिया। और अपनी मिल में साबन बनाने का विभाग खोला। गत वर्ष आपके यहाँ के बने साबन की ४० हजार की बिक्री हुई। .

यह मिल १ लाख ५ हजार की पूँजी से प्राइवेट लिमिटेड की गई है। ३। लाख इसका रिजर्व फंड है। गत वर्ष इस मिल ने २७७७ टन शीड्स का तेल निकाला। सन् २८।२९ में ११४२ टन तेल और १६८० टन खली आपने बाहर भेजी। रा० ब० भागवत साहब के पुत्र सेठ माधव दत्तात्रय भागवत ने नियमपूर्वक इंजीनियरिंग शिक्षा प्राप्त की है। आप की एक सेलिंग ब्रांच ताजनापेठ अकोला में है।

मेसर्स विसुनदयाल सीताराम

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ सीतारामजी के पुत्र बाबू जगन्नाथजी छावछरिया हैं। आप छावसरी (शेखावाटी) के निवासी अग्रवाल वैश्य समाज के सज्जन हैं। इस फर्म का स्थापन ६० साल पूर्व सेठ विसुनदयालजी ने किया। आप १९६२ में स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र सीतारामजी भी संवत् १९६३ में स्वर्गवासी हुए। यह फर्म आरंभ से ही गल्ला और आढ़त का कारबार करती है। सेठ सीतारामजी के पश्चात् श्रीहनुमतरामजी छावछरिया फर्म का व्यापार संचालित करते हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

अकोला—मेसर्स विसुनदयाल सीताराम— T. A Chawcharia — यहाँ आढ़त, गल्ला तथा तेल का व्यापार होता है।

इस नाम से आपका ऑइल मिल है। इस फर्म पर मेसर्स सनेहीराम जुहारमल के साझे में कॉटन का व्यापार होता है, इनके यहाँ "टोयो मेनका केशा" की एजंसी है। इस फर्म की कॉटन सीजन में अकोला डिस्ट्रिक्ट में कई पर्चेज एजंसियाँ खुल जाती हैं।

ल कुंजलाल

गोयल गौत्रीय सज्जन हैं। आप मोमा-रामगढ़
सेठ शिवलालजी के हाथों से ४० साल पहिले
ज़ीलालजी, सेठ गंगारामजी एवं शिवप्रसादजी।
मापके द्वारा फर्म के व्यापार को अच्छी तरक्की
'९८६ में स्वर्गवासी हुए। वर्तमान में आपके
प का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—
कपास और सरकी का व्यापार होता है और
..इल मिल है।
क जीनिंग फेक्टरी है।
कपास का व्यापार होता है।

एचेंट्स

भर पोद्दार

त भर में टाटा की मिलों का कपड़ा बेचने की
त परिचय हमारे ग्रन्थ के दूसरे भाग में कल-
फर्म पर कपड़े के व्यापार के अलावा मोटर

सेठ गजाधरजी गोयनका (बख्शीराम रूड़मल) अकोला

सेठ जगन्नाथजी छावछरिया (विशुनदयाल सीताराम) अकोला।

स्व० सेठ कुंजीलालजी (शिवलाल कुंजीलाल) अकोला

ग्रेन एण्ड किराना मर्चेंट्स

मेसर्स केशवलाल लालचन्द

इस फर्म का स्थापन बोदवड़ मे करीब ७५ वर्ष पूर्व सेठ रघुनाथदासजी के हाथों से हुआ। आप ओसवाल जैन समाज के जोधपुर (पीपलाद) निवासी सज्जन हैं। सेठ रघुनाथदासजी के पुत्र लालचन्दजी के हाथों से इस फर्म के व्यापार की विशेष वृद्धि हुई। आपने ही स्थान २ पर फर्म की ब्रांचेज स्थापित कीं। आप संवत् १९७६ में स्वर्गवासी हुए।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ लालचन्दजी के पुत्र मूलचन्दजी, मोतीलालजी, माणिकचन्दजी, हीरालालजी एवं सोभागचन्दजी हैं। आप सब एक एक फर्म का संचालन करते हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

अकोला—मेसर्स केशवलाल लालचंद T. A. Jain } कॉटन, सरकी, गल्ला एवं चाँदी सोने का व्यापार होता है।

खामगाँव—केशवलाल लालचन्द T.A. Jain आढ़त और गल्ला का व्यापार होता है।
मलकापुर—केशवलाल लालचन्द—आढ़त तथा गल्ला का व्यापार होता है।
बोदवड़—लालचन्द रघुनाथदास—आढ़त तथा गल्ला का कारबार होता है।
अमलनेर (पूर्व खानदेश) लालचन्द रघुनाथदास— „ „ „

मेसर्स शिवलाल भूरामल

इस फर्म का स्थापन १९२७ मे शिवप्रसादजी, मानीरामजी और शिवलालजी तीनों के हाथो से हुआ। आरम्भ से ही यह फर्म आढ़त और गल्ले का कारबार करती है। संवत् १९६७ में तीनों भाइयों का कारबार अलग २ हो गया। तब से शिवलालजी के पुत्र भूरामलजी अलग कारबार करते हैं। सेठ भूरामलजी के पुत्र महावीरजी भी व्यापार संचालन में भाग लेते हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

अकोला—मेसर्स शिवलाल भूरामल T. A. Bhuramal } यहाँ गल्ला और आढ़त का व्यापार होता है।

अकोला—भूरामल महावीर—आढ़त का काम होता है।

मेसर्स हाजी दाउद उसमान

इस फर्म का हेड आफिस बम्बई में है। सी० पी० बरार में इसकी १०।१२ ब्रांचेज हैं जिन पर गल्ले और किराने का बहुत बड़ा व्यापार होता है। इसका विस्तृत परिचय खामगाँव में दिया गया है।

बैंक ब्रोकर्स

मेसर्स रामचन्द्र रामगोपाल

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ रामगोपालजी एवं सुखदेवजी कोठारी हैं। आप माहेश्वरी समाज के बीकानेर निवासी तोषनीवाल कोठारी सज्जन हैं। सेठ रामगोपालजी के पितामह सेठ धनसुखदासजी करीब ५०-६० साल पहिले अकोला आये थे। आपके पुत्र सेठ रामचन्द्रजी ने बैङ्कों की दलाली का व्यापार आरम्भ किया। आज इस लाइन में आपकी फर्म अच्छी और प्रतिष्ठित मानी जाती है। सेठ रामचन्द्रजी १९६६ में स्वर्गवासी हुए।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

अकोला—मेसर्स रामचन्द्र रामगोपाल—बैङ्कों और व्यापारियों के साथ हुंडी चिट्ठी की दलाली का व्यापार होता है।

खामगाँव—मेसर्स चिरञ्जीलाल सुखदेव—बैङ्क की दलाली का व्यापार होता है यहाँ सुखदेवजी पार्टनर रूप में काम करते हैं।

कोल-मर्चेन्ट्स

मेसर्स सुगनचंद एण्ड कम्पनी

इस फर्म का स्थापन सन् १९१७ में बाबू सुगनचंदजी तापड़िया के हाथों से हुआ। आपका मूल निवासस्थान लालमदेसर (बीकानेर) है। आप माहेश्वरी वैश्य समाज के सज्जन हैं। बाबू सुगनचंदजी शिक्षित एवं उच्च विचारों के सज्जन हैं। आपके पिताजी सेठ सुखदेवजी ३२ साल पहिले अकोले में आये थे। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

अकोला—मेसर्स सुगनचंद एण्ड कम्पनी T. No 52 तार का पता Tapadia — मील जीन स्टोर सप्लायर एण्ड कोल मर्चेण्ट का व्यापार होता है।

प्रिंटिंग प्रेस

दि राजस्थान प्रिंटिंग एण्ड लिथो वर्क्स लिमिटेड

इस कम्पनी का स्थापन लिमिटेड रूप में करीब दो साल पूर्व हुआ। इसके पूर्व राजस्थान प्रिंटिंग प्रेस के नाम से यह प्रेस श्रीमान् बृजलालजी वियाणी का निज का था। इसे आपने सन् १९२२ मे स्थापित किया था।

वर्तमान में यह प्रेस इसके सुयोग्य संचालक एवं मेनेजिंग डायरेक्टर बाबू बृजलालजी वियाणी के नेतृत्व में सफलतापूर्वक काम कर रहा है। बड़ी पूंजी से संगठित रूप में काम करने वाला यह यहाँ पर पहिला ही प्रेस है! प्रेस में प्रति दिन काम करने वाले मनुष्यों की संख्या करीब ७५ है। प्रिंटिंग डिपार्टमेंट के अलावा स्टेशनरी, बही-खाता एवं एक्सर साइज़ म्येनु-फेक्चरिंग डिपार्टमेंट भी इस प्रेस में है।

श्रीयुत बृजलाल वियाणी राजनैतिक, सार्वजनिक कार्यों में एवं माहेश्वरी समाज के कार्यों में उत्साहपूर्वक भाग लेते रहते हैं। आप यहाँ की जनता में अच्छे प्रतिष्ठित एवं उच्च विचारों वाले सज्जन समझे जाते हैं।

जनरल मरचेंण्ट्स

मेसर्स जीवाजी इसमाइल

इस फर्म के मालिक गोंडल (काठियावाड़) निवासी बोहरा जमात के सज्जन है। जीवाजी सेठ ने करीब २५।३० साल पहिले इस दुकान को खोला था। जीवाजी सेठ अभी वर्तमान हैं। शुरू से ही आपके यहाँ लोहे का कारवार होता है तथा इस लाइन में आपकी दुकान अकोले मे बहुत बड़ा स्टाक रखती है। आपके ७ पुत्र हैं जिनमें बड़े चार सेठ तय्यबअली, अलीभाई, हसनअली एवं नजरअली कारवार मे भाग लेते हैं। आपका व्यापारिक परिचय यह है—

अकोला—मेसर्स जीवाजी इसमाइल—यहाँ सब प्रकार का बिल्डिंग सम्बन्धी लौहे का सामान मशीनरी एवं हार्ड वेअर का स्टाक रहता है एवं बिकता है।

बम्बई—जीवाजी इसमाइल भाजीपाला लेन T No 25428 — आढ़त का कामकाज होता है।

बैंकर्स

दि इम्पीरियल बैंक आफ इण्डिया लिमिटेड
को आपरेटिव्ह सैंट्रल बैंक लिमिटेड
मेसर्स उम्मेदीराम शिवप्रसाद
,, किशनलाल संतोखीराम
,, गणेशदास गुलाबचंद
,, गुलाबराय गोविंदराय
,, गुलाबराय हरदयाल
,, बद्रीदास रामराय
,, बख्शीराम रूड़मल
,, मोतीलाल वंशीलाल
,, मगनीराम जानकीदास
,, मानमल आईदान
,, रघुनाथदास रामप्रताप
,, रामानंद दानमल
,, सावंतराम रामप्रसाद

काटन मरचेंट्स

दि अकोला मिल लिमिटेड
मेसर्स गणपतराय शुभकरण
,, चुन्नीलाल रामचन्द्र
,, गुलाबराय गोविंदराय
,, जयनारायण म्हालीराम
,, दिलसुखराय बालाबगस
,, पन्नालाल हीरालाल (ब्रोकर्स)
,, मानमल आईदान
,, रघुनाथदास रामप्रताप
,, माधवदास अमरसी
,, बीजराज कुंजीलाल

जीनिंग एण्ड प्रेसिंग फेक्टरीज़

दि अकोला कॉटन जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी
मेसर्स कुंजीलाल रामेश्वर जीनिंग फेक्टरी
मेसर्स गणेशदास गुलाबचंद जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी
दि गामडिया प्रेसिंग फेक्टरी
मेसर्स गुलाबराय गोविंदराय जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी
,, गुलाबराय हरदयाल जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी
दि चुन्नीलाल जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी
दि जापान जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी
दि मनमाड जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी लिमिटेड
दि मूलराज खटाऊ जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी
,, मूलजी जेठा जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी
दि आर० व्ही० सभापति प्रेसिंग फेक्टरी लिमिटेड
दि राधाकृष्ण तोषनीवाल जीनिंग फेक्टरी
दि राली ब्रदर्स जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी
रतनसी मूलजी जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी
सरावगी जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी
सावंतराम रामप्रसाद जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी
साधूराम तोलाराम जीनिंग फेक्टरी

ऑइल मिल्स

दि लक्ष्मी ऑइल मिल्स कम्पनी लिमिटेड
मेसर्स विसुनदयाल सीताराम ऑइल मिल
,, शिवलाल कुंजलाल ऑइल मिल

मेसर्स बख्शीराम रूड़मल (सरकी के व्यापारी)
" सावंतराम रामप्रसाद कॉटन मिल्स लि०
" साधूराम तोलाराम
" सुखदेव सीताराम
" शिवलाल कुंजलाल
" एच०खजी भाई कम्पनी (सरकी के व्यापारी)

विदेशी कम्पनियों की एजेंसियाँ

मेसर्स घोषो काबूसी केशा लिमिटेड
" जापान ट्रेडिंग कम्पनी लिमिटेड
" टोयो मेनका केशा लिमिटेड
" वालकट ब्रदर्स लिमिटेड
" राली ब्रदर्स लिमिटेड

ग्रेन मर्चेंट एण्ड कमीशन एजंट्स

मेसर्स केशवलाल लालचंद
" बिलासराय रामजीदास
" लच्छीराम प्रभुदयाल
" शिवलाल भूरामल
" शिवचंद्राय कुंजीलाल
" शिवप्रसाद जुहारमल
" हाजीदाउद उसमान

किराने के व्यापारी

मेसर्स उमर हाजी करीम
" उमरहाजी शरीफ
" जुम्माहाजी करीम
" दामोदर लक्ष्मीदास
" ताराचंद कालीदास

मेसर्स धारसी गीगाभाई
" नथमल शंकरलाल
" शामलाल कन्हैयालाल
" हाजीदाउद उसमान
" हाजीमहम्मद अयूब

कपड़े के व्यापारी

दि अकोला मिल क्लाथ शाप
मेसर्स अर्जुनसा आनंदसा
" अमृतलाल साखरचंद
" कृष्णदास चापसी
" कान्तिलाल छोटालाल
" कान्तिलाल पोपटलाल
" कनकसेन हरीदास
" जसकरणलाल गनपतलाल
" जमनाधर पोद्दार
" रामकिशन हरीकिशन
दि सावंतराम रामप्रसाद मिल क्लाथ शाप
मेसर्स शिवजी जीवनदास
" हाजी शकूरगनी शाहमोहम्मद
" हिम्मतलाल शाकलचंद

पातल साड़ी के व्यापारी

पुरुषोत्तम रामचन्द्र ओक
बरार ट्रेडिंग कम्पनी लिमिटेड

जनरल मरचेंट्स

मेसर्स अहमदअली हैदरभाई
" अब्दुलहुसेन मुनव्वरअली
" अकबरअली मुल्लां अब्दुलहुसैन

हार्ड वेअर मरचेंट्स

मेसर्स अब्दुलअली वोदलभाई
" अब्दुलअली मामूजी
" करीमभाई मामूजी
" जीवाजी इसमाइल
" दादुरभाई कादरभाई

मोटर, मोटर गुड्स एण्ड पेट्रोल डीलर्स

मेसर्स केला कम्पनी
" जमनाधर पोद्दार (शेवरोलेट एजंसी)
" राधाकृष्ण कम्पनी (फोर्ड एजंसी)
" हकीमियां शाप (फैथ एजंसी)

मिल जिन स्टोर एण्ड कोल मरचेंट्स

मेसर्स सुगनचंद एण्ड कम्पनी (मिल जिन स्टोर, कोल)
" यू० डी० पटेल एण्ड कम्पनी (मिल जिन स्टोर)

आर्मस एण्ड अम्यूनिसियन डीलर्स

मेसर्स अकबरअली मुल्ला अब्दुल हुसैन
" कादरभाई हुसेनअली
" कृष्ण तेलकर

केमिस्ट एण्ड डर्गिस्ट

मेसर्स कृष्ण तेलकर एण्ड कम्पनी
" पटेल एण्ड कम्पनी

प्रिंटिंग प्रेस

अब्बासी छापखाना
प्रजापक्ष छापाखाना (प्रजापक्ष साप्ताहिक)
राजस्थान प्रिंटिंग एण्ड लिथो वर्क्स लिमिटेड
वतनदार छापखाना
लोकसेवक छापखाना (लोकसेवक साप्ताहिक)

धर्मशाला

गुलाबराय हरदयाल धर्मशाला
रघुनाथदास रामप्रताप धर्मशाला

टोपी के व्यापारी

मेसर्स कच्छी ब्रदर्स
" रतनसी अम्बाराम

चाँदीसोने के व्यापारी

मेसर्स केशवलाल लालचंद
" पृथ्वीराज रतनलाल
" सुखदेव शिवनारायण

सार्वजनिक संस्थाएँ

खत्री हितैषी हिन्दी पुस्तकालय
नेटिव्ह जनरल लायब्रेरी
मारवाड़ी गोरक्षण संस्था
सनातन धर्म-सभा

खामगाँव

बरार प्रांत के बुलठाणे जिले का यह प्रधान स्थान है। जी. आई. पी. रेलवे की भुसावल नागपुर लाइन के जलम्ब नामक स्टेशन से एक लाइन खामगाँव को जाती है। खानदेश और बरार प्रांत में कपास के व्यापार में इस शहर का बहुत ऊँचा स्थान है। यहाँ करीब ४० कॉटन, जीनिंग-प्रेसिंग फेक्टरियाँ हैं। संवत् १९४५ से इस प्रांत में कपास की उपज अधिक होने लगी और उसके स्थान पर गल्ले की पैदावार कम होने लगी। तब से इन शहरों का रोजगार चमका। लाख सवा लाख गाँठ प्रति वर्ष इस मंडी की जीनिंग-प्रेसिंग फेक्टरियाँ बाँधती हैं। इस शहर में करीब १६०० चरखे रूई निकालने का काम करते हैं।

उपज—यहाँ की खास पैदावार कपास, सींगदाणा (मुंगफली) ज्वार और अरहर है। वैसे कमोबेश सभी प्रकार का अनाज पैदा होता है।

तौल—सरकी (बिनोला) खंडी पर भाव होता है। २८ रतल का १ मन और २० मन की खंडी मानी जाती है।

कपास—२८ रतल के मन की २८ मन की खंडी पर भाव होता है।

गल्ला—गल्ले का तौल मन और पायली पर होता है। (बंगाली १०० सेर की भरती =२२॥ पायली) १२ पायली का मन और २० मन की खंडी। जवारी बाजरी का भाव खंडी पर और गेहूँ, चना तथा अरहर की दाल मन के भाव से बिकती है।

गुड़—गुड़ का तौल ७८ तोले का सेर व १२ सेर का मन माना जाता है।

शक्कर—शक्कर का तौल ७८ तोले का सेर व १०$\frac{3}{4}$ सेर का मन माना जाता है।

घी—इसका तौल ७८ तोले का सेर व १०$\frac{1}{2}$ सेर का मन माना जाता है।

रूई—रूई का १४ सेर का मन और १४ मन की रूई का बोझा पर होता है।

यहाँ के व्यापारियों का परिचय इस प्रकार है—

बैंकर्स

मेसर्स कस्तूरचंद भीखनचंद

इस फर्म के मालिकों का मूल निवास-स्थान फलोदी (जोधपुर) है। आप माहेश्वरी वैश्य समाज के राठी सज्जन हैं। इस फर्म का स्थापन करीब १०० साल पूर्व सेठ जयसिंह दासजी, परमानंदजी एवं उम्मेदरामजी तीनों भाइयों ने साईखेड़े में किया था और वहाँ से आप तीनों सज्जनों ने आकर खामगाँव में अपनी दूकान खोली। आप लोगों के पश्चात् सेठ उम्मेदरामजी के पुत्र सेठ कस्तूरचंदजी (परमानंदजी के दत्तक) एवं भीखनचंदजी के हाथों से फर्म के व्यापार की विशेष रूप से तरक्की हुई। सेठ भीखनचंदजी के तीन पुत्र हुए। सेठ प्रेमसुखदासजी, सेठ श्रीकृष्णदासजी (बलदेवदासजी के दत्तक) तथा सेठ नरसिहदासजी (कस्तूरचंदजी के दत्तक)। इन सज्जनों में से प्रेमसुखदासजी के हाथों से फर्म के कपास और जीनिंग फेक्टरी के व्यवसाय में विशेष वृद्धि हुई।

इस फर्म के वर्त्तमान मालिक सेठ प्रेमसुखदासजी एवं सेठ श्रीकृष्णदासजी के पुत्र सेठ बालकृष्णदासजी हैं। प्रेमसुखदासजी के दत्तक पुत्र शिवकिशनदासजी भी व्यवसाय कार्य्य देखते हैं। सेठ प्रेमसुखदासजी राठी की धार्मिक कामों की ओर भी अच्छी रुचि है, आप ने ५० हजार की लागत से फलोदी में एक भारी कूआँ तयार करवाया है, तथा प्रति वर्ष ७।८ हजार रुपया साल उपरोक्त कूएँ पर आप व्यय करते हैं। लोट आदि स्थानों पर २।३ धर्मशालाएँ भी आपने बनाई हैं। अभी २ खामगाँव में होने वाले माहेश्वरी पंचायत परिषद् अधिवेशन के आप स्वागताध्यक्ष निर्वाचित हुए थे। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

खामगाँव—मेसर्स कस्तूरचंद भीखनचंद — सराफी लेनदेन और खेती का काम होता है। यहाँ आस-पास १०।१२ गाँवों में आपका बहुतसा कृषि का काम-काज होता है।

नान्दूरा—सेठ प्रेमसुखदास राठी—जीनिंग फेक्टरी है।
पिपलगाँव—सेठ शिवकिशनदास राठी—जीनिंग फेक्टरी लेनदेन और कृषि का काम।
वाशिम—मेसर्स प्रेमसुखदास बालकिशनदास—जीनिंग फेक्टरी है।
उमरखेड़—शिवकिशनदास राठी—जीनिंग फेक्टरी है और रुई का व्यापार होता है।
तिलारा—मेसर्स कस्तूरचंद भीखनचंद—लेनदेन और व्यापार होता है।
बोरड़ी (आकोट) कस्तूरचंद भीखनचंद—" " " "

मेसर्स जसराज श्रीराम

इस फर्म के मालिक जेसलमेर (राजपूताना) के निवासी माहेश्वरी वैश्य समाज के टावरी मोहता सज्जन हैं। करीब १०० वर्षों से यह फर्म मेसर्स जयसिंह दास हंसराज के नाम से व्यवसाय कर रही थी। इधर संवत् १९५३ से इस फर्म की ४ अलग अलग शाखाएँ हो गई। तब से उपरोक्त फर्म जसराज श्रीराम के नाम से अपना स्वतंत्र व्यापार कर रही है। इसके व्यापार को सेठ श्रीरामजी एवं सेठ इन्द्रसिंहजी के हाथों से विशेष तरक्की प्राप्त हुई। सेठ श्रीरामजी संवत् १९५७ एवं सेठ इन्द्रसिंहजी संवत् १९८४ में स्वर्गवासी हुए।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ श्रीरामजी के पुत्र सेठ हरीदासजी एवं सेठ इन्द्रसिंह जी के पुत्र ओंकारदासजी एवं नवलकिशोरजी हैं। सेठ इन्द्रसिंहजी के बड़े पुत्र सेठ शंकरलाल जी छोटी अवस्था में ही स्वर्गवासी हो गये थे अतः इनके यहाँ ओंकारदासजी दत्तक गये हैं। यह फर्म खामगाँव के व्यापारिक समाज में अच्छी प्रतिष्ठित एवं मातवर समझी जाती है। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

खामगाँव—मेसर्स ,जसराज श्रीराम } जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी है तथा बैङ्किंग एवं काटन का व्यापार होता है।

बम्बई—सेठ श्रीराम मोहता
गोपाल भवन-मुलेश्वर
T. A. Well. } कॉटन का व्यापार बैङ्किंग और आढ़त का काम होता है।

इसके अलावा भुसावल में आप की एक आइल मिल चलती है। तथा फैजपुर, बरनगाँव, सावदा की जीनिंग प्रेसिंग फैक्टरियों में आपका साझा है।

मेसर्स टीकमदास मदनलाल

इस फर्म का पूर्व कौटुम्बिक परिचय मेसर्स बिहारीलाल रामगोपाल फर्म के परिचय में दिया गया है। सेठ गनेशदासजी के पुत्र सेठ सदारामजी एवं सीतारामजी का कुटुम्ब इस फर्म का मालिक है। सेठ सदारामजी के मोतीलालजी (सेठ सीतारामजी के दत्तक) एवं टीकमदासजी दो पुत्र हुये। सेठ टीकमदासजी के हाथों से फर्म के व्यवसाय की वृद्धि हुई है। वर्तमान में दोनों भाइयों के मालिक टीकमदासजी के पुत्र श्रीमदनलालजी हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

खामगाँव—मेसर्स टीकमदास मदनलाल—जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी है, तथा कॉटन का व्यापार और बैङ्किंग काम होता है।

फेक्टरी है और कॉटन का व्यापार होता है।

" " "
" " "

स्व० सेठ इन्द्रसिंहजी मेहता (जसराज श्रीराम) खामगाँव
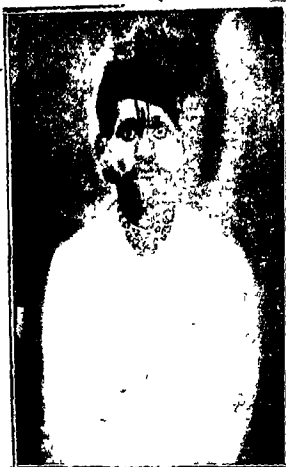
' श्रीराम लढ़ा

ढ़ा, पोकरन निवासी माहेश्वरी वैश्य समाज
५ वर्ष पूर्व सेठ मौजीरामजी एवं नेतसीदास-
पश्चात् सेठ गुलाबचंदजी एवं श्रीरामजी के
फर्म की ओर से खामगाँव में करीब २०-२५
मन्दिर बनवाया गया है। आपका व्यापारिक

ग तथा रुई का व्यापार और खेती का काम
। इसके अलावा बुलठाणा जिले में आपकी
नों पर और दुकानें हैं।

ग गोकुलदास

जी के पुत्र सेठ सकत सिंहजी हैं। आप जेसलमेर निवासी टावरी मोहता समाज के सज्जन हैं। करीब ३० वर्ष पूर्व से आपकी फर्म उपरोक्त नाम से व्यापार करती है, इसके पूर्व आपका जयसिंहदास हंसराज के नाम से व्यापार होता था। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

खामगांव—मेसर्स नेनसुखदास गोकुलदास—बैङ्किग आढ़त तथा रुई का व्यापार होता है।
पिंपल गांव—मेसर्स गोकुलदास नथमल—लेनदेन और खेती काम होता है।

मेसर्स बिहारीलाल रामगोपाल

इस फर्म के मालिक पोकरण के निवासी माहेश्वरी समाज के राठी-सावणा सज्जन हैं। इस कुटुम्ब को व्यवसाय स्थापन करीब १५०।१७५ वर्ष पूर्व सेठ खुशालचंदजी राठी के हाथों से नमोन (जिला नाशिक) में हुआ था। बहुत समय तक इस फर्म का बम्बई, कानपुर, मलकापुर, खामगांव, अमरावती, तेलारा, अकोला, सेगांव, धामनगांव, वाशिम, आकोट आदि कई स्थानों पर व्यापार होता रहा। करीब २५ साल पहिले श्रीराम शालिगराम एवं श्रीराम

रामगोपाल के नाम से इस फर्म की दो शाखाएँ हो गईं। इन फर्मों का संचालन सेठ टीकमदासजी, सेठ फोजराजजी एवं सेठ रामगोपालजी करते थे। आप तीनों क्रमशः सेठ गनेशदासजी के पुत्र सदारामजी, गुलावचंदजी, एवं विहारीलालजी के पुत्र थे।

करीब १० साल पूर्व इन तीनों भाइयों का कारवार भी अलग २ हो गया, तब से सेठ रामगोपालजी की फर्म उपरोक्त नाम से अपना व्यापार कर रही है। वर्तमान फर्म के मालिक सेठ रामगोपालजी एवं उनके पुत्र दाउलालजी और नंदलालजी हैं। आपके कुटुम्ब की ओर से मथुरा में एक कुंज तथा पोकरन में शिवबाग नामक एक देवल और बगीचा बना है। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

खामगांव—मेसर्स विहारीलाल रामगोपाल—जीन फेक्टरी और कॉटन का व्यापार होता है।
मलकापुर—मेसर्स नंदलाल अचलदास—बैङ्किंग, जीनिंग प्रेसिंग और कॉटन का व्यापार होता है।
जामोद—विहारीलाल रामगोपाल—आसामी लेन-देन का काम होता है। इसके अलावा, दिनोड़ा हरसोड़ा, अंतरगांव, भोटा, तेलारा स्थानों में लेन-देन का काम होता है। अकोला तथा उमर खेड़ के जीन प्रेसों में आपके भाग हैं।

मेसर्स मंसुखदास चुन्नीलाल

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ रामलालजी के पुत्र जेठमलजी दम्माणी हैं। इस फर्म का स्थापन करीब १२५ वर्ष पूर्व सेठ सुखलालजी के हाथों से हुआ था। आपके बाद क्रमशः सेठ मंसुखदासजी, चुन्नीलालजी एवं रामलालजी ने फर्म का व्यवसाय संचालन किया। सेठ मंसुखदासजी ने इसके कारवार की वृद्धि की थी आपके हाथों से एक श्री नरसिंहजी का मंदिर भी बनवाया गया था।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

खामगाँव—मंसुखदास चुन्नीलाल—सराफी लेन देन होता है।

खामगाँव—जे० आर० दम्माणी—खेती का काम होता है, आप अभी अपनी खेती की विक्री लाटरी द्वारा कर रहे हैं।

मेसर्स श्रीराम शालिगराम

यह फर्म सेठ खुशालचंदजी के छोटे भ्राता मूलचंदजी की है। इसका पूर्व स्थापन नीमोन (नाशिक) में हुआ था। सेठ शिवलालजी (मूलचंदजी के पुत्र) के २ पुत्र हुए, शालिगरामजी और बालकृष्ण लाल जी। इन दोनों भाइयों का कारबार १० साल पहिले अलग २

हो गया। तब से शालिगरामजी का कुटुम्ब अमरावती तथा धामन गाँव में अपना अलग व्यवसाय करता है।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ बालकृष्णदासजी एवं आपके पुत्र घनश्यामदासजी हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

खामगाँव—मेसर्स श्रीराम शालिगराम—सराफी लेन देन होता है, एवं बालकृष्णदास भागचंद जीनिंगप्रेसिंग में आपका पार्ट है।

तेलारा—शिवलाल घनश्यामदास-जीनिंग फेक्टरी तथा कपास का काम, इसके अलावा मोफ, बरोठ (बरार) तथा नीमोन (नाशिक) में कृषि का काम काज होता है।

मेसर्स मन्नालाल शिवनारायण

इस फर्म का हेड आफिस लक्ष्मी बिल्डिंग बम्बई में मेसर्स सनेहीराम जुहारमल के नाम से है। इसके व्यवसाय का विस्तृत परिचय मालिकों के फोटो सहित हमारे ग्रन्थ के प्रथम भाग में बम्बई विभाग में दिया गया है। इसकी खामगांव ब्रांच का स्थापन संवत १९८१ में हुआ। इस फर्म के अधीन बुलठाणा ताल्लुका में, जलगाँव, म्हेकर, चीकली, नांदूरा तथा पिंपल गाँ में मन्नालाल शिवनारायण के नाम से तथा उज्जैन और रतलाम में सनेहीराम जुहारमल के नाम से तथा भरूँच और अहमदाबाद में रामकुंवर शिवचंदराय के नाम से रूई का व्यापार होता है।

इस फर्म के खामगांव के वर्किंग पार्टनर सेठ शिवजी रतनसी भाई हैं। आप १९८१ से इस फर्म की ओर से जापान की यात्रा कर अभी ३ मास पूर्व वापस आये हैं। यहाँ के व्यापारिक समाज में यह फर्म अच्छी प्रतिष्ठित मानी जाती है।

मेसर्स भवनूलाल गंगाराम

इस फर्म के मालिक इटावा (यू० पी०) के निवासी हैं। वहाँ से आप करीब २०० साल पूर्व नाशिक जिले में गये तथा उधर से सेठ भवनूलालजी ६०।६२ साल पहिले खामगाँव आये। आप पुरवार वैश्य समाज के वांसिल गौत्रीय सज्जन हैं। सेठ भवनूलालजी उम्र भर बहुत मामूली हालत में गुजारा करते रहे। आपने करीब ४८ साल पहिले उपरोक्त फर्म स्थापित की। संवत १९७५ में आप स्वर्गवासी हुए।

सेठ भवनूलालजी के पुत्र सेठ मोहनलालजी ने इस फर्म के व्यवसाय को चमकाया। वर्तमान में आप ही फर्म के मालिक हैं। श्रीयुत मोहनलालजी पुरवार अच्छे उदार विचारों के सज्जन हैं। आपही के प्रोत्साहन से खामगाँव में तिलक राष्ट्रीय विद्यालय स्थापन हुआ था।

आपने उसमें एक मुश्त ८ हजार रुपया दिया, एवं आरंभ से अभी तक १०१ प्रतिमास देते हैं। करीब २५ हजार की सहायता आप अब तक उक्त संस्था को पहुँचा चुके हैं। इसी प्रकार खामगाँव फीमेल हास्पीटल के उद्‌घाटन के समय अपनी मातेश्वरी गंगाबाई के नाम से आपने १५ हजार रुपया दिया। खामगाँव म्युनिसिपैलेटी के आप ९ सालों से मेम्बर हैं। खामगाँव के व्यवसायिक समाज में यह फर्म अच्छी प्रतिष्ठित मानी जाती है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

खामगांव—मेसर्स भवनूलाल गंगाराम—रूई की लोकल आढ़त का काम होता है।
खामगांव—मेसर्स मोहनलाल भवनूलाल—यहाँ बैङ्किग, लैंडलार्ड एवं खेती का काम होता है।

मेसर्स रामचंद लालचंद

इस फर्म का स्थापन सेठ रामचन्द्रजी काबरा के हाथों से करीब ४५ वर्ष पूर्व हुआ। आपकी फर्म हिंगोली में बहुत समय से व्यापार कर रही है। आरंभ से ही इस फर्म पर लोकल आढ़त का काम होता है तथा वर्तमान में अपनी लाइन के व्यापारियो में यह फर्म अच्छा काम करती है। सेठ रामचन्द्रजी करीब २०।२२ साल पहिले स्वर्गवासी होगये हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

खामगाँव—मेसर्स रामचंद लालचंद—रूई की लोकल आढ़त का काम होता है।
हिंगोली—किशनदास सीताराम—जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी तथा खेती का काम।

मेसर्स हीरालाल दीपचंद

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ गोपीलालजी राठी पोकरन के निवासी हैं। इस दुकान का स्थापन करीब ५० साल पहिले सेठ दीपचंदजी के हाथों से हुआ था। आप करीब ५ साल पहिले स्वर्गवासी होगये हैं। आरंभ से ही इस फर्म में आढ़त का काम काज होता है। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

खामगाँव—मेसर्स हीरालाल दीपचंद—आढ़त तथा रूई की खरीदी का काम होता है। यहाँ आपकी गोपीलाल ईश्वरदास नामक जीन फेक्टरी है।

ग्रेन एण्ड किराना मर्चेंट

मेसर्स गंगाराम प्रेमसुख

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ सरदारमलजी एवं सूरजमलजी हैं। ६० साल से इस फर्म पर गल्ले का व्यापार होता है।

सेठ गंगारामजी और प्रेमसुखदासजी दोनों भाइयों ने फर्म के व्यापार की वृद्धि की है। आपकी ओर से यहाँ एक सुंदर धर्मशाला बनाई गई है। फर्म का वर्तमान व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

खामगाँव-मेसर्स गंगाराम प्रेमसुख-गल्ले का व्यापार तथा आढ़त का काम होता है।

मेसर्स हाजी दाउद उसमान

इस फर्म के मालिक उपलेटा (काठियावाड़) के निवासी मेमन जाति के सज्जन हैं। यह दूकान चांदूर स्टेशन (बरार) में करीब ६० साल पहिले खोली गई थी। यह कम्पनी बहुत बड़ी पूंजी से शेअरो में विभक्त है। बरार प्रांत में इसका बहुत बड़ा किराने का व्यापार होता है। इसके खास काम चलाने वाले सेठ हाजी महम्मद हाजी आदम, हाजी करीम हाजी दाउद, हाजी लतीफ हाजी दाउद हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

बम्बई—मेसर्स हाजी दाउदउस्मान खांड बाजार तार-पता—अम्बरमोगरा } हेड आफिस है। इसके द्वारा सब शाखाओं पर माल भेजा जाता है।

जलगांव (पूर्व खानदेश) मेसर्स हाजी दाउद उसमान तार का पता—गुलाब } किराना गल्ला तथा केरोगेट का व्यापार होता है।

मलकापुर—किराना गल्ला तथा तेल का व्यापार होता है।

खामगांव—(तार का पता गुलाब)-किराना, गल्ला, लोहा तथा तेल का व्यापार होता है।

अकोला (कादरिया)— " " " "

मुर्तिजापुर— " " " "

धामनगांव— " " " "

चांदूर, पुलगांव, आर्वी, वर्द्धा " " " "

रायपुर—हाजीदाउद उसमान—(तार का पता महम्मदी) चांवल, गल्ला और शीड्स की खरीदी होती है।

हाजीलतीफ हाजीदाउद—ऑइल मील है।

कलकत्ता—हाजीदाउद उसमान
11 अमरत्तला लेन
तार का पता—अम्बरमोगरा
} सुपारी, शक्कर, बारदान, किराना की खरीदी और बिक्री का काम होता है।

इसके अलावा हिन्दुस्तान में कई स्थानों पर इनकी खरीदी की दुकाने हैं।

मोटर गुड्स एण्ड पेट्रोल डीलर्स

मेसर्स केला कम्पनी

इस फर्म के मालिक बाबू सीताराम मुलतानचंद केला हैं। आप पोकरन निवासी माहेश्वरी वैश्य समाज के सज्जन हैं। इस फर्म का स्थापन श्रीयुत सीतारामजी के हाथों से करीब १५ साल पहिले हुआ था। धीरे २ आपकी फर्म ने अच्छी उन्नति की है। सर्व प्रथम आप ने केला ब्रांड लेदर बेल्टिंग, लुब्रिकेटिंग आइल तथा जिनस्टोर के इम्पोर्ट करने का व्यापार आरंभ किया। करीब ६ साल पहिले डाज और फोर्ड की एजेंसी भी इस फर्म पर आई। तीसरा भाग आपके यहाँ जनरल सामान का है। फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

खामगाँव—मेसर्स केला कम्पनी—फोर्ड मोटर की एजेंसी, पेट्रोल का व्यापार, बेल्टिंग, जिन-स्टोर और जनरल सामान का बहुत बड़ा स्टाक रहता है और बिकता है।

उमरावती—मेसर्स केला कम्पनी—डाज की एजेंसी एवं जनरल व्यापार होता है।

अकोला—मेसर्स केला कम्पनी—डाज की एजेंसी एवं जनरल व्यापार होता है।

बम्बई—मेसर्स केला कम्पनी
मेजिस्टिक मेंसन संढहर्स्ट रोड
T. No 426.
} मोटर, एसेसरीज, बेल्टिङ्ग वगैरा का अमेरिका से इम्पोर्ट तथा अपनी ब्रांचेज पर भेजने का काम होता है।

मेसर्स श्रीनिवासदास बालकृष्णदास

इस फर्म का स्थापन संवत् १९६८ में हुआ। यह मेसर्स ताराचंद घनश्यामदास बम्बई वालों की फर्म है। इस फर्म का परिचय हमारे ग्रन्थ के प्रथम भाग में बहुत विस्तृत रूप से दिया जा चुका है। इसका बुलठाणा (बरार) का हेड ऑफिस खामगाँव है तथा ब्रांचेज सेगाँव, मलकापुर, भुसावल तथा बोदवड़ में है। इन पर शेवरोलेट मोटर की एजंसी, पेट्रोल, केरोसिन एवं

मोटर गुड्स का व्यापार होता है। इन फर्मों का मेनेजमेंट मेसर्स गोवर्द्धनदास भगवानदास केड़िया करते हैं। फर्म का तार का पता Seth Kedia है।

औषधालय

आयुर्वेदिक औषधि कार्यालय

इस कार्यालय के मालिक डाक्टर वासुदेव केशव गोड़बोले हैं। आप जिला रत्नगिरी मु० निवय खुर्द के निवासी हैं। डाक्टर गोड़बोले पनवेल में वैद्यक शिक्षा प्राप्त कर २५ साल पूर्व खामगाँव आये। यहाँ आकर आपने कृषि एवं वैद्यक लाइन में अच्छी प्रतिष्ठा पाई। खामगाँव के सार्वजनिक कामों में एवं कांग्रेस के कामो में आप सहयोग देते रहते हैं। करीब ८ साल से आपने चन्दवासा (इन्दौर स्टेट) में गोड़बोले खेती संस्था के नाम से कृषि का बहुत सा काम उठाया है। खामगाँव में आपके औषधालय में शास्त्रोक्त अनुभविक औषधियाँ तयार की जाती और विक्रय होती हैं।

जीनिंग फेक्टरीज़

१—अबूबकर अब्दुल रहमान जीनिंग फेक्टरी
२—ईसुफअली शेख जाफरजी एण्ड कम्पनी
३—खामगाँव जीनिंग फेक्टरी लिमिटेड
४—खामगाँव कॉटन प्रेसिंग कम्पनी लि०
५—खामगाँव जीनिंग कम्पनी लिमिटेड
६—गनपत जूथा जीनिंग फेक्टरी
७—गजानन जीनिंग फेक्टरी
८—गोपीलाल ईश्वरदास जीनिंग फेक्टरी
९—चापसी भारा एण्ड कम्पनी
१०—जसराज श्रीराम जीनिंग फेक्टरी
११—टीकमदास मदनलाल जीनिंग फेक्टरी
१२—न्यू मुफस्सिल कम्पनी लिमिटेड
१३—न्यू बरार कम्पनी लिमिटेड
१४—न्यू प्रिंस आफ वेलस कम्पनी लिमिटेड
१५—दि नेटिह्न जीनिंग फेक्टरी
१६—नन्दे ब्रदर्स जीनिंग फेक्टरी
१७—बिहारीलाल रामगोपाल जीनिंग फेक्टरी
१८—बंशीलाल चिरंजीलाल जीनिंग फेक्टरी
१९—आर० बी० देशमुख जीनिंग फेक्टरी
२०—रायली ब्रदर्स जीनिंग फेक्टरी
२१—लक्ष्मीनारायण शिवनारायण जीनिंग
२२—विक्टोरिया जीनिंग फेक्टरी
२३—वालकट प्रेस कम्पनी लिमिटेड
२४—विश्वनाथ नागसा जीनिंग कम्पनी
२५—बालकिशनदास भागचन्द जीनिंग फे०
२६—हरोई एण्ड सभापति जीनिंग फेक्टरी
२७—सरदारमल लाधूराम जीनिंग फेक्टरी
२८—स्वदेशी जीनिंग फेक्टरी

कॉटन प्रेसिंग फेक्टरीज़

१—खामगांव जीनिंग कम्पनी लिमिटेड
२—खामगांव कॉटन प्रेसिंग कम्पनी

३—चापसी भारा एण्ड कम्पनी
४—जसराज श्रीराम प्रेसिंग कम्पनी
५—टीकमदास मदनलाल प्रेसिंग फेक्टरी
६—न्यू मुफस्सिल कम्पनी लिमिटेड
७—न्यू बरार कम्पनी लिमिटेड
८—न्यू प्रिंस आफ वेल्स कम्पनी लिमिटेड
९—बालकिशन दास भागचंद प्रेस
१०—रायली ब्रदर्स प्रेसिंग फेक्टरी
११—बालकट युनाइटेड प्रेसिंग कम्पनी
१२—हुरोई एण्ड सभापति कम्पनी लिमिटेड
१३—हीरालाल दुलीचन्द प्रेस

ऑइल मिल्स

मेसर्स सूरजमल हनुमानदास ऑइल मिल

बैंकर्स

दि इम्पीरियल बैंक ऑफ इण्डिया लिमिटेड
दि बरार कोआपरेटिव्ह सैंट्रल बैंक लिमिटेड
मेसर्स कस्तूरचन्द भीखनचन्द
,, जसराज श्रीराम
,, टीकमदास मदनलाल
,, नेतसीदास श्रीराम लढ़ा
,, नेनसुखदास गोकुलदास
,, मोहनलाल भवनूलाल
,, श्रीराम शालिगराम

कॉटन मरचेंट्स

मेसर्स अर्जुन खीमजी एण्ड कम्पनी
,, खूबचंद रामगोपाल
,, जसराज श्रीराम
,, चापसी भारा एण्ड कम्पनी
,, टीकमदास मदनलाल
,, नेतसीदास श्रीराम
,, दुनिया सिंह उमराव सिंह
,, भवनूलाल गंगाराम पुरवार
,, मन्नालाल शिवनारायण
,, रामचंद लालचंद
,, हीरालाल दीपचन्द

कपास, रूई खरीदी के लिये कम्पनियों की एजंसियाँ

मेसर्स रायली ब्रदर्स लिमिटेड
,, गोसो कायूशी केशा लिमिटेड
,, जापान कॉटन ट्रेनिग कम्पनी लिमिटेड
,, टोयो मेनका केशा लिमिटेड
,, पी. आर. डीसन कम्पनी लिमिटेड
,, पटेल ब्रदर्स
,, बालकर ब्रदर्स लिमिटेड

ग्रेन मर्चेन्ट एण्ड कमीशन एजंट

मेसर्स कल्याणजी कुंवरजी
,, केशवलाल लालचन्द
,, गंगाराम प्रेमसुख
,, हाजी दाउद उसमान
,, हाजी अली अब्दुल्ला

क्लाथ मर्चेन्ट्स

मेसर्स अर्जुनदास उकाभाई
,, कल्यानजी विसनजी
,, कुँवरजी भीनाभाई
,, कल्याणजी हरीराम
,, देवलाल रंगूलाल
,, बॉम्बे इम्पीरियल क्रेप डेपो
,, राधाकिशन रंगूलाल (एजंट प्रताप मिल अमलनेर और न्यू प्रताप मिल धूलिया)
,, हाजीअली अब्दुल्ला

यवतमाल

जी० आई० पी० रेलवे की भुसावल नागपुर लाइन में मुर्तिजापुर जंकशन से एक शाखा इस शहर तक आती है। बरार प्रांत का यह ताल्लुका निजाम स्टेट के उत्तरी हिस्से पर है। पहिले यह वणी जिल्हा के नाम से लिखा जाता था। इस शहर में ४० हजार गांठ प्रति वर्ष रुई की बँधती है। यहाँ करीब २० जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरियाँ हैं। यह शहर आबादी की दृष्टि से इधर ३० सालों से विशेष उन्नति पर आया है। कपास के अलावा जुवार, तूवर यहाँ की खास पैदावार है। सींगदाणा की पैदावार धीरे २ बढ़ रही है और विशेष कर अकोला साइड में जाती है। गेहूँ यहां पंजाब, खंडवा, बीना, दुर्ग, रायपुर, राजनांदगांव एवं सी० पी० के शहरों से तथा चावल गोंदियां सी० पी० एवं रायपुर से आता है। यहां से रुई बम्बई, नागपुर, कलकत्ता एवं हिंगनघाट तथा सरकी पंजाब काठियावाड़ और बम्बई की ओर जाती है।

इस शहर के आस-पास जंगल विशेष आगया है। अतः यहाँ घास एवं टेमरणी के पान की प्रचुरता है। यहां से बीड़ी तयार होकर बाहर जाती है। इस शहर से घी भी अच्छी मात्रा में बाहर जाता है। बम्बई में पोरबंदर से नीचे यवतमाल का घृत बिकता है। गल्ले का तौल यहां २० मन की खंडी (८० तोला सेर, २ सेर पायली और १६ पायली का मन) पर और घी १० सेर के मन पर बिकता है। इस शहर से टाटा संस का बहुत लम्बे टाइम से व्यापारिक सम्बन्ध है। सर दोराबजी टाटा करीब ४० वर्ष पूर्व यहां टाटा संस लिमिटेड के एजंट होकर आये थे एवं आपने एम्प्रेस मिल जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी स्थापित की थी। यहाँ के व्यापारियो का संक्षेप परिचय इस प्रकार है।

कॉटन मरचेंट्स

मेसर्स गुलराज मूलचंद

इस फर्म के मालिक मुकुन्द गढ़ (जयपुर स्टेट) निवासी अग्रवाल वैश्य समाज के गोयल गौत्रीय चोखानी सज्जन हैं। करीब ५५ साल पहिले सेठ कनीरामजी और उनके पुत्र गुलराज-

जी यहाँ आये थे, आपने यहाँ आकर घी सरकी आदि का परचूनी व्यापार आरंभ किया। सेठ गुलराजजी ४२ साल पहिले स्वर्गवासी हुए।

सेठ गुलराजजी के २ पुत्र हुए। बाबू मूलचन्दजी एवं पन्नालालजी। इनमें से बाबू मूलचन्दजी ने इस फर्म के व्यापार को विशेष रूप से बढ़ाया। व्यवसायिक उन्नति के साथ २ धार्मिक एवं सार्वजनिक क्षेत्र में भी आपने अच्छी प्रतिष्ठा पाई। आप के हाथों से करीब १० कुएँ भिन्न २ स्थानों पर बनवाये गये। यवतमाल के हरएक सार्वजनिक कामो में आपका प्रधान हाथ रहता था। आप शुद्ध खद्दरधारी एवं सदाचारी सज्जन थे। आपका स्वर्गवास ४९ वर्ष की आयु में ता० १।९।२७ को हुआ। आपकी व्यथा से व्यथित होकर कांग्रेस कमेटि, नगरसभा, म्युनिसिपैलिटी आदि कई संस्थाओ ने एवं कई सामयिक पत्रों ने आपके भाइयों के पास समवेदना सूचक संवाद भेजे थे।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक बाबू पन्नालालजी एवं मूलचन्दजी के पुत्र श्रीयुत गनेशलालजी, हनुमानदासजी एवं बजरंगलालजी है। सेठ पन्नालालजी के पुत्र महादेवजी, श्रीनिवासजी एवं रामनिवासजी हैं। इन सज्जनों में से गनेशलालजी और महादेवजी शिक्षित नवयुवक हैं। एवं व्यापारिक कामों में भाग लेते हैं। श्रीपन्नालालजी चोखानी वर्तमान में सेण्ट्रलबैंक, मुद्रण मंडल के डायरेक्टर एवं म्युनिसिपैलेटि, कॉटनमार्केट, डिस्ट्रिक्ट एसोशिएशन गौरक्षण के मेम्बर हैं। ओपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

यवतमाल—मेसर्स गुलराज मूलचन्द—यहाँ आपकी जीनिंग फेक्टरी है तथा प्रधानतया कपास का व्यापार होता है। कपास की खरीदी के लिये रा० ब० वंशीलाल अबीरचन्द हिंगनघाट, बिड़ला ब्रदर्स बम्बई, माडलमिल नागपुर, सर माणिकजी दादाभाई आदि की एजंसियाँ हैं। बिड़ला ब्रदर्स की ओर से निकाली गई रिच फील्ड ऑइल कम्पनी के यवतमाल जिले के आप एजंट हैं।

रा० ब० भीखाजी रामचन्द्र द्रविड़

इस फर्म के मालिक रायबहादुर भीखाजी रामचन्द्र द्रविड़ हैं। आप वाई (महाबलेश्वर के समीप) के निवासी मद्रासी द्रविड़ ब्राह्मण समाज के सज्जन हैं। रायबहादुर भीखाजी द्रविड़ सन् १८६४ में वाई से केवल १४ वर्ष की आयु मे निकले एवं अपने बड़े भाई गणपत त्र्यंकटेश द्रविड़ के साथ रेलवे कंट्राक्टिंग का काम करते रहे। उस समय रेलवे चालीस गाँव तक ही

स्व० सेठ गणपतराव व्यंकटेश द्रविड़ यवतमाल

सेठ छोटूलालजी मोर (नरसिंहदास हनुमानदास) यवतमाल

राय बहादुर भिकाजी व्यंकटेश द्रविड़ यवतमाल

सेठ सूरजमलजी मोर (नरसिंहदास हनुमानदास) यवतमाल

आई थी। खंडवा, इन्दौर, झाँसी, आनंजपुर, तिरपुती (मद्रास) आदि के रेलवे के कंट्राक्ट लेने के बाद सब से अंत में आपने मैसूर सोने की खान का रेलवे का ठेका लिया। एवं पश्चात् १८९९ में आप यवतमाल आये। और यहाँ एक जीनिंग फेक्टरी खोली। धीरे २ आपको इस काम में सफलता मिलती गई और आपने आस पास कई जीनिंग प्रेसींग खोली।

रायबहादुर द्रविड़ साहब को सन् १९२७ में गवर्नमेंट से रायबहादुरी का खिताब प्राप्त हुआ है, आप यहाँ के आनरेरी मजिस्ट्रेट, म्युनिसिपल मेम्बर आदि रह चुके हैं। आपके बड़े भ्राता गणपत व्यंकटेश द्रविड़ १९०३ में अजमेर से पेन्शन पाकर यहाँ चले आये। एवं १९११ में यहीं स्वर्गवासी हुए। आपकी ओर से वाई में गणपत व्यंकटेश के नाम से एक हाई स्कूल चल रहा है। यवतमाल फीमेल हास्पील में आपने एक वार्ड बनवाया है। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

यवतमाल—रायबहादुर भीखाजी रामचन्द्र द्रविड़—२ प्रेस एवं १ जीन है।
पांढर कवड़ा (यवतमाल) „ „ —२ जीन १ प्रेस है।
वोटी (यवतमाल) „ „ —१ जीन फेक्टरी है।
दारव्हा (यवतमाल) „ „ —२ जीन १ प्रेस फेक्टरी है।

मेसर्स होरमसजी हीरजीभाई

इस फर्म का स्थापन यवतमाल में करीब ४० साल पहले हुआ था। सब से प्रथम टाटा संस लिमिटेड के एजंट होकर सर दोरावजी टाटा यहाँ आये एवं आपने यहाँ एक जीनिंग एण्ड प्रेसिंग फेक्टरी खोली। २ साल बाद सर दोरावजी टाटा यह काम सेठ होरमसजी नवरोजजी बलगाम वाला को सोंप कर बम्बई चले गये। होरमसजी सेठ ने टाटा संस के पार्ट में यवतमाल और हुबली में जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरियाँ खोलीं। पीछे से आपका पार्ट अलग हो गया। एवं तब से आप टाटासंस की यवतमाल की एवं हुबली की जीनिंग फेक्टरी के एजंट हैं।

होरमसजी सेठ के २ पुत्र हुए, सेठ हीरजी भाई होरमसजी एवं नवरोजजी होरमसजी। होरमसजी सेठ सन् १९२० में स्वर्गवासी हुए।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ हीरजी भाई हैं। आपके पुत्र सेठ जमशेदजी हीरजी भाई एवं पेस्तनजी हीरजी भाई भी व्यापार में भाग लेते हैं। हीरजी भाई के छोटे भ्राता सेठ नवरोजजी होरमसजी सन् १९१० तक आपके साथ काम करते रहे, पश्चात् आप बम्बई चले गये, वर्तमान में आपके "बम्बई समाचार" नामक गुजराती दैनिक और साप्ताहिक एवं बाम्बे क्रानिकल नामक अंग्रेजी दैनिक पत्र निकलते हैं जिनसे भारत का शिक्षित समाज भली भांति परिचित हैं।

होरमसजी सेठ यवतमाल के व्यापारिक समाज में बहुत प्रतिष्ठित सज्जन हैं। आप शिक्षित एवं उन्नत विचारों के पारसी सज्जन हैं। स्थानीय कॉटन मार्केट के बहुत समय तक आप सभा-पति रह चुके हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

यवतमाल—एम्प्रेस मिल नागपुर जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी—आप इसके एजंट हैं।
हुबली—स्वदेशी मिल बम्बई जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी—इसके आप एजंट हैं।
यवतमाल—सेठ होरमसजी हीरजी भाई—यहां कॉटन का व्यापार होता है।
संजा (यवतमाल) होरमसजी हीरजी भाई—जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी है।

कपड़ा और गल्ला के व्यापारी

मेसर्स नरसिंहदास हनुमानदास

इस फर्म के मालिक दाता (लोसल—जयपुर स्टेट) निवासी अग्रवाल समाज के गोयल गौत्रीय सज्जन हैं। आरंभ में ६० साल पहले सेठ नरसिंहदासजी ने यहां आकर अनाज का व्यापार शुरू किया था। आपके ४ पुत्र हुए। सेठ हनुमानदासजी, छोटूलालजी, सूरजमलजी, एवं रामगोपालजी। आप लोगों के समय में दुकान के काम को विशेष उन्नति मिली। सेठ हनुमानदासजी २ साल पहिले एवं रामगोपालजी ५।६ साल पहिले स्वर्गवासी हुए हैं। इस फर्म की ओर से २।३ कुएं बनवाये गये हैं।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ छोटूलालजी, सूरजमलजी एवं सूरजमलजी के पुत्र नागरमलजी (दत्तक हनुमानदासजी) तथा सेठ रामगोपालजी के पुत्र नथमलजी मोर हैं। सेठ सूरजमल जी के पुत्र बिहारीलालजी हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

यवतमाल—मेसर्स नरसिंहदास हनुमानदास—कपड़े का व्यापार, सराफी लेन-देन एवं कृषि का काम होता है। आपके यहाँ एम्प्रेस मिल के कपड़े की एजंसी है।

यवतमाल—सूरजमल रामगोपाल—गल्लेका व्यापार होता है।
यवतमाल—श्री नरसिंह जीनिंग फेक्टरी—इस नाम से कॉटन जीनिंग फेक्टरी है।
तिलारा—नरसिंहदास हनुमानदास—इस नाम से आपकी जीनिंग फेक्टरी है।

स्व० सेठ मूलचंदजी चोखानी (गुलराज मूलचंद) यवतमाल

स्व० सेठ नरसिंहसा सखबसा रावल कारंजा

श्रीचौथमलजी मोर

श्रीकन्हैयालालजी मोर (श्रीकृष्ण टोरमल) यवतमाल

मेसर्स कालूराम नारायण

इस फर्म के मालिक लोसल (जयपुर स्टेट) निवासी अग्रवाल समाज के गोयल गौत्रीय मोर सज्जन हैं। सेठ कालूरामजी के हाथों से ४० साल पहिले इस फर्म का स्थापन हुआ। आरंभ से ही आप के यहाँ गल्ले, सोना, चाँदी तथा घी का व्यापार होता है। सेठ कालूरामजी २० साल पूर्व स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र सेठ नारायणजी के हाथों से फर्म के कारबार को विशेष तरक्की मिली। नारायणजी सेठ की अवस्था अभी ६५ साल की है।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक नारायणजी सेठ के पुत्र बाबू चौथमलजी मोर हैं। आप स्थानीय म्युनिसिपल मेम्बर, हनुमान अखाड़ा के मैनेजर तथा हिन्दू सभा के सेक्रेटरी हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

यवतमाल—मेसर्स कालूराम नारायण—गल्ले की आढ़त, लोकल व्यवसाय। एवं बिक्री का काम होता है।

मेसर्स श्रीकृष्ण टोरमल

इस फर्म के मालिक बाबू कन्हैयालालजी मोर लोसल (जयपुर) निवासी अग्रवाल वैश्य समाज के गोयल गौत्रीय सज्जन हैं। यह कुटुम्ब करीब २० साल पहिले यहाँ आया। इस फर्म का स्थापन सेठ श्रीकृष्णजी के पुत्र टोरमलजी के हाथों से करीब ४० साल पहिले हुआ। आपके यहाँ आरम्भ से ही हार्डवेअर और जनरल व्यापार होता है। सेठ टोरमलजी १५-१६ साल पहिले स्वर्गवासी हुए हैं।

श्रीयुत बाबू कन्हैयालालजी मोर नवीन विचारो के सुधारक नवयुवक हैं। युवक मंडल को चलाने में आपने अच्छी सहायता दी है, इस समय आप उसके कोषाध्यक्ष हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

यवतमाल—मेसर्स श्रीकृष्ण टोरमल—यहाँ हार्डवेअर, बिल्डिंग मटेरियल्स, स्टेशनरी, जिनस्टोर एवं सिमिट वगैरह का व्यापार होता है। इसके अलावा डिस्ट्रिक्ट बोर्ड एवं म्युनिसिपैलेटी के कण्ट्राक्ट सप्लाई होते हैं।

जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरीज़

एम्प्रेस मिल जीनिंग फेक्टरी
गुलराज मूलचन्द ऑइल जीनिंग फेक्टरी
गोकुल डोसा ऑइल जीनिंग फेक्टरी
गोकुलदास कपूरचन्द जीनिंग फेक्टरी
गामडिया जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी

जयरामदास भागचन्द प्रेसिंग जीनिंग फेक्टरी
टीकमदास परमानन्द जीनिंग फेक्टरी
नरसिंहदास हनुमानदास जीनिंग फेक्टरी
बूंटी जीनिग फेक्टरी
माडल जीनिंग फेक्टरी
रायबहादुर भीखाजी व्यंकटेश द्रविड़ १ जीन २ प्रेस फेक्टरी
रणछोड़दास गांगजी लक्ष्मीदास जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी
लालचन्द नारायणदास जीनिंग फेक्टरी

कॉटन मरचेंट्स

मेसर्स कीलाचन्द देवचन्द
,, गुलराज मूलचन्द चोखानी
,, गोविंदराव पूनाजी बाटी
,, जयनारायण म्हालीराम
,, जयरामदास भागचन्द
,, नरसिंहदास हनुमानदास
,, मन्नालाल शिवनारायण
,, सर माणिकजी दादा भाई
दि मॉडल मिल नागपुर
मेसर्स सुखदेव रामदेव
,, हीरजी भाई होरमसजी बलगाम वाला

विदेशी कम्पनियों की कॉटन पर्चेज़ एजंसियाँ

गोसो काबूसी केशा लिमिटेड
जापान कॉटन ट्रेडिंग कम्पनी लिमिटेड
मुसान कम्पनी
रायली ब्रदर्स लिमिटेड

ग्रेन मर्चेन्ट एण्ड कमीशन एजंट

मेसर्स आसाराम शिवजी राम
,, काळूराम नारायण
,, डायाभाई मावजी
,, बाबाजी दौलतराव
,, सूरजमल रायगोपाल
,, हुकमीचन्द गंगाधर

कपड़े के व्यापारी

मेसर्स गुलाबचंद चम्पालाल
,, नगीनचंद परमानंद
,, नरसिंहदास हनुमानदास
दि बरार ट्रेडिंग कम्पनी लिमिटेड
सेठ रामगोपाल मालानी
मेसर्स बल्लभदास अमृतलाल
,, हाजी उमर अलान

किराना के व्यापारी

मेसर्स आसाराम शिवजीराम
,, डायाभाई मावजी
,, हाजी उमर अलान कच्छी
,, हेमराज केशवजी

गोल्ड सिलवर मरचेंट्स

मेसर्स रामनारायण रामकुँवर
,, सेरमल सूरजमल

जनरल मरचेंट्स

मेसर्स आसाराम शिवजीराम
,, टीकाराम एण्ड को
,, सरफ अली अली महम्मद
,, श्रीकृष्ण टोरमल

एलिचपुर

जी० आई० पी० रेलवे की भुसावल नागपुर लाइन के मध्य मुर्तिजापुर जंकशन से एलिचपुर के लिये एक ब्रांच लाइन जाती है। यह स्थान अमरावती से ३४ मील दूर बरार प्रान्त की उत्तरी सीमा पर स्थित है। किसी समय यह शहर निजाम हैदराबाद स्टेट की छावनी के रूप में था। विशाल पुराना शहर कोट, किला तथा दूल्हा रहमानशाह की दरगाह आदि स्थान इसके पुराने वैभव का पता दे रहे हैं। इस शहर का क्षेत्रफल बहुत बड़ा है। ५२ पुरों की बस्ती में इसकी आबादी फैली हुई है। कार्तिक बदी ११ को यहाँ बरहम की यात्रा भरती है। इस स्थान से थोड़ी ही दूरी पर जेनियों का श्रीमुक्तागिरी तीर्थ है।

करीब २५-३० वर्षों पूर्व एलिचपुर केम्प (जो परतवाड़ा के नाम से मशहूर) से अंगरेजी छावनी हटा ली गई है। इस शहर के शतरंजी, सूसी, मुसलमानी रूमाल अच्छे बनते हैं। कपास की पैदावार अपेक्षाकृत मध्यबरार से कम होती है। इस स्थान पर काटन जीनिंग ३ और ३ प्रेसिंग फेक्टरियाँ एवं १ कॉटन मिल है। जिसका नाम दि विदर्भ मील बरार लीमिटेड है—यह मील सन् १९२३ में रजिस्टर्ड हुई एवं सन् १९२६ में चालू हुई। इसकी पूंजी ११ लाख रुपयों की है, तथा इस समय इस मिल में ११ हजार स्पेंडिल्स और २५० लूम्स काम करते हैं। मिल में रोजाना काम करनेवाले मनुष्यों की संख्या ६०० है। सन् १९२६ से यह मील सूत कातने का एवं १९२९ से कपड़ा बुनने का काम कर रही है। नागपुर में इस मिल का सूत बेचने की एजंसी है। इसकी मेनेजिंग एजंट मेसर्स देशमुख एण्ड कम्पनी है। बाबा साहब देशमुख मिल के डायरेक्ट एवं अमलनेर के प्रताप शेठ डायरेक्टरों के प्रेसिडेण्ट हैं। सतपूड़ा पहाड़ समीप आ जाने से यहाँ घास प्रचुरता से पाया जाता है। यहाँ के व्यापारियों का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है।

मिल एजंट एण्ड बैंकर्स

मेसर्स देशमुख एण्ड कम्पनी

इस फर्म के मालिक दक्षिणी ब्राह्मण समाज के भारद्वाज सज्जन हैं। आपका मूल निवास एलिचपुर ही है। ७/८ पीढ़ी से आपके यहां जमीदारी का काम होता है। बादशाह औरंगजेब के समय से मुगलाई की ओर से इस कुटुम्ब को जागीरी प्राप्त हुई। श्रीमान् भगवंतराव देशमुख के हाथों से इस जागीरी की व्यवस्था हुई। आप परगने के आफिसर थे। आपके पुत्र हनुमंत राव देशमुख थोड़ी ही अवस्था में स्वर्गवासी हुए।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक देशमुख हनुमंतराव के पुत्र व्यंकटराव देशमुख उर्फ बाबा साहब हैं। आपके पिताजी के स्वर्गवास के समय आपकी आयु केवल २ वर्ष की थी। मैट्रिक तक शिक्षा प्राप्त करने के बाद फर्म की जागीरी का भार आप पर आया। आप बड़े उच्च विचारों के स्वदेशी प्रिय सज्जन हैं। सन् १९२३ में आपने २१ लाख की पूँजी से "दि विदर्भ मिल बरार लिमिटेड" को जन्म दिया। आपने अपने कपास के व्यापार की बहुत उन्नति की। आपने अपनी मातेश्वरी के नाम से श्रीराधाबाई आयुर्वेदिक धर्मार्थ औषधालय स्थापित किया है, इसके लिये ४५ हजार की रकम आपने ट्रस्ट के जिम्मे की है तथा दस हजार की लागत से उक्त औषधालय की बिल्डिंग बनवाई है।

बाबा साहब देशमुख के इस समय ६ पुत्र हैं, जिनके नाम क्रमशः पांडुरंग देशमुख, नारायण देशमुख, मेघश्याम देशमुख, राजेश्वर देशमुख, भगवंत देशमुख एवं गोविंदा देशमुख हैं। इनमे पाडुरंग देशमुख फर्म के बेङ्किग, जीनिंग, प्रेसिंग तथा कॉटन का व्यापार संचालित करते हैं आप यहां के आनरेरी मजिस्ट्रेट एवं म्युनिसिपल मेम्बर हैं। नारायण देशमुख प्लीडर शिप का काम करते हैं। एवं मेघश्याम कृषि कार्य देखते हैं शेष सब पढ़ते हैं। बाबा साहब देशमुख विदर्भ मिल के मैनिजिङ्ग डायरेक्टर हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

एलिचपुर—मेसर्स देशमुख एण्ड को—बेङ्किग खेती एवं जागिरी का काम होता है। यह फर्म विदर्भ मिल की मैनेजिंग एजंट है।

एलिचपुर—श्रीपांडुरंग जीन प्रेस फेक्टरी—इस नाम से कॉटन जीनिंग प्रेसिङ्ग फेक्टरी एवं रुई का व्यापार होता है।

अमरावती—जोशी देशपांडे—इस दुकान पर कपड़े का व्यापार होता है। इसमें आपका भाग है।

मेसर्स लालासा मोतीसा

इस कुटुम्ब का मूल निवास बगेरिया (उदयपुर स्टेट) है। संवत् १७३४ में सेठ लालासा इधर आये। कहा जाता है कि तत्कालीन उदयपुर नरेश से अप्रसन्न होकर कई सौ कुटुम्ब वह प्रांत छोड़कर इधर आ गये और बुरहानपुर एवं निजाम प्रांत में बस गये। उसी सिलसिले में सेठ लालासा भी बुरहानपुर आये। वहाँ से जिन्तूर (निजाम स्टेट) में गये। एवं जिन्तूर से एलिचपुर आये। सेठ लालासा के पुत्र मोतीसा के समय से इस फर्म पर बैंकिंग व्यापार की उन्नति आरंभ हुई।

सेठ मोतीसा के ३ पुत्र हुए। हीरासा, मानिकसा एवं राजाजी उर्फ रुखबसा। इनमें से सेठ हीरासा के हाथों से इस फर्म के व्यापार, मान एवं प्रतिष्ठा में बहुत अधिक वृद्धि हुई। इन तीनों भाइयो में रुखवसा के पुत्र पासूसा एवं भगवानसा हुए। सेठ हीरासा १९४७ में एवं आपके दोनों छोटे भ्राता आपसे ४।५ साल पहिले स्वर्गवासी हुए। सेठ पासूसा एवं भगवानसा भी २ मास के अंतर से संवत् १९५५ में स्वर्गवासी हुए।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ पासूसा के पुत्र सेठ नत्थूसा हैं। आप यहाँ के अच्छे प्रतिष्ठित सज्जन हैं। करीब ३० सालों से आप म्युनिसिपल मेम्बर एवं सभापति का आसन सुशोभित करते हैं। एवं २० सालों से स्थानीय आनरेरी मजिस्ट्रेट हैं। आपका कुटुम्ब जैन बघेरवाल दिगम्बरी समाज का है।

इस कुटुम्ब की ओर से श्री मुक्तागिरी तीर्थ उत्सव में संवत् १९४८ में १ लाख रुपयों की सम्पत्ति लगाई गई है। वहाँ आपकी ओर से मंदिर तथा धर्मशाला बनी है अभी हाल मे खापर्डे साहब से श्री मुक्तागिरीजी की जो ४५ हजार में जमीन खरीदी गई है उसमें २० हजार आपने दिये हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

एलिचपुर—मेसर्स लालासा मोतीसा—बैंकिंग व्यापार होता है। अमरावती जिले में आपका बहुत सा खेती का काम होता है।

एलिचपुर—नत्थूसा पासूसा—कपड़े का व्यापार होता है।

चांदूर बाजार (एलिचपुर) लालासा मोतीसा—बैंकिंग तथा कपड़े का व्यापार होता है।

मेसर्स अमरचन्द लादूराम

इस फर्म के मालिक अस्तेड़ा भूतेड़ा (जयपुर) के निवासी खंडेलवाल वैष्णव समाज के सज्जन हैं। इस फर्म का स्थापन १०० वर्ष पूर्व सेठ अमरचंदजी के हाथों से हुआ था। आप अपने पुत्र गिरधारीलालजी के साथ में यहाँ आये थे। सेठ गिरधारीलालजी के हाथों से ही इस फर्म के व्यापार को तरक्की मिली।

सेठ अमरचंदजी के पुत्र गिरधारीलालजी, कनीरामजी एवं लादूरामजी संवत् १९२६ में अलग २ हुए। सेठ कनीरामजी के पुत्र लक्ष्मीनारायणजी ने एलिचपुर में लक्ष्मीनारायण का मंदिर बनवाया।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ गिरधारीलालजी के पुत्र सेठ लालाबख्शजी हैं। (आप लादूरामजी के पुत्र हैं एवं गिरधारीलालजी के दत्तक आये हैं) आपके बड़े पुत्र बीजूलालजी व्यवसायिक कार्य्य संचालित करते हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

एलिचपुर—मेसर्स अमरचंद लादूराम—कपड़े का व्यापार होता है।
एलिचपुर—लालाबख्श बीजूलाल—सराफी का व्यापार होता है।
एलिचपुर—बीजूलाल महादेव—बर्म्माशेल की एजंसी है।
अंजनगाँव—बीजूलाल महादेव—बर्म्माशेल की एजंसी है।
अमरावती—लालाबख्श बीजूलाल—गल्ले का व्यापार होता है।

बम्बई—गिरधारीलाल लालाबख्श कसाराचाल } आढ़त का काम होता है।

जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरीज़

गामड़िया जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी
पांडुरंग जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी

बैंकर्स

मेसर्स इन्द्रराज दुलीचन्द
,, बाबा साहब देशमुख
,, नत्थूसा पासूसा
,, शालिगराम दुलीचन्द

गल्ला किराना के व्यापारी

मेसर्स रामचन्द्र भजनलाल
,, हाजी करीम हबीब

कपड़े के व्यापारी

मेसर्स अमरचन्द लादूराम
,, छोटे लाल लक्ष्मीनारायण
,, बिहारी लाल कन्हैया लाल
,, मदन लाल झूमर लाल

मनिहारी

राघिव हुसेन फिदाअली

एलिचपुर केम्प (परतवाड़ा)

मेसर्स मोतीलाल चम्पालाल

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ चम्पालालजी के पुत्र सेठ हीरालालजी एवं सूरजमलजी बड़जात्या हैं। आप डूगरी (जयपुर स्टेट) निवासी सरावगी—खंडेल वाल दिगम्बर जैन समाज के सज्जन हैं। इस फर्म का स्थापन करीब १००।१२५ वर्ष पूर्व सेठ मंसारामजी के हाथों से हुआ। आपके पश्चात् आपके पुत्र सेठ मोतीलालजी के हाथों से इस फर्म के व्यवसाय, मान एवं प्रतिष्ठा में विशेष वृद्धि हुई। सेठ मोतीलालजी १४ साल प्रथम स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र सेठ चम्पालालजी आपके स्वर्गवासी होने के १२ साल पहिले स्वर्गवासी हो गये थे।

यह फर्म एलिचपुर के व्यापारिक समाज में बहुत प्रतिष्ठित मानी जाती है। आपकी ओर से संवत् १९८५ में यहां मोतीभुवन नामक एक बहुत सुंदर धर्मशाला बनवाई गई है। श्रीमुक्तगिरी तीर्थ की एरिया खरीदने में आपने १५ हजार रुपये दिये हैं। श्री हीरालालजी के पुत्र गेंदालालजी पढ़ते हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

एलिचपुर—मेसर्स मोतीलाल चम्पालाल—यहां बैङ्किंग तथा कृषि का काम होता है।

मेसर्स किसनलाल मोतीलाल

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ किशनलालजी के पुत्र सेठ बरदीचंदजी गंगवाल हैं। आप पचार (जयपुर स्टेट) निवासी सरावगी दिगम्बर जैन समाज के सज्जन हैं। इस फर्म का स्थापन ७०।७५ वर्ष पूर्व सेठ किशनलालजी के हाथों से हुआ। आरंभ से ही आपके यहाँ कटलरी का व्यवसाय होता है। सेठ किशनलालजी एवं मोतीलालजी दोनों भाई भाई थे इनमें से सेठ किशनलालजी ने इस फर्म के व्यापार को विशेष उत्तेजन दिया। आपने सन् १९०१ में परतवाड़ा में एक जीनिंग और प्रेसिंग फेक्टरी खोली। आपकी ओर से यहाँ एक श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर बनवाया गया है। आप १२।१३ साल पहिले स्वर्गवासी हुए। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

एलिचपुर—मेसर्स किशनलाल मोतीलाल—कटलरी एवं कपास का व्यापार होता है।

एलिचपुर—श्रीपरतवाड़ा जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी—इस नाम से जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी है।

बम्बई—मेसर्स किशनलाल मोतीलाल कसारा चाल पो० नं० २ } आढ़त का काम होता है।

मेसर्स हुकुमचंद मुंगीलाल

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ चंदूलालजी हैं। आप अस्तेड़ा (जयपुर स्टेट) निवासी अग्रवाल समाज के सज्जन हैं। इस फर्मका स्थापन सेठ हुकुमचंदजी के हाथों से करीब ९० वर्ष पूर्व हुआ। तथा सेठ हुकुमचन्दजी के पुत्र सेठ मुंगीलालजी के हाथों से इस फर्म के व्यापार की विशेष उन्नति हुई। आप २० साल पूर्व स्वर्गवासी हुए। आपके समय में मिलीटरी को रसद सप्लाई करने का काम इस फर्म पर होता था।

सेठ चन्दूलालजी विदर्भ मिल के डायरेक्टर एवं परतवाड़ा म्युनिसिपैलेटी के चेयरमैन हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

एलिचपुर केम्प—मेसर्स हुकुमचन्द मुंगीलाल—कपास, बैङ्किंग व जमीदारी का व्यापार होता है।
बनोसा—हुकुमचन्द मुंगीलाल—कपास की खरीदी होती है। यहां की सदाराम बंशीलाल जीनिंग में आपका पार्ट है।

बैंकर्स

कोआपरेटिव्ह सेंट्रल बैंक
किशनलाल मोतीलाल
गोपालदास हीरालाल
मोतीलाल चम्पालाल
हुकुमीचन्द मुंगीलाल

कॉटन मरचेंट्स

किशनलाल मोतीलाल
हुकमचन्द मुंगीलाल

कपड़े के व्यापारी

कगनीलाल भोगीलाल
जवेरीचन्द जेठाभाई
मूलचन्द केसरीचन्द

गल्ले के व्यापारी

मदनलाल नारायणदास
सुखजी रिछपाल

किराने के व्यापारी

करीम हाजी शरीफ
नारायण तोलाराम
महम्मद हाजी शरीफ कच्छी

जनरल मरचेंट्स

किशनलाल मोतीलाल
गुलामहुसेन बोहरा

केरोसिन ऑइल एण्ड पेट्रोल मरचेंट्स

ताराचन्द बेचरदास
श्री निवासदास बालकृष्णदास
श्री मोती भुवन धर्मशाला

सेठ हीरालालजी बड़जात्या (मोतीलाल चम्पालाल) एलिचपुर

रायसाहब सेठ मोती संगई (रखब संगई मोती संगई) अंजनगाँव

सेठ सूरजमलजी बड़जात्या (मोतीलाल चम्पालाल) एलिचपुर

सेठ एसु संगई सोना संगई, अंजनगाँव

मेसर्स एसू संगई सोना संगई

इस फर्म के मालिक एसू संगई बघेरवाल दिगम्बर जैन समाज के सज्जन हैं। सेठ अभय संगई के समय से आपके यहां साहुकारी एवं खेती का कार्य आरंभ हुआ। आपके पुत्र सेठ सोना संगई के हाथों से विशेष रूप से व्यवसाय वृद्धि हुई। सेठ सोना संगई संवत् १९४९ में स्वर्गवासी हुए। आपके पहिले ही आपके पुत्र बाबू संगई स्वर्गवासी हो गये थे एतदर्थ आपकी धर्मपत्नी श्रीमती खुशाल बाई ने सेठ एसू संगई को १९५२ में दत्तक लिया। एसू संगई ने १५ हजार लगाकर श्री जिनेश्वर की पूजा की। आप सीता बाई संगई ए० व्ही० स्कूल के सेक्रेटरी हैं। आपके पुत्र शांति संगई एवं नीमा संगई हैं। शांति संगई एडवर्ड कालेज में पढ़ते हैं। आपके यहाँ कृषि एवं साहुकारी लेनदेन का व्यवसाय होता है।

मेसर्स रुखब संगई मोती संगई

इस फर्म के वर्त्तमान मालिक रायसाहब मोती संगई हैं। आपका कुटुम्ब करीब २५० साल पूर्व उदयपुर की ओर से इधर आया था। करीब ७।८ पीढ़ी से आप यहीं निवास कर रहे हैं। सेठ मोती संगई के समय से इस कुटुम्ब के व्यवसाय का परिचय प्राप्त होता है। आपके नीमा संगई, पासू संगई एवं पद्मा संगई नामक ३ पुत्र हुए। इनमें से नीमा संगई के एक पुत्र सेठ रुखब संगई हुए आप संवत १९५१ में स्वर्गवासी हुए। आपके मोती संगई एवं उमासंगई नामक २ पुत्र हुए। उमा संगई संवत् १९५१ में ही गुजर गये।

रायसाहब सेठ मोतीसंगई पर छोटी अवस्था से ही कार भार आ गया। आप ने फर्म के व्यवसाय और मान में विशेष वृद्धि की। आप बघेर वाल जैन दिगम्बर संप्रदाय के संगई सज्जन हैं। ४ जून सन् १९२८ में आपको गव्हर्नमेंट द्वारा रायसाहब की पदवी मिली है।

रायसाहब सेठ मोतीसंगई ने संवत् १९६५ में जैन महोत्सव की पूजा में करीब १५ हजार रुपये लगाये १९७० में यहाँ एक जैन-मंदिर बनवाने में ४०।५० हजार रुपया खर्च किया। हजारी बाग (बंगाल) के पार्श्वनाथ तीर्थ में एक जैन-मन्दिर २५।३० हजार की लागत से आपने बनवाया। अंजन गाँव में आपकी मातेश्वरी के नाम से सीता बाई संगई ए. व्ही. स्कूल की स्थापना कर २० हजार रुपया बिल्डिंग बनाने में दिया। इसी प्रकार १० हजार मुक्तागिरी जी की एरिया खरीदने में दिया गया। स्थानीय जैन पाठशाला व्यायामशाला आपके ही परिश्रम से चलती हैं। आपके ६ पुत्र हैं जिनमें सब से बड़े पासू संगई, इन्दौर कोलेज में एफ. ए. में पढ़ते हैं तथा छोटे रुखब संगई मैट्रिक तक शिक्षा प्राप्त कर चुके हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

अंजनगाँव-रुखब संगई मोती संगई—यहाँ कपड़ा, बैङ्किंग, चांदी, सोना तथा खेती का व्यापार होता है। स्थानीय श्याद्वाद जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी में तत्र साहजी के साथ आपका भाग है।

जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी

जमनादास गोकुलदास जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी
लाल्दू पटेल जीनिंग फेक्टरी
शाद्वाद दो जीनिंग एक प्रेसिंग फेक्टरी

कपड़े के व्यापारी

मेसर्स मूलजी मुरारजी
रायसाहब मोती संगई रुखब संगई
हरजीवनदास उकाभाई

किराने के व्यापारी

गोकुलदास हरजीवनदास
रायचन्द प्रेमचन्द

गल्ला के व्यापारी

गंगाराम नानकराम
त्रिवंकदास धन्नामल

कटलरी सामान के व्यापारी

कमरुद्दीन कादिर भाई
नुरानुद्दीन बदरुद्दीन
बोदल भाई करीम भाई

आर्वी

आर्वी सी० पी० प्रान्त के वर्धा जिले का एक छोटा सा पर व्यापारिक स्थान है। यह जी० आई० पी० रेल्वे की भूसावल—नागपूर शाखा के पुलगाँव जंकशन से करीब २९ मील की दूरी पर बसा हुआ है। पुलगाँव से यहाँ तक सी० पी० आर० छोटी लाइन गई है। यहाँ से सीजन के समय बहुत सी मोटरें पास के व्यापारिक स्थानों पर जाया करती हैं। नागपुर से यहाँ मोटरें प्राय: रन करती रहती हैं।

यहाँ प्रधान व्यापार कपास का है। यहाँ ३ प्रकार का कपास आता है। रोजिया, व्हेरम और भोपरपट्टी। इनमें से रोजिया जाति का कपास सबसे ज्यादा आता है। सब कपास मिलकर मौसिम में करीब १८०० से १९०० गाड़ियों तक रोजाना आता है। यहाँ करीब ६५, ७० हजार गांठे साल की बँधती हैं। यही यहाँ से जानेवाली प्रधान चीज है। इसके पश्चात् सरकी का नम्बर है। सरकी भी बाहर बहुत जाती है। यहाँ की मनुष्य संख्या १० हजार है।

यहाँ का रूई का बाजार प्राय: सभी हिन्दुस्थानी याने वहीं के रहने वाले व्यापारियों के हाथ मे है। बाहर की कम्पनियों का यहाँ के बाजार पर कोई असर नहीं पड़ता। यहाँ ६ फर्में बहुत बड़ी हैं जिनके निज के जीन और प्रेस हैं। सब मिलाकर यहाँ ११ जीनिंग फैक्टरियाँ तथा ६ प्रेसिंग फैक्टरियाँ हैं।

यहाँ आनेवाले माल में कुछ गल्ला, किराना, कपड़ा, हार्डवेअर एवंम अन्य व्यवहारोपयोगी समान आता है।

यहाँ के व्यापारियों का परिचय निम्न प्रकार है—

मेसर्स ईश्वरदास खुशालचन्द

इस फर्म के मालिकों का आदि निवास-स्थान बीकानेर है। आप लोग माहेश्वरी वैश्य समाज के जाजू सज्जन हैं। इस फर्म की स्थापना लगभग ८५ वर्ष पूर्व सेठ ईश्वरदासजी जाजू ने देश से आर्वी में आकर की और आरम्भ में इस फर्म पर आपने गल्ला, कपास और लेनदेन का काम किया। आप बड़े ही उद्यमी एवं परिश्रमी महानुभाव थे अत: आप अपनी धुन में लगे ही रहे

फलतः फर्म को सफलता मिली और उसने उन्नति की ओर पैर बढ़ाया। आपका स्वर्गवास संवत् १९४३ में हुआ और तभी से फर्म का संचालन सेठ खुशालचंदजी के हाथ में आया। आपने अपनी पूर्व परम्परा के अनुसार ही फर्म की व्यवस्था संचालित की और फर्म को यहां की अग्रगण्य फर्मों की श्रेणी पर पहुँचा दिया। आप जितने व्यापार चतुर हैं उतने ही व्यवहार कुशल भी है अतः यहाँ के व्यापारी वर्ग पर आपका अच्छा प्रभाव है।

इस फर्म के मालिकों में सेठ खुशालचन्दजी जाजू और आपके पुत्र बाबू बुलाकीदासजी जाजू तथा बाबू जमनादासजी जाजू हैं। फर्म का व्यापार संचालन सेठ खुशालचन्दजी जाजू ही प्रधानरूप से करते हैं। आपके पुत्र बाबू बुलाकीदासजी होनहार नवयुवक हैं और आप भी व्यापार के संचालन में भाग लेते हैं।

इस फर्म का प्रधान व्यापार रुई, बैङ्किंग और जमीदारी का है। सेठ बुलाकीदासजी म्यूनिसिपल कमिश्नर है। सेठ खुशालचन्दजी स्थानीय गौशाला के प्रेसिडेण्ट हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स ईश्वरदास खुशालचन्द आरवी डि० वर्धा	यहां फर्म का हेड ऑफिस है। तथा कॉटन, महाजनी लेनदेन और जमीदारी का काम होता है। यहां आपकी दो जिनिंग और एक प्रेसिंग फैक्टरी हैं।

मेसर्स गुलाबचन्द उत्तमचन्द गांदी

आप लोगों का आदि निवास-स्थान पोकरन जि० जोधपुर के रहनेवाले हैं। आप लोग माहेश्वरी वैश्य समाज के गांदी सज्जन हैं।

इस फर्म की स्थापना लगभग १०० वर्ष पूर्व सेठ गुलाबचन्दजी गांदी ने की थी। आपने आरम्भ में कपास का व्यापार और महाजनी लेनदेन का काम आरम्भ किया। आप व्यापार चतुर थे अतः आपने अच्छी उन्नति की। आपका स्वर्गवास सम्वत् १९६० में हुआ। आपके यहाँ सेठ उत्तमचन्दजी दत्तक आए। अतः आपने फर्म का व्यापार संचालन अपने हाथ मे लिया और फर्म को बहुत अच्छी उन्नत अवस्था पर पहुँचा दिया। आज कल यह फर्म यहाँ की अग्रगण्य फर्मों की श्रेणी में मानी जाती है।

इस समय फर्म के मालिक सेठ उत्तमचन्दजी गांदी हैं। आप ही फर्म का संचालन करते है। आप यहाँ की गोरक्ष संस्था, खादी मण्डी एवंम् कांग्रेस के खजानची हैं।।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है :—

मेसर्स गुलाबचन्द उत्तमचन्द आर्वी (जि० वर्धा)	यहाँ फर्म का हेड ऑफिस है। और रुई, महाजनी लेनदेन तथा जमीदारी का काम होता है।
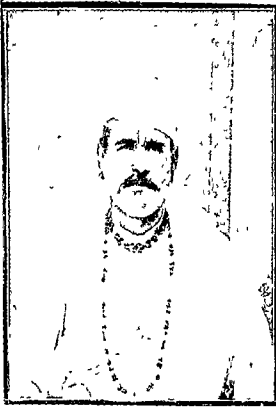
सेठ खुशालचंदजी जाजू (ईश्वरदास खुशालचंद) आर्वी

सेठ उत्तमचंदजी गांधी (गुलाबचंद उत्तमचंद) आर्वी

बा० बुलाकीदास जी जाजू (ईश्वरदास
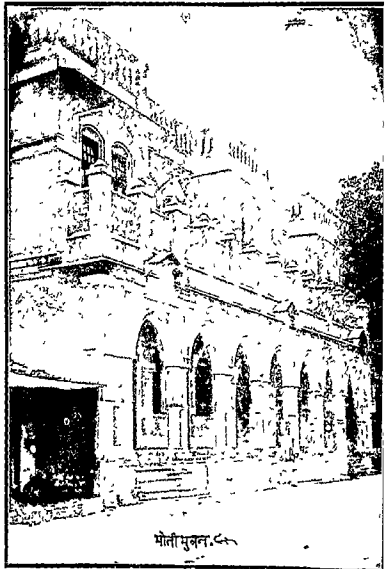
मेसर्स गुलाबचन्द उत्तमचन्द खामगाँव (जि० अमरावती)	खेती और लेनदेन तथा जमीदारी का काम होता है।
मेसर्स गुलाबचन्द उत्तमचन्द मेंढी (जि० अमरावती)	खेती और लेनदेन तथा जमीदारी का काम होता है।
उत्तमचन्द गोकुलदास आर्वी	यहाँ इन्टर नेशनल तथा क्रीनलर की मोटर एजन्सी है। इसमें आपका १/२ हिस्सा है।

मेसर्स जयरामदास भागचंद

इस फर्म के वर्तमान संचालक सेठ भागचंदजी तथा आपके पुत्र बा० दुलिचन्दजी हैं। आप लोगो का हेड आफिस धामणगांव मे है। इस फर्म का विशेष परिचय वहीं दिया गया है। यहां यह फर्म कपास का अच्छा व्यापार करती है। इसकी यहां २ जिनिंग तथा १ प्रेसिंग फैक्टरी भी है।

मेसर्स नारायणदास बद्रीदास

आप लोग सीकर राज्य के परशुराम पुरा के रहनेवाले हैं। आप लोग अग्रवाल वैश्य समाज के मितल गोत्रीय सज्जन हैं। सब से प्रथम इस स्थान में लगभग ५० वर्ष पूर्व सेठ नारायणदास जी इस स्थान पर आये थे अतः यह परिवार एक लम्बे अर्से से आर्वी में निवास करता है।

इस फर्म की स्थापना सेठ नारायणदास जी ने मेसर्स नारायणदास बद्रीदास के नाम से व्यापार आरम्भ कर आपने कपास और महाजनी लेनदेन का काम आरम्भ किया गया। इस फर्म की प्रधान उन्नति का श्रेय नारायणदासजी के पुत्र सेठ बद्रीदासजी को ही है। सेठ नारायण दासजी का स्वर्गवास सम्वत् १९६८ के लगभग हुआ। अतः फर्म का संचालन सेठ बद्रीदासजी के हाथ मे आया। आपने फर्म के व्यापार को अधिक उन्नत अवस्था पर पहुँचाया और आज यह फर्म यहां की प्रतिष्ठित फर्मों में मानी जाती है।

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ बद्रीदासजी, गणेशराम, प्रतापचंदजी म्हालूरामजी और सोहनलालजी हैं। फर्म का प्रधान संचालन प्रधान रूप से सेठ बद्रीदासजी करते हैं और आपकी देख रख में आपके सभी भाई व्यापार का संचालन करते है।

इस फर्म पर वर्तमान मे रुई अनाज, सोना, चांदी कपड़ा, लेन देन का काम होता है तथा जमीदारी और खेती का भी काम होता है। इसी प्रकार यहाँ फर्म की दो जीन फैक्टरियाँ तथा एक प्रेस फैक्टरी है।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार हैं:—

मेसर्स नारायणदास बद्रीदास आर्वी जि० वर्धा	यहां फर्म का हेड ऑफिस है जहां रुई अनाज, कपड़ा, सोना, चांदी का लेनदेन, एवंम् जमींदारी का काम है। यहां आपकी २ जिनिंग तथा एक प्रेसिंग फैक्टरी है।

मेसर्स मोजीराम बल्देवदास

आप लोग पोकरन जि० जोधपुर निवासी माहेश्वरी वैश्य समाज के राठी सज्जन हैं। इस फर्म की स्थापना लगभग १२५ वर्ष पूर्व हुई थी। इस फर्म की उन्नति का प्रधान श्रेय सेठ बलदेवदासजी को ही था। आपने व्यापार आरम्भ कर उसे उन्नत अवस्था पर पहुँचाया और अच्छी सफलता प्राप्त की। इस फर्म पर आरम्भ से रूई, महाजनी लेन देन आदि का काम होता था। आपके बाद सेठ बिशुनदासजी ने भी व्यापार किया। सेठ बलदेवदासजी का स्वर्गवास सम्वत् १९४५ में हुआ और बिशुनदासजी का सम्वत् १९६४ में हुआ। अतः सारे कारबार का संचालन सेठ गोपालदासजी के हाथ आया जो यहाँ दत्तक आये हैं। इस फर्म का व्यापार बंद कर दिया गया। अब केवल खेती और जमींदारी का ही काम रह गया है।

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ गोपालदासजी हैं। आप नवयुवक तथा स्वदेश-भक्त सज्जन हैं। स्थानीय प्रायः सभी संस्थाओं से आपका सम्बंध है।

मेसर्स मौजीराम बलदेवदास आर्वी जि० वर्धा	यहाँ जमींदारी और खेती का काम होता है।

मेसर्स रामरतन गणेशदास

इस फर्म का हेड आफिस अमरावती है। यहाँ यह फर्म अच्छी प्रतिष्ठित मानी जाती है। यहाँ भी इस पर कॉटन का व्यापार होता है। यहाँ इस फर्म की कॉटन जीनिंग तथा प्रेसिंग फैक्टरी है। यह फर्म यहाँ भी अच्छी मानी जाती है। यहाँ कॉटन का व्यापार तथा आढ़त का काम होता है। इस फर्म का विशेष परिचय चित्रों सहित अमरावती के साथ दिया गया है।

मेमर्स रामरतन सीताराम

आप लोग परशुरामपुरा (जयपुर) के रहने वाले अग्रवाल वैश्य समाज के सज्जन हैं। इस फर्म की स्थापना लगभग ८० वर्ष पूर्व सेठ रामरतनदासजी ने की थी। आपने अपनी साधारण फर्म को अच्छी उन्नत की अवस्था पर पहुँचाया। आपके बाद सेठ सीतारामजी ने फर्म का संचालन किया और आपके बाद सेठ किशनलालजी आजकल फर्म का संचालन करते हैं। इनके एक भाई और हैं जिनका नाम मांगीलालजी है। इस फर्म पर रुई, लेन-देन और खेती का काम होता है।

इसका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

मेसर्स रामरतन सीताराम आर्वी० जि० वर्धा	यहां रुई, और लेन देन का काम होता है।
मेसर्स रामरतन सीताराम पुलगांव (वर्धा)	यहां रुई का काम होता है।

इस फर्म की यहाँ एक जीन और प्रेस फैक्टरी है। इसी प्रकार पुलगांव में एक जीनिंग फेक्टरी है।

मेसर्स रामचन्द चुन्नीलाल

ये लोग ओसवाल समाज के सज्जन हैं और जेसलमेर के रहने वाले हैं। देश से सेठ रामचन्द्रजी ने आकर इस फर्म की स्थापना लगभग १०० वर्ष पूर्व की थी। इस फर्म पर वर्तमान में रुई, और महाजनी लेन-देन का काम होता है।

इस फर्म की विशेष उन्नति सेठ रामचन्द्रजी के पौत्र एवम् सेठ चुन्नीलालजी के पुत्र सेठ गोकुलदासजी तथा सेठ सौभागमलजी के हाथों हुई।

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ गोकुलदासजी और आपके भतीजे सौभागमलजी और बिशनदासजी हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है :—

मेसर्स रामचन्द चुन्नीलाल आर्वी जि० वर्धा	यहाँ कॉटन, महाजनी लेन देन चाँदी-सोना और मनीहारी का काम होता है।

मेसर्स शालिगराम जैनारायन

ये लोग अग्रवाल समाज के सज्जन हैं। इस फर्म की स्थापना सेठ भागचन्दजी ने लगभग १०० वर्ष पूर्व की थी। इस फर्म पर रूई, और महाजनी लेनदेन का काम होता है। इस फर्म की उन्नति प्रधानरूप से सेठ शालिगरामजी के हाथों से हुई, शालिगरामजी के दत्तक जैनारायणजी और जैनारायणजी के बाद उनके पुत्र सेठ गणेशरामजी हुए और वर्तमान में इस फर्म के मालिक इनके पुत्र सेठ गोवर्द्धनदासजी हैं।

इस फर्म के जीन और प्रेस भी हैं तथा जमींदारी भी है।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

मेसर्स शालिगराम जैनारायण आर्वी — यहाँ रूई, महाजनी लेनदेन और जमींदारी का काम होता है।

व्यापारियों के पते

कपड़े के व्यापारी—

- केशवलाल हिम्मतलाल
- कानजी अमीरचन्द
- नारायणदास बद्रीदास
- राजपाल देवजी
- सूरजमल शिवदास
- हिम्मतराम त्रिभुवनदास

गल्ले के व्यापारी—

- नारायणदास बद्रीदास
- नेमीचन्द परवा
- रामचन्द्र चुन्नीलाल
- शिवजीराम लादूराम

किराना के व्यापारी—

- अब्दुल करीम अब्दुल लतीफ़
- उसमान अहमद
- गुलामअली रसूलजी
- बागजी मेघजी
- हाजीदाऊद उस्मान

चांदा-सोना के व्यापारी—

- नारायणदास बद्रीदास
- रामचन्द्र चुन्नीलाल

जनरल मर्चेण्ट्स—

- इस्माईलजी आदमजी
- गुलामअली रसूलजी
- रामचन्द्र चुन्नीलाल

बैंकर्स एण्ड कॉटन मर्चेण्ट्स—

- ईश्वरदास खुशालचन्द
- गुलाबचन्द उत्तमचन्द
- जयरामदास भागचन्द
- नारायणदास बद्रीदास
- रामरतन सीताराम
- रामरतन गनेशदास
- रामचन्द्र चुन्नीलाल
- शिवजीराम लादूराम

धामणगाँव

यह स्थान जी. आई. पी. रेल्वे की भुसावल–नागपुर शाखा के अपने ही नाम के स्टेशन के समीप ही बसा हुआ है। यहाँ विशेष कर रुई एवं कपास का व्यापार होता है। यहाँ बहुत सी जीनिंग और प्रेसिंग फैक्टरियाँ हैं, जहाँ कपास, जीन तथा प्रेस किया जाता है। इसके अतिरिक्त बाहर जाने वाली वस्तुओं में कुछ नहीं है। बाहर से कपड़ा, किराना गल्ला, हार्डवेअर और इसी प्रकार की, रोजाना व्यवहार की वस्तुएँ बाहर से यहाँ आती हैं। इसके आस पास छोटे २ कई गाँव हैं। जहाँ बड़े २ व्यापारी निवास करते हैं। उनके यहाँ खेती वगैरह का काम होता है। यहाँ से कई स्थानों पर मोटर सर्विस भी दौड़ती है। इसके पास ही पुलगाँव नामक स्थान आ गया है। जो कि कॉटन के लिये मशहूर है। यहाँ भी कई जीनिंग और प्रेसिंग फेक्टरी हैं। यहाँ एक कपड़े के बुनने की मिल भी है। जिसका कपड़ा अच्छा निकलता है।

मेसर्स जयरामदास भागचंद

इस फर्म के मालिकों का मूल निवास-स्थान परशरामपुरा (शेखावाटी) का है। आप लोग अग्रवाल वैश्य समाज के गर्ग गौत्रीय सज्जन हैं। करीब ५० वर्षों से यह फर्म कपास, रुई और आढ़त का व्यापार करती चली आ रही है। यह फर्म यहां की प्रतिष्ठित फर्मों में मानी जाती है।

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ भागचंदजी तथा आपके पुत्र सेठ दुलीचन्दजी हैं। आप ही दोनो इस फर्म का संचालन करते हैं। आप लोगों के हाथों से फर्म की विशेष तरक्की हुई है। आप लोगों का ध्यान सार्वजनिक कार्यों की ओर भी अच्छा रहता है। आपकी ओर से मंढोली (जयपुर) में एक पक्का तालाब, हरिद्वार में एक धर्मशाला बनी हुई हैं। इसी प्रकार और भी सार्वजनिक कार्यों मे आप लोग सहयोग देते रहते हैं। इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

धामणगांव—मेसर्स जयरामदास भागचन्द T. A. "Gajanan"	यहां बैंकिंग, हुंडी चिट्ठी, रुई का काम होता है। तथा आपकी एक जीनिंग और एक प्रेसिंग फेक्टरी है।

अमरावती—मेसर्स जयरामदास भागचन्द	यहां भी आपका जीन और प्रेस है। तथा रुई का व्यापार होता है।
यवतमाल—मेसर्स जयरामदास भागचन्द	यहां भी उपरोक्त व्यापार होता है। तथा कारखाने हैं।
आर्वी—मेसर्स जयरामदास भागचंद	यहां २ जीन और एक प्रेस है। तथा कपास का व्यापार होता है।
बम्बई—मेसर्स जयरामदास भागचन्द केथेड्रल स्ट्रीट T. A. "Godess"	यहां रूई के वायदे तथा हाजर का व्यापार होता है।

मेसर्स बिरदीचन्द चुन्नीलाल

इस फर्म के मालिकों का मूल-निवास-स्थान नांद (मारवाड़) का है। सी. पी. में इस खानदान को आये हुए करीब १०० वर्ष हुए। सब से पहले सेठ बुधमलजी लूणावत ने धामक (C. P.) में आकर अपना काम प्रारम्भ किया। आपके पश्चात् आपके पुत्र बिरदीचन्दजी ने फर्म के कामको सम्हाला। इस समय भी आप ही इस फर्म के मालिक हैं आपकी आयु इस समय करीब ७२ वर्ष की है। आपके एक पुत्र श्रीयुत चुन्नीलालजी हुए, जिनका स्वर्गवास संवत १९७६ में हो गया। इस समय आपके २ पौत्र अर्थात् श्रीयुत् चुन्नीलालजी पुत्र श्रीयुत् सुगनचन्दजी तथा श्रीयुत् इन्द्रचन्दजी फर्म के काम को संचालित करते हैं। आप दोनों बड़े योग्य और व्यापारकुशल सज्जन हैं।

इस फर्म की दानधर्म तथा सार्वजनिक कार्य्यों की ओर भी अच्छी रुचि है। श्रीयुत इन्द्रचन्दजी के विवाह के उपलक्ष्य में ११००० रुपये भिन्न २ कार्य्यों में दान किये थे।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

१ धामक—मेसर्स बुधमल बिरदीचन्द—यहाँ पर बैंकिग और खेती वाड़ा का काम होता है। यहाँ पर आपकी एक जीनिंग फेक्टरी है।

२ धामणगाँव—मेसर्स बिरदीचन्द चुन्नीलाल—यहाँ पर बैंकिंग, सोना-चांदी और कमीशन एजन्सी का काम होता है।
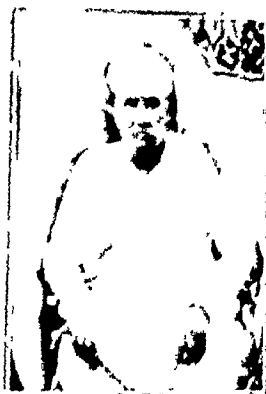
मेसर्स श्रीराम शालिगराम

इस फर्म के मालिक मूल निवासी पोकरन (जोधपुर) के हैं। आप माहेश्वरी जाति के राठी सज्जन हैं। इस खानदान के पूर्वपुरुष सेठ खुशालचन्दजी तथा आपके छोटे भ्राता सेठ मूलचन्दजी हैं। इसमें से सेठ खुशालचन्दजी के परिवार की दुकानें बिहारीलाल रामगोपाल और टीकमदास मदनलाल तथा गणेशदास गुलाबचन्द के नाम से अकोला, खामगाँव और तिलोरा में चल रही हैं। तथा सेठ मूलचन्दजी के परिवार का व्यवसाय विशेष कर श्रीराम शालिगराम के नाम से ही चलता है।

सेठ मूलचन्दजी के स्वर्गवास के पश्चात् इस परिवार के कारबार को आपके दत्तक पुत्र सेठ शिवलालजी ने सञ्चालित किया। सेठ शिवलालजी के दो पुत्र हुए उनके नाम सेठ शालिगराम जी और सेठ बालकिशनदासजी थे। इनमें से उपरोक्त फर्म सेठ शालिगरामजी के वंशजों की है। सेठ शालिगरामजी के भी दो पुत्र हुए। सेठ फतेलालजी और सेठ सुन्दरलालजी। इनमें से सेठ फतेलालजी बड़े दक्ष, प्रसिद्ध और नामाङ्कित पुरुष हो गये हैं। आपने व्यापारिक जगत् में सफलता प्राप्त कर लाखों रुपये का द्रव्य उपार्जित किया तथा सामाजिक-जगत् में बड़ी कीर्ति लाभ की। आप द्वितीय माहेश्वरी महासभा के प्रेसिडेण्ट रहे, तथा जाति के अत्यन्त प्रभावशाली नेता रहे। एक बार पोकरन में ठाकुर साहब और माहेश्वरी समाज में झगड़ा हो गया था, उसको भी आपने बड़ी चतुराई से निपटाया। राज्य में भी आपका बहुत बड़ा प्रभाव रहा। आप राज्य पोकरन ठिकाने में सेठ के सम्मान सूचक नामों से सम्बोधित किये जाते थे। आपके हाथ से दान-धर्म और सार्व जनिक कार्य्य भी खूब हुए। आपने करीब तीन लाख रुपयों का एक ट्रष्ट कायम किया जिससे मारवाड़ में शिक्षा-प्रचार, अनाथ-सहायता, गौ-रक्षा और अकाल पीड़ितों की मदद होती है। इसके सिवा नासिक में आपने करीब एक लाख की लागत से एक धर्मशाला और सदावृत, तथा व्यासवाट में भी एक धर्मशाला और सदावर्त खुलवाया। तथा आपने अपने पुत्र श्रीयुत लाभचन्दजी जिनका स्वर्गवास केवल २२ साल अल्पवय में हो गया—के स्मारक में धामणगाँव में एक चारिटेबिल डिस्पेन्सरी, और एक गो रक्षा भवन बनवाया। आपके पूर्वजों की ओर से पोकरन में एक श्री गोवर्द्धननाथजी का विशाल मन्दिर बना हुआ है। इस मन्दिर के लिए लाखों रुपये की स्टेट दी हुई है। यह आपके शुभ कार्यों का संक्षिप्त परिचयमात्र है।

संवत् १९७४ में आप संसार में कीर्तिलाभ कर स्वर्गवासी हो गये, और १९७५ में आपकी तथा सेठ सुन्दरलालजी तथा बालकिशनदासजी की फर्में अलग २ हो गईं। इस समय इस फर्म के मालिक स्वर्गीय लाभचन्दजी के दत्तक पुत्र श्रीयुत पुरुषोत्तमदासजी हैं। अभी आप केवल १६

वर्ष के हैं। इसलिए सेठ फतेलालजी के पश्चात् उनके सालेफलोदी निवासी श्रीयुत हीराराम जी भैय्या ने काम सम्हाला। आप ५० वर्ष से इस फर्म का काम करते थे। आपका स्वर्गवास करीब १५ साल पूर्व हो गया। इस समय श्रीयुत लीलाधरजी भूतड़ा फर्म का काम योग्यता पूर्वक संचालित कर रहे हैं। आप बड़े शिक्षित और समझदार सज्जन हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

धामणगाँव—मेसर्स श्रीराम शालिग्राम—यहाँ पर आपका एक जीन प्रेस है तथा कृषि, बैंकिंग और कमीशन एजन्सी का काम होता है। तथा सब प्रकार का व्यापार होता है।

जलगाँव—मेसर्स शिवलाल शालिग्राम—यहाँ पर आपकी एक प्रेसिंग फेक्टरी है। इसके अतिरिक्त यवतमाल, अकोला वगैरह स्थानों में कई फेक्टरियों में आपका साझा है। इसके सिवा भड़गाँव और बोदवा वगैरह स्थानों पर आपकी बहुतसी जमींदारी है।

मेसर्स श्रीकिशन भण्डारी

इस फर्म के मालिकों का मूल-निवास-स्थान पाटवा (जोधपुर-स्टेट) में है। आप माहेश्वरी समाज के भण्डारी सज्जन हैं। श्रीयुत् श्रीकिशनजी भण्डारी उन व्यक्तियों में से हैं, जिन्होंने अपने हाथो से अपने पैरों पर खड़े होकर, अपने व्यापार को जमाया, द्रव्य उपार्जित किया और व्यापारी समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त की। आपका व्यापारिक साहस बहुत बढ़ा हुआ है। पहले आप बहुत साधारण स्थिति के पुरुष थे। मगर २५ वर्ष पूर्व आपने अपनी फर्म स्थापित किया और क्रमशः उन्नति करते २ उसे इतनी उन्नत अवस्था को पहुँचाया।

आपके इस समय तीन पुत्र हैं। जिनके नाम क्रमशः श्रीयुत् जयनारायणजी, श्रीयुत राधाकिशनजी, और रामेश्वरजी हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

धामणगाँव—मेसर्स श्रीकिशन भण्डारी—यहाँ पर आपकी एक जीनिंग फेक्टरी है। तथा रूई का व्यापार होता है। यहाँ पर आपका निजी मकान और खेती भी है।

व्यापारियों के पते

बैंकर्स एण्ड कॉटन मरचेंट्स—

मेसर्स जयरामदास भागचन्द

„ दीनशा पेस्तनजी

„ बिरदीचन्द चुन्नीलाल

„ मुरारजी माधवजी

„ श्रीराम शालिगराम

„ श्रीकिशनजी भण्डारी

फतेलाल लाभचंद धर्मशाला (श्रीराम शालिगराम) नासिक

दुकान मेसर्स श्रीराम शालिगराम धामणगाँव ।

कारंजा

जी० आई० पी० रेलवे की भुसावल–नागपुर लाइन के मुर्तिजापुर जंकशन से इस स्थान के लिये एक लाइन जाती है। वरार प्रांत की कपास की मंडियों में इसका भी अच्छा स्थान है। यहाँ कई प्रतिष्ठित गुजराती फर्मों की ब्रांचेज हैं। इसके अलावा विदेशी फर्मों की एजंसियाँ हैं। यहाँ करीब ५० हजार गाँठ रुई प्रतिवर्ष बँधती है। यहाँ करीब १५ जीनिंग फेक्टरियाँ हैं।

प्रसिद्ध स्थान—

(१) कस्तूरी की हवेली—किम्वदन्ति है कि इस इमारत के बनवाने में ६० ऊँट कस्तूरी नींव मे डाली गई थी। और उसके बदले में इस हवेली के निर्माता धनिक कुटुम्ब ने एक ही सिक्के के रुपये दिये थे। उक्त परिवार "संगई" के नाम से यहाँ सम्बोधित किया जाता है।

(२) जैन सम्प्रदाय के ३ प्राचीन मंदिर भी यहाँ विद्यमान हैं—१—सेनगंग २—बालात्कार और ३—काष्ठा संगई। उपरोक्त स्थानों से पता लगता है कि कारंजा बहुत ऐतिहासिक स्थान है। और बहुत समय पूर्व यह एक समृद्धिशाली माना जाता था।

(३) श्रीमहावीर ब्रह्मचर्य्याश्रम—इस आश्रम का जन्म वीर सं० २४४४ की अक्षय तृतीया को हुआ। इसमें करीब १२५ विद्यार्थी शिक्षा लाभ करते हैं। इसमे व्यायाम शाला, पुस्तकालय, वाचनालय, व्याख्यान समिति सभी आवश्यक विभाग हैं। इसका ध्रौव्यफण्ड ८५५००) है जिससे सात आठ हजार रुपये वार्षिक की आमदनी होती है। इसके अध्यक्ष श्रीयुत जयकुमार देवीदास चँवरे और मंत्री शामलाल दुलासा कावरी हैं। संस्था उद्दीपमान है।

मेसर्स गोपालदास अम्बादास चंवरे

इस फर्म के मालिक बहुत लम्बे समय से कारंजा में निवास करते हैं। इसके पूर्व आप कोटा बूंदी की ओर से इधर आये थे। सेठ गंगासा चंवरे के हाथों से इस कुटुम्ब के व्यापार को तरक्की मिली। आपके ४ पुत्र हुए सेठ देवीदास चंवरे, सेठ अम्बादास चंवरे, सेठ जिनवरसा

चंवरे एवं सेठ ओंकारसा चंवरे। संवत् १९७३ में आप सब भाइयों का कारबार अलग २ हो गया तब से सेठ अम्बादासजी की फर्म अम्बादास गोपालदास के नाम से अपना अलग व्यापार करती है। सेठ गंगासाजी ३५ साल पहिले और अम्बादासजी ६।७ साल पहिले स्वर्गवासी हुए।

सेठ अम्बादासजी के २ पुत्र हुए सेठ पद्माकरजी एवं सेठ गोपालदासजी। इनमें से पद्माकर जी का स्वर्गवास हो गया है। आपके स्मरणार्थ गोपालदासजी ने पद्माकर चंवरे थियेटर और वाचनालय चालू किया है। सेठ गोपालदासजी ने अपने पिताजी के स्मरणार्थ २५ हजार रुपयों से अप्राप्य एवं प्राचीन जैन ग्रंथों के प्रकाशन का कार्य भी आरंभ किया है। कारंजा के दिगम्बर जैन बोर्डिंगहाउस को आपकी फेमिली ने ३५ हजार रुपया दिया है, उक्त बोर्डिंग के आप सेक्रेटरी हैं। इसके अलावा आपने कारंजा ऋषिकुल ब्रह्मचर्याश्रम को १० हजार दिये हैं।

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ गोपालदासजी एवं पद्माकरजी के पुत्र रामासावजी हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कारंजा -- गोपालदास अम्बादास—बैङ्किग, शेअर, कॉटन और खेती का काम होता है। नागपुर डिस्ट्रिक्ट में आपकी माल गुजारी का एक गांव है।

रायचूर (मद्रास)—यहाँ आपकी एक जीनिग फेक्टरी है।

मेसर्स जिनवरसा गंगासा

इस कुटुम्ब का करीब २५० वर्षों से यहीं निवास है। कहा जाता है कि मारवाड़ से यह कुटुम्ब बुरहानपुर, जालना होता हुआ यहाँ आकर आबाद हुआ। सेठ गंगासा के हाथों से फर्म के व्यापार की वृद्धि हुई। आपके पुत्र देवीदासजी, अम्बादासजी, जिनवरसाजी और ओंकारसाजी की फर्में अपना अलग २ व्यापार करती हैं। तब से सेठ जिनवरसाजी की फर्म जिनवरसा गंगासा के नाम से अलग व्यापार करती है। आप लोग बघेरवाल दिगम्बर जैन सम्प्रदाय के सज्जन हैं। धार्मिक कामों की ओर इस कुटुम्ब का बहुत बड़ा लक्ष है। स्थानीय महावीर ब्रह्मचर्य्याश्रम में आप लोगों ने अलग-अलग बड़ी रकमें दान दी हैं। सेठ जिनवरसा जी की ओर से भी उक्त आश्रम को २१९००) प्रदान किये गये हैं। आपके पुत्र श्री ऋषभदासजी भी फर्म के व्यवसाय को संचालित करते हैं। जिनवरसाजी वृद्ध सज्जन हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कारंजा–सेठ जिनवरसा गंगादास—यहाँ बैकिंग, खेती, शेअर का व्यापार एवं जीनिंग फेक्टरी है।

सेठ अम्बादास गंगाजी चंवरे—कारंजा
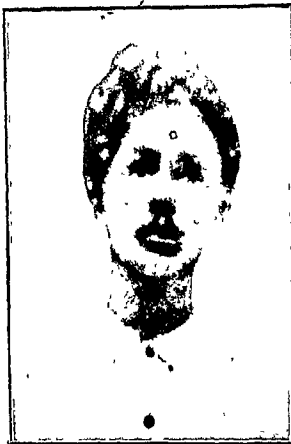
स्व. पद्माकर अम्बादास चंवरे—कारंजा

सेठ गोपालदास चंवरे—कारंजा

सेठ रामासा पद्माकर चंवरे—कारंजा

मेसर्स जम्बूदास देवीदास

यह फर्म सेठ जिनवरसाजी के बड़े भ्राता सेठ देवीदासजी की है। सेठ देवीदासजी संवत् १९७३ के श्रावण मास में स्वर्गवासी हुए। आपके ५ पुत्र हुए जिनके नाम क्रमशः प्रभुदासजी, जयकुमारजी, जम्बूदासजी, वर्द्धमानजी, एवं बालचंदजी चंवेर हैं। उपरोक्त सज्जनों में से जयकुमारजी १९८५ में और वर्द्धमानजी १९७७ में गुजर गये हैं। श्रीजयकुमारजी चंवरे प्रसिद्ध वकील हो गये हैं। अब आपके छोटे भ्राता बालचंदजी अकोले में वकीली का काम करते हैं। इन भाइयों में से सेठ जम्बूदासजी उपरोक्त नाम से अपना अलग व्यापार करते हैं। सेठ जम्बूदासजी ने महावीर ब्रह्मचर्य्याश्रम को ५० हजार रुपया भिन्न २ मदों में प्रदान किया है। आपके भ्राता प्रभूदासजी ने भी करीब २६ हजार रुपया उक्त संस्था को दिया है। सेठ जम्बूसाजी बहुत सरल प्रकृति के सज्जन हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कारंजा—मेसर्स जम्बूदास देवीदास—यहाँ बेंकिंग, कपड़ा तथा खेती का व्यापार होता है।

मेसर्स नरसिंहसा रुखबसा रावल

इस फर्म के मालिक झाँसी (बुन्देलखंड) निवासी नीमा महाजन समाज के दिगम्बर जैन सज्जन हैं। करीब १५०—१७५ वर्ष पूर्व सेठ नरूसावजी के हाथों से इस फर्म का स्थापन हुआ था। सेठ रुखबसावजी के समय में इस कुटुम्ब के व्यापार की वृद्धि आरंभ हुई। एवं उनके पुत्र नरसिह सावजी ने व्यापारको विशेष बढ़ाया। सेठ नरसिह सावजी बड़े उदार विचारों के जैन थे। आपने कारंजा में श्रीश्वेताम्बर दिगम्बर जैन कान्फ्रेंस बुलाई थी। श्रीदेवेन्द्र कीर्ति के भट्टारक की गद्दी के पट्ट स्थापक आप ही थे। आपके छोटे भ्राता माणिकसावजी ने सन् १९०५ में यहाँ एक जीनिंग खोली। सेठ नरसिंह सावजी संवत् १९६३ में स्वर्गवासी हुए। वर्तमान में आपके पुत्र सेठ रतनलालजी एवं मगनलालजी रावल फर्म के मालिक हैं। श्रीरतनलालजी रावल १२ साल से म्युनिसिपल मेम्बर हैं। आपके नरूसाव, शतीशचन्द्र एवं सुभाषचंद्र नामक ३ पुत्र हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कारंजा—मेसर्स नरसिंहसा रुखबसा—कपड़ा, कृषि कॉटन एवं लेन-देन का काम होता है।

कारंजा—मानिकसा रुखबसा रावलजीनिंग फेक्टरी—इस नाम से जीनिंग है।

मेसर्स मोतीलाल ओंकारसा

इस फर्म के मालिक सेठ ओंकारसा गंगादास के पुत्र सेठ मोतीलालजी एवं धन्नूसाजी हैं। आप बघेरवाल जैन सम्प्रदाय के सज्जन हैं। स्थानीय ब्रह्मचर्य्याश्रम में आप की ओर से भी मदद दी गई है। आपके यहाँ धन्नूलाल ओंकारदास के नाम से कपड़े का और मोतीलाल ओंकारदास के नाम से कृषि और लेन-देन का काम होता है।

मेसर्स मूलजी जेठा एण्ड कम्पनी

इस फर्म का विस्तृत परिचय हमारे ग्रन्थ के प्रथम भाग में बम्बई विभाग में पृष्ठ २२ में दिया जा चुका है। यह फर्म कारंजा के न्यू ईस्टइण्डिया प्रेसिंग कम्पनी की मेनेजिंग एजंट है। १८७४ में इस प्रेसिंग कम्पनी की स्थापना की गई। कारंजा के अलावा मुर्तिजापुर, अकोला, वासिम, जलगाँव आदि कई स्थानों पर इस फर्म की जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरियाँ हैं। बम्बई के व्यापारिक क्षेत्र में यह बहुत प्रतिष्ठासम्पन्न फर्म समझी जाती है।

मेसर्स रामजी नाइक काण्णव

इस प्रतिष्ठित कुटुम्ब का लम्बी अवधि से यहीं निवास है। सेठ रामजी नाइक के आजा के हाथों से इस कुटुम्ब में व्यवसाय आरम्भ हुआ। आप दक्षिणी ब्राह्मण समाज के गौतम ऋषि गौत्रीय सज्जन हैं। आपके पश्चात् क्रमश: श्रीतुकाराम काण्णव, श्रीकृष्णाजी काण्णव, श्रीरामजी काण्णव ने फर्म का व्यवसाय संचालन किया। सेठ तुकाराम काण्णव ने इस फर्म के व्यवसाय की विशेष उन्नति की। आपने यहाँ एक धर्मशाला का भी निर्माण कराया। इसके अलावा इस कुटुम्ब की ओर से यहाँ एक श्रीरामजीमन्दिर बना है। तथा सदावर्त का प्रबंध है। यहाँ के व्यापारिक समाज में यह फर्म बहुत पुरानी तथा प्रतिष्ठा-सम्पन्न मानी जाती है।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ भगवंत राव काण्णव हैं। आप सेठ रामजी काण्णव के नाम पर दत्तक आये हैं। इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कारंजा—रामजी नाइक काण्णव—यहाँ जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी है। तथा वैङ्किंग व्यापार होता है

अमरावती— ,, —जीनिंग फेक्टरी तथा ऑइल मिल है।

धामणगाँव— ,, —ऑइल मिल है।

नागपुर— ,, —जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी है।

मंगरूल— ,, —जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी है।

मेसर्स रामधन रघुनाथ

इस फर्म के मालिक मूंडवा (मारवाड़) निवासी माहेश्वरी समाज के सज्जन हैं। करीब १२५ वर्षों से यह दुकान यहाँ कारबार करती है। पहले इस दुकान पर सालगराम बिरदीचंद नाम पड़ता था।

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ शिवप्रतापजी हैं। आपके यहाँ कारंजा में रामधन रघुनाथ के नाम से खेती तथा साहुकारी व्यवहार एवं मोहनलाल बालकिशन के नाम से रुई का कारबार होता है।

मेसर्स रामचन्द्र चन्दनमल

इस फर्म के मालिकों का मूल निवास स्थान फलोदी (जोधपुर स्टेट) है। आप ओसवाल श्वेताम्बर जैन धर्मावलम्बीय गुलेछा गौत्रीय सज्जन हैं। इस फर्म का स्थापन संवत् १९१३।१४ में सेठ इन्द्रचन्द्रजी के हाथों से हुआ। सेठ रामचन्द्रजी के ५ पुत्र हुए। १ सेठ कल्यानमलजी, २ इन्द्रचंन्दजी, ३ अमोलकचंदजी, ४ सरदारमलजी तथा ५ चंदनमलजी। इन सब भाईयों का कारबार २५ साल तक शामिल होता रहा और उसके बाद से सेठ चन्दनमलजी का कुटुम्ब अपना स्वतंत्र व्यापार कर रहा है। आप १९५७ में स्वर्गवासी हुए।

सेठ चंदनमलजी के ४ पुत्र हुए। मूलचन्दजी, सोभागमलजी, पूनमचन्दजी तथा दीपचंदजी इनमें से दीपचंदजी १९५७ मे स्वर्गवासी हो गये हैं। संवत् १९५९ में आपकी ओर से बम्बई में दुकान खोली गई। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

बम्बई—मेसर्स मूलचन्द सोभागमल (बदामका झाड़) कालबादेवी—यहाँ आढ़त का काम होता है।
कारंजा—मेसर्स रामचन्द चन्दनमल—बैङ्किग कपड़ा चाँदी सोना का व्यापार होता है।

जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरीज़

मेसर्स दि अकबर प्रेसिंग कम्पनी लिमिटेड
,, कारंजा जीनिंग कम्पनी
,, नरसिंह शिवजी जीनिंग फेक्टरी
,, नरेन्द्र जीनिंग फेक्टरी
,, मरकेंटाइल प्रेसिंग कम्पनी
,, माणिकसा रुखबसा जीनिंग फेक्टरी
,, न्यू मुफस्सिल जीनिंग प्रेसिंग कम्पनी लिमिटेड
,, न्यू ईस्ट इण्डिया प्रेस कम्पनी लिमिटेड
,, रामजी नाइक काण्णव जीनिंग प्रेसिंग कम्पनी लिमिटेड
,, रामकिशन लोंकड़ जीनिंग फेक्टरी

कपास के व्यापारी

मेसर्स अर्जुन खीमजी एण्ड कम्पनी
,, तनसुखराम बंशीधर
,, बालमुकुन्द चांडक
,, मूलजी जेठा कम्पनी
,, मोहनलाल बालकिशन
,, रघुनाथ मांगीलाल
,, रामजी नाइक काण्णाव

हार्ड वेअर मरचेंट

मेसर्स अब्दुलकय्यूम अब्दुलअली
,, अमानत हुसेन हकीमुद्दीन
,, इस्माइलजी महम्मदअली
,, गुलामहुसेन ईसुफअली
,, हिफतुल्ला भाई अब्दुलअली

विदेशी कम्पनियों की एजंसियाँ

मेसर्स गोसो कावूसी केशा लिमिटेड
,, जापान ट्रेडिंग कम्पनी लिमिटेड
,, टोयो मेनका केशा लिमिटेड
,, वाल कट ब्रदर्स लिमिटेड

कपड़े के व्यापारी

मेसर्स नारायण प्रागजी सम्मत
,, मोतीलाल ओंकारदास
,, रामचन्द्र चन्दनमल
,, हाजीमहम्मद शाहमहम्मद

शेगांव

यह स्थान जी० आई० पी० रेलवे की भुसावल नागपुर लाइन पर जलम्ब और मूर्तिजापुर जंकशन के बीच खाम गांव नामक शहर के समीप है। यहाँ कपास की ६ जीनिंग और ६ प्रेसिंग फेक्टरियां तथा १ ऑइल मिल है। प्रति वर्ष ३०।४० हजार गांठ रुई की औसत आमद इस स्थान पर है। कपास की यह छोटी सी और अच्छी मंडी है। खामगांव से प्रति दिन सैकड़ों मोटरों एवं लारियों की आमदरफ्त यहाँ रहा करती है। यहां से बिनोले (सरकी) पंजाब, बम्बई एवं काठियावाड़ के लिये रवाना किये जाते है। यहाँ के व्यापारियों का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है।

कॉटन मरचेंट्स

मेसर्स सुखदेव रामदेव

इस फर्म के मालिक खास निवासी शाहपुर (जयपुर स्टेट) है। आप अग्रवाल समाज के सज्जन हैं। इस दुकान का स्थापन सेठ सुखदेवजी के हाथों से संवत् १९२३ में हुआ। इस फर्म

के व्यापार की विशेष उन्नति सेठ सुखदेवजी के पुत्र रामदेवजी एवं झावरमलजी के हाथों से हुई। आप ही दोनों वर्तमान में फर्म के मालिक हैं। आपकी ओर से देश में एक सुंदर धर्मशाला बनी हुई है। सेठ रामदेवजी को १९२४ में रायसाहब की उपाधि मिली है। यहाँ के आप आनरेरी मजिस्ट्रेट हैं। सेठ रामदेवजी के पुत्र सेठ गज्जूलालजी कॉटन मार्केट के प्रेसिडेंट हैं। आपकी फर्म का प्रधान व्यापार कपास का है। इनका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

शेगांव—मेसर्स सुखदेव रामदेव—यहाँ जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी तथा रुई का व्यापार होता है।

खाम गांव—मेसर्स सुखदेव रामदेव—रुई का व्यापार होता है।

मेसर्स राय बहादुर हरदत्तराय रामप्रताप चमड़िया

इस फर्म का हेड ऑफिस कलकत्ता है। कलकत्ते के व्यापारिक समाज में यह फर्म बहुत प्रतिष्ठित एवं प्रधान धनिकों में समझी जाती है। इसके व्यापार का विस्तृत परिचय हमारे ग्रंथ के द्वितीय भाग में चित्रों सहित दिया गया है।

संवत् १९५८ में इस फर्म की शेगांव में जीनिंग और १९६५ में प्रेसिंग फेक्टरी खोली गई। इस दुकान का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

शेगांव—राय बहादुर हरदत्तराय रामप्रताप जीनिंग प्रेसिंग तथा न्यूजीन फेक्टरी। इस दुकान पर श्रीजुहारमलजी कमलिया संवत् १९६ से काम करते हैं।

जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरीज़

जयनारायण म्हालीराम जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी
न्यू मुफस्सिल कम्पनी लि० „ „
न्यू जीन फेक्टरी „ „ „
राली ब्रदर्स लिमिटेड „ „ „
सुखदेव रामदेव „ „ „
रा. व. हरदत्तराय रामप्रताप „ „
श्रीराम शालिगराम „ „ „

ऑयल मिल्स

न्यू मुफस्सिल कम्पनी ऑइल मिल्स

कपास के व्यापारी

मेसर्स केवलराम रामेश्वर
„ जयनारायण म्हालीराम
„ माणिकजी परवत
„ सुखदेव रामदेव

कपड़े के व्यापारी

केदारमल मन्नालाल
गणपतलाल धन्नालाल
गणेशदास भीमराज

किराना के व्यापारी

मेसर्स उमर हासम
„ गोंदूराम मंगलचंद
„ बलदेवदास लक्ष्मीनारायण
„ हाजी अली अब्दुल्ला

आकोट

इस स्थान अकोला के समीप उत्तर की ओर बसा हुआ है। प्रति वर्ष ३०।३५ हजार रुई की गाँठें यहाँ बँधती हैं। यहाँ १३।१४ कॉटन जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरियाँ हैं। यहाँ के बहुत से व्यापारियों का परिचय अकोला आदि स्थानों में पहिले दिया जा चुका है।

सेठ लालजी विट्ठोबा पाटील

इस कुटुम्ब का करीब १३ पीढ़ी से सावरा (आकोट-बरार) में निवास है। आपके मूल श्री जयसिंह राव समझे जाते हैं। आप मराठा (पाटील) सज्जन हैं। इस कुटुम्ब के व्यापार को सेठ विट्ठोबा पाटील के समय से उन्नति आरम्भ हुई। सेठ लालजी पाटील ने इसके काम-काज को विशेष चमकाया। आकोट अंजनगाँव में आपने जीनप्रेस खोले, कई मिलों एवं इंश्यु-रंस कम्पनियों के आप शेअर होल्डर हैं। बरार प्रान्त में आपकी बहुत बड़ी काश्त होती है। आप अकोला सैंट्रल बैंक के डायरेक्टर एवं डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के मेम्बर रह चुके हैं। लालजी सेठ की अवस्था इस समय ६२ वर्ष की है। आप व्यापारिक काम अपने पुत्रों पर छोड़ कर तीर्थ यात्रा में रहा करते हैं। आपने सावरा में एक ए. व्ही. स्कूल एवं पंढरपुर में एक धर्मशाला बनवाई है।

लालजी सेठ के इस समय ४ पुत्र हैं। श्रीयुत मारुतीलालजी, श्री केशोरावलालजी, श्री माधवलालजी एवं हरीलालजी पाटील हैं। इनमें से श्री केशोराव पाटील अभी इग्लैंड, फ्रांस, जर्मनी, इटली, स्वीटज़रलैंड एवं स्कॉटलैंड की यात्रा कर के आये हैं। आप अभी फिर अमे-रिका जाने का विचार कर रहे हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

सावरा (आकोट) लालजी विट्ठोबा पाटील—कृषि एवं लेन-देन का काम होता है।

आकोट—फांसी जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी }
लालवानी प्रेसिंग फेक्टरी } इन नामों से कारखाने हैं।

अंजनगांव—लालजी पाटील जीनिंग फेक्टरी-जीन फेक्टरी है।

जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरीज़

दि आकोट कॉटन जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी लि०
सेठ अल्यारम अनंतराम जीनिंग फेक्टरी
काशीनाथ अप्पालालजी पाटील (लालवानी) प्रेसिंग फेक्टरी
गिरधारीलाल दामोदरदास जीनिंग फेक्टरी
न्यू बरार प्रेस कम्पनी लिमिटेड
न्यू आकोट जीनिंग प्रेसिंग कम्पनी लिमिटेड (फांसी जीन प्रेस)
मारुती नारायण जीनिंग फेक्टरी
रामदत्त किशनदयाल जीनिंग फेक्टरी
लादूराम बालकिशनदास जीनिंग फेक्टरी
सूरजमल श्रीराम जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी

मुर्तिजापुर

यह स्थान जी० आई० पी० की मेनलाइन पर बरार प्रांत के मध्य में अकोला के समीप बसा है। यहाँ से एलिचपुर एवं यवतमाल के लिये ब्रॉंच लाइन जाती है। यहाँ का रुई का व्यापार प्रधानतया भाटिया व्यपारियों के हाथ में है। मेसर्स मूलजी जेठा फर्म का परिचय हम जलगाँव में दे चुके हैं।

जीनिंग प्रेसिंग फेक्ट्रीज

गोकुल डोसा जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी
जमनादास नरसी जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी
मूलजी जेठा जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी
न्यू मुफस्सिल जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी

कपड़े के व्यापारी

गोवर्द्धनदास अमरचन्द
डायालाल हरजीवनदास
पुरुषोत्तमदास गोकुलदास
सुंदरजी लक्ष्मीचंद

गल्ला किराना

तनसुखराय वंशीधर
हाजी दाउद उसमान
शिवराम राधाकिशन
निर्भयराम बेचरभाई (किराना)

मलकापुर

यह स्थान जी. आई. पी. रेलवे की भुसावल नागपुर लाइन की मेनलाइन पर बरार प्रांत के बुलठाणा जिले में स्थित है। यहाँ करीब ९ कॉटनजीनिंग ४ प्रेसिंग फेक्टरी एवं ३ ऑइल मिल है। कपास की ३०।३५ हजार गाँठों का पाक प्रतिवर्ष यहाँ पकता है। करीब ४० हजार पल्ला (१२० सेर का पल्ला) मुंगफली की यहाँ प्रतिवर्ष आमद होती है। यहाँ का तेल कानपुर, मिर्जापुर, बम्बई आदि स्थानों में एवं खली विलायत और बम्बई जाती है।

यहाँ की प्रधान पैदावार मिरची की है। प्रति वर्ष लाखों बोरी मिर्ची की यहाँ से बाहर निकास होती है। यहाँ से मिर्ची का निकास बरार, अकोला, बम्बई एवं कलकत्ता आदि स्थानों के लिये होता है। यहाँ के व्यापारियो का परिचय इस प्रकार है।

राजा सेठ गोकुलदास जीवनदास

इस फर्म का हेड आफिस जबलपुर है। यह फर्म सी. पी. के व्यापारिक समाज में बहुत प्रतिष्ठित एवं पुरानी मानी जाती है। जबलपुर एवंम् सी. पी. के आप बहुत बड़े जमीदार एवं बैंकर हैं। यह कुटुम्ब राजा गोकुलदास के कुटुम्ब के नाम से विख्यात है। वर्त्तमान में यह कुटुम्ब २ भागों में विभक्त हो गया है। इन दोनों फर्मों का परिचय हमारे ग्रन्थ के प्रथम भाग में बम्बई विभाग में पृष्ठ १६१ और ४१ में दिया गया है। उपरोक्त फर्म के वर्तमान मालिक दीवान बहादुर सेठ जीवनदासजी एवं बाबू गोविंददासजी मालपाणी हैं। आप लोग भारत के शिक्षित समाज में बहुत सुपरिचित व्यक्ति हैं। आपकी फर्म जबलपुर, कलकत्ता, बम्बई, जयपुर, भोपाल, जेसलमेर, मलकापुर आदि स्थानों पर जमीदारी, बेंकिंग, काटन, प्रेस, तथा आढ़त का व्यापार करती है।

इस फर्म का स्थापन १९४६ में हुआ। यहाँ १९४८ में जीनिंग प्रेसिंग एवं १९७१ में ऑइल मिल खोला गया इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मलकापुर—राजा सेठ गोकुलदास जीवनदास—यहाँ आपकी कॉटन जीनिंग प्रेसिंग एवं ऑइल मिल है। तथा बैंकिग व्यापार होता है।

मेसर्स गंगाराम टेकचंद

इस फर्म के मालिक पोकरन (जोधपुर) निवासी माहेश्वरी समाज के चांडक सज्जन हैं। करीब ४० साल पहिले यहाँ सेठ गंगारामजी ने जीनिंग फेक्टरी चालू की थी। वर्तमान में इस दुकान के मालिक सेठ गंगारामजी के पुत्र टेकचंदजी हैं। आपके पुत्र लीलाधरजी एवं भोजराजजी व्यवसाय में भाग लेते हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मलकापुर—मेसर्स गंगाराम टेकचन्द—यहाँ जीनिंग फेक्टरी है। तथा कपास और लेन-देन का व्यापार होता है।

मेसर्स बीजराज मुरलीधर

इस फर्म के मालिक बोरावड़ (जोधपुर स्टेट) निवासी पारिख ब्राह्मण समाज के सज्जन हैं। यह दुकान ६०-७० साल पहिले खेड़ी पानेरी (मलकापुर) में सेठ सावंतरामजी के द्वारा स्थापित की गई थी। तथा आपने ही ४० साल पहिले मलकापुर में दुकान खोली। आप ४ साल पहिले स्वर्गवासी हुए।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ साँवतरामजी के पुत्र बींजराजजी एवं मुरलीधरजी हैं। सेठ बींजराजजी मलकापुर म्युनिसिपैलेटी के मेम्बर एवं कॉटन मार्केट के चेयरमेन हैं। खामगाँव हास्पीटल में आपने १५ हजार रुपये दिये हैं। आपके पुत्र जगन्नाथजी शिक्षित सज्जन हैं। इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मलकापुर—मेसर्स नरसिंह जगन्नाथ—इस नाम से जीनिंग प्रेसिङ्ग फेक्टरी है।

,, —बीजराज मुरलीधर—सराफी बैंङ्किंग तथा कृपी का काम होता है।

खेड़ी पानेरी—सावंतराम बींजराज—यहाँ कृपि का काम-काज तथा लेन-देन का काम होता है।

जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरीज़

गंगाराम टेकचंद चांडक जीनिंग फेक्टरी
गोविंदसाविष्णु सा जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी
राजा गोकुलदास जीवनदास जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी
नंदलाल अचलदास जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी
नरसिंह जगन्नाथ जीनिंग फेक्टरी
प्रिंस आफ वेल्स प्रेसिंग फेक्टरी
वद्रीनारायण रामनाथ जीनिंग फेक्टरी
मोतीलाल दामोदरदास जीनिंग फेक्टरी
मथुरादास पन्नालाल जीनिंग फेक्टरी
विसनचंद चम्पालाल जीनिंग फेक्टरी

ऑइल मिल्स

कन्हैयालाल मन्नालाल ऑइल मिल
राज गोकुलदास जीवनदास ऑइल मिल
मथुरादास मन्नालाल ऑइल मिल

कॉटन मरचेंट्स

मेसर्स बद्रीनारायण रामनाथ
,, बीजराज मुरलीधर
,, सूरजमल चुन्नीलाल
,, विसनचंद चम्पालाल

ग्रेन मर्चेंट एण्ड कमीशन एजंट

मेसर्स केशवलाल लालचंद
,, जयनारायण मालपाणी
,, नंदराम रामनाथ
,, लालजी मावसी
,, विसनचंद चम्पालाल
,, सुखलाल पूनमचंद

क्लाथ मरचेंट्स

गोविंद हरी
रखबसा चौरे आणि हरी पाटील
रामकृष्ण शंकर भोले
त्रिंबकसा बालकृष्णसा

किराना मर्चेण्ट्स

अहमद पीर महम्मद
महम्मद पीर महम्मद
बिसनचंद चम्पालाल
हाजी दाउद उसमान
हाजी गनी हाजी सुलेमान

जनरल मर्चेण्ट्स

शंकर हरी आणि कम्पनी (स्टेशनर)
हासम अली कमरुद्दीन
श्रीनिवास बाल किशनदास (ऑइल एजंट)

मिरची के व्यापारी

मेसर्स गंभीरचंद वल्लभदास
,, नंदराम रामनाथ
,, राधाकिशन शिवरतन
,, लालजी मावसी

खानदेश

जलगाँव

पूर्व खानदेश प्रांत का यह सबसे प्रधान नगर है। इस प्रांत के उत्तर मे होलकर राज्य दक्षिण में निजाम स्टेट, पूर्व में बरार तथा नेमाड़ और पश्चिम में पश्चिमी खानदेश का इलाका है। इस प्रांत में जलगाँव, अमलनेर, एरंडोल, चोपड़ा, यावल रावेर, भुसावल, जामनेर, पाचोरा, चालीस गाँव, पाटोला आदि प्रधान व्यापारिक स्थान है। सन् १९०६ के पूर्व, दोनों खानदेश की व्यवस्था शामिल थी। इस प्रांत के उत्तर में सतपूड़ा पहाड़ तथा दक्षिण में अजिंठा के डोंगर हैं। ताप्ती नदी जिले के बीचो बीच होकर बहती है।

पैदावार—कपास—इस जिले की प्रधान पैदावार कपास है। दोनों खानदेशों में मिलाकर लगभग १३ लाख एकड़ भूमि में कपास की खेती होती है। जिनकी पैदावार ३ लाख गाँठ के करीब आंकी जाती है। रुई का तौल ३९२ रतल की गाँठ पर तथा बिनोले का तौल २० मन की खंडी के भाव से होता है।

गल्ला—जवारी, बाजरी, चना, गेहूँ, तूवर, उड़द आदि हैं। गल्ले का तौल माप से होता है। ९६ अद्धी का १ माप माना जाता है। साधारणतया १ माप में जवारी ८॥ मन बंगाली, बाजरा चना गेहूँ ९ मन, उड़द ९॥ मन और धनिया ४ मन आता है। घी की आमदनी भी यहाँ अच्छी होती है।

मुंगफली (सेंगफली)—मुंगफली की पैदावार इधर कुछ सालों से विशेष घट रही है। इस समय करीब ५ ऑइल मिलों ने अधिक तरक्की की है। मुंगफली का पल्ला बंगाली ३ मन का माना जाता है।

जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरीज़—पूर्व खान देश में सब स्थानों पर जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरियों की बाहुल्यता है। इस प्रांत में करीब १२५ से अधिक जीनिंग और प्रेसिंग फेक्टरियाँ हैं। जलगाँव में भी ७ जीनिंग और ६ प्रेसिंग फेक्टरियाँ काम करती हैं।

कॉटन मिल—खान देश प्रांत में जलगाँव, चालीसगाँव, अमलनेर और धूलिये मे मिलाकर ५ कॉटन मिलें हैं। सबसे प्रथम सेठ मूलजी जेठाभाई ने सन् १८७३ में पूर्व खानदेश स्पीनिंग एण्ड वीविंग मिल्स की स्थापना की। उसके पश्चात् १९०६ मे अमलनेर मे, उसके पश्चात् चालीसगाँव में, सन् १९२१ मे जलगाँव में तथा १९२६ मे धूलिये में मिलो का उद्‌घाटन किया गया।

व्यापारिक बस्ती—इस शहर की जन संख्या लगभग ३० हजार है। व्यवसायिक दृष्टि से मारवाड़ी, गुजराती और कच्छी प्रधान हैं। इनमें भी व्यवसाय में सबसे अधिक व बड़ा भाग मारवाड़ी व्यापारियों का है।

बैंक—जलगाँव शहर में २ बैंके हैं।

(१) इम्पीरियल बैंक ऑफ इण्डिया लिमिटेड—इस प्रसिद्ध बैंक की शाखा जलगाँव में है।

(२) पूर्व खानदेश सैंट्रल कोआपरेटिव्ह बैंक—इस बैंक की स्थापना सन् १९१६ में हुई। खानदेश में इस बैंक की कई सौ शाखाएं हैं। जो कृषिकारों को एवं अन्य रोजगारियो को बहुत स्वल्प व्याज पर रुपया उधार देती है। इस बैंक ने अपने जीवन काल में आशातीत उन्नति कर दिखाई है। बैंक का हेडऑफिस जलगाँव में है।

व्यवसायिक एसोसिएशन—

दि जलगांव क्लाथमर्चेंट एसोसिएशन—इस सभा का उद्देश खानदेश जिले में होने वाले कपड़े के व्यवसाय की उन्नति करना, तथा कपड़े के व्यापार में पैदा होने वाले झगड़े निपटा कर सहूलियत पैदा करना है। इस एसोसिएशन ने कपड़े की बिक्री पर अपना टैक्स लगा रक्खा है और मेम्बरों की फीस अलग लगाई है। इसकी मैनेजिंग कमेटी के चेयरमैन सेठ सागरमल सुगालचंद हैं। एसोसिएशन के अध्यक्ष सेठ जयकिशन रामविलास, उपाध्यक्ष सेठ जगन्नाथ गनेशराम तथा मंत्री राव साहब रूपचंद मोतीराम और शंकरलाल गुलाबचन्द हैं।

कॉटन मिल्स—

दि खानदेश स्पीनिंग एण्ड वीविंग मिल्स कम्पनी लिमिटेड—इस कम्पनी की स्थापना सन् १८८३ में हुई। यह मिल भारत की बहुत पुरानी मिलो में से है। आरम्भ में इसकी स्थापना ७ लाख ५० हजार की पूंजी से की गई। पर इस मिल की आर्थिक परिस्थिति बहुत उत्तम है। इसकी मेनेजिंग एजंट मेसर्स मूलजी जेठा कम्पनी है। और आजिम ईवर्ट हातम,

सेठ पुरुषोत्तम जेठाभाई अंजारिया जलगाँव

सेठ भागीरथ रामचन्द्र जलगाँव (खानदेश)

सेठ जयकिशनजी (जयकिशन रामविलास) जलगाँव
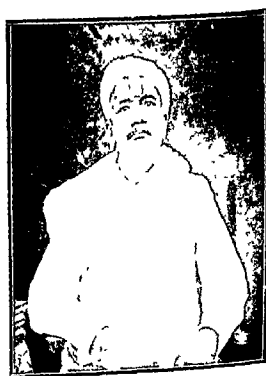
सेठ रामविलासजी (जयकिशन रामविलास) जलगाँव

रेमिरण्ड लेन फोर्टमें है। इस समय इस मिल में २२६६४ स्पेंडिल्स और ४५९ लूम्स हैं। ३४९ लूम मोटा सूत तयार करने के हैं। इसके अलावा ब्लेकेंट के २८८ स्पेंडिल्स और १६ लूम हैं। मिल में प्रति वर्ष करीब २० लाख पौंड कपड़ा, २७ लाख पौंड सूत और २ लाख ३५ हजार पौंड ब्लेंकेट तयार होता है। इसमें १५३९ आदमी काम करते हैं। मिलने अन्तिम डिविडेंट १२५ और ७५।) बाँटा है। मिल की ओर से जलगाँव, नांदेड़, परभनी तथा पूर्णा (नांदेड़) मे रूई की खरीदी होती है। तथा फरजापुर (निजाम) जलगाँव, वेल्डुंगर, कागवड़, कसंडवड (सदर्न मराठा कंट्री) और चांदा में ५ जीनिंग एवं ४ प्रेसिंग फेक्टरियाँ हैं। इस मिल ने अपने ५० वें वर्ष की गोल्डन ज्युबिली के उपलक्ष में ४ मेटरनिटी वेड रक्खे हैं। मिल में धुलाई व रंगाई के अलग अलग कारखाने हैं। मिल का कपड़ा बेचने की नीचे लिखी जगहों पर शाखाएँ हैं।

१ सागर—एजण्ट डालचन्द धरमचन्द
२ आगरा—एजण्ट राय बहादुर सूरजभान सेठ
३ दिल्ली—सेठ चतुर्भुज गोवर्द्धन दास लक्ष्मी क्लाथ मारकीट
४ कानपुर—सेठ चतुर्भुज गोवर्द्धनदास काहू कोठी
५ अमृतसर—लाला लक्ष्मी साही
६ अंदोणी (मद्रास)—मूलजी जेठा कम्पनी
७ अमरावती—एजंट रतनचन्द छगनलाल
८ कलकत्ता—मूलजी जेठा एण्ड कम्पनी २३ पोलक स्ट्रीट

इस मिल के लोकल एजंट मि० पुरुषोत्तम जेठाभाई अंजारिया हैं। आपका जन्म १८७६ में अंजार में हुआ। आरम्भिक शिक्षा विंगोरला में प्राप्त करने के बाद १८९४ में आपने बंबई मे मेट्रिक पास की। तथा १८९५ से आपका सेठ मूलजी जेठा फर्म के साथ सम्बन्ध हुआ। आप भाटिया मित्र मण्डल के प्रधान मेम्बर थे। आप जलगाँव मिल के असिस्टंट एजंट पद पर भेजे गए। १८९८ से १९०४ तक आप मद्रास मिल के असिस्टंट एजंट पद पर काम करते रहे। वहाँ से १९०८ तक आप करांची सिन्ध पञ्जाब कॉटन प्रेस में काम करते रहे। एवं तत्पश्चात् जलगाँव में मिल एजंट पद पर कार्य्य करने लगे। इस बीच सन् १३ से १६ तक आपने कच्छमांडवी में निवास किया। आपने जलगाँव म्युनिसिपैलेटी में १९१७ से २५ तक मेम्बर पद पर और तब से आज तक प्रेसिडेण्ट पद पर काम किया। इसी प्रकार आप तालुकालोकल बोर्ड के वाइस प्रेसिडेंट, डिस्ट्रिक्टबोर्ड के वाइसप्रेसिडेंट, सेंट्रल कोआपरेटिव्ह बैंक के डायरेक्टर का पद सुशोभित करते रहे। वर्तमान में आप सरकार की ओर से बैंक के डायरेक्टर, ईस्ट खानदेश नरसिंह एसोसिएशन तथा लेडी विलसन मेटरनिटी एसोसिएशन की बोर्ड के मेम्बर और वल्लभदास वालजी वाचनालय और गुजरात बन्धु समाज के प्रेसिडेंट रहे।

जलगाँव के आप अच्छे प्रतिष्ठित सज्जन हैं। आपको १९१२ में सितम्बर कोरोनेशन दरबार मेडल मिला। आप यहाँ के सेकण्ड क्लास आनरेरी मजिस्ट्रेट बेंच के चेयरमैन हैं। आप १९०४ से फ्री मेनशन हैं। और लॉज के पास्ट मास्टर और चेपटर के पास्ट प्रिंसिपल जेड (Z) हैं। आपके ५ पुत्र हैं जिनमें बड़े श्री उदयसिंह पढ़ते हैं।

दि भागीरथ स्पीनिंग एण्ड वीविंग मिल्स कम्पनी लिमिटेड

इस मिल की स्थापना ३० लाख की पूंजी से सन् १९२१ में हुई। इसकी मेनेजिंग एजंट मेसर्स भागीरथ रामचन्द्र एण्ड कम्पनी है। इस समय मिल में ७२०० स्पेंडिल्स और १११ लूम हैं। शीघ्र ही ३८०० स्पेंडिल्स और डाले जा रहे हैं। तथा लूम संख्या भी ३०० की जा रही है। १९२३।२४ में यह मिल चालू हुई। इस समय मिल मे ५५० आदमी काम करते हैं। मिल की अपनी एक जीनिंग फेक्टरी भी है।

मिल ऑनर्स

मेसर्स मूलजी जेठा एण्ड कम्पनी

इस फर्म का विस्तृत व्यापारिक परिचय इसके संस्थापक श्रीमान् स्वर्गीय सेठ मूलजी भाई के चित्र सहित हमारे ग्रन्थ के प्रथम भाग के बम्बई विभाग में दिया गया है। इस फर्म ने १८७३ में जलगाँव में एक मिल की स्थापना की। खानदेश मे यह सब से पहिली मिल थी। बम्बई के व्यापारिक क्षेत्र में इस फर्म की गणना ख्याति प्राप्त व्यवसायियो में मानी जाती है। बम्बई के प्रसिद्ध मूलजी जेठा मार्केट (न्यू पीस गुड्स बाजार कं० लिमिटेड) की मैनेजिंग एजट भी यही फर्म है।

इसके अलावा खानदेश और बरार में इस फर्म के जलगांव, कारंजा, मुर्तिजापुर, अकोला, वाशिम आदि स्थानों में जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरियाँ हैं। तथा कॉटन का व्यापार होता है।

मेसर्स रामचन्द्र हुकमीचंद

इस फर्म के वर्तमान मालिक श्री सेठ भागीरथजी माहेश्वरी समाज के मंडोरा सज्जन हैं। आपका मूल-निवास मांडल (उदयपुर स्टेट) में है। मांडल से करीब १२५।१५० वर्ष पूर्व सेठ डोंगाजी धामनगाँव (जलगाँव) आये थे। सेठ हुक्मीचंदजी के हाथों से इस फर्म के व्यापार को विशेष उन्नति मिली। सेठ हुक्मीचंदजी के पश्चात् उनके पुत्र सेठ रामचन्द्रजी ने इस फर्म के

व्यापार का संचालन किया। आपने धामनगाँव में एक जीनिंग फेक्टरी खोली। संवत् १९६२ में आप स्वर्गवासी हुए।

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ रामचन्द्रजी के पुत्र सेठ भागीरथजी हैं। आपने सन् १९१७ में दि भागीरथ स्पीनिंग एण्ड वीविंग-मिल्स कम्पनी लिमिटेड का स्थापन किया। आपकी ओर से जलगाँव में "भागीरथ स्कूल" नामक एक अंग्रेजी स्कूल चल रहा है। यहाँ के टाउनहाल में आपकी माताजी के नाम से एक जीमखाना सन् १९२५ में बँधवाया गया है। स्थानीय अस्पताल में भी आपकी ओर से ५ हजार रुपये दिये गये हैं। आपके शिवनारायणजी, रामनारायणजी एवं लक्ष्मीनारायणजी नामक ३ पुत्र हैं, जिनमें शिवनारायणजी कारबार में भाग लेते हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

धामनगाँव (जलगाँव)-मेसर्स रामचन्द्र हुक्मीचंद—हेड ऑफिस है। यहाँ आपकी जीनिंग फेक्टरी है तथा साहुकारी लेनदेन और खेती का काम होता है।

जलगाँव-मेसर्स भागीरथ रामचन्द्र—इस नाम से आपकी फर्म भागीरथ मिल की मेनेजिङ्ग एजंट है। इसके अतिरिक्त गल्ले का व्यापार और लक्ष्मी-ऑइल मिल के कंट्राक्टिंग का संचालन होता है। यहाँ से धामनगाँव और किनगाँव तक आपकी प्राइवेट टेलीफोन सर्विस है।

किनगाँव (पूर्व खानदेश)-मेसर्स शिवनारायण भागीरथ—इस नाम से जीनिग फेक्टरी है और कपास का व्यापार होता है।

गोल्ड सिल्वर मरचेंट्स

मेसर्स राजमल लखीचंद

इस फर्म का हेड ऑफिस जामनेर (पूर्व खानदेश) में है। आप ओसवाल स्थानकवासी जैन समाज के सज्जन हैं। इस फर्म की जलगाँव तथा खानदेश के व्यापारिक समाज में अच्छी प्रतिष्ठा है। इसके मालिक बाबू राजमलजी ललवानी हैं। आपका विस्तृत परिचय चित्र सहित जामनेर में दिया गया है। जलगाँव में आपकी फर्म पर प्रधानतया चाँदी-सोना तथा बैङ्किग व्यापार होता है। सेठ राजमलजी ललवानी जलगाँव के सार्वजनिक कामों में भाग लेते रहते हैं। आप भागीरथ मिल के डायरेक्टर हैं।

कॉटन मरचेंट्स

मेसर्स कानजी शिवजी

इस फर्म के मालिक कच्छ बारोई (मूँदरा) के निवासी हैं। आप वीसा ओसवाल स्थानक-वासी जैन समाज के सज्जन हैं। संवत् १९४३ में लालजी सेठ ने देश से आकर मसावद (जलगाँव) में दुकान की। शिवजी सेठ के ४ पुत्र हुए। लालजी सेठ, कुँवरजी सेठ, कानजी सेठ और शिवजी सेठ। इस समय इन सब भाइयों का कार बार अलग २ होता है। लालजी सेठ एवं कानजी सेठ का व्यापार संवत १९६४ में अलग २ हुआ। कानजी सेठ ने कपास गल्ले के व्यापार में अच्छी उन्नति की है। आपने सेंदुरनी में १९७५ में जीनिंग और प्रेसिंग १९७९ में जलगाँव मे जीनिंग प्रेसिंग, १९८३ में नीम्बोरा मे प्रेसिंग एवं १९८५ में मसावद में जीनिंग फेक्टरी खोली। ये सब कारखाने आपके घरू हैं। आपके २ पुत्र हैं जिनके नाम राघवजी कानजी एवं जादवजी मानजी हैं। ये दोनों व्यापार मे भाग लेते हैं। आपका तार का पता Sunoom आपका हेड आफिस जलगाँव में है। जलगाँव के कपास के व्यापारियों में आपकी फर्म अच्छी प्रतिष्ठित मानी जाती है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

जलगाँव—मेसर्स कानजी शिवाजी—जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी तथा कॉटन का व्यापार होता है।
शेंदुरणी— ,, ,, ,, ,, ,,
निम्बोरा—कानजी शिवजी—कॉटन प्रेसिंग फेक्टरी है।
मसावद— ,, —कॉटनजीनिंग फेक्टरी है।

मेसर्स जयकिशन रामविलास

इस फर्म के मालिक कुचेरा (जोधपुर स्टेट) के निवासी हैं। आप साकद्वी (ब्राह्मण) समाज के सज्जन हैं। इस फर्म का स्थापन ६०।७० वर्ष पूर्व सेठ रामविलासजी ने किया था। आप यहां हुंडी और सट्टे की दलाली का काम करते थे। संवत् १९५९ में सेठ जयकिशन जी ने उपरोक्त नामसे दुकानका स्थापन किया।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ जयकिशनजी एवं सेठ दुलीचंदजी दोनों भ्राता हैं। आपके २ छोटे भ्राता राधाकिशनजी एवं लक्ष्मी नारायणजी संवत् १९७६।७७ में स्वर्गवासी हो गये हैं। इस समय आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

सेठ कानजी शिवजी (कानजी शिवजी) जलगाँव

सेठ जादवजी कानजी

सेठ राघवजी कानजी (कानजी शिवजी) जलगाँव

जलगांव—मेसर्स जयकिशन रामविलास—गल्ला और आढ़त का काम होता है।
जलगांव— „ „ —कपड़े का थोक व्यापार होता है।
जलगांव— „ „ —जीनिंग एवं प्रेसिंग फेक्टरी है।
धूलिया—जयकिशन रामविलास—गल्ला एवं आढ़त का व्यापार होता है।
पलास खेड़ा—(मुगलाई) „ —साहुकारी लेनदेन का काम काज होता है।

इसके अलावा बोदड़प्रेस, श्रीकृष्ण जीनिंग फेक्टरी और ऑईल मिल में भी आपके भाग हैं।

मेसर्स लालजी केशवजी

इस फर्म के मालिकों का मूल निवास-स्थान कच्छ (शतुरी) में है। लालजी सेठ देश से करीब ३० वर्ष पूर्व जलगॉव आये थे। आरंभ से ही आपके यहां कमीशन का काम होता आ रहा है। लालजी सेठ जलगांव पांजरा पोल के प्रेसिडेंट हैं। आप ओसवाल श्वेताम्बर जैन समाज के मंदिर मार्गीय सज्जन हैं। लालजी सेठ के पुत्र श्री हीरजी, शामजी एवं भँवरजी हैं। आपकी फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

जलगांव—मेसर्स लालजी केशवजी—यहां पंजाब, मालवा, सी० पी०, बरार, मद्रास, गुजरात, गवालियर आदि भारत के सभी प्रांतों से कमीशन का व्यवसाय होता है।

क्लॉथ मरचेंटस

मेसर्स गिरधारीलाल गनेशराम

इस फर्म के मालिक डीडवाना (जोधपुर स्टेट) निवासी अग्रवाल वैश्य समाज के गर्ग गोत्रीय सज्जन हैं। इसकी स्थापना करीब ७५ वर्ष पूर्व सेठ गिरधारीलालजी के हाथों से हुई। आरंभ से ही इस फर्म पर कपड़े का व्यापार होता चला आ रहा है। सेठ गिरधारीलालजी के पुत्र जयनारायणजी एवं गनेशरामजी के हाथों से इस फर्म के कारबार को तरक्की मिली। संवत् १९६१ मे आप दोनों भाइयों का कारबार अलग २ हो गया। तब से सेठ गनेशरामजी का कुटुम्ब इस फर्म का मालिक है। सेठ जयनारायणजी के पौत्र जयनारायण गोवर्द्धन के नाम से अपना अलग व्यापार करते हैं।

सेठ गनेशरामजी ने जलगांव में कई धार्मिक कामो में भाग लिया, आपने पुष्कर के श्रीरघु-

नाथ मन्दिर का पुनरुद्धार करवाया। आपके यहाँ बाबू जगन्नाथजी नीमोद (डीडवाना) से संवत् १९५७ में दत्तक लाये गये। इस समय बाबू जगन्नाथजी ही इस फर्म के मालिक हैं। आप भागीरथ मिल जलगाँव, एवं न्यू प्रताप मिल धूलिया के डायरेक्टर हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

जलगांव—मेसर्स गिरधारीलाल गनेशराम—यहाँ कपड़े का थोक व्यापार होता है।

मेसर्स जीतमल तिलोकचंद

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ किशनचन्दजी हैं। आप तींवरी (जोधपुर) के निवासी औसवाल स्थानकवासी जैन समाज के श्री श्रीमाल सज्जन हैं। आपके पूर्वज सेठ पृथ्वीराजजी, मुलतानमलजी एवं जीतमलजी संवत् १९११ में देश से आये, एवं ९ वर्ष तक मालेगांव में सर्विस करते रहे। पश्चात १९२० में आप लोगों ने जलगाँव में कपड़े की दूकान स्थापित की। संवत् १९७० में इस कुटुम्ब का व्यवसाय अलग २ हो गया, तब से बाबू जीतमलजी के पुत्र बाबू किशनचन्द जी उपरोक्त नाम से अपना अलग व्यापार करते हैं। बाबू किशनचन्दजी भागीरथ मिल गाँव के डायरेक्टर हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

जलगाँव—मेसर्स जीतमल तिलोकचन्द—कपड़े का थोक व्यापार होता है।

बम्बई—मेसर्स जीतमल तिलोकचन्द बम्बादेवी } आढ़त एवं रुई का व्यापार होता है।

मेसर्स प्रतापमल बुधमल

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ शिवराजजी एवं सेठ जुगराजजी हैं। आप पीपाड़ (जोधपुर स्टेट) निवासी ओसवाल वैश्य-समाज के स्थानकवासी जैन लुंकड़ सज्जन हैं। इस फर्म का स्थापन सेठ प्रतापमलजी एवं सेठ बुधमलजी के हाथों से संवत १९४० में हुआ। सेठ बुधमलजी के पिता सरदारमलजी संवत् १८६९ में बाकोड़ी (अहमदनगर) आये थे। बुधमलजी के ४ पुत्र हुए। फौजमलजी, बहादुरमलजी, संतोखचंदजी एवं प्रतापमलजी। इनमें से बहादुरमलजी के जुगराजजी एवं शिवराजजी हैं। सेठ जुगराजजी प्रतापमलजी के यहाँ दत्तक आये हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

जलगाँव—मेसर्स प्रतापमल बुधमल—यहाँ कपड़े का व्यापार होता है।

सेठ लालजी केशवजी जलगाँव

सेठ किशनचंदजी श्री श्रीमाल (जीतमल किशनचंद) जलगाँव

सेठ जुगराजजी (प्रतापमल बुधमल) जलगाँव

सेठ शंकरलालजी (शंकरलाल गुलाबचंद) जलगाँव

मेसर्स मोतीराम लखमीचंद

इस फर्म के मालिक राजाजी काकरेड़ा (उदयपुर स्टेट) के निवासी माहेश्वरी समाज के लाठी सज्जन हैं। सेठ लखमीचंदजी के दादा नांदरा (जलगाँव) में आये थे। इनके बाद क्रमशः धनराजजी, लखमीचंदजी एवं मोतीरामजी हुए। इस फर्म का स्थापन सेठ लखमीचंदजी ने १०० वर्ष पूर्व किया। इस फर्म के व्यापार को सेठ मोतीलालजी एवं आपके पुत्र मानकचन्दजी के हाथों से विशेष तरक्की मिली। करीब ७८ वर्ष पूर्व सेठ माणकचन्दजी एवं रावसाहब रूपचन्द-जी दोनों भाइयों का कारबार अलग २ हो गया।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक रावसाहब रूपचन्दजी लाठी हैं। आप १९१० में गवर्नमेंट द्वारा रावसाहब की पदवी से सम्मानित किये गये। प्रताप मिल अमलनेर के प्रथम डायरेक्टर आप ही थे। इसके अलावा आप स्थानीय म्युनिसिपेलेटी के प्रेसिडेंट, कोआपरेटिव्ह बैंक के डायरेक्टर, एवं बम्बई लेजिस्लेटिव्ह कौंसिल के मेम्बर निर्वाचित हो चुके हैं। सन् १९१६ में आपने न्यू इंग्लिश हाई स्कूल की स्थापना की, आरंभ से ही इसके सभापति आप ही हैं। आपका बहुत लम्बा सार्वजनिक जीवन है। अभी २ अ. भा. माहेश्वरी महासभा के धामनगाँव अधिवेशन में सभापति का आसन आप ही ने सुशोभित किया था। इधर दो वर्षों से आप सार्वजनिक कामों में विशेष भाग न लेते-हुए शांतिलाभ करते हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

जलगाँव—मेसर्स मोतीराम लखमीचन्द—कपड़ा गल्ला आढ़त का व्यापार एवं व्याज और किराये का काम होता है।

मेसर्स लछमणदास मुलतानमल

इस फर्म के वर्तमान मालिक रावसाहब लछमणदास मुलतानमल है। आप स्थानकवासी ओसवाल जैन समाज के श्री श्रीमाल सज्जन हैं। इस फर्म के स्थापक बाबू पृथ्वीराजजी, जीतमलजी एवं मुलतानमलजी थे। सेठ जीतमलजी और पृथ्वीराजजी ९ साल तक मालेगाँव में सर्विस करते रहे। पश्चात् आपने १९२० मे जलगाँव में दुकान की। आप लोग क्रमशः १९३५, १९४० और १९५० में स्वर्गवासी हुए।

तीनों भाइयों के स्वर्गवासी होने के पश्चात् सेठ लछमणदासजी इस फर्म के व्यापार को संभालते रहे। संवत् १९६८ में सेठ जीतमलजी के पुत्र किशनचंदजी इस फर्म से अलग हुए।

सेठ लछमणदासजी जलगाँव के अच्छे प्रतिष्ठित सज्जन हैं। आपको १० वर्ष पहिले

गवर्नमेंट ने रावसाहब की पदवी से सम्मानित किया है *। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

जलगाँव—रावसाहब लछमणदास मुलतानमल—खेती, तथा बैङ्किग-व्यापार होता है।

जलगाँव—गंभीरमल लछमणदास—इस नाम से भागीरथ मिल की कपड़े की एजंसी है।

मेसर्स माणकचंद मोतीराम

इस फर्म का विस्तृत कौटुम्बिक परिचय मोतीराम लखमीचन्द फर्म के साथ दिया जा चुका है। वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ माणकचन्दजी लाठी हैं। आपके हाथों से मोतीराम लखमीचन्द फर्म के व्यापार को विशेष उन्नति प्राप्त हुई है। इस समय सेठ माणकचन्दजी फर्म का व्यापार अपने पुत्र श्री रामनारायणजी लाठी पर छोड़ कर शांति लाभ करते हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

जलगाँव—मेसर्स माणकचन्द मोतीराम—कपड़े का व्यापार होता है।

जलगाँव—मेसर्स मोतीराम माणकचन्द—गल्ला और आढ़त का कारबार होता है।

जलगाँव—मोतीराम माणकचन्द ऑइल मिल—ऑइल मिल है।

मेसर्स सागरमल नथमल

इस फर्म के वर्तमान मालिक बाबू सागरमलजी ओसवाल जैन स्थानकवासी समाज के सज्जन हैं। आप ३० वर्ष पूर्व खेजड़ली (मारवाड़) से जलगाँव आये। आरंभ से ही आप कपड़े का व्यापार करते हैं तथा व्यवसाय को तरक्की आपके हाथों से ही मिली है। पहिले आप मेसर्स जीतमल तिलोकचंद के साथ में व्यवसाय करते थे। इधर कुछ समय से आप उपरोक्त नाम से अपना अलग व्यवसाय करते हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

जलगाँव—मेसर्स सागरमल नथमल—कपड़ा गल्ला एवं आढ़त का व्यापार होता है!

खंडवा—मेसर्स सागरमल सुगालचन्द—सावी मिल की एजंसी है और कपड़े का व्यापार होता है।

इन्दौर—मेसर्स सागरमल नथमल तुकोजीराव क्लाथ मार्केट } कपड़ा और सूत का व्यापार होता है।

बुरहानपुर—जीतमल किशनचन्द—कपड़े का व्यापार होता है। इसमें आपका भाग है।

* आप सिकन्दराबाद स्थानकवासी जैन अधिवेशन के सभापति थे। जलगाँव हास्पीटल को आपने १० हजार दिये हैं। इसके अतिरिक्त अपनी ५ हजार की जीवन की पॉलिसी आपने घाटकोपर संस्था बम्बई को दी है।

मेसर्स शंकरलाल गुलाबचन्द

इस फर्म के मालिक मेड़ता (जोधपुर) के निवासी शाकद्वीप ब्राह्मण समाज के सज्जन हैं। प्रथम संवत् १९०२ में नारायणदासजी वाम्बोरी (अहमदनगर) आये। वहाँ से इनके पुत्र गुलाबचन्दजी ने १९४२ में जलगाँव में आकर गुलाबचन्द नारायणदास के नाम से काम काज शुरू किया। पीछे से १९७३ में कपड़े की दुकान और १९८२ में सराफी दुकान खोली गई।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ गुलाबचन्दजी एवं उनके पुत्र शंकरलालजी, मोहनलालजी एवं भतीजे मदनलालजी हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

जलगाँव—मेसर्स गुलाबचन्द नारायणदास—आढ़त तथा दलाली का काम होता है।
जलगाँव—शंकरलाल गुलाबचन्द—कपड़े का व्यापार होता है।
जलगाँव—केशरीमल शंकरलाल—चांदी सोने का व्यापार होता है। इस फर्म में आपका भाग है।

जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरीज़

कानजी शिवजी जीनिंग प्रेसिग फेक्टरी
जयकिशन रामविलास जीनिग फेक्टरी
नान्हूराम वेनीराम जीनिंग फेक्टरी
मूलजी जेठा जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी
भागीरथ मिल जीनिग फेक्टरी
लखमीदास भगवानजी जीनिंग फेक्टरी

कॉटन मिल्स

पूर्व खानदेश स्पीनिंग वीविंग मिल्स लिमिटेड
भागीरथ कॉटन स्पीनिग एण्ड वीविंग मिल्स लिमिटेड

ऑइल मिल्स

महम्मद हुसैन ऑइल मिल
मोतीराम भाणकचंद ऑइल मिल
लक्ष्मी ऑइल मिल
वारडोली ऑइल मिल
श्रीकृष्ण ऑइल मिल

बैंकर्स

इम्पीरियल बैंक आफ इण्डिया लिमिटेड
पूर्व खानदेश सेंट्रल कोआपरेटिव्ह बैंक लि०
जयकिशन रामविलास
मोतीलाल लखमीचंद
राजमल लक्खीचंद
रामचन्द्र हुकुमीचंद
रावसाहब लछमनदास मुलतानमल
लालजी केशवजी

रुई कपास के व्यापारी

कानजी शिवजी
जयकिशन रामविलास
मूलजी जेठा कम्पनी
रत्तीलाल भाईदास
लखमीदास भगवानजी

विदेशी एजेंसियाँ

गोसो कानूशी केशा
जापान कॉटन ट्रेडिंग कम्पनी
टोयोमेनका केशा
रायली ब्रदर्स
वालकट ब्रदर्स

ग्रेन मर्चेण्ट एण्ड कमीशन एजंट

गंगाराम चुन्नीलाल
जयकिशन रामविलास
धोंडूराम सीताराम (राइस मरचेण्ट)
बिहारीलाल लक्ष्मीनारायण
भागीरथ रामचन्द्र
रामजी जीवराज
रामकिशन नंदराम
लालजी केशवजी

गोल्ड एण्ड सिल्व्हर मरचेंट्स

गोकुलचंद खेमराज
बहादुरमल मगनमल
राजमल लक्खीचन्द
शंकरलाल केशरीमल
शंकर तात्या

कपड़े के व्यापारी

अहमदाबाद जीनिंग मिल क्लाथ शाप
ओंकारदास मंसाराम
काल्लूराम गजानंद
गिरधारीलाल गनेशराम
गंभीरमल लछमणदास
चुन्नीलाल हस्तीमल
चौथमल गजानंद
जयकिशन रामविलास
जीतमल तिलोकचंद
प्रतापमल बुधमल
मोतीराम लखमीचंद
माणकचन्द मोतीराम
प्रताप मिल अमलनेर क्लाथ शाप
महारानी मिल उलन क्लाथ शाप
शंकरलाल गुलाबचन्द
सागरमल नथमल

किराने के व्यापारी

जेठमल गंगाविशन
नानूराम बख्तावरमल
महम्मद हुसेन कच्छी
रामसुख गुलाबचन्द
सवाईराम रामप्रताप
संकरलाल रामप्रताप
हाजी दाउद उसमान

जनरल मर्चेण्ट्स

फजल हुसैन महम्मद अली
राधाकृष्ण स्टोर्स
सीताराम पांडुरंग
सेनफूड पांडुरंग
बाम्बे केपडेपो
त्रिभुवनदास पुरुषोत्तमदास

केमिस्ट एण्ड ड्रगिस्ट

डाक्टर नूलकर
सीताराम पांडुरंग (कत्था उदबत्ती फेक्टरी)

धूलिया

बम्बई आगरा रोड के किनारे पर बसा हुआ यह शहर पश्चिम खानदेश का प्रधान व्यापारिक स्थान है। यहाँ पर १ कॉटन मिल तथा करीब ४० कॉटन जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरियाँ हैं। कपास के व्यापार में यह स्थान बहुत बड़ी व्यापारिक मंडी मानी जाती है। करीब २ सभी बड़ी २ विदेशी कम्पनियों की खरीदी इस स्थान पर रहा करती है।

दूसरा महत्व का व्यापार इस स्थान पर सींगदाणा का है। सन् १९१२ में जब यहाँ सबसे प्रथम मेसर्स विजयराम देवराज की ऑइल मिल खुली, तब उनको अपनी मिल के लिये सोलापुर से सींगदाणा मँगाना पड़ता था। धीरे २ मुंगफली की पैदावार में यह प्रांत इतना आगे बढ़ा कि करीब २ लाख पल्ला सेंगदाणा (१२० सेर बंगाली का एक पल्ला) इस शहर मे आता है। इस समय करीब ९ आइल मिल यहाँ काम करती है। यहाँ से तेल की निकासी सी० पी०, बरार, यू० पी० आदि प्रांतो में एवं खली की निकासी बम्बई एवं विलायत के लिये होती हैं करीब पौन लाख से १ लाख गाँठें रुई की प्रति वर्ष यहाँ बंधती है।

जिले का प्रधान स्थान होने की वजह से बड़ी २ कोर्टें, हाई स्कूल, कॉलेज आदि यहाँ हैं। व्यवसाय की विशेष चहल पहल होने से लोगों की आमदरफ्त विशेष रहा करती है। यहाँ की जेल में दरियाँ तथा खद्दर बहुत मजबूत एवं सुंदर बनता है। इस प्रांत का विस्तार ६४०१ वर्गमील एवं मनुष्य संख्या ६४८००० है। इस प्रांत में गर्मी सख्त पड़ती है। करीब ९०।१०० वर्ष पूर्व जूना धूलिया में प्रधान बस्ती थी। पश्चात् त्रिकूस पैठ के नाम से नवीन बस्ती बम्बई आगरा रोड के दोनों ओर बसाई गई। यहाँ के व्यापारियो का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है।

कॉटन मिल्स

दि न्यू प्रताप मिल्स लिमिटेड

यह कम्पनी जून सन् १९२३ में स्थापित हुई तथा कम्पनी ने दिसम्बर १९२६ में मिल चालू की। इस मिल की पूंजी ३० लाख रुपयो की है। इस समय मिल में २९ हजार स्पेंडिल तथा ४६० लूमस काम करते हैं। मिल के काम करने वाले मजदूरो की ओसत १४०० प्रति

दिन है। इस मिल में देशी रंगीन खानदेशी साड़ी, फेंसी सादा धोती जोड़ा, ब्लीट, लांगक्लाथ, शर्टिंग, चादर, बंगाल बार्डर धोती, कानपुर फेशन धोती आदि माल तयार होता है। मिल का माल बरार, नागपुर, नाशिक, नगर, कानपुर, कलकत्ता, देहली आदि स्थानों में जाता है। इस मिल के लोकल एजण्ट मि० एम० सी० केलकर रिटायर्ड डिपुटी कलक्टर खानदेश हैं तथा मैनेजिंग एजंट मेसर्स मोतीलाल माणकचंद एण्ड संस हैं। मिलकी ब्रांचेज:—

बम्बई—न्यू प्रताप मिल क्लाथशाप, मूलजी जेठा मारकीट (गोविंदगली)
तथा न्यू प्रताप मिल क्लाथशाप नगर और जलगाँव (पूर्व खानदेश)

मिल एजंट्स

मेसर्स मोतीलाल माणकचंद एण्ड संस

इस फर्म का विस्तृत व्यापरिक परिचय अमलनेर (पूर्व खानदेश) मे मालिको के चित्रों सहित दिया गया है। इसके मालिक खानदेश के प्रतापी पुरुष श्री मोतीलालजी उर्फ प्रताप शेठ हैं। आपने अमलनेर मिल की तरक्की के पश्चात् धूलिये में भी एक मिल स्थापित की। उपरोक्त फर्म धूलिया बीडसी न्यू प्रताप मिल की मैनेजिंग एजंट है। तथा मिल में तयार होने वाले कपड़े का व्यवसाय करती है।

बैंकर्स एण्ड कॉटन मरचेंट्स

मेसर्स ओंकारलाल कनीराम

इस फर्म के मालिक भेसलाना (जयपुर स्टेट) निवासी अग्रवाल वैश्यसमाज के सज्जन हैं। करीब १०० साल पूर्व सेठ पोकररामजी और कनीरामजी दोनो भाइयो ने मिलकर इस फर्म का स्थापन किया था। आरंभ मे मस्केका व्यापार करने के कारण आपलोग मस्केवालो के नाम से बोले जाते हैं।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ ओंकारलालजी के पुत्र उदयरामजी तथा सेठ पोखररामजी के पौत्र रघुनाथदास जी हैं। आपकी ओर से धूलिया और भेसलाना में एक एक धर्मशाला बनी है। इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार।

धूलिया (पश्चिम खानदेश)—मेसर्स ओंकारलाल कनीराम, मुगलाई बाजार—व्याज का काम होता है।

धूलिया—मेसर्स ओंकारलाल कनीराम—इस नाम की एक ऑइल मिल है।

धूलिया—गुलाबचंद हनुमानदास—इस नाम की जीनमे आपका हिस्सा है।

सेठ चुन्नीलाल शिवसहाय मात्रा धूलिया

सेठ जीवणराम जोधराज धूलिया

श्रीयुत रामलाल चुन्नीलाल मात्रा धूलिया

श्रीयुत शंकरलाल जीवणराम (जीवणराम जोधराज) धूलिया

मेसर्स चुन्नीलाल शिवसहाय

इस फर्म के मालिकों का मूल-निवास-स्थान कांवठ (जयपुर स्टेट) में है। आप अग्रवाल वैश्य-समाज के बांसल गौत्रीय सज्जन हैं। इस फर्म का स्थापन सेठ शिवसहायजी के हाथों से संवत् १९३६ में हुआ। आपका स्वर्गवास संवत् १९५३ में हुआ। आरंभ से ही यह फर्म आढ़त का व्यापार करती आ रही है।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक श्री सेठ चुन्नीलालजी बांसल हैं। आप बड़े समझदार एवं व्यवसाय कुशल सज्जन हैं। फर्म के व्यापार की आपने विशेष वृद्धि की है। करीब १॥ साल पूर्व आपने पाचोरे में एक ऑइल मिल चालू किया है। आप खानदेश अग्रवाल सभा के धूलिये वाले अधिवेशन के सभापति निर्वाचित हुए थे। आपके पुत्र श्रीयुत् बाबूलालजी भी बड़े समझदार नवयुवक हैं तथा फर्म के व्यापार में भाग लेते हैं। इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

धूलिया—मेसर्स चुन्नीलाल शिवसहाय—यहाँ प्रधानतया आढ़त एवं सराफी लेनदेन का व्यापार होता है।

मालेगाँव—चुन्नीलाल शिवसहाय—आढ़त एवं सराफी लेनदेन का काम होता है।

पाचोरा—मेसर्स चुन्नीलाल शिवसहाय—ऑइल मिल है।

मेसर्स जीवणराम जोधराज

इस फर्म के मालिक राधाकिशनपुरा (जयपुर स्टेट) निवासी अग्रवाल वैश्य-समाज के मंगल गौत्रीय सज्जन हैं। सेठ जोधराजजी ने करीब ७५।८० वर्ष पूर्व इस फर्म का स्थापन किया था। आरंभ में आपके यहाँ मस्के का कारबार होता था। आप संवत् १९५७ में स्वर्गवासी हुए।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ जोधराजजी के पुत्र सेठ जीवणरामजी हैं। आप बड़े उदार प्रकृति के दानी सज्जन हैं। आप ने धूलिये की जोधराज रामलाल सिटी हाई स्कूल को १५ हजार रुपया दिया। इसी प्रकार स्वद्धारक विद्यार्थीगृह, प्राणिरक्षक आयुर्वेदिक औषधालय, धूलिया हिन्दू तथा मुसलमान धर्मशाला, श्री इंग्लिश हाई स्कूल, स्काउटिंग संस्था, लेडी डफरिन हास्पिटल आदि संस्थाओं को हजारों रुपये नकद तथा भूमि प्रदान की। आप यहाँ के अच्छे प्रतिष्ठित सज्जन माने जाते हैं। आप के पुत्र श्रीशंकरलालजी पढ़ते हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

धूलिया—मेसर्स जीवणराम जोधराज—यहाँ आपको एक जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी है तथा खेती और व्याज बट्टे का काम होता है।

धूलिया—जीवनराम हुकमीचंद ऑइल मिल कम्पनी } इस नाम की कम्पनी में आपका साझा है।

मेसर्स भवानजी कानजी

इस फर्म को सेठ भवानजी कानजी ने संवत् १९५९ से स्थापित किया। आप कच्छी दस्सा ओसवाल जाति के सज्जन हैं। सेठ भवानजी १५ वर्ष की आयु में बम्बई गये एवं वहाँ लकड़ी की बखार में सर्विस करने लगे। वहाँ से योग्यता प्राप्तकर संवत् १९५५ में आपने चालीस गाँव मे अपना लकड़ी का व्यापार आरंभ किया। धूलिया में बखार स्थापित होने के बाद आपने यहाँ १९१९ मे जीनिंग तथा १९२३ मे ऑइल मील भी खोला। आपके पुत्र श्रीयुत गुलाबचन्द भवानजी भी व्यापार मे भाग लेते हैं। इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

धूलिया—मेसर्स भवानजी कानजी—कपास का व्यापार एवं आढ़त का काम होता है। यहाँ इसी नाम से आपकी एक जीनिंग फेक्टरी, एक ऑइल मील एवं लकड़ी की बखार है।

मेहूनवरा (पूर्व खानदेश)—भवानजी कानजी—इस नाम से एक जीनिंग फेक्टरी है।

परोला (,,)—नत्थू फकीरचन्द एण्ड भवानजी कानजी—जीनिंग है तथा कपास का व्यापार होता है।

मेसर्स रामदयाल भगवानदास

इस फर्म के मालिक डीडवाणा निवासी अग्रवाल समाज के गर्ग गोत्रीय सज्जन हैं। सेठ हनुमानदासजी तथा सेठ भगवानदासजी ने ३०–४० वर्ष पूर्व किशनगढ़ से आकर यहाँ कपड़े का व्यापार स्थापित किया एवं इस व्यापार में अच्छी सम्पत्ति कमाई। सेठ हनुमानदासजी ८ वर्ष पूर्व एवं भगवानदासजी १० साल पूर्व स्वर्गवासी हुए। इन दोनों भाइयों के कोई संतान नहीं थी अतः सेठ हनुमानदासजी अपनी मृत्यु के समय अपने सुयोग्य जामात्र पाचोरा निवासी बाबू शालिगरामजी भारतिया को अपनी स्टेट का उत्तराधिकारी बना गये।

बाबू शालिगरामजी भारतिया शिक्षित एवं समझदार नवयुवक हैं। आप अरबन बैंक के डायरेक्टर तथा पांजरापोल एवं प्राणिरक्षक संस्था के सेक्रेटरी हैं। आपने सेठ भगवानदासजी के स्मरणार्थ जे० आर० सीटी हाई स्कूल में एक गीता मन्दिर का निर्माण कराया है। आपके

यहाँ आपकी एक जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी है तथा खेती और व्याज वट्टे का काम होता है।

} इस नाम की कम्पनी मे आपका साझा है।

भवानजी कानजी

ने संवत् १९५९ से स्थापित किया। आप कच
ठ भवानजी १५ वर्ष की आयु में बम्बई गये एवं
हाँ से योग्यता प्राप्तकर संवत् १९५५ में आपने चा
किया। धूलिया में वखार स्थापित होने के बाद आ
ऑइल मील भी खोला। आपके पुत्र श्रीयुत गुल
। इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है
का व्यापार एवं आढ़त का काम होता है। यहाँ
क्टरी, एक ऑइल मील एवं लकड़ी की वखार।
जी—इस नाम से एक जीनिंग फेक्टरी है।
द एण्ड भवानजी कानजी—जीनिंग है तथा

सेठ नारायण व्यंकट चालीसगाँव

सेठ शालिगरामजी भरतिया (शालिगराम रामचन्द्र) धूलिया

सेठ व्यंकटलाल बालकिशन (सेवाराम राधाकिशन) धूलिया

पिताजी सेठ रामचन्द्रजी ने पाचोरे में श्रीराधाकृष्णजी का मंदिर बनाया है। इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

धूलिया—सेठ रामलाल भगवानदास आगरारोड—सराफी का व्यवहार होता है।

धूलिया—भगवानदास हनुमानदास—इस नाम से सोने-चाँदी का व्यापार होता है।

धूलिया—सालिगराम रामचन्द्र—इस नाम से आढ़त तथा साहुकारी का काम होता है।

मेसर्स रामगोपाल जगन्नाथ

इस फर्म का विस्तृत व्यापारिक परिचय चित्र सहित हमारे ग्रंथ के प्रथम भाग के बम्बई विभाग में दिया गया है। धूलिये में इस फर्म की एक कॉटन जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी है। तथा रूई का व्यापार होता है।

मेसर्स हीरालाल रामलाल

इस फर्म के मालिक टोंक टोड़ा निवासी सरावगी खंडेलवाल दिगम्बर जैन समाज के सज्जन हैं। इस फर्म का स्थापन रामलाल सेठ के पिताजी के हाथों से हुआ था। रामलाल सेठ अच्छे प्रतिष्ठित सज्जन थे। आप सन् १८१८ तक पेशवाओं के खजांची पद पर कार्य करते रहे। आपके ३ पुत्र हुए श्यामलालजी, हीरालालजी एवं मोतीलालजी। इनमें शामलालजी तथा मोतीलालजी वकालात का काम करते थे तथा हीरालालजी व्यापारिक कार्य संचालित करते थे।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ हीरालालजी के पुत्र राव साहब सेठ गुलाबचन्दजी हैं। आप यहां संवत १९४३ में रघुनाथगढ़ (जोधपुर स्टेट) से दत्तक आये हैं। सेठ गुलाबचन्दजी को सन् १९१९ में भारत सरकार ने "राव साहब" का ख़िताब दिया हैं। वर्तमान में आप धूलिये के सेकण्ड क्लास आनरेरी मजिस्ट्रेट हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

धूलिया—मेसर्स हीरालाल रामलाल—यहां इस फर्म का हेड ऑफिस है, तथा बैंकिंग, आढ़त एवं रूई का व्यापार होता है, यह फर्म खानदेश के लिये "जापान कॉटन कम्पनी तथा मेसर्स कीलाचन्द देवचन्द" के लिये रूई की खरीदी के लिये कमीशन एजंट हैं।

धूलिया—मेसर्स गुलाबचन्द हनुमानदास—इस नाम की जीनिंग फेक्टरी में आपका पार्ट है।

अमलनेर—मेसर्स गुलाबचन्द हीरालाल—यह फर्म जापान कॉटन कम्पनी की जीनिंग प्रेसिंग एजंट है तथा रूई की खरीदी बिक्री का काम करती है।

इसके अलावा मालेगांव, शिरपुर, दोंडापचा, धरनगांव, चोपड़ा तथा शायदा में गुलाबचन्द हीरालाल के नाम से कपास की खरीदी का काम होता है। शायदा में इन्दौर वाले वल्लभदास रामेश्वर की प्रेसिंग फेक्टरी में आपका पार्ट है।

ऑइल मिल ऑनर्स

मेसर्स पापालाल शिवचन्द

इस नाम की ऑइल मिल का स्थापन संवत् १९७९ में हुआ। यह फर्म करीब ३० साल पहिले सेठ पापामलजी के हाथों से खोली गई। इसके वर्तमान मालिक सेठ सोहनलालजी एवं पूसमलजी हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

धूलिया—मेसर्स पापालाल शिवचंद—सराफी व्यवहार होता है तथा ऑइल मिल है।

मेसर्स विजयराम देड़राज

इस फर्म के मालिक ढिंगपुर (जयपुर स्टेट) के निवासी अग्रवाल वैश्य समाज के मित्तल गौत्रीय सज्जन हैं। इस फर्म को सेठ विजयरामजी और देड़राजजी दोनों भाइयों ने मिलकर करीब ५० साल पूर्व स्थापित किया था। आप दोनों सज्जन क्रमशः १९५९ तथा १९७६ में स्वर्गवासी हुए। सेठ विजयरामजी के पुत्र जीवनरामजी एवं पन्नालाल जी हुए, बाबू पन्नालालजी ने सन् १९१२ में धूलिये में एक ऑइल मिल का स्थापन किया, उस समय खानदेश में कोई ऑइल मिल नहीं थी। आरंभ में आप सोलापुर की ओर से सींगदाणा मँगाते थे। धीरे २ इस प्रांत मे मूँगफली की पैदावार बहुत बढ़ी एवं इस समय आपकी मिल तेल और खली की बहुत बड़ी तिजारत करती है।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ जीवनराजजी एव सेठ पन्नालालजी के पुत्र सेठ फूलचंदजी मित्तल हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

धूलिया—मेसर्स विजयराम देड़राज—ऑइल मिल है, तथा सींगदाणा एवं खली का व्यापार होता है। इस मिल का माल सी० पी०, यू० पी०, बरार तथा गुजरात में जाता है।

धरनगॉव (पूर्व खानदेश)—मेसर्स विजयराम देड़राज—इस नाम से २॥ साल पूर्व आपने एक ऑइल मिल स्थापित की है।

सेठ जीवणरामजी (विजयराम डेड़राज) धूलिया

सेठ पन्नालालजी
(विजयराम डेड़राज) धूलिया

सेठ फूलचंदजी (विजयराम डेड़राज) धूलिया
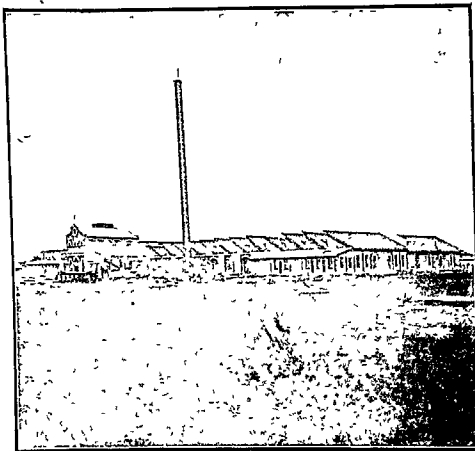
दी न्यू प्रताप मिल-धूलिया (पश्चिम खानदेश)

कमीशन एजंट्स

मेसर्स गोविन्दराम मोड्डूराम

इस फर्म के मालिक टेहंगधनाय (मेवाड़) निवासी ओसवाल स्थानकवासी जैन समाज के श्री श्री माल सज्जन हैं। करीब १२५ वर्ष पूर्व सेठ मोड्डूरामजी के हाथों से इस फर्म का स्थापन हुआ था। तथा सेठ गोविंन्दरामजी ने इसके व्यापार को बढ़ाया।

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ सूरजमलजी एवं मोतीलालजी हैं। सेठ सूरजमलजी धूलिये के आनरेरी मजिस्ट्रेट हैं। यह फर्म धूलिये के कमीशन के व्यापारियों में बहुत पुरानी तथा प्रतिष्ठित मानी जाती है। इस फर्म की आढ़त में पंजाब, मद्रास, बम्बई, बंगाल, सी० पी०, यू० पी० आदि सारे भारत से व्यापार होता है।

मेसर्स जयकिशन रामविलास

इस फर्म का हेड ऑफिस जलगॉव (पूर्व खानदेश) में है। अतः इसके व्यापार का विस्तृत परिचय मालिकों के चित्रो सहित उक्त स्थान पर दिया गया है। खानदेश में गल्ला एवं कपास का व्यापार करने के लिये इस फर्म की कई ब्रांचेज हैं।

धूलिया ब्रांच के इस फर्मपर प्रधानतया गल्ले का व्यापार एवं आढ़त का काम होता है।

मेसर्स भोलाराम जुहारमल

इस फर्म के मालिक अग्रवाल वैश्य समाज के पोद्दार सज्जन है। यह फर्म ४५ वर्ष पूर्व सेठ भोलारामजी के हाथो से स्थापित की गई। इसके वर्तमान मालिक सेठ रामेश्वरदासजी पोद्दार हैं। आप बड़े सत्यव्यवहारी एवं देशभक्त सज्जन हैं। कांग्रेस-सम्बन्धी कामो में बहुत दिलचस्पी लेते हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

धूलिया—मेसर्स भोलाराम जुहारमल—यहाँ प्रधानतया गल्ले का व्यापार होता है।

दोंडायचा (पश्चिम खानदेश) भोलाराम जुहारमल—गल्ला और किराने का व्यापार होता है।

मेसर्स सेवाराम राधाकिशन

इस फर्म का स्थापन सन् १८२७ में सेवारामजी और राधाकिशनजी दोनों भाइयों के हाथों से हुआ था। तथा इसके व्यापार को इन्हीं दोनों भाइयो ने बढ़ाया, आपके यहाँ गल्ला तथ

जवाहरात का काम होता था। आपके पश्चात क्रमशः सेठ शिवबख्शरामजी एवं बालकिशनजी ने व्यवसाय को संचालन किया। सेठ शिवबख्शजी ने एक धर्मशाला धूलिया में बनवाई।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ व्यंकटलाल बालकिशन हैं। आपके यहाँ प्रधानतया चाँदी-सोना तथा जवाहरात का व्यापार होता है।

कॉटन जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरीज़

दि अकबर कॉटन प्रेस कम्पनी
दि ईस्टर्न कॉटन जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी
दि इण्डिया कॉटन लिमिटेड प्रेसिंग फेक्टरी
सेठ इब्राहीम फिदाअली जीनिंग फेक्टरी
सेठ गुलाबचंद काल्लूराम जीनिंग फेक्टरी
सेठ गोविंदजी दामजी प्रेसिंग फेक्टरी
सेठ गुलाबचन्द हनुमानदास जीनिंग फेक्टरी
दि ग्रीन एण्ड कॉटन कम्पनी जीनिंग फेक्टरी
सेठ चत्रभुज शोजपाल जीनिंग फेक्टरी
सेठ जीवनराम जोधराज जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी
सेठ जमशेदजी रुस्तमजी कोलावावाली जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी
दि टोयो मेनका केशा लि० जीनिंग फेक्टरी
दि पटेल कॉटन कम्पनी जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी
दि पेनकर कॉटन जीनिंग फेक्टरी
दि वालकट ब्रदर्स प्रेसिंग फेक्टरी
सेठ भवानजी कानजी जीनिंग फेक्टरी
सेठ वखतराम नानूराम दिल्ली जीनिंग फेक्टरी
दि मनमाड मेन्यूफेक्चरिंग कं० लिमिटेड जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी
सेठ महम्मदअली ईसाभाई जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी
सेठ मोतीलाल काशीराम जीनिंग फेक्टरी
दि न्यू प्रिंस आफ वेल्स जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी
दि न्यू जमशेदजी जीनिंग फेक्टरी
दि न्यू मोफस्सिल कम्पनी लिमिटेड जीनिंग फेक्टरी
दि न्यू महाल्ह जीनिंग फेक्टरी
सेठ रुस्तमजी धनजी साह जीनिंग फेक्टरी
सेठ रामनारायण प्रेमसुख जीनिंग फेक्टरी
सेठ रामनारायण बलदेवदास जीनिंग फेक्टरी
सेठ रामगोपाल जगन्नाथ जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी
सेठ सूरजमल शंकरलाल जीनिंग फेक्टरी
साठे भास्कर वासुदेव जीनिंग फेक्टरी

ऑइल मिल्स

सेठ ओंकारलाल कनीराम ऑइल मिल
" गुलाबचन्द काल्लूराम ऑइल मिल
" जीवनराम हुकमीचन्द ऑइल मिल
" पापालाल शिवचन्द ऑइल मिल
" पदमसी प्रेमजी ऑइल मिल
" भवानजी कानजी ऑइल मिल
" विजयराम देइराज ऑइल मिल
" सूरजमल शंकरलाल ऑइल मिल
" ज्ञानीराम बृजलाल ऑइल मिल

बैंकर्स

दि इम्पीरियल बैंक आफ इण्डिया लिमिटेड
दि बाम्बे प्राविंसियल कोआपरेटिव बैंक लि०
दि धूलिया आरबन कोआपरेटिव्ह बैंक लिमिटेड

कम्पनियों की एजंसियाँ

नाम कम्पनी — नाम एजंट

जापान कॉटन कम्पनी—रामलाल हीरालाल
गोसो काबूसी केशा—रामदास खेमजी
मुसान कॉटन कम्पनी—खानदेश ट्रेडिंग कम्पनी
रायली ब्रदर्स—धनजी अर्जुन ब्रोकर्स
बालकट ब्रदर्स— " " "
पटेल ब्रदर्स— " " "
फारबस कम्पनी—रामगोपाल जगन्नाथ

कॉटन मरचेंट्स

सेठ गोविन्दराम मोड्डूराम
" चुन्नीलाल शिवसहाय
" छगनलाल साहबराम
" जानकीदास मथुरादास
" भवानजी कानजी
दि न्यू प्रताप मिल लिमिटेड
सेठ रामगोपाल जगन्नाथ
" सूरजमल पन्नालाल
" हीरालाल रामलाल

ग्रेन मर्चेण्ट एण्ड कमीशन एजंट

सेठ कन्नीराम खींवराज
" गोविंदराम मोड्डूराम
" चतुर्भुज पांडुरंग
" जयकिशन रामविलास
" पन्नालाल नारायणदास
" भोलाराम जुहारमल
" हेमराज पृथ्वीराज
" हरनारायण प्रेमसुख

किराने के व्यापारी

कनीराम खींवराज
चम्पालाल पांडुरंग
दाउद गनी हासम
रघुनाथ रिधकरण
लालचन्द जीतमल
हाजी अहमद ईसा

जनरल मर्चेण्ट्स

अब्दुल कय्यूम कमरुद्दीन
सुजाउद्दीन फिदाअली
एच. फिदाअली
हबीबुल्ला अब्दुल कय्यूम

कपड़े के व्यापारी

माणकचन्द मोतीलाल एण्ड सन्स
बख्तावरमल मोहता
लीलाधर जेठाभाई
हनुमानदास वल्लभराम

लकड़ी के व्यापारी

भवानजी कानजी
सांवल रामजी

चाँदी सोने के व्यापारी

काशीनाथ मूलचन्द
कल्लाजी लध्धाजी
सेवाराम राधाकिशन

संतरे के बगीचे वाले

सूरजमल पन्नालाल जामदावाला
लक्खीचन्द हजारीमल जूना धूलिया

अमलनेर

पूर्व खानदेश के अमलनेर तालुके का यह प्रधान स्थान है। यहाँ की लोक-संख्या लगभग २० हजार है। यहाँ ९ जीनिंग और ६ प्रेसिंग फेक्टरियाँ हैं। सन् १९२२ से यहाँ कॉटन मिल स्थापित हुआ है। यह मिल अच्छी अवस्था में काम कर रहा है। यहाँ की प्रधान पैदावार कपास और मुँगफली है इसके अलावा सब प्रकार का गल्ला व शीड्स पैदा होता है।

दर्शनीय स्थान—सखाराम महाराज की समाधि—१५० वर्ष पूर्व श्रीसखाराम महाराज नामक एक बहुत प्रतापी साधु हो गये थे, यह उनकी समाधि है। बैसाख सुदी १५ पर यहाँ भारी मेला लगता है। महाराष्ट्र प्रांत का यह प्रसिद्ध तीर्थ माना जाता है।

तत्वज्ञान मन्दिर—यह एक बहुत ऊँचे दर्जे की संस्था, उच्च कोटि के तत्वज्ञान का प्रचार करने के उद्देश्य से खोली गई है। इसमे अमलनेर के श्रीयुत प्रताप सेठ ने १०००००) एक लाख रुपया तथा येवले के श्रीयुत वल्लभदास सेठ ने एक लाख रुपया प्रदान किया है। इस संस्था से तत्वज्ञान मन्दिर नामक एक उच्च कोटि का त्रैमासिक पत्र निकलता है।

खानदेश एजूकेशन सोसाइटी—यह संस्था खानदेश में शिक्षा-प्रचार के उद्देश से स्थापित की गई है। इसने अमलनेर में हाईस्कूल स्थापित किया है। इस हाईस्कूल को प्रताप सेठ ने ५० हजार रुपया प्रदान किया है।

रेलवे—भुसावल से जी० आई० पी० की एक शाखा सूरत जाने के लिये अमलनेर होकर जाती है। यहाँ से बी० बी० सी० आई० रेलवे आरंभ होती है। अमलने के व्यवसाइयो का परिचय इस प्रकार है।

दि प्रताप स्पीनिंग एण्ड वीविंग मिल्स कम्पनी लिमिटेड

इस मील की स्थापना सन् १९०६ में १५ लाख की पूंजी से हुई। जिस समय यह मील स्थापित हुई, उस समय खानदेश मे सिवाय मूलजी जेठा की जलगाँव मील के और कोई दूसरी

मील नहीं थी। इस मील ने अपने जीवनकाल ने उत्तरोत्तर अधिकाधिक वृद्धि की। सन् १९२२ मे इस मील के मुनाफे से एक ब्रांच मील और खोली गई। वर्तमान में मील में ३८ हजार स्पेंडिल्स और ९३६ लूम्स काम करते हैं। मील के एजेंट मेसर्स माणकचन्द रत्तीराम एंड सन्स है। मील का तयार हुआ कपड़ा और सूत बेंचने की शाखाएँ एवं एजंसियाँ नीचे लिखे स्थानों पर हैं।

१–बम्बई—दि प्रताप मिल्स ऑफिस, १४ हम्माम स्ट्रीट फोर्ट। T A Pratap–यहाँ मील का रजिस्टर ऑफिस है।

२–बम्बई—दि प्रताप मील क्लाथ शाप, मूलजी जेठा मारकीट गोविंदगली नं० ६३२–मिल के कपड़े की दुकान है

३–अहमदनगर—प्रताप मील क्लाथ शाप—एजण्ट पन्नाजी दौलतराम भण्डारी नवा कापड़ बाजार।

४–जलगाँव—प्रताप मील शाप—एजण्ट व्यंकटलाल चौथमल।

५–जालना (निजाम)—एजण्ट—सूरजमल गुलाबचन्द।

६– खामगाँव (बरार) प्रताप मील एजन्सी—एजेण्ट रंगूलाल राधाकिशन।

७–नाशिक—प्रताप मील एजेन्सी—एजेण्ट मणीलाल दामोदरदास सुगंधी, रविवार पैठ।

८–कानपूर—प्रताप मिल्स शाप—एजेण्ट वसंतलाल केशवलाल पटवा जनरलगंज।

९–कलकत्ता—प्रताप मिल्स शाप—एजेण्ट फतहसिंह भँवरलाल पटेल ४१ आर्मेनियन स्ट्रीट।

मेसर्स माणकचंद श्रीराम

इस फर्म के मालिको का मूल निवास स्थान श्रीमाधोपुर (जयपुर स्टेट) में है। आप अग्रवाल वैश्य समाज के एरन गोत्रीय सज्जन हैं। देश से सेठ डूंगरसीदासजी करीब १००।१२५ वर्ष पूर्व चोपड़ा (पूर्व खानदेश) आये थे। इनके पुत्र रत्तीरामजी के समय में यहाँ मामूली लेन-देन का व्यवहार होता था। रत्तीरामजी के पुत्र सेठ माणकचंदजी ने चोपड़े में एक जीनिंग फेक्टरी खोली। आप संवत् १९५० में स्वर्गवासी हुए।

सेठ माणकचंदजी के कोई पुत्र नहीं था, अतएव आप कालाडेरा (जयपुर स्टेट) से संवत् १९४४ में सेठ मोतीलालजी को जो इस समय प्रताप सेठ के नाम से खानदेश में विख्यात हैं, गोद लाये। श्री प्रताप सेठ ने इस फर्म के सम्मान और प्रताप को बहुत बढ़ाया। आप खानदेश के नामी गरामी व्यापारी माने जाते हैं। आपने सन् १९०६ में प्रताप कॉटन मिल का स्थापन किया। इस मिल ने अपने जीवन काल में इतनी उन्नति कर दिखाई की सन् १९२२ मे आपको एक ब्रांच मुनाफा मिल के रूप में और खोलना पड़ी। अमलनेर मिल में

सफलता प्राप्त करने के पश्चात् सन् १९२४ में आपने धूलिया में भी एक न्यू प्रताप मिल के नाम से कॉटन मिल का उद्घाटन किया। इन तीनों मिलों की मेनेजिंग एजेंसी इस समय आपके पास है।

व्यवसायिक उन्नति के साथ २ श्री प्रताप सेठ की विद्या वृद्धि एवं तत्वज्ञान की ओर भी विशेष अभिरुचि है। आपने अमलनेर तत्वज्ञान मंदिर को १ लक्ष रुपया प्रदान कर उसकी नींव डाली है। एवं उक्त संस्था के स्थायी प्रबंध के लिये मिल में एक अच्छी लाग चालू कर दी है। स्थानीय हाई स्कूल को आपने ५० हजार रुपया प्रदान किया है। आप फिलासफी के बड़े प्रेमी हैं। कई विद्यार्थियों को आपने ऊँची स्कालरशिप देकर विदेशों में पढ़ने के लिये भेजा है। आपके गुणों से प्रसन्न होकर आपको भारत सरकार ने कैसरेहिन्द का गोल्ड मेडल प्रदान किया है। वर्तमान में आप विदर्भ मिल एलिचपुर के प्रधान डायरेक्टर हैं। इन्दौर में होने वाली अखिल भारत वर्षीय अग्रवाल महासभा के सभापति का आसन भी आपने सुशोभित किया था। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

चोपड़ा—मेसर्स माणकचन्द रत्तीराम — यहाँ जीनिंग और प्रेसिंग फेक्टरी है तथा बैङ्किंग व कृषि का बहुत बड़ा काम होता है।

अमलनेर—मेसर्स मोतीलाल माणकचन्द उर्फ प्रताप सेठ — इस नाम से प्रताप स्पीनिंग एण्ड वीविंग मिल्स कं० लिमिटेड की एजेंसी है।

अमलनेर—मेसर्स मदनलाल मोतीलाल—प्रताप मिल के कपड़े का व्यापार होता है।

धूलिया—मेसर्स मोतीलाल माणकचन्द एण्ड संस—इस नाम से न्यू प्रताप मिल की एजेंसी है।

बम्बई—मेसर्स मोतीलाल माणकचन्द हम्माम स्ट्रीट—शेअर का कारबार होता है।

जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरीज़

मेसर्स गंगाराम सखाराम जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी

मेसर्स जहाँगीर बी० तमोली ३ जीनिंग एक प्रेसिंग फेक्टरी

दि प्रताप मिल्स जीनिंग फेक्टरी

मेसर्स महम्मदअली ईसाभाई जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी

मेसर्स रामचन्द्र भाऊ २ जीनिंग २ प्रेसिंग फेक्टरी

दि हिन्दुस्तान जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी (जापान कॉटन)

आइल मिल्स

मेसर्स जहाँगीर बी० तमोली

" वालचन्द कस्तूरचन्द

" हरीराम रामचन्द्र

क्लाथ मरचेंट्स

आत्माराम गंगाराम
भागचन्द छगनदास
भीखाजी रामचन्द्र
भँवरलाल हीरालाल
मगनलाल मोतीलाल
मगनदास मुक्खनदास
रतनचन्द दगडू सा

बैंकर्स

दि अमलनेर को० आ० अरबन बैंक लिमिटेड
पूर्व खानदेश को० आ० सेंट्रल बंक लिमिटेड
मेसर्स गंगाराम सखाराम
" भीखाजी रामचन्द्र
" मगनलाल मोतीलाल

ग्रेन मर्चेंट एण्ड कमीशन एजंट

करीमगनी हासम
नागरदास बागजी
लालचन्द रघुनाथदास
सामलदास भावजी
सालेमहम्मद मूसा
सोनूसिंह घनश्यामसिंह
हाजी अहमद ईसा
त्रिंबकलाल अमोलकचंद

कपास के व्यापारी

आत्माराम गंगाराम
अहमदअली ईसाभाई
जहाँगीर वी० तमोली
पासू मूल जी
भागचंद छागनदास
भीखाजी रामचन्द्र
मगनदास खेमचंद
विसनजीजीवराज
हीरालाल रामलाल

किराने के व्यापारी

नागरदास बागजी
पृथ्वीराज बख्तावरमल

जनरल मर्चंट

ईराचशा कावसजी कापड़िया
कादरभाई नूरअली
भरुचा एण्ड संस
महम्मद अली हसन अली
वीरचंद रतनचंद

एजेंसियां

गोशो काबूसी केशा
जापान ट्रेडिंग कम्पनी
टोयो मेनका केशा
महम्मद सुलेमान एण्ड कम्पनी

जामनेर

पूर्व खानदेश के जामनेर तालुके का यह प्रधान स्थान है। पाचोरे से रेलवे ब्रांच यहां तक आती है। इस स्थान पर ६ जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरियां हैं। तथा १० हजार गांठ कपास की पैदावार हो जाती है। ३० हजार बोरी सींगदाणा की यहां वार्षिक आमद है। यही २ व्यवसाय यहां प्रधान रूप से होते हैं। यहां का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स मोतीलाल लक्ष्मणदास

इस फर्म का कोटुम्बिक परिचय मेसर्स राजमल लक्खीचन्द फर्म के परिचय में दिया गया है। सेठ रामचन्द्रजी के ३ पुत्र हुए। सेठ लक्खीचन्दजी, सेठ हरकचन्दजी एवं किशनलालजी। इनमें सेठ हरकचन्दजी के पुत्र सेठ लछमनदासजी की यह फर्म है। आपके यहां मोतीलालजी मलकापुर (बरार) से दत्तक आये हैं। सेठ लछमणदासजी १२ साल पहिले स्वर्गवासी हो गये हैं। आपकी फर्म पर साहुकारी लेन देन-एवं कृषि का काम होता है।

मेसर्स राजमल लक्खीचन्द

इस प्रतिष्ठित फर्म के मालिको का मूल निवासस्थान बड़लू (जोधपुर) है। करीब १२५ वर्ष पूर्व धनजी सेठ जामनेर आये थे। आप स्थानक वासी जैन समाज के ओसवाल सज्जन हैं। धनजी सेठ के समय इस फर्म पर किराने का व्यापार होता था इनके बाद क्रमशः रामचन्द्रजी एवं लक्खीचन्दजी के समय में यहां गल्ले और सराफी लेन-देन का व्यापार होता रहा। सेठ लक्खीचन्दजी के हाथो से इस फर्म के व्यापार को विशेष उन्नति मिली। आप संवत् १९६२ में स्वर्गवासी हुए। आपके यहां श्रीराजमलजी, मूड़ी (अमलनेर) से संवत् १९६० मे दत्तक लाये गये। आपके हाथों से भी फर्म के व्यवसाय एवं सम्मान में विशेष वृद्धि हुई। आपने सन् १९१९ में खानदेश एजूकेशन सोसाइटी भुसावल का स्थापन किया। रेन ओसवाल बोर्डिंग जलगांव, अ० भा० ओसवाल महासभा, अ० भा० महावीर मुनिमंडल के स्थापकों में आपका नाम बहुत ऊंचा है। जलगांव जीमखाना ने आपकी सेवा के उपलक्ष मे आपका स्टेच्यू
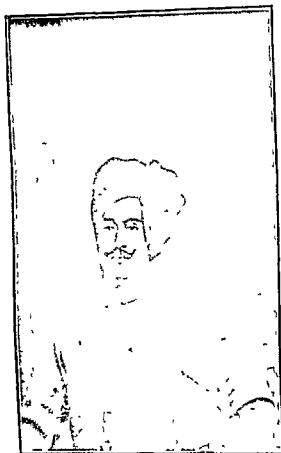
सेठ राजमलजी ललवानी (लखीचंद राजमल) जामनेर

श्री प्रतापसेठ अमलनेर

चंदजी ने विशेष तरक्की दी। आप १९७८ में स्वर्गवासी हुए। वर्तमान में

क सेठ रूपचंदजी के छोटे भ्राता जगन्नाथजी हैं। आपके यहाँ कपास का

त का काम होता है।

मेसर्स हीरालाल औंकारदास

मालिक करेड़ा (उदयपुर) निवासी माहेश्वरी वैश्य-समाज के सज्जन हैं। पूर्व सेठ लक्ष्मणदास थानसिंह ने इस फर्म का स्थापन किया। इसके कारबार श्री सेठ औंकारदासजी ने दी। इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ हीरालालजी ने १९७६ में जीनिंग एवं १९८० मे प्रेसिंग फेक्टरी चालू की है। आपका व्या- इस प्रकार है।

हीरालाल औंकारदास—यहाँ जीनिंग प्रेसिंग, खेती तथा कपास का कारबार होता है।

हैं। आपकी फर्म पर साहुकारी लेन देन एवं कृषि का काम होता है।

मेसर्स राजमल लक्खीचन्द

इस प्रतिष्ठित फर्म के मालिकों का मूल निवासस्थान बड़लू (जोधपुर) है
वर्ष पूर्व धनजी सेठ जामनेर आये थे। आप स्थानक वासी जैन समाज के
हैं। धनजी सेठ के समय इस फर्म पर किराने का व्यापार होता था इनके बा
चन्द्रजी एवं लक्खीचन्दजी के समय में यहां गल्ले और सराफी लेन-देन का व्याप
सेठ लक्खीचन्दजी के हाथों से इस फर्म के व्यापार को विशेष उन्नति मिली। आप
मे स्वर्गवासी हुए। आपके यहां श्रीराजमलजी, मूड़ी (अमलनेर) से संवत् १९
लाये गये। आपके हाथों से भी फर्म के व्यवसाय एवं सम्मान मे विशेष वृद्धि
सन् १९१९ में खानदेश एजूकेशन सोसाइटी भुसावल का स्थापन किया। रे
बोर्डिंग जलगांव, अ० भा० ओसवाल महासभा, अ० भा० महावीर मुनिमंडल के
आपका नाम बहुत ऊंचा है। जलगांव जीमखाना ने आपकी सेवा के उपलक्ष मे आ

उद्घाटन कर सम्मानित किया है। आपकी मातेश्वरी के नाम से जामनेर में श्रीमती जैन ओसवाल भागीरथी बाई लायब्रेरी चल रही है। इसके अलावा राजमल लक्खीचंद नामक एक धार्मिक औषधालय स्थापित है। इसके अलावा जामनेर एग्रिकलचर फर्म, केटल ब्रिडिंग फर्म, एवं एजूकेशन सोसाइटी की स्थापना आपके द्वारा की गई है। खानदेश एजूकेशन सोसाइटी अमलनेर के आप वाइसप्रेसिडेंट हैं। जनता के हृदयों में आपके प्रति बहुत प्रेम है। आप सन् १९२६ में सर्व सम्मति से १४ हजार वोटों से बम्बई कौंसिल के मेम्बर निर्वाचित हुए। आप शुद्ध खद्दरधारी एवं कांग्रेस की आज्ञाओं में विश्वास रखने वाले सज्जन हैं। अभी२ आपने कांग्रेस निर्णय के अनुसार बम्बई कौंसिल से इस्तीफा दे दिया है। आपकी फर्म खानदेश की मातबर फर्मों में मानी जाती है। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

जामनेर—मेसर्स राजमल लक्खीचन्द—यहां बैङ्किग एवं खेती और साहुकारी लेन-देन का काम होता है।

जलगांव—मेसर्स राजमल लक्खीचन्द—बैङ्किग एवं चांदी सोने का व्यापार होता है।

कॉटन मरचेंट्स

मेसर्स रूपचंद शिवजीराम

इस फर्म के मालिक मांडल (उदयपुर स्टेट) निवासी माहेश्वरी जाति के सज्जन हैं। इसके व्यापार को सेठ रूपचंदजी ने विशेष तरक्की दी। आप १९७८ में स्वर्गवासी हुए। वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ रूपचंदजी के छोटे भ्राता जगन्नाथजी हैं। आपके यहाँ कपास का व्यापार एवं लेन-देन का काम होता है।

मेसर्स हीरालाल ओंकारदास

इस फर्म के मालिक करेड़ा (उदयपुर) निवासी माहेश्वरी वैश्य-समाज के सज्जन हैं। करीब ३ पीढ़ी पूर्व सेठ लक्ष्मणदास थानसिंह ने इस फर्म का स्थापन किया। इसके कारबार को विशेष तरक्की सेठ ओंकारदासजी ने दी। इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ हीरालालजी झंवर हैं। आपने १९७६ में जीनिंग एवं १९८० मे प्रेसिंग फेक्टरी चालू की है। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

जामनेर—मेसर्स हीरालाल ओंकारदास—यहाँ जीनिग प्रेसिंग, खेती तथा कपास का कारबार होता है।

जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरीज़

देवचन्द प्रेसिंग फेक्टरी
माणकचन्द विट्ठूराम जीनिंग फेक्टरी
न्यू जामनेर जीनिंग प्रेसिंग कम्पनी लिमिटेड
हीरालाल ओंकारदास जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी

काटन मरचेंट्स

मेसर्स आनन्दा सदाशिव
,, जगन्नाथ शिवजी
,, ठोकरसी थोबन
,, धनराज नवलमल
,, प्रभाकर वामन साठे
,, रूपचन्द शिवजी राम

बैंकर्स

मेसर्स मोतीलाल लक्ष्मणदास
,, राजमल लक्खीचन्द

कपड़े के व्यापारी

मेसर्स केशरीमल चम्पालाल
,, गनेशमल जोधराज
,, दानमल पारसमल
,, हीरालाल वशर

गल्ला किराना

चुन्नीलाल अगरचन्द (गल्ला)
माधवजीवराम देशमुख (किराना)

कटलरी

ईसुफ अलीखान भाई
रजबअली इस्माइलजी

सार्वजनिक संस्थाएँ

एजूकेशन सोसाइटी
भागीरथी बाई लायब्रेरी
जयकर क्लब

शेंदुर्णी

पूर्व खानदेश के जामनेर तालुका में यह स्थान जामनेर के समीप स्थित है। यहाँ प्रतिवर्ष करीब १५ हजार गाँठ रूई तथा २० हजार बोरी सींगदाना की पैदावार है। करीब ७ जीनिंग प्रेसिंग यहाँ काम करती हैं। इस स्थान के व्यापारियो का संक्षेप परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स कानजी शिवजी

इस फर्म का विस्तृत परिचय मालिको के चित्रों सहित जलगाँव में दिया गया हैं। शेंदुर्णी में इस फर्म की जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी है। तथा कॉटन का व्यापार होता है। इसके अलावा निम्बोरा और मसावद में आपकी जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरियाँ हैं।

मेसर्स मूलचन्द सुखदेव

इस फर्म के मालिकों का मूल निवासस्थान अराई, (किशनगढ़) है। आप माहेश्वरी समाज के कावरा सज्जन हैं। करीब ५० साल पहिले सेठ सुखदेवजी ने यहाँ लेन-देन का काम-काज शुरू किया था। आप ही ने इस दुकान के कारबार को तरक्की दी। आप ५२ वर्ष की अवस्था में करीब १० वर्ष पूर्व स्वर्गवासी हुए।

वर्तमान में इस दुकान के मालिक सेठ सुखदेवजी कावरा के पुत्र सेठ मूलचंदजी, सेठ सोनजी, सेठ श्रीकृष्णजी तथा सेठ राजमलजी हैं। आप सब सज्जन कारबार में भाग लेते हैं। आपका यहाँ के व्यापारिक समाज में अच्छा सम्मान है। इस दुकान के कारबार का हाल इस प्रकार है।

शेंदुर्णी (पूर्व खानदेश) मेसर्स मूलचन्द सुखदेव—यहाँ जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी है तथा बैंकिंग, कपास और आढ़त का कारबार होता है।

लोहारा (पाचोरा) मूलचन्द सुखदेव—जीनिंग फेक्टरी है तथा कपास का कारबार होता है।

कलमसरा

पूर्व खानदेश के जामनगर तालुका मे शेंदुर्णी के समीप यह एक छोटा सा कसबा है। यहाँ की एक प्रतिष्ठित फर्म का परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स सतीदास धनजी

इस फर्म के मालिक बड़लू (जोधपुर स्टेट) निवासी ओसवाल स्थानकवासी जैन समाज के सज्जन हैं। करीब १२५ वर्ष पूर्व धनजी सेठ देश से कलमसरा आये। आपके दो पुत्र हुए। सेठ रामचन्द्रजी एवं सेठ सतीदासजी। सेठ रामचन्द्रजी के कुटुम्बी राजमल लक्खीचंद के नाम से जामनेर में अपना स्वतंत्र व्यापार कर रहे हैं। सेठ सतीदासजी के पश्चात् क्रमशः रतनचन्दजी एवं पन्नालालजी ने इस फर्म का कार्य्य सम्हाला।

सेठ रतनचन्दजी के सेठ पन्नालालजी एवं प्रेमराजजी नामक २ पुत्र हुए। सेठ पन्नालालजी ने इस फर्म के व्यापार की विशेष उन्नति की। सेठ प्रेमराजजी ७।८ वर्ष पूर्व तथा पन्नालालजी संवत् १९८२ की कार्तिक बदी ३ को स्वर्गवासी हुए। इन दोनों भाइयों के कोई संतान नहीं थी, अतएव संवत् १९८२ की मगसर सुदी ६ को कालू केकिन (जोधपुर) से बाबू सरूपचन्दजी को सेठ पन्नालालजी के यहाँ और तापू (थली) से बाबू भागचन्दजी को सेठ प्रेमराजजी के यहाँ दत्तक लाये हैं। आप ही दोनो नवयुवक इस फर्म के व्यवसाय का संचालन करते थे। खान देश में यह फर्म अच्छी धनिक मानी जाती है। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलमसरा (शेंदुर्णी) मेसर्स सतीदास धनजी—यहाँ साहुकारी लेन-देन तथा खेती-बाड़ी का काम होता है।

चालिस गांव

जी. आई. पी. रेलवे की मेन लाइन पर जलगाँव और मनमाड के मध्य यह स्थान पूर्व खानदेश का एक तालुका है। इस स्थान पर १० कॉटन जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरियाँ, २ ऑइल मिल एवं १ कॉटन मिल है। १३।१४ हजार गाँठ रुई की प्रतिवर्ष यहाँ बँधती है। कपास के व्यापार के अलावा ७०।७५ हजार पल्ला सींगदाणा की (१२० सेर का पल्ला) यहाँ सालाना आमद हो जाती है। यहाँ से तेल सी० पी०, बरार, नाशिक की ओर एवं खली बम्बई के लिये रवाना की जाती है। बिनोले का तौल २८ मन की खण्डी से तथा तेल का तौल बंगाली मन से व्यवहार में लाया जाता है। यहाँ के व्यापारियों का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है।

दि न्यू जीनिंग प्रेसिंग एण्ड मेन्युफेक्चरिंग कम्पनी लिमिटेड—इस कम्पनी की स्थापना सन् १९०७ में १ लाख ३२ हजार की पूंजी से सूक्ष्म रूप में हुई। थोड़े समय तक यह कम्पनी जीनिंग प्रेसिंग का काम करती रही। पश्चात् सन् १९२२ में कम्पनी की पूंजी २० लाख कर दी गई। वर्तमान में यह कम्पनी ३ प्रधान कार्यों का संचालन करती है।

१ श्री लक्ष्मीनारायण कॉटन मिल्स—सूत और कपड़ा बनाना। सन् १९२५ की २७ मई को यह मिल चालू हुई। इसमें २० लाख रुपया साल का सूत और कपड़ा तयार होता है। मिल में ६०० मनुष्य प्रतिदिन काम करते हैं। १०० एकड़ जमीन में मिल का घेरा है। इसमें १४ हजार तकुए और ४०० लूम्स है। इसके मैनेजिंग एजंट मेसर्स नारायण व्यंकट है। तथा मिल में तयार होने वाले कपड़े की सोलसेलिंग एजंट मेसर्स हुकुमचन्द नारायण एण्ड कम्पनी है।

२ श्री लक्ष्मीनारायण वर्कशाप—फाउण्डरी एण्ड फिनिशिंग तथा मेकेनिक एण्ड मोल्डिंग शाप

३ श्री लक्ष्मीनारायण जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी—जीनप्रेस करना

मेसर्स नारायण व्यंकट

इस फर्म के मालिकों का मूल निवासस्थान भुम्मारपुर, जिला झांसी (बुंदेलखंड) में है। आप गहोई वैश्य जाति के सज्जन हैं। करीब १०० वर्ष पूर्व सेठ मूलचन्दजी ने मोहाड़ी (धूलिया) नामक गांव में आकर गल्ला एवं लेन-देन का काम-काज शुरू किया। आपके झंडू सेठ और

बिहारी सेठ नामक २ भ्राता और थे। मूलचन्द सेठ संवत् १९३९ में स्वर्गवासी हुए। आपके यहाँ गुलाबचन्दजी जो इस समय नारायण सेठ के नाम से बोले जाते हैं, संवत् १९४५ में मोंहाड़ी से दत्तक लाये गये। आपके दत्तक आने के बाद संवत् १९५३ में आग लग जाने से आपकी सारी स्टेट नष्ट हो गई थी अतः व्यवसाय द्वारा आपने सम्पत्ति अपने हाथों से उपार्जित की और प्रतिष्ठा को सुदृढ़ किया। आपने संवत् १९६३ में १३२८०० की पूँजी से एक प्रेस कम्पनी स्थापित की एवं संवत् १९७९ में श्रीलक्ष्मीनारायण मिल को जन्म दिया। इस मिल में वर्तमान मे २१ हजार स्पेंडिल्स एवं ४०० लूम्स काम करते हैं। मिल चालू करने के २ साल पूर्व आपने मशीनरी वर्क शाप खोला।

व्यवसायिक उन्नति के अलावा सेठ नारायण व्यंकट ने श्रीलक्ष्मीनारायण का मंदिर बनवाया। आपने स्थानीय आनंदी बाई व्यंकट हाई स्कूल को स्थापित कर उसमें २१ हजार रुपये दिये हैं। इसी प्रकार यहाँ आपकी एक लायब्रेरी स्थापित है। सेठ नारायण व्यंकट यहाँ के अच्छे प्रतिष्ठित सज्जन माने जाते हैं, आप कई वर्षों तक स्थानीय म्युनिसिपैलेटी एवं लोकलबोर्ड के प्रेसिडेंट रहे हैं। आपके पुत्र श्रीहुकुमचन्द पढ़ते हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

चालीस गाँव—मेसर्स नारायण व्यंकट—श्री लक्ष्मीनारायण मिल एवं दूसरे कारखानों की एजंसी तथा सराफी लेन-देन और कृषि का काम होता है।

चालीस गांव—मेसर्स हुकुमचन्द नारायण—अपने मिल के माल बेचने की एजंसी हैं।

मेसस गोवर्द्धनदास जयदेव

इस फर्म के मालिकों का खास निवासस्थान लोसल (जोधपुर स्टेट) में है। आप अग्रवाल वैश्य समाज के गोयल गौत्रीय सज्जन हैं। इस फर्म का स्थापन ४० साल पहिले सेठ गोवर्द्धनदासजी और जयदेवजी दोनों भाइयों ने किया। सेठ गोवर्द्धनदासजी ने इसके व्यापार को तरक्की दी। आप ८ साल पूर्व स्वर्गवासी हुए।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ जयदेवजी एवं सेठ गोवर्द्धनदासजी के पुत्र सेठ मोतीलालजी हैं। सेठ जयदेवजी ने ७ साल पूर्व यहाँ एक ऑइल मील तथा एक साल पूर्व जीनिंग फेक्टरी खोली है। आपके पुत्र किशनलालजी भी व्यापार में सहयोग लेते हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

चालीस गाँव—मेसर्स गोवर्द्धनदास जयदेव—इस नाम से ऑइल मील तथा जीनिंग फेक्टरी है। तथा तेल मुँगफली और खली का व्यापार होता है।

चालीस गाँव—मेसर्स गोवर्द्धनदास जयदेव—इस नाम से सराफी लेन-देन तथा चाँदी सोने का व्यापार होता है।

जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरीज़

अलादीन सोमजी जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी
इसुफ अली मुल्ला बदरुद्दीन जीनिंग फेक्टरी
गोवर्द्धनदास जयदेव जीनिंग फेक्टरी
तेजपाल गोविंदजी जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी
मनमाड मेन्युफेक्चरिंग जीनिंग प्रेसिंग फक्टरी
लक्ष्मी नारायण कॉटन मिल जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी

कपड़े के व्यापारी

मूलचंद भोपालचंद
रामकिशन पन्नालाल
सतोषचंद छोटेराम
हुकुमचंद नारायण एण्ड कम्पनी

अनाज किराने के व्यापारी

गनेशराम शिवबख्श
गोवर्द्धनदास मांगीलाल
रूपचंद रघुनाथ

चाँदी सोने के व्यापारी

गोवर्द्धनदास जयदेव
जसरूप सुरताजी

ऑइल मिल्स

गोवर्द्धनदास जयदेव ऑइल मिल
महम्मद हुसेन ऑइल मिल

जनरल मरचेंट

ईसुफ अली मुल्ला बदरुद्दीन

चोपड़ा

पूर्व खानदेश के उत्तरी किनारे पर होल्कर स्टेट का पहाड़ी नेमाड़ी प्रांत इस शहर से ५ मील उत्तर से आरंभ होता है। यहां घास तथा इमारती लकड़ी की आमद अधिक है। यहां करीब १० कॉटन जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरियां एवं ३।४ ऑइल मिल हैं। कपास के अलावा जुवार, बाजरी, गेहूं तथा मूँगफली की पैदावार होती है।

यह शहर धनवानो का शहर माना जाता है। खेती का कारबार करनेवाले बड़े बड़े साहुकार लोगों का यहां निवास है। यहां के व्यापारियों का संक्षेप परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स गुलाबचंद हीरालाल

इस फर्म का हेड ऑफिस धूलिया में है। अतः इसके व्यापार का विस्तृत परिचय धूलिया में चित्रों सहित छापा गया है। चोपड़े में यह फर्म रुई की खरीदी का व्यापार करती है।

सेठ नत्थूसा मोतीराम चोपड़ा खानदेश

सेठ द्वारकादास रामदास चोपड़ा (खानदेश)

सेठ मोतीलाल किशनलाल चोपड़ा (खानदेश)

मेसर्स गिरधर मोतीराम

इस फर्म के मालिक नागल (अलवर) निवासी अग्रवाल वैश्य समाज के गर्ग गौत्रीय सज्जन हैं। सेठ मोतीरामजी के हाथों से इस फर्म के व्यापार को विशेष उन्नति मिली। आपके चार पुत्र हुए सेठ सुंदरलालजी, पीताम्बरदासजी, गिरधरलालजी एवं जानकी रामजी। संवत १९४१ में आप लोग अलग २ हो गये।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ गिरधरजी एवं इनके पुत्र नंदलालजी हैं। आपके यहां कृषि का बहुत बड़ा काम-काज होता है। इसके अलावा सराफी लेन-देन का व्यापार होता है।

मेसर्स जानकीराम मोतीराम

यह फर्म गिरधर सेठ के छोटे भ्राता सेठ जानकीरामजी की है। आपके यहाँ भी खेती एवं साहुकारी लेनदेन का व्यापार होता है। वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ जानकीरामजी के पुत्र श्रीयुत् फकीरचन्दजी गर्ग हैं।

मेसर्स नत्थूसा मोतीराम

इस फर्म के मालिक आदि निवासी अहमदाबाद (गुजरात) के हैं। करीब ४।५ पीढ़ी पूर्व यह कुटुम्ब यहाँ आया। नत्थूसा सेठ ने इसके व्यापार को विशेष रूप से बढ़ाया। आपने चोपड़े में अच्छी ख्याति प्राप्त की। संवत् १९५६ में आपने यहाँ एक जीनिंग फेक्टरी मोल ली। आपका स्वर्गवास संवत् १९७३ की भादवा बदी ७ को हुआ।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक नत्थू सेठ के पुत्र नगीनदास सेठ एवं छगनलाल सेठ हैं। सेठ नगीनदासजी के पुत्र मगनलाल सेठ म्युनिसिपेलिटी के वाइस प्रेसिडेंट हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

चोपड़ा—मेसर्स नत्थूसा मोतीराम—यहाँ खेती तथा सराफी लेनदेन का काम होता है। इसी नाम की यहाँ एक जीनिंग फेक्टरी है।

मेसर्स माणकचंद रत्तीराम

इस फर्म का विस्तृत व्यापारिक परिचय अमलनेर में दिया गया है। इस फर्म का स्थापन सेठ डूंगरसीदासजी ने करीब १००।१२५ वर्ष पूर्व किया। आपके पश्चात् क्रमशः सेठ रत्तीरामजी एवं माणकचन्दजी ने व्यापार सम्हाला। सेठ माणकचन्दजी के बाद उनके दत्तक

पुत्र सेठ मोतीलालजी उर्फ प्रताप सेठ ने इस फर्म के व्यापार एवं नाम को बहुत चमकाया। आप खानदेश के नामी गरामी व्यापारी एवं अगेवान सद्गृहस्थ माने जाते हैं। चोपड़े में आपकी एक जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी है तथा खेती का बहुत बड़ा कारबार होता है। चोपड़े में आपकी सब से पुरानी एवं बड़ी दुकान है।

मेसर्स द्वारकादास रामदास

इस फर्म के मालिक काठियावाड़ निवासी दसा डीसावाल समाज के ब्रह्मादी गौत्रीय सज्जन हैं। पहिले आप लोग सिद्धपुर पाटन में निवास करते थे। गंगादास सेठ के समय से इस कुटुम्ब के इतिहास का पता लगता है। गंगादास सेठ के पुत्र सेठ तुलसीदासजी के ३ पुत्र हुए। जिनके नाम क्रमशः मोतीराम सेठ, दगडू सेठ एवं छगडू सेठ थे। मोतीराम सेठ के पुत्र नत्थूसा और रामदासजी थे। इनमें से रामदासजी ने इसके व्यापार को विशेष बढ़ाया। आप संवत् १९५३ में गुजरे। वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ द्वारकादास रामदास हैं। आपको भारत-भर में हथियार रखने का अधिकार है। आपकी फर्म यहाँ अच्छी प्रतिष्ठित मानी जाती है। आपने जलगाँव हास्पिटल तथा वाई गोरक्षण संस्था को सहायता दी है।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

चोपड़ा—मेसर्स द्वारकादास—यहाँ खेती तथा सराफी लेन-देन का कारबार होता है। तथा एक जीनिंग फेक्टरी है।

शिवपुर—मेसर्स द्वारकादास—यहाँ भी आपकी जीनिंग फेक्टरी है।

मेसर्स मोतीलाल किशनदास

इस फर्म के मालिकों का मूल निवास कंथराई (गुजरात) है। आपके मूल पुरुष सेठ गब्बू साकला हैं। आप ही देश से चोपड़ा आये थे। इनके बाद क्रमशः माणक सेठ, किशनदास सेठ एवं मोतीलाल सेठ ने व्यापार कार्य्य सम्हाला। किशनदास सेठ ने इस फर्म की खेतीबाड़ी एवं साहुकारी लेन-देन के काम को बढ़ाया और प्रतिष्ठा स्थापित की। आप संवत् १९८० के आषाढ़ मास में स्वर्गवासी हुए।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ मोतीलाल किशनदास हैं। आप दसा डीसावाल समाज के ब्रह्मादी गौत्रीय सज्जन हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

चोपड़ा—सेठ मोतीलाल किशनदास—खेती तथा साहुकारी लेनदेन का काम होता है। इसी नाम से आपकी यहाँ एक जीनिंग फेक्टरी है।

मेसर्स लालदास काशीदास

इस फर्म के मालिक कंथराई (गुजरात) निवासी दसा डीसावाल समाज के ब्रह्मादी गौत्रीय सज्जन हैं। करीब ४।५ पीढ़ी पूर्व सेठ गब्बू साकला यहाँ आये थे। इस फर्म के कारबार को काशीदास सेठ के हाथों से तरक्की मिली।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ हीरालाल लालदास हैं। आपने भी काम को पुनः तरक्की दी है। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

चोपड़ा—सेठ लालदास काशीदास—यहाँ खेती तथा सराफी लेन-देन का काम होता है। करीब ६ साल पहिले आपने एक जीनिंग फेक्टरी खरीद की है।

मेसर्स सतीदान फूलचंद

इस फर्म के मालिक खिचन (जोधपुर स्टेट) निवासी ओसवाल स्थानकवासी वैश्य समाज के सज्जन हैं। करीब ४० साल पहिले सेठ सतीदानजी के हाथों से यह फर्म स्थापित की गई। वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ सतीदानजी तथा आपके पुत्र फूलचंदजी एवं नथमलजी हैं। आपकी फर्म आरम्भ से ही चाँदी-सोना तथा कपड़ा का व्यापार करती है।

जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरीज

सेठ चतुर्भुज दुर्गादास जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी
" द्वारकादास रामदास जीनिंग फेक्टरी
" नत्थूराम मोतीराम जीनिंग फेक्टरी
" माणकचन्द रत्तीराम जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी
" महम्मद अली ईसाभाई जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी
" मोतीलाल किशनदास जीनिंग फेक्टरी
" लालदास काशीदास जीनिंग फेक्टरी

बैंकर्स

सेठ गिरधर मोतीराम
" गोवर्द्धनदास हरीदास
" जानकीराम मोतीराम
" द्वारकादास रामदास
" नत्थूसा मोतीराम
" माधवदास हीराचन्द पोद्दार
" माणकचन्द रत्तीराम
" सतीदान फूलचन्द
" सरवरलाल विठ्ठलदास पोद्दार

ऑइल मिल्स

गंगाधर बद्रीदास
दत्तात्रय वामन
नरोत्तम काशीदास
शंकर घोंड़े

क्लाथ मरचेंट्स

कन्हैयालाल गोवर्द्धनदास
गोवर्द्धनदास भिखारीदास
छतरमल बहादुरमल
देवचन्द हरीपाटील
फुलचन्द अगरचन्द
सवीदान फूलचन्द

गल्ला और किराना के व्यापारी

गोपालसा निमडूसा (गल्ला)
नत्थूलाल गोवूलाल (किराना)
नगीनदास नरसिहदास (किराना)

कॉटन मरचेंट्स

गुलाबचन्द हीरालाल
डोंगरसी देवराज
भूखनदास साखरलाल
मूलजी केशवजी

पाचोरा

जी. आई. पी. रेलवे की मेन-लाइन पर भुसावल और मनमाड के मध्य में यह स्थान है। यहाँ से जामनेर के लिये एक ब्रांच जाती है। इस स्थान पर करीब ७ जीनिंग और ५ प्रेसिंग फेक्टरियाँ तथा २।३ ऑइल मिल हैं। सींगदाणा तथा कपास का व्यापार इस स्थान पर मुख्य रूप से होता है। यहाँ के मेसर्स चावड़ा ब्रदर्स ने मुंगफली के बढ़ते हुए व्यापार से लाभ उठाने के लिये उनको फोड़ने की नई मशीन ईजाद कर अच्छी ख्याति एवं सम्पत्ति प्राप्त की है। यह स्थान पूर्व खानदेश प्रांत का एक ताल्लुका है। यहाँ के व्यापारियो का संक्षेप परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स कपूरचंद वच्छराज

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ कपूरचन्दजी ओसवाल स्थानकवासी जैन-समाज के सज्जन हैं। आपका मूल-निवास-स्थान भगवानपुरा। (उदयपुर स्टेट) में है। इस फर्म का स्थापन करीब ६० साल पूर्व सेठ वच्छराजजी ने खेड़गाँव (पाचोरा) में किया था। पहिले आप साधारण लेनदेन का काम काज करते थे। व्यवसाय की तरक्की भी आपके ही हाथों से प्राप्त हुई। आपने १८ हजार की लागत से पाचोरे में एक जैन पाठशाला का स्थापन किया। करीब ३ साल पहिले आपने वच्छराज रूपचन्द जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी की स्थापना की। आपका स्वर्गवास ७।८ साल पूर्व हुआ।

फर्म के वर्तमान संचालक हैं। आपके हाथों
ो गये हैं। आप पाचोरे में अच्छे प्रतिष्ठित
स प्रकार है।
कमीशन का व्यापार होता है। तथा वच्छ-
न्द एवं पूरनमल सुगनमल के नाम से जीनिंग
्टरियाँ हैं।
-इस नाम से आपकी जीन फेक्टरी है।

शिवसहाय
इसके व्यापार का विस्तृत परिचय मालिकों
धूलिये में यह फर्म वम्बई, कानपुर,
खरीदी एवं आढ़त का काम करती है।
ल चालू की है तथा सफलता के साथ
ल का माल सी० पी०, कलकत्ता आदि

र्दर्स

करने के लिये आपका एक स्टाक हमेशा सफर करता रहता है। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

पाचौरा – मेसर्स—चावड़ा ब्रदर्स—यहां सींगदाणा फोड़ने की मशीन, बैल से एवं पावर से चलने वाली चक्की, रहट, चने की दाल साफ करने की मशीन एवं जुवारी निकालने की मशीन तयार की जाती है, एवं बिकती है। श्रीराम आयर्न वर्कस के नामसे कृष्णापुरी पर आपका वर्कशाप है।

जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी

मेसर्स कपूरचंद वच्छराज प्रेस फेक्टरी
,, गोविन्दजी वीरमजी जीनिंग प्रेसिंग-फेक्टरी
,, कीलाचन्द देवचन्द प्रेसिंग फेक्टरी
,, वच्छराज रूपचंद जीनिंग फेक्टरी
,, भीकचन्द साकलचन्द फेक्टरी
,, रतनजी वीरम जीन फेक्टरी
,, शंकर तोताराम जीनिंग फेक्टरी
,, सोला कोठी जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी
,, हीरालाल रामनारायण जीनिंग फेक्टरी

ऑइल मिल्स

मेसर्स चुन्नीलाल शिवसहाय ऑइल मिल्स
,, हीरालाल रामनारायण ऑइल मिल्स

बैंकर्स

दि पूर्व खानदेश कोआपरेटिव बैंक्स
दि लैंड मार्गेज कोआपरेटिव बैंक

कपास के व्यापारी

मेसर्स कपूरचंद वच्छराज
,, आनन्द हेमराज
मेसर्स जेवत तेजपाल
,, नथमल दानाजी
,, लालजी पासू
,, वालजी दामजी

ग्रेन मर्चेण्ट्स

मेसर्स केशवलाल मूलचन्द
,, घासीराम हरगूलाल
,, छोटेलाल सूरजमल
,, लल्लू भाईचन्द (किराना)

कपड़े के व्यापारी

मेसर्स कन्हैयालाल उदयराम
,, नथमल साकलचन्द

कटलरी

मेसर्स रसूल भाई तय्यबअली
,, वल्लभदास गिरधारीलाल

मिशनरी मरचेंण्ट

मेसर्स चावड़ा ब्रदर्स (सींगदाणा मशीन)
,, एस. एम. पटेल एण्ड कम्पनी (जिन ऑइल मिल प्रेस)
,, नथमल वनराज एण्ड कम्पनी

भुसावल

यह स्थान जी० आई० पी० रेलवे का बड़ा भारी जंकशन है। यहाँ रेलवे का बहुत बड़ा वर्कशाप है। यहाँ से बम्बई, खंडवा, नागपुर एवं अमलनेर की ओर गाड़ियाँ जाती हैं। इस स्थान पर करीब ४।५ जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरियाँ एवं २ ऑइल मिल हैं। यह शहर बरार, खानदेश तथा नीमाड़ तीनों प्रान्तों की हद पर बसा है। यहाँ से बम्बई इलाका आरंभ होता है। रेलवे वर्कशाप के कारण ही यहाँ के व्यापार में गति विधि रहती है यहाँ के व्यापारियों का संक्षेप विवरण इस प्रकार है।

मेसर्स गुलाबचंद नारमल

इस फर्म के मालिक पीही (जोधपुर स्टेट) निवासी ओसवाल श्वेताम्बर समाज के स्थानक वासी जैन सज्जन हैं। सेठ नारमलजी के हाथों से करीब १०० वर्ष पूर्व इस फर्म का स्थापन हुआ। सेठ नारमलजी के पश्चात् उनके पुत्र सेठ गुलाबचन्दजी ने इस फर्म के व्यापार को विशेष तरक्की पर पहुँचाया। आपका स्वर्गवास सन् १९२४ के मार्च मास में हुआ। आप अपने स्वर्ग-वासी होने के समय १९।२० हजार का दान कर गये थे। इस रकम में से ५।६ हजार की लागत से एक धर्मशाला पीही में बनवाई गई।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक बाबू नारमलजी के छोटे भ्राता श्रीपन्नालालजी बंब एवं सेठ गुलाबचन्दजी के पुत्र भेरूलालजी एवं सरूपचन्दजी बंब हैं। श्रीभेरूलालजी बंब ८ सालों से म्युनिसिपैलिटी के मेम्बर हैं। आपकी ओर से भूराबाई श्राविकाश्रम एवं पद्मावाई कन्या शाला को भी सहायता दी गई है। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

भुसावल—मेसर्स गुलाबचन्द नारमल—साहुकारी लेन देन और खेती का काम होता है।

भुसावल—मेसर्स पन्नालाल नारमल—सराफी दुकान है।

मेसर्स पूनमचन्द ओंकारदास

इस फर्म के मालिक जेतारण (जोधपुर) निवासी ओसवाल समाज के स्थानकवासी जैन सज्जन हैं। करीब १२५ वर्ष पूर्व सेठ ओंकारदासजी के पितामह बामणोद (भुसावल) आये थे। सेठ ओंकारदासजी के समय में फर्म की व्यापारिक वृद्धि हुई।

वर्तमान में इस दुकान के मालिक बाबू पूनमचन्दजी हैं। आप खानदेश ओसवाल शिक्षण संस्था के महामंत्री तथा म्युनिसिपैलेटी के वाइस प्रेसिडेंट है। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

भुसावल—मेसर्स पूनमचन्द ओंकारदास—यहाँ साहुकारी लेनदेन एवं कृषि का काम होता है।

मेसर्स मानमल चाँदमल

इस दुकान के मालिक श्री केसरीचन्दजी पर्वतसर (जोधपुर स्टेट) निवासी ओसवाल स्थानकवासी जैन समाज के सज्जन हैं। यह दुकान जी० आई० पी० रेलवे के चालू होने के समय से यहाँ चालू है। मानमलजी एवं चाँदमलजी के समय में इस दुकान ने अच्छी उन्नति की थी। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

भुसावल—मानमल चाँदमल—लेन देन का काम होता है।

फैजपुर—चाँदमल केशरीमल—कपास अनाज और आढ़त का कारबार होता है।

बोदवड़—मानमल चाँदमल—आढ़त और कपास का व्यापार होता है।

जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी

इण्डिया कॉटन प्रेस फेक्टरी

गामडिया जीन प्रेस फेक्टरी

मेहता श्रीराम कम्पनी जीन फेक्टरी

ऑइल मिल्स

पूसाराम छगनलाल ऑइल मील

मदनमोहन ऑइल मील

कपड़े के व्यापारी

औंकारदास लक्ष्मीचंद

कल्यानमल पूनमचंद

पृथ्वीराज लक्खीचंद

राजमल चाँदमल

गल्ले के व्यापारी और आढ़तिया

अमरचंद हजारीमल

मूलचंद रामदयाल

रतनलाल हरभगत

कटलरी

इसमाइलजी गुलामहुसैन

हसनअली मोहम्मदअली

चाँदी सोने के व्यापारी

औंकारदास वल्लभदास

कन्हैयालाल विट्ठलदास

पन्नालाल नारमल

किराने के व्यापारी

जयनारायण कन्हैयालाल

रघुनाथ भोजराज राठी

बुरहानपुर

जी० आई० पी० रेलवे की मेन लाइन पर खंडवा और भुसावल के मध्य बसी हुई यह बहुत पुरानी बस्ती है। सन् १४०० ईस्वी के लगभग फारूखी वंश के द्वितीय बादशाह नासिर खाँ ने अपने गुरू बुरहानुद्दीन की आज्ञा से इस शहर की नीव डाली थी। ३०० वर्षों तक यह शहर अमीर उमरावों, नवाब, शाहजादों, विद्वानों और पंडितों का विलास स्थान रहा। उन दिनों इस स्थान को "दारूर सुरुख" अर्थात् आनन्दालय के नाम से पुकारते थे। उस समय यहाँ का बना कलाबत्तू कारचोब तथा कीनखाब का सामान और ऊनी माल, अरबस्तान, पेलेस्टाइन, यूरोप, सीरिया आदि देशों में जाता था।

वर्तमान में टूटी फूटी चहारदीवारी से घिरा हुआ यह ऐतिहासिक नगर अपनी वृद्धावस्था के दिन देख रहा है। आरंभ से ही मुसलमानी आधिपत्य रहने के कारण आज भी मुसलमान समाज का यहाँ बहुत दौरदोरा है। शहर के बीचो बीच बनी हुई जुम्मामस्जिद की विशाल इमारत दर्शनीय है।

इस शहर की व्यापारिक जातियों में प्रधानता बोहरा और गुजराती समाज है। इस समय यहां रुई का व्यापार प्रधान है। १ कॉटनमिल १३ जीनिंग और ५ प्रेसिंग फेक्टरियां इस शहर में हैं। रुई के अलावा बुरहानपुरी हाथ की बनी साड़ियां और कलाबत्तू का सामान भी बाहर जाता है। इधर ३।४ सालों से मुंगफली की पैदावार यहाँ बहुतायत से होती है। गल्ला यहाँ ज्यादातर नीमाड़, पंजाब, सी० पी० आदि से आता है। इस शहर की मनुष्य संख्या ३५ हजार के लगभग है। यहाँ के व्यापारियों का संक्षेप परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स नानाभाई गोविंदजी

इस फर्म के पूर्वज करीब २०० वर्ष पूर्व गुजरात से यहाँ आये थे। करीब ५-६ पीढ़ी पूर्व से इस कुटुम्ब के व्यवसाय का विकास आरंभ होता है। सेठ टीकमदासजी के समय से इस फर्म के व्यापार को प्रोत्साहन मिला। सेठ गोवर्द्धनदासजी तथा सेठ टीकमदासजी दोनों भाई भाई थे। आप दोनों सज्जनों का स्वर्गवास हो चुका है।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक गोवर्द्धनदास सेठ के पुत्र सेठ ठाकुरदासजी एम० एल० सी०, सेठ बालचंदजी तथा सेठ टीकमदास सेठ के पुत्र सेठ श्रीकृष्णदास हैं।

सेठ ठाकुरदासजी एम० एल० सी० के हाथों से इस फर्म के व्यापार की बहुत बड़ी तरक्की हुई है। आपकी फर्म बुरहानपुर में कॉटन तथा बैङ्किङ्ग व्यवसाय करने वाली फर्मों में अच्छी आदरणीय समझी जाती है। इस फर्म के सफल संचालक ठाकुरदास सेठ सामाजिक एवं गवर्नमेंट के कार्यों में भी अच्छी प्रतिष्ठा रखते हैं। सन् १९१८ से आपका सार्वजनिक जीवन आरंभ होता है। उन दिनों बुरहानपुर में होनेवाली प्राविंशियल कान्फ्रेंस की स्वागत-कारिणी समिति के आप अध्यक्ष रहे थे। असहयोग आन्दोलन के समय भी आपने विशेष भाग लिया था। सन् १९२६ में आप नीमाड़ की ओर से सी० पी० कौंसिल के मेम्बर निर्वाचित हुए हैं। वर्तमान में आप वहाँ के सेकंड क्लास ऑनरेरी मजिस्ट्रेट पद पर हैं, तथा स्थानीय म्युनिसिपैलेटी में गवर्नमेंट की ओर से मेम्बर चुने गये हैं। इसके अलावा बुरहानपुर लोकल बोर्ड एवं नीमाड़ डिस्ट्रिक्ट कौंसिल के आप वाइस चैयरमैन हैं। आपके छोटे भ्राता सेठ बालचंद, ताप्ती मिल बुरहान पुर के डायरेक्टर हैं।

आपकी फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

बुरहानपुर—मेसर्स नानाभाई गोविन्द जी चौक } यहाँ प्रधानतया बैङ्किग व्यापार होता है।

बुरहानपुर—श्रीकृष्ण राधाकिशन कम्पनी } इस फर्म पर रुई एवं आढ़त का व्यापार होता है।

बुरहानपुर—श्रीकृष्ण जीनिंग प्रेसिङ्ग फेक्टरी } इस नाम से आपकी कॉटन जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी सन् १९०१ से काम कर रही है।

बुरहानपुर—बालचन्द गोवर्द्धनदास—सराफी कामकाज होता है।

खंडवा—श्रीकृष्ण गोपालदास—रुई का व्यापार होता है।

हरसूद (नीमाड़) बालचन्द ठाकुरदास— ,, ,,

जलगाँव—मोहनलाल नानाभाई— } काटन तथा सराफी का व्यवसाय एवं काश्तकारी का काम होता है।

मेसर्स टीकमदास हरीदास

इस फर्म के मालिक १५०।१७५ वर्षों से यहीं निवास करते हैं। हरीदास सेठ के समय इनके यहाँ रेशम का व्यापार होता था। इनके पश्चात् क्रमशः सेठ टीकमदास तथा सेठ लखमी दास ने कार्य संभाला। वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ मथुरादास और सेठ गोवर्द्धनदास हैं। सेठ मथुरादास तात्पी मिल के डायरेक्टर हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

बुरहानपुर—टीकमदास हरीदास राजपुरा—बैङ्किंग व्यापार होता है।

बुरहानपुर—श्रीबलदेव जीनिंग फेक्टरी—कॉटन जीनिग होता है।

इन्दौर—गोवर्द्धनदास लखमीदास बजाज खाना—कपड़े का व्यापार होता है।

बम्बई—गोवर्द्धनदास लखमीदास मारवाड़ी बाजार—आढ़त का काम होता है।

मेसर्स मोहम्मद् अली ईसा भाई

इस फर्म का हेड ऑफिस धरनगांव स्टेशन इरंडोल रोड में है। आपकी संवत् १९७२ में यहां जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी स्थापित हुई। यह फर्म प्रधानतया रुई का व्यापार करती है। धरनगांव में इस फर्म को स्थापित हुए करीब ३५ वर्ष हुए।

मेसर्स हीराचंद् नंदराम

इस फर्म का स्थापन १०० वर्ष पूर्व सेठ हीराचंदजी के हाथों से हुआ था। आप सरावगी जैन समाज के सज्जन हैं। आरंभ से ही यह फर्म गल्ला तथा आढ़त का काम कर रही है। इसके वर्तमान मालिक सेठ बंशीलाल जी हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

बुरहानपुर—मेसर्स हीराचंद नंदराम चौक-गल्ला और आढ़त का काम होता है।

फैक्टरीज़ एण्ड इंडस्ट्रीज़

काटनमिल

श्रीतापी स्पीनिंग एण्ड वीविंग मिल्स कम्पनी लिमिटेड—एजंट कावसजी दीनशा एण्ड ब्रदर्स बम्बई

जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी

श्रीकृष्ण जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी
श्रीबलदेव जीनिंग फेक्टरी
नोमानभाई मुल्लां बदरुद्दीन जीनिंग प्रेसिंग फे०
महम्मदअली ईसाभाई जीनिंग फेक्टरी
किशनदास ठाकुरदास जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी
रामकृष्ण जीनिंग फेक्टरी
अकबर कॉटन जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी
फरुखदीन मुल्ला मोटाभाई जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी लालगाँव

बैंकर्स

मेसर्स नानाभई गोविंदजी
,, गोविंदराम द्वारकादास राजपुरा
,, मथुरादास लखमीदास ,,
,, केवलदास वल्लभदास

कॉटन मरचेंट्स

मेसर्स श्रीकृष्ण राधकिशन चौक
,, टीकमदास हरीदास राजपुरा
,, नोमानभाई मुल्लां बदरुद्दीन
,, हुसनअली सरफअली ईदगाह
,, किशनदास ठाकुरदास लालबाग
,, उद्धवजी वेलजी सनवारा
,, जीवनदास देवचन्द
,, सुहणमल गुलजारीमल
,, हंसरामदास इन्दरसेन
,, मोहनलाल सिद्दसा सिधीपुरा

ग्रेन मरचेंट्स एण्ड कमीशन एजंट्स

मेसर्स हीराचन्द नंदराम
,, हाजी करीम नूरमहम्मद
,, गोवर्द्धनदास रामदास सिंधीपुरा
,, लालदास रघुनाथदास
,, सोभागमल गुलजारीमल
,, कस्तूरचन्द बंशीलाल चौक

मेसर्स भगवानदास जतनचन्द ,,
,, ठाकुरदास मन्नलाल ,,
,, रामचन्द पूनमचन्द ,,
,, अम्बालाल पन्नालाल ,,

क्लॉथ मरचेंट्स

मेसर्स जीतमल किशनचन्द लालबाग
,, जगरसा विट्ठलदास बजाजखाना
,, बृजलाल किशनदास ,,
,, मनीराम मोतीराम ,,
,, भाऊसेठ मयाराम नागझिटी

विदेशी कम्पनियाँ

मेसर्स वालकट ब्रदर्स एजंसी
,, रायली ब्रदर्स एजंसी
,, टोयो मेनका केशा एजंसी (सीजन टाइम के लिये)
,, गोसो काबूसी केशा

लोहा और हार्ड वेअर मरचेंट्स

मेसर्स अब्दुल हुसेन लुकमानजी
,, गनपत रामाजी सेठ

किराने के व्यापारी

मेसर्स करीम नूर कच्छी

हैदराबाद और हैदराबाद स्टेट

HYDRABAD
&
HYDRABAD STATE

हैदराबाद

ऐतिहासिक परिचय

जिस विस्तृत स्थान में इस समय हैदराबाद का राज्य है, अत्यन्त प्राचीन काल में वहाँ द्रविड़ राजाओं का राज्य था। पर इस सम्बन्ध में अब तक ठीक २ ऐतिहासिक प्रमाण नहीं मिले हैं। ईसवी सन् पूर्व २७२ से २३१ वर्ष तक इस प्रान्त पर सम्राट् अशोक का अखण्ड शासन था। इसके बाद यहाँ एक के बाद एक तीन हिन्दू राज्यवंशों ने राज्य किया। तेरहवीं सदी के अन्त में अलाउद्दीन खिलजी की अधीनता में मुसलमानों ने इस प्रान्त पर हमले शुरू किये। वे लगातार दक्षिण के हिन्दू राजाओं से लड़ते रहे। आखिर में सम्राट् औरङ्गजेब ने अपनी ताकत के जौहर दिखलाए और उसने दक्षिण हिन्दुस्तान का बहुत सा हिस्सा फतह कर लिया और दक्षिण में आसफ खाँ नामक अपने बहादुर सिपहसालार को "निजामउल-मुल्क" का खिताब देकर दक्षिण का सूबेदार नियुक्त किया। यह कहने की आवश्यकता नहीं कि आसफ खाँ जंग के मैदान में जैसे बहादुर थे, वैसे ही बुद्धिमान और दूरदर्शी राजनीतिज्ञ भी थे।

सम्राट् औरङ्गजेब की मृत्यु के बाद जब मुगल साम्राज्य अन्तिम साँसें गिन रहा था; जब वह मृत्यु की शय्या पर पड़े २ आखिरी दम ले रहा था, उस समय उस स्थिति का फायदा उठा कर आसफ खाँ ने अपने स्वातन्त्र्य की घोषणा कर दी। इस समय दिल्ली की हुकूमत बहुत कमजोर पड़ गई थी। उधर दिल्ली के बादशाह ने खानदेश के सूबेदार को हुक्म दिया कि वह आसफ खाँ पर फौजी चढ़ाई कर दे। ऐसा ही हुआ। लेकिन उसमें बादशाह को उलटे मुँह की खानी पड़ी। लड़ाई में आसफ खाँ की जीत हुई। बस उनकी स्थिति और भी मजबूत हो गई। आसफ खाँ ने हैदराबाद को अपने राज्य की राजधानी बनाई। उन्होंने अपने निज का राज्य कायम कर दिया। वर्तमान हैदराबाद निजाम उन्हीं आसफ खाँ के वंशज हैं।

इसवी सन् १७४८ मे आसफ खाँ की मृत्यु हो गई। इनकी मृत्यु के बाद इनके भतीजे मुजफ्फरजंग फ्रेञ्च लोगों की सहायता से गद्दी पर बैठे। पर कुछ ही समय बाद ये मार डाले गये।

इसके बाद फ्रेंचों ने निजाम-उल-मुल्क आसफ खाँ के तीसरे पुत्र सलाबतजंग को हैदराबाद का निजाम घोषित कर दिया।

यह कहने की आवश्यकता नहीं कि, जबसे सलाबतजंग हैदराबाद की मसनद पर बैठे तब से वहाँ फ्रेंचों का खूब दौर-दौरा था। वहाँ जो कुछ वे चाहते थे वही होता था। पर क्लाइव की तेज गतिविधि ने फ्रेंचों का ध्यान उन प्रान्तों की ओर विशेष रूप से खींचा, जो उन्होंने पहले फतह किये थे।

ईसवी सन् १७८० के लगभग कुछ ऐसी घटनाएँ हुईं, जिन्होंने हैदराबाद के भविष्य पर बड़ा प्रभाव डाला। उन घटनाओं का संक्षिप्त सारांश इस प्रकार है—"मैसूर के सुलतान हैदरअली की मृत्यु हो जाने पर उनका पुत्र टिपू सुल्तान गद्दी-नशीन हुआ। इसने आसपास के उस मुल्क पर जिन पर अँग्रेजों ने अधिकार कर रक्खा था तथा हैदराबाद राज्य के प्रान्तों पर हमले करने शुरू कर दिये। इससे टिपू के खिलाफ अंग्रेज और हैदराबाद के निजाम मिल गये। दोनों ने टिपू को अपना दुश्मन मान कर उस पर संयुक्त आक्रमण (Combined attack) करने का निश्चय किया। पर टिपू के पास भी बहुत बड़ी सेना थी, इसके अतिरिक्त वह रण-कुशल भी था। अतएव बहुत दिनों तक वह ज्यों त्यों मुकाबला करता रहा। पर चारो ओर उसके दुश्मन थे। एक ओर तो मराठे उसके नाकों दम कर रहे थे, दूसरी ओर अंग्रेज और हैदराबाद के निजाम उसकी छाती पर मूँग दल रहे थे। अन्त मे ईसवी सन् १७९८ में टिपू सुल्तान अंग्रेजों से हार गया और वह लड़ता हुआ एक बहादुर सिपाही की तरह युद्ध में मारा गया। इस समय विजेताओं के हाथ जो मुल्क लगा, उसमें २४०००००) प्रति साल आमदनी का मुल्क हैदराबाद निजाम के हिस्से में आया। लॉर्ड वेलेस्ली, जो उक्त युद्ध मे ब्रिटिश फौजों का सञ्चालन कर रहे थे। लिखते हैं—"It would have been impossible to conquer the dominions of Tippu had it not been for the active support and co-opration of Nigamali. अर्थात् अगर निजामअली की सहायता और सहयोग न मिलता तो टिपू सुल्तान का मुल्क जीतना असम्भव होता।

पाठक जानते हैं कि टिपू का बहुत सा मुल्क निजाम साहब के हिस्से में आया था। पर यह उनके हाथ में न रहने पाया। ब्रिटिश कूटनीति (British Diplomacy) ने उसे उनके हाथ से ले लिया। निजाम पर अतिरिक्त फौजी खर्च का भार लाद कर उनसे वह मुल्क ले लिया गया जो टिपू से उन्हे प्राप्त हुआ था। इस तरह सहज ही में कोई २४००००) आमदनी का मुल्क निजाम के हाथों से चला गया।

इसके तीन वर्ष बाद निजाम ने बरार के राजा के खिलाफ अंग्रेजों की मदद की। इसके बदले में उक्त राजा से जीते हुए मुल्क का एक हिस्सा निजाम को भी मिला।

इस प्रकार कई प्रकार के चढ़ाव उतार तथा परिवर्तन देख कर हैदराबाद के तत्कालीन निजाम अली का ई० सन् १८०३ में देहान्त हो गया। आपके बाद सिकन्दर खाँ गद्दी पर बैठे। इनको शासन के लिए अयोग्य समझ कर अंग्रेजों ने राज्य-शासन का सूत्र चलाने के लिए चन्दूलाल नामक कायस्थ को नियुक्त किया।

ई० सन् १८२९ में निजाम सिकन्दर का देहान्त हो गया। उनके बाद उनके सबसे बड़े पुत्र नासिरुद्दौला मसनद पर बैठे। इस वक्त चन्दूलाल ही हैदराबाद के प्रधान मन्त्री थे। उन्होंने कर वसूली का काम अपने ही आदमियों के सुपुर्द रखा था। इससे खजाने में हानि पहुँचने लगी। थोड़े ही समय के बाद चन्दूलाल की मृत्यु हो गई। चन्दूलाल का नाम आज भी हैदराबाद में मशहूर है। कहा जाता है कि उन्होंने एक प्रकार हैदराबाद पर राज्य किया। आज भी वहाँ "चन्दूलाल का हैदराबाद" की कहावत मशहूर है। यद्यपि चन्दूलाल के शासन में कई दोष थे, उनकी कई बातें निन्दास्पद थीं, पर उन्होंने कुछ ऐसी बुद्धिमत्ता के काम भी किये थे, जिन्हें उनके बाद आनेवाले मन्त्रियों ने प्रशंसा की दृष्टि से देखा है।

ई० सन् १८५३ में हैदराबाद के जिम्मे अंग्रेज सरकार ने एक बड़ी रकम पावना निकाली और इसके बदले में निजाम सरकार को बरार प्रान्त अंग्रेज सरकार के पास गिरवी रखना पड़ा। इस सम्बन्ध में अधिक प्रकाश वर्तमान निजाम महोदय के उस पत्र मे मिलेगा, जो अभी उन्होंने प्रकाशित किया है। यह कहने की आवश्यकता नहीं कि बरार के चले जाने से निजाम को हार्दिक दुःख और असाधारण मानसिक कष्ट हुआ।

ई० सन् १८५३ में हैदराबाद के दिन कुछ फिरे और सालारजंग नामक एक अत्यन्त अनुभवी और योग्य सज्जन वहाँ के दीवान बनाये गये। सर सालारजंग ने राज्य के भिन्न २ शासन-विभागों को सुसङ्गठित किया। इन्होने राज्य का इतना अच्छा इन्तजाम किया कि पहले की गड़बड़ और अशान्ति बहुत कुछ मिट गई। चारों ओर अशान्ति और अव्यवस्था के बदले शान्ति और व्यवस्था का साम्राज्य हो गया। उन्होने पुलिस-विभाग को इतना सुधारा कि वहाँ जो चोरियाँ और डकेतियाँ नित्य की घटनाएँ हो गई थीं, वे बहुत कुछ मिट गई। रिश्वतखोरी भी पहले से कम हो गई। उन्होने बड़ी मजबूती के साथ चोर और डाकू कौमों को हैदराबाद रियासत में बसने से रोका। आपके सुशासन की वजह से राज्य की आमदनी भी बढ़ी। लोगों की सुख-समृद्धि में भी बहुत उन्नति हुई। ये सब बातें देख कर निजाम साहब ने आपके अधिकार बहुत कुछ बढ़ा दिये। इसी समय हैदराबाद के तत्कालीन निजाम नासिरुद्दौला का देहान्त हो गया और उनके पुत्र आसफुद्दौला मसनद पर बैठे। इनके मसनद पर बैठते ही सन् १८५७ के प्रख्यात सिपाहीविद्रोह की आग ने सारे भारतवर्ष में सनसनी पैदा कर दी। ब्रिटिश राज्य की जड़ हिलने लगी। ऐसे कठिन और

विपत्ति के समय में निजाम महोदय ब्रिटिश सरकार के मित्र बने रहे। उन्होंने इस समय अपनी फौजों द्वारा ब्रिटिश सरकार की पूरी २ सहायता की। इस पर प्रसन्न होकर ब्रिटिश सरकार ने निजाम के साथ एक नयी सन्धि की। इसमें नालडंग और रायपुर का दुआब प्रान्त, जिसकी आमदनी लगभग २०००००० है, निजाम महोदय को वापस लौटा दिया गया। इसके अतिरिक्त उन्हें ५०००००० का कर्ज भी माफ कर दिया गया। हाँ, बरार प्रान्त लौटाने की इस समय भी उदारता न दिखलाई गई। उसे ब्रिटिश सरकार ने बतौर ट्रस्ट के रखा !! जब विद्रोहाग्नि शान्त हो गई, तब तत्कालीन बड़े लाट लॉर्ड केनिंग ने तत्कालीन निजाम और उनके सुयोग्य दीवान सर सालारजंग को इस महान् सहायता के बदले में, जो उन्होंने इस भीषण विपत्ति के समय ब्रिटिश सरकार को दी थी, हार्दिक धन्यवाद दिया और उनके बड़े उपकार माने। इतना ही नहीं, लॉर्ड केनिंग ने भारत सरकार की ओर से निजाम को १०००००) भेंट किये तथा उच्च उपाधियों द्वारा उनका और सर सालारजंग का सम्मान किया। सर सालारजंग को भी ब्रिटिश सरकार की ओर से ३००००) का पुरस्कार मिला।

ईसवी सन् १८६९ में निजाम आसफुद्दौला साहब की भी मृत्यु होगई। आप के बाद हैदराबाद के भूतपूर्व निजाम प्रिन्स महबूब अलीखाँ बहादुर हैदराबाद की मसनद पर बैठे। इस समय आपकी अवस्था केवल तीन वर्ष की थी। अतएव भारत सरकार ने हैदराबाद के शासन का सारा भार सर सालारजंग पर रखा। आपकी सहायता के लिये "कौंसिल ऑफ रिजेन्सी" भी रक्खी गई।

यहाँ फिर यह बात कह देना आवश्यक है कि हैदराबाद के शासन-कार्य्य में सर सालारजंग ने जिस अपूर्व योग्यता, असाधारण राजनीतिज्ञता और अलौकिक बुद्धिमता का परिचय दिया उसे देख कर बड़े २ अंग्रेज राजनीतिज्ञ दाँतों अंगुली दबाते हैं। एक सुप्रख्यात अंग्रेज राजनीतिज्ञ ने तो यहाँ तक कह दिया कि, संसार में अब तक सर सालारजंग और सर० टी० माधवराव जैसे राजनीतिज्ञ पैदा नहीं हुए। निजाम महोदय ने भी आपका आप के योग्यतानुरूप ही सत्कार और सम्मान रक्खा।

ईसवी सन् १८८४ की ५ फरवरी में श्रीमान् निजाम महोदय को राज्य के पूर्ण अधिकार प्राप्त हुए।

मगर ईसवी सन् १९११ के अगस्त मास में इन निजाम महोदय को अकस्मात् लकवा मार गया और उसीसे आप इहलोक छोड़ने में विवश हुए।

आपके बाद वर्तमान निजाम नवाब उस्मान अली खाँ बहादुर मसनद पर बैठे। आपका जन्म ई० स० १८८६ में हुआ था। आप का बचपन प्रायः महलों ही में व्यतीत हुआ। पर जब आपने युवावस्था में पैर रखा, तब आपकी शिक्षा का भार मि. ब्रायन ईगर्टन (Brien

Egerton) नामक एक उच्च-कुलोत्पन्न अंग्रेज के हाथ सौंपा गया। निजाम महोदय ने अंग्रेजी की अच्छी योग्यता प्राप्त कर ली। नवाब इमाद-उल-मुल्क नामक एक विद्वान मुसलमान सज्जन से आपने फारसी, अरबी और हिन्दुस्थानी भाषाओं में भी अच्छी पारदर्शिता प्राप्त कर ली।

ई० स० १९२६ में निज़ाम महोदय ने बरार का प्रश्न बड़े जोर से उठाया और इस सम्बन्ध में उन्होंने समाचार पत्रों में अपना एक लम्बा चौड़ा वक्तव्य प्रकाशित किया। तत्कालीन वाइसराय लॉर्ड रीडिंग ने इसका कड़ा उत्तर दिया, जो समाचार पत्रों में यथासमय प्रकाशित हो चुका है।

व्यापारिक और औद्योगिक परिचय

यह कहने की आवश्यकता नहीं कि, प्राचीन काल से अद्भुत कला-कौशल के लिये इस प्रान्त की कीर्ति ठेठ मिश्र, ग्रीस और इरान तक फैली हुई थी। इस प्रान्त में सोने और चाँदी के काम किये हुए बढ़िया वस्त्र, बढ़िया मलमलें, मुलायम रेशम आदि कई काम बनते थे। इनकी सुन्दरता से तत्कालीन संसार मोहित था। यद्यपि कालचक्र के परिवर्तन से इस वक्त वहाँ इतनी बढ़िया चीजें तैयार नहीं होती हैं, पर फिर भी समयानुसार यहाँ उद्योग-धन्धों और कलाकौशल की सन्तोषकारक उन्नति हो रही है। इस वक्त हैदराबाद राज्य में रूई की कोई ८० जीनिंग फेक्टरियाँ हैं। तीन बड़े २ कपड़ों के मिल्स हैं तथा ६२ आटे की मिल्स हैं। इसके अतिरिक्त ३३ चांवल निकालने के मिल, एक सिल्क के केवलु बनाने की तथा एक बर्फ की फेक्टरी है। यहाँ एक आयर्न फाउण्डरी भी है। तथा वाटरपम्पिंग स्टेशन भी है। यहाँ सोने और चाँदी के बढ़िया तार तैयार होते हैं। कसीदे का काम भी यहाँ गजब का होता है। पिताम्बर की कीमत ५००) तक रहती है। और भी कई प्रकार के यहाँ बढ़िया काम होते हैं।

हैदराबाद राज्य के उद्योग-धन्धों को उत्तेजन देने के सदुद्देश से श्रीमान् निज़ाम ने ई० सन् १९१७ मे वहाँ तैयार होनेवाली वस्तुओ की एक प्रदर्शिनी की थी। इसी समय हैदराबाद के कई अनुभवी सज्जनों ने इस विषय पर कई पुस्तिकाएँ प्रकाशित की थीं कि वहाँ कौन कौन से उद्योग-धन्धों के साधन हैं और वे किस प्रकार सफलतापूर्वक चल सकते हैं। इसी समय यह बात भी प्रकाश में आई थी कि, सारा भारतवर्ष जितना तिलहन विदेशों को भेजता है उसका ⅓ हिस्सा केवल हैदराबाद से जाता है।

हैदराबाद से प्रति साल ७,००,००,०००) रुपयों की रुई बाहर जाती है। इतना होते हुए भी वह एक साल में २,२३,२८,०००) रुपयों का रुई का तैयार और पक्का माल भी बाहर भेजता है। यहाँ से प्रति साल लाखों रुपयों की ऊन भी यूरोप को भेजी जाती है। अगर इसी ऊन का यहीं पक्का माल तैयार किया जावे तो रियासत को बहुत बड़ा फायदा हो सकता है।

ईस्वी सन् १९१६-१७ में हैदराबाद में १९३१०,०००) रुपयों के माल का कारबार हुआ। वहाँ उद्योग-धन्धों और व्यापार का एक खास महकमा भी है। वहाँ के औद्योगिक और व्यापारिक विकास के लिये प्रयत्न करना उसका प्रधान कार्य्य है। उद्योग-धन्धों की उन्नति रेल्वे के प्रचार पर भी बहुत कुछ निर्भर है, अतएव निजाम साहब अपने राज्य में रेल्वे को भी बढ़ा रहे हैं। ईस्वी सन् १९२० में वहाँ की रेल्वे का विस्तार ९१० मील था। वहाँ बड़ी लाईन भी है। स्टेट को रेलवे से अच्छा मुनाफा होता है।

हैदराबाद में कई सार्वजनिक पुस्तकालय भी हैं। वहाँ के सबसे प्रधान पुस्तकालय का नाम "असाफिया स्टेट लायब्रेरी" है। इसमें कोई २३६६३ ग्रन्थ हैं। इनमें १५९२७ अर्बी, फारसी और उर्दू भाषा के हैं। शेष अंग्रेजी तथा अन्य युरोपीय भाषा के हैं।

हैदराबाद राज्य में कोई १०३ अस्पताल हैं। इनमें ८८ राज्य की ओर से हैं। विक्टोरिया जनाना अस्पताल की नींव ईस्वी सन् १९०६ में प्रिन्स ऑफ वेल्स (वर्तमान सम्राट् जार्ज) ने डाली थी। वहाँ एक मेडिकल स्कूल और यूनानी हिकमत स्कूल भी है। ईस्वी सन् १९१६-१७ में इनमें कोई ९८२३२६ रोगियों की चिकित्सा की गई।

पुरातन दर्शनीय स्थान

हैदराबाद में पुरातत्व की दृष्टि से कई महत्त्व-पूर्ण स्थान हैं। जिनमें औरंगाबाद जिले की एलोरा और अजन्ता की गुफाएँ विशेष उल्लेखनीय हैं। एलोरा की गुफाओं में पत्थर की नक्काशी के जो काम हैं वह तो एक दम ही अपूर्व हैं। यह औरङ्गाबाद से कोई १४ मील की दूरी पर है। ये गुफाएँ हिन्दू, बौद्ध और जैन-धर्म से सम्बन्ध रखती हैं। बौद्धों से सम्बन्ध रखनेवाली १२, हिन्दुओं से तथा जैनियों से सम्बन्ध रखनेवाली क्रम से १७ और ५ गुफाएँ हैं। इसमें जो खास इमारत है उसे कैलाश कहते हैं। अजन्ता की गुफाएँ खास अजन्ता नाम के गांव में हैं। यह जलगांव से ३८ मील के अन्तर पर है। इनमें ४२ बौद्ध-मठ भी हैं। इनमें भी बौद्ध-काल की कारीगरी का अच्छा नमूना मिलता है।

यहाँ के व्यापारियों का परिचय अगले पृष्ठों पर देखिए।

हैदराबाद-दक्षिण

बैंकर्स

मेसर्स गुलाबदास हरीदास

इस फर्म के मालिक मोढ़ (गुजराती) वीसा वणिक समाज के सज्जन हैं। आपका कुटुम्ब मुगल-काल में मोढ़ेरा से निकल कर देहली, पूना, बुरहानपुर, आदि स्थानों में होता हुआ फिर देहली पहुँचा, तथा वहाँ से निजाम आसिफ जाह बादशाह के साथ करीब सन् १७२९ में हैदराबाद आया। यहाँ पर सर्वप्रथम सेठ पुरुषोत्तमदासजी ने जवाहरात का व्यापार शुरू किया जो इस खानदान का पुश्तैनी पेशा है। आपके ३ पुत्र हुए—सेठ किशनदासजी, सेठ हरीदासजी एवं सेठ हरजीवनदासजी। इनमें से सेठ किशनदासजी ने केड़ी मार्का लकड़ी के व्यापार में अच्छी उन्नति की थी, आप निजाम स्टेट के १४ जिलों के आनरेरी तालुकेदार नियत हुए। आपकी सेवाओं से खुश होकर निजाम सरकार ने जागीरी देकर आपकी इज्जत की।

रा० बा० सेठ हरीदासजी बहुत धर्मात्मा पुरुष थे, राजकीय कार्य्यों में आपका प्रधान हाथ रहता था, आप यहाँ की पंचभय्या कमेटी (हैदराबाद कौंसिल) के प्रेसिडेंट थे, आपको स्टेट ने संवत् १९५५ में राजा बहादुर का खिताब इनायत किया। आपके ४ पुत्र हुए जिनमें से बड़े सेठ भगवानदासजी एवं गुलाबदासजी ने व्यापारिक कामों में विशेष भाग लिया। इन दोनों भाइयों का कुटुम्ब करीब २५ वर्षों से अपना अलग २ व्यापार करने लगा, तब से सेठ गुलाबदासजी का कुटुम्ब उपरोक्त फर्म का मालिक है। आपके ३ पुत्र हुए-सेठ जीवनदासजी, विट्ठलदासजी तथा हरकिशनदासजी, इनमें से सेठ जीवनदासजी का सं० १९७४ में तथा विट्ठलदासजी का सं० १९८० में स्वर्गवास हो गया है।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ हरकिशनदासजी तथा सेठ विट्ठलदासजी के पुत्र सेठ हरीदासजी हैं। आप लोगों की बहुत सी बिल्डिंग-मकानात आदि हैदराबाद में हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

१. हैदराबाद–रेसिडेंसी-मेसर्स गुलाबदास हरीदास } यहाँ बैंकिंग व्यापार तथा किराये का काम
T. A. nawnits } होता है आप रियासत के मख्तेदार हैं।

२. सेलू (निजाम)—मेसर्स गुलाबदास हरीदास—यहाँ आपकी कॉटन जीनिंग एवं प्रेसिंग फेक्टरी है।

३. कामारड़ी (निजाम)— " " यहाँ आपका राईस मिल है।

४. मंठे (मद्रास)— " " यहाँ आपकी जीनिंग फेक्टरी है।

५. निंडू ओलू (मद्रास)— " " यहाँ आपकी राईस मिल है।

मेसर्स जी० रघुनाथमल बैंकर्स

इस फर्म के मालिको का मूल निवासस्थान सोजत (जोधपुर स्टेट) है। आप ओसवाल श्वेताम्बर जैन समाज के सिंगवी सज्जन हैं। इस फर्म के स्थापक सेठ पूनमचंदजी सिंगवी करीब ८० साल पहिले हैदराबाद आये थे। आरंभ मे आपने सर्विस की तथा पीछे पूनमचंद गनेशमल के नाम से गल्ले का कारबार शुरू किया। इस फर्म के व्यापार को सेठ पूनमचंदजी के पुत्र गनेशमलजी सिंगवी ने बहुत तरक्की दी।

वर्तमान मे इस फर्म के मालिक सेठ गनेशमलजी और आपके पुत्र श्रीरघुनाथमलजी सिंगवी हैं। श्रीयुत रघुनाथमलजी ने इस फर्म पर अंग्रेजी ढंग से नवीन बैंकिंग व्यापार स्थापित किया है। आरंभ में आपनें संवत् १९७० में १५ वर्ष की आयु में हाली के एक्सचेंज का व्यापार शुरू किया। जब इस काम में तरक्की देखी तो संवत १९७५ में जी० रघुनाथमल बैंकर्स के नाम से आपने बैंक की स्थापना की। इसमें सब व्यवहार बैंकिंग पद्धति पर होता है। इस प्रकार अंग्रेजी ढंग से बैंकिंग व्यापार करने वाली यह पहिली ही मारवाड़ी फर्म है। इस व्यापार में आपने अच्छी सफलता हासिल की है। श्रीयुत रघुनाथमलजी उत्साही नवयुवक हैं। आप दि महावीर फोटो प्लेज एण्ड थियेट्रिकल कम्पनी लिमिटेड के डायरेक्टर हैं। आप हैदराबाद जैन कान्फ्रेंस के सेक्रेटरी भी रह चुके हैं। आपके पिता गणेशमलजी सिंगवी को गुप्त दान से विशेष स्नेह है। आप अच्छूतोद्धार मे सहायताएं देते रहते हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

हैदराबाद—मेसर्स पूनमचंद गनेशमल तोप का संचा } इस फर्म पर गल्ले का व्यापार होता है।

हैदराबाद—मेसर्स जी. रघुनाथमल बैंकर्स तार का पता Singwi फोन नं० २५ } यहाँ पर अंग्रेजी ढंग से बैंकिंग व्यापार होता है।
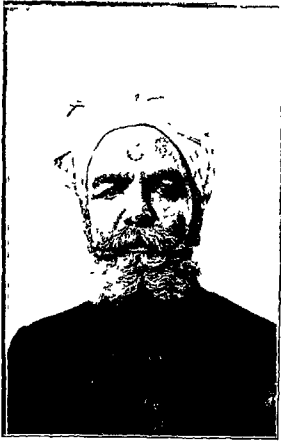
श्री सेठ रघुनाथमलजी सिंगवी (जी० रघुनाथमल बैंकर्स—हैदराबाद)

श्रीसेठ गुमानी रामजी खटोड़ (गुमानीराम हरीराम—हैदराबाद)

सेठ गणेशमलजी सिगवी (जी० रघुनाथमल बैंकर्स—हैदराबाद)

सेठ लक्ष्मीनारायणजी कलंत्री (जयनारायण लक्ष्मीनारायण हैदराबाद)

मेसर्स गुमानीराम हरीराम खटोड़

इस फर्म के मालिकों का मूल निवासस्थान नागोर (मारवाड़) है। आप पारिख व्यास ब्राह्मण-जाति के खटोड़ सज्जन हैं। इस फर्म का स्थापन सेठ रामवगसजी व्यास ने करीब १२५ वर्ष पूर्व किया था। आरम्भ में आप के यहाँ किराना एवं लेनदेन का काम होता था। सेठ रामवगसजी निजाम गवर्नमेंट के बग्गीखाने एवं अस्तवल को रसद सप्लाई करने का काम करते थे। आपके दो पुत्र हुए, सेठ जगन्नाथजी खटोड़ एवं सेठ हरीरामजी खटोड़। सेठ जगन्नाथजी के हाथों से इस फर्म के व्यापार को विशेष उन्नति मिली।

सेठ जगन्नाथजी ने इस फर्म पर निजाम स्टेट के रईसों एवं जागीरदारों के साथ लेन देन का व्यवहार आरम्भ किया आपका स्वर्गवास हो चुका है। वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ हरीरामजी खटोड़ है। आप सेठ जगन्नाथजी के नाम पर दत्तक हैं। आपने सेठ जगन्नाथजी के स्मरणार्थ ६० हजार रुपयों की लागत से एक अनाथाश्रम की स्थापना की है। आप दो सालों तक हैदराबाद लेजिस्लेटिव कौंसिल के मेम्बर रह चुके हैं। इम्पीरियल पोस्ट आफिस की बिल्डिंग आप ही की है। अभी २ आपने अपनी चारकमान वाली सुन्दर पत्थर की बिल्डिंग में श्रीकृष्ण अपैराहाउस की बिल्डिंग बनवाई है। यहाँ के व्यापारिक समाज में आपकी फर्म अच्छी प्रतिष्ठित मानी जाती है। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

हैदराबाद (दक्खिन)—मेसर्स गुमानीराम हरीराम खटोड़ } यहाँ प्रधानतया बैङ्किग व किराये
चारकमान— T. No 294 तार का पता Khatod } का काम होता है।

मेसर्स चुन्नीलाल नारद प्रसाद

इस फर्म के मालिक जायल (जोधपुर स्टेट) के मूलनिवासी हैं। आप अग्रवाल वैश्य समाज के मंगल गौत्रीय सज्जन हैं। सेठ जेठमलजी ने यहाँ आकर सर्वप्रथम यह दुकान स्थापित की तथा इस फर्म के व्यापार की सेठ चुन्नीलालजी के हाथों से बहुत अधिक उन्नति हुई। आपने इन्दौर, मन्दसोर, बम्बई आदि स्थानो मे बहुत सी दुकानें स्थापित कीं। आप हैदराबाद स्टेट को अफीम सप्लाई करने एवं बन्दूकें सप्लाई करने के लिये कंट्राक्टर थे। आपका विस्तृत परिचय मेसर्स चुन्नीलाल मुरलीप्रसाद नामक फर्म में दिया गया है।

सेठ चुन्नीलालजी के २ पुत्र हुए—सेठ नारदप्रसादजी एवं सेठ मुरलीप्रसादजी। इन दोनों भाइयो का व्यापार सन् १९२५ से अलग २ हो गया है। तब से यह फर्म अपना अलग कारोबार कर रही है। इसके मालिक सेठ नारद प्रसाद जी संवत १९७९ में स्वर्गवासी हुए।

आपके यहाँ १९७९ में घांसा (उदयपुर स्टेट) से श्री सुखदेवप्रसादजी दत्तक लाए गये। सेठ चुन्नीलालजी ने जो कपड़े का व्यापार स्थापित किया था, वह इस फर्म के सामे में आया है।

जायल में इस फर्म की ओर से सुखसागर नामक एक कुआँ खुदवाया गया है। जायल में इस की स्थाई सम्पत्ति भी है। इसके अलावा रेसिडेंसी, विकाराबाद में आपके बगीचे बँगले एवं मिल्कियत है। इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

हैदराबाद—मेसर्स पापामल चुन्नीलाल शाहगंज सिटी।	यहाँ बैङ्किंग व्यापार होता है।
हैदराबाद—मेसर्स नारदप्रसाद सुखदेवप्रसाद लाड बाजार।	यहाँ कपड़े का थोक व्यापार होता है।
हैदराबाद—रेसिडेंसी—मेसर्स चुन्नीलाल नारदप्रसाद T. No. 370	यहाँ प्रधानतया बैङ्किंग व्यापार होता है।

मेसर्स चुन्नीलाल मुरलीप्रसाद

इस फर्म के मालिकों का मूल निवासस्थान जायल (जोधपुर स्टेट) में है। आप अग्रवाल वैश्य समाज के मंगल गौत्रीय सज्जन हैं। इस फर्म के स्थापक सेठ जेठमलजी आरंभ में यहाँ आये थे। आपने सराफी लेनदेन का कारबार शुरू किया। आपके तीन पुत्र हुए—सेठ श्यामलाल-जी, सेठ पापामलजी एवं सेठ रामदयालजी। सेठ पापामलजी के समय मे इस फर्म के बैङ्किंग व्यापार की वृद्धि हुई। सेठ पापामलजी के पश्चात् सेठ श्यामलालजी के पुत्र सेठ चुन्नीलालजी ने इस फर्म के व्यापार तथा सम्पत्ति में विशेष वृद्धि की। आप हैदराबाद स्टेट को अफीम सप्लाई करने के लिये कन्ट्राक्टर थे, इस व्यापार के लिये आपने मालवे मे इन्दौर, उज्जैन, मन्दसोर आदि स्थानों में दूकानें स्थापित कीं। इसके अलावा बम्बई, मद्रास आदि भिन्न २ स्थानों में भी आपकी दूकानें थीं। अफीम के कंट्राक्ट के अलावा आप हैदराबाद स्टेट के रिसालों एवं फौजों को बन्दूकें बनवाकर सप्लाई करते थे, इसके अलावा टकसाल का काम भी आपके यहाँ था। पापामल चुन्नीलाल के नाम से आपने अपनी फर्म पर कपड़े का व्यापार भी आरंभ किया। इस तरह दुकान के व्यापार को कई भिन्न २ लाइनों में सेठ चुन्नीलालजी के हाथों से उन्नति मिली। आप हैदराबाद के व्यापारिक समाज में बहुत बड़ी प्रतिष्ठा रखते थे। आपके २ पुत्र हुए—सेठ नारदप्रसादजी एवं सेठ मुरलीप्रसादजी। इन दोनो भाइयो का कुटुम्ब इधर सन् १९२५ से अपना अलग २ व्यापार करने लगा।

स्व० सेठ नारदप्रसादजी (चुन्नीलाल नारदप्रसाद)

श्री० सुखदेवप्रसादजी (चुन्नीलाल नारदप्रसाद)

स्व० सेठ पन्नालालजी कीमती जौहरी-हैदराबाद-रेसिडेंसी

सेठ जमनालालजी कीमती जौहरी-हैदराबाद-रेसिडेंसी
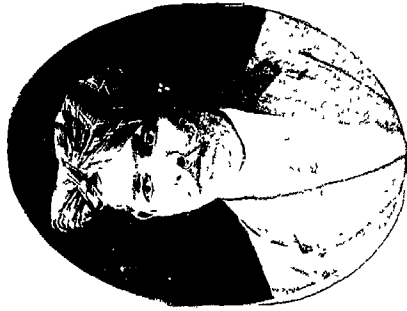
सेठ रामलालजी कीमती जौहरी-हैदराबाद रेसिडेंसी

वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ मुरलीप्रसादजी के पुत्र सेठ मोहनप्रसादजी हैं। आप भी यहाँ के अच्छे प्रतिष्ठित सज्जन माने जाते हैं। आप सेठ मुरलीप्रसादजी के यहाँ संवत् १९६४ में जयपुर से दत्तक आये हैं। सेठ मुरलीप्रसादजी संवत् १९६२ में स्वर्गवासी हुए। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

हैदराबाद रेसिडेंसी—मेसर्स चुन्नीलाल मुरलीप्रसाद T.No 357 तारका पता Nowsila } यहाँ बैङ्किंग व्यापार होता है।

हैदराबाद रेसिडेंसी-मुरलीप्रसाद मोहनप्रसाद—पेट्रोल का व्यापार होता है।

मद्रास— मेसर्स मुरलीप्रसाद मोहनप्रसाद साहुकार पैठ } यहाँ बैङ्किंग कमीशन एवं बाम्बे कम्पनी की एजंसी का बहुत बड़ा कारबार होता है।

मेसर्स जमनालाल रामलाल कीमती

इस फर्म के मालिक आदि निवासी रामपुरा (इन्दौर स्टेट) के हैं। आप ओसवाल स्थानकवासी जैन समाज के सज्जन हैं। रामपुरा से यह कुटुम्ब इन्दौर और मन्दसोर गया और वहां सेठ पन्नालालजी कीमती अपने भाई बन्नालालजी से पृथक् होकर संवत् १९४८ में हैदराबाद आये। यहां आप बम्बई के बाबू पन्नालालजी जौहरी के साथ काम काज करते रहे। इसी समय सेठ पन्नालालजी के पुत्र जमनालालजी और रामलालजी कीमती हैदराबाद में जवाहरात वगैरा का अपना स्वतंत्र कारबार करते रहे आप लोग अपने पिताजी की मौजूदावस्था में अपना कारबार जमा चुके थे। सेठ पन्नालालजी संवत् १९७४ मे ७२ वर्ष की आयु में हैदराबाद में स्वर्गवासी हुए।

हैदराबाद में कारबार जमने पर आपने अपनी एक शाखा इन्दौर में भी खोली। इस समय सेठ जमनालालजी और रामलालजी दोनो भ्राता व्यवसाय कार्य्य संचालित करते है। सेठ जमनालालजी के पुत्र सुखलाल जी का ३।४ साल पहिले स्वर्गवास हो गया, अतः इनके नाम पर श्रीयुत मदनलालजी दत्तक लिये गये हैं। सेठ रामलालजी कीमती के दत्तक पुत्र रोशनलालजी का भी स्वर्गवास होगया। ऐसी स्थिति मे सेठ जमनालालजी ने अपने उत्तराधिकारी अपने छोटे भ्राता सेठ रामलालजी को बनाया है। आप लोगों ने सेठ पन्नालालजी एवं सुखलालजी के स्मरणार्थ रामपुरा में संवत् १९८४ मे जमनालाल रामलाल कीमती लायब्रेरी का उद्घाटन किया है। सेठ पन्नालालजी ने अपनी मौजूदगी में ८० हजार रुपयों की रकम शुभ कार्यो में लगाई थी। श्री सुखलालजी और रोशनलालजी के स्वर्गवासी होने के समय ६० हजार के शेअर्स शुभ कामो के लिये निकाले गये हैं।

यह फर्म यहाँ के व्यापारिक समाज में अच्छी प्रतिष्ठित मानी जाती है। हैदराबाद और इन्दौर में आपके मकानात आदि हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

हैदराबाद-रेसिडेंसी—मेसर्स जमनालाल रामलाल कीमती हसमतगंज तार का पता Pannall फोन नं० 465 — यहाँ जवाहरात और प्रोमेसरी नोट शेअर्स का तथा बैङ्किग व्यापार होता है।

इन्दौर (सी० आई०)—जमनालाल रामलाल कीमती २७ खजूरी बाजार तार का पता Kimati — जवाहरात का तथा बैङ्किग व्यापार होता है।

मेसर्स जयनारायण लक्ष्मीनारायण

इस फर्म के मालिक खीचन्द (जोधपुर) निवासी माहेश्वरी समाज के कलंत्री सज्जन हैं। इस फर्म के स्थापक सेठ सदासुखजी करीब संवत् १९२५ में हैदराबाद आये थे। आपके ४ पुत्र हुए, जिनमें सेठ राधाकिशनजी एवं जयकिशनजी की यह फर्म है। सेठ सदासुखजी का स्वर्गवास संवत् १९५४ मे हुआ तथा सेठ राधाकिशनजी का १९५२ में एवं जयनारायणजी १९७६ मे स्वर्गवासी हुए।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ जयनारायणजी के पुत्र सेठ लक्ष्मीनारायणजी कलंत्री हैं। आप सेठ राधाकिशनजी के नाम पर दत्तक आये हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

हैदराबाद-रेसिडेंसी, मेसर्स जयनाराजए लक्ष्मीनारायण-यहाँ बैङ्किग व्यापार होता है।

मेसर्स नारायणलाल वंशीलाल

इस फर्म के मालिक श्रीयुत नारायणलालजी पित्ती हैं। आप हैदराबाद की प्रसिद्ध फर्म राजा बहादुर मोतीलाल वंशीलाल के मालिक राजा बहादुर सेठ वंशीलालजी पित्ती के पुत्र हैं। आप बड़े उत्साही एवं बुद्धिमान नवयुवक हैं। बम्बई के कई सार्वजनिक कामों में आपका भाग रहा करता है। आपके यहाँ बम्बई और हैदराबाद में प्रधानतयः बैङ्किग व्यापार होता है। इन स्थानों पर आपकी बहुत सी स्थायी सम्पत्ति भी है। निजामस्टेट के प्रतिभाशील व्यापारिक कुटुम्बों में आपका कुटुम्ब माना जाता है। आपकी फर्म का पता गोपाल बाग, रेसिडेंसी हैदराबाद है।

राजा बहादुर स्व० भगवानदास हरीदास
हैदराबाद रेसिडेन्सी
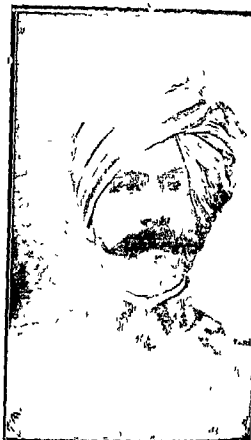
गोस्वामी वीरभान गिरिजी (राजा विसेसरगिरि
वीरभानगिरि) हैदराबाद

स्व० सेठ गलाबदास हरीदास हैदराबाद रेसिडेन्सी

श्रीसेठ मुकुंददासजी मून्दड़ा (सूरतराम गोविंदराम) हैदराबाद

राय बहादुर बंशीलाल अबीरचंद डागा

इस प्रसिद्ध फर्म का विस्तृत इतिहास मालिकों के चित्रों सहित इसी ग्रंथ के प्रथम भाग में राजपूताना विभाग के पृष्ठ ११२ में दिया गया है। भारत के बैङ्किंग व्यापारियो में इस फर्म का स्थान बहुत ऊँचा है। इस फर्म के वर्तमान मालिक रायबहादुर सर विसेसरदासजी डागा, सेठ नरसिंहदासजी डागा, सेठ बद्रीदासजी डागा एवं सेठ रामनाथजी डागा हैं। आपका कुटुम्ब माहेश्वरी समाज में बहुत प्रतिष्ठित एवं पुराना माना जाता है।

इस फर्म का हेड ऑफिस नागपुर-कामठी में है। यहाँ आपकी ४ बड़ी बड़ी कोयले की खानें और मेगजीन की खाने हैं। इस फर्म के अण्डर में ३० काटन जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरियाँ हैं। कलकत्ता, बम्बई, मद्रास आदि भारत के विभिन्न स्थानों में इस फर्म की ३० ब्रांचेज़ हैं। जिन पर प्रधानतया बैङ्किंग व्यापार होता है। हिंगनघाट में आपकी कपड़े की एक प्राइवेट मिल भी है।

निजाम हैदराबाद और इस स्टेट में इस फर्म की ब्रांचों का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

हैदराबाद-रेसिडेंसी—मेसर्स बंशीलाल अबीरचंद रायबहादुर
T. No. 350 तार का पता
(Narsingh)
— यहाँ बेङ्किंग एवं स्टेट मार्गेज का प्रधान व्यापार होता है। हैदराबाद के बैङ्कर्स में यह फर्म बहुत बड़ा कारबार करने-वाली है।

स्थान	फर्म			
निजामाबाद (निजामस्टेट)	—मेसर्स बंशीलाल अबीरचंद राय बहादुर			जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरियाँ हैं और बैङ्किंग तथा काटन का व्यापार होता है।
पुरना (निजामस्टेट)	"	"	"	
परली (निजामस्टेट)	"	"	"	
सेलू (निजामस्टेट)	"	"	"	
लोहा (निजामस्टेट)	"	"	"	

मेसर्स राजा बहादुर भगवानदास हरीदास

इस फर्म के मालिक मोड़ (गुजराती) वीसा-वणिक समाज के सज्जन हैं। आपका मूल निवासस्थान मोड़ेरा (गुजरात) है। मोड़ेरा से मुगलकाल में यह कुटुम्ब देहली, पूना, बुरहानपुर, होता हुआ फिर देहली पहुँचा और वहाँ से आदि निजाम बादशाह आसिफजाह के साथ करीब सन् १७२९ में हैदराबाद आया तब से आपका यहीं निवास है। इन सब स्थानों पर यह कुटुम्ब जवाहरात और बैङ्किंग व्यापार करता था।

सर्वप्रथम सेठ पुरुषोत्तमदासजी ने यहाँ शाही घराने से जवाहरात और बैङ्किग व्यापार शुरू किया। आपके ३ पुत्र हुए—सेठ किशनदासजी, सेठ हरीदासजी एवं सेठ हरजीवनदासजी। इन सज्जनों में से सेठ किशनदासजी ने राजा पांभुई के चाँदा, मादेपुर और बलार शाह जंगलों के गुत्ते लिये, इन जंगलों की लकड़ी "केड़ी" ट्रेडमार्क से आप हैदराबाद, मछलीपट्टम और बम्बई की जहाजी कम्पनियों को बेचते थे। आप निजाम सरकार के १४ जिलों के आनरेरी ताल्लुकेदार नियत हुए, इस परिश्रमस्वरूप आपको निजाम सरकार से जागीरी प्राप्त हुई। सेठ हरीदासजी, राजा चन्दूलाल प्राइम मिनिस्टर के समय में पंचभय्या कमेटी के प्रेसिडेंट थे। यह कमेटी राज्य के फाइनेंशियल विभाग व आय व्यय का प्रबंध करती थी। आपका स्वर्गवास संवत् १९१४ में हुआ।

सेठ हरीदासजी के ४ पुत्र हुए—राजा बहादुर सेठ भगवानदासजी, सेठ गुलाबदासजी सेठ बालकिशनदासजी एवं सेठ गिरधरदासजी। इनमें से सेठ भगवानदासजी और गुलाबदासजी ने विशेष रूपसे व्यापार सम्हाला। सेठ भगवानदासजी ने निजाम सरकार मीर महबूब अली खाँ को लाखो रुपये के जवाहरात सप्लाइ किये, आप हैदराबाद कानून-कार्यवाहक कमेटी के मेम्बर थे। आपसे प्रसन्न होकर सरकार ने आपको "राजा बहादुर" का खिताब इनायत किया। आपका एवं गुलाबदासजी का कारबार २५ वर्ष पूर्व अलग अलग हो गया। आप संवत् १९६९ में स्वर्गवासी हुए।

राजा बहादुर सेठ भगवानदासजी के ४ पुत्र हुए—सेठ आनन्ददासजी, सेठ परमानन्ददासजी, सेठ गोपालदासजी एवं सेठ मुकुन्ददासजी। सेठ आनन्ददासजी का स्टेट के प्राइवेट और पोलिटिकल डिपार्टमेंट से बहुत सम्बन्ध रहता था। आपके स्मारकस्वरूप नाथद्वारे में विट्ठलनाथजी के मंदिर मे धर्मशाला बनाई गई है। आप १९७७ में स्वर्गवासी हुए। सेठ परमानन्ददासजी हैदराबाद चेम्बर आफ कामर्स के प्रेसिडेंट और बैंको के डायरेक्टर थे। जवाहरात के व्यापार में आपकी अच्छी निगाह थी, आप संवत् १९७४ में स्वर्गवासी हुए।

सेठ मकुन्ददासजी हैदराबाद चेम्बर आफ कामर्स कोआपरेटिव बैंक एवं कॉटन मीलों के डायरेक्टर एवं सरकारी लॉमेम्बर और रेसिडेंसी लोकल फंड के मेम्बर थे। पब्लिक कामों में भी आप सहयोग लेते थे। आप संवत् १९८४ में स्वर्गवासी हुए।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ परमानन्ददासजी के पुत्र सेठ गिरधरदासजी, सेठ गोपालदासजी के पुत्र सेठ किशनदासजी, सेठ मकुन्ददासजी के पुत्र सेठ द्वारकादासजी, सेठ बालकिशनदास जी, दामोदरदास जी एवं गोविन्ददास जी हैं। इनमें से सेठ गिरधरदासजी एवं किशनदास जी फर्म का व्यवसायिक एवं राजकीय कारबार सम्हालते हैं। शेष सब पढ़ते हैं। यह कुटुम्ब हैदराबाद के व्यापारिक समाज में बहुत प्रतिष्ठित माना जाता है। निजाम स्टेट

स्व० सेठ रूपचंदजी कोचर (मदनचंद रूपचंद) हैदराबाद रेसिडेंसी

सेठ मेघराजजी कोचर (मदनचंद रूपचंद)
हैदराबाद रेसिडेंसी

सेठ गोवर्द्धनदासजी राठी (मनीराम रामरतन)
हैदराबाद रेसिडेंसी

से इस कुटुम्ब के बहुत ताल्लुकात आरंभ से चले आते हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

हैदराबाद (दक्षिण)—मेसर्स भगवानदास हरीदास एण्ड संस रेसिडेंसी T. No. 347 तार का पता Krishna } यहाँ बैङ्किग व जवाहरात का व्यापार होता है।

मेसर्स मदनचंद रूपचंद

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ मेघराजजी कोचर हैं। आप बीकानेर-निवासी ओसवाल श्वेताम्बर जैन समाज के सज्जन हैं। करीब १०० साल पूर्व सेठ मदनचंदजी पैदल मार्ग द्वारा हैदराबाद आये थे। आपके पुत्र सेठ बदनमलजी आपकी मौजूदगी ही में स्वर्गवासी हो गये थे। एतदर्थ आपके यहाँ सेठ रूपचन्दजी बीकानेर से दत्तक लाये गये। इस फर्म के व्यवसाय की नींव सेठ मदनचन्दजी के हाथों से ही जमी। आपने अच्छी प्रतिष्ठापूर्वक जीवन बिताया।

सेठ रूपचंदजी कोचर बड़े लोग प्रिय सज्जन थे, कानून की आपको अच्छी जानकारी थी, कुलपाक तीर्थ के जीर्णोद्धार करने वाले ४ सज्जनों में से एक आप भी थे। आप संवत १९६६ में स्वर्गवासी हुए। आपके नामपर आपके भतीजे सेठ मेघराजजी संवत १९६६ में गोद लिये गये।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ मेघराजजी कोचर हैं। आप शिक्षित एवं उन्नत विचारों के सज्जन हैं। आप इरन्नागुढ़ा के श्री हनुमानजी के प्रधान ट्रस्टी एवं मारवाड़ी मण्डल के अध्यक्ष हैं। हैदराबाद के मारवाड़ी नवयुवक समाज द्वारा होने वाले कार्यों में आप सहयोग देते रहते हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

हैदराबाद-रेसिडेंसी-मेसर्स मदनचन्द रूपचन्द } बैङ्किंग तथा जवाहरात का व्यापार होता है।

मेसर्स मनीराम रामरतन राठी

इस फर्म के मालिक नागोर (जोधपुर स्टेट) निवासी माहेश्वरी समाज के राठी सज्जन हैं। इस फर्म का स्थापन १५० वर्ष पूर्व सेठ साहबरामजी ने किया। इसके पहले मिरच और इन्दौर में कारबार करते थे। आपके बाद सेठ मनीरामजी एवं सेठ रामरतनजी के जमाने में इस दूकान के रोजगार की तरक्की हुई। सेठ रामरतनजी ने मुंदियाड़ (जोधपुर स्टेट) में २ धर्मशालाएँ तथा नागोर में एक मन्दिर बनवाया। आप ४० साल पहिले स्वर्गवासी हुए।

सेठ रामरतनजी के २ पुत्र हुए, सेठ सुखदेवजी और द्वारकादासजी। सेठ द्वारकादासजी का संवत् १९७५ में स्वर्गवास हुआ।

३

वर्तमान में इस दुकान के मालिक सेठ द्वारकादास जी के पुत्र श्रीयुत गोवर्द्धनलालजी राठी हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

हैदराबाद—मेसर्स मनीराम रामरतन राठी बेगम बाजार। } वैङ्किंग एवं गिरवी का कारवार होता है।

राजा वहादुर सेठ मोतीलाल वंशीलाल पित्ती

इस फर्म के मालिक अग्रवाल वैश्य समाज के पित्ती सज्जन हैं। आपका मूल निवासस्थान नागोर का (मारवाड़) है। इस फर्म के पूर्व पुरुष सेठ शिवदत्तरायजी एवं उनके पुत्र सेठ जेसीरामजी ने संवत् १८३१ में जिला बीड़ के जोगीपेठ नामक स्थान में दुकान की थी। पश्चात् हैदराबाद, वम्बई, कलकत्ता, इन्दौर, खामगाँव, अमरावती, विचकुंडा आदि कई स्थानो पर इस फर्म की शाखाएँ स्थापित हुईं। इन सब जगहों पर अफीम वैङ्किग एवं गल्ले का व्यापार होता था। इस फर्म ने अपने व्यापार को इतना वढ़ाया कि इन सब स्थानो की यह बहुत प्रतिष्ठित फर्म मानी जाने लगी। उस समय वरार प्रांत की तहसील इकट्ठी कर इस फर्म के द्वारा निजाम स्टेट को दी जाती थी। इसके वाद सेठ शिवलालजी एवं सेठ किसनलालजी की फर्में संवत् १९०७ में अलग २ हो गईं। तब से इसके व्यापार को सेठ शिवलालजी एवं राजा बहादुर सेठ मोतीलालजी संचालित करते रहे। आपका विस्तृत परिचय हमारे ग्रंथ के प्रथम विभाग मे बम्बई विभाग के पृष्ठ ४९ में दिया गया है।

इस फर्म के वर्तमान मालिक राजा बहादुर सेठ बंशीलाल जी एवं आपके पुत्र कुँवर पन्नालालजी एवं गोवर्द्धनलालजी पित्ती हैं। इस फर्म की हैदराबाद स्टेट में एवं बम्बई आदि में बहुत बड़ी प्रतिष्ठा है, आप इस रियासत के प्रधान धनिक साहुकार माने जाते हैं। सेठ साहब हैदराबाद पंचायत के पंच हैं। आप यहाँ लेजिस्लेटिव्ह कौंसिल के मेम्बर भी रह चुके हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

हैदराबाद-रेसिडेंसी-राजा बहादुर मोतीलाल बंशीलाल T. No. 517 तार का पता } यहाँ वैङ्किग हुंडी चिट्ठी स्टेट मार्गेज एवं जवाहरात का व्यापार होता है।

हैदराबाद-बेगम बाजार-राजा बहादुर मोतीलाल बंशीलाल T. No. 360 } यहाँ भी उपरोक्त व्यापार होता है।

बम्बई—राजाबहादुर वंशीलाल मोतीलाल कालबा देवी रोड } यहाँ भो उपरोक्त व्यापार होता है।

स्व० रायसाहब सेठ घासीरामजी (रामदयाल घासीराम) हैदराबाद
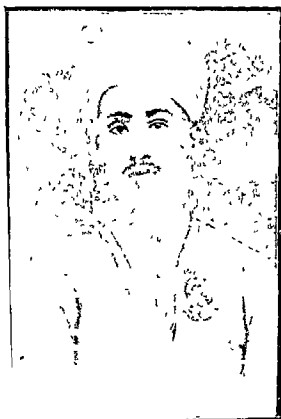
बाबू वेंकटलालजी (रामदयाल घासीराम)
हैदराबाद

बाबू नारायणदासजी पित्ती (श्रीकृष्ण नारायणदास)
हैदराबाद

मेसर्स रामदयाल घासीराम

इस फर्म के मालिकों का मूल निवास-स्थान मीठड़ी (डीडवाणा-जोधपुर स्टेट) है। आप अग्रवाल वैश्य समाज के बांसल गोत्रीय सज्जन हैं। इस फर्म के संस्थापक सेठ मोतीराम जी संवत १९२९ में देश से हैदराबाद आये। उस समय आपके पुत्र सेठ रामदयाल जी एवं घासीरामजी क्रमशः १४ और ११ वर्ष की अवस्था में आपके साथ थे। सेठ मोतीराम जी ५ साल तक यहाँ मामूली काम काज करते रहे, पश्चात् संवत् १९३५ में आपने उपरोक्त फर्म की स्थापना की। सेठ मोतीराम जी के दूसरे पुत्र सेठ घासीराम जी बहुत उग्रबुद्धि के प्रतापी पुरुष हुए। आपने एरंडी और नमक के व्यापार में बहुत सम्पत्ति उपार्जित की। इन व्यापारों के अतिरिक्त जवाहरात एवं अनाज के व्यवसाय में भी आपने अच्छी उन्नति की थी। इन सब व्यापारों के अलावा आपने निजाम स्टेट के आबकारी का कंट्राक्ट करीब १५ वर्ष पूर्व लिया, एवं इस काम के लिये निजाम स्टेट के कई स्थानों में अपनी दुकानें खोलीं।

रायसाहब सेठ घासीराम जी बड़े साहसी एवं सरल प्रकृति के महानुभाव थे। एक बार आपने एक जवाहरात के बंद बक्स को बारह लाख पंद्रह हजार रुपयों में खरीद कर उपस्थित जौहरी समाज में बड़ा आश्चर्य पैदा कर दिया था। एक बार संवत् १९५८ में जब आप एरंडी का पेमेंट करने के लिये २० हजार रुपये लेकर गाड़ी में जा रहे थे तब अचानक आप पर ७-८ अरबों ने हमला किया, तब बड़ी मुस्तैदी से अपनी आत्मरक्षा कर घावों पर टाँके लगवाने के लिये आप स्वयं अस्पताल गये। संवत् १९६५ में फ्लड के समय एवं महासमर टाइम में अनाज की मँहगी के कंट्रोल लेकर आपने जनता की बहुत मदद की थी, १५ वर्ष पूर्व आपने श्री वेंकटेश्वर गौशाला का स्थापन किया और तब से अभी तक आपकी फर्म करीब १० हजार रुपये प्रतिवर्ष उक्त गौशाला के लिये खर्च करती है। यूरोपीय युद्ध के समय एक बड़ी रकम गवर्नमेंट को लोन के रूप में देने के कारण आप सन् १९१८ में राय साहब की पदवी से सम्मानित किये गये। इस प्रकार गौरवमय जीवन बिताते हुए आप संवत् १९८३ की पौषबदी २ को स्वर्गवासी हुए। आपके यहाँ इन्दौर से (आपके काका सेठ कनकमलजी के पुत्र) सेठ गोपीकिशनजी संवत् १९४७ मे दत्तक लाये गये। आप भी धार्मिक प्रवृत्ति के महानुभाव हैं। इस समय आपके तीन पुत्र हैं जिनमें श्रीव्यङ्कटलालजी व्यापारिक कामों मे भाग लेते हैं तथा वंशीलालजी एवं नत्थूलालजी विद्याध्ययन करते हैं। श्री व्यङ्कटलालजी मे अपने पितामह रायसाहब सेठ घासीरामजी के सद्गुणो की बहुत अधिक परछाई आई है। आप बहुत सरल प्रकृति के निरभिमानी नवयुवक हैं। इस समय आपकी आयु २४ वर्ष की है। इतनी स्वल्प आयु में आप फर्म का व्यापार बड़ी तत्परता से संचालित करते हैं। नवयुवकों

द्वारा होने वाले कार्य्यों में आप तन मन धन से सहायता करते हैं। आपकी फर्म हैदराबाद के प्रसिद्ध धनिको में मानी जाती है। सन् १९३० में आपने ट्रावनकोर स्टेट को नमक सप्लाई करने का कन्ट्रक्ट लिया है।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

स्थान	व्यापार
१—हैदराबाद (दक्खिन)—मेसर्स रामदयाल घासीराम, महबूब गंज (हेड-ऑफिस) T. No. 250 तार का पता Diamond	यहाँ बैङ्किंग जवाहिरात अरंडी का व्यापार एवं आबकारी का कंट्राक्ट होता है। करीब ५० लाख रुपयों का सालाना आबकारी का कंट्राक्ट यह फ़र्म लेती है।
२—भयंदर—(ठाणा-बम्बई) मेसर्स गोपीकिशन व्यंकटलाल	यहाँ बेङ्किंग, नमक का व्यापार एवं आढ़त का काम होता है।
३—परभनी (निजाम) मेसर्स रामदयाल घासीराम— ४—बीड़ (निजाम) ,, ,, ५—निजामाबाद (निजाम) ,, ,, ६—नादेड़—(निजाम) ,, ,,	यहाँ बैङ्किग, एवं कंट्राक्ट का काम होता है।

इसके अलावा कंट्राक्ट आबकारी की व्यवस्था के लिये निजाम स्टेट के नीचे लिखे स्थानों में आपकी शाखाएं हैं। सब पर मेसर्स रामदयाल घासीराम नाम पड़ता है।
७—महबूब नगर, ८—सेड़म, ९—तांडूर, १०—जनगांव, ११—मँथनी, १२—नलगुंडा, १३—मोमिना बाद, १४—मजनेगांव, १५—हिंगोली, १६—मेंदक, १७—देवरकुंडा, १८—विकाराबाद।

मेसर्स रामप्रताप कन्हैयालाल

इस फर्म के मालिको का मूल निवास स्थान नागोर (मारवाड़) है। आप अग्रवाल वैश्य समाज के पित्ती सज्जन हैं। इस कुटुम्ब के पूर्वज सेठ रामनाथजी करीब १०० साल पहिले हैदराबाद आये। तथा किराने आदि का कारबार करते रहे।

सेठ रामनाथ जी के पश्चात् उनके पुत्र सेठ रामप्रताप जी पित्ती ने ४० साल पहिले रामचन्द्र हनुतराम के नाम से किराने और गल्ले का व्यापार शुरू किया। आप ४० साल से निजाम गवर्नमेंट की ट्रेझरी में काम करते आ रहे हैं। एवं इस समय गमेटियेड ऑफिसर और सदर खजानेदार हैं। आपके पुत्र श्रीयुत कन्हैयालालजी एवं रामानुजदास जी हैं। श्रीयुत

कन्हैयालालजी सेन्ट्रल बैंक रेसिडेंसी में ट्रेझरर हैं। तथा रामानुजदासजी के नाम से १२ साल से बैंकिंग व्यापार चालू किया गया है। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

हैदराबाद—मेसर्स रामचन्द्र हनुतराम बेगम बाजार } किराने और गल्ले का व्यापार होता है।

हैदराबाद—रामानुजदास बैंकर्स बेगम बाजार T. NO 307 } बैङ्किंग व्यापार होता है।

गोस्वामी लालगिरि विनोदगिरि

इस खानदान के पूर्वज महंत इलायचीनाथजी ज्वालामुखी (पंजाब) में निवास करते थे। आप कांगड़ी जिले के पहाड़ी रजवाड़ों के साथ लेन देन करते थे। आपने दसनाम गोस्वामियों में कई भंडारे किये और अच्छा नाम पाया। आपके बाद क्रमशः केसरगिरिजी, रामकिशनगिरिजी एवं नरपतगिरिजी हुए। गोस्वामी नरपतगिरिजी सन् १२४४ हिजरी में बादशाह नासिरुद्दौला के जमाने में हैदराबाद आये। आपके समय में बैङ्किंग और शाल दुशालों का व्यापार होता था। आपके चेले प्रभातगिरिजी के हाथों से व्यवसाय एवं सम्मान की विशेष वृद्धि हुई। आपने रामेश्वर यात्रा करने वाले अभ्यागतों के लिये लोटा, थाली एवं कम्बल का सदावर्त जारी किया। आपके पश्चात् रतीगिरिजी, धूमागिरिजी एवं हरनामगिरिजी ने फर्म का व्यवसाय सम्हाला। वर्तमान में फर्म के प्रधान मालिक गोसाईं हरनामगिरिजी के चेले श्रीलालगिरिजी हैं। आप यहाँ के बहुत प्रतिष्ठा-प्राप्त सज्जन हैं। हिन्दी भाषा से आपको विशेष स्नेह है। सन् १९२० में कई हजार रुपयों की लागत से आपने एक यज्ञ किया। बनारस में आपकी एक धर्मशाला बनी है, जिसमें ३० विद्यार्थी प्रतिदिन भोजन पाते हैं। आपके चेले श्रीविनोदगिरिजी स्वर्गवासी हो गये हैं।

वर्तमान में फर्म का व्यवसायिक एवं राज दरबारी कार्य्यभार श्रीविनोदगिरिजी के चेले महेशगिरिजी एवं आपके चेले श्रीभुवनेशगिरिजी संचालित करते हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

हैदराबाद-मेसर्स लालगिरि विनोदगिरि बेगम बाजार T. No 207 } इस फर्म में बैङ्किंग व्यापार तथा नवाब जमीदारों और जागीरदारों के साथ लेन देन का व्यवहार होता है। बम्बई तथा हैदराबाद में इस फर्म की कई कोठियों का किराया आता है।

हैदराबाद—रेसिडेंसी-मेसर्स महेशगिरि भुवनेशगिरि } बैङ्किग तथा पापर्टी पर रुपया देने का व्यापार होता है।

तांडूर (गुलबर्गा) मेसर्स लालगिरि विनोदगिरो—उपरोक्त व्यापार होता है।

राजा बहादर विसेसरगिरि वीरभानगिरि

इस खानदान के पूर्वज गोस्वामी नरपतगिरिजी ज्वालामुखी (पंजाब) से सन् १२४४ हिजरी में हैदराबाद आये। आपके ३ चेले हुए, सईगिरिजी, प्रभातगिरिजी एवं मुखराज गिरिजी। इन मे से मुखराजगिरिजी से इस कुटुम्ब का ऐतिहासिक सम्बन्ध है। मुखराज गिरिजी के पश्चात् क्रमशः शिवराजगिरिजी, पूरनगिरिजी, संगमगिरिजी रतनगिरिजी, रामेश्वरगिरिजी एवं राजा बहादुर विसेसरगिरिजी हुए। गोस्वामी पूरनगिरिजी के समय में इस कुटुम्ब के व्यवसाय की विशेष उन्नति हुई।

राजा बहादुर विसेसरगिरिजी की निजाम सरकार बहुत इज्जत करते थे। आपने भूतपूर्व निजाम मीर महबूबखां बहादुर सुलतान दकन के कलकत्ता और देहली से लौटते समय बड़े २ जलसे किये थे, इससे खुश होकर आपको सरकार ने सन् १३१६ हिजरी में राजा बहादुर का खिताब और १ हजार रुपया नकद दिया। तथा ५०० सवार रखने का अख्तियार बख्शा। निजाम सरकार की वर्षगाँठ के उपलक्ष मे हरसाल जो बहुत बड़ा जलसा पब्लिक की तरफ से हैदराबाद मे हुआ करता था, उसके आप सभापति थे। आप १९०८ में स्वर्गवासी हुए।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक राजा बहादुर विसेसरगिरिजी के चेले गोस्वामी वीरभान गिरिजी हैं। आपने हुसमतगंज (रेसिडेंसी) के मारवाड़ी विद्यालय को भूमि प्रदान की है *। आपके चेले बुद्धिमान नवयुवक हैं। आप आँध्र वालंटियर कोर के सभापति एवं हैदराबाद की कई इन्स्टिट्यूशंस के संरक्षक हैं। आपके चेले श्रीयुत दिलेरायगिरिजी उन्नत विचारो के विवेक· शील सज्जन है। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

हैदराबाद—गोस्वामी राजा विसेसरगिरि वीरभानगिरि, फोन नं० 143 } यहाँ बैङ्किग तथा निजाम स्टेट के अमीर उमरावों, जागीरदारों को सूद पर रुपया देने और प्रापर्टी गिरवी रखने का काम होता है।

चितापुर (गुलवर्गा)— वीरभानगिरि राजा विसेसरगिरि—बैङ्किग व्यापार होता है।

ऊमरी (निजाम स्टेट)—वीरभानगिरि जिनिंग फेक्टरी—इसनाम से आपकी जीन हैं।

---

* आपने १९२८ में ३।४ लाख रुपयों की लागत से रेसिडेंसी में एक्सेलसीयर थियेटर की सुंदर बिल्डिंग बनाई है। आप दि महावीर फोटो प्लेज एण्ड थियेट्रिकल कं० लि० के डायरेक्टर हैं। हैदराबाद में आप अच्छे मातवर तजन समझे जाते हैं।

सेठ वामन रामचंद्र नाइक (वामन रामचंद्र नाइक) हैदराबाद   सेठ वामन नाइक (वामन रामचंद्र नाइक) हैदराबाद
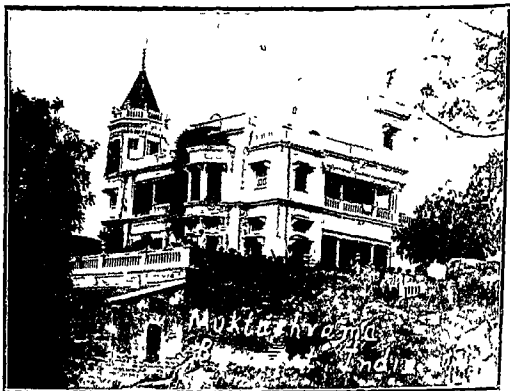
मुक्ताश्रम बिल्डिङ्ग (वामन रामचंद्र नाइक) हैदराबाद

मेसर्स वामन रामचन्द्र नाइक जागीरदार

इस फर्म के वर्तमान मालिक श्री वामनराव नाइक जागीरदार हैं। आप के पूर्वज बापूजी नाइक बीजापुर में बैंकिंग व्यापार करते थे। श्री बापूजी नाइक ने हैदराबाद के नारायण पेठ नामक स्थान में अपना साहुकारी लेनदेन का काम जारी किया। आप के पुत्र श्री उमाकान्त जी नाइक को हैदराबाद स्टेट के संस्थानिक राजा साहब गदवाल ने अपनी स्टेट में साहुकारी व्यापार करने के लिये आमंत्रित किया, श्री उमाकान्तजी नाइक के पौत्र (श्री यंकोबा नाइक के पुत्र) श्री गोविन्दनाइक एवं श्री यंकोबा नाइकने इस कुटुम्ब में सबसे अधिक मान मय्यादा पाई। आप दोनों सज्जनों ने "गदवाल" एवं "वनपर्ती' स्टेट के दीवान का पद सुशोभित किया। उस समय लाखों रुपयों की सम्पत्ति इन स्टेटों में इस फर्म की साहुकारी व्यवसाय में लगी रहती थी। आप दोनों भ्राताओं को उक्त स्टेटों ने जागीरी देकर सम्मानित किया।

व्यवसायिक एवं राजकीय कार्यों के अलावा श्रीमान् गोविन्द नाइक एवं श्रीमान् यंकोबा नाइक ने कृष्णा नदी पर एवं जी० आई० पी के स्टेशन पर दो धर्मशालाएँ बनवाई, रामेश्वर तथा काशी जाने वाले यात्रियों के लिये भोजन तथा सदावर्त का प्रबन्ध किया, कई यज्ञ किये, एवं तीन चार देवालयों का निर्माण कराया, वनपर्ती राजा साहब से "व्यापरला" नामक ग्राम की कुछ जमीन खरीद कर अग्निहोत्र ब्राह्मणों को दिया। इस प्रकार आप दोनों सज्जन क्रमशः ता० २३-९-१८९५ एवं जून सन् १८८२ ईस्वी को स्वर्गवासी हुए।

श्रीमान् गोविंद नाइक के २ पुत्र हुए, श्रीरामचन्द्र नाइक एवं श्रीनिवास नाइक। इनमें श्री रामचन्द्र नाइक अपने चाचा यंकोबा नाइक के स्वर्गवासी होने के २७ दिन बाद ही ३६ वर्ष की अल्पायु मे स्वर्गवासी हुए। श्रीमान् यंकोबा नाइक के पुत्र श्रीवासुदेव नाइक वकीली करते थे, एवं श्रीगोविंद नाइक पेंशनर इन्स्पेक्टर जनरल आफ रेवेन्यू हैदराबाद हैं।

श्रीगोविंद नाइक के बड़े पुत्र श्रीरामचन्द्र नाइक के ३ पुत्र हुए श्रीशेषाद्रि नाइक, श्री उमाकांत नाइक एवं श्रीवामन नाइक। इन सज्जनो में श्रीवामन नाइक विद्यमान हैं। श्रीशेषाद्रि नाइक के पुत्र श्रीरामचन्द्र नाइक हैदराबाद के प्रसिद्ध बैरिस्टर हैं। श्रीगोविंद नाइक के छोटे पुत्र श्रीउमाकांत नाइक के २ पुत्र हैं जिनमें बड़े यंकोबा नाइक व्यापार करते हैं एवं छोटे कृष्णाजी नाइक ट्रेझररमिंट हैदराबाद हैं।

वर्तमान में इस फर्म के संचालक श्रीमान् गोविंद नाइक के पौत्र श्री वामन रामचन्द्र नाइक हैं। आप दक्षिणी ब्राह्मण समाज के देशस्थ सज्जन हैं। आप विद्याप्रेमी, देशभक्त एवं सरल स्वभाव के सज्जन हैं। विशुद्ध खादी से आप को विशेष स्नेह है। आपकी ओर से हैदराबाद में विवेक वर्द्धिनी पाठशाला के नाम से एक हाई स्कूल चल रहा है जिसमें ८०० छात्र शिक्षा

लाभ करते हैं। इसके साथ कन्या पाठशाला एवं बोर्डिंगहाउस भी है। बोर्डिंग में छात्रों के लिये भोजनादि का प्रबन्ध है। प्लेग एवं इन्फ्ल्यूएंजा के समय जनता की बहुत आपने सेवाएँ की थीं। इस समय आप हैदराबाद म्युनिसिपैलेटी के मेम्बर, सनातन धर्म सभा और सोशियल सर्विस लीग के प्रेसिडेंट हैं। आप के पुत्र श्रीयुत श्रीधर वामन नाइक हैदराबाद हाईकोर्ट में बैरिस्टरी करते हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

हैदराबाद—मेसर्स वामन रामचन्द्र नाइक जागीरदार गवलीगुढ़ा, वेगमपैठ। T. No. 135, 375 — यहाँ "गदवाल" एवं "वनपर्ती" संस्थान की जमीदारी एवं बैङ्किंग काम होता है।

इसके अलावा परभनी, नांदेड़, निजामबाद, मेदक और कामारडी मे आपकी जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरीज एवं राइस मिल हैं।

मेसर्स सदासुख जानकीदास

इस फर्म के मालिकों का मूल निवास स्थान बीकानेर है। आप माहेश्वरी वैश्य समाज के डागा सज्जन हैं। इस फर्म का स्थापन सेठ सदासुखजी डागा के हाथों से निजाम स्टेट के डेगलूर नामक स्थान मे १५० वर्षों से अधिक समय पहिले हुआ था। करीब ४० सालों तक आप डेगलूर में व्यापार संचालित करते रहे, आपही के समय में हैदराबाद में भी दुकान खोली गई। सेठ सदासुखजी एवं बंशीलालजी अबीरचंदजी का बहुत सन्निकट कौटुम्बिक सम्बन्ध है। आपके पश्चात् आपके पुत्र सेठ जानकीदासजी ने व्यवसाय सम्हाला, आप दोनो सज्जनों के समय व्यवसाय बराबर बढ़ता गया। सेठ जानकीदासजी के ३ पुत्र हुए। सेठ गंभीरचंदजी डागा, कैसेरहिन्द सर कस्तूरचंदजी डागा, तथा सेठ सुगनचंदजी डागा। इन सज्जनों में सर कस्तूरचंदजी डागा मेसर्स बंशीलाल अबीरचंद फर्म में दत्तक गये, तथा शेष दोनों भ्राता फर्म का व्यापार संचालन करते रहे। कैसरहिन्द कस्तूरचंदजी डागा ने मेसर्स बंशीलाल अबीरचंद के नाम और व्यापार को बहुत चमकाया, आपका विस्तृत परिचय हमारे ग्रंथ के प्रथम भाग में दिया जा चुका है।

सेठ गंभीरचंदजी एवं सेठ सुगनचंदजी दोनों भ्राताओ में सेठ गंभीरचंदजी ४० वर्ष की आयु में संवत् १९४१ में स्वर्गवासी हुए। आपके पश्चात् फर्म का सारा कारबार सेठ सुगनचंदजी ही देखते रहे। बीकानेर की पंच पंचायती एवं सार्वजनिक कामों में आपका अच्छा हाथ रहता था, हैदराबाद के शाहीघराने एवं नवाबों के साथ आपने देन लेन का व्यवहार आरंभ किया जो पूर्ववत् इस फर्म पर चला आता है। मेड़ता में आपने धर्मशाला बनवाई एवं

स्व० सेठ गंभीरचन्द्रजी डागा (सदासुख जानकीदास)

सदावर्त चालू किया। बीकानेर में आपकी ओर से सुगनचंद केदारनाथ नामक औषधालय स्थापित है। आपका स्वर्गवास संवत १९६९ में हुआ। आपके इकलौते पुत्र सेठ केदारनाथजी डागा आपकी मौजूदगी में ही सब कामकाज देखने लगे थे।

सेठ केदारनाथजी डागा ने रूई के धंधे में बहुत सम्पत्ति उपार्जित की, आप अंग्रेजी के अच्छे ज्ञाता एवं अदम्य हियाव वाले व्यापारी थे, विशेष कर आप कलकत्ता बम्बई में ही निवास करते थे, आप संवत् १९८० की पौषवदी ९ को स्वर्गवासी हुए, इस समय आपके २ नाबालिग पुत्र श्रीजीवनलालजी एवं श्रीसत्यनारायणजी क्रमशः ९ और ७ साल के हैं और सर बिसेसरदासजी डागाकी देखरेख में नागपुर में निवास करते हैं। इस फर्म पर बाबू हरनाथजी राठी नागोर निवासी २० सालों से मुनीमात करते हैं। आप भी बड़े समझदार सज्जन हैं। इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

हैदराबाद रेसिडेंसी—मेसर्स सदासुख जानकीदास T. No. 310 तार का पता EORNESTLI } यहाँ बैङ्किग तथा सराफी लेन देन का काम होता है।

डिगलूर (निजाम स्टेट) मेसर्स सदासुख जानकीदास—बैङ्किग तथा सराफी लेन देन होता है।

बम्बई—मेसर्स गम्भीचन्द केदारनाथ शेखमेमन स्ट्रीट T. No. 2319. } " " "

कलकत्ता—मेसर्स सुगनचंद केदारनाथ जीवनभवन, छाइवरो। } " " "

मेसर्स सरदारमल सुगनमल

इस फर्म के मालिकों का मूल निवासस्थान अजमेर है। आप ओसवाल श्वेताम्बर जैन समाज के सज्जन हैं। इसफर्म के वर्तमान मालिक दीवान बहादुर सेठ थानमलजी लूणिया हैं। आप संवत् १९३३ में अपने किसी घरू काम से यहाँ आये थे और फिर आपने यहीं अपनी दुकान स्थापित कर ली।

दीवान बहादुर सेठ थानमलजी बड़े व्यापार दक्ष सज्जन हैं, जवाहरात के व्यापार में आपने बहुत सम्पत्ति उपार्जित की, आपका माल निजाम सरकार के घराने में एवं इस स्टेट के अमीर उमरावों में खासकर बिक्री होता है। हैदराबाद के आप बहुत प्रतिष्ठित एवं धनिक व्यापारी माने जाते हैं। सन् १९१३ मे आपको निजाम सरकार ने राजा बहादुर का खिताब इनायत किया है। इतना ही नहीं आपसे प्रसन्न होकर भारत गवर्नमेंट ने सन् १९१३ में रायबहादुर

४

एवं सन् १९१९ में दीवान बहादुर की पदवी देकर आपका सम्मान किया है। बीकानेर दरबार ने भी आपको दोनों पैरों में सोना, ताजीम, हाथी, पालकी एवं छड़ी बख्शी है।

आपकी ओर से केसरियाजी में एक धर्मशाला तथा मल्लिनाथजी में एक मकान बना हुआ है। आपके ४ पुत्र हुए पर चारों स्वर्गवासी हो गये। आपके बड़े पुत्र श्रीयुत सरदार मलजी एवं सुगनमलजी के नामों से उपरोक्त दुकान है। श्रीयुत सुगनमलजी के नाम पर श्री-इन्द्रमलजी अजमेर से दत्तक लाये गये हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

हैदराबाद—रेसिडेंसी कोठी—मेसर्स सरदारमल सुगनमल—यहाँ जवाहरात का व्यापार तथा बैङ्किंग व्यापार होता है।

मेसर्स सीताराम रामनारायण

इस फर्म के मालिकों का मूल निवास छोटी खाटू (जोधपुर स्टेट) में है। आप माहेश्वरी वैश्य समाज के लोया सज्जन हैं। इस फर्म के स्थापक सेठ रामनारायणजी लोया (सेठ धन-रूपजी के पुत्र) केवल ५ वर्ष की अल्प आयु में यात्रियों के साथ संवत् १९०१ में हैदराबाद आये थे। १॥ साल बाद आप शिवकरण रामदास की दुकान पर नौकर हो गये, आपने वहाँ ऐसी प्रतिभा दिखाई कि धीरे २ उस दुकान के मुनीम एवं पीछे से भागीदार बनाये गये। उक्त दुकान का शाही घराने के साथ कपड़े का लेन देन था। इस प्रकार कपड़े के व्यापार में अनुभव प्राप्त कर आपने संवत् १९२६–२७ में अपनी स्वतंत्र दुकान की।

सेठ रामनारायणजी लोया ने धार्मिक कामों में भी उदारता पूर्वक खर्च किया। आपने श्रीरंगम में एक धर्मशाला बनवाई। हैदराबाद में नदी के किनारे धर्मशाला बनवाई, बालाजी के मंदिर का जीर्णोद्धार करवाया, सीताराम बाग में धर्मशाला बनवाई तथा लकड़ी का विशाल रथ चढ़ाया। इसी प्रकार महाराजगंज, सोमाजी, गुढ़ा एवं अलवाल के मंदिर मे काम करवाये। तिरपती बालाजी में आपने कोठियाँ, हाल तथा दीवालें बनवाई, नल की व्यवस्था की, आपकी ओर से चितानूर, पद्मावती, बालाजी तथा विष्णुकाँची में सदावर्त का प्रबन्ध है। आपका स्वर्ग-वास संवत् १९७७ की चैत्रबदी ८ को हुआ। आपने मीर महबूब अली पातशाह के साथ देहली और काशी की यात्रा की थी। आपके पुत्र सेठ रामधनजी आपकी मौजूदगी मे ही संवत् १९७६ की आषाढ़ सुदी १२ को स्वर्गवासी हो गये थे।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ रामधनजी के पुत्र सेठ व्यंकटलालजी लोया हैं। हैदराबाद में सन् १९२६ के अ० भा० वैष्णव सम्मेलन के आप उपसभापति निर्वाचित हुए थे।

दीवान बहादुर सेठ थानमलजी लूणियाँ (सरदारमल सुगनमल) हैदराबाद

स्व. सेठ सुगनमलजी लूणियाँ (सरदारमल सुगनमल) हैदराबाद

सेठ इंद्रमलजी लूणियाँ (सरदारमल सुगनमल) हैदराबाद

स्व० सेठ रामनारायणजी लोया (सीताराम रामनारायण)

स्व० सेठ रामधनजी लोया (सीताराम रामनारायण)

श्री०सेठ त्र्यंबकलालजी लोया (सीताराम रामनारायण)

आपके परिश्रम से चैलापुरा में राजस्थानी हिन्दी विद्यालय तथा लाड़बाजार में सरस्वती हिन्दी पुस्तकालय खोला गया है। इस समय आप रेसिडेंसी-मारवाड़ी पाठशाला के वाइस प्रेसिडेंट हैं। आपने खाटू में श्रीसाँवलजी के मंदिर की प्रतिष्ठा एवं जीर्णोद्धार कराया, इसी प्रकार के धार्मिक कामों में आप सहयोग देते रहते है। आपके पुत्र श्रीनिवासजी हिन्दी पढ़ते हैं।

आपकी फर्म यहाँ के व्यापारिक समाज में अच्छी प्रतिष्ठित मानी जाती है। सेठ रामनारायणजी के समय से इस फर्म की एक ब्रांच बम्बई में स्थापित है। इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है--

हैदराबाद—मेसर्स सीताराम रामनारायण, चौक T. No. 56	यहाँ हेड आफिस है, तथा बैङ्किग एवं कपड़े का व्यापार होता है।
बम्बई—मेसर्स सीताराम रामनारायण कालबादेवीरोड	यहाँ आढ़त का काम होता है।

मेसर्स सूरतराम गोविन्दराम

इस फर्म के मालिकों का मूल निवास स्थान नागोर (मारवाड़) है। आप माहेश्वरी वैश्य समाज के मूँदड़ा सज्जन हैं। इस फर्म के स्थापक सेठ मोतीरामजी अट्ठारहवीं शताब्दि में द्वितीय निजाम अलीखाँ बहादुर के समय में हैदराबाद आये थे। आपके पुत्र सेठ सूरतरामजी ने इस फर्म पर बैङ्किग व्यापार आरंभ किया। आपने इस फर्म की बाहरी शहरों में कई शाखाएँ खोलीं। आपका स्वर्गवास सन् १८२८ में हुआ। आपके पश्चात् आपके पुत्र सेठ गोविन्दरामजी ने व्यवसाय सम्हाला। आपने मद्रास एवं लिंगमपल्ली मे धर्मशालाएँ बनवाई एवं उन स्थानों पर सदावर्त जारी किये। सेठ गोविन्दरामजी बहुत व्यवसाय दक्ष महानुभाव थे, आपने मद्रास से रंगून तक जहाज सर्विस दौड़ाई, जो सवारी एवं माल ले जाने का कार्य्य करती थी, इस व्यापार मे भी आपने बहुत सम्पत्ति उपार्जित की। कहा जाता है कि सेठ गोविन्दरामजी से उनके धर्म गुरु ने एक बार १ लक्ष रुपया माँगा, तो आपने गुरु को एक लाख रुपयों की चौकी करके उस पर उन्हे बैठा दिया व रुपये भेंट कर दिये। निजाम स्टेट से भी लेन-देन का व्यवहार इस फर्म का करीब ७५ वर्षों तक जारी रहा। सेठ सूरतरामजी की स्त्री मूंदड़ी माई के के नाम से प्रसिद्ध थी। आपने हैदराबाद के धार्मिक जगत में बहुत बड़ा नाम पाया। सेठ गोविन्दरामजी के बाद क्रमशः जयगोपालदासजी एवं घनश्यामदासजी ने व्यापार सम्हाला। इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ मुकुन्ददासजी मूँदड़ा हैं। आपकी फर्म हैदराबाद में पंच मानी

जाती है। आप युद्ध वार लोन के समय निजाम सरकार की ओर से पंच कमेटी के सेक्रेटरी नियत हुए और उसमें बड़ी २ रकमें इकट्ठी कीं। आप बम्बई के चेम्बर आफ कामर्स एवं हैदराबाद चेम्बर ऑफ कामर्स के मेम्बर हैं। ७-८ सालों तक आप हैदराबाद की दोनों मिलों के डायरेक्टर रह चुके हैं। १९१८ में जलप्रलय के समय आपने जनता की बहुत सेवाएँ की थीं आपकी फर्म हैदराबाद की बहुत पुरानी एवं प्रतिष्ठित फर्म मानी जाती है। आप साहुकार कमेटी के सेक्रेटरी हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१—हैदराबाद—मेसर्स सूरतराम गोविन्दराम, बेगम बाजार T. No. 20 तार का पता Headman	यहाँ इस फर्म का हेड ऑफिस है, तथा बैङ्किग व्यापार होता है।
२—मद्रास—मेसर्स गोविन्दराम जयगोपालदास, साहुकार पैठ—T. A. Headman	बैङ्किग तथा आढ़त का काम होता है।
३—बम्बई—मेसर्स जयगोपालदास घनश्यामदास, पारसीगली T. N. 20७92 तार का पता Headman	” ” ”
४—करीमनगर (निजाम) मेसर्स जयगोपालदास घनश्यामदास	” ” ”
५—सिद्धि पैठ (निजाम) ” ” ”	” ” ”
६—लच्छा पैठ (निजाम) ” ” ”	” ” ”
७—नांदेड़ (निजाम) सेठ मुकुन्ददास मूँदड़ा, तार का पता Headman	” ” ”
८—धरमाबाद (निजाम) ” ” तार का पता Headman	” ” ”
९—गुलबर्गा—मेसर्स मुकुन्ददास द्वारकादास	” ” ”
१०—कुण्डुलवाड़ी (नादेड़) मेसर्स गोपीकिशन शिवनारायण	” ” ”

रा० बा० लाला सुखदेवसहाय ज्वालाप्रसाद

इस फर्म के मालिकों का मूल निवासस्थान कानोड़-महेन्द्रगढ़ (पटियाला-स्टेट) है। आप ओसवाल जैन समाज के सज्जन हैं। राजा बहादुर लाला सुखदेवसहायजी के पितामह लाला नेतरामजी पहिले पहल संवत् १८९४ में हैदराबाद आये और चारकमान में व्यापार शुरू किया। २० वर्ष के पश्चात् कार्य्य-भार अपने सुपुत्र लाला रामनारायणजी पर छोड़कर आप कानोड़ चले गये।

स्व० राजाबहादुर लाला सुखदेव सहायजी
जौहरी—हैदराबाद रेसिडेंसी

स्व० लाला रामनारायणजी हैदराबाद रेसिडेंसी

श्री लाला एस० ज्वालाप्रसादजी हैदराबाद रेसिडेंसी

लाला रामनारायणजी बड़े उत्साही और साहसी व्यापारी थे। आपके समय में इस फर्म के व्यापार और सम्मान की विशेष वृद्धि हुई। आप हैदराबाद स्टेट के बड़े प्रतिष्ठित जौहरी थे। लाखों रुपयों के जवाहरात आपने निजाम सरकार को सप्लाई किये। दरबार में आपकी अच्छी इज्जत थी। कानोड़ में आपने सदावर्त चालू किया। तथा और भी जैन धर्म के कार्यों में अच्छी सहायताएँ दीं। आप ८४ वर्ष की अवस्था में अपने पुत्र लाला सुखदेवसहायजी पर कारभार छोड़कर स्वर्गवासी हुए।

लाला सुखदेवसहायजी ने करीब १ लाख रुपया खर्च कर जैन धर्म की कई पुस्तकें तथा बालब्रह्मचारी जैनमुनि अमोलक ऋषिद्वारा अनुवादित ३२ जैनसूत्रों की एक हजार प्रतियाँ अमूल्य बटवाईं। आपने कलकत्ते में दुकान की एक शाखा खोली। आपकी सेवाओं से प्रसन्न निजाम सरकार ने आपको राजाबहादुर का खिताब इनायत किया। आप संवत् १९८४ में स्वर्गवासी हुए।

राजा बहादुर लाला सुखदेवसहायजी के पश्चात् आपके पुत्र लाला ज्वालाप्रसादजी ने इन फर्मों का कार्यभार सम्हाला। आप ही वर्तमान मे इस फर्म के मालिक हैं। आपको पटियाला नरेश की तरफ से ४ कांस्टेबल और १ सार्जेण्ट की गार्ड आफ ऑनर मिली है। आप पटियाला स्टेट के प्रतिष्ठित रईसों मे माने जाते हैं। आपके ही समय हैदराबाद में चारकमान से रेसिडेंसी में कारबार शुरू किया। हैदराबाद के व्यापारिक समाज में यह फर्म अच्छी मातबर मानी जाती है। आपके पुत्र माणकचंदजी ३ वर्ष के हैं। आपके कारबार का हाल इस प्रकार है।

हैदराबाद—(रेसिडेंसी) राजा बहादुर लाला सुखदेव-सहाय ज्वालाप्रसाद बैंकर्स तार का पता Lala फोन 569	बैङ्किग, जवाहरात और आढ़त का काम होता है।
कलकत्ता—ज्वालाप्रसाद जगदम्बाप्रसाद ७१ बड़तल्ला स्ट्रीट, तार का पता Gulab Pul फोन नं० 2769 B.B.	यहाँ गल्ला, बारदाना, आढ़त, किराना का काम होता है।
कानोड़—महेन्द्रगढ़ (पटियाला स्टेट) लाला नेतराम रामनारायण लाला भवन	यहाँ आपका खास निवास-स्थान है।

मेसर्स हरगोपालदास रामलाल

इस फर्म के मालिकों का आदि निवासस्थान गनेड़ी (सीकर) है। वहाँ से यह कुटुम्ब महाराजा लक्ष्मणसिंहजी के समय में लक्ष्मणगढ़ आकर निवास करने लगा। आप अग्रवाल वैश्य समाज के सिंहल गोत्रीय गनेड़ी वाला सज्जन हैं। इस फर्म के स्थापक सेठ महानंदरामजी देश से पैदल मार्ग द्वारा संवत् १८६२ में हैदराबाद आये। एवं आप ही के हाथों से यहां फर्म की स्थापना हुई।

सेठ महानंद रामजी यहाँ सरकारी पोतदारे का काम महानंदराम पूरनमल के नाम से करते थे इसके अलावा आपने राज्य के साथ लेनदेन का सम्बन्ध भी जारी किया। कलकत्ता बंबई आदि बड़े शहरों उस समय आपकी बहुत सी दुकानें काम करती थीं। आपके पुत्र सेठ पूरनमलजी इस कुटुम्ब में बहुत प्रतापी एवं मेधावी पुरुष हुए, आपने इस फर्म के सम्मान सम्पत्ति एवं प्रतिष्ठा में विशेष रूप से वृद्धि की। आप निजाम स्टेट के ख्याति प्राप्त साहुकार माने जाते थे। सरकारी पोतदारे के अलावा आपने फर्म के बैङ्किग व्यापार की भी विशेष वृद्धि की।

व्यापारिक उन्नति के साथ २ हैदराबाद का प्रसिद्ध सीताराम बाग आपने बनवाया। इस मंदिर की प्रतिष्ठा संवत् १८८२ की ज्येष्ठ सुदी २ को की गई। यह मंदिर हैदराबाद के प्रसिद्ध हिन्दू देवालयों में गिना जाता है। इसके स्थाई प्रबंध के लिये निजाम सरकार आसफजाह बादशाह ने ७५ हजार सालाना की जागीर निकाल कर सेठ पूरनमलजी का उचित सत्कार किया था। इसकी जागीर पानगाँव, बलगाँव, आकोली आदि स्थानों में है। इसके अलावा एक श्रीरंगजी का मंदिर पुष्कर में भी बनवाया, इसकी प्रतिष्ठा संवत् १९०० में की गई। इस मंदिर के स्थाई प्रबंध के लिये राजपूताने में सीकर दरबार की ओर से १५००) सालाना की जागीर प्राप्त है।

सेठ पूरनमलजी के पश्चात् इस फर्म का व्यापार भार क्रमशः सेठ प्रेमसुखदासजी सेठ हरगोपालदासजी एवं सेठ रामलालजी ने सम्हाला आप तीनों सज्जनों में से प्रेम सुखदासजी संवत् १९१२ में एवं सेठ हरगोपालदासजी संवत १९४० में स्वर्गवासी होगये हैं। तथा वर्तमान में राय साहब सेठ रामलालजी विद्यमान हैं, एवं आप ही फर्म के प्रधान मालिक हैं।

रायसाहब सेठ रामलालजी गनेड़ी वाला—आपका जन्म संवत् १९०५ में हुआ। सेठ पूरनमलजी के पश्चात् फर्म के सम्मान में आपके हाथों से विशेष वृद्धि हुई, कानून और वैद्यक में आप विशेष जानकारी रखते हैं। आपने निजाम सरकार से बरसो तक मुकद्दमा लड़कर कई लाख की रकम ली, आप अ० भा० मारवाड़ी अग्रवाल महासभा के द्वितीय अधिवेशन के बम्बई में एवं

अ० भा० मा० अग्रवाल पंचायत के कलकत्ते वाले अधिवेशन में सभापति निर्वाचित हुए थे। आप हैदराबाद लेजिस्लेटिव्ह असेम्बली के मेम्बर रह चुके हैं। आपसे प्रसन्न होकर भारत गवर्नमेंट ने सन् १९१७ में आपको राय साहब की पदवी दी। आप श्री सीताराम बाग के मुतव्वली हैं, आप यहाँ के मारवाड़ी पंचायती के पंच माने जाते हैं। आपके २ पुत्र हुए, सेठ मुरलीधरजी एवं सेठ लक्ष्मीनिवासजी। सेठ मुरलीधरजी स्वर्गवासी होगये, एतदर्थ आपके नाम पर श्रीलक्ष्मी निवासजी दत्तक हैं। वर्तमान में रायसाहब सेठ रामलालजी फर्म का व्यापारिक काम अपने सुयोग्य पौत्र सेठ लक्ष्मीनिवासजी पर छोड़कर शांति लाभ करते हैं।

सेठ मुरलीधरजी—आप २० वर्ष की उम्र से ही लछमण गढ़ में निवास करने लगे थे, वहाँ की जनता में आपने बहुत ख्याति पाई। आपका स्वर्गवास संवत् १९८५ की पौष बदी ३ को हुआ, आपके सम्मानस्वरूप लक्ष्मणगढ़ की जनता ने आपके स्वर्गवास के दिन हड़ताल मनाई एवं आपके द्वादशे में स्वयं सीकर महाराज ने आकर अग्रगण्य रूप से भाग लिया। लक्ष्मणगढ़ की जनता आपकी जीवनी पुस्तकाकार रूप में अलग प्रकाशित करा रही है। सीकर दरबार में इस कुटुम्ब को कुर्सी प्राप्त है, लक्ष्मणगढ़ में आपकी बहुत सी स्थाई सम्पत्ति है।

वर्तमान में इस फर्म के प्रधान संचालक सेठ लक्ष्मी निवासजी गनेड़ी वाला हैं। आप बहुत गंभीर सरल स्वभाव के उदार नवयुवक हैं। लक्ष्मीविलास तथा पद्माविलास नामक आपकी यहाँ सुंदर बिल्डिग्ज बनी हुई है। अभी हाल ही में आपने लक्ष्मी बैंक की स्थापना की है। इसमें नवीन पद्धति से बैङ्किग व्यापार किया जाता है। तथा कुछ मास पूर्व आपने बेजवाड़ा में एक कॉटन मिल खरीदा है, इस प्रकार अपनी फर्म के व्यवसाय को विस्तृत करने के लिये आप बड़ी तत्परता से व्यापारिक कामों में दत्तचित्त रहते हैं। नवयुवकों द्वारा होने वाले योग्य कार्यों में आप विशेष दिलचस्पी रखते हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

हैदराबाद-रेसिडेंसी-मेसर्स हरगोपालदास रामलाल T. No. 181 तारका पता Laxmi	यहाँ बैङ्किग, कंट्राक्टिंग एवं आढ़तका कारबार होता है।
सिकन्दराबाद—हरगोपाल दास रामलाल लक्ष्मीविलास T. No. 574 तारका पता Bilas	यहाँ निवास एवं बंगला है।

बेजवाड़ा—दि कृष्णा स्पीनिंग एण्ड वीविंग मिल्स कम्पनी लिमिटेड } अभी आपने इस मिल को खरीदा है। इसके सब शेअर आपके पास हैं।

बेजवाड़ा—दि लक्ष्मी राइस मिल } इस नाम से एक राइस मिल है।

हैदराबाद—दि लक्ष्मी बैंक T. No. 181 तारका पता Laxmi } इस बैंक में नवीन पद्धति से बैङ्किग व्यापार होता है, इसे आपने अभी कुछ समय पूर्व खोला है।

राजा बहादुर ज्ञानगिरि नरसिंहगिरि*

इस फर्म के वर्तमान मालिक श्रीमान् गोस्वामी धनराज गिरिजी हैं। आप हैदराबाद के बहुत बड़े धनिक एवं प्रतिष्ठा प्राप्त महानुभाव हैं। आपके यहाँ प्रधान रूप में निजाम स्टेट के रईसों, नवाबों एवं जागीरदारों को उनकी पापर्टी पर रुपया देना तथा बैङ्किग काम होता है। आपने एक बहुत विशाल अस्पताल बनवाया है। आपकी फर्म के द्वारा लाखों रुपये धार्मिक एवं शिक्षा के कार्यों में खर्च हुए हैं, आपका ज्ञानबाग दर्शनीय इमारत है। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

हैदराबाद—राजा बहादुर ज्ञानगिरि नरसिंहगिरि ज्ञानबाग। } यहाँ निजाम स्टेट के रइसों-नवाबों को पापर्टी पर रुपया देनेका व्यापार तथा इतर बैङ्किग कारबार होता है।

जौहरी

मेसर्स जिंदामल हीरालाल

इस फर्म के मालिकों का मूल निवासस्थान नारनोल (पंजाब) है। आप अग्रवाल वैश्य समाज के सज्जन हैं। इस फर्म का स्थापन करीब १०० वर्ष पूर्व सेठ गुलजारीलालजी के हाथो से हुआ था। आपका स्वर्गवास संवत् १९२२ मे हुआ। आपके पश्चात् आपके पुत्र सेठ जोगध्यानजी एवं जिंदामलजी ने फर्म के व्यापार को विशेष रूप से बढ़ाया। लाला जोगध्यानजी की जवाहरात के व्यापार में अच्छी निगाह थी। आप दोनों भाइयों का क्रमशः संवत् १९५० और संवत १९४४ में स्वर्गवास हुआ।

---

* खेद है कि कोशिश करने पर भी आपका परिचय एवं फोटो नहीं प्राप्त हो सका।

स्व० राजाबहादुर सेठ मोतीलालजी जौहरी
(मोतीलाल रामचन्द्र–हैदराबाद)

सेठ गोविंद नारायणजी धूत (रामबगस जयचंद हैदराबाद)

सेठ बंशीलालजी कानोड़िया (नूनकरण ठढीराम–हैदराबाद)

श्रीयुत श्रीकृष्णजी धूत (रामबगस जयचंद–हैदराबाद)

वर्तमान में इस फर्म के मालिक लाला जिंदामलजी के पुत्र सेठ हीरालालजी जौहरी हैं। आरंभ से ही आपकी फर्म जवाहरात का व्यापार करती आ रही है। आपके पुत्र श्रीकेशरीचंदजी व्यापारिक कामों मे भाग लेते है। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

हैदराबाद—मेमर्स जिन्दामल हीरालाल चारकमान	यहाँ हीरा, मोती एवं जवाहरात का व्यापार होता है।

राजा बहादुर मोतीलाल रामचन्द्र

इस फर्म के मालिकों का मूल निवासस्थान चर्खीदादरी (झिंद) है। आप अग्रवाल वैश्य समाज के सज्जन हैं। इस फर्म का स्थापन करीब १२५ वर्ष पूर्व सेठ खुशालीरामजी के हाथों से हुआ था। आरंभ से ही आपके यहाँ जवाहरात का व्यापार होता आ रहा है। सेठ खुशालीरामजी के पुत्र सेठ मुरलीधरजी एवं वंशीधरजी के हाथों से फर्म के व्यापार की उन्नति हुई। आप दोनों का स्वर्गवास क्रमशः संवत् १९२९ एवं संवत् १९३२ में हुआ। सेठ मुरलीधरजी के पुत्र रामचन्द्रजी एवं वंशीधरजी के राजा बहादुर सेठ मोतीलालजी हुए।

राजा बहादुर सेठ मोतीलालजी जौहरी व्यापारिक समाज के बड़े हिमायती, पक्षपातरहित एवं निजामस्टेट में आदर पाये हुए व्यक्ति थे। आपने १० सालतक बिना किसी मावजे के सरकारी जवाहरात का काम देखा था। इसलिये सन् १९१४ में आपको राजाबहादुर का सम्माननीय खिताब हासिल हुआ। आपका स्वर्गवास संवत् १९७७ में एवं रामचन्द्रजी का स्वर्गवास संवत् १९८२ में हुआ।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ मोतीलालजी के पुत्र हीरालालजी एवं सेठ रामचन्द्रजी के पुत्र श्रीयुत लक्ष्मीनारायणजी B. S. C. H. C S. (सिविल हैदराबाद सर्विस) हैं। आप हैदराबाद के पहिले मारवाड़ी ग्रेजुएट हैं। इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

हैदराबाद—मेसर्स राजाबहादुर मोतीलाल रामचन्द्र चारकमान	यहाँ जवाहरात तथा बैङ्किंग व्यापार होता है।

कपड़े के व्यापारी

मेसर्स झाँझीराम करोड़ीमल

इस फर्म के मालिक बेरोड़ (अलवर) निवासी ओसवाल समाज के सज्जन हैं। इस दुकान का स्थापन ६० साल पहिले सेठ झाँझीरामजी ने किया। सेठ झाँझीरामजी के पश्चात् सेठ करोड़ीमलजी ने जवाहरात आदि के व्यापार में विशेष सम्पत्ति पैदा की। आप १५ वर्ष के पूर्व स्वर्गवासी हो गये हैं।

वर्तमान में इस दुकान के मालिक सेठ पूनमचंदजी गंधी हैं। आपको निजाम सरकार से मंसब प्राप्त है। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

हैदराबाद—चौक, मेसर्स झाँझीराम करोड़ीमल—बैङ्किंग व कपड़े का व्यापार होता है।

मेसर्स नूनकरण ठंढीराम

इस फर्म के मालिकों का मूल निवासस्थान कानोड़ (पटियाला) है। आप अग्रवाल वैश्य समाज के कानोड़िया सज्जन हैं। इस फर्म का स्थापन संवत् १८८५ में सेठ नूनकरणजी के हाथों से हुआ था। आरंभ से ही इस फर्म पर कपड़े का व्यापार होता आ रहा है, सेठ नूनकरणजी संवत् १९४२ में स्वर्गवासी हुए। आपके पश्चात् आपके पुत्र ठंढीरामजी ने फर्म के कारबार को विशेष बढ़ाया, आप भी १९७२ में स्वर्गवासी हुए।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ ठंढीरामजी के पुत्र सेठ वंशीलालजी कानोड़िया हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

हैदराबाद—(दक्खिन) मेसर्स नूनकरण ठंढीराम अफजल गेट T. No. 240	यहाँ बनारसी, सूती, ऊनी तथा रेशमी वस्त्रों का थोक एवं परचूटन व्यापार होता है।
हैदराबाद—मेसर्स नूनकरण ठंढीराम चौक T. No. 552	यहाँ भी उपरोक्त व्यापार होता है।
तारापल्ली गुड्डम—(मद्रास) राजाबहादुर प्रेमसुखदास ताराचंद	इस नाम की राइस मिल में आपका हिस्सा है।

मेसर्स रामबगस जयचंद

इस फर्म के मालिक जयपुर निवासी माहेश्वरी वैश्य समाज के धूत सज्जन हैं। इसका स्थापन सेठ रामबगसजी के हाथों से हुआ। आपके बाद आपके पुत्र सेठ जयचंदजी ने व्यापार को तरक्की पर पहुँचाया। आपने इस दुकान से शाही घराने एवं अमीर उमरावों के साथ व्यापार और लेन-देन आरंभ किया। आप संवत् १९४५ में स्वर्गवासी हुए। आपने अपनी फर्म की एक ब्रांच संवत् १९३० में बनारस में खोली।

वर्तमान में इस दुकान के मालिक सेठ जयचंदजी के पुत्र गोविंदनारायणजी धूत हैं। आपने इस दुकान के व्यापार को विशेष चमकाया है। आप शक्ति के उपासक हैं। आपके पुत्र श्रीयुत श्रीकृष्णजी धूत समझदार नवयुवक हैं। इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

हैदराबाद—मेसर्स रामबगस जयचंद लाड बाजार — यहाँ विशेषकर बनारसी, रेशमी, जरीन माल का व्यापार और बैङ्किग काम होता है।

बनारस—मेसर्स रामबगस जयचंद चौखम्भा — यहाँ से बनारसी कपड़ा तय्यार करवाकर दिसावरों के लिये भेजा जाता है।

मेसर्स रामनारायण श्रीकृष्ण पित्ती

इस फर्म के मालिकों का मूल निवासस्थान नागोर (जोधपुर स्टेट) है। आप अग्रवाल वैश्य समाज के पित्ती सज्जन हैं। इस फर्म के स्थापक सेठ रामनारायणजी पित्ती करीब ८० साल पहिले यहाँ आये थे। आरंभ में आपने राजा बहादुर शिवलाल मोतीलाल की फर्म पर ४० वर्षों तक काम किया। आपने इस दुकान पर अच्छी इज्जत पाई। इसी अवधि में आपके पुत्र श्रीकृष्णजी पित्ती ने सराफी और गल्ले का कारबार आरंभ किया। आपने ३५ साल पहिले मद्रास में भी दवाइयों का कारबार आरंभ किया।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ श्रीकृष्णजी पित्ती हैं। आपके पुत्र श्रीयुत नारायणदासजी पित्ती भी फर्म का व्यापारिक कार्य्य संभालते हैं। * आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

हैदराबाद—मेसर्स रामनारायण श्रीकृष्ण पित्ती कसार हट्टा — यहाँ बैङ्किग व्यापार होता है।

---

* आप की ओर से मकान में एक धार्मिक औषधालय चालू है।

हैदराबाद—मेसर्स श्रीकृष्ण नारायणदास लाड बाजार } यहाँ कपड़े का व्यापार होता है।

मद्रास—एस० एस० पित्ती ८ गोविंदप्पा नायक स्ट्रीट } दवाइयों का कारबार तथा लेनदेन का काम होता है।

मेसर्स रामनारायण हीरालाल

इस फर्म के मालिकों का मूल निवासस्थान नागोर (जोधपुर स्टेट) है। आप खत्री समाज के सज्जन हैं। इस फर्म के स्थापक सेठ रामलालजी ७० वर्ष पूर्व हैदराबाद आये, एवं कपड़े का का व्यापार स्थापित किया। आपके पुत्र सेठ रामनारायणजी एवं सेठ हीरालालजी ने अपनी मौजूदगी में ही व्यापार की भली प्रकार उन्नति कर दिखाई। आपकी दुकान पहिले चौक में व्यापार करती थी। ३० साल पहिले इस दुकान पर ऊनी कपड़ों का व्यापार शुरू किया गया। वर्तमान में ऊनी वस्त्र का इस दुकान पर बहुत अच्छा स्टाक रहता है। सेठ रामलालजी करीब १५ वर्ष पूर्व एवं सेठ हीरालालजी ७ वर्ष पूर्व स्वर्गवासी होगये हैं।

वर्तमान में इस दुकान के मालिक सेठ रामनारायणजी खत्री एवं सेठ हीरालालजी खत्री के पुत्र लालचंदजी खत्री हैं। सेठ रामनारायणजी बड़े हिम्मतवर और नौजवानों के समान विचार रखने वाले सज्जन है। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

हैदराबाद—मेसर्स रामनारायण हीरालाल पथर घट्टी। } यहाँ ऊनी और सूती माल का व्यापार होता है। ऊनी माल का इस फर्म पर बहुत बड़ा कारबार है।

मेसर्स शिवनारायण जयनारायण

इस फर्म के मालिकों का मूल निवासस्थान नागोर (मारवाड़) है। आप माहेश्वरी वैश्य समाज के आसावा सज्जन हैं। यह फर्म संवत् १९३३ से कपड़े का व्यापार कर रही है। इसके व्यापार को सेठ जयनारायणजी ने विशेष उन्नति पर पहुँचाया।

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ जयनारायणजी के पुत्र श्री सेठ बंशीलालजी एवं हरीकिशनजी हैं। आपकी फर्म यहाँ के कपड़े के व्यापारियो में अच्छी प्रतिष्ठित मानी जाती है। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

हैदराबाद-(दक्खिन) मेसर्स शिवनारायण जयनारायण चारकमान } यहाँ पर बनारस का रेशमी एवं अमृतसर का ऊनी माल बिकता है।

बनारस—मेसर्स वंशीलाल हरीकिशन चौखम्भा } बनारसी माल का व्यापार होता है। यह दुकान १९६४ में सेठ जयनारायणजी ने स्थापित की।

आयरन एण्ड टिम्बर मरचेंट

मेसर्स लालजी मेघजी

इस फर्म के मालिक खास निवासी कच्छ (वालापघर) के हैं। आप कच्छा दशा ओसवाल जाति के जैन मतावलम्बी सज्जन हैं। इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ लालजी मेघजी अपने भ्राता सेठ भवानजी कानजी धूलिये वालों के साथ बम्बई की लकड़ी की बखार में सर्विस करते थे। जिस दुकान पर आप सर्विस करते थे, उनकी हैदराबाद ब्रांच पर आप मुकर्रर होकर आये, पीछे वह दुकान उठा ली गई और संवत् १९५१ में आपने यहाँ अपनी स्वतंत्र दुकान खोली। इस व्यापार में सफलता प्राप्त करने पर आपने १५ वर्ष पूर्व स्टील पत्थर एवं फर्शी वगैरा का व्यवसाय भी आरंभ किया। इन व्यापारों में आपकी फर्म अच्छी प्रतिष्ठित मानी जाती है।

सेठ लालजी मेघजी "जीव-रक्षा-ज्ञान-प्रचारक-मंडल" नामक संस्था के आरंभ से ऑनरेरी सेक्रेटरी पद का कार्य्य संचालित कर रहे हैं। यह संस्था श्री जैनाचार्य्य हंसविजयजी महाराज के शिष्य श्री दौलत विजयजी एवं उनके शिष्य श्री धर्म विजयजी के प्रबोध से संवत् १९७१ में स्थापित हुई थी, इस संस्था का उद्देश मिन्नत के नाम पर वध होने वाले पशुओं का वध बंद करवाना तथा इस प्रांत में जाति-रिवाजों में होने वाले वधों का बंद करवाना है। संस्था ने सेठ लालजी के सहयोग से भजन-मंडली, मेजिक लैंटर्न आदि के द्वारा जनता में सदुपदेश प्रचार का बहुत परिश्रम उठाया है, इस संस्था का विस्तृत परिचय इसके आरंभ में दे चुके हैं।

वर्तमान में सेठ लालजी की वय ६० वर्ष की है आप के पुत्र प्रेमजी लालजी भी व्यापार में भाग लेते हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

हैदराबाद—मेसर्स लालजी मेघजी कुन्टा रोड T. No. 386 तारका ताप Prem. } यहाँ टिम्बर, शाहबादी स्टोन, स्टील, मंगलोरी कवेलू, लोहा, गार्टर्स एवं कंट्राक्टिंग का काम होता है।

ग्रेनमर्चेण्ट एण्ड कमीशन एजंट

मेसर्स गंगा विशन मोहनलाल

इस फर्म का विस्तृत परिचय मालिकों के फोटो सहित सिकन्दरा बाद में मेसर्स शुभकरण गंगा विशन के नाम से दिया गया है।

सिकन्दराबाद के व्यापारिक समाज में यह फर्म अच्छी मातवर मानी जाती है। वहाँ यह फर्म प्रधानतया बैङ्किग एवं कपड़े का व्यापार करती है। इस कुटुम्ब के हाथो से सिकन्दरा बाद एवं हैदराबाद में बहुत दान धर्म के काम हुए हैं। इसकी हैदराबाद ब्रांच का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

हैदराबाद—मेसर्स गंगा विशन मोहनलाल उसमानगंज } यहाँ गल्ला तथा आढ़त का कारबार होता है।

मेसर्स रामनाथ बद्रीनाथ

इस फर्म का विस्तृत परिचय हमारे ग्रंथ के प्रथम भाग में राजपूताना विभाग के पृष्ठ २०१ में मालिको के चित्रों सहित दिया गया है। इस फर्म का स्थापन मदनूर (निजाम स्टेट) में करीब १०० वर्ष पूर्व सेठ मयारामजी मूलचंदजी मोदानी मूंडवा निवासी तथा सेठ रघुनाथदासजी बूब रोल निवासी ने मिलकर किया था। तब से आप दोनो सज्जनो का कुटुम्ब शामिल व्यापार करता आ रहा है। सेठ रघुनाथदासजी बूब की प्राइवेट फर्म का परिचय रायचूर मे किशन· लाल गिरधारीलाल के नाम से दिया गया है। इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

हैदराबाद—मेसर्स रामनाथ बद्रीनाथ महाराजगंज—बैङ्किग, गल्ला और आढ़त का कारबार होता है।

मदनूर—(निजाम स्टेट) मयाराम मूलचंद—गल्ला, आढ़त का कारवार होता है।

वम्बई—मेसर्स नंदराम मूलचंद तथा बद्रीनाथ रामरतन } गल्ले का कारबार होता है।

मेसर्स हीरानंद रामसुख

इस फर्म के मालिकों का मूल निवासस्थान रोल (जोधपुर स्टेट) है। आप माहेश्वरी वैश्य समाज के ईनानी सज्जन हैं। इस फर्म के स्थापक सेठ रामसुखजी ईनानी करीब ५० साल

पहिले देश से आये थे एवं संवत् १९४८ में आपने अपनी स्वतंत्र दुकान की। आरंभ से ही अपके यहाँ गल्ले का व्यापार होता आ रहा है। आपका स्वर्गवास संवत् १९५७ में हुआ। आपके पश्चात् आपके पुत्र सेठ बालमुकुन्दजी ने व्यापार सँभाला। सेठ बालमुकुन्दजी के बड़े पुत्र सेठ शिवनारायणजी इनानी के हाथों से इस फर्म के व्यापार की विशेष वृद्धि हुई।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ शिवनारायणजी के छोटे भ्राता सेठ बंशीलालजी इनानी हैं। आपकी ओर से अजमेर में एक धर्मशाला बनी है, जो रोलवालों की धर्मशाला के नाम से प्रसिद्ध है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

हैदराबाद—मेसर्स हीरानंद रामसुख, छोटा महाराजगंज T. N. 532 तार का पता Inani } गल्ला एवं बैङ्किग व्यापार होता है।

काकीनड़ा—हीरानंद रामसुख—बैङ्किग व्यापार होता है।

मदनूर (नांदेड़) मेसर्स रामसुख बालमुकुन्द—लेन-देन व कृषि का काम होता है।

निजामावाद-(निजाम) मेसर्स रामसुख बालमुकुन्द— ,, ,, ,,

जनरल मर्चेण्ट्स

मेसर्स मुरलीधर चुन्नीलाल बलदवा

इस फर्म के मालिक नागोर (जोधपुर-स्टेट) निवासी माहेश्वरी वैश्य समाज के बलदवा सज्जन हैं। इस दुकान का स्थापन सम्वत् १९२६ में सेठ मुरलीधरजी बलदवा के हाथों से हुआ। आरम्भ से ही आपके यहाँ बर्तनो का व्यापार होता आ रहा है। सेठ मुरलीधरजी सम्वत् १९४३ में एवं आपके पुत्र सेठ चुन्नीलालजी संवत १९४७ में स्वर्गवासी हुए।

वर्तमान में इस दुकान के मालिक सेठ चुन्नोलालजी के पुत्र सेठ मोहनलालजी बलदवा हैं। आपके हाथों से इस दुकान की विशेष रूप से वृद्धि हुई है। आपके हाथों से सरस्वती हिन्दी-पुस्तकालय का स्थापन हुआ है। वर्तमान में आप उसके मन्त्री हैं। आप सुधार प्रिय सज्जन हैं। आपके पुत्र श्रीयुत कन्हैयालालजी भी कारबार मे भाग लेते हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

हैदराबाद—मेसर्स मुरलीधर चुन्नीलाल कसारहट्टा फोन नं० ३६८ } यहाँ तांबा पीतल और चाँदी के बर्तनों का व्यापार होता है।

मेसर्स गिरधारीलाल रघुनाथदास आसावा

इस फर्म के मालिक नागोर (जोधपुर स्टेट) निवासी माहेश्वरी समाज के आसावा सज्जन हैं। इस दुकान का स्थापन संवत् १९४५ में सेठ गिरधारीलालजी आसावा के हाथ से हुआ। आपने यहाँ आकर किराने का व्यापार शुरू किया तब से बराबर यह दुकान किराने का व्यापार करती आ रही है। सेठ गिरधारीलालजी और रघुनाथदासजी के समय में यह दुकान साधारण ढंग से काम काज करती रही। इसके व्यापार को सेठ रघुनाथदासजी के पुत्र गोपीलालजी ने अधिक बढ़ाया। सेठ गोपीलालजी के पुत्र लक्ष्मीनारायणजी संवत् १९६५ में स्वर्गवासी हुए।

वर्तमान में इस दुकान के मालिक सेठ लक्ष्मीनारायणजी आसावा के पुत्र रामकिशनजी आसावा हैं। आपने अपनी दुकान पर संवत १९७३ से दवाइयों का व्यापार चालू किया है। आपके पुत्र श्रीयुत राधाकृष्णजी एवं बाबूलालजी हैं। आप दोनों छोटे हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

हैदराबाद—मेसर्स गिरधारीलाल रघुनाथदास मोतीगली, लाड़ बाजार	किराना, आढ़त व गिरवी का काम होता है।
हैदराबाद—लक्ष्मीनारायण रायकृष्ण यूनानी दवाखाना—मोतीगली	औषधियों का व्यापार होता है।

मेसर्स सय्यद अब्दुल रज्जाक एण्ड कम्पनी

इस फर्म का स्थापन सन् १८७० में सैयद अब्दुल रज्जाक साहब के हाथों से हुआ था। आपके बाद आपके पुत्र सैयद सुलतान साहब के हाथों से इस दुकान के कारवार की तरकी हुई। सैय्यद अब्दुल रज्जाक साहब १३-१२-१२९९ हिजरी को बिहिश्त नशीन हुए।

वर्तमान में इस दुकान के मालिक सैय्यद सुलतान साहब के ४ पुत्र सैय्यद उसमान साहब, सैय्यद अब्दुल रज्जाक साहब, सैय्यद साइन साहब और सैय्यद हुसैन साहब हैं। शुरू से ही आपके यहाँ सब तरह की विलायती दवाइयों का व्यापार होता है तथा इस लाइन में आपकी दुकान हैदराबाद में बहुत बड़ा कारबार करनेवाली और मशहूर मानी जाती है। यह फर्म एच० ई० एच० निजाम सरकार की खास केमिस्ट है। आपका तिजारती परिचय इस प्रकार है।

हैदराबाद—(चार कमान) सैय्यद अब्दुल रज्जाक एण्ड कम्पनी तार का पता—Chemists फोन नं० 45	सब प्रकार की अंग्रेजी दवाइयों का बहुत बड़ा स्टाक रहता है एवं थोक तथा खुदरा बिक्री होता है।

सेठ लालजी मेघजी हैदराबाद

सेठ लक्ष्मीनारायणजी आसावा
(गिरधारीलाल रघुनाथदास हैदराबाद)

व्यापारियों के पते

बैंक्स

दि इम्पीरियल बैंक आफ इण्डिया लिमिटेड रेसिडेंसी रोड
कोआपरेटिव्ह सेंट्रल बैंक लिमिटेड स्टेशन रोड
सेंट्रल बैंक लिमिटेड रेसिडेंसी रोड
आंध्र बैंक लिमिटेड
जी. रघुनाथमल बैंकर्स चादरघाट रोड
दि लक्ष्मी बैंक

बैंकर्स

मेसर्स अमरसी सुजानमल बेगम बाजार
,, गुलाबदास हरिदास रेसिडेंसी रोड
,, गुमानीराम हरीराम खटोड़, चारकमान
,, जी. रघुनाथमल बैंकर्स चादरघाट रोड
,, चुन्नीलाल नारदप्रसाद रेसिडेंसी बाजार
,, चुन्नीलाल मुरलीप्रसाद रेसिडेंसी रोड
,, राजा चतुर्भुजदास एण्ड संस रेसिडेंसी रोड
,, जयनारायण लक्ष्मीनारायण रेसिडेंसी कोठी
,, जमनालाल रामलाल कीमती हुसमत गंज—रेसिडेंसी
,, नारायणलाल वंशीलाल गोपालबाग रेसिडेंसी
,, निहालचंद पूनमचंद हुसमत गंज—रेसिडेंसी

मेसर्स राय बहादुर वंशीलाल अबीरचंद डागा रेसिडेंसी बाजार
,, राजा बहादुर वंशीलाल मोतीलाल पित्ती, रेसिडेंसी, बेगम बाजार
,, राजा बहादुर भगवानदास हरीदास रेसिडेंसी रोड
,, महेशगिरि भुवनेशगिरि रेसिडेंसी बाजार
,, मनीराम रामरतन सेठी बेगम बाजार
,, रामदयाल घासीराम महबूब गंज
,, रामप्रताप कन्हैयालाल बेगम बाजार
,, रामनाथ बद्रीनाथ महाराजगंज
,, रामसुख हीरानंद महाराज गंज
,, लालगिरि विनोदगिरि बेगम बाजार
,, विसेसरगिरि वीरभानगिरि बेगम बाजार
,, सदासुख जानकी दास रेसिडेंसी
,, सरदारमल सुगनमल रेसिडेंसी
,, राजाबहादुर लाला सुखदेवसहाय ज्वालाप्रसाद रेसिडेंसी
,, सूरतराम गोविंदराम मूँदड़ा बेगम बाजार
,, सीताराम रामनारायण लाड बाजार चौक
,, हरगोपालदास रामलाल रेसिडेंसी
,, राजाबहादुर ज्ञानगिरि नरसिंहगिरि
,, श्रीकृष्ण नारायणदास पित्ती

ज्वेलर्स

मेसर्स इन्द्रजीत रामजस चारकमान

मेसर्स खुशीराम कालूराम चारकमान
" जोगीलाल मनोहरलाल चारकमान
" जिंदामल हीरालाल चारकमान
" जमनालाल रामलाल कीमती हसमत गंज
" सीताराम रामजस चारकमान
" दीवान बहादुर सेठ थानमलजी लूणिया रेसिडेंसी कोठी
" भगवानदास बनारसीलाल
राजा बहादुर लाला सुखदेवसहाय ज्वालाप्रसाद रेसिडेंसी
राजा बहादुर मोतीलाल हीरालाल

क्लाथ मरचेंट्स

मेसर्स जगनप्रसाद मातादीन लाड़ बाजार चौक
" गोपालजी परमानंद लाड़ बाजार
" जगन्नाथ बलदेव लाड़ बाजार
" जमनदास नंदलाल पथरघट्टी
" झांझीराम करोड़ीमल लाड़ बाजार
" नूनकरण ठंडीराम पथरघट्टी
" फाफामल चुन्नीलाल लाडबाजार
" भीखराज बंशीलाल मार्केट
" मौजीराम बंसतीलाल पथरघट्टी
" भगदत्त शिवनाथ लाडबाजार
" रामबगस जयचंद लाडबाजार
" रामदयाल सेढमल लाडबाजार
" रामनारायण हीरालाल पथरघट्टी (ऊलनमाल)
" रामप्रसाद रामजीवन पथरघट्टी
" रामदयाल पोकरमल पथरघट्टी
" रामगोपाल हंसराज चौक

मेसर्स रामप्रताप रामविलास चौक
" शिवनारायण जयनारायण चौक
" शिवकरण रामदास चौक
" सीताराम रामनारायण चौक
" श्रीकृष्ण नारायणदास चौक

गोल्ड एण्ड सिलवर मर्चेंट

मेसर्स केवल कृष्ण मोतीलाल चार कमान
" घासीराम ताराचंद "
" जमनादास नंदलाल "
" तुलसीराम शिवनारायण "
" बद्रीप्रसाद नानकराम "
" भगवानदास बनारसीलाल "
" महानंदराम संतराम "
" रघुनाथदास जवाहरलाल "

गोटे के व्यापारी

मेसर्स अहमद इस्माइल
" अब्दुल लतीफ अलीमहम्मद
" कन्हैयालाल मोतीलाल चौक
" कालूराम रामकरण "
" रामकिशन राजाराम "
" रामकरण रामचन्द्र "
" शिवनारायण रामदयाल "
" हाजी दादा "

जरी, कारचोब व जरीन टोपी के व्यापारी

मेसर्स अब्दुल गफूर कारचोब वाले चौक
" मेसर्स चुन्नीलाल इंद्धाराम "
" ठाकुरदास भगवानदास "

मेसर्स नगीनदास चुन्नीलाल (नक्खीगोटा) चौक
,, मोमिन साहब कारचोब वाले चौक
,, रामकिशन राजाराम (नक्खीगोटा) चौक
,, शिवनारायण रामदयाल ,, ,,
,, सत्यनारायण चन्द्रय्या ,, ,,
,, हाजी दादा हाजी अब्बा ,, ,,

बनारसी रेशमी कपड़े के व्यापारी

मेसर्स ताराचंद रामसुख लाड बाजार
,, भीखराज बंशीलाल ,,
,, आर. आर. गोपाल ,,
,, रामवगस जयचंद ,,
,, शिवनारायणजयनारायण,,
,, हरीकिशन राधाकिशन,,
,, हाजी दादा ,,
,, हाजीजी आली ,,

ग्रेन मर्चेंट एण्ड कमीशन एजंट

मेसर्स कोडारथ लक्ष्मी नरसय्या उसमानगंज
,, गोविंद गोपाल उसमानगंज
,, गंगाविशन मोहनलाल उसमानगंज
,, चुन्नीलाल कांकानी छोटा महाराजगंज
,, चन्दनमल गुलाबचंद उसमानगंज
,, जेठमल गंगाविशन महबूबगंज
,, ठाकरसी धारसी उसमानगंज
,, तमाम अलय्यातमेवार छोटा महाराजगंज
,, नानकराम हलुलराम महाराजगंज
,, पूनमचंद गनेशमल तोप का संचा
,, मिरियाल रामलिंगम उसमानगंज

मेसर्स रामरतन राधाकिशन महबूबगंज
,, रामगोपाल दामोदर महबूबगंज
,, रामनाथ बद्रीनाथ छोटा महाराजगंज
,, रामकरण सदाराम उसमानगंज
,, सीताराम रामगोपाल उसमानगंज
,, हाजी जुसुफ अली महम्मद उसमानगंज
,, हीरानंद रामसुख छोटा महाराजगंज
,, श्रीकृष्ण मुकुन्ददास महाराजगंज

किरियाणा के व्यापारी

मेसर्स अहमद अब्दुल्ला बेगमबाजार
,, गनेशलाल गोपीलाल बेगमबाजार
,, गिरधारीलाल रघुनाथदास लाडबाजार
,, जमनालाल मोहनलाल बेगमबाजार
,, दाउद अब्दुल्ला बेगम बाजार
,, पोकरमल भभूतमल पीलखाना (खामेदा)
,, महम्मद यासम महम्मद कासम बेगमबाजार
,, रामलाल रामनाथ ,,
,, सोभाचंद शिवजीराम ,,
,, सदाराम रामलाल ,,

लोकल घी के व्यापारी

मेसर्स पन्नालाल हीरालाल नगारखाना
,, सीताराम रामगोपाल ,,

जनरल मरचेंट्स

मेसर्स उमर अब्दुल करीम जवेरी चादरघाट रोड
,, इण्टर नेशनल जनरल स्टोर ,,
,, ए० ए० हुसेन एण्ड कम्पनी ,,

मेमर्स ख्वाजा मुइनुद्दीन सालारगंज बिल्डिंग
,, छोटालाल एण्ड संस तोप का संचा
,, जोहन एण्ड कम्पनी कन्फेसनर्स
,, जे० मूसा एण्ड संस सालारजंग देवड़ी (आक्सनर)
,, नवरोजजी बरजोरजी वाइन मरचेंट चादरघाट
,, एम० डी० दत्तात्रय एण्ड कं० रेसीडेंसी रोड
,, महम्मद युनुस एण्ड संस चादरघाट रोड़
,, मीर हुसेन एण्ड संस चादरघाटरोड़
,, मौलादीना अलारखा चादरघाट
,, महम्मद आजम मुइनुद्दीन
,, युनिवर्सल स्टोर्स चादरघाट
,, एल० एम० पिशावरी अफजलगंज (फ्रूटमरचेंट)
,, एच० एम० सुलतान ओप्टीकल्स चादर-घाट रोड
,, हाजी महम्मद साहब टर्किश केपमर्चेंट दीवानदेवड़ी

इंश्युरंश कम्पनीज़

दि एम्पायर आफ इण्डिया इंश्युरस कम्पनी लिमिटेड़
दि जनरल इंश्युरंश सोसाइटी लिमिटेड
दि स्टेंडर्ड लाइफ इंश्युरंस कम्पनी लिमिटेड
दि नेशनल इण्डियन इंश्युरस कम्पनी लिमिटेड
दि सन लाइफ इंश्युरंस कम्पनी लिमिटेड

टिंबर मरचेन्ट्स

आई० एच० रहीमतुल्ला डाया भाई एण्ड सन्स कुन्टा रोड
करीम भाई धरमसी कुण्टा रोड
रा० ब० रामन्ना पुलय्या कृष्टय्या कुण्टा रोड
लालजी मेघजी ,,

आयरन मरचेन्ट्स

चिदुरा वासुदेव कान्तया (आयरन, पत्थर)
लालजी मेघजी ,, ,,
हैदराबाद इंजनियरिंग स्टोर कुण्टा रोड

मोटरकार, साइकल एण्ड पेट्रोल डीलर्स

अहमदिया मोटर टेक्सी कम्पनी चादर घाट
एक्सेलसीयर मोटर टेक्सी कं० रेसीडेंसी
खुरशेद मोटर टेक्सी कम्पनी शंकरबाग
नारायण एण्ड सन्स पेट्रोल मरचेन्ट अफजलगञ्ज
डेकन मोटर वर्कस चादरघाट
बृटिश इण्डिया मोटरकार कम्पनी चादरघाट
पी० डिमियन एंड सन्स तोप का संचा
एम० आर० एण्ड सन्स रेसिडेंसी रोड
राजा मोटर टेक्सी कम्पनी स्टेशन रोड
सोहराव ब्रदर्स साइकल मोटर एजेंसी
हाजी महम्मद हुसेन महम्मद गोस एण्ड कं० पेट्रोल एजंट
हबीबिया मोटर टेक्सी कम्पनी स्टेशन रोड
हैदराबाद मोटर एण्ड आइल कम्पनी स्टेशन रोड

बर्तनों के व्यापारी

नंदलाल रामनाथ कसारहट्टा
मुरलीधर चुन्नीलाल ,,
रामनारायण सीताराम ,,
श्रीराम घासीराम ,,

हार्ड वेअर मर्चेन्ट्स

अब्दुल लतीफ साहब अफजलगञ्ज
के० आर० चरी एण्ड कम्पनी रेसीडेंसी रोड
गुलाम हुसैन शेख अब्दुल करीम कम्पनी अफजलगञ्ज
डी० एमाजी अफजलगञ्ज
महम्मद नूरल्ला पेड्डी शिवराजय्या अफजलगञ्ज
वेल्लूर लिंगय्या ,,
एस०एच० इस्माइलजी इस्माइल बिल्डिंग ,,
एच० महम्मद अली एण्ड कम्पनी ,,
हाजी हमीर मियाँ ,,

पाइप सिनेटरी कंट्राक्टर्स, फिटर्स

के० आर० चरी एंड कम्पनी रेसिडेंसी रोड
मार्कर तय्यबजी अबीड शाप
पालनजी एदलजी चादरघाट रोड
बर्मन ब्रदर्स चादरघाट
एस० एच० इस्मालजी अफजलगञ्ज

मिशनरी मर्चेन्ट

गोसेल ऑइल एंजिन एजन्सी स्टेशन रोड
के० आर० चरी एण्ड कम्पनी चादरघाट रोड
वालकट ब्रदर्स एजंसी स्टेशन रोड (फिजी डियर, रेफ्रीगेटर्स स्टोर)

केमिस्ट एण्ड ड्रगिस्ट

जेम्स एण्ड कम्पनी स्टेशन रोड
दसौर एण्ड कम्पनी ,,
मुलाला एण्ड कम्पनी ,,

सय्यद अब्दुलरज्जाक एण्ड कम्पनी चारकमान
सय्यद हाफ एण्ड कं० चादरघाट
लेसलीगेई एण्ड कम्पनी ,,

प्रिविजन स्टोर

अहमदिया ट्रेडिंग कम्पनी अफजल गेट
पेटेन्ट मेडिशियन हेदी एण्ड कं० ,,
टी सिंडिकेट सालरजंग बिल्डिंग

स्टेशनर्स

कासिम खाँ हाजीहयातअली चारमीनार (कागज)
डक्कन बुक डेपो स्टेशनरी स्टोर चादरघाट

टोबेको मर्चेण्ट्स

दि चार मीनार सिगारेट कम्पनी लिमिटेड
कुपुस्वामी मुदलीयार टोबेको मर्चेंट
हैदराबाद टोबेको कम्पनी लिमिटेड

आर्टिस्ट एण्ड फोटो ग्राफर्स

किलेदार फोटोग्राफर रेसिडेंसी
अलवंडीकर फोटोग्राफर ,,
दक्खन आर्ट स्टूडियो ,,
व्यास एड कम्पनी ,,

होटल्स

अजीज कम्पनी तुरप बाजार
निजामिया होटल चादरघाट
प्रिंस होटल स्टेशन रोड
यान्ने रेस्टोरेंट
दीपाजी होटल चादरघाट

धर्मशाला

आनन्दभवन चारकमान
गुवलीगुड़ा धर्मशाला
सुखभवन चारकमान

आइस एण्ड सोडावाटर फेक्टरी

ए० एवीड एण्ड कं० लिमिटेड आइस एरेटेड-वाटर मेन्युफेक्चरर
अलादीन एण्ड संस सिकन्दराबाद
स्पेंसर एण्ड कम्पनी सिकन्दराबाद

बुकसेलर्स एण्ड पब्लिशर्स

अहमद हुसेन जाफर अली चारमीनार
आजमस्टीम प्रेस
चन्द्रकान्त प्रेस गवलीगुड़ा
डक्कनबुक एण्ड स्टेशनरीमार्ट चादरघाट
मकतबे इब्राहिम नामपल्ली रोड
सय्यद अब्दुलकादर ताजेरकुतुब
हैदराबाद बुक डेपो तोपकासंचा

देशी दवाइयों के व्यापारी

बिहारीलाल पुरानी हवेली
रामप्रसादजयनारायण गुलजार हाउस, चारकमान
लक्ष्मीनारायण सीताराम अफजलगंज
लक्ष्मीनारायण रामकृष्ण यूनानी दवाखाना, लाड़बाजार

स्पोर्टस गुड्स डीलर्स

के० डी० अब्दुलगफूर एण्ड संस
चारलेज एण्ड कम्पनी आबिड बिल्डिंग
पुंगा ब्रदर्स चादरघाट रोड
मटनी ब्रदर्स आबिड बिल्डिंग

प्रिंटिंग प्रेस

आजम स्टीम प्रेस
अहमदिया प्रेस
गव्हर्नमेंट सेण्ट्रल प्रेस
चन्द्रकान्त प्रेस
मुशीरदकन प्रेस
रहवर दकन प्रेस
सहीफा प्रेस

न्यूज पेपर्स

डकन स्टार (अंग्रेजी)
मुशीरदकन (दैनिक)
रहवरे दकन (")
सहीफा (")
सूबे दकन (")

सिकन्दराबाद-दक्षिण

बैंकर्स

मेसर्स जमनाधर पोद्दार

इस फर्म का हेड आफिस नागपुर है, परन्तु यह फर्म इसकी ऊमरी ब्रांच के अंडर में है। नागपुर के टाटा संस की मिलों का कपड़ा बेचने के लिये भारत भर के लिये यह फर्म एजंट है। ऊमरी में सेठ जीवराजजी पोद्दार बहुत लम्बे समय तक रहे थे। वहाँ आपके कारखाने, स्थायी सम्पत्ति आदि हैं। ऊमरी के अंडर में निम्बू डिगलूर आदि स्थानों में इस फर्म की जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरियाँ हैं। वहाँ सेठ जीवराजजी की स्थापित की हुई गौशाला भी है। आपने वहाँ जमीदारी खरीदी थी। इस फर्म का विस्तृत परिचय मालिकों के चित्रों सहित ग्रंथ के दूसरे भाग में पृष्ठ ३८० में दिया गया है।

सिकन्दराबाद में ऊमरी ब्राँच को नाणा सप्लाई करने एवं कपड़े की एजंसी के लिये १३। १४ साल से यह दुकान खोली गई है। इसका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

सिकन्दराबाद—मेसर्स जमनाधर पोद्दार जेम्स स्ट्रीट — टाटा संस की मिलो के कपड़े की एजंसी है। और ऊमरी फर्म को नाणा सप्लाई किया जाता है।

मेसर्स दयाराम सूरजमल

इस फर्म का हेड आफिस गुलबर्गा में है। अतः इसके व्यापार आदि का विस्तृत परिचय मालिकों के चित्रों सहित गुलबर्गा में दिया गया है। सिकन्दराबाद में इस फर्म का स्थापन करीब २९ वर्ष पूर्व सेठ सूरजमलजी लाहोटी के हाथों से हुआ। यह फर्म गुलबर्गा सिकन्दराबाद आदि स्थान के व्यापारिक समाज में अच्छी मातबर समझी जाती है। गुलबर्गा में इस फर्म ने महबूब शाही मिलको खरीदा है। गुलबर्गा और सिकन्दराबाद के अलावा बम्बई और

लातूर में भी इस फर्म की शाखाएँ हैं। इसकी सिकन्दराबाद दुकान का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

सिकन्दराबाद—मेसर्स दयाराम सूरजमल T. No 325 — बैङ्किग व आढ़त का कारबार होता है।

मेसर्स दारावजी ब्रदर्स एण्ड कम्पनी

इस प्रसिद्ध चिनाई पारसी कुटुम्ब का पूर्व निवासस्थान जालना था। वहाँ इस कुटुम्ब का चीन के साथ सिल्क रेशम आदि का कारबार चलता था। पेश्तनजी सेठ जालना में रहते थे और उनके दूसरे भाई पूना में निवास करते थे। सन् १८३५ मे बृटिश रेजिमेंट के साथ सेठ सोराबजी पेश्तनजी जालना से सिकन्दराबाद आये। आप सिकन्दराबाद मिलटरी, लश्कर एवं निजाम स्टेट के अमीर उमरावों को जनरल माल सप्लाई करते थे। इस प्रकार यहाँ आने के २१ साल बाद आप बहिश्त नशीन हुए।

सेठ सोराबजी चिनाई के नसरवानजी, एदलजी एवं दीनशा सेठ नामक तीन पुत्र हुए। इनमें से इस कुटुम्ब का सम्बन्ध एदलजी सेठ से है। सोराबजी सेठ के गुजरने के ३।४ साल बाद आप तीनों भाई अलग २ हो गये। एदलजी सेठ ने इस फर्म के व्यापार में बहुत भाग लिया। आपको भारत सरकार ने खानबहादुर का खिताब दिया। आपने जेम्स स्ट्रीट पर फीरोज बाई एदलजी पारसी धर्मशाला बनवाई। इस प्रकार ९४ वर्ष की लम्बी उमर पाकर आप सन् १९१० के मई मास में बहिश्त नशीन हुए। नसरवानजी सेठ के पुत्र डोसाभाई उसमानजाह प्राइम मिनिस्टर के सेक्रेटरी थे।

खान बहादुर एदलजी सेठ के ४ पुत्र हुए। जमशेदजी सेठ, सापुरजी सेठ, फ्रामजी सेठ और बापूजी सेठ। इनमें से सापुरजी सेठ को भी खान बहादुर का खिताब था। इन चारों भाइयों का कारबार भी एदलजी सेठ के गुजरने पर अलग २ हो गया।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक जमशेदजी सेठ के पुत्र सोराब नवाब जंगजहाँगीरजी सेठ, रुस्तमजी सेठ, डाक्टर होरमसजी, रतनजी सेठ और दारावजी सेठ हैं।

इस कुटुम्ब ने सन् १९०२ में दारावजी ब्रदर्स के नाम से जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरियाँ खोलीं तथा बैङ्किग व्यापार स्थापित किया। सेठ सोरावजी पहले फर्स्ट तालुकेदार निजाम थे। आपको नवाब सोराब जंग का खिताब मिला। पीछे से आप नीजाम करोड़गिरी कमिश्नर हुए और वर्तमान में रिटायर्ड हैं।

स्व० सेठ धीरजी कोचर (धीरजी चाँदमल सिकन्दराबाद)

स्व० सेठ चाँदमलजी कोचर (धीरजी चाँदमल सिकन्दराबाद)

सेठ सूरजमलजी कोचर (धीरजी चाँदमल सिकन्दराबाद)

जहाँगीरजी सेठ ने इस फर्म का व्यवसाय स्थापित कर उन्नति की। आपने पारसी धर्मशाला में जमशेद चिनाई हाल और एदलजी चिनाई पवेलियन बनाया। तथा आपकी मातु श्री रतनबाई के नाम से रतनबाई चिनाई डिस्पेंसरी और धर्मपत्नी रतनबाई के नाम से रतनबाई चिनाई स्कूल बनाया। आपकी मातेश्वरी रतनबाई जमशेदजी ने देवलाली (नाशिक) में एक अगियारी (पारसी टेम्पल) बनवाया।

तीसरे भाई रुस्तमजी निजाम टेरिटरि के पोस्ट मास्टर जनरल हैं और होरमसजी सेठ निजाम मेडिकल सुपरिटेन्डेन्ट हैं और रतनजी पायगा में काम करते हैं। इस दुकान पर सेठ खुशालदास केशवदास ५२ सालों से और डिगम्बरदास केशवदास मेहता १५ सालों से मुनीमात करते हैं। इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

१ भैंसा (निजाम) मेसर्स दारावजी ब्रदर्स एण्ड कं० } बैङ्किग व्यापार होता है इसके अण्डर
तार का पता—Dorabji Bras Basar } में भैंसा जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी और चिनाई जीन फेक्टरी है।

२ भैंसा (नांदेड़) जहांगीरजी जमशेदजी चिनाई कम्पनी—बैङ्किग व्यापार होता है।
३ सिकन्दराबाद—दारावजी ब्रदर्स एण्ड कं० पार्क लेन — " " "
४ चौंढ़ी (नांदेड) " " " —जीन और बैङ्किग व्यापार होता है
५ पलसी (नांदेड) " " " — " " "
६ धरमाबाद " " " —एजंसी का काम होता है।

मेसर्स धीरजी चाँदमल

इस फर्म के मालिकों का मूल निवासस्थान फलोदी (मारवाड़) है। आप ओसवाल श्वेताम्बर जैन समाज के कोचरमूथा सज्जन हैं। इस फर्म के स्थापक धीरजी सेठ सन् १८४१ में देश से आये। थोड़े दिनों तक अपने अपने बहनोईजी के यहाँ नौकरी की और फिर अपना घरू काम-काज करने लगे। थोड़े ही समय बाद आप फौजों को नाणा सप्लाई करने का काम करने लगे, इसी सिलसिले में आपने फौजो के साथ काबुल और उसमानियाँ की भी यात्रा की। आपके पुत्र सेठ चांदमलजी ने संवत १९२९ में सिकंदराबाद में दुकान स्थापित की। २० सालों तक आप भी उपरोक्त व्यापार करते हुए संवत् १९४९ में स्वर्गवासी हुए।

सेठ चाँदमलजी के यहाँ सेठ सूरजमलजी २३ वर्ष की अवस्था में फलोदी से दत्तक आये। आप ही इस समय फर्म के मालिक हैं। आपके पुत्र श्रीयुत पूनमचंदजी एवं प्रतापचंदजी भी व्यापारिक कामो में भाग लेते हैं। आपकी ओर से फलोदी एवं पांवापुरीजी मे एक एक

धर्मशाला बनवाई गई है। इसी प्रकार कुंडलपुरजी कुलपाकजी आदि स्थानों में आपने कोठरियाँ बनाई हैं। आपने जबलपुर में २३००) की लागत से एक धर्मशाला बनाई तथा मद्रास पांजरापोल एवं शांतिनाथजी के देरासर फलोदी में भी सहायताएँ दीं हैं। आपकी ओर से प्रतिवर्ष सिकन्दराबाद में माघ सुदी २ को स्वामिवत्सल किया जाता है एवं रथयात्रा निकाली जाती है। सेठ सूरजमलजी समझदार एवं धार्मिक सज्जन हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

सिकन्दराबाद—मेसर्स धीरजी चाँदमल जनरल बाजार } यहाँ प्रधानतया बैङ्किंग कारबार होता है।

मेसर्स पूनमचंद वख्तावरमल

इस फर्म का हेड ऑफिस औरंगाबाद (निजाम स्टेट) है। अतः इस फर्म का विस्तृत व्यापारिक परिचय उपरोक्त स्थान पर दिया गया है। औरंगाबाद में भिन्न २ नामों से इस फर्म पर बैङ्किंग, आढ़त, गल्ला और कपड़ा का व्यापार होता है। औरंगाबाद के अलावा बम्बई, सिकन्दराबाद, जालना, वरंगल, नांदेड़ आदि स्थानों में भी इस दुकान की शाखाएँ हैं, जिन पर प्रधानतया बैङ्किंग और आढ़त का कारबार होता है।

सिकन्दराबाद में इस फर्म का स्थापन सेठ वख्तावरमलजी देवड़ा के हाथों से हुआ। आपकी दुकान यहाँ के व्यापारिक समाज में बड़ा कारबार करनेवाली मानी जाती है। इस दुकान पर प्रधानतया बैङ्किंग व्यापार होता है।

मेसर्स बंशीलाल अबीरचंद डागा रायबहादुर

इस प्रसिद्ध फर्म का विस्तृत इतिहास हमारे ग्रंथ के प्रथम भाग में दे चुके हैं। इसका हेड आफिस नागपुर कामठी है। सिकन्दराबाद के व्यापारिक समाज में यह फर्म सबसे प्रधान मानी जाती है। इसका स्थापन करीब १५० वर्ष पूर्व हुआ। हैदराबाद दुकान से यह फर्म अधिक पुरानी है तथा इन दोनो शाखाओं का डाइरेक्ट अलग अलग सम्बन्ध हेड आफिस से है।

भारत के विभिन्न स्थानों में इस दुकान की कई शाखाएँ जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरियाँ, कॉटन-मिल्स, कोयले और मेगनीज की खानें हैं। कहने का तात्पर्य यह कि भारत के व्यापारिक समाज में यह फर्म बहुत मातवर एवं पुरानी मानी जाती है।

सिकन्दराबाद दुकान के मुनीम बीकानेर निवासी श्रीयुत बलदेवदासजी व्यास हैं। आप बड़े लायक एवं होशियार आदमी हैं। सिकन्दराबाद दुकान का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

सिकन्दराबाद—मेसर्स बंशीलाल अबीरचंद रायबहादुर तार का पता Bahadur फोन नं० 339	यहाँ प्रधानतया बैङ्किंग तथा स्टेट मार्गेज का बड़ा भारी व्यापार होता है। इस फर्म के अन्दर में मुदखेड़ (निजाम स्टेट) में एक जीनिंग फेक्टरी है।

मेसर्स शुभकरण गंगाविशन

इस प्रतिष्ठित फर्म के मालिकों का मूल निवासस्थान नागोर (मारवाड़) है। आप माहेश्वरी वैश्य समाज के मालानी सज्जन हैं। इस कुटुम्ब के पूर्व पुरुष सेठ शुभकरणजी सर्व प्रथम देश से राजुरा नामक स्थान में आये थे। वहाँ से संवत् १९०४ में सिकन्दराबाद आकर आपने कपड़े का व्यापार स्थापित किया। सिकन्दराबाद फर्म पर उस समय सेठ श्रीरामजी एवं सेठ जगन्नाथजी काम देखते थे। सेठ जगन्नाथजी का अल्प वय में ही स्वर्गवास हो गया था।

सेठ श्रीरामजी, सेठ जगन्नाथजी, सेठ गंगा विशनजी एवं सेठ रामगोपालजी ये चारों सज्जन सेठ शुभकरणजी के पुत्र थे। सेठ श्रीरामजी के पश्चात् इस फर्म के व्यापार को सेठ गङ्गाविशनजी ने सम्हाला। सेठ गङ्गाविशनजी का जन्म संवत्त १८९८ में हुआ। सेठ गङ्गाविशनजी ने इस फर्म के कपड़े के व्यापार को विशेष उत्तेजन दिया, आपके साथ व्यापार में आपके छोटे भ्राता सेठ रामगोपालजी भाग लेते थे। आपकी ओर से उस समय सम्मिलित रूप में श्रीजगदीशजी का मन्दिर करीब ६० साल पहिले बनाया गया। इस प्रकार यह कुटुम्ब संवत् १९४७—४८ तक शामिल कारबार करता रहा। पश्चात् सेठ श्रीरामजी एवं रामगोपालजी का व्यापार अलग २ होने लगा। एवं सेठ गङ्गाविशनजी अपना अलग स्वतन्त्र व्यापार करते रहे।

सेठ गङ्गाविशनजी को गुप्तदान का बहुत शौक था। आपके पुत्र श्रीयुत रामकिशनजी २५ वर्ष की अवस्था में संवत् १९५६ में स्वर्गवासी हो गये। इस प्रकार फर्म के व्यापार को विशेष रूप से उन्नति पर पहुँचा कर श्री सेठ गङ्गाविशनजी संवत् १९६१ के फाल्गुन बदी ११ को स्वर्गवासी हुए। आपके यहाँ संवत् १९५९ में पीपाड़ (जोधपुर) से सेठ मोहनलालजी १० वर्ष की अवस्था में दत्तक लाये गये।

सेठ गङ्गाविशनजी के पश्चात् इस फर्म के व्यापार एवं सम्पत्ति की सेठ मोहनलालजी मालानी के हाथो से विशेष उन्नति हुई है। वर्तमान में आप ही इस फर्म के मालिक हैं। यह फर्म सिकन्दराबाद तथा हैदराबाद स्टेट में बहुत प्रतिष्ठित एवं मातबर मानी जाती है। माहे-

श्वरी समाज में भी आपका अच्छा सम्मान है। आपके पुत्र श्रीयुत मुकुन्ददासजी मालानी हैं। आप पढ़ रहे हैं।

इस समय इस दुकान के व्यापार का वर्णन इस प्रकार है:—

सिकन्दराबाद—मेसर्स शुभकरण गङ्गाविशन जेम्स स्ट्रीट	यहाँपर हेड आफिस है तथा बैङ्किग व्यापार होता है
सिकन्दराबाद—मेसर्स गङ्गाविशन मोहनलाल सिकन्दराबाद—मेसर्स रामकिशन मोहनलाल सिकन्दराबाद—मेसर्स मोहनलाल मुकुंददास	इन दुकानों पर कपड़े का व्यापार होता है
हैदराबाद—मेसर्स गङ्गाविशन मोहनलाल उसमानगञ्ज	यहाँ गल्ला एवं आढ़त का काम होता है।
गंतूर—मेसर्स गङ्गाविशन मोहनलाल	यहाँ बैङ्किग एवं आढ़त का कारबार होता है।

मेसर्स शुभकरण श्रीराम

इस प्रतिष्ठित फर्म के मालिकों का मूल निवासस्थान नागोर (मारवाड़) है। आप माहेश्वरी वैश्य समाज के मालानी सज्जन हैं। सर्व प्रथम देश से सेठ शुभकरणजी पैदल मार्ग द्वारा करीब ११० वर्ष पूर्व निजाम स्टेट के राजुरा नामक स्थान में आये। राजुरा से आपका कुटुम्ब लगभग संवत् १९०४ में सिकंदराबाद आया, और यहाँ कपड़े का व्यापार स्थापित किया। सेठ शुभकरणजी के ४ पुत्र हुए। सेठ श्रीरामजी, सेठ जगन्नाथजी, सेठ गंगाविशनजी एवं सेठ रामगोपालजी। सेठ जगन्नाथजी के कोई संतान नहीं हुई। संवत् १९४७–४८ तक यह कुटुम्ब शामिल कारबार करता रहा। पश्चात् सेठ गंगा विशनजी का कुटुम्ब अपना स्वतंत्र व्यापार अलग करने लगा। और सेठ श्रीरामजी तथा रामगोपालजी का व्यवसाय शामिल होने लगा।

दोनों फर्मों का व्यवसाय अलग होने के १० वर्ष बाद करीब १९५७ में सेठ श्रीरामजी के पुत्र सेठ सुखदेवजी का २५ वर्ष की अल्पायु में स्वर्गवास हो गया। उस समय आपके पुत्र श्रीयुत श्रीकृष्णजी केवल ८ मास के थे। ऐसी हालत में सेठ रामगोपालजी को अपने एक होनहार मददगार एवं प्रिय भतीजे का कठिन वियोग-दुःख सहना पड़ा। तथा व्यापार का सारा कारबार आपही को सम्हालना पड़ा।

दी० बा० सेठ रामगोपालजी मालानी ने अपने हाथोसे व्यापार में लाखों रुपये की सम्पत्ति उपार्जित कर इस दुकान के नाम प्रतिष्ठा, एवं सम्मान को बहुत अधिक चमकाया। आपने

स्व० सेठ गंगाबिशनजी मालानी (सिकंदराबाद)

स्व० दीवान बहादुर सेठ रामगोपालजी मालानी (सिकंदराबाद)

श्रीयुत सेठ मोहनलालजी मालानी (सिकंदराबाद)

दीवान बहादुर सेठ लक्ष्मीनारायणजी मालानी (सिकंदराबाद)

स्व० श्री० सुखदेवजी मालानी सिकंदराबाद

श्री० सेठ श्रीकृष्णजी मालानी सिकंदराबाद

स्वर्गीय गोपीकृष्णजी मालानी सिकंदराबाद

श्रीयुत मुरलीधरजी मालानी सिकंदराबाद

निजाम स्टेट रेलवे, पब्लिक वर्क डिपार्टमेंट, फलकनुमा, सरफखास, टकसाल, लोकोवर्कशाप, किंगकोठी, पुरानी हवेली, मूसी नदी का पुल आदि के बनवाने के कंट्राक्ट लिये, एवं इस काम में लाखों रुपयों की सम्पत्ति उपार्जित की। इसके साथ २ एरंडी और कपड़े के व्यापार में भी आपको अच्छी सफलता मिली। आपका जन्म संवत १९०६ में हुआ था।

व्यापार में अटूट सम्पत्ति पैदाकर दीवान बहादुर सेठ रामगोपालजी मालानी ने दान-धर्म परोपकार, सार्वजनिक एवं जनहित के कामो में भी लाखों रुपयों की सम्पत्ति उदारता पूर्वक खुले हाथों खर्च की। हैदराबाद स्टेट के आप बहुत प्रतिष्ठित व्यक्ति हो गये हैं। सिकंदराबाद में आपने ६० साल पूर्व श्री जगदीशजी का मंदिर बनवाया अपने भतीजे सुखदेवजी के स्मरणार्थ संवत् १९५९ में श्री श्रीसत्यनारायण जी का मंदिर, एवं श्रीहनुमानजी का मंदिर इस प्रकार ३ प्रसिद्ध मंदिर बनवाये। एवं इनके स्थाई प्रवंध के लिये ३० मकान दिये। जिनकी किराये की ओमद से इनका खर्च चलता है। इसके अलावा बेजवाड़ा, मथुरा एवं बांसल (निजाम) में ३ धर्मशालाएँ बनवाई गई जिनमें यात्रियों के लिये सदावर्त का प्रबंध है। श्रीनाथद्वारा में १।) लाख रुपयों की भारी लागत से बनास नदी का मजबूत पुल बनवाया। संवत् १९५६ के अकाल के समय नागोर में एक दिन के अंतर से लोगों को भोजन दिया एवं स्टेशन से कवान तक पक्की सड़क बनवाकर दोनों ओर झाड़ लगवाये। इसी प्रकार घास के अकाल के समय भी नागोर में सोला-पुर की तरफ से हजारो रुपयों का घास भिजवा कर पशुओं की मदद की। अकाल पीड़ितों की मदद करने के उपलक्ष में आपको सरकार ने "कैसरे हिन्द" की उपाधि दी। इसी प्रकार सार्व-जनिक कामों में भी आपने बहुत भाग लिया। आपने हैदराबाद फतह मैदान में स्पोर्टस्टैंड बनवाया। त्रिमलगिरी में होम आफ दि सोलजर्स बनवाया। जेम्स स्ट्रीट टावर में बहुत सी मदद दी। श्रीकृष्ण गौशाला का स्थापन कर उसमें भी बहुत सी सहायता दी। आपके कार्यों से प्रसन्न होकर भारत सरकार ने रायबहादुर एवं दीवान बहादुर का खिताब देकर आपकी इज्जत की। इस प्रकार परम प्रतिष्ठामय जीवन विताते हुए आप ता० १–६–१९२१ को स्वर्गवासी हुए। आपके सम्मानार्थ हैदराबाद, सिकंदराबाद एवं वरंगल के सब आफिसेस, कारबार एवं बाजार बंद रक्खे गये। आपकी रथी के जुलूस में ३५।४० हजार आदमियों की भारी भीड़ आपके प्रति अपने पूज्यभाव बतानेको एकत्रित हुई थी। स्वर्गीय दी० बा०सेठ रामगोपालजी की स्मृति चिरकाल तक रहने के लिये सिकंदराबाद की जनता ने पब्लिक सड़क के मध्य सर वारटोन साहब के हाथों से आपके सुंदर खड़े स्टेच्यू का उद्घाटन १५ मार्च १९२९ को किया। इसी प्रकार आपके मिल में भी एक वस्ट स्टेच्यू स्थापित किया गया। आपके यहाँ श्रीलक्ष्मीनारायणजी मालानी संवत् १९४५ में नागोर से दत्तक लाये गये।

दी० बा० सेठ लक्ष्मीनारायणजी मालानी १६ वर्ष की अवस्था से ही अपने पूज्य पिताजी

की देखरेख में रेलवे के गुत्ते, टकसाल आदि का काम देखने लगे थे। आपका जन्म संवत् १९३७ में हुआ। आपने ३० हजार की लागत से लेडी वारटन के नाम से चाइल्स वेलफेअर बनवाया। प्लेग के समय एवं मूसी नदी के फ्लड के समय जनता की बहुत सहायता की। होम फार दि एजेड बनवाया। वायसराय लिटरेरी फंड में मदद दी। इसी प्रकार आर्फनेज, हास्पीटल, वाई० एम० सी० आई इण्डियन रेड क्रास सोसाइटी, सेंट जार्ज एम्ब्यूलियर्स, बेबी वीक आदि जगहों पर मदद दी। आपसे प्रसन्न होकर भारत सरकार ने १९२५ में रायबहादुर एवं १९२९ की १ मार्च को दीवान बहादुर की पदवी इनायत की। सन् १९२९ में जब वायसराय यहाँ आये तब आपकी दूकान पर आये और आप से हाथ मिलाया, तथा परेट के समय आपको स्काउट मास्टर साहब कहा। आपके दत्तक पुत्र श्रीयुत मुरलीधरजीका अल्पवय में ही स्वर्गवास हो गया, अतः उनके नाम श्रीयुत गोपीकृष्णजी दत्तक लाये गये हैं। आपने मुरलीधरजी की याद मे नागोर में झरे का बांध बंधवाया है।

इस फर्म का हैदराबाद स्पी० वि० मिल में मिस्त्याल रामन्नामोमय्या के साथ भाग था। पर जब इन साहुकारों की आपस में नहीं बनी, तब दी० बा० सेठ रामगोपालजी ने उपरोक्त मिल से अपना भाग निकाल कर ३० लाख की पूंजी से सन् १९२० में दि० रामगोपाल मिल्स लिमिटेड की स्थापना की।

इस समय इस फर्म पर दो प्रधान नामों से कारबार होता है। मेसर्स शुभकरण श्रीराम के मालिक श्रीकृष्णजी मालानी हैं। एवं दी० बा० रामगोपाल लक्ष्मीनारायण के मालिक दी० बा० लक्ष्मीनारायणजी मालानी हैं। इन्हीं दोनो हेड आफिसों की मातहती से सब शाखाओं पर कारबार होता है। यह कुटुम्ब आरंभ से ही शांति पूर्वक शामिल व्यापार करता चला आ रहा है। जितने दान धर्म एवं सार्वजनिक काम होते हैं उनमें इस कुटुम्ब की सम्मिलित रूप से पूंजी लगती है।

यह फर्म यहाँ के व्यापारिक समाज में अच्छी प्रतिष्ठित एवं मातबर मानी जाती है। इस समय दी० बा० सेठ लक्ष्मीनारायणजी मालानी फर्मका सब कारबार अपने सुयोग्य भतीजे श्रीयुत श्रीकृष्णजी मालानी पर छोड़कर ईश्वरआराधना करते हुए शांति लाभ करते हैं। श्रीकृष्णजी मालानी की अवस्था इस समय लगभग ३० वर्ष की है। आप भी बड़े शांत स्वभावी समझदार एवं उदार नवयुवक हैं। सार्वजनिक कामों में पूर्वजों के समान आपके भी उदार विचार हैं। श्रीयुत गोपीकृष्णजी आपके साथ काम काज में मदद देते हैं। आपकी अवस्था २१ वर्ष की है।

वर्तमान में इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

सिकंदरावाद (दक्षिण) १—मेसर्स शुभकरण श्रीराम और २—दीवान बहादुर रामगोपाल लक्ष्मीनारायण T. No 215	ये दोनों हेड आफिस है इन पर बैंकर्स और मिल ऑनर्स का काम होता है।

शाखाएँ:—

१—सिकन्दराबाद—मेसर्स सुखदेव श्रीकृष्ण	कपड़े का व्यापार होता है।
२—सिकन्दराबाद—मेसर्स शुभकरण रामगोपाल	,, ,, ,,
३—सिकन्दराबाद—मेसर्स मुरलीधर गोपीकृष्ण	,, ,, ,,
४—भैंसा (निजाम)—दीवान बहादुर लक्ष्मीनारायण श्रीकृष्ण	यहाँ जीनिंङ्ग प्रेसिंग फेक्टरी हैं तथा आढ़त और रूई का कारबार होता है।
५—वरंगल (निजाम)—दीवान बहादुर रामगोपाल श्रीकृष्ण	जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी राइस एवं आइल मील है तथा परंडी, चावल और कॉटन का व्यापार होता है।
६—वरंगल (निजाम)—रामगोपाल लक्ष्मीनारायण दीवान बहादुर	इस नाम से आढ़त का काम होता है।
७—सेड़म (निजाम)—दीवान बहादुर रामगोपाल लक्ष्मीनारायण	जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी है तथा कॉटन का व्यापार होता है।
८—निजामाबाद (निजाम)—दीवान बहादुर लक्ष्मीनारायण श्रीकृष्ण	जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी तथा राइस मिल है तथा आढ़त व घरू कारबार होता है।
९—पेदापल्ली (निजाम)—रामगोपाल लक्ष्मीनारायण दीवान बहादुर	आढ़त का कारबार होता है।

मेसर्स सागरमल गिरधारीलाल

इस फर्म के मालिकों का मूल निवासस्थान मोहर्रा (जोधपुर) है। आप ओसवाल श्वेताम्बर जैन समाज के सांकला सज्जन हैं। सर्वप्रथम सेठ गिरधारीलालजी बंगलोर में ६० साल पूर्व आये। आरंभ में आपने १० साल तक मुनीमात का काम किया। तथा पश्चात् मिलटरी को नाणा सप्लाई करने के लिये बैङ्किग व्यापार आरंभ किया। इस प्रकार ५० साल पूर्व उपरोक्त नाम से दूकान की। सेठ गिरधारीलालजी सांकला के हाथों से ही इस फर्म के व्यापार की वृद्धि हुई। आपने ४० साल पूर्व सिकदराबाद में एवं ३० साल पूर्व नीलगिरी में अपनी फर्म की शाखाएँ खोलीं। इन स्थानो पर अंग्रेजी छावनियों के बैङ्कर्स का काम यह फर्म करती है। आपकी अवस्था इस समय ८० वर्ष की है। तथा फर्म का सारा कारबार आपके पुत्र श्रीयुत् अनराजजी सांकला देखते हैं।

इस कुटुम्ब की ओर से ब्यावर में गिरधारीलाल सांकला बोर्डिंग होउस स्थापित है। जिसमें ६० विद्यार्थी निवास करते हैं। मोहर्रा मे १९४६ से आपकी ओर से चिड़ी चुगा का सदावर्त जारी है। श्रीयुत अन्नराजजी के पुत्र केशरीमलजी लालचंदजी एवं रतनलालजी हैं। श्रीयुत केशरीमलजी कारबार में भाग लेते हैं। इस फर्म के व्यापार का परिचय इस प्रकार है।

सिकन्दराबाद (दक्षिण)—मेसर्स सागरमल गिरधारीलाल जेम्सस्ट्रीट	हेड आफिस है तथा रेजिमेंटल बैंकर्स का काम होता है।
बंगलूर—मेसर्स सागरमल गिरधारीलाल T. A. monui	यहाँ साहुकारी लेन देन एवं मिलटरी बैङ्किग का व्यापार होता है।
नीलगिरि—मेसर्स सागरमल गिरिधारीलाल	यहाँ आपकी पाँच दुकानें हैं जिन पर साहुकारी, मिलिटरी वैङ्किग, कपड़ा, चाँदी-सोना, रेहन आदि का काम होता है।
मेटूर (कोथम्बटूर)—मेसर्स सागरमल गिरधारीलाल	साहुकारी लेन देन एवं सिविल खजांची का काम होता है।

मेसर्स हीराचन्द पूनमचन्द

इस प्रतिष्ठित फर्म के मालिकों का मूल निवासस्थान नागोर (मारवाड़) है। आप ओसवाल श्वेताम्बर जैन समाज के छल्लानी सज्जन हैं। इस फर्म का स्थापन करीब ८०।९० साल पूर्व
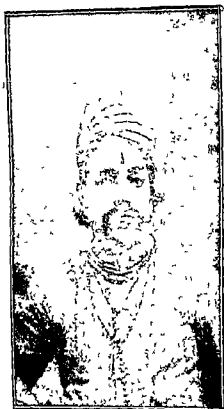
सेठ पूनमचंदजी छल्लानी (हीराचंद पूनमचंद)
सिकंदराबाद

सेठ मोतीलालजी कोठारी (जोरावरमल
मोतीलाल) सिकंदराबाद

सेठ नथ्थूलालजी ट्राक्टर सिकंदराबाद

सेठ रामकिशनजी भासावा (गिरधारीलाल रघुनाथदास) हैदराबाद

सेठ मोहनलालजी बलदवा (मुरलीधर चुन्नीलाल) हैदराबाद
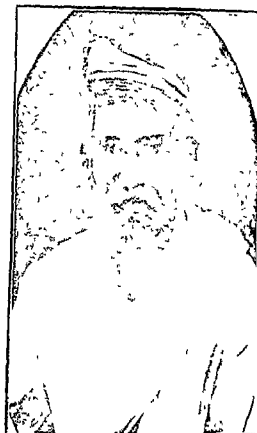
सेठ गिरधरलालजी सांकला (सागरमल गिरधारीलाल) सिकन्दराबाद

बाबू कन्हैयालालजी बलदवा (मुरलीधर चुन्नीलाल) हैदराबाद

सेठ अमराजजी सांकला (सागरमल गिरधारीलाल) सिकन्दराबाद

श्री सेठ हीराचन्दजी छल्लानी के हाथों से हुआ था। आपने आरम्भ में यहाँ सर्विस की, एवं पीछे से दी० बा० सेठ रामगोपालजी के भाग में हीराचन्द जगन्नाथ के नाम से कपड़े का व्यापार शुरू किया। करीम नगर की दुकान भी आपही के समय में खोली गई।

श्री सेठ हीराचन्दजी के पश्चात् आपके पुत्र सेठ पूनमचन्दजी छल्लानी के हाथों से इस फर्म के व्यवसाय सम्मान एवं प्रतिष्ठा की विशेष रूप से वृद्धि हुई। आपने वरंगल, पेद्दापल्ली तथा मंथनी मे रूई और एरण्डी का व्यापार शुरू किया तथा जीनिंग फेक्टरी और राइस मिल खोली।

व्यवसायिक उन्नति के अलावा धार्मिक कामो में आपके हाथों से एक बड़ा स्मरणीय कार्य हुआ। कुलपाकजी तीर्थ के श्वेताम्बर जैन मन्दिर के जीर्णोद्धार में आपने बहुत परिश्रम उठाया एवं अपनी ओर से भी बहुत सी सहायता दी। उक्त मन्दिर की बिल्डिङ्ग आदि बनवाने एवं ख्याति वृद्धि करने मे हैदराबाद के ४ सज्जनों में से आपने भी प्रधान रूप में भाग लिया था। आपका स्वर्गवास सम्वत् १९७४ की भादों बदी ८ को हुआ। आपके यहाँ श्री लक्ष्मीचन्दजी छल्लानी ग्वालियर से संवत् १९७२ में दत्तक लाये गये।

वर्तमान मे इस फर्म के मालिक श्री सेठ लक्ष्मीचन्दजी छल्लानी हैं। आपकी आयु २३ वर्ष की है। आप बड़े शांत प्रकृति के समझदार एवं विवेकशील नवयुवक हैं। इतने अल्पवय में फर्म का व्यापार बड़ी तत्परता से सञ्चालित करते हैं। कुलपाकजी तीर्थ की ख्याति वृद्धि करने में आपके पिताजी की तरह आपके भी उन्नत विचार हैं। यह फर्म यहाँ के व्यापारिक समाज में अच्छी प्रतिष्ठित मानी जाती है।

इस समय फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

१. सिकन्दराबाद—मेसर्स हीराचन्द पूनमचन्द जेम्स स्ट्रीट T. No. 395 — यहाँ हेड आफिस है, तथा प्रधान तया बैंकिङ्ग व्यापार होता है।

२. वरंगल—मेसर्स हीराचन्द पूनमचन्द — यहाँ कॉटन और एरंडी की आढ़त का व्यापार एवं बैंङ्किग काम होता है।

३. करीम नगर—मेसर्स हीराचन्द पूनमचन्द — बैङ्किग व्यापार होता है।

४. पेद्दापल्ली (वरंगल)-मेसर्स हीराचंद पूनमचंद — राइस मिल तथा जीनिंग फेक्टरी है तथा इसी नाम से दूसरी दुकान पर आढ़त का काम होता है।

५. मंथनी (निज़ाम)-मेसर्स हीराचन्द पूनमचन्द — आढ़त, बैंकिग राइस एवं काटन का व्यापार होता है।

मेसर्स श्रीकृष्ण चुन्नीलाल

इस दुकान का हेड आफिस वरंगल मे है। अत: इसके व्यापार का परिचय वहीं दिया गया है। वरंगल में यह फर्म सेठ श्रीकृष्णजी के समय से करीब ६० सालों से व्यापार कर रही है।

सिकन्दराबाद के व्यापारिक समाज में यह फर्म करीब २० वर्षों से व्यापार कर रही है। तथा अच्छी प्रतिष्ठित मानी जाती है।

इस फर्म के व्यापार का परिचय इस प्रकार है:—

वरंगल—मेसर्स श्रीकृष्ण चुन्नीलाल } यहाँ हेड आफिस है तथा बैंकिंग एवं आढ़त का कारबार होता है।

सिकन्दरा बाद—श्रीकृष्ण चुन्नीलाल T. No. 333 } बैंकिंग हुण्डी चिट्ठी तथा आढ़त का कारबार होता है।

जनरल मर्चेण्ट्स

मेसर्स अलादीन एण्ड संस

इस फर्म के मालिकों का खास वतन बम्बई है। वहाँ से सेठ अलादीन भाई मावजी सन् १८८२ ईस्वी में सिकन्दराबाद आये, तथा छोटे रूप में रेलवे को माल सप्लाई करने व वरफ आदि का कारबार करने लगे। इस प्रकार व्यापार को जमा कर सन् १९०४ में आप बहिश्तनशीन हुए।

वर्तमान में इस दुकान के मालिक सेठ अलादीन भाई के पुत्र सेठ अब्दुल्ला भाई, खान बहादुर सेठ अहमद भाई, सेठ गुलाम हुसैन भाई तथा सेठ कासिम अली भाई हैं। आप लोगों ने अपनी फर्म के व्यापार को भिन्न २ कई लाइनों मे तरक्की दी है। आपने शाहाबाद सिमेंट कम्पनी लि० और सिंगनेटी कॉलेरीज वरंगल की एजंसियाँ लीं, तथा बहुत बड़े रूप में बरफ और सोड़ा लेमन का कारखाना खोला। तथा १०।१२ प्रकार के एसेंस ईजाद कर भारत में प्रचलित किये। इस समय सेठ अब्दुल्ला भाई फर्म के कारबार का भार अपने छोटे भ्राताओं पर छोड़ कर शांति लाभ करते हैं।

व्यापारिक तरक्की के साथ २ इस फर्म के मालिकों ने धार्मिक एवं राजकीय कामों में अच्छी नामवरी पैदा की है। खान बहादुर सेठ अहमद भाई को भारत सरकार से खान साहब

तथा खान बहादुर का खिताब प्राप्त हुआ है। निजाम स्टेट के दुष्काल के समय जनता को सस्ता अनाज आपने सप्लाई किया था। इसी प्रकार प्लेग के समय भी आपने पब्लिक की बहुत मदद की थी। सम्राट् किंग जार्ज के स्वास्थ्य-लाभ करने के उपलक्ष में प्रसन्नतास्वरूप आपने विद्यार्थियों की मदद और शिक्षा-प्रचार के लिये १ लक्ष रुपयों का दान किया है। इस समय आप शाहाबाद सिमेंट कम्पनी लिमिटेड, उस्मान शाही मिल लिमिटेड, बाम्बे मोटर साइकल एजंसी लि० के डायरेक्टर और रेलवे एडवायजरी बोर्ड तथा सिकन्दराबाद कन्टूमेंट कमेटी के मेम्बर हैं। सेठ गुलाम हुसेन भाई ने एसेंस का ईजाद किया है। आपकी फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

सिकन्दराबाद—मेसर्स अलादीन एण्ड संस
आक्सफोर्ड स्ट्रीट
T. No 300 तार का पता Alladin

यहाँ शाहाबाद सिमेंट कम्पनी और सिंगनेटी कॉलेरी की एजंसियाँ तथा आइस और एरेटेड वाटर फेक्टरी है। इसके अलावा १०।१२ तरह के एसेंस तयार करके भारत भर में भेजे जाते हैं।

मेसर्स जोरावरमल मोतीलाल

इस फर्म के मालिक बगड़ी (जोधपुर स्टेट) निवासी ओसवाल श्वेताम्बर जैन समाज के कोठारी सज्जन हैं। इस फर्म का स्थापन बोलारम में सेठ थानमलजी ने किया था। आपके पश्चात् सेठ जोरावरमलजी व्यवसाय संचालन करते हैं।

इस फर्म के व्यवसाय एवं ख्याति की वृद्धि आपके पुत्र सेठ मोतीलालजी कोठारी के हाथों से विशेष रूप से हुई। आप शिक्षित एवं नूतन उन्नत विचारों के सज्जन हैं। सन् १९१९ से आपने व्यापार में योग देना आरंभ किया तथा तिरनूलगिरि, सिकन्दराबाद और हैदराबाद में ८ सिनेमा चालू किये। आपने हैदराबाद बुलेटिन नामक एक अंग्रेजी दैनिक पत्र जारी किया। अभी हाल ही में सिनेमा व्यवसाय को उन्नत करने के लिये हैदराबाद के कुछ शिक्षित एवं उत्साही सज्जनों ने १० लाख की पूँजी से दि महावीर फोटो प्लेज एण्ड थियेट्रिकल कम्पनी लिमिटेड की स्थापना की है। इस संस्था का उद्देश भारतीय शिक्षाप्रद ड्रामा एवं फिल्म तयार कर जनता में सदुद्देश का प्रचार कर द्रव्य प्राप्त करना है। इस फर्म की मेनिजिंग एजंट मेसर्स जोरावर मोतीलाल एण्डसंस है। इस समय आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

सिकन्दराबाद—मेसर्स जोरावर मोतीलाल
बुलेटिन आफिस
T. No. 51 तार का पता Mwritd

यहाँ से हैदराबाद बुलेटिन नामक अंगरेजी दैनिक एवं क्रानिकल नामक साप्ताहिक पत्र निकलता है।

सिकंदराबाद—दि महावीर फोटोप्लेज एण्ड थियेट्रिकल कम्पनी लिमिटेड	इसकी एजंट मेसर्स जोरावरमल मोतीलाल एण्ड संस है। यह कम्पनी उच्च भारतीय ड्रामा एवं सिनेमा फिल्म तयार करने का काम करती है। इस समय इस कम्पनी के ८ सिनेमा यहाँ काम करते हैं।
बम्बई—दि महावीर फोटो प्लेज एण्ड थियेट्रिकल कम्पनी लिमिटेड तथा जोरावरमल मोतीलाल एण्ड संस गोवर्द्धन बिल्डिंग, गिरगॉव बैंकरोड नीयर माधवाश्रम पो० नं० ४	यहाँ फिल्म रजिस्टर कराने का काम होता है। तथा बाहर से फिल्म मँगाई और भेजी जाती है।

सेठ नत्थूलालजी गुत्तेदार

सेठ नत्थूलालजी का मूल निवासस्थान माधापुर (कच्छ) हैं। आप कड़िया-वैश्य समाज के सज्जन हैं। नत्थू सेठ के पिता श्री लालजी सेठ सन् १९०० के लगभग हैदराबाद आये तथा हैदराबाद मीटर गेज रेलवे लाइन के बनाने के कुछ भाग का कंट्राक्ट लिया। इस कार्य्य में सम्पत्ति उपार्जित करने के बाद आपने अपना यहीं निवास बना लिया। आपके पुत्र श्रीयुत नत्थू सेठ का जन्म सन् १८८७ में हुआ। आप १६ वर्ष की अवस्था से ही अपने पूज्य पिताजी के साथ कंट्राक्टिंग के काम में भाग लेने लगे तथा धीरे २ इस लाइन मे शिक्षा प्राप्त करने पर आपने अच्छी उन्नति कर दिखाई।

श्रीयुत नत्थू सेठ सिकन्दराबाद तथा हैदराबाद के प्रतिष्ठित कंट्राक्टर माने जाते हैं। आपके हाथों से लाखों रुपयो के कंट्राक्टिंग के काम हुए। परभनी परली लाइन आप ही के द्वारा बन कर तयार हुई, इसी प्रकार पी० डब्ल्यू० डी० एवं शाही महलों के बनाने में भी आपने बहुत काम किये। अभी २ आपने हैदराबाद में यूनानी अस्पताल बनाने का १० लाख का कंट्राक्ट लिया है। नत्थू सेठ बड़े शांत स्वभाव के गंभीर सज्जन हैं। आपके पिता सेठ लालजी की अवस्था इस समय ६७ वर्ष की है। आपके पुत्र श्री विश्राम भाई रघुभाई भी काम-काज में भाग लेते हैं। आपका पता इस प्रकार है।

सिकन्दराबाद—सेठ नत्थूलालजी एलेकजेंड्रारोड, कंट्राक्टर	यहाँ आपका निवास है, एवं कंट्राक्टिंग का काम होता है।

राजा दीनदयाल एण्ड संस

इस फर्म के मालिक मेरठ (यू० पी०) निवासी अग्रवाल वैश्य समाज के जैन धर्मावलम्बीय सज्जन हैं। इस फर्म के स्थापक राजादीनदयाल साहब १५ वर्ष की अवस्था में सन् १८६५ में इन्दौर आये। आरंभ से ही आपको फोटोग्राफी का शौक था। आपके फोटो को सर लेपन ग्रिफिन साहब एजंट सेंट्रल इण्डिया ने पसंद कर सम्राट् के पास भिजवाये थे। आपने भारत के दर्शनीय एवं प्राकृतिक स्थानों के दृश्यों का बहुत बड़ा संग्रह दिया था। इसी सिलसिले में आप एजेंट सैण्ट्रल इण्डिया का परिचय पत्र लेकर १८७५ में निजाम सरकार के पास आये। तत्कालीन निजाम सरकार मीर महबूब अलीखाँ बादशाह ने आपके आर्ट से खुश हो आपको ५००) माहवार पर अपना दर्बारी फोटोग्राफर बनाया। सन् १८८७ में महारानी विक्टोरिया द्वारा रायल वारंट पाने वाले सबसे पहिले भारतीय व्यापारी आप ही थे। आपकी फोटोग्राफी की प्रिंस आफ वेल्स, लार्ड डफरिन, मिंटो, कर्जन, हार्डिंज, ड्यूक आफ कनाट आदि उच्च यूरोपियन महानुभावों ने प्रशंसा कर आपको अपाइंटमेंट दिये हैं। सन् १८८८ में आपने अपनी एक ब्रांच स्थापित कर उसे ऊँचे दर्जे के कारखाने का रूप दे दिया था। आपको निजाम सरकार ने राजा मुसव्वरजंग का खिताब इनायत किया। इस प्रकार ख्याति प्राप्त कर ५-७-१९०५ को आप स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र ज्ञानचंदजी १९१७ में एवं धरमचन्दजी १९०६ में गुजरे।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक श्रीज्ञानचन्दजी के पुत्र बाबू तिलोकचंदजी, हुकुमचंदजी एवं अमीचंदजी हैं। आप सब बड़े सज्जन व्यक्ति हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

सिकन्दराबाद—राजादीनदयाल एण्ड संस नीयर आक्स फोर्ड स्ट्रीट — यहाँ आपका शोरूम तथा स्टूडियो है। एवं सारे भारत के राजा महाराजाओं, दर्शनीय बिल्डिगों एवं प्राकृतिक दृश्यों के चित्रों का अनुपम संग्रह है। करीब ४० हजार नेगेटिव आपके पास मौजूद हैं।

सी. वर्द्धराज मुदलीयार

इस फर्म के मालिकों का मूल निवासस्थान कोयम्बटूर है। वहाँ से ५।६ पीढ़ी पहिले यह खानदान सिकन्दराबाद आया। आप मुदिलियार समाज के सज्जन हैं। इस फर्म का स्थापन सी. वर्द्धराज मुदलीयार के हाथों से सन् १८४० में हुआ। पहिले आपका व्यापारिक सम्बन्ध मिलटरी के साथ था। इसके साथ आप कंट्राक्ट का काम भी करते थे। आपका स्वर्गवास

सन् १८७० में हुआ। आपके पुत्र सी. वर्द्धराज मुदलीयार (पिता-पुत्रों का एक ही नाम था) हुए। इन्होंने राइस, बिल्डिंग आदि के कंट्राक्ट में बहुत सी सम्पत्ति कमाई। आप सन् १९१६ मे स्वर्गवासी हुए।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक सी. वर्द्धराज मुदलीयार साहब के पुत्र सी. पदमाराव साहब और सी. विट्ठलराव मुदलीयार साहब हैं। आप दोनों सज्जन ऊँचे दर्जे के शिक्षित हैं। सिकंदराबाद के शिक्षित समाज में आप बहुत बड़ी प्रतिष्ठा रखते हैं। सी. पदमाराव साहब हैदराबाद चेम्बर आफ कामर्स, गर्ल स्कूल, हिन्दू वायस होस्टल तथा डीप्रेस क्लासेस स्कूल के प्रेसिडेंट और महबूब कॉलेज के आनरेरी सेक्रेटरी हैं। तथा विट्ठलराव साहब फर्म के व्यापार को बड़ी तत्परता से सम्भालते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

सिकन्दराबाद-(दक्षिण) मेसर्स सी. वर्द्धराज मुदलीयार T. A. mudaliar — यहाँ वर्म्माशेल की एजेंसी तथा मिशनरी की एजेंसी तथा बिल्डिंग कंट्राक्ट का काम होता है। इसके स्थान २ पर आइल सप्लाई करने के आपके डेपोज हैं।

बैंकर्स

दि इम्पीरियल बैंक आफ इण्डिया लिमिटेड
दि सेंट्रल बैंक आफ इण्डिया लिमिटेड
दि कमर्शियल एण्ड बैंकिंग कम्पनी
मेसर्स अमीन बुल मुत्तय्या
,, आकारूप चन्द्रय्या
,, आकाराम नरसिंहराम
,, कालूराम शोभाराम
,, खींवसीराम सीताराम
,, गुमडेली लक्ष्मीनारायण
,, घनश्यामदास किशनचंद
,, दयाराम सूरजमल
,, दारावजी ब्रदर्स एण्ड कम्पनी पार्कलेन

मेसर्स धीरजी चाँदमल
,, पूनमचंद बख्तावरमल
,, बूरगू महादेवम्
,, बंशीलाल अबीरचंद डागा रायबहादुर
,, मिस्त्याल व्यंकट कृष्णय्या
,, शुभकरण श्रीराम
,, रामगोपाल लक्ष्मीनारायण दीवान बहादुर
,, शुभकरण गंगाविशन
,, सागरमल गिरधारीलाल
,, सुद्दम सेठी चन्द्रय्या रानीगंज
,, हीराचंद पूनमचन्द
,, श्रीकृष्ण चुन्नीलाल

कल-कारखाने

उसमान शाहीमिल नांदेड़ (आफिस)
एय्यम मेसन एण्ड कं० आइस फेक्टरी हैदराबाद
अलादीन एण्ड संस आइस एण्ड सोडावाटर फेक्टरी सिकन्दराबाद
गुलबर्गा महबूब शाहीमिल (आफीस)
दीवान बहादुर रामगोपाल मिल
हैदराबाद स्पीनिंग एण्ड वीविंग मिल

क्लाथ मरचेंट्स

मेसर्स अमन बुल इरन्ना विश्वनाथम्
,, अमीनबुल लिंगय्या केशवलू
,, अमीनबुल लछमय्या
,, अमीनबुल राजय्या
,, कैलाश सरवय्या
, कैलाश वीरय्या
,, कायम शिवप्पा
,, गुज्जर गोपाल
,, गुलबर्गा महबूब शाही मिल शाप
,, गंगाविशन मोहनलाल
,, रायबहादुर छिद्रकांत वासुदेव
,, जमनाधर पोद्दार
,, नरसिंहगिरिमिल शाप
,, पोदद्दूर वीरन्ना
,, मुरलीधर गोपीकिशन
,, मोहनलाल मुकुंददास
,, मुरारजी गोकुलदास मिलशाप
,, रामकिशन मोहनलाल
,, राचलराम लिंगम् विश्वनाथम्
,, सोमाराजय्या

मेसर्स वेलदे जगदीश्वरय्या
,, समाला कुंडय्या
,, शुभकरण रामगोपाल
,, सुखदेव श्रीराम

यार्न मरचेंट्स

मेसर्स कैलाश सरवय्या
,, अमीनबुल मुत्तय्या बुधौलिरय्या
,, मचल्ला रमन्ना
,, मोद्दूर राघवलू

ग्रेन मर्चेंट एण्ड कमीशन एजंट

,, खीवसीराम सीताराम
,, चन्दा राजन्ना
,, दयाराम सूरजमल
,, दुद्दिगल जगदीश्वरय्या आमेरपापय्या
,, रामचन्द्र रामसुख
,, खान बहादुर होरमसजी माणकजी
,, श्रीकृष्ण चुन्नीलाल

किराना के व्यापारी

मेसर्स अमीनबुल नागय्या
,, कड़पनूर पापय्या
,, कुंजल रापन्ना लिंगय्या
,, गुमारला कुंटय्या
,, गांदे रामन्ना
,, दाचा रामय्या इरन्ना
,, दाचा चन्द्रय्या
,, पसमनूर रामचन्द्रय्या
,, पिट्टी लछमय्या

मेसर्स वच्चू नारायण
" मूसा महम्मद
" रामगोपाल मूलचन्द
" हाजीजूसुफ अलीमोहम्मद
" खान बहादुर होरमसजी माणकजी

गोल्ड एण्ड सिलवर मरचेंट

मेसर्स गोपालदास रामनाथ
" चूरगू महादेवम्
" चूरगू नागय्या

ज्वेलर्स

मेसर्स गोपालदास रामनाथ
" भूरजी विश्वनाथम्
" लिंगा अयरय्या

कंट्राक्टर्स

मेसर्स गंगाबिशन मोहनलाल
" अब्दुल करीम बाबूखान
" छिद्रकांत वासुदेव
" नत्थूलालजी
" दीवान बहादुर रामगोपाल लक्ष्मीनारायण
" सी० बड्दराज मुदलय्या
" सुदमसेठी चन्द्रय्या

जनरल मरचेंट्स

मेसर्स मौलाना अलारखा एंड सन्स (प्रीविजन स्टोर)
" चकाटी वरन्ना एण्ड सन्स
" जे० ए० करीम एण्ड कम्पनी

मेसर्स जे० सी० पेन्टूह (टेलर्स)
" चण्डीराम एंड ब्रदर्स (सिल्क मरचेन्ट)
" डेकन फार्मसी (केमिस्ट)
" ए० ह्वी रामलिंगम (मनीहारी)
" रेन वेनेड आक्सफोर्ड स्ट्रीट
" जान वेंटर्स आक्सफोर्ड स्ट्रीट
" ए० महम्मदशाह एंड सन्स पार्क लेन
" स्पेंसर एंड कम्पनी लिमिटेड
" सिकन्दराबाद स्टेशनरी मार्ट पार्क लेन

स्पोर्ट्स गुड्स डीलर्स

मेसर्स के० डी० एण्ड ब्रदर्स आक्सफोर्ड स्ट्रीट
" पुंगा ब्रदर्स "

आयरन मरचेंट

मेसर्स के० आर० चरी एण्ड कम्पनी
" चिदुरा वासुदेव कान्तिह एण्ड कम्पनी
" नारायणदास गणेशदास आयरन वर्कशाप
" सिकन्दराबाद ट्रेडिंग कम्पनी

हार्ड वेअर मरचेंट

मेसर्स एस० रामस्वामी जनरल बाजार
" चिदुरा वासुदेव कान्तिह एण्ड कम्पनी
" ढुंढु पेंटिह अप्पाला राजाय्या एण्ड कम्पनी
" यरमल्ल इरय्या तमाखू बाजार
" रामन्ना कुंजरला पाल कृष्णय्या

मोटर्स, मोटरगुड्स साइकल एण्ड पेट्रोल डीलर्स

मेसर्स अनंदा एण्ड कम्पनी (आस्टीनएजंट) जेम्स स्ट्रीट

मेसर्स इण्टर नेशनल ट्रेडिंग कम्पनी जेम्स स्ट्रीट
,, खासू भाई मेकेनिक जेम्स स्ट्रीट
,, बाम्बे साइकल एण्ड मोटर एजंसी (डाज, सिट्रोम एजंट)
,, वेलिंगटन साइकल कम्पनी जेम्स स्ट्रीट
,, बनाजी एण्ड सन्स (मेक्सवेलकार एजंट)
,, मद्रास साइकल एण्ड मोटर एजंसी (फोर्ड, ड्यूक एजेंट)
,, मीरान एण्ड कम्पनी
,, एम० आर एण्ड सन्स (रगबीकार एजंट)
,, सी० व्ही० मुदलीयार (एजंट मिलर्स टिम्बर ट्रेडिंग कम्पनी)
,, होरमसजी माणकजी (सेवरोलेट एजंट)

मिशनरी मर्चेंट

मेसर्स इंजीनियर्स एण्ड मिशनरी एजंसी लिमिटेड जेम्स स्ट्रीट
,, के० आर० चटी एण्ड कम्पनी
,, पटई एण्ड कम्पनी मिशनरी सप्लायर जेम्स स्ट्रीट

वाच मर्चेंट

मेसर्स एदलजी सोरावजी पार्कलेन
,, पेस्तनजी नवरोजजी

डेंटिस्ट एण्ड ऑप्टीकल्स

मेसर्स स्टैंडर्ड ऑप्टीकल एण्ड कम्पनी
,, हारडी एण्ड कम्पनी जेम्स स्ट्रीट

होटलस और धर्मशाला

मेसर्स पेरिस होटल
,, मांटगोमरी होटल
,, स्टेशन धर्मशाला
,, पुरुषोत्तमदास नरोत्तमदास धर्मशाला स्टेशन
,, फीरोजबाई एदलजी चिनाई पारसी धर्मशाला जेम्स स्ट्रीट
,, दीवान बहादुर सेठ रामगोपाल का सत्यनारायण मंदिर

रंग के व्यापारी

मेसर्स खटाऊ वल्लभदास पान बाजार
,, अनिल एण्ड डाइज कम्पनी
,, मचन्ना रमन्ना तमाखूबाजार
,, एम० आर० एण्ड संस
,, एल० लीलाधर तमाखूबाजार

आर्टिस्ट एण्ड फोटोग्राफर्स

मेसर्स किलगार एण्ड कम्पनी त्रिमलगिरि
,, धनजीभाई फोटोग्राफर ,,
,, फेंकल एण्ड कम्पनी ,,
,, राजा दीनदयाल एण्ड संस आक्सफोर्ड स्ट्रीट।

सोप फेक्टरी

मेसर्स दि कमर्शियल सोप फेक्टरी
,, कालेर कृष्णय्या सोप फेक्टरी

९

फरनीचर मरचेंट्स

मेसर्स एदलजी एण्ड कम्पनी आक्सफोर्ड स्ट्रीट
" ए० के० हुसेन एण्ड कम्पनी आक्सफोर्ड स्ट्रीट
" खोजामियाँ एण्ड संस जेम्स स्ट्रीट
" तय्यबअली एण्ड संस आक्सफोर्ड स्ट्रीट
" एस० मोहम्मद अली एण्ड संस आक्सफोर्ड स्ट्रीट
" शांतिलाल एण्ड ब्रदर्स जेम्स स्ट्रीट
" एच० जे० जिनवाला जेम्स स्ट्रीट

आक्शनर

मेसर्स मोहम्मद रहीमखान जेम्स स्ट्रीट
" एस० ए० महम्मदबक्स एण्ड कम्पनी आक्सफोर्ड स्ट्रीट

वाइन मरचेंट्स

मेसर्स ए० मइसन्ना एण्ड संस पार्कलेन
" डी० एल० मेहता पार्कलेन
" पील एण्ड कम्पनी
" स्पेंसर एण्ड कम्पनी

तिजोरी मेन्युफेक्चरर

मेसर्स खोजामियाँ एण्ड संस
" एच० जे० जिनवाला जेम्स स्ट्रीट

इलेक्ट्रिक गुड्स डीलर्स

मेसर्स कृष्णा इलेक्ट्रिक स्टोर्स
" शंकर इलेक्ट्रिक स्टोर्स

प्रिंटिंग प्रेस

मेसर्स एक्सेलसियर पावर प्रेस
" निजाम स्टेट रेलवे प्रेस
" बालरेडी प्रेस
" हैदराबाद बुलेटिन प्रेस

म्युजिक स्टोर्स

मेसर्स के० एम० मेथ्यूज पियानो मरचेंट
" रीड कम्पनी पियानो मरचेंट

विदेशी फर्म

मेसर्स ई० एण्ड० ए० जोंस एण्ड संस, ओटोमोबाइल इंजीनियर्स, आक्शनर्स जेम्स स्ट्रीट
" जी० सी० पाइएटो एण्ड कम्पनी
" जोहन बरटन
" ए० पील एण्ड संस
" कमर्शियल ग्यारंटीड कारपोरेशन लिमिटेड
" वर्न वेनेर एण्ड कम्पनी लिमिटेड
" वाट ब्रदर्स एण्ड कम्पनी लिमिटेड
" वालकर ब्रदर्स लिमिटेड
" रायली ब्रदर्स एजंसी
" एस फ्रेंकल
" स्पेंसर एण्ड कम्पनी लिमिटेड जनरल वाइन मरचेंट

गुलबर्गा

निजाम स्टेट के गुलबर्गा जिले का यह शहर प्रधान स्थान है। इसमें जी० आई० पी० रेलवे बम्बई से रायचूर की ओर दौड़ती है। गुलबर्गा शहर सोलापुर के समीप आ गया है। यहाँ एक कपड़े की मिल है। बहुत प्राचीन काल में यह शहर वरंगल के राजा के पास था। पश्चात् १२४७ ईस्वी में अल्लाउद्दीन हसन शहाजंग ने इस स्थान पर बहमनी राज्य स्थापित किया। उस समय दिल्ली से ख्वाजा बंदेनिवास नामक एक औलिया फकीर ने यहाँ आकर निवास किया, उसकी दरगाह देखने योग्य है। यहाँ मजबूत दुर्ग बना है। शेड़म में सैकड़ों हिन्दू मंदिर हैं।

पैदावार—गल्ला की पैदावार और ऊपज प्रधान है। गल्ले मे ज्वारी (चार प्रकार की होती है)। बाजरी, मूंग, उड़द, चना, लाख, तूवर, गेहूँ, करड़ी, अलसी, सफेद तिल्ली, मिरची, इमली आदि हैं। गल्ले का तौल १०५ तोले का मापीसेर, ४ सेर की पायली और १६ पायली का मन होता है। मुंगफली—इधर तीन सालों से इसकी पैदावार कसरत से होने लगी है। करीब ३ लाख थैला सींगदाना की आमद यहाँ होती है। मुंगफली का ९६ सेर का मन होता है। बोरे पीछे २॥ सेर छूट मिलता है। यहाँ कपास और एरंडी थोड़ी पैदा होती है। इसी जिले में सेड़म और तांडूर में ज्वार और चावल ज्यादा पैदा होता है। शाहाबाद का पत्थर मशहूर है। यहाँ का सिमेंट कम्पनी का सिमेंट दूर दूर तक जाता है। गुरमटकल के सूती और रेशमी कपड़े उत्तम बनते हैं।

दि महबूब शाही मिल्स लिमिटेड—इस मिल को चालीस साल पहिले एकलिंडया साहब ने चालू किया था। उसके पश्चात् शापुरजी एदलजी चिनाई के हाथों मे इसकी एजंसी आई। बहुत समय काम करने के पश्चात् आर्थिक परिस्थिति खराब होने से सन् १९२५ में यह मिल बंद हो गई। सन् १९२६ में इस मिल का भाग्य पुनः चमका और इसे दयाराम सूरजमल ने सेठ दारा सापुरजी से १५ लाख रुपयो मे खरीदा। इधर दो सालों में इस मिल ने ५००) के शेअर पर ५० और ६० रुपया डिविडेंड बांटा है। वर्तमान में मिल की पूंजी पाँच पाँच सौ रुपयों

के ६०० शेअरों में विभक्त है। तथा शेअर का भाव १५०० का है। इसका बना सूत और कपड़ा विशेष कर निजाम स्टेट में बिक्री होता है। यह मिल प्रति दिन ६ हजार रत्तल सूत और ३ हजार रत्तल कपड़ा तैयार करती है। इसकी मेनेजिंग एजंट मेसर्स दयाराम सूरजमल है। इस मिल में आधे से ऊपर शेअर्स इस फर्म के हैं।

यहाँ के व्यापारियों का संक्षेप परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स छोगमल हीरालाल

इस फर्म के मालिकों का मूल निवासस्थान रीयां सेठजी की (जोधपुर स्टेट) है। आप ओसवाल जैन श्वेताम्बर समाज के भलगड़ सज्जन हैं। सेठ छोगमलजी ने आरंभ में हैदराबाद वाले सेठ महानंदराम पूरनमल के यहाँ गुलबर्गा दुकान पर सर्विस की। पश्चात् संवत् १९३८-३९ में अपना घरू कपड़े और सराफी का कारबार शुरू किया। आप १९७७ में स्वर्गवासी हुए।

सेठ छोगमलजी के दो पुत्र हुए—सेठ चुन्नीलालजी और सेठ हीरालालजी। इनमें से सेठ चुन्नीलालजी का कारबार संवत् १९६७ में अलग हो गया। तब से सेठ हीरालालजी भलगड़ अपना व्यापार उपरोक्त नाम से अलग कारबार करते हैं। आपके यहाँ श्रीयुत मोतीलालजी १३ साल पहिले गूसी (मारवाड़ी) से दत्तक लाये गये हैं। गुलबर्गा के व्यापारिक समाज में यह फर्म अच्छी प्रतिष्ठित मानी जाती है। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

गुलबर्गा—मेसर्स छोगमल हीरालाल—कपड़े का व्यापार तथा हुंडी चिट्ठी का लेन देन होता है।
गुलबर्गा—मेसर्स हीरालाल मोतीलाल—कपड़े का व्यापार होता है।
गुलबर्गा—मेसर्स हीरालाल भलगड़—कपड़े का कारबार होता है।

मेसर्स दयाराम सूरजमल

इस फर्म के मालिकों का मूल निवासस्थान गूलर (जोधपुर स्टेट) में है। आप माहेश्वरी वैश्य समाज के लाहोटी सज्जन हैं। देश से करीब ६०।७० साल प्रथम सेठ दयारामजी लाहोटी गुलबर्गा आये थे। आप आरंभ में मामूली धंधा करते रहे। आपके सूरजमलजी, किशनलालजी मोतीलालजी और हीरालालजी नामक ४ पुत्र हुए। सेठ सूरजमलजी के हाथों से फर्म के व्यापार की विशेष उन्नति हुई। आपने अपनी दुकान की शाखाएँ बम्बई, लातूर, सिकन्दराबाद आदि स्थानों में खोलीं। गुलबर्गा मिल खरीदने की बात चीत भी आपने ही चलाई थी। आप संवत १९८२ के आसोज मास में ६५ वर्ष की अवस्था में स्वर्गवासी हुए। आपके छोटे भ्राता किशनलालजी १६ वर्ष पूर्व एवं मोतीलालजी १४ वर्ष पूर्व स्वर्गवासी हुए।

स्वर्गीय सेठ सूरजमलजी (दयाराम सूरजमल-गुलवर्गा)

स्व० सेठ किशनलालजी (दयाराम सूरजमल-गुलवर्गा)

स्व० सेठ मोतीलालजी (दयाराम सूरजमल-गुलवर्गा)

सेठ हीरालालजी (दयाराम सूरजमल-गुलवर्गा)

सेठ रामचंद्रराव जाजी (गुलबर्गा)

सेठ बासुदेवराव जाजी-गुलबर्गा

सेठ हीरालालजी भलगट (छोगमल हीरालाल) गुलबर्गा

वर्तमान में इस दुकान के मालिक सेठ हीरालालजी लाहोटी तथा सूरजमलजी के पुत्र व्यंकटलालजी, पूरनमलजी सेठ मोतीलालजी के पुत्र संकरलालजी और किसनलालजी के पुत्र पूषालालजी हैं। इन सज्जनों में सेठ हीरालालजी इस कुटुम्ब में सब से बड़े हैं। सेठ हीरालालजी के पुत्र पन्नालालजी और बद्रीलालजी हैं।

सेठ हीरालालजी लाहोटी ने सन् १९२६ में गुलबर्गा का महबूबशाही मिल खरीदा है। आपके पास आने के बाद मिल ने अच्छी उन्नति कर दिखाई है। इस मिल की १॥। लाख की रकम निजाम करोड़ गिरी (कस्टम) में जमा थी वह भी आपको मिल गई है। आपके मकानात आदि लातूर, गुलबर्गा आदि स्थानों में काफी संख्या में हैं। गुलबर्गा में आपकी ओर से सदावर्त का प्रबंध है। इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

गुलबर्गा—मेसर्स दयाराम सूरजमल—यहाँ बैङ्किग, हुंडी, चिट्ठी और मिल एजंसी का काम होता है।
गुलबर्गा—मेसर्स दयाराम सूरजमल—इस नाम से महबूबशाही मिल के कपड़े की दुकान है।
सिकन्दराबाद—मेसर्स दयाराम सूरजमल—बैङ्किग और आढ़त का कारबार होता है।
लातूर—मेसर्स दयाराम सूरजमल—जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी, आढ़त, बैङ्किग व काटन का व्यापार।
बम्बई—मेसर्स किशनलाल हीरालाल कालबादेवी रोड } बैङ्किग व आढ़त का कारबार होता है।
सुलापेठ (गुलबर्गा) दयाराम सूरजमल—जीनिंग है, कपास और आढ़त का व्यापार होता है।

मेसर्स परशुराम जाजी एण्ड संस

इस कुटुम्ब के मालिको का मूल निवासस्थान हुमनाबाद (निजाम स्टेट) है। वहाँ से १५० साल पूर्व लक्ष्मय्या सेठ गुलबर्गा आये। तथा किराने का व्यापार शुरू किया। आप लोग वैश्य समाज के सज्जन हैं। लक्ष्मय्या सेठ के पश्चात् क्रमशः लिंगया सेठ और परशराम सेठ ने फर्म का व्यापार संभाला। सेठ परशुराम जाजी के समय से इस दूकान के व्यवसाय की उन्नति आरंभ हुई। आप शके १८२१ की माघ बदी ८ को स्वर्गवासी हुए।

सेठ परशुराम जाजी के ३ पुत्र हुए सेठ लक्ष्मय्या जाजी, काशप्पा जाजी और संगय्या जाजी। इनमें से संगय्या सेठ १० साल पूर्व स्वर्गवासी हो चुके हैं। सेठ परशुराम जाजी के बाद इस फर्म के व्यापार को सेठ लक्ष्मय्या जाजी के हाथों से विशेष उन्नति हुई है। आपने शके १८२२ में अपनी दुकान की शाखा बम्बई में खोली। आपके पुत्र सेठ शिवप्पा जाजी और रामचन्द्र जाजी व्यापार संचालन में भाग लेते हैं। और वासुदेव जाजी (त्रिंबकराव)

संगय्या सेठ के यहाँ दत्तक गये हैं। काशप्पा सेठ के पुत्र माणिकराव १२ साल पूर्व गुजर चुके हैं, उनसे छोटे बालचन्द्रराव हैं। श्रीयुत् रामचन्द्रराव के पुत्र बाल गंगाधर हैं।

इस कुटुम्ब का गुलबर्गा में भिन्न २ लाइनों में कई प्रकार का व्यापार होता है, तथा यहाँ के व्यापारिक समाज में अच्छी प्रतिष्ठित मानी जाती है। आपकी ओर से गुलबर्गा में एक धर्मशाला बनी है, तथा सदावर्त चालू है। संगम केतकी में भी आप एक धर्मशाला बनवा रहे हैं। गुलबर्गा में आपकी वैश्य वेद पाठशाला चालू है।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१. गुलबर्गा—सेठ परशुराम जाजी—इस नाम से किराने का व्यापार होता है।
२. गुलबर्गा—सेठ लक्ष्मय्या जाजी—हुंडी, चिट्ठी, आढ़त और खरीदी का काम होता है।
३. गुलबर्गा—सेठ परशुराम काशप्पा जाजी—आढ़त खरीदी और बिक्री का काम होता है।
४. गुलबर्गा—सेठ माणिक रामचन्द्र जाजी—कपड़े का व्यापार होता है।
५. गुलबर्गा—सेठ काशप्पा जाजी—किराने का व्यापार होता है।
६. गुलबर्गा—सेठ संगय्या जाजी—किराने का व्यापार होता है।
७. गुलबर्गा—संगय्या काशप्पा जाजी—लोहे और हार्डवेअर का व्यापार होता है।
८. गुलबर्गा—माणिक रामचन्द्र जाजी कं०—रेडीमेड क्लाथ टोपी वगैरह का व्यापार होता है।
९. बम्बई—परशुराम लक्ष्मय्या जाजी प्रिंसेस स्ट्रीट jaji } कमीशन का काम होता है।
१०. रायचूर—लक्ष्मय्या काशप्पा जाजी—कमीशन का काम होता है।
११. तांडूर (निजाम) शिवप्पा संगय्या जाजी— " " "
१२. हलीखेड़ (गुलबर्गा) शिवप्पा जाजी— " " "
१३. शैदापुर (गुलबर्गा) लक्ष्मय्या काशप्पा जाजी—कमीशन का काम होता है।
१४. शाहाबाद (गुलबर्गा) लक्ष्मय्या जाजी— " "

मेसर्स मुकुन्ददास द्वारकादास

इस फर्म का हेड आफिस हैदराबाद में मेसर्स सूरतराम गोविंदराम के नाम से है। एतदर्थ इसके व्यापार आदि का विस्तृत परिचय मालिकों के चित्रों सहित उक्त स्थान पर दिया गया है। हैदराबाद के अलावा बम्बई, मद्रास, नांदेड, करीमनगर, सिद्धिपैठ, लच्छापैठ आदि स्थानों पर इस फर्म की शाखाएँ हैं जिन पर बैङ्किग और आढ़त का व्यापार होता है। गुलबर्गा में इस फर्म पर आढ़त और बैङ्किग व्यापार होता है।

सेठ लक्षमय्याजाजी गुलवर्गा

श्री० सेठ काशप्पाजाजी गुलवर्गा

श्री० सेठ संगय्याजाजी गुलवर्गा

श्रीयुत शिवप्पाजाजी गुलवर्गा

मेसर्स हरखराज अन्नराज

इस फर्म का स्थापन ५० साल पूर्व सेठ जीवराजजी ने किया। आपके पिता सेठ कालूरामजी सोलापुर में कपड़े का व्यापार करते थे। वर्तमान में सेठ कालूरामजी के पुत्र जीवराजजी, माधवराजजी और हरखराजजी का कुटुम्ब इस फर्म का मालिक है। सेठ हरखराजजी के पुत्र सम्पतराजजी गुलवर्गे में व्यापार सम्हालते हैं और जीवराजजी के पुत्र गजराजजी देश में रहते हैं। आप सोजत निवासी ओसवाल जैन समाज के सिंगवी सज्जन हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

गुलवर्गा—हरखराज अन्नराज
कालूराम जीवराज
माधवराज किशनराज
} कपड़े का कारबार होता है।

बम्बई—अन्नराज सम्पतराज पायधुनी—कमीशन का काम होता है।

बैंकर्स

मेसर्स अंजुमन कोआपरेटिव्ह बैंक लिमिटेड
,, सरस्वती बैंक लिमिटेड
,, दयाराम सूरजमल
,, कल्लाजी खूमाजी
,, मुकुन्ददास द्वारकादास
,, लूम्बाजी दानमल

जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरीज़

मेसर्स महबूब शाही मिल जीनिंग फेक्टरी
,, लछमय्याजाजी जीनिंग फेक्टरी
,, शिवानन्द ऑइल मिल

ग्रेन मर्चेंट एण्ड कमीशन एजंट

मेसर्स कुंवरजी सीताराम
,, कल्लाजी खूमाजी
,, खेण सिद्दप्पा मुरेगेप्पो नावानी

मेसर्स चिन्नवसप्पा संगणवासप्पा फतेपुर
,, चुकप्पा शिवप्पा गुणमटकल
,, दामजी कुंवरजी
,, परशराम काशप्पाजाजी
,, मुकुन्ददास द्वारकादास
,, माडोडप्पा महारुद्रप्पा खेणी
,, मडिअप्पा नागप्पा काड़ादी
,, स्वरूपचंद लक्ष्मीनारायण
,, रामसुख जेठमल
,, लछमय्याजाजी
,, शिव शरणप्पा रेवाप्पा गंदीगुड़ी
,, संकरप्पा खेणी
,, शिव शरणप्पा स्वादी
,, शांतमलप्पा खूबा
,, हीरालाल रामप्रसाद
,, श्रीराम शिवनाथ

कपड़े के व्यापारी

मेसर्स अब्दुल वाहद अली
" अब्दुल करीम खोजा
" कन्हय्यालाल नरसिंहदास कम्पनी
" कबूला साहब मोखतूम साहब महागावी
" काल्लूराम जीवराज
" छोगमल हीरालाल
" दयाराम सूरजमल
" माणिक रामचन्द्र जाजी
" माधवराज किशनराज
" शेषय्या कुमार स्वामी अतपुर
" शिवप्पा देवणी
" शिवप्पा सदानंदप्पा
" हरखचंद अन्नराज
" हाजी हैदरसा सौदागर

चाँदी सोने के व्यापारी

मेसर्स दत्तात्रय गुरुनाथ कमलापुर
" फूलचंद पद्मसी कोठारी
" लक्ष्मीनारायण पूसाराम
" लक्ष्मीनारायण पुसाला स्वर्णकार कं० लि०

किराणा के व्यापारी

मेसर्स नरायण राव परछेटी
" परशराम जाजी
" संगय्या जाजी
" बुद्प्पा नागप्पा गुलमटकल
" मुरगप्पा शिवशरणप्पा गंदीगुड़ी
" संगय्या रासुर मुलप्पा गुलमटकल

हार्ड वेअर मरचेंट्स

मेसर्स याकूब अली हासम सा
" महबूब याकूब सा
" संगय्या काशप्पा जाजी

जनरल मरचेंट्स

मेसर्स उमरसा पटवेगार (औषधि)
" तुकाराम काशी कावड़े
" परशुराम जाजी (औषधि)
" सय्यद अहमद सौदागर

मेसर्स बसप्पा व्यंकप्पा मोमारड्डी मोटर सर्विस
" हाजी हैदर साहब (कंट्राक्टर्स)

रायचूर

निजाम स्टेट के एकदम दक्षिण भाग में रायचूर जिले का यह प्रधान स्थान है। बाड़ी जंकशन होकर हैदराबाद और बम्बई की गाड़ियाँ यहाँ आती हैं। यह स्थान जी० आई० पी० रेलवे का अंतिम स्टेशन है। यहाँ से मद्रास एण्ड सदर्न मराठा रेलवे शुरू होती है। मद्रास और रामेश्वर जानेवाले यात्री इसी राह होकर जाते हैं। इस प्रांत के एक किनारे बम्बई एवं दूसरे किनारे मद्रास इलाका है। इस जिले की उत्तरी सीमा कृष्णा और दक्षिणी तुंगभद्रा नदी बनाती है। इसका क्षेत्रफल ८॥ हजार वर्गमील और लोक संख्या ६॥ लाख है। जिले में गाँवों की संख्या ११३८ और उत्पन्न १५॥ लाख है। बम्बई, मद्रास और हैदराबाद के किनारों पर आजाने से यहाँ की भाषा कानड़ी, उर्दू, मराठी, तेलंग और तुरलक है। रायचूर के समीप कृष्णा नदी का पुल बहुत विशाल एवं दर्शनीय है। यहाँ देवदुर्ग के हिन्दू राजा ने केसरिया उत्सव किया था।

पैदावार और तौल—इस स्थान पर कपास और सींगफली का व्यापार विशेष होता है।

मुंगफली—अच्छी मौसिम में १० लाख थैली तक इसकी पैदावार होती है। इस साल इसकी पैदावार बहुत कम हुई। तौल १२ सेर का मन और ८ मन पर भाव, इसके दाने बम्बई तथा मारगोवा जाते हैं।

कपास—इसकी २ पीक होती है तथा ३०, ४० हजार गाँठें प्रतिवर्ष पैदा होती हैं। बारह सेर के मन से कपास की १२ मन की खंडी और सरकी की २० मन की खंडी मानी जाती है।

करड़ी—तीस चालीस हजार थैला प्रतिवर्ष आता है तौल नापी से है।

गल्ला—सब तरह का होता है तौल १२८ सेर के पल्ले पर है। नाप से तौला जाता है। एरंडी साधारण पैदा होती है

कल-कारखाने—यहाँ ७ जीनिंग फेक्टरियां, ६ प्रेसिंग फेक्टरियाँ और सींगदाणा फोड़ने की मशीनें हैं। यहाँ के व्यापारियों का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है

मेसर्स किशनलाल गिरधारीलाल

इस फर्म के मालिकों का मूल निवासस्थान रोल (मारवाड़) है। आप माहेश्वरी वैश्य समाज के खूब सज्जन हैं। हैदराबाद स्टेट के मदनूर नामक स्थान में करीब १०० साल पूर्व मूँडवे के सेठ मयारामजी मूलचंदजी मोदानी और रोल के सेठ रघुनाथदासजी बूब ने मिलकर मित्रतावश दुकान स्थापित की। सेठ मयाराम मूलचंद का परिचय हमारे ग्रन्थ के प्रथम भाग में पृष्ठ २०१ में राजपूताना विभाग में दे चुके हैं। हैदराबाद, बम्बई और मदनूर में इन दोनों फर्मों का व्यापार अभी तक भली भाँति शामिल होता आ रहा है। सेठ रघुनाथदासजी के पुत्र सेठ तुलसीरामजी ने अपनी प्राइवेट फर्म रायचूर में खुलवाई। आप संवत् १९६७ में स्वर्गवासी हो गये। आप बड़े धर्मात्मा व्यक्ति हो गये हैं। आपने रोल में श्रीरंगनाथजी का मंदिर और वृन्दावन में एक धर्मशाला बनवाई है।

वर्तमान में इस दुकान के मालिक सेठ तुलसीरामजी के पुत्र किशनलालजी और गिरधारीलालजी बूब हैं। आपने १९७४ में एक दुकान बेजवाड़ा में भी खोली है। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१. रायचूर—सेठ किशनलाल गिरधारीलाल T. A. Rolwala यहाँ बैङ्किग आढ़त व गल्ले का कारबार होता है।

२. बेजवाड़ा—सेठ किशनलाल गिरधारीलाल—बैङ्किग आढ़त व गल्ले का कारबार होता है।

३. कृष्णा—किशनलाल जीनिंग फेक्टरी—जीनिंग और मुंगफली फोड़ने की मशीन है।

४. हैदराबाद—रामनाथ बद्रीनाथ महाराज गंज
५. मदनूर (धरमाबाद)—मयाराम मूलचंद—
६. बम्बई—नंदराम मूलचंद, बद्रीनाथ रामरतन

} इन तीनों फर्मों पर सराफी, गल्ला तथा आढ़त का कारबार होता है। इनमें हैदराबाद के सेठ नंदराम मूलचद के साथ आपकी भागीदारी है।

मेसर्स गिरधारीदास दामोदरलाल

इस दुकान का हेड आफिस ब्यावर है। इसके व्यापार आदि का संक्षिप्त परिचय हमारे ग्रंथ के प्रथम भाग में भी दिया जा चुका है। ब्यावर में ५० साल पूर्व सेठ ठाकुरदासजी राठी पोकरन (जोधपुर स्टेट) से आये थे। आप माहेश्वरी वैश्य समाज के राठी सज्जन हैं। सेठ ठाकुरदास जी के पश्चात् उनके पुत्र सेठ खींवराजजी ने इस फर्म के व्यापार को विशेष बढ़ाया। आपने ४० साल पहिले रायचूर में फर्म का स्थापन किया। आपके २ पुत्र हुए, सेठ गिरधारीलालजी

और दामोदरदासजी। सेठ दामोदरदासजी ने संवत् १९५९ में रायचूर में जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी खोली।

वर्तमान में इस दुकान के मालिक सेठ दामोदरदासजी के पुत्र विट्ठलदासजी राठी हैं। आप शिक्षित एवं व्यापारदक्ष नवयुवक हैं। व्यावर में आपकी फर्म कृष्णा मिल और महालक्ष्मी मिल की मेनेजिंग एजंट है। इन मिलों में सेठ विट्ठलदासजी के हाथों से बहुत उन्नति हुई। आपकी फर्म व्यावर, रायचूर, आकोट आदि स्थानों पर ऊँचे दर्जे की प्रतिष्ठित एवं मातबर मानी जाती है। सेठ दामोदरदासजी के समय से रायचूर दुकान पर सदावर्त का प्रबंध है। इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१. व्यावर—मेसर्स ठाकुरदास खींवराज — यहां बैङ्किग व्यापार होता है, तथा यह फर्म यहां के कृष्णामिल और महालक्ष्मीमिल की मेनेजिंग एजंट है।

२. रायचूर—मेसर्स गिरधारीलाल दामोदरदास T. No 18 तार का पता Rathiji — बैङ्किग व्यापार होता है। तथा जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी और मूंगफली फोड़ने की मशीन (डिकाटी केटर्स) है।

३. आकोट—मेसर्स खींवराज दामोदर दास—जीन प्रेस फेक्टरी है और बैङ्किंग व्यापार होता है।

४. उज्जैन—मेसर्स विट्ठलदास बुलाकीदास—बैङ्किग और आढ़त का कारबार होता है।

५. पोकरन—ठाकुरदास खींवराज—बैङ्किग व्यापार होता है।

मेसर्स रामसुख जयगोपाल

इस दुकान के मालिक रोल (मारवाड़) निवासी माहेश्वरी समाज के ईनानी सज्जन हैं। इस दुकान का स्थापन ६०।७० साल पहिले सेठ रामसुखजी के हाथों से रामधन रामसुख नाम से हुआ था। तथा आप ही के हाथों से इसके कारबार को विशेष उन्नति मिली। आरंभ से ही यह दुकान कमीशन का काम कर रही है। सेठ रामसुखजी के पुत्र जयगोपालजी, जयनारायणजी एवं लक्ष्मीनारायणजी है। इनमें से जयगोपालजी १२ साल पहिले गुजर चुके हैं। आप तीनो भाइयों के क्रमशः जुगुलकिशोरजी, तुलसीरामजी एवं देवकिशनजी पुत्र हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

रायचूर—मेसर्स रामसुख जयगोपाल T. No 43 — आढ़त, बैङ्किग, गल्ला तथा रुई का कारबार होता है

यादगीर (रायचूर) देवकिशन तुलसीराम ” ”

मेसर्स लक्ष्मय्या काशप्पा जाजी

इस फर्म का विस्तृत व्यापारिक परिचय मालिकों के चित्रों सहित गुलबर्गा में दिया जा चुका है। गुलबर्गा मे भिन्न २ लाइनों में गल्ला, किराना, कपड़ा, हार्डवेअर, बैङ्किग आदि व्यवसाय के लिये १० दूकानें इस फर्म की कारबार करती हैं। इसके अलावा, बम्बई, तांबूर, हलीखेड़, शैदापुर, शाहाबाद आदि स्थानों पर इस फर्म की शाखाए हैं। रायचूर का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

रायचूर—मेसर्स लक्ष्मय्या काशप्पा जाजी-यहाँ प्रधानतया कमीशन का काम होता है।

मेसर्स शिवराज लक्ष्मीनारायण

इस फर्म के मालिकों का मूल निवासस्थान सेंजू (मारवाड़) है। आप माहेश्वरी वैश्य समाज के सारड़ा सज्जन हैं। इस दूकान का स्थापन ४।५ पीढ़ी पहिले सांगली में हुआ था। वहाँ से यह कुटुम्ब मंगलवेड़ा (सांगली) गया। तथा मंगलवेड़े से १९।२० साल पहिले सेठ रामजीवनजी के द्वारा रायचूर में दुकान खोली गई।

सेठ रामजीवनजी ईनानी रोल-मारवाड़ निवासी हैं। आप २२ वर्षों से इधर निवास करते हैं। आपने इस फर्म की भागीदारी में व्यापार शुरू किया है। सेठ शिवराजजी विशेष कर देश में ही निवास करते हैं।

वर्तमान में इस दुकान के मालिक सेठ रामजीवन लक्ष्मीनारायण और श्री रामजीवनजी लक्ष्मीनारायणजी, शंकरलालजी, श्री निवासजी तथा भगवानदासजी हैं। आपका व्यापारिक इस प्रकार है।

१ रायचूर—मेसर्स शिवराज लक्ष्मीनारायण—आढ़त और बैङ्किग व्यापार होता है।

२ रायचूर—मेसर्स शिवराज श्रीनिवास— ,, ,, ,,

३ मंगलवेड़ा (सांगली-पंढरपुर) सूरतराम जेसिवलाल—जमीदारी का काम होता है।

जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरीज़

मेसर्स गिरधारीलाल दामोदरदास जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी

,, छावणी फकीरप्पा जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी

,, बाम्बे कम्पनी लिमिटेड जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी

,, भागी गुंडाप्पा जीनिंग फेक्टरी

,, रिपन कम्पनी जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी

,, वालकट ब्रदर्स लिमिटेड जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी

,, विश्वनाथम् यलप्पा जीनिंग फेक्टरी

,, सभापति प्रेस फेक्टरी

आइल मिल्स

मेसर्स गिरधारीलाल दामोदरदास (सीग-दाणा फोड़ने की मशीन)
,, आलुनि बसप्पा फेक्टरी
,, गवली बुड़प्पा फेक्टरी
,, मिडजुड्डी लक्ष्मय्या फेक्टरी
,, राजरवंडी यंकट सिटी फेक्टरी
,, सावत्री सिवगय्या फेक्टरी

गल्ले के व्यापारी और कमीशनएजंट

मेसर्स इलूर लक्ष्मय्या
,, किशनलाल गिरधारीलाल
,, काशप्पा जाजी
,, गिरधारीलाल दामोदरदास
,, गोपीलाल जयनारायण
,, गड़दिन्नी तिमन्ना
,, नीर महानवी हम्पन गोड़ा अरवी गोड़ शरणप्पा
,, नरसी शामजी
,, पूलमचन्द रिखबदास
,, भगवानजी गुलाबचन्द
,, रस्तापुर चनय्या मुनप्पा
,, रूपचन्द रायचन्द
,, रामसुख जयगोपाल
,, शिवराज लक्ष्मीनारायण

कपड़े के व्यापारी

मेसर्स गुलाबचन्द चौथमल
,, दुलीचन्द चुन्नीलाल

मेसर्स राजमल खींवराज
,, सौदागर अब्दुल हमीद
,, हीराचन्द हमीरमल

हार्डवेअर मरचेंट्स

मेसर्स अब्दुल रहीम महम्मद याकूब
,, टी० एफ हार्डी (मशीनरी, कंट्राक्टर्स)
,, पेश्तनजी कुंवरजी (वाइन, जनरल मर्चेण्ट)
,, महबूब अली मकदमजी
,, मनीहार दावसा
,, माधवजी पीताम्बर एण्ड संस (तिजोरी मेन्यू फेक्चरर)

कॉटन मरचेंट्स

मेसर्स किशनलाल गिरधारीलाल
,, गणदिन्नी तिमन्ना
,, गोपीलाल जयनारायण
,, गिरधारीलाल दामोदरदास
,, छावणी फकीरप्पा एण्ड संस
,, निरमानी हम्पन गोड़ा अरवी गोड़ शरणप्पा (लोकल)
,, मेडसिट्टी गोदय्या शिवरामय्या
,, रामसुख जयगोपाल
,, लक्ष्मय्या काशप्पा जाजी

वरंगल

निजाम स्टेट के पूर्वी किनारे पर वरंगल जिले का यह प्रधान स्थान है। इसके पूर्वी किनारे पर गोदावरी तथा दक्षिणी किनारे पर कृष्णा नदी बहती है। इस जिले की भूमि विशेष कर पर्वतीय है। इसमे तालाब और खनिज पदार्थों की विशेषता है। इस प्रान्त के एक ओर मध्य-प्रदेश और दूसरी ओर मद्रास है।

पैदावार—हीरा खनिज—कृष्णा नदी के किनारे केशरा और पर त्याल्ह् स्थानों में मिलता है।

कोयला—वरंगल, मुषावरम् और सिगारनी में पत्थर के कोयले की खाने हैं।

अभ्रक तथा याकूत भी इस जिले में मिलता है।

एरंडी—इसकी पैदावार अन्दाज २–२॥ लाख थैली होती है। तौल ४० सेर का मन, २० मन की खण्डी।

चाँवल—धान का तौल माप से और चावल का पल्ले से है। माप १४ सेर की हंडी, ४ हंडी का मन तथा २० मन की खंडी। तौल १२० सेर बंगाली का पल्ला।

तिल्ली—पैदावार २–२॥ लाख बोरी, तौल माप पर।

कपास—इसकी २ फसलें होती हैं। बरसाती (आसोज में) करीब १५, २० हजार गांठें और चेती पीक ५ हजार गाँठ की पैदावार होती है।

तौल, कपास—१२ सेर का मन २० मन की खंडी। रुई १२ सेर का मन और १० मन का बोझा। सरकी ५० रतल की खंडी पर भाव।

गल्ला—जुवारी, चना, मूंग, तूवर आदि पैदा होती है, तौल माप पर होता है।

चमड़ा—इसके १०–१२ कारखाने हैं। यहाँ से चमड़ा मद्रास भेजा जाता है।

गलीचा, दरी—इसके बनाने वाले ३००–४०० घर हैं, गलीचा विशेप मात्रा में यहाँ से बाहर जाता है, तथा ५) से ५००) तक का अदद तैयार होता है।

स्व० सेठ दादाभाई पदुलजी इटालिया वरंगल (दक्षिण)
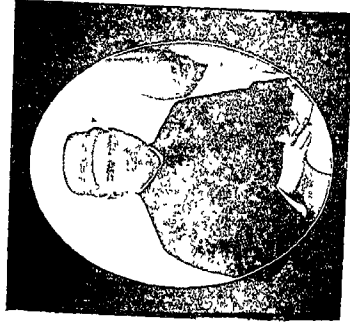
सेठ दीनशाजी दादाभाई इटालिया वरंगल
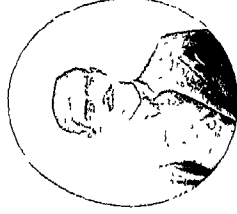
श्रीजमशेदजी दीनशाजी इटालिया वरंगल

काली कम्मल—यहाँ की तयार की हुई कमलें सोलापुर और अमरावती की ओर जाती हैं। इसके अलावा देशी रेशम के वस्त्र भी यहाँ अच्छे बनते हैं।

बाहर जानेवाला माल—एरंडी, तिल्ली, चावल, कपास, सरकी, रूई, मिरची और एरंडी का तेल।

आने वाला माल—किराना, गुड़, शकर, फॅंसी गुड्स, कपड़ा और केरोगेटेड शीट्स

रेलवे लाइन—हैदराबाद से काजी पैठ वरंगल होती हुई एक लाइन बेजवाड़ा जाती है। अभी २ निजाम गव्हर्नमेंट ने काजी पैठ से बलारशाह तक लाइन चालू की है, उस पर, ग्रेंट ट्रंक एक्सप्रेस मद्रास से लाहौर तक दौड़ती है।

व्यापारिक स्थान—भोनगीर, जनगाँव, वरंगल तथा खम्भमपेठ—यहाँ विशेषकर एरंडी ज्यादा पैदा होती है। हनमकुंडा में हजार खंभों का मन्दिर दर्शनीय है।

कल कारखाने—यहाँ करीब २२ जीनिंग फेक्टरियाँ, ३ प्रेसिंग फेक्टरियाँ, १६ राइसमिल, २ ऑइल मिल और १ बांड्समिल है।

यहाँ के व्यापारियों का परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स झूमरलाल सूरजकरण

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ झूमरलालजी के पुत्र सूरजकरणजी और श्रीकृष्णजी हैं। आपकी फर्म संवत १९५५ से व्यापार कर रही है। आप माहेश्वरी वैश्य समाज के जायल (जोधपुर स्टेट) निवासी सज्जन हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

वरंगल—मेसर्स झूमरलाल सूरजकरण—यहां आढ़त सोना चांदी और गल्ले का कारबार होता है

पेदापल्ली—झूमरलाल सूरजकरण—उपरोक्त कारबार होता है।

मेसर्स दादाभाई एदलजी इटालिया

इस खानदान का खास निवास स्थान चीकली (सूरत) है। आप पारसी समाज के इटालिया सज्जन हैं। चीकली से दादाभाई सेठ ५०।६० साल पहले सोलापुर होकर हैदराबाद आये। यहाँ कुछ समय तक आप सर्विस करते रहे। पश्चात् चिनाई फेमिली के सोराब नवाबजंग के साथ वरंगल गये। इस स्थान को आप ने व्यवसाय के उपयुक्त समझ ४५ वर्ष पूर्व

अपनी फर्म की बरंगल में नीव रक्खी। आप के समय में ही इस फर्म पर आबकारी कंट्राक्ट का व्यापार आरम्भ हो गया एवं इस व्यवसाय में आप ने अच्छी दौलत पैदा की। आप के कोई पुत्र नहीं था, आप ने अपने भतीजे सेठ दीनशाजी को १० महीने की अवस्था से ही पाल कर बड़ा किया था, और पीछे से उन्हें होनहार समझ अपना उत्तराधिकारी बनाया। आप सन् १९२२ में ८० वर्ष की अवस्था में बहिश्त नशीन हुए।

वर्तमान में इस दुकान के मालिक सेठ दीनशाजी दादाभाई इटालिया हैं। आप बरंगल के अच्छे प्रतिष्ठित सज्जन माने जाते हैं। आप प्रति वर्ष २५ लाख रुपयों का निजाम स्टेट का आबकारी का कंट्राक्ट लेते हैं। इसके अलावा आप ने ६ जीनिंग फेक्टरियाँ खोली हैं। इस समय आप बरंगल डिस्ट्रिक्ट लोकल बोर्ड, रेलवे एडवाइजरी बोर्ड और आन्ध्र बैङ्क की एडवायजरी बोर्ड के मेम्बर हैं। आप की ओर से चीखली में सब जातियों के लिये एक हाई स्कूल और कन्या पाठशाला चल रही है। आप के पुत्र श्रीयुत जमशेदजी दीनशाजी की वय इस समय २२ साल की है। आप विलायत में पढ़ रहे हैं। आप का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१ बरंगल—मेसर्स भीखाजी दादाभाई एण्ड कम्पनी
तार का पता—Bhikaji } यहाँ हेड आफिस है और कंट्राक्टिंग का काम होता है।

२ बरंगल—जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी और राइस मिल है।

३ निजामाबाद— ,, ,, ,,

४ पेलापल्ली (बरंगल)—जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी है।

५ खमम्मेट (बरंगल)—जीनिंग और राइस मिल है।

६ एरपल्ली (निजामाबाद)—राइस फ्लोअर मिल है।

७ नदीगाँव (वेजवाड़ा)—जीनिंग फेक्टरी है।

मेसर्स नत्थूभाई मेघजी एण्ड संस

इस फर्म के मालिक कच्छ—नागलपुर निवासी खोजा—मुस्लिम समाज के सज्जन हैं। सर्व प्रथम सेठ नत्थू भाई मेघजी करीब ५० साल पहिले बरंगल आये। आरंभ में आपने स्कीन टेनेरी (चमड़े का कारखाना) खोली। पश्चात् आप कंट्राक्ट का काम करने लगे। निजाम स्टेट के बरंगल डिस्ट्रिक्ट फारेष्ट के बहुत से कंट्राक्ट आपके द्वारा हुए। आपके द्वारा लकनावरम् का मशहूर तालाब तय्यार हुआ। व्यापारिक कामों के सिवा सवाब के कामों में भी आपका अच्छा खयाल था। आपने बरंगल में एक जमातखाना बनवाकर आगाखान
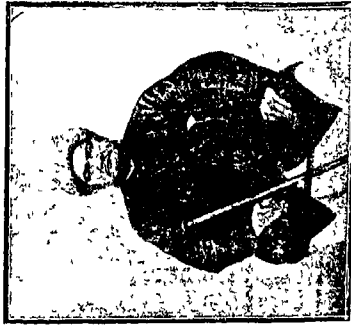
स्व० सेठ नत्थूभाई मेघजी वरंगल (दक्षिण)

सेठ कासम भाईनत्थू (नत्थूभाई मेघजी एण्डसंस) वरंगल

सेठ जुसुफ भाईनत्थू (नत्थूभाई मेघजी एण्डसंस) वरंगल

साहब को भेट किया। इसी प्रकार अलीगढ़ यूनिवर्सिटी और हैदराबाद फ्लड के समय भी एक मुश्त रकमें दान कीं। आपने अपने कई रिश्तेदार कुटुम्बों को लाकर निजाम स्टेट में आबाद करवाया। इस प्रकार इज्जतपूर्वक जीवन बिताते हुए ता० ७-६-१९१५ में आप बहिश्त नशीन हुए। २० साल पहिले वरंगल में आपने एक जीनिंग खोली।

वर्तमान में इस दुकान के मालिक सेठ नत्थूभाई मेघजी के पुत्र सेठ कासिमभाई और सेठ जूसुफभाई हैं। आप लोगों के हाथों से वरंगल और आसपास ६ जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरियाँ और १ बांड्स क्रेसिंग मिल खोला गया है। यह फर्म यहां के व्यापारिक समाज में अच्छी प्रतिष्ठित मानी जाती है। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१. वरंगल—मेसर्स नत्थूभाई मेघजी एण्डसंस } यहाँ फर्म का हेड ऑफिस है
T. No 20

कारखाने:—

२. वरंगल—कासिमभाई नत्थू बांड्स मिल
३. वरंगल—कासिम जूसुफ नत्थूभाई जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी
४. जमीकुंटा (करीम नगर) जूसुफ भाई नत्थू जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी
५. मानिकगढ़ (आसिफाबाद) कासिम भाई नत्थू एण्डसंस जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी
६. परभनी—कासिम व जूसुफ नत्थूभाई खोजा जीनिंग फेक्टरी

मेसर्स नथमल हरीकिशन

इस फर्म के मालिक सेठ नथमलजी नागोर (मारवाड़) निवासी ननवाणा (बोहरा) जाति के सज्जन हैं। आपके हाथों से २० साल पूर्व कपास, सरकी, एरंडी, गल्ला आदि की आढ़त का कारबार शुरू हुआ और थोड़े ही समय में आपने व्यवसाय की उन्नति कर फर्म की अच्छी प्रतिष्ठा बढ़ाई है। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

वरंगल—मेसर्स नथमल हरीकिशन
तार का पता—
Nathamal, T. No 20
} यहाँ सब प्रकार की आढ़त का कारबार होता है, इस समय आपके पास मेसर्स वालकट ब्रदर्स की एरंडी और कपास खरीदी की एजंसी है।

मेसर्स बुधमल जुहारमल

इस दुकान का हेड आफिस औरंगाबाद (निजाम स्टेट) में है। वहाँ यह फर्म १३५ वर्षों से स्थापित है। इसकी शाखाएँ बम्बई, जालना, नांदेड़, सिकन्दराबाद प्रभृति स्थानों में हैं, इसके

व्यापार आदि का विस्तृत परिचय मालिकों के चित्रों सहित औरंगाबाद में दिया गया है। वरंगल में इस दुकान का स्थापन २५ वर्ष पूर्व हुआ। यहाँ के व्यापार का परिचय इस प्रकार है।

वरंगल—मेसर्स बुधमल जुहारमल T. A. Dewora, T. No 17 — सूत की आढ़त और एरंडी, कपड़ा व बैङ्किंग व्यापार होता है।

दीवान बहादुर रामगोपाल श्रीकृष्ण

इस फर्म का हेड आफिस सिकन्दराबाद में है। निजाम स्टेट की ख्यातिप्राप्त दुकानों में इसकी भी गणना है। सिकन्दराबाद में इस फर्म पर बैङ्किंग मिल आनर्स और कपड़े का व्यापार होता है। इसके अलावा इसकी शाखाएँ भैंसा, निजामाबाद, पेदापल्ली, सेड्म आदि स्थानों में हैं। इसके व्यापार आदि का सुविस्तृत परिचय मालिको के चित्रो सहित सिकन्दराबाद मे प्रकाशित किया गया है। वरंगल मे इस फर्म के कारखानों का स्थापन करीब २० साल पूर्व हुआ। इस फर्म के व्यवसाय का परिचय इस प्रकार है।

वरंगल—दीवान बहादुर रामगोपाल श्रीकृष्ण T. No. 7 — यहाँ जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी, राइस और ऑइल मिल है तथा एरंडी, चावल और कॉटन का व्यापार होता है।

वरंगल—दीवान बहादुर रामगोपाल लक्ष्मीनारायण — इस नाम से आढ़त का कारबार होता है।

मेसर्स हीराचन्द पूनमचन्द

इस फर्म का हेड ऑफिस सिकन्दराबाद में है। अतः इसके व्यवसाय आदि का सुविस्तृत परिचय मालिकों के चित्रों सहित सिकन्दराबाद में दिया गया है। सिकन्दराबाद के व्यवसायिक समाज में यह फर्म अच्छी मातबर समझी जाती है। इसकी वरंगल ब्रांच का स्थापन संवत् १९५५ में हुआ। इसके अलावा करीम नगर, पेदापल्ली और मंथनी में भी इस फर्म की ब्रांचेज हैं। वरंगल दुकान पर श्रीयुत चुन्नीलालजी मुनीम संवत् १९६२ से काम करते हैं। आप बड़े लायक सज्जन हैं। इस फर्म का व्यापारिक परिचय यह है।

वरंगल—मेसर्स हीराचंद पूनमचंद T. No. 52 — यहाँ बैङ्किंग, कॉटन, एरंडी का व्यापार और आढ़त का काम होता है।

मेसर्स श्रीकृष्ण चुन्नीलाल

इस फर्म के मालिकों का मूल निवासस्थान पीपाड़ (जोधपुर स्टेट) में है। आप माहेश्वरी वैश्य समाज के मिणियार सज्जन हैं। सर्व प्रथम संवत् १९५३ मे सेठ चुन्नीलालजी वरंगल आये और रामकरण चुन्नीलाल दुकान के साथ रायली ब्रदर्स की कमीशन का काम करने लगे। कुछ समय बाद आपने उक्त फर्म से अपना भाग निकाल कर अब्दुल साहब चुन्नीलाल के नाम से रालिब्रदर्स की एजंसी का काम किया। पश्चात् जब रायली एजंसी का काम कम हुआ तो १९६८ में श्रीकृष्ण चुन्नीलाल के नाम से आपने स्वतंत्र दुकान की। आपने २० साल पहिले सिकन्दरा बाद मे भी अपनी दुकान खोली है।

वर्तमान में इस दुकान के मालिक सेठ चुन्नीलालजी, बिरदीचंदजी, बनेचंदजी और रामधनजी चारो भ्राता हैं। आप लोगों ने फर्म के व्यापार को अच्छा बढ़ाया है। सेठ रामधनजी के पुत्र जेठमलजी और बरदीचंदजी के पुत्र लक्ष्मीनारायणजी भी कारबार में भाग लेते हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

वरंगल—मेसर्स श्रीकृष्ण चुन्नीलाल
T. A. Shree kishan, T. No 5 — यहाँ कपास, एरंडी आदि का व्यापार बैङ्किग व आढ़त का काम होता है।

सिकन्दराबाद—श्रीकृष्ण चुन्नीलाल T, No 333—बैङ्किग व्यापार होता है।

गणापुर—श्रीकृष्ण चुन्नीलाल—एरंडी की फेक्टरी और घरू व्यापार होता है।

रगनाथपल्ली—श्रीकृष्ण चुन्नीलाल—तेल की फेक्टरी और घरू व्यापार होता है।

जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरीज़ राइस एवं आइल मिल्स

आकार व्यंकन्ना जीनिंग राइस मिल
कासिम भाई जूसुफ भाई नत्थू जीनिग प्रेसिंग फेक्टरी
गुमदेली जानकीराम जीनिग राइस मिल
तार महम्मद जान ऑइल जीनिंग फेक्टरी
निरला नरसिंहम् जीनिंग फेक्टरी
पिंगले व्यंकट रामरड्डी जीनिंग फेक्टरी प्रेसिंग और राइस मिल
पिंगले प्रताप रड्डी जीनिंग फेक्टरी
बंदेली राजपार ऑइल जीनिंग फेक्टरी
ब्रह्मदेव आनंदम् आइल जीनिग फेक्टरी और राइस मिल
भीखाजी दादाभाई जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी, राइस और ऑइल मिल
दीवान बहादुर रामगोपाल श्रीकृष्ण जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी राइस और ऑइल मिल
रामनारायण रामरतन जीनिंग फेक्टरी और राइस मिल

वेलदे लिंगम् ऑइल जीनिंग फेक्टरी
सुदम सेठी नरसिंहम् जीनिंग एण्ड राइस मिल

कपास एरंडी राइस मरचेंट एण्ड कमीशन एजंट्स

मेसर्स अकारप चित्रया
,, आकारप नरसिंहम्
,, कोन्डूर वेंकट राजम्
,, कोभार वल्लू बलराजू
,, जुहारमल सीताराम
,, झूमरमल सूरजकरण
,, नोरिया कम्पनी
,, टोटा रामचन्द्र
,, नथमल हरीकिशन
,, परशुराम श्रीवल्लभ
,, बुधमल जुहारमल
,, बलदेव नरसय्या
,, बद्रीनारायण जयनारायण
,, बद्रीनाथ जेठमल
,, भीमराज रामदयाल
,, भभूति रामन्ना
,, दीवान बहादुर रामगोपाल श्रीकृष्ण
,, रामगोपाल लक्ष्मीनारायण दीवान बहादुर
,, रामधन सीताराम
,, रामलाल गनेशराम
,, रायन मालय्या (लोकल आढ़त)
,, रव्वा रामनाथम्
,, हीराचंद पूनमचंद
,, श्रीकृष्ण चुन्नीलाल

किराना के व्यापारी

मेसर्स गिरमिल्ला नरसिंहम् रुमिनिया
,, गुंडामुल लिंगम्
,, हाजी जुसुफ अली महम्मद
,, टोटा केदारी
,, तार जानू
,, हासम इब्राहिम

चाँदी सोने के व्यापारी

मेसर्स एल्लूर अंकय्या
,, झूमरलाल सूरजकरण
,, पिंगल व्यंकट जनार्दन रड्डी
,, बुधमल जुहारमल
,, वजूर रामकृष्टय्या
,, झिंगीर राजाराम

जनरल मरचेंट्स

मेसर्स गुंडामुल लिंगम्
,, अल्लाड़ी केदारी
,, धारसी जाफर
,, रव्वा अंकन्ना

कंट्राक्टर्स

मेसर्स पिंगले व्यंकट रामरड्डी
,, भीखाजी दादाभाई (आबकारी)

कपड़े के व्यापारी

मेसर्स आकारप चित्रया
,, आकारप नरसिंहम्
,, अलीमहम्मद हासम्

मेसर्स गिरमिल्ला नरसिंहम् रमनय्या
,, गुंडामुल लिंगम्
,, गोरंटल्ला विश्वनाथम् (गाँवठी कपड़ा)
,, पुल्लूर राजाराम (सूत)
,, शुभकरण रामगोपाल

दरी गलीचा के व्यापारी

मेसर्स भूपति वीरय्या
,, मावजी भानजी
,, रवा रामनाथम्
,, सारगम रगय्या

ऑइल एजंट

मेसर्स आकारप चिन्नया
,, तारमहम्मद जानू
,, सी. वर्द्धराज मुदलीयार

हार्ड वेअर मरचेंट्स

मेसर्स तारमहम्मद जानू
,, फुल्लूर मल्लय्या
,, फुलमारी रामन्ना
,, हासम इब्राहिम

लकड़ी के व्यापारी

मेसर्स अकुलो गोविन्दू
,, नेराला नरसिम्मा रामल्लो
,, समुद्रला नरसय्या

एजंसी

मेसर्स नोरिया कम्पनी (भीखाजी दादाभाई एजंट)
,, रायली ब्रदर्स (श्रीकृष्ण चुन्नीलाल एजंट)
,, वालकट ब्रदर्स (नथमल हरीशंकर ,,)
,, सट्रास कम्पनी (बुधमल जुहारमल ,,)

निजामाबाद

निजाम स्टेट रेलवे की छोटी लाइन पर हैदराबाद से कुछ मील की दूरी पर यह शहर स्थित है। औरंगाबाद, जालना, सेलू, परभनी आदि की पैदावार और यहाँ की पैदावार में विशेष अन्तर है। यहाँ पर कपास की पैदावार कम और चावल की पैदावार अधिक होती जाती है। यह स्थान तेलंगाने प्रांत में माना जाता है। यहाँ की भाषा तेलंगी और कैनाड़ी है, कचित् मराठी भी बोली जाती है।

पैदावार—चावल—इसके करीब २ लाख थैले प्रति वर्ष पैदा होते हैं। १२० सेर का पल्ला माना जाता है। तौल में ६ सेर ज्यादा लिया जाता है। इसकी धूप काली और बरसाती २ पीक होते हैं। इस जिले में कामारडी और यल्लारडी के अलावा छोटे मोटे १ हजार तालाब हैं।

मिरची—बारीक और मोटी दो किस्म की होती है। करीब एक लाख बोरी मिरची यहाँ से बाहर जाती है। तौल २॥ मन बंगाली का बोझा।

गल्ला—इसका तौल १२६ सेर के पल्ले पर है। हलदी भी पैदा होती है।

सीड्स—अलसी, तिल्ली (लाल, सफेद) का तौल १६ पायली के मन पर करड़ी, महुवाशीड और मुँगफली तौल से २० मन की खंडी।

अलसी—इसकी आमद करीब ५० हजार थैला होती है।

कपास—बन्नी (तारदार) यह फसल सियालू है और कातिक में आती है। करीब १० हजार गाँठ रुई की दोनों प्रकार की आमद है। समर काटन-चैत में आती है। यह विशेष होती है।

रुई—२५ रतल बंगाली का मन, २० मन की खंडी, खंडी पर भाव।

जीनिंग प्रेसिंग राइस मील—इस स्थान पर ७ जीनिंग फेक्टरी, ७ राइस मील और २ प्रेसिङ्ग फेक्टरियाँ हैं।

तिल्ली—२५ हजार थैला बाहर जाती है।

इमली—करनूल लाइन में विशेष जाती है।

तूवर की दाल—इसका भी जबर्दस्त पाक होता है।

नोट—इस स्थान पर व्यापारिक गति विधि विशेष रहा करती है। यहाँ की जनता सघन व सुखी है। गल्ले का प्रधान बाजार महबूबगंज है। यहाँ के व्यापारियों का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है:—

मेसर्स गोवर्द्धनदास गोकुलदास

इस फर्म का हेड आफिस कुचामन (जोधपुर) है। आप माहेश्वरी वैश्य समाज के काबरा सज्जन हैं। इस फर्म का हेड आफिस कुचामन में है। संवत् १९७८ से निजामाबाद में इस दुकान का व्यापार आरंभ हुआ।

कुचामन में इस फर्म के व्यापार को सेठ शिवलालजी के समय में बहुत अधिक तरक्की मिली। आपने जोधपुर स्टेट में अच्छी प्रतिष्ठा पाई। आपको जोधपुर सरकार से जागीरी प्राप्त हुई। कुचामन ठिकाने में आपका कुटुम्ब नामी माना जाता है। आपके पुत्र श्रीयुत किशनलाल जी का स्वर्गवास संवत् १९६४ में हो गया। आपकी ओर से कई स्थानों पर धर्मशालाएँ बनवाई गई। लक्ष्मणझूला पर आपकी ओर से धार्मिक प्रबंध है। कुचामन में आपकी एक धर्मशाला एवं संस्कृत पाठशाला है जहाँ विद्यार्थी भोजन एवं शिक्षा पाते हैं।

सेठ किशनलालजी के ४ पुत्र हुए। सेठ परमानंदलालजी, सेठ गोवर्द्धनलालजी, सेठ मदनलालजी एवं सेठ गोकुलदासजी। इन सज्जनों में से सेठ परमानंदलालजी का संवत् १९६८ में स्वर्गवास हो गया है, अतः आपके नाम पर गोवर्द्धनलालजी दत्तक आये हैं। वर्तमान में आप ही तीनों सज्जन इस फर्म के मालिक हैं। माहेश्वरी समाज में आपकी बड़ी प्रतिष्ठा है। आपकी फर्म यहाँ के व्यापारिक समाज में बहुत मातबर मानी जाती है। इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१. कुचामन—मेसर्स शिवलाल किशनलाल—बैङ्किंग व जागीरदारों से लेन-देन का व्यापार होता है।

२. जोधपुर-मेसर्स शिवलाल किशनलाल— " " " "

३. अहमदाबाद—मेसर्स मदनमोहन किशनलाल, कालूपुरा पोस्ट, तार का पता DamodarJi — सराफी, आढ़त व मीलों के कपड़े का व्यापार होता है।

४. दिल्ली—मदनमोहन किशनलाल—सराफी, आढ़त व कपड़े का व्यापार होता है।

५. निजामाबाद—गोवर्द्धनलाल गोकुलदास, तार का पता Girirai — जीनिंग, राइस फेक्टरी, बैङ्किंग, आढ़त और सरकी का व्यापार होता है।

६. धरमाबाद—गोवर्द्धनलाल गोकुलदास—यहाँ जीनिंग फेक्टरी है। इस दुकान के अंडर मे और भी जीनिंग हैं।

मेसर्स बंशीलाल अबीरचंद रायबहादुर

इस फर्म का हेड आफिस हैदराबाद में (निजाम स्टेट) है। निजामाबाद में इस दुकान का स्थापन श्री सेठ सुगनचंदजी डागा के हाथों से हुआ। निजाम स्टेट के व्यापारिक समाज में यह फर्म बहुत मातबर एवं ऊँची श्रेणी की मानी जाती है। इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

निजामाबाद—सेठ बंशीलाल अबीरचंद रायबहादुर
तार का पता Raibahadur — जीनिंग और राइस मिल है। तथा हुंडी, चिट्ठी, बैङ्किंग, कॉटन, गल्ला और राइस की खरीदी-बिक्री तथा आढ़त का काम होता है।

मेसर्स भीखाजी दादाभाई एण्ड कम्पनी

इस फर्म का हेड आफिस वरंगल में है। वहाँ यह फर्म लाखों रुपयों का प्रति साल आबकारी का कंट्राक्ट लेती है। वरंगल के अलावा इस फर्म की जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरियाँ राइस एवं आइल मिल्स, पेदापल्ली, नंदीगांव आदि स्थानों में हैं। इन सब स्थानों पर यह फर्म अच्छी मातबर मानी जाती है। इसका निजामाबाद का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

निजामाबाद—मेसर्स भीखाजी दादाभाई एण्ड कम्पनी
तार का पता Bhikaji — जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी तथा राइस मिल है। और कॉटन का व्यापार होता है।

मेसर्स रामसुख बालमुकुंद

इस फर्म के व्यापार आदि का विस्तृत परिचय मेसर्स हीरानंद रामसुख के नाम से हैदराबाद में दिया गया है। हैदराबाद में इस फर्म पर गल्ले का बड़ा कारबार होता है। इसके अलावा इस दुकान की शाखाएँ निजामाबाद, काकीनड़ा, मदनूर आदि स्थानो में हैं। निजामाबाद का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

निजामाबाद—मेसर्स हीरानंद रामसुख
T. A. Mani — यहां बैङ्किंग, गल्ला और आढ़त का कारबार होता है।

मेसर्स रामदयाल घासीराम

इस फर्म का हेड आफिस हैदराबाद में है। अतः इसके व्यापार आदि का विस्तृत परिचय मालिकों के चित्रों सहित हैदराबाद में दिया गया है। हैदराबाद में यह फर्म प्रति वर्ष लाखों रुपयों का आबकारी का कंट्राक्ट लेती है। इसके अलावा बैङ्किग व्यवसाय करती है। कंट्राक्टिंग काम की व्यवस्था के लिये परभनी, बीड़, निजामाबाद, नादेड, महबूब नगर, सेड़म, तांडूर, मंथनी, नलगुंडा, मोमिनाबाद, मजने गाँव, हिंगोली, मेंदक, विकाराबाद आदि स्थानों पर दुकाने हैं। इसके अलावा इसकी भयंदर (बम्बई) ब्रांच पर नमक का व्यापार होता है। हैदराबाद की गण्यमान्य दुकानों में इस फर्म की भी गणना है। इसका निजामाबाद का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

निजामाबाद—मेसर्स रामदयाल घासीराम—बैङ्किग एवं कंट्राक्टिंग का व्यापार होता है।

मेसर्स दीवान बहादुर लक्ष्मीनारायण श्रीकृष्ण

इस फर्म का हेड आफिस सिकन्दराबाद में है। अतः इसके व्यापार आदि का विस्तृत परिचय मालिकों के चित्रों सहित सिकन्दराबाद में दिया गया है। वहाँ यह फर्म बैङ्किग, मिल आनर्स एवं कपड़े का बहुत बड़ा ट्रेड करती है तथा सिकन्दराबाद की प्रतापी फर्म मानी जाती है। इसके अलावा वरंगल, वेदापल्ली, सेड़म, भेंसा आदि स्थानों पर इसकी जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी है तथा घरू व्यापार होता है। इस फर्म का निजामाबाद का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

निजामाबाद—दीवान बहादुर लक्ष्मीनारायण श्रीकृष्ण — यहाँ जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी तथा राइस मिल है तथा बैङ्किग आढ़त व चावल और कॉटन का व्यापार होता है।

जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरीज़

कृष्णा जीनिंग राइस फेक्टरी

गोवर्द्धनदास गोकुलदास जीनिंग फेक्टरी और राइस फेक्टरी

नरसा गौड़ लिंगा गौड़ जीनिंग राइस फेक्टरी

बंशीलाल अबीरचन्द जीनिंग राइस फेक्टरी

भीखाजी दादाभाई एण्ड कं० जीनिंग प्रेसिंग एण्ड राइस फेक्टरी

मंडुर कृष्णय्या जीनिंग राइस फेक्टरी

रामचन्द्र भजनलाल जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी और राइस मिल

लक्ष्मीनारायण श्रीकृष्ण जीनिंग फेक्टरी और राइस मिल

वामन नायक मचल्ला सय्यन्ना जीनिंग राइस फेक्टरी

बैंकर्स एण्ड कमीशन एजंट्स

मेसर्स गोवर्द्धनदास गोकुलदास
,, जगन्नाथ बद्रीनाथ
,, झूमरलाल गोवर्द्धन
,, बंशीलाल अबीरचन्द राय बहादुर
,, रामरतन श्रीराम
,, रामसुख बालमुकुंद
,, दीवान बहादुर लक्ष्मीनारायण श्रीकृष्ण
,, व्यंकटलाल बद्रीनारायण (लोकलआढ़त)
,, रामदयाल घासीराम
,, शिवनारायण लादूराम
,, सूरज करण सीताराम

सीड्स और मिरची के आढ़तिया

मेसर्स सूरजकरण सीताराम (मिरची)
,, वामनदास एण्ड कम्पनी (मिरची)
,, हनुमंतराय भेरोबक्श (ग्रेन)

कपड़े के व्यापारी

मेसर्स कोरटवली यंकोबा नाइक
,, गोंडल गंगाराम
,, महम्मद अमीन
,, वलीमहम्मद हासीमूसा
,, यलकंठ रंगय्या

जनरल मरचेंट्स

मेसर्स आयता राज लिंगम्
,, कोंडा नरसिंहलू
,, जलाल मियाँ अब्दुल कादर
,, नारला नरसिंहू
,, टी० राजाराम

रुई के व्यापारी

मेसर्स गोवर्द्धनलाल गोकुलदास
,, झूमरलाल गोवर्द्धन
,, बंशीलाल अबीरचंद राय बहादुर
,, भीखाजी दादाभाई
,, रामरतन श्रीराम
,, रामसुख बालमुकुंद
,, सूरजकरण सीताराम
,, शिवनारायण लादूराम

किराने के व्यापारी

मेसर्स अब्बास महम्मद
,, जयनारायण जीतमल
,, वलीमहम्मद राजीमूसा
,, खानबहादुर होरमसजी माणकजी (नमक)
,, हुसेन तारमहम्मद

चाँदी सोने के व्यापारी

मेसर्स उपल घंटय्या
,, बदट्टू रामय्या लछय्या
,, बालकिशन हरीकिशन

नांदेड़

गोदावरी नदी के तीर निजाम स्टेट रेलवे की छोटी लाइन पर यह शहर आबाद है। इसके तीन ओर निजाम स्टेट और एक ओर बरार प्रांत है। यहाँ की भाषा मराठी, उर्दू, तेलंग और कनाड़ी है। इस प्रान्त में तालाबों की संख्या विशेष है, जिनमें बिलोली, देगलूर, कंदाहार, शहापुर, तलेगॉव, सिंदी और म्हेसा प्रधान हैं। इस प्रान्त में नांदेड़, उमरी, करकेली, मुदखेड और म्हेसा आदि स्थानों में जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरियाँ हैं। नांदेड में १८ जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरियाँ व १ काटन मील है।

पैदावार—गल्ला आदि—हलदी, गेहूँ, जुवारी, तूवर, चना, मसूर, मूँग, उड़द, करड़ी, अलसी तथा अम्बारी हैं। तौल ४ सेर की पायली और १६ पायली का मन है।

कपास—६५६ सेर की खंडी पर भाव होता है।

सरकी—३२८ सेर की खंडी पर भाव होता है।

रुई— १४० सेर के पल्ले पर भाव होता है। कपास की पैदावार ४०, ५० हजार गाँठ है। घी किराना गुड़ शकर का तौल १२ सेर के मन से है।

श्रीसिक्ख गुरु द्वारा मंदिर—इस गुरु द्वारा का निर्माण महाराज रणजीतसिंहजी ने संवत् १७६४ में गुरुगोविंदसिह साहब के समाधिस्थान पर करवाया। इस गुरुद्वारे का गुम्मच स्वर्ण का है। यहाँ करीब ४००—५०० सिक्ख निवास करते हैं। यह सिक्खों का पवित्र एवं प्रधान तीर्थस्थान माना जाता है।

यहाँ के व्यापारियो का संक्षेप परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स पूनमचंद बख्तावरमल

इस फर्म के व्यापार का विस्तृत परिचय मालिकों के चित्रों सहित औरंगाबाद में दिया गया है। नांदेड़ मे इस दुकान का स्थापन २५।२६ साल पहिले हुआ। नांदेड़ के अलावा इस दुकान

की शाखाएँ बम्बई, सिकन्दराबाद, वरंगल आदि स्थानों में हैं, जिन पर बैङ्किंग व कमीशन का काम होता है। इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१. नांदेड़—मेसर्स पूनमचंद बख्तावरमल } गल्ला, कपास तथा आढ़त का काम और बैङ्किंग
तार का पता Garnet } व्यापार होता है।

२. नांदेड़—निहालचंद उत्तमचंद—इस नाम से लोकल आढ़त का काम होता है।

३. नांदेड़—निहालचंद देवड़ा— " "

मेसर्स मुकुन्ददास मूँदड़ा

इस फर्म का हेड आफिस हैदराबाद में है। अतः इसके व्यवसाय आदि का सुविस्तृत परिचय मालिकों के चित्रों सहित हैदराबाद में दिया गया है। नांदेड़ के अलावा बम्बई, मद्रास, गुलबर्गा प्रभृति स्थानों में इस फर्म की ब्रांचेज हैं जिन पर बैङ्किंग और कमीशन एजंसी का काम होता है। नांदेड़ फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

नांदेड़—मेसर्स मुकुन्ददास मूँदड़ा } बैङ्किंग, आढ़त तथा रुई का व्यापार होता है।
T. A- Hedmen }

मेसर्स बेजनजी बेरामजी कम्पनी

इस फर्म का हेड अफिस जालना है। अतः इसके व्यापार आदि का विस्तृत परिचय पेस्तनजी मेरवानजी के नाम से जालना में दिया गया है। जालना के अलावा इस फर्म की ब्रांचेज, जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरीज बम्बई, ऊमरी, करकेली, परभनी, सेलू सातोना, धामनगांव, देवलगांव (बरार) बुतगांव (पूना) तथा गुंटकेल (मद्रास) है। नांदेड़ ब्रांच का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

नांदेड़—मेसर्स बेजनजी बेरामजी कम्पनी } यहाँ जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी हैं तथा आढ़त और कपास का व्यापार होता है।

मेसर्स रामदयाल घासीराम

इस फर्म का विस्तृत व्यापारिक परिचय मालिकों के चित्रों सहित हैदराबाद में दिया गया है। नांदेड़ में इस फर्म पर बैङ्किंग और आबकारी कंट्राक्टिंग का व्यापार होता है इसके अलावा निजाम स्टेट की १२।१५ स्थानो में कंट्राक्टिंग की सुविधा के लिये इस फर्म की शाखाएँ हैं।

मेसर्स शंकरलाल मालीवाल

इस दुकान का स्थापन सेठ फतेरामजीके हाथों से दांती में हुआ। आप मोड़ी (जोधपुर स्टेट) निवासी माहेश्वरी समाज के मालीवाल सज्जन हैं। सेठ फतेरामजी के ३ पुत्र हुए–जगन्नाथजी, हरबगसजी तथा भारमलजी। सेठ हरबगसजी के किशनलालजी और भारमलजी के रामचन्द्रजी हुए। इन सज्जनों में से सेठ जगन्नाथजी और किशनलालजी के हाथों से इस दुकान के रोजगार को विशेष तरक्की मिली। सेठ किशनलालजी १९६० में और रामचन्द्रजी १९६२ में स्वर्गवासी हुए। सेठ रामचन्द्रजी के यहां शंकरलालजी कड़ेल से दत्तक लाये गये।

वर्तमान मे इस दुकान के मालिक सेठ शंकरलालजी हैं। आपके पुत्र श्रीयुत् मदनलालजी भी कारबार में भाग लेते हैं। इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

दांती (परभनी) मेसर्स फतेराम भारमल—जिरायत तथा लेन-देन का काम होता है।

नांदेड़—शंकरलाल मालीवाल—साहुकारी लेन-देन का काम होता है।

मेसर्स हरनारायण रामप्रताप

इस दुकान के मालिक बूड़सू (बोरावड़) निवासी माहेश्वरी समाज के काबरा सज्जन हैं। इस दुकान का स्थापन ७५।८० साल पहिले सेठ हरनारायणजी काबरा के हाथों से हुआ। आपके पुत्र सेठ रामप्रतापजी कावरा के हाथों से इस दुकान के व्यापार और सम्मान की विशेष उन्नति हुई। रुई के व्यवसाय में आपका बहुत बड़ा हियाव था। नांदेड़ के व्यापारिक समाज में आप अच्छी प्रतिष्ठा की निगाह से देखे जाते थे।

वर्तमान मे इस दुकान के मालिक सेठ राम प्रतापजी कावरा के पुत्र रामदेवजी, जगन्नाथजी एवं श्रीकृष्ण जी हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

नांदेड़—मेसर्स हरनारायण रामप्रताप—बैङ्किग तथा कॉटन का व्यापार होता है।

नांदेड़—मेसर्स रामप्रताप कावरा—गल्ला तथा आढ़त का व्यापार होता है।

नांदेड़—मेसर्स जगन्नाथ श्रीकृष्ण—आढ़त का कारवार होता है।

मेसर्स श्रीराम द्वारकादास

इस फर्म के व्यापार का विस्तृत परिचय परभनी मे दिया गया है। नांदेड़ में इस दुकान पर आढ़त का तथा रुई आदि का व्यापार होता है।

मेसर्स बामन नायक जागीरदार

इस फर्म का हेड आफिस हैदराबाद है। इसके अलावा इसकी जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरियाँ और राइस मिल परभनी, निजामाबाद, मेदक, कामारडी आदि स्थानों में हैं। इसके व्यापार का विस्तृत परिचय मालिकों के चित्रों सहित हैदराबाद में दिया गया है। यह कुटुम्ब हैदराबाद के व्यापारिक समाज में अच्छा प्रतिष्ठित माना जाता है। नांदेड़ में इस फर्म की जीनिंग और प्रेसिंग फेक्टरी है।

जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरीज़

दि अकबर जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी
दि गामड़िया जीनिंग प्रेसिग फेक्टरी
चन्द्रभान गिरि वासुदेव गिरि जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी
बेजनजी बेरामजी जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी
महम्मद जूनुस जीनिग प्रेसिग फेक्टरी
रमजान अली लालजी साजन जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी
बामन नायक जागीरदार जीनिंग प्रेसिग फेक्टरी
वाड़िया जीनिग प्रेसिग फेक्टरी

बैंकर्स

दी इम्पीरियल बैंक आफ इण्डिया लिमिटेड
मेसर्स ऋधकरण घनसीराम
,, कल्यानजी केशवजी
,, पूनमचंद बख्तावरमल
,, बालकिशनदास रामलाल
,, बालाराम शिवनारायण
,, मुकुंददास मूंदड़ा
,, रामदयाल घासीराम
मेसर्स शंकरलाल मालीवाल
,, हरनारायण रामप्रताप

कपड़े के व्यापारी

मेसर्स अब्बासा महम्मद
,, उसमान शाही मिल क्लाथ शाप
,, मूसा अब्दुल्ला
,, मौलवी महम्मद अली गुलाम महम्मद
,, रहमतुल्ला मूसा
,, हाजी लतीफ हाजीमूसा

ग्रेन मर्चेंट एण्ड कमीशन एजंट

मेसर्स गोकुलदास तुलसीदास
,, झूमरलाल गोवर्द्धन
,, पूनमचंद बख्तावरमल
,, भीमराज कस्तूरचंद
,, मुकुंददास मूंदड़ा
,, रामनाथ कोडूलाल
,, रामप्रताप कावरा
,, शामजी धारसी
,, हाजी लतीफ हाजी मूसा

मेसर्स हीरालाल चुन्नीलाल
,, श्रीराम द्वारकादास

कॉटन मर्चेन्ट्स

मेसर्स भूमरलाल गोवर्द्धन
,, कल्यानजी केशवजी (सरकी)
,, पूनमचंद बख्तावरमल
,, हरनारायण रामप्रताप

किराने के व्यापारी

मेसर्स अब्बासा महम्मद
मेसर्स कासम तय्यब
,, पद्मसी वेलजी (जनरल मरचेंट)
,, महम्मद हासम अय्यूब
,, हबीब उसमान नूरमहम्मद साया
,, हाजीलतीफ हाजीमूसा

चांदी सोने के व्यापारी

मेसर्स गनेसलाल हरीलाल
,, दाजीबा लक्ष्मण
,, बालकिशनदास रामलाल
,, सिद्धराम ईश्वरनाथ

पूर्णा

निजाम स्टेट रेलवे के मनमाड़ सिकंदराबाद लाइन के मध्य यह जंकशन है। यहाँ से हिंगोली के लिये एक ब्रांच लाइन जाती है। स्टेशन के समीपही यह एक छोटी सी मंडी है। इस स्थान पर कपास, गल्ला तथा किराने का व्यापार प्रधान रूप से होता है।

तौल—कपास—१२ सेर का मन व २० मन की खंडी।

रुई—१३२ सेर का पल्ला माना जाता है। करीब २० हजार गाँठ रुई प्रति वर्ष यहाँ बँधती है।

बिनोले—२४० सेर की खंडी पर भाव होता है।

गल्ला—गल्ले का तौल माप पर है। करीब ४॥ सेर की पायली व १६ पायली का मन माना जाता है।

पैदावार—मुंगफली, जुवार, मूँग, तूवर, चना, लाख, करड़ी आदि हैं।

यहाँ के व्यापारियों का संक्षेप परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स श्रीराम द्वारकादास

इस फर्म का विस्तृत व्यापारिक परिचय परभनी में दिया जा चुका है। पूर्णा में इस फर्म की एक जीनिंग और प्रेसिंग फेक्टरी है तथा कॉटन का व्यापार होता है।

मेसर्स बंशीलाल अबीरचंद रायबहादुर

इस फर्म का विस्तृत परिचय हमारे ग्रंथ के प्रथम भाग में बीकानेर विभाग में दिया गया है। इसके अलावा निजाम स्टेट तथा सी० पी० में जहाँ २ इस फर्म की शाखाएँ हैं उन सब स्थानों पर इस फर्म का परिचय प्रकाशित किया है। हरएक स्थान पर यह दुकान बहुत बड़ा कारबार करती है। पूर्णा में इस फर्म की एक जीनिंग-प्रेसिंग फेक्टरी है। तथा कपास खरीदी का व्यापार होता है। यह दुकान हैदराबाद फर्म के अंडर में है।

जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरीज़

राजा बहादुर ज्ञानगिरि नरसिंहगिरि जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी
राय बहादुर बंशीलाल अबीरचंद जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी
नीलोबा रामजीवन जीनिंग फेक्टरी
श्रीराम द्वारकादास (कमलाजीन) जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी

गल्ले के व्यापारी और आढ़तिया

मेसर्स उसमान नूर महम्मद
" कन्हैयालाल द्वारकादास
" गनेशलाल रंगलाल
" जोधराज मोहनलाल
" बंशीलाल अबीरचंद रा० ब०

कपास के व्यापारी

मेसर्स राय बहादुर बंशीलाल अबीरचंद
मेसर्स राजा बहादुर ज्ञानगिरि नरसिंहगिरि
" श्रीराम द्वारकादास

किराने के व्यापारी

मेसर्स अब्बासा महम्मद
" इरवंता बाबू
" करीम सुलेमान
" महम्मद अहमद
" हाजी यूसुफ अली महम्मद

कपड़े के व्यापारी

मेसर्स अब्बासा महम्मद
" नूरमहम्मद हाजीमूसा
" पूर्णा कोआपरेटिव्ह सोसायटी लि०
" यूसुफ अली महम्मद
" रामनिवास रामप्रसाद

उमरी

निजाम स्टेट रेलवे की छोटी लाइन पर नांदेड़ और निजामाबाद के मध्य कपास की यह एक छोटी सी मंडी है। विशेष कर इस स्थान पर कपास का व्यापार प्रधान है। यहाँ के व्यापारियों का संक्षेप परिचय इस प्रकार है।

राजा बहादुर विसेसर गिरि वीरभान गिरि

इस फर्म का विस्तृत परिचय हैदराबाद में चित्रों सहित दिया गया है। हैदराबाद में प्रसिद्ध धनिक फर्मों में इसकी भी गणना है। इस फर्म की यहाँ एक जीनिंग फेक्टरी है। तथा कपास का व्यापार होता है।

मेसर्स जमनाधर पोद्दार

इस फर्म का हेड ऑफीस नागपुर है। भारत में टाटा संस की मिलों का कपड़ा बेंचने के लिये भारत के कई शहरों में इस दुकान की शाखाएँ हैं। ऊमरी में यह फर्म बहुत समय से स्थापित है। यहाँ सेठ जीवराजजी पोद्दार बहुत समय तक रहे थे। यहाँ आपकी स्थापित की की हुई गौशाला आदि है। आपने यहाँ जमीदारी भी खरीद की। इस दुकान के अंडर में निम्बू, डिगलूर आदि स्थानो मे जीनिंग प्रेसिग फेक्टरियाँ है। नागपुर मिल की एजंसी इस फर्म के पास है। कुछ समय पहले सिकंदराबाद मे भी इसकी एक ब्रांच खोली गई है। ऊमरी में इस फर्म की देखरेख में एक कॉटन जीनिंग प्रेसिग फेक्टरी काम करती है। इसका विस्तृत परिचय हमारे ग्रंथ के दूसरे भाग में कलकत्ता विभाग में पृष्ठ ३८० में दिया गया है।

मेसर्स विनोदीराम बालचंद

इस फर्म का हेड ऑफिस झालरापाटन (झालावाड़ स्टेट) है। मालवे की प्रतिष्ठा प्राप्त धनिक फर्मों में इसकी गणना की जाती है। इस दुकान के अंडर में भिन्न २ स्थानो पर १५ जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरियाँ हैं। तथा करीब ११ स्थानो पर काटन व बैङ्किंग कारबार होता है। उज्जैन में इस फर्म के अंडर में एक मिल काम करती है।

निजाम स्टेट में ऊमरी में इस फर्म की कई जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी है तथा कॉटन का व्यापार होता है। ऊमरी दुकान की मातहती में दो तीन स्थानो पर जीन प्रेस है। यहाँ के व्यापारिक समाज में यह फर्म अच्छी प्रतिष्ठित मानी जाती है। इसके व्यवसाय का विस्तृत परिचय मालिको के चित्रों सहित हमारे ग्रंथ के प्रथम भाग में राजपूताना विभाग के पृष्ठ १८३ में दिया गया है।

हिंगोली

यह स्थान परभनी जिले का एक अबाद कस्बा है। पूर्णा जंकशन से निजाम स्टेट रेलवे की छोटी लाइन की ब्रांच यहाँ तक आई है। पहिले यहाँ छावनी थी। यह स्थान निजाम स्टेट की सीमा पर है। यहाँ से खामगाँव, कासिम, पूसद और अकोला तक मोटर जाती हैं। यहाँ की मनुष्य संख्या करीब १४ हजार के लगभग है।

पैदावार—गल्ला—जुवार, तूवर, गेहूँ, चना, मूँग आदि अनाज हैं। अनाज का तौल मापी से है। ४॥ सेर की मापी और १६ मापी पायली की खंडी।

कपास—१२८ सेर बंगाली की खंडी पर भाव होता है।

रूई— १५६ सेर का बोझा, बोझा पर भाव होता है। २५—३० हजार गाँठ रूई पैदा होती है।

जीनिंग प्रेसिंग—यहाँ ७ जीनिंग और ३ प्रसिंग फेक्टरियाँ हैं।

दर्शनीय स्थान—खाखी बाबा का स्थान, नागनाथ का क्षेत्र और दत्तात्रय मंदिर।

यहाँ के व्यापारियों का संक्षेप परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स किशनदास सीताराम

इस दुकान के मालिक बूड़सू बोरावड़ (जोधपुर स्टेट) के है। आप माहेश्वरी वैश्य समाज के कावरा सज्जन हैं। इस फर्म के स्थापक सेठ किशनलालजी कावरा ७५—८० साल पहिले हिंगोली आये थे। आपके ५ पुत्र हुए, रामचन्द्रजी, साँवतरामजी, सीतारामजी, धनराजजी एवं गनेशलालजी। इन भाइयों में से सेठ रामचन्द्रजी, सीतारामजी और धनराजजी की यह फर्म है। वर्तमान में इस दुकान के मालिक सेठ चतुरभुजजी और सेठ मोतीलालजी हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

हिंगोली (निजाम)—मेसर्स किशनदास सीताराम—यहाँ जीनिंग प्रेसिगफेक्टरी है। और बैङ्किग व्यापार होता है।

खामगाँव—मेसर्स रामचन्द लालचन्द—लोकल आढ़त का काम होता है।

मेसर्स किशनदास गनेशलाल

इस दुकान के मालिक सेठ किशनदासजी के पुत्र सावंतरामजी और गनेशलालजी हैं। इनमें से वर्तमान में सेठ गनेशलालजी विद्यमान हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

हिंगोली—मेसर्स किशनदास गनेशलाल—इस नामसे बैङ्किग और आढ़त का काम होता है।

मेसर्स मोतीराम बींजराज

इस फर्म के मालिक धनकोली रसीदपुरा (जोधपुर स्टेट) निवासी माहेश्वरी वैश्य समाज के मूंदड़ा सज्जन हैं। सेठ मोतीरामजी मूँदड़ा देश से करीब १०० साल पहिले यहाँ आये थे। आप यहाँ साधारण काम काज करते रहे। आपके पुत्र सेठ बींजराजजी के हाथों से इस दुकान के व्यापार को विशेष उन्नति प्राप्त हुई। आप संवत १९५६ में स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र बालमुकुंदजी आपकी मौजूदगी में ही गुजर चुके थे।

वर्तमान में इस दुकान के मालिक सेठ बालमुकुन्दजी के पुत्र सेठ हेमराजजी मूँदड़ा हैं। आप बड़ी धार्मिक प्रवृत्ति के उदार सज्जन हैं। अपने संवत् १९७९ में श्री दत्तात्रय का सुंदर मंदिर करीब १। लक्ष रुपयों की लागत से तयार करवाया है। इसके स्थायी प्रबंध के लिये बींजराज हेमराज के नाम से जो कपड़े की दुकान थी वह दुकान और बहुतसी जमीन दी है। बड़नेरा (बरार) में भी सीताराम महाराज के संस्थान में आपकी एक धर्मशाला बनी है। आप यहाँ के अच्छे प्रतिष्ठित सज्जन माने जाते हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

हिंगोली—मेसर्स मोतीराम बींजराज—बैङ्किग, खेती तथा आढ़त और रुई का व्यापार होता है।

वासुदेव दत्तात्रय हिंगोली—यह श्री दत्तात्रय मंदिर की कपड़े की दुकान है।

मेसर्स वामन रामचन्द्र नाइक डोहीफोड़े

इस दुकान के मालिक दक्षिणी ब्राह्मण समाज के माध्यंदिनी गौत्रीय शांडिल्य सज्जन हैं। आप १०० वर्षों से व्यापार कर रहे हैं। सेठ वामनराव डोहीफोड़े के हाथों से इस दुकान का स्थापन हुआ। आपने रूई में विशेष सम्पत्ति उपार्जित की। आप १९०२ में स्वर्गवासी हुए। वर्तमान मे इस दुकान के मालिक सेठ रामकृष्ण वामन उर्फ बापू साहब डोहीफोड़े हैं। आपकी

ओर से यहाँ श्रीराधाकृष्णजी का मंदिर बना हुआ है। इसमें कुछ छात्रों के लिये भोजन का प्रबंध है। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

हिंगोली (निजाम) मेसर्स वामन रामचन्द्र नाइक — तारका पता Dohiphode — यहाँ कृषि, लैंडलार्ड, बैङ्किग, कॉटन व आढ़त का काम होता है। रायली तथा जापान कं० की आपके पास एजंसी है तथा मिलों की खरीदी रहती है।

हिंगोली—श्रीराधाकृष्ण जीन—जीनिंग फेक्टरी है।
पूर्णा—वामन रामचन्द्र—लेनेदेन का व्यापार होता है।

जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरीज

कमलनयन केशवदेव जीनिंग फेक्टरी
किशनदास सीताराम जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी
गणेशलाल सूरजमल जीनिंग फेक्टरी
देवड़ा जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी
न्यू कॉटन जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी
राधाकृष्ण जीनिंग फेक्टरी
हिंगोली जीनिंग फेक्टरी

बैंकर्स

मेसर्स किशनदास गनेशलाल
" किशनदास सीताराम
" गोविंदराम श्रीकृष्ण
" चन्द्रभान हीरालाल
" मोतीराम बींजराज
" मोतीराम रामविलास
" म्हालीराम वृंदावन
" वामन रामचन्द्र डोहाफोड़े
" शंकरदास रामानंद
" शुभकरणदास रामानंद

कपड़े के व्यापारी

मेसर्स जमनादास हनुमानदास
" मेघराज वृन्दावन
" विश्वनाथ खलसे
" लक्ष्मण गोरप्पा

कॉटन के व्यापारी

मेसर्स किशनदास गनेशलाल
" किशनदास सीताराम
" गोविंदराम शिवकिशन
" वरदीचंद नंदकिशोर
" बद्रीदास नारायणदास
" रामप्रताप गणेश
" वामन रामचन्द्र

गल्ले के व्यापारी और आढ़तिया

मेसर्स चतुर्भुज जेठमल
,, गनपत गोविंद बासठवाल
,, बालमुकुन्द नथमल
,, विट्ठलदास हनुमानदास
,, मोतीराम बींजराज
,, मानमल गौरीदत्त
,, राधाकृष्ण सूरजमल
,, शंकरदास गनेशदास

किराने के व्यापारी

मेसर्स अब्बास महम्मद
,, करीम सुलेमान
,, पंढरीनाथ बैजनाथ
,, रामकृष्ण गणपत बासठवाल
,, हबीब जीया

जनरल मरचेंट्स

मेसर्स पारा सोवा जीनाजी
,, रंगनाथ गंगाराम
,, रामकृष्ण गनपत

परभनी

निजाम स्टेट रेलवे की छोटी लाइन पर बसा हुआ मराठवाड़ा प्रांत के परभनी जिले का प्रधान स्थान है। यह शहर हैदराबाद और मनमाड के बीच मे है। यहाँ से रेलवे का १ ब्रॉंच परली तक और दूसरी पूर्णा होकर हिंगोली तक जाती है। इस जिले के एक ओर बरार प्रांत है। तथा शेष ३ ओर नांदेड़, बीदर, बीड़ और औरंगाबाद जिले हैं। यहाँ की भाषा उर्दू और मराठी है। जिले की आबादी पौने आठ लाख और गाँवों की संख्या १२३६ है।

पैदावार—ज्वारी, गेहूँ, बाजरी, ऊख, लाख, अलसी, चना, करड़ी, जव आदि गल्ला है।

गल्ले का तौल मापी से है। ४॥ सेर की पायली और १६ पायली का मन।

कपास तथा सरकी (बिनोला) २४० सेर बंगाली की एक खंड़ी, खंडी पर भाव होता है।

रुई—१३२ सेर का पल्ला।

गुड़, शकर, घी का तौल १२ सेर के मन पर है।

जीनिंग-प्रेसिंग फेक्टरीज—यहां ७ जीनिंग एवं ५ प्रेसिंग फेक्टरियाँ है। प्रति वर्ष करीब १५।२० हजार गाँठों की पाक होती है। परभनी के अलावा इस जिले में परतूर, सेलू, मानवत, अष्टी, हिंगोली, अजगांव, बोरी, जितूर, गंगाखेड़, पूर्णा आदि स्थानों पर जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरियाँ हैं।

यहाँ के व्यापारियो का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स नारायणदास चुन्नीलाल

इस फर्म का विस्तृत व्यापारिक परिचय मालिकों के चित्रों सहित जालना में दिया गया है। इस फर्म का जीनिंग प्रेसिंग का व्यापार बहुत जबर्दस्त है। स्थान २ पर इस फर्म की करीब ३२ जीनिंग-प्रेसिंग फेक्टरियां हैं। गदक में एक प्राइवेट कपड़े की मिल है। इस फर्म के मालिक स्वर्गीय सेठ मोतीलालजी बहुत बड़े व्यापारिक मस्तिष्क के पुरुष थे। आप ही

के द्वारा फर्म का व्यापार इतना फैला था। परभनी में इस फर्म का व्यापारिक-परिचय इस प्रकार है।

परभनी—मेसर्स नारायणदास चुन्नीलाल T. A. Hirakhan } यहां आपकी कॉटन जीनिंग-प्रेसिंग फेक्टरी है।

मेसर्स नत्थूभाई मेघजी एण्ड संस

इस फर्म का हेड अफिस वरंगल में है। अतः इसके व्यापार का विस्तृत परिचय मालिकों को चित्रों सहित वरंगल में दिया गया है। वरंगल में इस फर्म की जीनिंग प्रेसिंग-फेक्टरी तथा वॉइल मिल है। इसके अलावा जमीकुंटा (करीम नगर) मानिकगढ़ (आसिफाबाद) में भी इस दुकान के कारखाने हैं। परभनी में इस फर्म की कासिम व जूसुफ भाई नत्थू खोजा जीनिंग फेक्टरी के नाम से एक जीनिंग फेक्टरी है।

मेसर्स बालचंद गंभीरमल

इस फर्म के स्थापक सेठ बालचंदजी गोठी करीब १२५ वर्ष पूर्व बिलाड़ा (जोधपुर स्टेट) से यहाँ आये थे। आप ओसवाल श्वेताम्बर जैन समाज के सज्जन हैं। आपके बाद आपके पुत्र गंभीरमलजी गोठी ने फर्म का व्यापार सम्हाला। आप १९५६ में गुजरे। तथा इस फर्म के व्यापार को सेठ गंभीरमलजी के पुत्र मोहनलालजी ने विशेष तरक्की दी। वर्तमान में सेठ मोहनलालजी गोठी ही इस फर्म के मालिक हैं। परभनी में आपकी देखरेख में श्रीपार्श्वनाथ श्वेताम्बर जैन मंदिर बन रहा है। आपके पुत्र श्रीयुत नेमीचंदजी फर्म के व्यापार को सम्हालते हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

परभनी—मेसर्स बालचन्द गंभीरमल—बैङ्किग, आढ़त, कपड़ा, गल्ला तथा सराफी लेन-देन होता है।

बिलाड़ा—गम्भीरमल मोहनलाल—आढ़त, कपड़ा, लेन देन का काम होता है।

मेसर्स बेजनजी बेरामजी कम्पनी

इस फर्म का विस्तृत व्यापारिक परिचय जालना में दिया गया है। निजाम स्टेट, बरार आदि प्रांतों में इस फर्म की कई जीनिंग-प्रेसिंग फेक्टरियाँ हैं तथा कॉटन का व्यापार होता है। परभनी में भी इस फर्म की जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी है तथा रूई का व्यापार होता है।

मेसर्स रामदयाल घासीराम

इस फर्म का विस्तृत व्यापारिक परिचय मालिकों के चित्रों सहित हैदराबाद में दिया गया है। वहाँ यह फर्म आबकारी कंट्राक्ट का लाखों रुपयों का काम प्रति वर्ष करती है। तथा इसकी व्यवस्था के लिये निजाम स्टेट के बहुत से स्थानों में शाखाएँ हैं। इस फर्म का कारबार अच्छी उन्नति पर है। इसकी परभनी ब्रांच का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

परभनी—मेसर्स रामदयाल घासीराम—यहाँ बैङ्किग व आबकारी कंट्राक्टिंग की व्यवस्था का काम होता है।

मेसर्स लछमणदास शिवलाल

इस फर्म का स्थापन साढ़े गाँव में करीब १०० साल पहिले सेठ लछमणदासजी के हाथो से हुआ था। आप ओसवाल श्वेताम्बर जैन समाज के सांखला सज्जन हैं। सेठ लछमणदासजी के पुत्र शिवलालजी ने इस दुकान के कारबार को बढ़ाया, आपके हाथों से ही परभनी में दुकान खोली गई। आप संवत् १९७६ की मगसर बदी ९ को स्वर्गवासी हुए।

वर्तमान में इस दुकान के मालिक सेठ शिवलालजी के पुत्र हेमराजजी सखांला हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१ साढ़ेगाँव—मेसर्स लछमणदास शिवलाल—यहाँ लेन-देन और कृषि का काम होता है।
२ परभनी—मेसर्स लछमणदास शिवलाल—कपास, गल्ला, आढ़त और बैङ्किग व्यापार होता है।
३ बोरी (परभनी) लछमणदास शिवलाल—जीनिंग फेक्टरी है और कपास का व्यापार होता है।

मेसर्स वामन रामचन्द्र नाइक जागीरदार

इस फर्म का हेड आफिस हैदराबाद है। अतः इसके व्यापार आदि का विस्तृत परिचय मालिकों के चित्रों सहित हैदराबाद मे दिया गया है। इस कुटुम्ब को गदवाल और वनपर्ती संस्थान में जागीरी प्राप्त है। इसके अलावा इसकी शाखाएँ, जीनिंग-प्रेसिंग फेक्टरियाँ, राइस मिल आदि नांदेड़, निजामाबाद, मेदक और कामारडी में है। परभनी में भी इस फर्म की एक जीनिंग और प्रेसिंग फेक्टरी है।

मेसर्स श्रीराम द्वारकादास

इस फर्म में सेठ श्रीरामजी और सेठ द्वारकादासजी इन दो सज्जनों का भाग है। सेठ श्री रामजी वडू (मारवाड़) निवासी माहेश्वरी वैश्य समाज के तोतला सज्जन हैं। तथा सेठ द्वारकादासजी माहेश्वरी वैश्य समाज के जेतारण (जोधपुर स्टेट) निवासी सोनी सज्जन हैं। आप दोनों सज्जनों ने मिलकर २८।३० साल पहिले भागीदारी मे आढ़त की दुकान स्थापित की। वैसे आप दोनों का कुटुम्ब पौन सौ वर्षो से यहाँ निवास कर रहा है। आपकी ओर से परभनी स्टेशन पर हिन्दू और मुसलमानों के लिये एक विशाल धर्मशाला बनी हुई है। सेठ श्रीरामजी के पुत्र शालिगराम भी व्यापार संचालित करने मे भाग लेते हैं। आप का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१. परभनी—मेसर्स श्रीराम द्वारकादास T. A. Shriram } यहां आढ़त, वैङ्किंग, सराफी, रुई और गल्ला का व्यापार होता है

२ सेलू—श्रीराम द्वारकादास—उपरोक्त व्यापार होता है।

३ पूर्णा—श्रीराम द्वारकादास—उपरोक्त व्यापार होता है तथा जीनिंग प्रेसिंग है।

४ नांदेड़—श्रीराम द्वारकादास—आढ़त, रुई और गल्ला का कारबार होता है।

५ बोरी—(परभनी) श्रीराम द्वारकादास—जीनिंग फेक्टरी है तथा आढ़त का कारबार होता है

६ अजयगाँव (परभनी) श्रीराम द्वारकादास— " "

७ परली—श्रीराम द्वारकादास— " "

जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी

गामड़िया जीनिंग प्रेसिग फेक्टरी

खोजा जीनिंग फेक्टरी

नारायणदास चुन्नीलाल जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी

बेजनजी बेरामजी एण्ड कं० जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी

विष्णु जीनिंग प्रेसिग फेक्टरी

वामन रामचन्द्र नाईक जागीरदार जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी

लक्ष्मी जीनिंग फेक्टरी

कपड़े के व्यापारी

मेसर्स अब्बास महम्मद

" चंदनसा उमनसा

" बालचंद गंभीरमल

" बालचंद पन्नालाल

" बलीराम संतोबा

" शिवजीराम घीसूलाल

गल्ले के व्यापारी और आढ़तिया

मेसर्स गिरधारीलाल गोरधनदास

" चन्द्रभान गुलाबचंद

बैंकर्स

मेसर्स गिरधारीलाल फतेचंद

,, प्रेमराज पन्नालाल

,, बालचंद गंभीरमल

,, रूपचंद हनुतराम

,, रामदयाल घासीराम

,, लछमणदास शिवलाल

मेसर्स प्रेमराज पन्नालाल

,, बालचंद गंभीरमल

,, राजमल गुलाबचन्द

,, लक्ष्मणदास शिवलाल

,, श्रीराम द्वारकादास

जनरल मरचेंट्स

मेसर्स अब्दुल्ला जीया

,, हबीब जीया

किराने के व्यापारी

मेसर्स अब्बास महम्मद

,, अब्दुल्ला जीया कच्छी

,, बापू सीताराम झरखर

,, बलीराम संतोबा

,, हबीब जीया कच्छी

,, हाजी सकूर हाजीमूसासाया

कॉटन मरचेंट्स

मेसर्स प्रेमराज पन्नालाल

,, वसनजी उक्का

,, बालचंद गंभीरमल

,, रूपचंद हनुतराम

,, लछमनदास शिवलाल

,, श्रीराम द्वारकादास

सेलू

यह छोटा सा स्थान परभनी जिले का कपास का प्रधान व्यापारिक केन्द्र है। इसकी मनुष्य-संख्या केवल ५ हजार है। इतनी छोटी बस्ती में ५० हजार गाँठों की रूई की आमद होती है। इस स्थान पर १३ जीनिंग फैक्टरी ७ प्रेसिंग फैक्टरी और १ आइल मिल है। कपास के अलावा अलसी, करड़ी, गेहूँ, जुवारी, चना, तूवर, लाख, रूई, कपासिया, बाजरी आदि की पैदावार है। यह स्थान निजाम स्टेट रेलवे की मीटर गेज लाइन पर जालना और परभनी के मध्य स्थित है। यह स्थान मनमाड से १५५ मील दूर और हैदराबाद से २३१ मील दूर है। यहाँ प्रायः अनाज का तौल माप पर होता है और माप के पैमाने में भिन्न २ वस्तुएँ अपने आकार-प्रकार के मुआफिक वजन में कम जियादा समाती हैं। माप की पायली ९ सेर की मानी जाती है।

यहाँ के व्यापारियों का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स गुलाबदास हरीदास

इस फर्म के मालिक गुजराती मोढ़ (वीसा) वणिक समाज के सज्जन हैं। इसका हेड ऑफिस हैदराबाद में है। हैदराबाद के प्राचीन और नामी व्यापारी कुटुम्बों में इसकी भी गणना है। इसके व्यवसाय आदि का विस्तृत परिचय मालिकों के चित्रों सहित हैदराबाद में दिया गया है। इस फर्म की सेलू में एक कॉटन जीनिंग प्रेसिंग-फेक्टरी है।

मेसर्स नारायणदास चुन्नीलाल

इस फर्म का हेड आफिस जालना है। अतः इसके व्यवसाय आदि का परिचय फर्म के मालिकों के चित्र सहित जालने में दिया गया है। इस फर्म की स्थान २ पर करीब ३२ जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरियाँ तथा गदक में एक कपड़े की मिल है। इसके सेलू ब्रांच का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

सेलू—मेसर्स नारायणदास चुन्नीलालल T. A. Hirakhan } यहाँ जीनिंग-प्रेसिंग फेक्टरी है।

मेसर्स पदमजी मूलजी

इस फर्म के मालिक कच्छ-लावला निवासी कच्छी वणिक दशा ओसवाल जाति के सज्जन हैं। इस फर्म का स्थापन संवत् १९५६ में सेठ मूलजी के हाथों से हुआ। आपने यहाँ एक जीनिंग फेक्टरी खोली। आप संवत् १९६२ में स्वर्गवासी हुए।

वर्तमान में इस दुकान के मालिक सेठ मूलजी के पुत्र सेठ पदमसी भाई हैं। आपने १९७० में सेलू में एक प्रेसिंग फेक्टरी खोली। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

सेलू—मेसर्स पदमसी मूलजी यहाँ जीनिंग-प्रेसिंग फेक्टरी है और रूई का व्यापार होता है।

पड़तूल—मेसर्स पदमसी मूलजी—जीनिंग-प्रेसिंग फेक्टरी है और रूई का व्यापार होता है।

मेसर्स रामनारायण मोहनलाल

इस फर्म के मालिकों का मूल निवासस्थान जेतारण (जोधपुर स्टेट) में है। आप माहेश्वरी समाज के लोहिया वाहिती सज्जन हैं। करीब १५० वर्ष पूर्व सेठ दौलतरामजी सेलू आये-आपका कुटुम्ब ७ पीढ़ियों से यहाँ रोजगार कर रहा है। सेठ दौलतरामजी निजामसरकार की ओर से आफिसर थे। आपके बाद क्रमशः मोतीरामजी, जगन्नाथजी और रामनारायणजी ने कारवार सम्हाला। इस फर्म के व्यापार को सेठ रामनारायणजी ने विशेष बढ़ाया। आप २२।२३ साल पहिले स्वर्गवासी हुए। आपके भ्राता सेठ शिवनारायणजी विद्यमान हैं।

वर्तमान में सेठ रामनारायणजी के पुत्र मोहनलालजी एवं आसारामजी हैं। आपने इस फर्म की जीनिंग प्रेसिंग-फेक्टरी खोली है।

सेठ मोहनलालजी देवलगाँव साढ़ा वारा न्यात के सरपंच हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

सेलू—मेसर्स रामनारायण मोहनलाल—बैङ्किंग, खेती और कपास का व्यापार होता है।

सेलू—आसाराम रामनारायण—जीनिंग-प्रेसिंग फेक्टरी और आइल मिल है।

पीपल गाँव (औरंगाबाद)—आसाराम रामनारायण—जीन और ऑइल मील है।

जेतूर (परभनी)—आसाराम रामनारायण— " "

मेसर्स सरदारमल विट्ठराम

इस फर्म के मालिक जेतारण (जोधपुर) निवासी माहेश्वरी समाज के वाहिती लोहिया सज्जन हैं। इस दुकान का स्थापन सेठ सरदारमलजी ने ५०-६० साल पहिले किया। आरंभ से आपके यहाँ गल्ले और किराने का रोजगार होता है। सेठ सरदारमलजी के ३ पुत्र हुए। विट्ठू-

रामजी, हरीरामजी और गुलाबचंदजी । आप तीनों भाइयों का इधर दो सालों में स्वर्गवास हो गया है । सेठ विठूरामजी के पुत्र राधाकिशनजी और गोपीकिशनजी हैं तथा हरीरामजी के पुत्र चुन्नीलाल जी और गुलाबचन्दजी के पूसालालजी हैं । आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है ।

सेलू—मेसर्स सरदारमल विठूराम—जीनिंगफेक्टरी है तथा गल्ला और किराने का व्यापार होता है।

सेलू—मेसर्स राधाकिशन गोपीकिशन—गल्ला तथा किराने का व्यापार होता है ।

मेसर्स श्रीराम द्वारकादास

इस फर्म के व्यापार आदि का परिचय परभनी में दिया गया है । परभनी के अलावा सेलू, पूर्णा, नांदेड, बोरी, परली आदि स्थानों में इस दुकान की शाखाएँ हैं । जिन पर आढ़त, रुई, गल्ला का कारबार होता है । सेलू में भी इस फर्म पर यही व्यापार होता है ।

मेसर्स बंशीलाल अबीरचंद रायबहादुर

यह फर्म पहिले मेसर्स सदासुखु जानकीदास के अधिकार में थी । पर उपरोक्त फर्म के संचालक सेठ केदारनाथजी डागा के स्वर्गवासी होने के बाद इसका तथा निजाम स्टेट की दूसरी ब्रांचेज का कारबार उनके भ्राता सेठ बंशीलालजी अबीरचन्दजी ने सम्हाला । मेसर्स बंशीलाल अबीरचन्द फर्म के हैदराबाद ब्रांच के अंडर मे यह शाखा है । यह दुकान भारत के साहुकारों में ऊँचे दर्जे के व्यापारियो की गणना में समझी जाती है । हैदराबाद और सिकन्दराबाद में यह दुकान विस्तृत बैङ्किग व्यापार करती है तथा उन स्थानों पर प्रधान फर्म मानी जाती है । इसकी सेलू ब्रांच का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है ।

सेलू—मेसर्स बंशीलाल अबीरचंद रायबहादुर } यहां जीनिंग-प्रेसिंग फेक्टरी है और बैङ्किग तथा रुई का व्यापार होता है ।

जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरीज़

आसाराम रामनाथ जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी
गामड़िया जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी
गुलाबदास हरीदास जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी
नारायणदास चुन्नीलाल जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी
पदमसी मूलजी जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी
तेजपाल खीमजी जीनिंग फेक्टरी
बंशीलाल अबीरचंद रायबहादुर जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी
बेजनजी वेरामजी एण्ड तेजपाल खीमजी प्रेसिंग फेक्टरी
मोतीलाल रामकुंवार जीनिंग फेक्टरी
न्यू जीनिंग फेक्टरी (रतनसी पारेख)
सेलू मर्चेंट जीन

सरदारमल विठूराम जीन फेक्टरी
आसाराम रामनारायण ऑयल मिल

रूई के व्यापारी

मेसर्स जमनादास नरसी
" तेजपाल खीमजी
" प्रेमराज पन्नालाल
" वेजनजी वेरामजी
" वंशीलाल अवीरचंद रायबहादुर
" रामनारायण मोहनलाल
" लालजी रामजी

एजेंसियाँ

मेसर्स गोसो कावूसा केसा लिमिटेड
" जापान ट्रेडिंग कम्पनी
" पटेल ब्रदर्स
" वालकट ब्रदर्स

मेसर्स मुसान कम्पनी
" रायली ब्रदर्स

किराना के व्यापारी

मेसर्स अवासा महम्मद
" अब्दुल्ला जीया
" राधाकिशन गोपीकिशन
" हुसेन हाजी मूसा

गल्ला के व्यापारी और आढ़तिया

मेसर्स गिरधारीलाल लक्ष्मीनारायण
" प्रेमराज पन्नालाल (हेड ऑफिस नगर)
" मदनलाल रामजीवन
" राधाकिशन गोपीकिशन
" विट्ठलदास व्यंकटलाल
" सूरज बगस सोनपाल

जालना

निजाम स्टेट रेलवे की छोटी लाइन पर बसा हुआ औरंगाबाद जिले का प्रसिद्ध व्यापारिक स्थान है। यह शहर मनमाड़ से ११० मील और हैदराबाद से २७६ मील है। इस स्थान पर विशेष कर कपास का व्यापार होता है। प्रति वर्ष करीब ६० हजार गाठों की यहाँ आमद हो जाती है। कपास को लोढने और प्रेसिंग करने के लिये यहाँ १८ जीनिंग और १० प्रेसिंग फेक्टरियाँ हैं। प्रेसिंग फेक्टरियाँ ज्वाइंट है। यहाँ से बाहर जाने वाले माल में रुई, सरकी, अलसी, तिल्ली, अरंडी और मुंगफली है। और दूसरी प्रकार की पैदावार में जुवारी, गेहूँ, चना, बाजरी, मूंग, मोठ, उड़द, करड़ी आदि प्रधान हैं। व्यापारियो की सुविधा के लिये इम्पीरियल बैंक की ब्रांच स्थापित है।

तौल और भाव की दर—कपास १४० सेर बंगाली का पल्ला (बारदाना बाद)

रुई—१४० सेर का पल्ला (८ सेर बारदाना का बाद)

अनाज—१३२ सेर का पल्ला

गुड़—१२० सेर का पल्ला (२४ घड़ी का पल्ला)

यहाँ के व्यापारियों का संक्षेप परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स नारायणदास चुन्नीलाल

इस फर्म के मालिक शामली (देहली के समीप) निवासी अग्रवाल वैश्य समाज के बांसल गौत्रीय सज्जन हैं। इस फर्म के व्यापार सम्मान तथा प्रतिष्ठा को सेठ मोतीलालजी चुन्नीलालजी ने बहुत उन्नति पर पहुँचाया। आप बड़े साहसी व्यापारी थे। आपने अपने हाथों से मुगलाई, दक्खिन, अमहद नगर आदि जगहों मे बीसियो जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरियाँ खोली, गदक में अपनी निज की कपड़े की मिल खोली। आपके व्यापारिक साहस को देखकर कई अंग्रेज ताज्जुब करते थे। इस प्रकार आपने अपने व्यापार को थोड़ी ही अवस्था में बहुत फैला दिया था। दुर्दैव से केवल ३८ वर्ष की अल्प अवस्था में आप सन् १९२४ में शिवरात्रि के दिन स्वर्गवासी हो गये।

स्वर्गीय सेठ मोतीलालजी बांसल (नारायणदास चुन्नीलाल) जालना

सेठ राधाकृष्णजी बगड़िया (रामप्रताप रामदेव) जालना

सेठ हेमराजजी मूँदड़ा (मोतीराम बीजराज) हिंगोली

स्व० सेठ नेमीदासजी दरख (नंदराम नेमीदास) औरंगाबाद छावनी

इस फर्म की जहाँ २ शाखाएँ हैं उन सब जगहों पर यह दुकान बहुत मातबर मानी जाती है। इसके व्यापार का हाल इस प्रकार है।

१ जालना—मेसर्स नारायसदास चुन्नीलाल T. A. Hirakhan	हेड आफिस है, तथा बैंकिंग जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी और कॉटन का व्यापार होता है।
२ बम्बई—मेसर्स नारायणदास चुन्नीलाल तार का पता Hirakhan	बैंकिंग आढ़त और रुई का व्यापार होता है।
३ गदक (हुगली-धारवाड़) दि नारायणदास चुन्नीलाल कॉटन स्पीनिंग एण्ड वीविंग मिल्स, T. A. Hirakhan	इस नाम की आपकी एक प्राइवेट मिल है।

इसके अलावा नीचे लिखे स्थानों पर जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरियाँ हैं और कॉटन का व्यापार होता है, इन सब स्थानों पर तार का पता Hirakhan है। ४—परभनी, ५—मानवद, ६—सेलू, ७—वालूर (निजाम), ८—औरंगाबाद, ९—लालूर (निजाम स्टेट), १०–लालूर (निजाम), ११–मालेगांव (नासिक), १२–नांदगांव (मनमाड), १३–वाम्मोरी (अहमद नगर), १४–अहमदनगर, १५–करमाला (वीजापुर), १६–कुरुड़वाड़ी (एस. एस. एम.), १७–वीजापुर (एस. एस. एम.) १८– कुड़छी (वीजापुर)।

मेसर्स पूनमचंद बख्तावरमल

इस फर्म के व्यापार आदि का विस्तृत परिचय औरंगाबाद में दिया गया है। जालना में इस दुकान का स्थापन करीब १०।१५ साल पूर्व हुआ। यहाँ यह फर्म आढ़त का कारबार करती है।

मेसर्स पेश्तनजी मेरवानजी

इस फर्म के पूर्वज सेठ मेरवानजी सन् १८०३ में जालना आये थे। आप आरंभ में ब्रिटिश रेजिमेंट के मेनेजमेंट में यहाँ आये और फिर यहाँ रहने लगे। आपके बाद सेठ पेश्तनजी मेरवानजी ने ५० साल पहिले जालने मे बैंकिंग एवं खेती का व्यापार शुरू किया। सेठ पेश्तनजी के ५ पुत्र हुए जिनमें से सोरावजी, बरजोरजी, फ्रामजी निजाम कस्टम के ओहदेदार थे। तथा सेठ फरदुनजी और पदमजी उपरोक्त फर्म का संचालन करने लगे। सेठ पेश्तनजी सन् १८८६ में स्वर्गवासी हुए।

वर्तमान में इस दुकान के मालिक सेठ पदमजी पेश्तनजी और सेठ वेजुनजी फरदुनजी हैं। सेठ पदमजी वयोवृद्ध और प्रतिष्ठित सज्जन हैं। आप जालना एसोसिएशन के प्रेसिडेंट हैं। तथा सेठ बेजुनजी जालना कोआपरेटिव्ह सेंट्रल बैंक के सेक्रेटरी और ट्रेझरर हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१. जालना—मेसर्स पेश्तनजी मेरवानजी	हेड आफिस है यहाँ जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी, खेती, कॉटन का व्यापार और जनरल व्यापार होता है।
२. बम्बई—मेसर्स दिनशाह पेश्तनजी प्रिसेंस स्ट्रीट	कमीशन का व्यापार होता है।

३. ऊमरी—सेठ पेश्तनजी मेरवानजी—जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी और कपास का व्यापार होता है।

४. करकेली—(नांदेड़) सेठ वेजनजी बेरामजी	"	"	"
५. नांदेड़—मेसर्स वेजनजी बेरामजी कम्पनी	"	"	"
६. परभनी—मेसर्स बेजननी बेरामजी कम्पनी	"	"	"
७. सेलू—मेसर्स बेजनजी वेरामजी कम्पनी	"	"	"
८. सातोना—सेठ वेजनजी फरदुनजी	"	"	"
९. धामन गांव—(अमरावती) दीनशा पेश्तनजी	"	"	"
१०. देवल गांव—(बरार) पदमजी पेश्तनजी कम्पनी	"	"	"

११. बुतगांव—(तांगली) दीनशाजी पेश्तनजी— जीनिंग फेक्टरी है।

१२. गुण्टकेल—(बंगलोर) बेजनजी बेरामजी कं०— जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी है।

मेसर्स रामप्रताप रामदेव

इस फर्म के मालिकों का मूल निवासस्थान डीडवाणा (जोधपुर स्टेट) है। आप अग्रवाल वैश्य समाज के बगड़िया सज्जन हैं। इस फर्म का स्थापन सेठ रामप्रतापजी ने १०० साल पूर्व किया। आपके पश्चात् सेठ रामदेवजी और कन्हैयालालजी ने व्यापार सम्हाला। सेठ रामदेवजी २० साल पूर्व और कन्हैयालालजी १२ साल पूर्व स्वर्गवासी हो गये हैं।

वर्तमान में इस दुकान के मालिक सेठ राधाकृष्णजी और गोपीकृष्णजी बगड़िया हैं। आपकी ओर से डीडवाणा, जालना और नागपुर मे धर्मशालाएँ बनी है। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१—जालना—मेसर्स रामप्रताप रामदेव T. A. Ramdev	जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी, सराफी लेन-देन और कॉटन का व्यापार होता है।

२—जालना—राधाकिशन गोपीकिशन—कपास का कारबार होता है।
३—रिसोड़ (अकोला) रामप्रताप रामदेव—खेती और लेन-देन का काम होता है।
४—कामठी—(नागपुर) रामप्रताप रामदेव—देन लेन और बैङ्किंग व्यापार होता है।
५—नागपुर—रामदेव गणेशरामा इतवारिया } किराने का व्यापार होता है।

मेसर्स शिवलाल वंशीलाल

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ शिवलालजी हैं। आपने संवत् १९४३ में उपरोक्त नाम से कपड़े का व्यापार स्थापित किया। आप जेतारण (जोधपुर स्टेट) निवासी माहेश्वरी वैश्य समाज के सज्जन हैं। आपके पुत्र श्री वंशीलाल जी कारबार में भाग लेते हैं। इस समय आप का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

जालना—मेसर्स शिवलाल वंशीलाल—कपड़े का व्यापार होता है।

काटन जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरीज़

दि गनेश कम्पनी प्रेसिंग फेक्टरी
दि जालना जीनिंग एण्ड प्रेसिंग फेक्टरी
दि जालना मरचेंट्स कम्पनी जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी
दि डबल जीनिंग प्रेसिंग कम्पनी
तेजपाल गोविंदजी जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी
महावीर जीनिंग एण्ड प्रेसिंग फेक्टरी
धनराज जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी
नरसिंह जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी
एन० जी० गामड़िया जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी
नारायणदास चुन्नीलाल जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी
रामप्रताप रामदेव जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी
लालबाग जीनिंग फेक्टरी

बैङ्कर्स

दी इम्पीरियल बैंक आफ इण्डिया लिमिटेड
दि लना कोआपरेटिव्ह सैन्ट्रल बैंक

कपास के व्यापारी

मेसर्स अहमद मिया समसुद्दीन
,, कपूरचंद कंवरलाल
,, कजोड़ीमल सीताराम
,, गुमानीराम रामनाथ
,, धनजी छगनमल
,, नारायणदास चुन्नीलाल
,, पेस्तनजी मेरवानजी
,, रामप्रताप रामदेव
,, राधाकिशन गोपीलाल
,, शिवलाल बालचंद

मेसर्स शिवलाल बंशीलाल
,, हनुतराम रामचन्द्र

रूई की खरीदी की एजंसियाँ

मेसर्स जमनादास नरसी
,, जापान ट्रेडिंग कम्पनी
,, करमसी दामजी
,, गोसो कावूसी केसा
,, नरसिंहगिरि नार गोसाई
,, परेल कॉटन कम्पनी
,, भुसान कम्पनी
,, बालकट ब्रदर्स
,, मुरारजी गोकुलदास
,, रायली ब्रदर्स

दी लक्ष्मी कॉटन मिल सोलापुर

कपड़े के व्यापारी

मेसर्स अब्दुल समद अलादिया
,, शिवलाल कुंजलाल

चाँदी सोने के व्यापारी

मेसर्स भोलाराम मोहनलाल
,, श्रीराम जेठमल
,, श्रीराम दगडूलाल

मिशनरी मरचेंट्स

मेसर्स आर० पी० ईश्वरदास
,, चंदूलाल टी० पारख

औरंगाबाद

निजाम स्टेट रेलवे की मीटर गेज लाइन पर खाम नदी के तीर बसा हुआ हैदराबाद से ३२० मील और मनमाड से ७१ मील पर यह शहर स्थित है। इस शहर को सन् १६१० ई० में मलिकम्बरा ने आबाद किया था। इसका पूर्व नाम खिड़की था। जब शाहजादा औरंगजेब दक्षिण के सूबेदार नियत हुए तब उन्होंने इस शहर का नाम बदल कर अपने नाम पर औरंगाबाद रक्खा। इस जिले के आस पास अंजटा की गुफाएँ, बरार, अहमद नगर नाशिक जिला तथा परभनी और गोदावरी नदी है। इसकी लोक-संख्या ८ लाख १३ हजार तथा गाँव १४१७ हैं। यहाँ की प्रधान भाषा मराठी और उर्दू है। यहाँ की मनुष्य-संख्या लगभग ३५ हजार है। यहाँ उस्मानिया कॉलेज, मराठी ट्रेनिंग कॉलेज और हाई स्कूल आदि हैं।

पैदावार—जुवारी, गेहूँ, चना, बाजरी, मूंग, उड़द, कुलथी। इनका तौल १२० सेर के पल्ले पर है।

अलसी, एरंडी, तिल्ली, तूवर, सींगदाणा। इनका तौल १२३ सेर का पल्ला है।

करडी का पल्ला १४४ सेर पर है। इमली १३२ सेर के पल्ले से बिकती है।

कपास—१२६ सेर का पल्ला, दाम १२० सेर का दिया जाता है।

रुई—बोझा पर भाव होता है। १४० सेर का एक बोझा माना जाता है।

तेल—का १२० सेर का पल्ला है।

कपड़ा—यहाँ का खीनखाब, हिमरू, मशरू, जरी के कांठ, मुलम्मा, भाले, मीना आदि भी प्रसिद्ध हैं।

कल-कारखाने—यहाँ ९ जीनिंग फेक्टरी ६ प्रेसिंग फेक्टरी और १ कॉटनमील है।

प्रसिद्ध स्थान—वेरूल और अजंटा की गुफाएँ—ये गुफाएँ अपनी सुन्दर कारीगरी एवं आश्चर्यजनक बनावट के कारण जगत भर में प्रसिद्ध हैं। इस प्रकार सुन्दर गुफाएँ दुनियाँ में कहीं नहीं है। इन गुफाओं में खास कर कैलाश, सुतार-झोंपड़ी, धेड़वाड़ा और इन्द्रसभा दर्शनीय हैं। वेरूल में बारह ज्योतिर्लिङ्गों में

श्रीघृणेश्वर नाम के एक ज्योतिर्लिङ्ग हैं। दौलताबाद औरंगाबाद से यहाँ आने के लिये मोटर जाती है।

दौलताबाद—यह प्रसिद्ध देवगिरी का किला है। यहाँ के द्राक्ष, शीताफल अंजीर ठीक होते हैं।

खुलताबाद—इससे २ कोस पर कागज का कारखाना है। इसे दौलताबादी कागज कहते हैं। निजाम स्टेट के कई महकमों में यह कागज काम में आता है।

यहाँ के व्यापारियों का संक्षेप परिचय इस प्रकार है।

दि औरंगाबाद मिल्स लिमिटेड

इस मिल का स्थापन सन् १८८७ ईस्वी में ६ लाख की पूजी से हुआ। इसकी मेनेजिंग एजंट डोरा स्वामी अय्यर एण्ड कम्पनी ५२ विक्टोरिया हिल स्ट्रीट बम्बई है। वर्तमान में इस मिल में १६५०० स्पेंडिल्स और २१८ लूम्स काम करते हैं। मिल में प्रति दिन ५ हजार पौण्ड सूत और अढ़ाई हजार पौंड कपड़ा तैयार होता है। इसका बना हुआ माल जादातर निजाम स्टेट में बिक्री होता है। मिल में काम करने वाले मनुष्यों की औसत ८०० है।

मेसर्स नंदराम नेमीदास

इस फर्म के मालिकों का मूल निवासस्थान रैन (मारवाड़) है। आप माहेश्वरी वैश्य समाज के दरख सज्जन हैं। इस फर्म का व्यवसाय स्थापन करीब १०० साल पहिले सेठ नंदरामजी के हाथों से हुआ। आपके पश्चात् आपके पुत्र नेमीदासजी और चांदूलालजी के हाथों से इस दुकान के कारबार को उन्नति प्राप्त हुई। आप दोनों भ्राता क्रमशः संवत् १९६५ और ६८ में स्वर्गवासी हुए।

वर्तमान में इस दुकान के मालिक सेठ नेमीदासजी के पुत्र कन्हैयालालजी तथा मन्नूलाल जी और चांदूलालजी के पुत्र मिश्रीलालजी हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

औरंगाबाद छावनी—मेसर्स नंदराम नेमीदास—यहाँ बैङ्किंग, गल्ला, आढ़त तथा कंट्राक्ट का काम होता है।

औरंगाबाद सिटी—मेसर्स रतनचंद मन्नूलाल निजामगंज } आढ़त का कारबार होता है।

मेसर्स नारायणदास चुन्नीलाल

इस फर्म का हेड आफीस जालना में है अतः इसके व्यवसाय आदि का सुविस्तृत परिचय मालिकों के चित्रों सहित जालना में छापा गया है। अहमद नगर, वीजापुर तथा मुगलाई में इस फर्म की ३२ जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरियां और १ कॉटन मिल है। औरंगाबाद में इस फर्म की एक कॉटन जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी है और रुई का व्यापार होता है। इसका तार का पता है Hirakhan।

मेसर्स बुधमल जुहारमल

इस फर्म के मालिकों का मूल निवसा स्थान बगड़ी (जोधपुर स्टेट) में है। आप ओसवाल श्वेताम्बर जैन समाज के देवड़ा सज्जन हैं। इस फर्म का स्थापन करीब १३५ वर्ष पूर्व सेठ बुधमलजी के पिता सेठ ओटाजी के हाथों से हुआ था। सेठ ओटाजी और बुधमलजी मामूली किराने वगैरा की दुकान करते रहे। पश्चात् सेठ बुधमलजी के पुत्र जुहारमलजी और पूनमचंदजी के समय से इस दुकान की तरक्की आरंभ हुई। सेठ पुनमचंदजी ने ५० साल पहिले बम्बई में दुकान की। आपके पश्चात् सेठ जुहारमलजी के पुत्र सेठ बख्तावरमलजी देवड़ा के हाथों से इस दुकान के व्यापार की विशेष वृद्धि हुई। आपने अपनी दुकान की शाखाएँ, वरंगल नांदेड़, जालना और सिकंदराबाद में खोलीं। इन सब स्थानों पर यह फर्म अच्छी प्रतिष्ठित मानी जाती है।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ बख्तावरमलजी तथा पूनमचंदकी के पुत्र सेठ जसराजजी देवड़ा हैं। सेठ बख्तावरमलजी के पुत्र शेषमलजी और जसराजजी के पुत्र मगराजजी, हमीमलजी फूलचंदजी भी कारबार में सहयोग देते हैं। सेठ बख्तावरमलजी ने अपने ज्येष्ठ पुत्र के स्मरणार्थ बहुत बड़ी लागत से औरंगाबाद स्टेशन पर सुंदर "समरथ हिन्दू धर्मशाला" का निर्माण कराया है। इसी प्रकार बगड़ी मे भी २ धर्मशालाएँ एवं २० हजार की लागत से एक "समरथ सागर" बनवाया है। औरंगाबाद के कई स्थानों में मंदिरो, धर्मशालाओ एवं मस्जिदों के बनवाने में और मरम्मत कराने में आपने मदद दी। बगड़ो में आपकी एक पाठशाला और दवाखाना चालू है। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१ औरंगाबाद—मेसर्स बुधमल जुहारमल—पुराना नाम है, और बैंकिंग व्यापार होता है।
२ औरंगाबाद—मेसर्स पूनमचंद बख्तावरमल—बैंकिंग एवं आढ़त का कारबार होता है।
३ औरंगाबाद—मेसर्स बख्तावरमल मेवराज—कपड़े का व्यापार होता है।
४ औरंगाबाद—मेसर्स बख्तावरमल शेषमल—गल्ले का व्यापार और आढ़त का काम होता है

५ बम्बई—मेसर्स पूनमचंद बख्तावरमल, पायधुनी तार का पता Garnet, T. No 20929 } आढ़त और बैङ्किग कारबार होता

६ सिकन्दराबाद—मेसर्स पूनमचन्द बख्तावरमल—बैङ्किग कारबार होता है।

७ वरंगल—मेसर्स बुधमल जुहारमल, T. A. Garnet T. No. 17—सूत, काटन, आढ़त, कपड़ा व एरंडी का व्यापार होता है।

८ नाँदेड़—मेसर्स पूनमचंद बख्तावरमल T. A. Garnet
" मेसर्स निहालचंद देवड़ा
" निहालचंद उत्तमचंद } इन नामों से बैङ्किग गल्ला, काटन और आढ़त का काम होता है।

९ जालना—मेसर्स पूनमचन्द बख्तावरमल—आढ़त का काम होता है।

मेसर्स लच्छीराम श्रीकृष्ण

इस फर्म के मालिकों का मूल निवास स्थान डे (जोधपुर) स्टेट में है। आप सरावगी खंडेलवाल दिगम्बर जैन समाज के सज्जन हैं। इस फर्म का स्थापन सेठ जसरूप जी के हाथों से करीब ६० साल पहिले हुआ। आप के पुत्र सेठ लच्छीरामजी ने इस दुकान के काम काज को विशेष तरक्की दी। आपने औरंगाबाद में दिगम्बर जैन मन्दिर के बनवाने में बहुत परिश्रम उठाया था। औरंगाबाद के आप अच्छे प्रतिष्ठित व्यक्ति हो गये हैं। आप का स्वर्गवास संवत १९७३ में हुआ। आप के यहाँ श्रीयुत श्रीकृष्ण जी १९७७ में गगराणा से दत्तक लाये गये। यह दुकान यहाँ बहुत पुरानी मानी जाती है। इसका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

औरंगाबाद-मेसर्स लच्छीराम श्रीकृष्ण तार का पता Pipariwala T. No. 62 } बैङ्किग, जनरल मरचेंट एण्ड कमीशन का काम होता है।

औरंगाबाद-लच्छीराम श्रीकृष्ण, निजामगंज—गल्ला और आढ़त का काम होता है।

मेसर्स श्रीराम मोतीलाल

इस फर्म के मालिक खींवसर (जोधपुर स्टेट) निवासी माहेश्वरी वैश्य जाति के सिकची सज्जन हैं। संवत् १८९५ में सेठ नगराज जी और सेठ मेघराजजी दोनों भ्राता देश से आये थे। आप ने मामूली काम काज शुरू किया। आप के पश्चात् आप के पुत्र सेठ श्री रामजी और मोतीलालजी ने इस दुकान के कारबार को तरक्की दी।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ श्रीरामजी और मोतीलालजी हैं। सेठ श्रीरामजी के पुत्र गुलाबचन्दजी और मोतीलालजी के पुत्र मुरलीधरजी भी फर्म के व्यापार की देखभाल करते हैं। आप का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

औरंगाबाद—मेसर्स श्रीराम मोतीलाल T. No. 26 } बैङ्किंग और चाँदी सोने का काम होता है।

औरंगाबाद—मेसर्स गुलाबचंद मुरलीधर निजामगंज, T. No. 43 } आढ़त व गल्ला का कारबार होता है।

बैंकर्स

मेसर्स राय छोटेलाल मन्नूलाल
,, नरसिंहदास चुन्नीलाल
,, पूनमचंद बख्तावरमल
,, पूनमचंद ताराचंद
,, माधवदास नारायणदास
,, लालचंद फोजराज
,, शेषमल जीवराज
,, लच्छीराम श्रीकृष्ण
,, हाजी मूसा साया
,, श्रीराम मोतीलाल

ग्रेन मर्चेंट एण्ड कमीशन एजंट

मेसर्स कन्हैयालाल नारायणदास
,, गुलाबचंद मुरलीधर
,, नरसिंहदास चुन्नीलाल
,, पूनमचंद ताराचंद
,, मन्नूलाल राजाराम बागला
,, मन्नूलाल बिहारीलाल
,, रतनचंद मन्नूलाल
,, बख्तावरमल शेषमल

कपड़े के व्यापारी

मेसर्स छबीलदास विट्ठलदास
,, देवीदास मगनलाल
,, नगीनदास ईश्वरदास
,, महबूब खाँ गुलाब खाँ
,, महम्मद वजीर महम्मद हबीब (कीनखाब, मसरू हिमरू)

किराने के व्यापारी

मेसर्स अ[illegible]राज लालचंद
,, अहमद हाजी
,, अहमद अब्बास
,, आईदान छोगालाल
,, कमरुद्दीन अब्दुल रहीम
,, राजमल पुखराज
,, शिवजीराम हजारीमल
,, हाजी मूसा साया

चांदी सोने के व्यापारी

,, माधवदास नारायणदास
,, श्रीराम मोतीलाल

जनरल मरचेंट्स

मेसर्स अब्दुल्लाभाई फिदाअली
,, अब्दुल तय्यब मुल्ला हैदरअली
,, कमरुद्दीन अब्दुल रहीम
,, हाजी फिदा अली एन्ड संस

सार्वजनिक संस्थाएं

पांजरा पोल
बलवंत मोफत वाचनालय
समरथ हिन्दू धर्मशाला
सरस्वती भवन.

जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरीज़

औरंगाबाद मिल जीनिंग फेक्टरी
गणेश जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी
गोविंदजी वीरम जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी
गंगापुर जीनिंग फेक्टरी
टेमरस सोराबजी चिनाई जीनिंग प्रेसिंग ,,
ठाकुरदास जीनिंग फेक्टरी
नारायणदास चुन्नीलाल जीनिंग प्रेसिंग ,,
पदमजी पेस्तनजी ऑइल जीनिंग फेक्टरी
रणछोड़दास अनंदीदास जीनिंग प्रेसिंग ,,